## قال تعالىٰ لقد كان لكم في رسول الله اسوة حسنة (الآية)

فكيف وودى ماحييت ونصوتى لآل رسول الله زين المحافل

## زين البحافل شرح الشبائل للترمذى

(جلددوم

افادات شخ الحديث حضرت مولا ناسميع الحق صاحب مدخله استاذ الحديث ومهتم جامعه دار العلوم تقانيه

نظر ثانی وحاشیه مولا نامفتی مختار الله حقانی

ضبط وترتیب مولانا اصلاح الدین حقانی

ناشر: مؤتمر المصنفين جامعه دار العلوم حقانيه اكوره ختك

## . جمله حقوق بحق مؤتمر المصنفين جامعه دارالعلوم حقانيها كوژه خنك محفوظ بين

نام كتاب : زين المحافل شرح الشمائل للامام الترمذي

افادات : شيخ الحديث حضرت مولاناتسيع الحق صاحب مرظله

استادالحديث ومهتم جامعه دارالعلوم حقانيها كوژه خثك

ضبط وترتيب : مولانا اصلاح الدين حقاني

استادالحديث جامعهاسلاميدكي مروت

نظر ثانی وحاشیه: مولانامفتی مختار الله حقانی

مفتى واستاد شعبة خصص في الفقه والافتاء جامعه دارالعلوم حقانيها كوژه ختك

كمپوزنگ : محمراكمل، بابر حنيف جامعه دارالعلوم حقانيه اكوژه خنگ

صفحات : جلداول:532 جلددوم:526

طبع اول : اپریل کودوائه

ناش : مؤتمر المصنفين جامعه دار العلوم حقانيه اكوره خنك

طالع : المطبعة العربية، ليك روثهُر اني اناركلي لا مور

# بسم الله الرحمن الرحيم فهرست

| صفحہ | عنوانات   | صفحہ | عنوانات   |
|------|---|------|---|
| 47   | يمبي  | 13   | ﴿بابكيفكانكلام رسول الله الله الله الله الله الله الله ال |
| 51   | ﴿ بِابِ ما جاء في صفة مزاح رسول الشوائية ﴾          | 13   | دا می کے طرز تکلم کے خصوصیات                              |
| 51   | جائز مزاح کے شرائط                                  | 14   | حضورا قدس الله كادبي معيار                                |
| 53   | ذالاذنين كامطلب                                     | 16   | واعی کے کلام میں تکرار کی اہمیت                           |
| 54   | مزاحی جملوں میں بھی حقائق کاسمندر                   | 16   | تصريف آيات كي حكمتين                                      |
| 54   | حضرت الوعميرة                                       | 17   | تحرار کی اہمیت  |
| 55   | بعض مسائل منتبط                                     | 17   | حضرت شاه اساعيل شهيد كاجذبه وعوت                          |
| 58   | حفزت زاهر اور حضورا قدس اللطيطة كى بے تكلفى         | 20   | نبی کریمایی اوراحیاس ذمه داری                             |
| 59   | با دبیة اور حاضره                                   | 21   | بزرگان دین کا اُحماک فی الدین                             |
| 61   | حفزت حسن بفريٌ                                      | 25   | تمام نعتين قابل قدرين                                     |
| 64   | ﴿ باب ما جاء في صفة كلام رسول الله الله في الشعر ﴾  | 29   | شخصيت كيانقي  |
| 64   | حكمت البي كي وجهة آپ يافية كاشعروشاعري سے دورر بهنا | 30   | ﴿ باب ماجاء في محك رسول الثُمَالِيَّةِ ﴾                  |
| 65   | شعر کاحس مرتباس کے مضمون پر مخصر ہے                 | 30   | رسول التُعَلِينَةِ صرف تبسم فرماتے تھے                    |
| 66   | حضورا قدس الميلية كى بعض شعراء كى قدرا فزائى        | 31   | مننے کی صور تیں   |
| 67   | حضرت عبدالله بن رواحةً                              | 34   | حضرت ابوذ رغفاريٌ   |
| 69   | ز مان بردامعلم ہے                                   | 37   | كفركى وجه سے نيكيوں كاضائع بونا                           |
| 69   | بغيرزادواجرة خبررسانى                               | 40   | أتذكرالز مان الذي كنت فيهكا مطلب                          |
| 70   | لبید اوراس کی حق شای                                | 41   | كائنات كى وسعت برسائنسدانون كااعتراف                      |
| 70   | غيرمسلم شاعر كى مؤمنانه كلام كي تحسين               | 42   | ایک اشکال اوراس کا جواب                                   |
|      |   |      |   |

| L | 3   | سوامات   | .5  | عوانات   |
|---|-----|--|-----|--|
|   | 111 | أتفوين عورت  | 72  | جندب بن سفيان "                                      |
|   | 112 | نویں عورت کی مدحت انگیزرائے                                    | 73  | آپ ایشے کے کلام موزوں یا شعر کہنے کے توجیہات         |
|   | 113 | دسویں مورت کی مدح سرائی  | 75  | غزوهٔ حنین میں آپ ایک کا کلام رزمیہ                  |
|   | 115 | گياروين مورت حديث كي محوام زرع                                 | 75  | غزوهٔ حثین کی مجموعی حالت                            |
|   | 121 | امّ ذرع كادومراشو بر   | 77  | تفاخر بالنسب كى حقيقت                                |
|   | 124 | حضرت عا نشر ثكاه رسول النهايية مين                             | 79  | عمرة القصاءاورا بن رواحة كاشعار                      |
|   | 124 | حدیث سےمنتبط مسائل   | 81  | حضورا قدس الليلية كي مجالس مين شعروشاعري             |
|   | 126 | ﴿ باب ما جاء في صفة نوم رسول الثُّعَافِيُّهُ ﴾                 | 84  | غيرمسلم شاعراميه بن صلت کے ایمان افروز کلام کی تحسین |
|   | 126 | نبندكي كيفيت اوردعائي  | 85  | حسان بن صامت الوران کی جہادی شاعری کی تحسین          |
|   | 129 | نیند کی موت سے مشابہت  | 90  | ﴿ باب ماجاء في كلام رسول الله الله في السمر ﴾        |
|   | 130 | نیندسے بیداری کی بعثت سے مشابہت                                | 90  | رات کی قصہ گوئی اور حدیث اللیل کی کراھیت میں تطبیق   |
|   | 131 | دم ڈالنااور پھونک مارنا  | 91  | سمر ميں اعتدال                                       |
|   | 132 | نیندیں خرائے   | 93  | خرافته اوراس کی با تیں                               |
|   | 134 | کفران نعمت سے بیخ کاعلاج                                       | 93  | عورتوں کوصیغہ فد کورہے خطاب                          |
|   | 134 | روٹی کپڑااورمکان صرف خدادیتا ہے                                | 94  | قبله عذره  |
|   | 135 | الوقنارة   | 96  | حدیث ام زرع  |
|   | 135 | تعریس باللیل کے بعدوفت کالحاظ                                  | 102 | عورتوں کے جنبی خواہش کی پاسداری                      |
|   | 137 | ﴿ بِابِ ماجاء في عبادة رسول الله السيالية                      | 103 | پہلی عورت کا جا مع تب <i>عر</i> ہ                    |
|   | 137 | <i>صفة عبد بي</i> ت  | 104 | دوسری عورت کاذو معنی تبعره                           |
|   | 138 | بعثت سے قبل عبادت کی نوعیت                                     | 106 | تیسری عورت کی رائے                                   |
|   | 140 | عبادت مين مبالغداور مشقت شكرأتها                               | 106 | چۇتى گورت  |
|   | 141 | تورهم وانتفاخ قدمين  | 107 | پانچویں کی متی خیز ہاتیں                             |
|   | 143 | صلوٰ ةالليل اورعبادت مين حقوق الله اورحقوق العباد كي رعايت     | 108 | چھٹی کی او بیانہ ہاتیں                               |
|   | 146 | ابن عباسٌ میں حضور اقد س عظیم کے اندال کے تعلیم و تعلم کا جذبہ | 110 | ساتویں عورت کی دوٹوک باتیں                           |
| _ |     |  |     |  |

| صفحه | عنوانات   | صفحه | عنوانات  |
|------|---|------|--|
| 173  | ضروری تنمبیه  | 147  | قيام الليل مين مجابده نفس                                  |
| 177  | انبياء كيبهم السلام كى نيند                                     | 148  | ابن عباس کے کان مروڑنے کی حکمتیں                           |
| 179  | ا یک رکعت نمازنبیں  | 149  | فجر کی منتوں کے بعداستراحت                                 |
| 181  | تشيح وتميد  | 151  | صلوة الليل مين تعدادر كعات                                 |
| 183  | پوری رات نماز میں آیت کی حلاوت                                  | 152  | عبادت ميل مذرت وتخفيف                                      |
| 184  | قدرت كاملهاورمفت رحمت كاستخصار                                  | 154  | زيد بن خالدٌ   |
| 185  | پیږېضعف بی <i>څه کرنم</i> از پ <sup>ېر</sup> هنا                | 154  | گھروں میں تاک جھا تک                                       |
| 186  | ایک ہی نماز قائماُوقاعد آپڑھنے کامسلہ                           | 154  | حضورا قدى علية كى عبادت شب كے پھينمونے                     |
| 187  | آپيايي پر جيد فرض تني يافل                                      | 156  | نماز تبجد کے رکعات اور اضطراب روایات                       |
| 187  | نوافل كاامتمام اورتوسع  | 156  | ر سول التُعَالِينَةُ ہے بیس رکعات تر اوس کر پڑھنے کی تحقیق |
| 188  | امّ المؤمنين حضرت حضه ٌ   | 158  | مقدمهٔ اول   |
| 190  | سنن مؤ کده کی تعداداورزوا ند                                    | 159  | مقدمهٔ ثانیه   |
| 193  | صلوة فبجرى تنتين  | 160  | حسن وطول صلوة  |
| 199  | ﴿باب ماجاء في صلوٰ ة الصحل ﴾                                    | 161  | مقدمه ثالثه  |
| 199  | صخیٰ اور ضحوۃ   | 162  | مقدمه دالعه  |
| 200  | رشک کے کہتے ہیں   | 164  | ابراميم بن عثالً كي توثيق                                  |
| 200  | ثبوت صلو ۃ الضحی اور ابن عمر <sup>کے</sup> بدعت کہنے کی توجیہات | 166  | غيرمقلدين كى ناانصافى                                      |
| 202  | ابن ابی کیل کے قول کا مطلب                                      | 167  | دور فاروقیٔ میں بیس رکعات تراوت                            |
| 203  | حضرت عائشةً کی صلوٰة صنحیٰ کی نفی کی توجیه                      | 168  | دورعثانی میں بیں رکعات تراوت                               |
| 205  | موا ظبت اورتر ک صفحی کی حکمتیں                                  | 168  | دور مرتضوی میں بیں رکعات تراوی                             |
| 205  | صلوة ضخی اوربے بنیا دعوا می باتنیں                              | 169  | ويكرصحابه كرام وتابعين كأعمل                               |
| 207  | عندزوال الفتمس كامطلب اورباب سينطيق                             | 169  | ا جماعی ثبوت   |
| 211  | ﴿باب صلوة التطوع في البيت ﴾                                     | 170  | بين ركعات تراوح كريذا مبار بعد كالقاق                      |
| 213  | ﴿ باب ماجاء في صوم رسول الله الله الله الله الله الله الله ال   | 173  | احناف کی بعض کتابوں کے حوالا جات کا جواب                   |

| صفحه | عنوانات   | صفحه | عنوانات  |
|------|---|------|--|
| 240  | ما لك ادر ملك كى قر أت                          | 214  | رمضان کاوجه تشمیه                                  |
| 241  | قرءاة جمرأادرسرأمين اعتدال                      | 216  | نفل صوم وصلوٰ ة میں معمول کے اختلاف کی حکمتیں      |
| 242  | عريش  | 217  | مداومت اعمال اورترك اعمال كروايات مين تطيق         |
| 243  | عبدالله بن مغفل ع                               | 218  | نفل اعمال میں میا نہ روی                           |
| 243  | مئلة جيج  | 219  | وجه تسميه شعبان                                    |
| 243  | خوش آوازی ہے پڑھنا                              | 219  | تعارض روايات كي توجيه                              |
| 244  | غيرا ختياري ترجيع                               | 222  | ہر ماہ کے ابتداء کے تلین اور جمعہ کاروز ہ          |
| 245  | تعارض روايات ميس ترجيع                          | 223  | روايات تعين وعدم تعين ايام مين تطبيق               |
| 248  | ﴿ بابِ بِكَاءِ النِّي اللَّهِ ﴾                 | 224  | پیراورجعرات کے روز ہاورعرض اعمال                   |
| 248  | رونے کی دس قتمیں                                | 225  | عرض اعمال کے ایام واوقات کا تعدد                   |
| 249  | از پر اور مرجل کے معنی                          | 227  | امة كى سوات كے لئے تعدادوتعين ايام مي توسيع        |
| 250  | وجداورخوف کی حالت                               | 228  | قریش کے نز دیک صوم عاشوراء کی اہمیت                |
| 251  | سنخ كفوائد                                      | 228  | دی محرم کے یادگارواقعات                            |
| 252  | آپینای گواہوں کا گواہ بننے کے شدت احساس سے رونا | 228  | يبودك بإل اس دن كى عظمت                            |
| 253  | استماع قرآن سے دونے کے اسباب                    | 229  | فرضیت رمضان سے قبل اور بعد میں صوم عاشورا کی نوعیت |
| 253  | يمبيه   | 229  | متابعت يهود كے وجو ہات                             |
| 255  | كموف وخموف                                      | 231  | اعمال ميں دوام واستقامت                            |
| 625  | ابراجيم کي وفات                                 | 232  | الله كے لئے لفظ ملال كے اطلاق كا مطلب              |
| 257  | كسوف وخسوف كي حكمتين                            | 235  | عوف بن ما لک اُ                                    |
| 257  | صلوة محسوف وخسوف اورفقهاء كآراء                 | 236  | حديث طول قرأة كانرهمة الباب سيمناسبت               |
| 258  | ركوع مل تعدداور كيفيت مين واردروايات            | 238  | ﴿باب ماجاء في قرأة رسول الشُّولِيُّكُ ﴾            |
| 259  | احناف کے دلائل                                  | 238  | ایک ایک حرف ادا کر کے پڑھنا                        |
| 260  | نفخ اور بكاء                                    | 239  | حروف مدّہ ہ کے لحاظ                                |
| 261  | نزول مصائب مين استغفاروانا بت                   | 239  | وقفول کے ساتھ قر اُت                               |



| 1 | صفحه | عنوانات  | صفحه | عنوانات   |
|---|------|--|------|---|
|   | 282  | نی کریم الله تواضع کے پیکر تھے                   | 261  | اوہام جاہلیت کی تروید کے لئے خطبہ                   |
|   | 284  | نى كريم الليلة كاكافرى عيادت كرنا                | 263  | آیات سے اللہ کے ذریعے تخویف عباد                    |
|   | 284  | حضرت عمر می تواضع کی مثال                        | 263  | کسوف کے وقت خطبہ مسنون ہے یانہیں                    |
|   | 285  | ا کیفقبی اشکال                                   | 264  | كائنات كے طبعی اصول وضوالطِ قدرت البی كے منافی نہیں |
|   | 287  | رسول الله الله الله على كا مركسي كے دعوت پر جانا | 265  | حضوراقد کی اینے کے سامنے مرنے والی بٹی سے کیام ادب  |
|   | 287  | نى كريم الله كازرع كروى ركھوانا                  | 267  | امِّ الْحَمَّنُّ                                    |
|   | 288  | صحابہ کے بجائے میبودی سے قرض                     | 267  | ام ایمن اور حضوراقد س الله کے رونے میں فرق          |
|   | 289  | نى كريم الله في في الله في كيا                   | 268  | حضرت عثمان بن مظعون "                               |
|   | 290  | دورحاضر کے لیڈراورش <sub>ت</sub> رت پسندی<br>    | 269  | لفظ اراق اوراهراق کی شخقیق                          |
|   | 291  | قيا رتعظيمى كاحكم                                | 270  | مرنے والی بیٹی رقیقی یا ام کلثوم ا                  |
|   | 297  | حفرت جميع بن عمير "                              | 271  | لفظ مقارفة سے مراد                                  |
|   | 298  | حفرات حسنين كي مسابقت                            | 271  | جماع نه کرنے والوں کورجیح میں حکمت                  |
|   | 300  | گھر میں ٹائم <sup>ن</sup> یبل                    | 272  | حفرت عثان برلطيف تعريض                              |
|   | 301  | وجه بتعارف اورذوق عبادت                          | 272  | غيرمرم كاعمل مذفين مين شركت كأتحكم                  |
|   | 301  | ر مبانیت کی سیاه تاریخ                           | 273  | امام طحاویٌ کی توجیه                                |
|   | 302  | اصلاح امت کی فکر                                 | 273  | حضورا قدس وكالله كي اولاد                           |
|   | 303  | فرق <i>م</i> راتب                                | 276  | ﴿باب ماجاء في فراش رسول اللُّولِيُّكُ ﴾             |
|   | 305  | جا تزونا جا تز سفارش کی نوعیت                    | 278  | جعفر بن مي  |
|   | 307  | لالعينى باتول سےاحر از                           | 278  | آپ کے بستروں کے بارے میں روایات                     |
|   | 308  | مجسمه حياءو پيكرعفت                              | 280  | ﴿باب ماجاء في تواضع النبي المُلِيِّكُ ﴾             |
|   | 309  | تلقين تبشير اورتنفر                              | 280  | تواضع كامعنى  |
|   | 309  | قومی رہنما کا احترام                             | 281  | فرعونیت کی و با اوراس کی پیچان                      |
|   | 311  | الله كے عذاب سے ڈرانے والے                       | 282  | عینی کے بارے میں عیسائی عقیدہ                       |
|   |      |  | I    | I   |

| صفحه | عنوانات   | صفحه | عنوانات   |
|------|---|------|---|
| 342  | اعتراض نه کرنے کی حد                            | 311  | خوش خلقی اور بدا خلاقی                                    |
| 344  | بے مثال حلم اور دریا دلی کی مثالیں              | 312  | بھلائی کی تحسین اور حالات حاضرہ سے اپنے آپ کو ہاخبر رکھنا |
| 347  | انتقام لغت نبوی میں نہیں ہے                     | 312  | حزب اختلاف اوراختلاف مين اعتدال                           |
| 348  | نی کی بے حرمتی سے صرف نظر کیوں؟                 | 313  | حاکم کی ذمہداری   |
| 348  | اولين ترجيح امت پر سہولت                        | 314  | اميرشر بيت سيدعطاءالله شاه بخارك كالطيفه                  |
| 350  | كيانى كريم الليقة نے غيب كى؟                    | 316  | افضليت بمنشنى كامعيار                                     |
| 351  | حکمتوں پرمبنی مدارات                            | 317  | مصنوعی پروٹو کول  |
| 352  | كلام نبوى عليلية كالمقصد                        | 318  | مجلس میں بیٹھنے کے آواب                                   |
| 354  | بثاشت نبوى عليقة                                | 318  | وفود کے ساتھا نداز تخاطب                                  |
| 359  | شوق استماع                                      | 319  | صبر کاعمده نمونه  |
| 360  | هر بو لنے والے کی قدر                           | 320  | سائل کی حاجت برآری  |
| 360  | لتخل كانمونه                                    | 320  | حضوراقد کا اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ ا           |
| 361  | شوق علم   | 321  | اقوام عالم کی تاریخی آسبلی                                |
| 365  | رمضان اور سخاوت بین اضافے کا سبب                | 332  | ﴿ باب ماجاء في خلق رسول الله عليه الله المسالمة الم       |
| 366  | لقاء جبرئیل کے اثرات                            | 332  | حقیقت اخلاق   |
| 366  | ہواؤں سے تثبیہ اقص ہے                           | 332  | حسن خلق كامصداق   |
| 366  | حضورا قدس الشخصي مادي تخاوت اور فياضي كي مثاليس | 332  | اخلاق نمبی ہیں یاوھی                                      |
| 367  | كمال تؤكل كى وجه ي عدم ادخار                    | 333  | اخلاق نبوى الصلح كالمال                                   |
| 369  | انفاق میں احتیاط کی ناپندیدگی                   | 335  | حضرت زيد بن ثابت ً  |
| 371  | كيامدىيكابدله واجب،                             | 335  | احاطرا خلاق نبوى تلكيف ناممكن                             |
| 373  | ﴿باب ماجاء في حياء رسول الله والله عليه الله    | 337  | حضرت عمرو بن العاص ً                                      |
| 373  | حياء كالغوى اورا صطلاحي معنى                    | 338  | تاليف قلب كي حكمت   |
| 374  | حیاءاور پر دہ فطری عمل ہے                       | 338  | خنده پیشانی نه که مدح سرائی                               |
| 375  | نی کریم الله حیاء کے پیکر تھے                   | 340  | عنايت نبوى الصينة خدام پر                                 |



| صفحه | عنوانات   | صفحه | عنوانات   |
|------|---|------|---|
| 407  | حطرت الوالهيثم  | 378  | ﴿باب ماجاء في محامة رسول التُعَالِقَةُ ﴾  |
| 409  | زعب کا مطلب<br>ا  | 378  | علاج تؤكل كے خلاف نہيں  |
| 409  | ابوالصيثم كىمبمان نوازى   | 378  | فجامت مجرب طريقه علاج   |
| 410  | کھجورطعام ہے یا فاکھہ   | 379  | عِام <b>ت</b> پراجرت  |
| 411  | دودهدالے جانور کی ذخ  | 383  | عجامت کی بیار یوں کا علاج ہے  |
| 411  | مشور ہ امانت ہے   | 385  | علاج کے لئے مناسب وقت ہونا چاہئے  |
| 411  | معيارا نضليت  | 387  | ﴿ بِابِ ماجاء في اساءر سول الله ﷺ ﴾   |
| 412  | وصيت اور قبول وصيت  | 387  | نی کریم ایک کے اساء پر مستقل کتابیں   |
| 412  | اچھی ہیوی دنیا کی بڑی <del>نع</del> ت   | 388  | حفرت جبير بن مطعمة  |
| 413  | احچمااور بُراسائقتی   | 389  | امت برخصوصی رنگ احمه کا حاوی ہے   |
| 414  | حضرت سعد بن الي وقاص بيهلا تيرا نداز  | 390  | مثانے والا ماحی   |
| 415  | غزوهٔ خبط وسیف البحر  | 391  | بی نوع انسان کوجمع کرنے والا  |
| 415  | حضرت سعدٌ پرِ مُكتة چيني كالپس منظر   | 391  | آخری نبی  |
| 418  | حفرت عمر هابعثة علبة  | 392  | رحمت كائنات   |
| 418  | حضرت عثبة بن غزوان ً  | 393  | توبه کے حقیقی راہتے   |
| 418  | شهر بصره كاقيام   | 394  | تالع ومتبوع   |
| 419  | كافرحاكم صاحب فرات سے جہاد  | 394  | جہاد کوزندہ کرنے والے   |
| 420  | حفرت عتبة كاطويل خطبه   | 397  | ﴿ابِ فِي عِينَ الْبِي اللَّهِ |
| 421  | مشركين كاحضورا قدس فلينته كوذرانا دهمكانا   | 397  | اكل وشرب لازمه حيات مگراعتدال اورسادگی  |
| 422  | ضعف كامطلب  | 399  | الل بيت كى تنكد تى  |
| 424  | حصرت عبدالرحم <sup>ا</sup> ن بن عوف <del>"</del>  | 400  | فقرا ختیاری   |
| 425  | هبع اورنفی هبع تعارض کاحل   | 401  | پيٺ پر پاڳر   |
| 426  | خلاصه باب   | 401  | حضورافدس الله کو مجوک کے احساس پراشکال اور جواب<br>شدہ  |
| 427  | ﴿ باب ماجاء في سنّ رسول اللُّهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ | 406  | شيخين کي تنگدس ت  |

| صفحه | عنوانات  | صفحه | عنوانات                                     |
|------|--|------|---|
| 460  | حديث سالم ميل تضيلات   | 430  | حضرت دغفل "                                 |
| 463  | سالم بن عبيد "   | 433  | ﴿باب ماجاء في وفات النبي النبي الم          |
| 464  | اغماء ثبوت کے منافی نہیں   | 433  | آغا زمرض                                    |
| 464  | ا قامة صلوٰة اور حاتم وقت كي ذمه داري                            | 434  | موت کے دروازے پر بے پناہ صبر واستفامت       |
| 465  | صواحبات بوسف ستشبيه  | 435  | مرجع اسة صديق اكبربينه رب                   |
| 465  | وجه تشبيه  | 436  | امت کا حالت تجده میں آخری مشاہدہ            |
| 466  | اقتذاءا بوبكراورامامت ابي بكركى تأكيد                            | 437  | مصحف قرآن سےرخ زیبا کی تشبیہ                |
| 467  | حفرت عمر حواس مم كر بيٹھے  | 437  | امامت اني بكر                               |
| 467  | سيدصاحب كىشهادت كاجان نثارون پراثر                               | 438  | آخر يوم پراشكال كاحل                        |
| 468  | جنگ اکوڑ ہ خنگ   | 439  | حالت نزع میں طہارت اور پر دے کا اہتمام      |
| 469  | صحابة كاوفات انبياء سے پہلا واسطہ                                | 439  | گودعا ئشتگى ياعلى كى                        |
| 470  | ابو بكرصد ان من كے لئے صدمه اولی                                 | 442  | نې کريم الله کې سکرات الموت                 |
| 470  | صديق كى صداقت اور صحابيت مسلم تقى                                | 442  | شدا كدموت غير مقبوليت كي علامت نبيل         |
| 471  | انفرادی جنازه کیوں؟  | 443  | آپ آلی کا عالم نزع بھی امت کے لئے اسوؤ حسنہ |
| 471  | عشل کس نے دیا ؟  | 444  | موت کی آسانی قابل رشک نبیں                  |
| 472  | مخلفين   | 445  | اليوبكرصد نين                               |
| 473  | تد فین   | 447  | تدفين ميںاختلاف                             |
| 473  | خلافت صديقي پراجماع  | 449  | مەفن نى كانتخاب خدائى ہوتا ہے               |
| 474  | فاطمه گادرد و کرب  | 450  | ابوبكرصد يق كاب پناه صبر واستقامت           |
| 475  | تسلى كاا عداز  | 451  | ابوبكرصد يق پر فراق نبوى الملطح كااژ        |
| 476  | صدمه عظمیٰ مین عمگساروں کے لئے تسلی کاسامان                      | 452  | مقام صديق                                   |
| 478  | خلاصه باب  | 454  | نی کریم الله کی مذفین سے انوار میں کی       |
| 480  | ﴿باب ماجاء في ميراث النبي الله الله الله الله الله الله الله الل | 456  | تدفين مين تاخير كاسبب                       |
| 480  | رسول الشوافية نے مالی وراثت نہیں چھوڑی                           | 458  | حضرت الوسلمة أ                              |

| صفحه | عنوانات                                     | صفحه | عنوانات                                      |
|------|---|------|--|
| 508  | معتدل متوازن سرايا                          | 480  | رسول الشوافية كى ذخيرها ندوزى سے نفرت        |
| 509  | سندی بحث                                    | 482  | تركه ميراث ندبنغ كالحكمتين                   |
| 510  | فقدراً ی الحق                               | 485  | خمینی کی طحدانه باتیں                        |
| 511  | رویائے صادقہ اور جزئیت نبوت                 | 485  | ايرانى انقلاب صيهونى انقلاب                  |
| 514  | خاتمه                                       | 486  | ميراث كے سلسلے ميں شيعوں كامؤ قف             |
| 514  | حفزت عبدالله بن مبارك ْ                     | 490  | نېي اکرم الله کاد بگرتر که                   |
| 515  | قضاءاورمراحل زندگی شی وحی اورآ ثار کا اتباع | 499  | ﴿ بِابِ ماجاء في رؤية النبي الله في المنام ﴾ |
| 515  | تعبيرخواب مين اتباع آثار                    | 499  | خواب کیاہے؟                                  |
| 516  | سندكي ابميت                                 | 500  | روية نې چاخواب ہے                            |
| 516  | اساتذه ومشائخ کے انتخاب میں احتیاط          | 501  | اصل صورت میں ندو کیھنے کی وجبہ               |
| 518  | ميراسلىلةسند                                | 503  | شیطانی تصرف سے تحفظ کی وجہ                   |
| 519  | فېرست دوات مديث                             | 504  | حضرت طارق بن اشيم                            |
|      |   | 505  | حضورا قدس الله سيحسن اور حسين كى مشابهت      |
|      |   |      |  |
|      |   |      |  |
|      |   |      |  |
|      |   |      |  |
|      |   |      |  |
|      |   |      |  |
|      |   |      |  |
|      |   |      |  |
|      |   |      |  |
|      |   |      |  |
|      |   |      |  |

## ۳۴. باب کیف کان کلام رسول الله عَلَیْ الله عَلَیْ الله عَلَیْ الله عَلَیْ الله عَلَیْ الله عَلَیْ الله عَلَیْ

اس باب میں نبی کر پھوٹائٹ کی باتیں کرنے کے بارے میں احادیث لا کرواضح کیا جاتا ہے کہ آپ ہوتا ہے۔ آپ ہوٹا کا گفتار اور لہجہ کیسا تھا۔ ہر شخص کا اپنا طرز تکلم ہوتا ہے۔ بعض لوگ تیز بولتے ہیں۔ بعض آہتہ ہوتا ہے۔ بعض لوگ جملے درمیان میں کاٹ کر بولتے ہیں ایسے لوگوں کا کلام عموما مہم اور مخلق ہوتا ہے۔

دا کی ہوتا ہے۔ تو ہردا کی کے لیے ہردور میں کلام پرعبور ہونا چاہیے۔ تا کہ اس کا طرز تکلم مؤثر ہو۔ اس کی تعبیر دا کی ہوتا ہے۔ تا کہ اس کا طرز تکلم مؤثر ہو۔ اس کی تعبیر فصاحت و بلاغت سے بھی کرسکتا ہو۔ گویا دا کی کوشیح اللسان ہونا چاہیے (۱)۔ اس لیے کہ دعوت کی ممارت فصاحت و بلاغت سے بھی کرسکتا ہو۔ گویا دا کی کوشیح اللسان ہونا چاہیے آئی کر پر ہوئی اللہ تعالی نے دعوت کے بہتر ین طرز تکلم اور ادائے مراد کی ساری خوبیاں عطافر مائی تھیں۔ فصاحت و بلاغت کے درجہ علیا پر آپ تھائیے کی بہتر ین طرز تکلم اور ادائے مراد کی ساری خوبیاں عطافر مائی تھیں۔ فصاحت و بلاغت کے درجہ علیا پر آپ تھائیے کی بات کو کا مراد کی ساری خوبیاں عظافر مائی تھیں۔ فصاحت و بلاغت کے درجہ علیا پر آپ تھائیے کی بات کو کہتر کے ایک کو کا اس نے جا گل سے جا بال اور غی سے غی بھی آپ تھائیے کی بات کو کہتر کی کہتر کے اس کو کہتر کے ایک کو کہتر کے مقافر تھا کہ ہران پڑھ آ دی کے دل و د ماغ تک بیٹنے جا تا تھا۔ دوسری طرف اللہ تعالی کو یہ بھی منظور تھا کہ آپ پھائیے کی خصوصیت تھی۔ کو تھا تھا۔ حدیث کے دیگر انظامات کے ساتھ ساتھ ایک بڑا حصد اس بات کا بھی ہے کہ نبی کر پر ہمائیے کے کہتا تھا۔ کو مقام سے درجہ کمال پر ہے۔ آپ پھائیے ہمارے زمانے کے مقریرین کی طرح کی کا مام کا اسلوب عداگانہ اور فصاحت درجہ کمال پر ہے۔ آپ پھائیے ہمارے زمانے کے مقریرین کی طرح کے کرنے والے نہیں تھے بلکہ ٹر ہم کر ہو لئے تھے۔

(۱) ای لیے حضرت موتی نے جب ہارون کے لیے نبوت طلب فر مائی ۔ تو فصاحت کو بھی اپنی طلب کا مدار بنایا فر مایا ' و أخسى هارون هوا فصح منى لسانا فارسله معى ردا يصدقنى انى اخاف ان يكلبون (قصص آيت ٣٣٨) مرتب.

آ پھلی کا کلام سمجھ میں بہت جلد آتا تھا۔ اور اس وجہ سے علم ادب کے علماء نے آپ میں کا کلام ادب اعلیٰ کے لیے متخب کیا ہے اور تجیر ہیں۔

حضورا قدس می الله کا ادبی معیار: نثری ادب میں نبی کریم الله کا کلام جتنا مؤثر و رئشین ہے۔ اور جتنا ادبی جواہر یاروں پر شتل ہے۔

زمانہ جاہلیت سے لے کرآج تک کسی بھی ادیب کا کلام اس کا مقابلہ نہیں کرسکا۔ مولا نا ابوالحن علی ندوی اور عرب کے بعض علماء نے بھی آپ علی ندوی اور دیث کا اس تناظر میں استقر اء اور تنج کیا۔ اور اس عنوان پر مستقل کتابیں کھی ہیں۔ جن کو دیکھ کریہ بات خوب عیاں ہوجاتی ہے کہ آپ علیہ کا طرز کلام اور بات کرنے کا انداز کتناخوبصورت تھا۔ علماء میں بھی وہی علماء کا میاب ہوتے ہیں جوزمانہ کے انداز اور تقاضوں کے مطابق بات کرسکیں۔ دلنشین اور مؤثر انداز کلام ہمارے اکا ہر کا شعار رہا ہے۔ شاہ ولی اللہ ممام موجود اور مشعل راہ ہیں۔ تو مولا نانا تو کی اور دوسرے اکا ہر کودیکھیں۔ جن کے قصیحا نہ اور ادیبانہ خطب آج بھی موجود اور مشعل راہ ہیں۔ تو گویا یہ باب کیفیۃ کام رسول اللہ ایکھیے۔ کی وضاحت کرتا ہے۔

(۱) حدّثنا حميد بن مسعدة البصرى ثنا حميد بن الأسود عن أسامة بن زيد عن الزهرى عن عروة عن عائشة قالت ما كان رسول الله عليه الله عليه الله عليه على يتكلّم بكلام بين فصلٍ يحفظه من جلس إليه (۱).

(۱)سنن ابي داؤد ۲۰۵/۲ محتاب الادب باب الهدى في الكلام، جامع ترمذي ۲۰۵/۲ كتاب المسنق المسنقب باب في صفة رسول الله على المسنن الكبرئ للنسائي ۹/۲ و ۱ كتاب عمل اليوم والليلة باب سردالحديث (مختار)

یحفظہ من جلس المیہ الی اس مقام پر عند کے معنی میں ہے۔ یعنی من جلس عندہ اور جلوس سے بھی حقیقی معنی مرادنہیں ہے۔ بلکہ مراد ہیہ ہے کہ جو بھی شخص ان کے کلام کو منتا۔ اگر چہوہ کا فرنا مراد کیوں نہ ہو۔ سنتے ہی وہ آپ اللّی ہے کہ کام کی تہہ تک پہنی جاتا۔ گویا آپ اللّی ہے کہ ہاں کا متعلم جیسے بھی ہوتا ذہین یا متوسط یا غبی ہر کسی کو آپ اللّی ہے کہ بات یا دہوجاتی تھی۔ جو شخص آرام سے بولتا ہے اس کی بات مخاطبین کو یا دہوجاتی تھی۔ جو تھی ہیں۔

<sup>(</sup>۱) هيمين من حفرت عائشگا ايك مديث ب فرماتى بين كان يحدث حديثا لو عدا لعاد لاحصاه (مختار) (۲) صحيح بخارى ا ۱۰۱ كتاب العلم باب من اعادالحديث ثلاثاً الخ، جامع ترمذى ۱/۱ ۱۰۱ كتاب العلم باب من اعادالحديث ثلاثاً الخ، جامع ترمذى ۱/۱ ۱۰۱ كتاب الاستيذان باب ماجاء فى كراهية ان يقول عليك السلام، المستدرك للحاكم ٢٤٣/٢ (مختار)

ترجمہ: حضرت انس فرماتے ہیں کہ نبی کریم ایک اسکو تین مرتبدد ہراتے تھے۔ تاکہ مات ذہن شین ہو سکے۔

واعی کے کلام میں کراری ایمیت:

یعید الکلمة ثلفا یہ عمواً خطیوں اوروعظ و تقریر کے دوران ہوتا تھا۔ آپ اللہ است کو گلام میں کر اس کے دوران ہوتا تھا۔ آپ اللہ است کو گلام اس لیے دہراتے تھے تا کہ سب لوگ است بھے لیس۔ اور اس میں غوروند پر کریں (۱) گاہے گاہے مضمون ایبا ہوتا ہے۔ مثلاً ایک بار کبائر کا ذکر کرتے ہوئے آپ اللہ فی نے جب شہادہ النوور (جموثی گواہی) کا ذکر کیا۔ تو اس کی بار کبائر کا ذکر کرتے ہوئے آپ اللہ فی نے جب شہادہ النوور ، راوی کہتے ہیں کرتی کہم آپ اللہ کے فائم ارفر ما یا و شہادہ النوور ، و شہادہ النوور ، راوی کہتے ہیں کرتی کہم آپ اللہ کے فائم ارفر ما فاموش ہونے کی بناء پر بار بارفر ما یا و شہادہ النوور ، و شہادہ النوور ، راوی کہتے ہیں کرتی کہم آپ اللہ کے سے حاس لیے کہ بادی ، میلخ اور داعی کا مقام شفیق باپ جسے ہوتا ہے۔ جو اپنی اولاد کی خیرخواہی کے لیے کر ارواصر ارتو کیا اس سے بھی آگے چلا جا تا ہے۔ اس کے برعکس قانون کی ذبان اور طرح کی ہوتی ہے۔ یو تو جمل الفاظ ذکر کرتا ہے۔ اور وہ بھی صرف ایک بار اس کے بعد جروتشرد کا نمبر آتا ہے۔ لیکن جو سمجھانا چاہتا ہے۔ وہ تکر ارسے تھا تا ہیں۔ بار بار سمجھانے کی کوشش کرتا ہے۔ اس تکرار کی تعبیر قرآن میں سمجھانا چاہتا ہے۔ وہ تکر ارسے تھا تاہیں۔ بار بار سمجھانے کی کوشش کرتا ہے۔ اس تکرار ارادی تعبیر قرآن میں ایوں ہوتی ہے کہ و صرف اللہ بات لعلم میں جعون (احقاب ۲۷) تر جمہ: اور ہم نے بار بار نشانیاں بیان کرو ہی تا کروہ رجوع کریں۔

كذالك نصرف الآيات لقوم يشكرون. (اعراف ۵۷)

ترجمہ: ای طرح ہم طرح طرح کی نشانیاں بار بار بیان کرتے ہیں۔ان اوگوں کے لیے جوشکرادا کرتے ہیں۔ تصریف آبات کی مستقل موضوع سے ایک مستقل موضوع سے ایک مستقل موضوع سے ایک مستقل موضوع سے ۔اور بکثر ت ایسے امور ہیں۔جنہیں اس حکمت کے تحت بار بار دہرایا گیا ہے۔مثلاً حضرت آدم کا قصہ بار بار و محلف پیرایوں میں ذکر کیا جاتا ہے۔موگا اور فرعون کا قصہ متعدد مقامات میں فدکور ہے۔

(١)قال البيجوري وحكمته ان الاولى للاستماع والثانية للوعى وقيل للتنبيه والثالثة للتفكر و قيل للامر (المواهب اللدنية ص ١٢١) (مختار)

تکرار کی اہمیت: ظاہر بین لوگ تو اس تکرار براعتراض کریں گے کہ پشنیج ہے۔ لیکن اس کا جواب وہی ہے کہ تکراراصول وقوانین کی ترتیب میں شنج ہو۔ تو ہولیکن مبلغ کے لیے اس میں کوئی عیب نہیں۔ وہ تو جاہتا ہے کہ نخاطب میں انقلاب آئے ۔اور بات اس کے دماغ میں بیٹھ جائے ۔ تو وہ اگرسو بار بھی مناسب سمجھے این بات وہراتارہے گا۔اس سلسلے میں قرآن کا بھی دوسرے کتب سے موازنہ کرنا غلط ہوگا۔ کیونکہ یہاں تو دعوت وہدایت مقصود ہے۔اس لیے نکرار کی یہال گنجائش بلکہ ضرورت ہے۔اوراس لئے نبی کریم اللہ بھی تکرار کیا کرتے تھے۔حضرت تھانو کٹے نے بعض مواعظ میں ایک مثال کے ذریعے یہ بات واضح فرمائی ہے۔ فرماتے ہیں کہایک بارایک بوڑ ھے خص کا ایک جوان بیٹا تھااور حسب عادت بڑھایے کی حالت میں جوان یٹے والدین سے نالاں رہتے ہیں۔ بے حوصلہ ہو جاتے ہیں۔ بات بات بران کو دھتکارتے رہتے ہیں۔ ا یک دن ایک کو اکہیں بیٹھا تھا۔ باپ نے بیٹے سے یو چھا کہ بیٹا پیرکیا ہے؟ بیٹا بولا کو اہے۔اس نے پھر یو جھا تو بیٹے نے ذراز درسے جواب دیا کہ کو اہے۔ تیسری بار پھریو چھا تو اس نے کہا کہ بات سجھتے نہیں بس شور میار کھا ہے؟ کیا ہے؟ بیسیوں مرتبہ تو کہہ چکا ہوں کہ کو اہے۔ پھر جب اگلی مرتبہ اس نے پوچھاتو خوب ڈائا۔باپ نے بیسناتو بیٹے کوایک جانی دیدی اور کہا کہ جاؤوباں ایک صندوق میں ایک مختی یڑی ہےوہ لےآ ؤ۔ بیٹا مختی لےآیا۔اس پرایک سوکیبرین تھیں۔باپ نے کہا کہ بیٹا جبتم چھوٹے تھے تو ایک دن میرے ساتھ بیٹھے تھے ایک کو اآ کرسا منے بیٹھا تو تم نے یو چھاریکیا ہے میں نے کہا کو اے تم نے پھر یو چھامیں نے پھر بتایا۔اس طرح تم نے سومرتبہ یو چھااور میں اسی طرح محبت سے جواب دیتار ہاساتھ ساتھ ہر جواب کے ساتھ اس مختی پر ایک کلیر بھی کھنچتا رہا۔لیکن آج میں نے تم سے صرف تین بار یو چھا تو چوتھی مرتبہتم مارنے پرتل گئے۔

بہر حال جب والدین کی شفقت اتن ہے کہ ایک سوم تبہ سمجھانے سے نہیں تھکتے۔ تو اللہ تعالیٰ کی محبت تو مخلوق کے ساتھ کروڑوں درجہ بڑھ کرہے۔ اس طرح رسول میلینے کی شفقت بھی بے مثال ہے۔ وہ بھی تو داعی تھے۔ اور داعی اپنی دعوت میں بہت حریص ہوتا ہے۔

حضرت شاه اساعیل شهیدگا جذبه دعوت: حضرت شاه اساعیل شهید کے بارے میں آیا ہے کہ ایک

مرتبدد بلی میں ایک عظیم اجتاع سے خطاب فرمایا۔ تقریر ختم ہوئی تو ایک آدمی انہیں ملا۔ اس نے بتایا کہ وہ میلوں دور سے صرف آپ کی تقریر ختم ہوچکی تھی۔ اس دور سے صرف آپ کی تقریر ختم ہوچکی تھی۔ اس لئے بہت دکھ ہوا۔ شاہ صاحب بجھ گئے کہ دور سے آئے ہیں اور سچے طالب ہیں۔ البذا آپ نے فرمایا کہ پریشانی کی کوئی بات نہیں۔ میر سے ساتھ آؤ۔ چنا نچے جب سب لوگ چلے گئے۔ تو آپ دوبارہ منبر پر بیٹھ گئے بویشانی کی کوئی بات نہیں۔ میر سے ساتھ آؤ۔ چنا نچے جب سب لوگ چلے گئے۔ تو آپ دوبارہ منبر پر بیٹھ گئے اور وہ ساری تقریر جوابھی کی تھی اس ایک آدمی کے ساتھ دہرائی۔ دوست کے تقاضوں کو پورا کرنے کی جومثال ان بزرگوں نے قائم کی تھی۔ اس کی نظیر آج کے مقرروں میں کب ملتی ہے۔

یہ مسئلہ ایک دلولہ اور تڑپ کا متقاضی ہے۔ دین اور دعوت دین کے ساتھ عشق ہو، مشن سے لگا وَاور جذبہ ہو، تب بیہ بات ممکن ہے تو دعوت کی غرض سے نبی کریم اللہ کا بھی یہی انداز تھا کہ کلمہ کو تین بار دہراتے۔

(٣) حدثنا سفيان بن وكيع أنبانا جميع بن عمرو بن عبدالرحمن العجلى ثنى رجل من بنى تميم من ولد ابى هالة زوج خديجة يكنى أبا عبدالله عن إبن لأبى هالة عن الحسن بن على قال سالت خالى هند ابن أبى هالة وكان وصّافاً قلت صف لى منطق رسول الله عَلَيْ قال كان رسول الله عَلَيْ متواصل الاحزان دائم الفكرة ليست له راحة طويل السكت لا يتكلّم في غير حاجة يفتتح الكلام و يختمه با شداقه و يتكلّم بجوامع الكلم كلامه فصل لا فضول و لا تقصير ليس بالجا في ولا المهين يعظم النعمة ان دقّت لا يذمّ منها شيئا غير أنّه لم يكن يذمّ ذواقاو لا يمدحه و لا تغضبه الدنيا و لا ما كان لها فاذا تعدى الحق لم يقم له غضبه شئى حتى ينتصر له لا يغضب لنفسه و لا ينتصر لها اذا الماراشار بكفه كلها واذا تعجب قلّبها واذا تحدّث اتصل بها وضرب براحته اليمني بطن ابهامه اليسرى وإذا غضب اعرض

واشاح وإذا فرح غض طرفه جلّ ضحكه التبّسم يفتّرسن مثل حب الغمام(١).

ترجمہ: حضرت حن بن علی کہتے ہیں کہ میں نے اپنے ماموں ہند بن الی بالڈسے جو نی کریم اللہ کے اوصاف کثرت سے بیان کرنے والے تھے۔عرض کیا کہ مجھے نی كريم الله كى گفتگو كے انداز كے بارے ميں بتائے۔ انہوں نے فرمايا كه ني كريم الله (امورا خرت كيلة) بكثرت فم مين متلار بنه والے تھے۔اور بميشدامت کے لیے فکرمندر ہتے تھے۔(دنیوی نعمتوں سے) آپیالیہ کوراحت نہیں ملتی تھی۔ طویل خاموش رہنے والے تھے بلاضرورت بات نہیں کرتے تھے۔ بھرے منہ سے بات شروع اور بھرے منہ سے ختم کرتے تھے۔ متکبرین کی طرح ہونٹوں کے نوک پر نہیں بولتے تھے۔ یا بیکہ اللہ تعالیٰ کے نام سے بات شروع اوراس برختم کرتے تھے۔ كما في نسخة \_ (زياده معاني يرمشمل ) جامع الفاظ بولتے تھے \_ آ يہ الله كے بولے ہوئے الفاظ اور جملے ایک دوسرے سے متاز اور الگ الگ ہوتے تھے۔ ہاتوں میں (بےمقصد) زائد الفاظ ہوتے نہ الفاظ مقصد سے کم تر ہوتے تھے۔ درشت وسخت مزاج نہیں تھے۔نہ کسی کی تذکیل فرماتے تھے کسی بھی نعت کواگر چہوہ تھوڑی ہو بہت ہوی نعت بھتے تھے۔اس کی مذمت نہیں کرتے تھے (بلکہ مدح کرتے تھے) البتہ کھانے کی چیزوں کی خدمت کرتے نہ (زیادہ) تعریف۔ دنیا اور نہ دنیاوی اشاء آ سَعَالِيَةً كُوغْصِهِ ولا تَى تَقِيلِ مُكرِجِب فِي سِتِحِاوز كياجِاتا تواس وقت آسِيَالِيَّة ك غصہ کے سامنے کوئی چیز نہیں تکتی تھی۔ جب تک آپ تلک اس کا انتقام نہ لیتے تھے۔ اینی ذات کے لیے نہ غصہ فرماتے تھے نہ اپنی ذات کے لیے انتقام لیتے تھے۔ جب اشاره فرماتے تو پورے ہاتھ سے اشاره فرماتے تھے۔ جب تعجب کا اظہار فرماتے تو

(١)سبق تخريجه رقم حديث ٧

ہاتھ بلیف لیتے تھے۔جب بات کرتے تو (جھی بات کے ساتھ) ہاتھ کو ہلا یا کرتے تو اور دائی جھیلی کو بائیں ہاتھ کے انگو تھے کے اندرونی حصہ سے لگا لیتے تھے۔ جب (کسی سے ) ناراض ہوتے تو (حیا اور کرامت نفس کے وجہ سے ) اعراض فرماتے تھے۔ اور اس میں مبالغہ کرتے تھے۔ جب خوش ہوجاتے تھے تو آ تکھیں (گویا تو اضعاً) بندفر ماتے تھے۔آ پھیلیکھ کی زیادہ تر ہنمی تبسم ہوتی تھی۔ (اس وقت) دانت مبارک اولوں کی طرح (سفید آ بگین ) دکھائی دیتے تھے۔

عن ابن لابی هالة يهال ابن سے ابن الا بن مراو ہے جیسا كه باب اول كى ساتويں صديث كى سندكى تشریح ميل ذكر كر يك ميل ان كانام مند تھا۔ سندكى تشریح ميل بيان كى جا چكى ہے۔

قلت صف لی منطق النے لین نی کریم اللہ کے اور خاموثی کی کریم اللہ کے اور خاموثی کی کیفیت کیا تھی۔
موقع پر وہ او لتے تھے اور کیسے او لتے تھے۔ کس موقع پر خاموش رہتے تھے۔ اور خاموثی کی کیفیت کیا تھی۔
نی کریم اللہ اور احساس ذمہ داری: دائم الاحزان النے لینی اول تو سیجھ لینا چا ہے کہ نی کریم اللہ اور خیر ذمہ دار نہ تھے۔ جو تخص زیادہ بے فکر آ دی اور غیر ذمہ دار نہ تھے۔ جو تخص زیادہ بے فکر ہو۔ اسے اپنی ذمہ دار ایوں اور فرائض کا احساس نہیں ہوتا۔ وہ ہر وقت ہنستار ہتا ہے، تالیاں بجاتا ہے کپ شپ لگا تا ہے۔ بر سے لوگ الی باتوں کے لیے فارغ نہیں ہوتے۔ بلکہ ان کی بات بھی حساب سے، اٹھنا بیٹھنا اور ملاقات کرنا سب کام ایک ٹائم ٹیبل کے تحت ہوتے ہیں۔ پھر تین غیر کا ہر قول ایک بات بھی حساب سے، اٹھنا بیٹھنا اور ملاقات کرنا سب کام ایک ٹائم ٹیبل کے تحت ہوتے ہیں۔ پھر تین غیر کی ہوتا ہے۔ اور ہر قول ہدا ہت اور تہلی کا کوئی فاکہ وزیر میں ہوتا ہے۔ اور ہر قول ہدا ہت اور تہلی کا کوئی فاکہ وزیر وہ ان سے صادر نہیں ہوتی ۔ وہ فکر مندر ہتے ہیں ان کو اپنے مشن باتیں ہوتا ہے۔ خصوصاً نی کریم اللہ کے ساتھ امت کی فکر صدسے زیادہ تھی۔ رات کے وقت روتے ہے۔ حتی کہ اللہ تعالی نے اس پر سیم پیر مادی۔ لم ملک باخع نفسک علی آثار ہم ان اور گھف ۲) گئی تھی ان کی آئی فکر ہے کہ شاید تو دکو ہلاک کردو گے۔ لم یو منو ا بھذا الحدیث اسفا (کھف ۲) گئی تھے ان کی آئی فکر ہے کہ شاید تو دکو ہلاک کردو گے۔ اور مرک ہے کہ مواد گے۔

ببرحال آپ ایسی کی فکرمندی کا سبب اپنی ذمه داری کا احساس اور امت کاغم تھا۔علامہ ابن قیم م

لیست له راحة بیگرشته صفات کاایک لازی نتیج بیان کرتے ہیں۔ یونکه گرمندی اوراهتغال قلب، راحت وفرحت کے ساتھ جمع نہیں ہوتے۔ یعنی آپ آلیہ ان لوگوں کی طرح نہ سے جن کو دنیاوی قلب، راحت وفرحت کے ساتھ جمع نہیں ہوتے۔ یعنی آپ آلیہ ان لوگوں کی طرح نہ سے جن کو دنیاوی آسائٹوں مثلاً باغ، بنگلہ موٹر، ہوئل، سینما اور تفریح گاہ میں خوشی اور راحت محسوں ہوتی ہے۔ البتہ آخرت کے کاموں سے آپ آلیہ کو صرت ضرور ہوتی تھی۔ تو گویامعنی بیہ ہواکہ لیست له راحة من امور اللہ دنیاوی آسائٹیں آپ آلیہ کی راحت کا باعث نہیں تھی عبادات سے سرور ملتا تھا۔ فرماتے ہیں کہ ''جعلت قرة عینی فی الصلواۃ (۱) '' میری آنکھوں کی ٹھنڈک نماز میں ہے۔ نیز فرمایا ''اقم الصلواۃ یا بلال ارحنا بھا(۲) 'اے بلال نماز کے لیے بلاؤ۔ اور نماز سے نمیں راحت دلواؤ۔

بزرگان دین کا انہاک فی الدین: آج بھی بعض بزرگ ایسے ہوتے ہیں کہ وہ امریکہ، ہالینڈ کے عمایشیوں سے بھر سے بازاروں میں پھرتے ہیں۔اوران کواس بات کی پرواہ تک نہیں ہوتی کہ یہ بازار ہیں۔عورتیں ہیں مناظر ہیں اور سیر سپاٹوں کا مقام ہے۔وہ اپنے بستر سے کو کندھے پر رکھے اپنی ونیا میں مستغرق ہوتے ہیں۔ونیا کے امور سے انہیں کوئی راحت کوئی دلچیتی نہیں ہوتی۔وہ چاہتے ہیں کہ اپنامشن

<sup>(</sup>۱)نسائی ج۲ ص۹۲ باب حب النساء(مختار)

<sup>(</sup>٢) مشكواة ص ١ ١ كتاب الصلواة باب القصد في العمل (مختار)

کسی کے پاس پہنچا دیں۔ جس طرح کسی طالبعلم کو امتحانات تدریس اور تبلیغ دین وغیرہ کی ذمہ داریوں کا احساس، زیب وزیت اور تھائ بھائ سے دور رکھتا ہے۔ جلیے جلوسوں اور احتجاج اور ایجی ٹیشوں سے کتر اتا ہے۔ کتابوں میں محواور علمی مشاغل میں گن رہتا ہے اور فضول مشغلوں میں تسکین محسوس نہیں کرتا۔ قرآن میں بھی آتا ہے کہ ان المللہ لا یعجب الفوحین یعنی دنیا سے تلذذ حاصل کرنے والوں کو اللہ تعالی نا پہند کرتا ہے۔ یہ مطلب نہیں کہ نبی کریم اللہ ہم وقت ترش رور ہے تھے۔ بلکہ آپ آلی اللہ قات اور باتوں کے دوران نہایت کشادہ رو نظر آتے تھے۔ لیکن وہ کیفیت بھی نہیں تھی جو دنیا داروں اور فرحین کا خاصہ ہے(۱)۔ آپ آلیکے الی بے لگام خوشی کونا پہند فرماتے تھے۔

فليضحكوا قليلا وليبكوا كثيرا الكوبسناكم اوررونازياده عاجيد

طویسل السکت ماقبل سے ضمناً آپ الله کا خاموثی معلوم ہوتی ہے۔ کیونکہ فکر مندی میں سکوت لازی ہوتی ہے۔ کیونکہ فکر مندی میں سکوت لازی ہوتی ہے۔ لیکن پھر بھی صراحة اسے ذکر کردیا۔ اس لیے کہ اصل مقصداتی بات کا بیان ہے کہ عموماً آپ الله خاموثی کی بہت تاکید کے ساتھ تلقین کیا کرتے تھے۔ ورسکوت غالب تھی بلکہ آپ الله خاموثی کی بہت تاکید کے ساتھ تلقین کیا کرتے تھے۔ چنا نچ فرماتے ہیں کہ من کان یہؤمن بالله والیوم الآخر فلیقل خیراً اولیسکت (متفق علیہ) نیز ارشاد ہے 'من صمت نجا'' (ترندی) جوخاموثی رہاوہ چھوٹ گیا۔

بہرحال آپ آلی کے طویل خاموثی سے بیاستبعاد بھی دور ہوجاتا ہے کہاتنے سارے احادیث عام لوگوں کو کیسے یاد ہوئے دو ہوں کہ جب کوئی شخص اکثر خاموش رہتا ہے۔ بھی بھی بولتا ہے۔ تو ہو لتے ہوئے اس کی طرف زیادہ توجہ دی جاتی ہے۔ سامعین کو بات اہم گئی ہے اور اس طرح اس کی باتیں دلوں میں پیٹھتی جاتی ہیں۔

(۱) بعض شراح نے لیست اسد راحة کی تفصیل کرتے ہوئے کھاہے کہ آپ اللہ پرکوئی وقت بغیراطاعت البی کے نہ گزرتا تھا۔ اور آپ اللہ ہمیشہ عبادت میں مشغول ہوتے تھے۔ اس پرمسزاد میک اصلاح امت اور حق کی علمبر داری کی ذمه داریاں اور دین کی سربلندی کے لیے تگ و دو بھی کرنی تھی۔ تو گویا آپ آلیہ فیا ہری اور باطنی طور پرمعروف رہتے تھے۔ فراغت اور آرام وراحت کاموقعہ بی نہیں تھا۔ (اتحافات مے ۲۷) (اصلاح الدین)

یختمه باشداقه بعض شخول میں یختمه باسم الله ندکور ہے۔اللہ تعالی کے نام سے شروع کرنے سے کلام میں برکت اور تا چیر میں اضافہ مقصود ہوتا ہے۔ لیکن یہاں بالحضوص ہم اللہ کی جگہ ذکر اللہ سے ابتداء مراد ہونا چا ہیے۔ جبکہ موجودہ شخوں میں باشداقه کا ذکر ہے۔اشداق شدق کی جمع ہے۔ شدت باچھو کہتے ہیں گراشداق جمع سے مرادیہاں پر شنیہ یعنی شدقین کی گئی ہے۔اور مراد یہ ہوگی کہ آ ہے تا چھوں سے بات شروع اور شم فرماتے تھے۔

بعض اوقات مقرر یا مدرس ابتداء کلام آبسته اور مدہم لیجے میں کرتا ہے۔ حتیٰ کہ پاپٹے چومنٹ تک اس کی بات بھی بی نہیں جاتی ۔ اور بعض لوگ آخر میں بات کو کمز ور اور ست لیجے میں کرتے ہیں۔ کہ بھینا دو بھر ہوجا تا ہے۔ یا پھر درمیان میں انداز بیان کو بدل کر بلاضر ورت محض تنوع پیدا کرنے کی کوشش کرتے ہیں جوا کر مصر ہوتا ہے اور بھی بھی محض تکبر اور رعونت کی وجہ سے با تیں کرنے والا منہ کھو لئے کی تکلیف نہیں کرتا۔ اور بہت دھیے انداز سے بولتا ہے۔ یہ بھی سامع پر بو جھ بنتا ہے۔ آپ بھیلئے کی بات الی نہیں تھی۔ بلکہ آپ بھیلئے کے کلام کی خوبی بیتی کہ تفری کھر محرکر اول سے لیکر آخر تک بات کرتے تھے۔ جس کی وجہ سے کلام بیس رہتا تھا۔ اور بہی فصاحت کا نقاضا ہے۔ لیکن اس کا یہ مطلب نہیں کہ ایسا کرنے میں آپ بھیلئے مبالغہ سے کام لیتے تھے۔ اور بحکلف جوش پیدا کرتے تھے۔ جے تشدق کہتے ہیں۔ اور جو بعض مقررین کا مبالغہ سے کام لیتے تھے۔ اور بحکلف جوش پیدا کرتے تھے۔ جے تشدق کہتے ہیں۔ اور جو بعض مقررین کا انتا عامل ہوتا تھا۔

بجو امع المكلم لیمنی آپ ایس کلمات اور جملوں کا اپنے کلام میں استعال فرماتے تھے۔ جن میں نہایت ورجہ کی جموعے محدثین میں نہایت ورجہ کی جامعیت اور کثرت معانی ہوتا تھا۔ آپ آلیک کے جو امع المکلم کے گئی مجموعے محدثین حضرات نے جمع فرمائے ہیں۔ اس سلسلے میں متعدد تالیفات بھی موجود ہیں۔ ایک چھوٹا ساجملہ استے دقائق اور باریک نکتوں پر شتمل ہوتا ہے۔ کدر جنوں احکام ومعانی اور مسائل وکھم اس سے مستبطہ ہو سکتے ہیں۔ لعض لوگوں نے لکھا ہے کہ جو امع المکلم سے قر آن مجید مراد ہے۔ جس طرح کہ دوسری جگہ او تیب جو امع المکلم کی ایک قوجیہ بھی ہے کہ قرآن مجید مراد ہے۔ کین ملاعلی قاری فرماتے ہیں کہ او تیب جو امع المکلم کی ایک قوجیہ بھی ہے کہ قرآن مجید مراد ہے۔ لیکن ملاعلی قاری فرماتے ہیں کہ

والا ظهر ان المراد بها اعم فان المدح بها اتم لين ظاهريه وتاب كرقرآن كى طرح احاديث بهى جوامع الكلم كامصداق بير \_ كونكه بى كريم الله كل مرح احاديث كى جامعيت بيس زياده ب قرآن مجيدتو كلام الله بهدات كلام الله ب اس كى جامعيت اورحس بيس تو كلام نهيس ب

لا فسنسول و لا تقصير نه آپ آلي كام من حشوه طويل موتا تفاكه دل اچشجائه اور ملال كاسب بن جائه اور نه اتنا ايجاز واختصار موتا جومقصد من مخل مو اورا ظهار مدعا سے قاصر رہے۔ اس جملے كاعراب ميں يا نجي احتمالات جيں جيسا كه لاحول ولاقوة ميں بيان كياجا تا ہے۔

لیسس بالب افی جفاء سے اسم فاعل ہے جو براوروفاء کی ضدہ ب تو معنی بیہوگا کہ آپ آلی سنگ دل اور برسلوکی کرنے والے نہ تھے۔ بلکہ آپ آلی کا حسن سلوک اور نرم دلی اقرباء اور مؤمنین تک بھی محدود نہ تھی۔ آپ آلی کی رعایتوں اور حسن سلوک نے تو دشمن کفار کے دل جیت لیے تھے۔ اور یہی داعی کا بڑاوصف ہے۔ اللہ تعالی فرماتے ہیں کہ فیسما رحمة من الله لنت لهم ولو کنت فظا غلیظ القلب لا نفضوا من حولک (آل عمران ۹۵۱)

 تعالی نے بردی نعتوں سے نوازا ہے۔ پھر بھی اپنے سے او نچے معیار زندگی کے لوگوں پر نظر رہتی ہے۔ اور اس وجہ سے دی ہوئی عظیم نعتوں کی بے قدری کرتے ہیں۔

تمام نعمین قابل قدر بین: لایده منها شیئاً مین نعمت میں سے کسی چیز کی ندمت نبیں کرتے تھے۔ دنیادی ہو یا اخردی اپنی ہو یا پرائی برنعت کو قابل قدر اور وجوب شکر کا موجب سجھتے تھے۔ کفرانِ نعمت متکبرو متجر لوگوں کا شیوہ ہے۔ جن سے آپ اللہ کوسوں دور تھے۔

غیب انه لم یکن یذم ذو اقا ذو اق ذو ق سے فعل کا صیغہ ہے جومفعول لینی مذو ق کے معنی میں ہے اور یہ ماکول ومشروب دونوں کو شامل ہے۔ یعنی اگر چہ دیگر نعتوں کی آپ آلی ہے تھے اسلامی اسلامی آپ آلی ہے کا رویہ مختلف تھا۔ ان کی خدمت سے قو آپ آلی ہے اجتناب کرتے سے لیکن کھانوں کے سلسلے میں آپ آلی ہے کا رویہ مختلف تھا۔ ان کی خدمت سے قو آپ آلی ہے اجتناب کرتے ہی سے۔ کیونکہ کھانے نعم خداوندی میں سے عظیم ترین فعت ہیں۔ اور ان کی تحقیر متکبرین ہی کا کا م ہوسکتا ہے۔ مگر دوسری نعتوں کے برعس کھانوں کی مدح سرائی سے آپ آلی ہے کہ کو ات سے کیونکہ کھانوں کی مدح سرائی سے آپ آلی ہے کہ کہ کہ اسلامی میں اور کھانوں کی مدح سے موقعہ پرمیز بان کی تطیب خاطر کے لیے بھی مینڈ سے کی بارے میں تعریفی کھانے ہول لیتے سے۔ لیکن ہر لمحدرو ٹی ، سالن ، کھیر ، علوا ، پلاؤ ، مرغ اور مینڈ سے کی با تیں نہیں کرتے سے ۔ جوح صاور شکم پرستی کی علامت ہے۔ اگر چہ کفران نعت اور کھلانے والوں کی دل شکنی کے خوف سے کھانوں کی خدمت سے بھی اجتناب فرماتے سے۔ آگر چہ کفران نعت اور کھلانے والوں کی دل شکنی کے خوف سے کھانوں کی خدمت سے بھی اجتناب فرماتے سے۔ آگر چہ کفران نعت اور کھلا نے کھانوں کی خوف سے کھانوں کی خدمت سے بھی اجتناب فرماتے سے۔ آگر چہ کفران نعت اور کھلانے کھانوں کے حتی میں حریصوں اور شکم پرستوں یا ناشکروں اور ناقدروں کا کلام منتھا۔

ولا تعضب الدنیاالخ دنیااوردنیاداری کے امورنی کریم الی کے خیا و فضب کا سبب نہیں سبتے تھے۔ ہم تھوڑی می چیز اور ایک کئے کا نقصان برداشت نہیں کر سکتے اور جلد ہی آپ سے باہر ہوجاتے ہیں۔ اس کے برعکس نبی کریم الی کو گر پہتہ چاتا کہ ایک بڑی دولت ہاتھ سے گی اور ظلیم دنیوی راحت اور فائدے سے بھی محروم ہوگیا تو بھی کوئی پرواہ نہیں ہوتی تھی۔ آپ الیہ فرمایا کرتے تھے کہ مسالی

ولدنیا ماانا فی الدنیا الاکراکب استظل تحت الشجرة ثم راح و تر کھا(۱). جھے دنیا سے کیا واسطہ میں تو صرف ایک راہ روجیہا ہوں جو کی درخت کے سائے میں ستانے کے لیے (تھوڑی در کے لیے) آگھڑ اہو۔ پھراسے چھوڑ کر چلا جائے۔ بہر حال آپ ایک میں دنیا پرسی نہی بلکہ دنیا سے بیزاری تھی فرماتے ہیں تعس عبدالدینار و الدر هم(۲). دینارکا بندہ ہلاک ہواور درہم کا بندہ ہلاک ہو۔

واذا تعدی الحق النج دنیا کے مقابلے میں دی جمیت کابیان ہے کہ اگری سے عملاً یا تو الا تجاوز ہوتا تو پھر آپ آلی ہے۔ اور آپ آلی کے خصہ کے سامنے کوئی چیز نہیں ٹبرتی تھی جب تک ت کے لیے انقام نہ لیتے قرارنہ آتا۔ احقاقی حق اور اعطائے حق کے بعد ہی دم لیتے تھے۔ لا یعضب لنفسه السنج اپنے ذاتی نقصان کے لیے انقام کے طور پر کہی خصہ نیس آتا تھا۔ بلکہ عفوو در گزرسے کام لیتے تھے۔ انا نیت سے پاک تھے۔ ہماری حالت تو ہے کوئس وانا کی بندگی میں گے ہیں۔ اور بیا یک ایسابت ہے جو سیدھا جہنم میں لے جاتا ہے۔

تیل وقال، یہ جھڑ سب اس بنیاد پر ہوتے ہیں۔ واذا اشار اشار بکفہ النے بینی جب افہام تفہیم اور رفع ابہام کے لیے اشارہ کا ارادہ فرماتے سے تواس وقت آنکھوں سے یاصرف انگل سے اشارہ کی بجائے پورے ہاتھ سے اشارہ فرماتے۔ نبی کریم سے تھے متکبرین کی طرح آنکھوں آنکھوں میں اشارہ نہیں کرتے سے۔ اس طرح بے موقعہ وحمل اشاروں سے بھی پر ہیز کرتے سے جو کہ وقار و جمکنت کے منافی ہے۔ بلکہ آپ سے تھے اشارہ فرماتے تو الگلیوں کی بجائے ہاتھ سے اشارہ فرماتے کیونکہ بیر فا ایک تو تواضع کے قریب ترہے۔ دوسری میں کہ ایک انگلی ایک چیز کے لیے مختص تھی۔ کہ غیر اللہ کوایک انگلی سے اشارہ بھی گوارا کے قریب ترہے۔ دوسری میں کہ ایک ایک موت ہوتی تھی۔ کیونکہ سبابہ سے اشارہ عموماً صرف تو حید اللہی کی طرف ہوتا تھا۔

واذا تعتب النج جبآب السلط كالته كوكى بات يرتعب موتاتوا ظهار تعب كيم التهالثاكر

(١) جامع ترمذي ٢٣/٢ ابواب الزهد. باب بعد ما جاء في اخذا لمال (مختار)

(٢)صحيح بخارى كتاب الرقاق ج٢ ص ٩٥٢ باب ما يتقى من فتنة المال و في رواية الترمذي لعن عبداللوهمجامع ترمذي ٢٣/٢ (مختار)

دیتے تھے بینی خلاف معمول بھیلی کو پنچے سے اوپر کی جانب کر لیتے تھے جیسا کے عموماً تعجب کے دوران کیا جاتا ہے۔ توبیآ پیالیت کی کا یک عادت شریفہ کی تصویر ہے۔ اتبصل بھا النے بینی بات کرنے کے دوران تاکیداً اشارہ مناسب خیال فرماتے۔ تو چونکہ بات کی تاکید مقصود ہوتی ۔ لہٰذا آپ آلیت کی عادت مبارک بیا تھی کہ کلام کے ساتھ ہی اشارہ اور ہاتھوں کی حرکت ہوتی تھی۔

و صور ب ہو احته المیمنی النح بیاسی اشارہ کی توضیح ہے جبے پہلے ذکر کیا۔ یا پھر ایک اور عادت

کا بیان ہے جس کی توضیح ہے ہے کہ عموماً متعلم کس بات کی اہمیت کا اجا گر کرنا چاہے یا اپنے آپ سے
فقور و در ماندگی دفع کرنا مقصود ہو یا کوئی کلام اس کے ذوق وشوق کوتر یک دید ہے۔ تو الی حالت میں مختلف
فتم کے ترکات کا متعلم سے صادر ہونا طبعی امر ہے۔ بیرترکات بھی توشعور واختیار کے تحت ہوتی ہیں۔ اور بھی
انسان ایسے مواقع میں بے قابو ہوجاتا ہے۔ مثلاً مقرر تقریر کے دوران حرکات کرتا ہے۔ قاری تلاوت کے
دوران سر دھنتا ہے۔ اور گانا اور اشعار گانے والا اور سننے والا جمومتا ہے۔ یونہی بات کی تا کید کے لیے بھی
متعلم ران پر ہاتھ مارتا ہے۔ بھی میز بجاتا ہے۔ بھی مخاطب پر ہاتھ رکھ لیتا ہے۔ ان تمام حرکات میں
مناسب ترین حرکت نبی کریم سیالیہ کی عادت مبار کہتی جو یہاں بیان ہے کہ آپ سیالیہ وا کیں ہاتھ کی تھیلی کو
بائیں ہاتھ کے انگو شے کے باطن پر مارتے تھے۔ اس سے خود متعلم اور دوسری طرف مخاطب دونوں کی توجہ،
استحضار اور پُر وقارا نداز سے تا کیدکا مقصد حاصل ہوجاتا ہے۔

اعرض و اشاح اعراض کے معنی منہ پھیر لینے کے ہیں اور اشاحة کے معنی ایک جانب ہونا،
پھرنا اور منہ پر انقباض کی کیفیت طاری کرنا ہے۔ لیکن شراح کے مطابق یہاں پر اعراض سے عفو و درگر رکرنا
مراد ہے۔ جیسے کہ نبی کریم آلی کے کام ہوا ہے۔ و اعبر ض عن المجاھلین اور اشاحة سے مراد اعراض اور
عفو وضح میں مبالغہ کرنا مراد ہے۔ مراد بیہ ہے کہ آپ آلی کے غصہ ہوجاتے تو غیظ و غضب کے اظہار کی بجائے
عفو و درگر رسے کام لیتے۔ اور کمال حلم وکرم اور ضح جمیل کا بیجال تھا کہ جم م کوآپ آلی گئی کے غصہ کا کم احساس
ہوتا تھا۔

یا پھر یہاں پراس حی عمل کا بیان ہے جو غصہ کے وقت آپ آلیکے فرماتے تھے۔ لینی اظہار غضب کے لیے تئے پاہونے کی بجائے آپ آلیکے صرف منہ پھیر لیتے تھے۔ اور مجرم سے آٹکھیں نہیں ملاتے تھے۔

ونور حیاء کی وجہ سے صرف بے تو جھی پر اکتفا فر ماتے۔ بایں ہمہ بیعشاق کے لیے بہت بڑی سز اہوتی تھی۔ صحابہؓ ایسی بے دخی پر بھی تڑیتے رہ جاتے۔

مثلاً تبوک سے رہ جانے پر حضرت کعب بن مالک جب آپ آلیہ کی ناراضکی کا نقشہ کھینچے ہیں تو کہتے ہیں تو کہتے ہیں کہ میں آکر سلام کہتا تو آپ آلیہ جواب میں کوئی بات نہیں کرتے تھے۔ آئکھیں نہیں ملاتے تھے۔ میں مسجد کے گوشے میں بیٹھ جاتا۔ پھر بھی موقع ملتا تو آپ آپ آلیہ چیکے سے میری طرف تنکھیوں سے دیکھتے بھی متے گرمیں دیکھتا تو اعراض فرماتے۔ بیان کے لئے ہجرووصال کا ایک عجیب عالم ہوتا۔ مولا نا ابوال کلام آزاد ہے ترجمان القرآن میں اس صور تحال کا عجیب نقشہ کھنچ کریہ شعر کھا

بہر تسکین دل نے رکھ لی ہے غیمت جان کر وہ بوقتِ ناز جوجنبش تیری آبرو ہیں ہے بلکہ 'و علی الشلافة اللذین خلفوا'' کی تغییر میں مفسرین نے جونقشہ کھینچا ہے۔اس کود کھ کر دونا آتا ہے۔امام احر قرماتے ہیں کہ میں بھی بھی اس آیت پر ایسے نہیں گزرا کہ ہیں چیخ چیخ کر نہ رویا ہوں۔ بہر حال آپ آلیک کے خصہ کی حالت کا بیان تھا کسی کوڈ انٹ پلانا تو عادتِ شریفہ میں تھی ہی نہیں۔ وافا فوح غض طوفه. جب زیادہ خوش ہوتے تو تو اض اور نہایت حیا کی وجہ سے آنکھیں نیجی کر لیتے۔گویا خوش کی حالت ہیں بھی آپ آلیک ایپ آپ کا ایپ آپ کو آپ سے باہز نہیں ہونے دیتے۔

جل ضحکه التبسم آپ الله کی زیاده بنت بسم ہوتی تھی تھٹھہ مارکر بننے کی عادت نہ تی۔ کیونکہ اے آپ الله نے قلب کی موت کا سبب بتایا ہے۔ مزیر تفصیل آئندہ باب میں آرہی ہے۔

یفتر عن مثل حبّ الغمام افتر یفتر جبعن کے ماتھ متعدی ہوتواس کا معنی خوبصورت بنی بنسا ہوتا ہے۔ اور حسب بنی بنسا ہوتا ہے۔ اور خل ہر ہے کہ جب دانت خوبصورت ہوں تو بنسی میں دکشی ہوتی ہے۔ اور حسب المنف مام کا ترجمہ بعض شراح نے موتوں سے کیا ہے۔ کیکن دائے میہ کہ اس سے او لے مراد ہیں اس کا لغوی معنی ہے بادل کے دانے جو اولوں برصادق آتا ہے۔

مطلب یہ ہے کہ بہنتے وقت آپ اللہ کے دانت مبارک ظاہر ہوتے تو یون نظر آتا جیسے یہ سفیداو لے بیں۔ گویا سفیدی، صفائی اور چک میں دانتوں کو اولوں سے تشبید دی ہے۔ جونہایت ہی مناسب ہے۔
(اللہ میں صلّی علی حبیبک محمّد و علی آله و صحبه و سلم)

### خلاصه باب

اس باب میں نبی کر پھر اللہ کے طرز کلام کواجا گر کیا گیا ہے۔داعی برق کوفصاحت وبلاغت بہ حد کمال بخشی جا چکی تھی۔اور باوجودائی ہونے کے آپ آلیہ کانٹری کلام اتنادلنشین،معیاری اوراندازاتنا خوبصورت تھا کہ غبی سے غبی کے لیے قابل فہم اور ذبین سے ذبین کے لیے کافی ہوتا تھا۔کسی کو بجھنے میں البحصن نہیں ہوتی تھی۔ بلکہ بات دل میں اتر تی تھی۔

حتی که حضرت عمر الا به الراهالک افصحنا ولم تخرج من بین اظهرنا. لیخی بیکیا ہے کہ ہمارے درمیان بل برھ کرتم ہم سب سے فصاحت میں آگنکل گئے۔ آپ نے فرمایا کسانت لغة اسماعیل درست فجاء نی بھا جبرئیل فحفظتھا (طبرانی .بیھقی) لین اساعیل کی فضی ترین لفت جو کھولا جاچکا تھا کو جرئیل میرے یاس لائے اور میں نے اسے یادکرلیا۔

آپ اللی کام نہ تو جوشلے مقررین کی طرح الجھا ہوا متداخل اور نا قابل تحلیل کلام ہوتا تھا۔نہ اظہار بلاغت میں تکلف سے کام لیتے اور نہ متکبرین کی طرح و جیسے دھیے ہو لتے تھے۔ بلکہ کا نوں میں گھلنے والے الفاظ، ادراک و خیال کومنخر کرنے والے جملے، اور حافظے پر چھا جانے والا بیان مناسب ترین اشارات سے مزین ہوکردل سے نکل کرسم کو چیر تا ہوادل میں بیٹھتا تھا۔

بایں ہمہ تاکیداور تکرار کرکے مزید شفقت فرماتے۔فضول گوئی کی بجائے خاموثی اورلالینی مشاغل کی بجائے فکروند ترکوز جی حاصل تھی۔

شخصیت کیاتھی؟ ایک در دمند مبلغ، ایک فکر مند بادی، مرقع اخلاص، شکر گزار ہوتے ہوئے لذائذ دنیا سے لذت اندوزی سے کنارہ کش، در شق اور سخت مزاجی سے دور، جس کا غصه اس کے قابو میں ہو۔ جذبہ انتقام کا نام ونشان نہ ہو گرنصرت میں پرمر مٹنا جانتا ہو عفوو در گزرفطرت بن چکی ہو۔ نکتہ چینی کی بجائے ناراضکی کا بھی منفر دمشفقا نہ انداز ہوغم سے مغلوب ہو۔ نہ خوش سے طبیعت سرشار اور حسن وہ جونظر کی ہریاس بچھائے۔

ایک ایسی شخصیت سے جس شیرین کلامی کی توقع کی جاسکتی ہے اس پروهمی فصاحت و بلاغت، اخلاص، شفقت، رائعة ورحمة اور بجرپور پُرکشش اداؤں کی مزید مٹھاس بیسب جمع کی جائیں تو آپ آلیا تھا۔ کے کلام کی حقیقی تصویرا بجرکرسا منے آتی ہے۔

ادائيں لا كھاور بے تاب دل اك

فداہوں آپ کی کس کس ادارِ

### خلاصه باب

اس باب میں نبی کر پھر اللہ کے طرز کلام کواجا گر کیا گیا ہے۔داعی برق کوفصاحت وبلاغت بہ حد کمال بخشی جا چکی تھی۔اور باوجودائی ہونے کے آپ آلیہ کانٹری کلام اتنادلنشین،معیاری اوراندازاتنا خوبصورت تھا کہ غبی سے غبی کے لیے قابل فہم اور ذبین سے ذبین کے لیے کافی ہوتا تھا۔کسی کو بجھنے میں البحصن نہیں ہوتی تھی۔ بلکہ بات دل میں اتر تی تھی۔

حتی که حضرت عمر الا به الراهالک افصحنا ولم تخرج من بین اظهرنا. لیخی بیکیا ہے کہ ہمارے درمیان بل برھ کرتم ہم سب سے فصاحت میں آگنکل گئے۔ آپ نے فرمایا کسانت لغة اسماعیل درست فجاء نی بھا جبرئیل فحفظتھا (طبرانی .بیھقی) لین اساعیل کی فضی ترین لفت جو کھولا جاچکا تھا کو جرئیل میرے یاس لائے اور میں نے اسے یادکرلیا۔

آپ اللی کام نہ تو جوشلے مقررین کی طرح الجھا ہوا متداخل اور نا قابل تحلیل کلام ہوتا تھا۔نہ اظہار بلاغت میں تکلف سے کام لیتے اور نہ متکبرین کی طرح و جیسے دھیے ہو لتے تھے۔ بلکہ کا نوں میں گھلنے والے الفاظ، ادراک و خیال کومنخر کرنے والے جملے، اور حافظے پر چھا جانے والا بیان مناسب ترین اشارات سے مزین ہوکردل سے نکل کرسم کو چیر تا ہوادل میں بیٹھتا تھا۔

بایں ہمہ تاکیداور تکرار کرکے مزید شفقت فرماتے۔فضول گوئی کی بجائے خاموثی اورلالینی مشاغل کی بجائے فکروند ترکوز جی حاصل تھی۔

شخصیت کیاتھی؟ ایک در دمند مبلغ، ایک فکر مند بادی، مرقع اخلاص، شکر گزار ہوتے ہوئے لذائذ دنیا سے لذت اندوزی سے کنارہ کش، در شق اور سخت مزاجی سے دور، جس کا غصه اس کے قابو میں ہو۔ جذبہ انتقام کا نام ونشان نہ ہو گرنصرت میں پرمر مٹنا جانتا ہو عفوو در گزرفطرت بن چکی ہو۔ نکتہ چینی کی بجائے ناراضکی کا بھی منفر دمشفقا نہ انداز ہوغم سے مغلوب ہو۔ نہ خوش سے طبیعت سرشار اور حسن وہ جونظر کی ہریاس بچھائے۔

ایک ایسی شخصیت سے جس شیرین کلامی کی توقع کی جاسکتی ہے اس پروهمی فصاحت و بلاغت، اخلاص، شفقت، رائعة ورحمة اور بجرپور پُرکشش اداؤں کی مزید مٹھاس بیسب جمع کی جائیں تو آپ آلیا تھا۔ کے کلام کی حقیقی تصویرا بجرکرسا منے آتی ہے۔

ادائيں لا كھاور بے تاب دل اك

فداہوں آپ کی کس کس ادارِ

## ۳۵. باب ماجاء فی ضحک النبی عَلَیْهُ مِ مِنْ مَالِیْهُ کَ مِنْتُ کَابِیان مُنْفِیْهُ کَ مِنْتُ کَابِیان

حظے ضاد کے کسرہ اور فتح کے ساتھ جبکہ جاء ساکن ہویا کمسور، بیننے کو کہتے ہیں (۱)۔ بیننے کے تین مراتب ہیں۔سب سے ادنی تبسم ہے۔ پھر خک اور اس کے بعد قبقنہہ کی باری آتی ہے۔ خک میہ ہے کہ خود بیننے والا اور اس کے ساتھ موجو دلوگ بیننے والے کی آواز س لیں۔

يهال ترجمة الباب مين جس محك كاذكر بـاس سے كيام راد بـ؟

رسول التُواليَّةُ صرف تَبسم فرماتِ تعنے:

کریم آلیہ کی عام عادت تبسم کی تھی۔ قبقہوں کی آپ آلیہ کوعادت نہ تھی۔ بلکہ کی احادیث میں تو کشرت میں میں تو کشرت میں میں تعلقہ کی ہلکہ کی احادیث میں تو کشرت میں سے منع کیا گیا ہے۔ خوداس باب کی پہلی حدیث میں آپ آلیہ کی ہنی کو تبسم میں مخصر کر کے آپ آلیہ کے سے منع کیا گیا ہے۔

الہذا یہاں پر شخک سے مراقبہم میں مبالغہ ہوگا۔ جو کہ شخک کے قریب ہو۔ اور نفی شخک سے وہ شخک مراد ہوگی جس میں عافلین اور فرحین لوگ مبتلا رہتے ہیں۔ لیکن بعض محدثین کے ہاں اس تاویل کی ضرورت بھی نہیں ہے۔ کیونکہ آپ آلیہ سے شخک کا صدور بلکہ خوب زور سے ہنستا بھی ثابت ہے۔ البتہ آپ آلیہ کی دنیاوی امور کے بارے میں نہیں ہوتی تھی۔ بلکہ دین کے قل میں بھی مسرت یا قابل تجب بات کے ادراک کے موقع پر آپ آلیہ خوب بنے ہیں۔

مثلاً جب بھی اسلام کوغلبہ حاصل ہوا ہے باطل ذکیل خوار ہوا ہے یا آخرت میں رحمت وضل الہی کی بے پایانی کا ذکر ہے۔رت ذوالجلال کی جانب سے بندے پرنوازشوں کا فیضان ہوا ہے۔ اتنا کہ تجب آئے۔تو آپ آپ آلینے خوش ہوکرزور سے بننے ہیں۔اس طرح آپ آلینے صحابہ کی دلداری کی خاطر بھی ہنا کرتے تھے۔ ہاں سیر سپاٹوں کے وقت جو بے قابوطور پر ہنسا جاتا ہے۔اور دل کا خون کیا جاتا ہے۔ خفلت کی الی کیفیات سے آپ آلینے منز وقعے۔

<sup>(</sup>۱) علامه مناوي في القلب وقديض حك خاصة للانسان واصله من سروريعوض القلب وقديض حك غير المسرور (المناوى على هامش جمع الوسائل ١٨/٢) (اصلاح الدين)

ترجمہ: حضرت جاہر بن سمرہ کہتے ہیں کہ نبی کریم اللہ کی پنڈلیاں (کسی قدر)
باریک تھیں۔ آپ اللہ صرف تبسم کی ہنی ہنا کرتے تھے۔ میں جب نبی کریم اللہ کو درحقیقت و یکھا۔ تو ول میں یہ گزرتا کہ آپ اللہ سرمہ استعال کر چکے ہیں۔ مگر درحقیقت آپ اللہ مدالگ کے ہوئے ہیں۔ مگر درحقیقت آپ اللہ مدالگ کے ہوئے نہیں ہوتے تھے۔

کان فی ساقی الم یعنی آپ الله کی پنڈلیاں موٹی نہیں تھیں بلکہ ان میں پتلا پن تھا۔
اگر چہم مضبوط تھا۔ اور علم قیا فہ والوں نے اس صفت کوانسانی محاسن میں سے شار کیا ہے۔ حسس دقة لعنی بار کی کو کہتے ہیں۔ بعض لوگوں نے خمو شدہ کو خام جمہہ کے ساتھ بھی پڑھا ہے۔ لیکن شراح نے اس پر ردکیا ہے۔

وكان لا يضحك الا تبسما . يهال تقديرعبارت يول بكه وكان لا يضحك ضحك الا تبسما . يهال تقديرعبارت يول بكه وكان لا يضحك ضحك الا تبسما ـ اس طرح تبيم كوشك شروا فل كيا كيا به (۱) ـ اس كي ا يك توجيرتويه بكه (۱) جامع ترمذى ۲۲۲/ کتاب المناقب باب في صفة النبي عَلَيْنِ ، شرح السنة للبغوى ۲۲۲/ ۲۲۲، کتاب المناقب باب صفة النبي عَلَيْنِ ، المستدرك للحاكم ۲/۲۰ ، (مختار)

کتاب المناقب باب صفة النبي عَلَيْنِ ، المستدرك للحاكم ۲/۲۰ ، (مختار)

(۲) بشخى كا مورتين: بشنع كه تين صورتي بين (۱) تبيم: بشنع كي اس صورت مين صرف بونك كل كردانت نظر آتے بين ـ

 ضغے کے لیے مبدا ہونے کی وجہ سے خک تبسم کو بھی شامل ہے۔لیکن اگر خک کوعام معنی میں لیا جائے جو ہنمی کے متیز ں قسموں یعن تبسم ، منحک ، بالمعنی الاخص اور قبقہ کوشامل ہوتو پھرا شکال ہی نہیں رہتا۔

بہرحال مرادیہ ہے کہ آپ آلیہ فالب اوقات میں تبسم پر ہی اکتفاء فرماتے تھے۔اوریہ بھی صحابہ فلا کی دلداری اور حسن معاشرت کی دجہ سے وہ بشاشت تھی جو ہر لمحدر خ انور پرعیاں ہوتی تھی۔ تعلقات عامہ کا تقاضا ہوتا ہے کہ ملاقات کرنے والوں کا استقبال خندہ روئی سے کیا جائے۔

ف کنت اذا نظرت مسکراتے وقت آنکھوں میں چک اور خوبصورتی دکھائی دیتی ہے اس کابیان ہے۔ یہاں کنت میں تا عضموم (بصیغہ منکلم) اور تا عفق آ (بصیغہ خطاب) دونوں جائز ہے۔ اس طرح بعد کے نظر ت اور قلت میں بھی دونوں احتمال درست ہیں۔ قلت اُکھل العینین النج یعنی جب ان کی سر مگین آنکھیں النج آتیں تو ان پر سرمہ استعال کرنے کا مگان ہوتا تھا۔ جبہ در حقیقت آ پہالی نے سرمہ استعال نہیں کیا ہوتا تھا۔ بلکہ فطری طور پر آ پھالی کی آنکھیں سر مگین تھیں۔ تو بادی النظر کے اعتبار سے تو سرمہ کا اثبات ہوتا تھا۔ لیکن نفس الامر میں می مفصی ہیں۔ اول مصنوی طور پر آنکھوں کا سرمگیں کرنا، دوم قدرتی طور پر آنکھوں کا سرمگین ہونا۔ تو یہاں پر اول الذکری نفی اور مؤخر الذکر کا اثبات مقصود ہے۔

(٢) حدّثنا قتيبة بن سعيدأنا ابن لهيعة عن عبيدالله بن المغيرة عن عبدالله بن الحارث بن جزء قال مارأيت احداأكثر تبسّما من رسول الله عَلَيْكُ (١).

ترجمہ: عبداللہ بن حارث بن جزء کہتے ہیں کہ میں نے نبی کر میں اللہ سے زیادہ تنبہم کرنے والا کوئی نہیں دیکھا تھا۔

مار أيت النع صحاب كرام كي ساته معاشرت اورنشست وبرخاست مين ني كريم الله بهتشفيق اور بشاش بشاش تقد البنداعموى حالت بيه بوتى تقى كرآ پ الله سب سے زيادہ تبهم كرنے والے بوتے تقے۔ يہ بھى الله تعالى كى مونين برخصوصى رحمت تقى۔

(١) جامع ترمذي ١٨٣/٢ كتاب المناقب باب في بشاشة النبي مَلْكِ ، مسنداحمد ١٩٠/ و ١ (مختار)

(٣) حدّثنا أحمد بن خالد الخلال ثنا يحيى بن إسحاق السيلحانى ثنا ليث بن سعد عن يزيد بن أبى حبيب عن عبدالله ابن الحارث قال ما كان ضحك رسول الله عليه المسلمة المسلمة المسلمة عريب من حديث ليث بن سعد (١).

ترجمہ: عبداللہ بن حارث کہتے ہیں کہ نبی کریم اللہ کی کہنے میں ہوا کرتی تھی۔ الا تبسّہ ماالمنے یعنی مخک کی نسبت عالب اوقات میں آپ آللہ کی ہنی تبہم ہوتی تھی اگر چہ محک بھی بعض اوقات میں ثابت ہے۔

قال أبوعيسن المخ امام ترفدي الس حديث كى غرابت بيان كرتے بيں اور وجہ بيہ كہليث بن سعد اس ميں متفرد بيں ليكن اس كے باوجود حديث اس ليكن ہے كہليث جليل القدر امام بيں۔ان كا تفرد صحب حديث كے منافى نہيں۔

(٣) حدّثنا أبو عمّار الحسين بن حريث أنبانا وكيع ثنا الأعمش عن المعرورا بن سويدعن أبى ذرُّ قال قال رسول الله عَلَيْكُ إنّى لأعلم اوّل رجل يدخل الجنّة واخررجل يخرج من النار يؤتى بالرجل يوم القيامة فيقال اعرضوا عليه صغار ذنوبه وتخبا عنه كبارها فيقال له

(١) جامع ترمذى ١٨٣/٢ كتاب المناقب باب في بشاشة النبي المناقب (١) جامع ترمذى ١٨٣/٢

عملت يوم كذا كذا وكذا وهو مقرّلا ينكرو هو مشفق من كبار ها فيقال اعطوه مكان كل سيّئةٍ عملها حسنة فيقول إنّ لى ذنوبا لا اراها ههنا قال ابو ذرُّ فلقدرأيت رسول الله عَلَيْكُ ضحك حتى بدت نواجذه(١).

ترجمہ: حضرت ابوذر تقرماتے ہیں کہ نبی کریم آلیا ہے۔ فرمایا کہ میں اس محض کو جانتا ہوں جو سب سے اول جنت میں جائے گا۔ اور اس کو بھی جے جہنم سے سب سے آخر میں نکالا جائے گا۔ قیامت کے دن (اس مو خرالذکریا کسی اور) آ دی کو (اللہ تعالیٰ کے دربار میں) لایا جائے گا۔ پھر فرشتوں سے کہا جائے گا کہ اس آ دی پر اس کے چھوٹے چھوٹے گناہ پیش کر دو۔ اور اس کے بڑے گناہ (حسب ارشاد الہی) چھپائے جا نمیں گرے چنا نچے اس کو کہا جائے گا کہ تم نے فلاں فلاں دن فلاں فلاں گناہ کہ وہ جا نمیں گرے کہا جائے گا کہ تم نے فلاں فلاں گناہ کئے ہیں۔ وہ آ دی اقراری ہوگا۔ (اپنے گناہوں سے) انکار نمیں کرے گا۔ حالانکہ وہ بڑے گناہوں کے پیش ہوئے دان کے سخوفز دہ ہوگا۔ پھر تھم ہوگا کہ اس کے ہر کر دہ گناہ کے بڑے گناہوں کے پیش ہونے دوریں تب بیٹھن بول اٹھے گا کہ میر نے قر (اور بھی) بہت بر لے اسے ایک نیکی دے دیں تب بیٹھن بول اٹھے گا کہ میر نے قر (اور بھی) بہت سے گناہ ہیں جو میں یہاں دیکھنیں رہا۔ حضرت ابوذر آ کہتے ہیں کہ پھر خدا کی قشم میں نے نبی کر میں ایک اور کھا کہ آ ہے گائے خوب بنے حتی کہ آ ہے آلیہ کے دانت مبارک نام کے بی کر میں کا کہ میں کے بیل کہ کی کہ کے دانت مبارک نام کے بیل کہ بوگا کہ اس کے دانت مبارک نام کے کے دانت مبارک

حضرت البوذ رغفاري : البوذر عنام مي اختلاف به كين مشهور نام جذب بن خباده به بن خباده به بن خباده به بن خباده تعلق قارا سلام لانے سے پہلے بھی آپ کا شارعبادت گزارلوگوں ميں ہوتا تھا۔ نبی کريم آپ کا شارعبادت گزارلوگوں ميں ہوتا تھا۔ نبی کريم آپ کا البحث کا علم ہوا تو اپنے بھائی حضرت انيس في والبس آکر بعث کا علم ہوا تو اپنے بھائی حضرت انيس في والبس آکر (۱) صحيح مسلم کتاب الايمان باب البات الشفاعة واحراج الموحدين من الناد، مسندا حمد ۱۵۷۵ من يكوض من الناد، السنن الكبرئ للبهيقى • ۱۹۰۱ (مختار)

حضورا كرم الله كالم متعلق كه بتايا مكرآب في فرمايا "ماشفيتني" تم في ميري تشفي نبيس كى للذا زاداور یانی لے کرخود مکہ تشریف لائے مکہ والوں کی مخالفت کاعلم تھا۔اس لیے سی سے نبی کریم اللہ کے بارے میں یو جھنا مناسب نہیں سمجھا۔ رات ہوگئ تو مسجد حرام آئے۔حضرت علیؓ نے انہیں دیکھا تو انہیں ساتھ لے گئے ۔ دوسرا دن بھی نبی کریم علیقہ کی تلاش میں گزرا۔ مگران کونہیں بیجیانا۔ پھر حضرت علیؓ نے ان کی مہمان نوازی کی ، تیسری رات جب حضرت علی انہیں گھر لے گئے توان سے مکہ کرمہ آنے کا مقصد دریا فت کیا۔ آپٹے نے کہا کہ اگر رہ عبد کرو گے کہ میری صحیح رہنمانی کرو گے تو بتا دوں گا۔ انہوں نے وعدہ کیا جس برآیٹ نے مدعا بیان کردیا کہ یہاں جس شخص نے نبوت کا دعویٰ کیا ہے اس سے ملنے آیا ہوں لیکن تا حال اسے پیچان نہ سکا۔ حضرت علی نے کہا کہ دیکھومیرے پہتھے بیچھے آنا اور اگر کسی کافر کود کھے کر جھے کچھ خطرہ محسوس ہوا تو میں پیثاب کے بہانے بیٹے جاؤ نگا۔اورتم میراا تظار کئے بغیرآ گے گز رجانا۔اس طرح حضرت علی آپ کولے کر ني كريم الله كي خدمت من حاضر موئ \_اس وقت تك صرف حاراً دى مسلمان مو يحك تقد ني كريم الله في الله بيش كرديا - اورآب نكم شهادت برها-اس كے بعد نبي كريم الله نے فيحت كى کہ فی الحال اہل مکہ پر اسلام ظاہر کئے بغیرسیدھے گھر چلے جانا۔جب تیرے پاس میرا دوسرا امر (حکم) آ جائے تو آ جانا۔ گرآ یٹ نے کہا کہ خدا کی تتم میں ان کا فروں کے پچے اسلام کا اعلان کروں گا۔ چنانچے مسجد حرام تشریف لائے اور بلند آواز سے کلمہ شہادت کا اعلان کیا قریش نے اس برآ یے گوخوب ماراحتیٰ کہ حضرت عباس في انہيں بجاليا۔ دوس بروز پھراعلان كيا۔ اور مار بھي يزي۔ پھرايے گھر آ كراييز بھائي اور والدین کواسلام کی دعوت دی۔ وہ سب مسلمان ہوئے۔ قوم میں سے بھی کچھلوگ آپ کی دعوت بر مسلمان ہو گئے۔

غزوہ احدادرایک قول کے مطابق غزوہ خندق کے بعد مدینہ تشریف لائے۔اس کے بعد کے تمام غزوات میں شرکت کی۔ نبی کریم آلیک آپ کے بارے میں فرماتے کہ زمین وآسان کے درمیان ابو ذراسے زیادہ سچا آدمی نہیں ہے۔حضرت علی فرماتے ہیں کہ ابو ذراوہ برتن ہے جسے علم سے بھر دیا گیا ہے۔ چونکہ انہائی درجہ کے زاہد سے ۔الہٰ ذااہل شروت لوگوں پر ہمیشہ نکیر فرماتے سے ۔ چنانچے حضرت عثمان نے مدینہ سے باہر ریذہ کے مقام پر گھرینا کروہاں منتقل ہونے کی درخواست کی۔ چنانچے امیر کے حکم پروہیں سکونت اختیار کی۔ اوراس میں اور ایک قول کے مطابق ۳۲ میں وہیں وفات ہوئے۔ بہت سے سحابہ بھی آپ سے روایت کرتے ہیں۔

یؤتسی بالوجل یهان وجل "سےمرادیس تین احمال ہیں۔یاتواس سے اول رجل یدخل المجنة "مراوی کی پیراسے اول رجل من الممذنبین سےمقید کرنا پڑے گانہ کہ علی الاطلاق ۔یا پھر آخر رجل بخوج من النار علی الاطلاق مراد ہوگا۔ جیسے کہ حضرت ابن معود گی الاطلاق ۔یا پھر آخر رجل بخوج من النار علی الاطلاق مراد ہوگا۔ جیسے کہ حضرت ابن معود گی روایت میں اس کا ذکر ہے یا پھر بیا گئے ہیں اشخص ہے نہ کہ جنت میں داخل ہونے والا پہلا گناہ گار نہ اور سے نکلنے والا آخری آدی۔ بلکہ دونوں کے درمیان جنت میں داخل ہونے والا شخص ہے۔ ملاعلی قاری اور مناوی وغیرہ نے اس آخری احتمال کور جیج دی ہے۔اور کہا ہے کہ یہ کلام مستا نف ہے اورا یک تیسر شخص کا بیان مقصود ہے۔

(۱) الماعلى قارى في النار لأن اول من يدخل السجنة ممّن يخرج من الناد لأن اول من يدخل المجنة على قارى في الناد الأن اول من يدخل المجنة على الاطلاق إنّما هو النبي عَلَيْكُ (جمع الوسائل ۲/۲) اور يكي بات علام عبد الجواد الروى في محكم كمن المجنة على الاطلاق إنّما هو النبي عَلَيْكُ (جمع الوسائل ۲/۲) اور يكي بات علام عبد الجواد الروى في المحكم المحتمد عبد المحتمد المحتمد

(٢) مسلم ج ا ص ٢ • اكتاب الايمان باب إثبات الشفاعة واخراج الموحدين من النار (مختار)

اعطوہ مکان کل سیئة عملها حسنة یعنی جتے بھی صغائر ہوں سب کونیکوں سے بدل دو۔
اس تبدیل کے حق میں اللہ تعالی فرماتے ہیں کہ إلا من تاب و آمن و عمل عملاً صالحا فاولئک
یبدل اللّه سیأتهم حسنات (فرقان ۵۷) گرجن لوگوں نے توبہ کیا، ایمان لائے اور نیکیاں کیں۔
پس ہدہ اوگ ہیں جن کے گنا ہوں کو اللہ تعالی نیکیوں سے بدل دیتھے۔

کفری وجہ سے نیکیوں کا ضائع ہونا: اللہ تعالیٰ کے ہاں جس طرح حبط اعمال کا قانون ہے کہ کفر جیسے کسی جرم عظیم کے سبب اعمال اور نیکیاں ضائع ہوجاتی جیں۔اس طرح اللہ تعالیٰ کے ہاں تبدیل سیّات بالحسنات کا بھی قانون ہے۔ کہ بھی اللہ تعالیٰ کسی دوسرے بڑے مل کی وجہ سے'' گا ہے بدشنام ہے بخشد'' کے مصداق بندہ کے گنا ہوں کو نیکیوں سے بدل دیتے ہیں۔

إنّ لى ذنوباً ما اراهاههنا جب بنده رحمت خداوندى كے وفوركود يكھے گا۔اورخوف زاكل ہو جائے گاتووہ كہے گا گار ميں ان كو بھى نيكيوں جائے گاتووہ كہے گاكہ ميں نيتواور بھى عظيم گناہ كئے ہيں۔وہ كہاں چھپاليے گئے ہيں۔ان كو بھى نيكيوں ميں تبديل كرديا جائے۔

قال أبو ذر فلقد النع يعنى ني كريم الله في خيب الله تعالى كرم اوراس كمقابل على بندكا يرح وكرم اوراس كمقابل على بندكا يرح من بيان كرويا وتوني كريم الله في الله في كريم الله في كالله في الله في

(۵) حدّثنا أحمد بن منيع ثنا معاوية بن عمر و ثنا زائدة عن بيان عن قيس بن أبى حازه عن جرير بن عبدالله قال ما حجبنى

رسول الله عُلَيْهُ منذا سلمت ولار آني الاضحك(١).

ترجمہ: حضرت جریر بن عبداللہ فقر ماتے ہیں کہ نبی کریم الفظ نے میرے مسلمان ہونے کے بعد ہم مسلمان ہونے کے بعد بھی بھی بھی بھی جھے حاضری سے نہیں روکا۔ اور بھی بھی جھے نہیں دیکھا مگر آپ الفظ بنس دیتے تھے۔

قال ما حجبنی گزشته ابواب مین حضرت جریر کے حالات مفصل طور پر بیان ہو چکے ہیں۔وہ فرماتے ہیں کہ نی کر پیمائی ہے کی جلس میں آنے جانے کی کوئی پابندی مجھ پر نہیں تھی۔لیکن یہاں گر میں آنا مراذ ہیں بلکہ مقصد یہ ہے کی جلس نبوی آلیا ہیں مجھے کھی اجازت تھی۔اور ممکن ہے کہ حب سے سے مراد میں بلکہ مقصد یہ ہے کہ جب نبی سے مراد میں بالم مقصد یہ ہے کہ جب نبی ہے کہ و روز است اور گزارش ردنہیں فر مائی۔الاضحے کے لینی مجھے کو کی درخواست اور گزارش ردنہیں فر مائی۔الاضحے کے لینی مجھے دیں میں استقبال فر ماتے (۱)۔

(Y) حدّثنا أحمد بن منيع ثنا معاوية بن عمر و ثنا زائدة عن إسماعيل بن أبى خالد عن قيس عن جرير قال ما حجبنى رسول الله عليه الله عليه منذ اسلمت ولا رانى إلا تبسّم (٣).

ترجمہ: حضرت جریر سے روایت ہے کہ نبی کریم اللہ نے کے میرے اسلام لانے کے بعد بھی بھی بھی بھی بھی بھی جھے حاضری سے نہیں روکا۔اور بھی بھی جھے نہیں دیکھا مگر آپ اللہ نے تابعہ ضرور فرمایا۔

الا تبسّم به جریر گی گزشته حدیث بی ہے۔ صرف ضحک کی بجائے تبسم کا ذکرہے۔ اس سے معلوم ہوتا ہے کہ گزشته حدیث میں بھی شخک سے تبسم مراد ہے۔ اور اس تبسم کی وجہ شرا آن نے ریکھی ہے کہ (۱) صحیح مسلم ۲۹۷۲ کتباب فضائل الصحابة باب فضائل جریو بن عبداللّه، جامع ترمذی ۲۰۲۲ کتاب المناقب باب مناقب جریو بن عبداللّه، (مختار)

(٢) اوراس كى وجه الأعلى قارئ في سكس بالمعل وجه التبسم له كل مرة فى رؤيته إنّه رأه مظهر الجمال فإنّه كان له صورة حسنة على وجه الكمال حتى قال عمرٌ فى حقه إنّه يوسف هذه الامة (جمع الوسائل ٢٣/٢) (مختار)

(٣) جامع الترمذى ٤٠٤/٢ كتاب المناقب مناقب جرير بن عبدالله سنن ابن ماجه ص١٥ مناقب جرير بن عبدالله (مختار)

چونکہ جریر انتہائی خوبصورت تھے۔حضرت عمر اس وجہ سے آپ گو' یوسف ھذہ الامة '' کہتے تھے۔ البذا آ سے سیاللہ ان کود کھ کر بے اختیار تبسم فرماتے تھے۔

(ك) حدّثنا هنّاد بن السرى ثنا ابو معاوية عن الأعمش عن ابراهيم عن عبيدة السلماني عن عبدالله بن مسعود قال قال رسول الله علم عن عبدالله بن مسعود قال قال رسول الله علم الني لا عرف اخراهل النيار خروجارجل يخرج منها زحفا فيقال له انطلق فادخل الجنّة قال فيذهب ليدخل الجنّة فيجد الناس قد اخذوا المنازل فيقول له المنازل فيقال له أتذكر الزمان الذي كنت فيه فيقول نعم قال فيقال له تمن قال فيتمني أتذكر الزمان الذي كنت فيه فيقول نعم قال فيقال له تمن قال فيتمني فيقال له في الذي قال فيقول الشيقال له في الله على الله على الله الله على الله

ترجمہ: حضرت عبداللہ بن مسعود کہتے ہیں کہ نبی کر یم اللہ نے فر مایا کہ ہیں اس شخص کو جانتا ہوں جو سب سے آخر ہیں جہنم سے نکلنے والا ہے۔ وہ ایک ایسا آدی ہے جوز مین پر سرین کے بل گھ شمتا ہوا جہنم سے نکلے گا۔ اسے تھم دیا جائے گا کہ جاؤجنت میں داخل ہو جاؤ۔ وہ جنت میں داخل ہونے کے لیے وہاں جائے گا۔ وہاں لوگوں کو جنت کی منزلوں پر قبضہ کئے ہوئے پائے گا۔ وہاں سے لوٹ کر کہے گا کہ اے رب لوگوں نے تمام مقامات پر قبضہ جمائے رکھا ہے۔ تو اس کو کہا جائے گا کہ کیا تجھ کو دنیایا د آرہی ہے (جہاں شکی تھی ۔ یا مرادید کرتم دنیا کی وسعت کو یا دکرو) وہ عرض کرے گا

(۱) صحيح بخارى ٩٧٢/٢ كتاب الرقاق باب صفة الجنة والنار، صحيح مسلم ١٠٥/ كتاب الايمان البات الشفاعة واخراج الموحدين من النارباب آخر اهل النار خروجاً، جامع ترمذى ١٠٥/ ٥٣٠ كتاب صفة جهنم، عن رسول الله باب ماجاء ان النّار، سنن ابن ماجة ص ١٣٢١ب صفة الجنة (مختار)

ہاں (یاد ہے) تواسے کہا جائے گا کہ تواپنی تمنا کیں ظاہر کر۔ تو وہ (اپنی خواہشات) کی تمنا کرے گا پھراسے کہا جائے گا کہ تہمیں وہ سب تمنا کیں اور خواہشات بھی دی جاتی ہیں۔ جوتم نے ظاہر کر دی اور تمام دنیا سے دس گنازا کد بھی دیا جاتا ہے۔ وہ عرض کرے گا۔ کہ اے رب! آپ بادشاہ ہو کر بھی مجھ سے تمسخر کرتے ہیں۔ (حضرت ابن گا۔ کہ اے رب! آپ بادشاہ ہو کر بھی مجھ سے تمسخر کرتے ہیں۔ (حضرت ابن مسعود اُ) کہتے ہیں کہ تب میں نے نبی کریم آلی کے کود یکھا کہ وہ اتنا بینے کہ آپ آلی کہ اُلے کہ دانت مبارک ظاہر ہو گئے۔

إنّى الأعرف آخر أهل النار خووجاً. آخرى آدى جوجبتم سے نكل كر جنت مين آئے گا۔

اس كے بارے مين ني كريم الله كا بايان ہے كروہ ايك ايسا آدى ہوگا جوجبتم سے گستما ہوا نكلے گا() وہ جبتم كا اتفارا ہوگا كہ مفلوح آدى كی طرح المصنے كی سكت نہيں ہوگی فيد قدال لمدہ انسطلق المنح اسے جنت ميں جانے كا كہاجائے گا۔ دروازے ميں آكروہ محسوس كرے گا كہ جنت كتما م گھر تو لوگوں سے جرے ہيں۔

اس ليے وہ والي ہوگا۔ اور كہے گا كے ارب الوگوں نے تمام گھروں پر قبضہ كرد كھا ہے۔

اس ليے وہ والي مان المذى كنت فيد كا مطلب: اس كے دومطلب ہوسكتے ہيں۔ ايك يہ كروہ و نيا اور اس كی وسعت كا تصور ذہم نشين كروا اس كی وسعت كا تصور ذہم نشين كروا كرائى كو مطابق احسان كرتا ہے۔ كہ اس سے بھى ہرھ كر ميں دوں گا۔ اس صورت ميں استفہام امر كے مطابق احسان كرتا ہے۔ كہ اس سے بھى ہرھ كر ميں دوں گا۔ اس صورت ميں استفہام امر كے معنی وضعمن ہوگا۔

اورا یک اور معنی ہے کہ کہاتم کو دنیایا دآگئی جہاں کی ہوئی سے ہوئی محارت اور جگہ بھی زیادہ جوم کی وجہ سے بھر جاتی تھی۔ تو کہا تمہارے خیال میں عالم آخرت بھی ایسا ہے کیا جنت کو بھی اتنا تھک سمجھ رکھا ہے (۲)؟ حالا نکہ یہ بیس بھر تا۔ جس طرح جہنم نہیں بھر تا۔ جس کے بارے میں اللہ تعالیٰ نے فر ما یا یو م نقو ل (۱) ایک روایت میں ز حف کی جگہ حبوا کا لفظ آیا ہے۔ لینی بچوں کی طرح ہاتھ یا دَن لگا تا ہوا نظے گا شراح کے مطابق دونوں روایتوں میں تعارض نہیں ہے۔ کیونکہ مکن ہے کہ بعض اوقات میں سرین کے بل سے چلے اور بعض اوقات میں سرین کے بل سے چلے اور بعض اوقات میں ہم یا دی لگا کر چلے۔ (اصلاح الدین)

(۲) پیاحتمال رائح معلوم ہوتا ہے کیونکہ بعد میں 'نعم'' کے کلمہ سے جواب ملتا ہے۔ جو کہ استفہام کے جواب میں آتا ہے۔ نہ کہ امر کے جواب میں علاوہ ازیں استفہام کوحقیقت برجمول کرنا بھی اولی ہے۔ (اصلاح الدین) لجهنّم هل امتلأت و تقول هل من مزيد (ق ۴ س) اس دن بم جبنم سے كبير كے ـ كياتو بحر كيا ـ وه كے گا ـ كيا اور بـ ـ

بہر حال جنت کی وسعتیں زیادہ ہیں۔ اللہ تعالی نے فر مایاو سار عوا إلى مغفرة من رہّ کم وجنة عرضها كعرض السموات والأرض اعدت للمتقین (آل عمر ان ٢٣٣) اور الله ك بخشش اور اس جنت كی طرف تيزى ہے آؤ۔ جس كی وسعت آسانوں اور زمين كی وسعت جیسی ہے۔ وہ اللہ سے ڈرنے والوں كے ليے بنائی گئے ہے۔

کائنات کی وسعت پرسائنسدانوں کا اعتراف: زمین اور آسانوں کے عرض کا پیت کوئی نہیں چلاسکا۔ تو اس کا طول کب معلوم کیا جاسکتا ہے۔ سائنس دان کہتے ہیں کہ بعض ستارے ایسے ہیں جن کی روثنی ہوم تخلیق سے لے کراب تک زمین پرنہیں پینچی حالا نکہ ایک لا کھ چھیا ہی ہزار میل فی سینڈکی رفتار سے روثن سفر کرتی ہے۔ اس سے اندازہ لگایا جاسکتا ہے کہ ہماری ہیکا نئات کتی وسیج ہے۔ جبکہ اس میں موجود ستاروں کی تعداد سمندروں کے کنارے ریت سے بھی زیادہ ہے۔ اور سب کے سب ان سائنس دانوں کے نزدیک پہلے آسمان کے نیچے ہیں۔ ہماری ہے وسیج زمین اس کا نئات کا ایک حقیر سیارہ ہے۔ فلائی جہازوں سے اس کی تصور کھینچی جاتی ہے۔ تو یہ بہت معمولی ہی مخلوق دکھائی دیتی ہے۔ اور سورج سے نسبت کی جائے تو ایک تصور کھینچی جاتی ہے۔ تو یہ بہت معمولی ہی مخلوق دکھائی دیتی ہے۔ اور سورج سے نسبت کی جارے میں قرآن کی بڑے تنور کے اندرایک شکے کی نسبت بھی نہیں بنتی۔ پھرکا کنات میں فرشتے ہیں۔ جن کے بارے میں قرآن کی ارشاد ہے کہ و میا یہ علی جنو د ربک الا ھو (مدائر اسم) اور تیر سے رب کے بارے میں قرآن کی سے۔

وعشرة اضعاف الدنيا اور پراس دنيا كاجس كاستحضار ابهى ابهى تم نے كيا۔اس سے دس

گنا جنت بختجے دی گئی۔ بی تضاعف یا تو باعتبار قیت ہوگی۔ یعنی جنت کی نعمتیں مقدر میں کم بھی ہوں۔ لیکن قیمت کے جنت کی نعمتیں مقدر میں کم بھی ہوں۔ لیکن قیمت کے لخاظ سے بہت بڑھ کر ہونگیں۔ جیسے کہتے ہیں کہ موتی گھوڑے سے کئی گنازیادہ ہے۔ علامہ بیجور گ نے بی تو جیہ ذکر کرنے کے بعد کہا ہے کہ مساحۃ کے اعتبار سے دس گناوسیج جنت کا بھی احتمال ہے۔ اور یہی رانج معلوم ہوتا ہے۔ کیونکہ بات بنگی اور وسعت میں چل رہی ہے۔ نیز خود متعدد روایات میں جنت کی وسعت میں جل رہی ہے۔ نیز خود متعدد روایات میں جنت کی وسعت مذکور ہے۔

فيقول أتسخوبي ايك نسخه مين أتسخوني نون كساته بهي آيا ہے۔ بيخض جوجہم كي ماركھا چکا ہے۔اچا نک بیرکرم اور مہر ہانی اس کے تصور سے بالاتر ہے۔اس لیےوہ کہتا ہے کہ کیاتم میرے سے تمسخر کرتے ہوحالا نکہ تیرے ساتھ تسنحرلا کق نہیں تیری عظیم بستی سے اپیا تسنحر مستبعد ہے۔ جبکہ تو تو یا دشاہ ہے۔ ایک اشکال اوراس کا جواب: یہاں بیاشکال ہوتا ہے کہ شخراللہ تعالی کے حق میں معدر ہے۔ نیز بہتو آخرت اور جنت میں دخول کا موقع ہے۔ لہذا بیعذر بھی معقول نہیں کہ بندہ کواللہ کی صفات کاعلم نہیں ہوگا۔اس کا جواب بیدیا جاتا ہے کہ بیخض غیر متوقع انعامات کے حصول اور رب کریم کے کرم سے اتنا خوش ہوگا کہ خوثی سے بدعواس ہوکر بے اختیار یہ جملہ بول بڑے گا۔اگر چہشخراس کاعقیدہ نہیں ہے۔جبیا کہ نبی کریم تالق ایک ایسے مخص کے بارے میں فرماتے ہیں جس نے لق ودق صحراء میں اپنی سواری اوراس پر موجود کھانا، یانی کھودیا ہو۔ تلاش بسیار کے بعدزندگی سے مایوس ہو چکا ہو۔ پھرا جیا نک اپنی سواری کو یالیا ہو۔ تووه بدحواس موكركم تاب اللهم انت عبدي و انا ربك (١) اے الله تومير ابنده اور ميں تيرارب مول \_ (۱) مسلم كتاب التوبير ٢٠ ص ٣٥٥ كتاب التوبية ،واضح رب كهامام نوويٌ نه اس مقام ير دواور جواب بهي ذكر كئے ہیں۔اول یہ کہ چونکہ مشخص اس موقع پر کچھ بدعہد یوں کام تکب ہو چکا ہوگا۔جبیبا کہ بعض روایات میں ان کی تفصیل ہے لهٰذاوہ خیال کرے گا کہ میں جنت کا اہل نہیں ہو۔ پھر تضاعف مذکور کا اہل کیونکر ہوں گا۔ یہ تو اللہ تعالیٰ کی طرف سے میری وعدہ شکنوں کی سز اکے طور برمحض اطماع ہے۔اورخلاف واقع لالچ دے کرسز ادی جارہی ہے۔ جے اس نے استہزاء سے تعبير كرديا \_ دوم بيابمز واستفهام الكارك ليه بور تومعنى بيهوگا كتم تويقيياً استهزاء نبيس كرر ب ركين بنده كي ناامليت اور انعام کی عظمت قابل تعجب اور تتسخر سے مشابہ ہے۔

ملاعلی قاریؓ نے یہ بھی کھا ہے کہ اس جملے سے اس فیض کا مخاطب کوئی فرشتہ ہو۔ اس تقدیرو انست السملک بفتح لام ہونا چا ہے۔ کین روایت ملک بکسر اللام کی ہے۔ (اصلاح الدین)

فلقد رأیت رسول الله عَلَیْ ضحک لام یهال بھی موطئ سے یعنی خدا کا تم یس نے نبی کریم عیال الله عَلَیْ ضحک لام یهال بھی موطئ سے یعنی خدا کا تم یس نے نبی کریم عیالتے کو دور سے بنتے ہوئے دیکھا۔ آپ اللہ کی یہ نبی یا تو بندے کی کوتاہ اندیثی سے تجب کی بنا پر ہے کہ جہنم اور جنت کود کھے کر بھی اس کے عقل میں قدرت الہی کی بے پایانی کما حقہ نہ سموسکی۔ یا پھر بندے کی تواضع اور بدحواس پر آپ علیات کو تجب ہوا۔ یا پھر دب کریم کی رضا اور غلب رحمت سے آپ اللہ خوش ہوکر ہنے۔

ترجمہ: علی بن ربعہ کہتے ہیں کہ میں حضرت علی کے پاس آیا۔ (اس اثنا میں) ان کے پاس ایک جانور (گھوڑ ایا نچر) سواری کے لیے لایا گیا۔ جب آپ نے اپنا پاؤں رکاب میں رکھا توبسفم الله پڑھی پھر جب پوری طرح سواری کی پیٹر پر بیٹر گئے۔ تو

(۱)سنن ابسى داؤد ۱ ۳۷۴ كتاب الجهاد باب مايقول الرجل اذاركب، جامع ترمذى ٢٥٢/٥ كتاب الدعوات باب مايقول إذا ركب الناقة، السنن الكبرئ للبهيقى ٢٥٢/٥، مسندابى داؤد الطيالسي ص ١٣٢ (مختار)

المحمد للله کہا پھرید عاپڑھی 'سبحان اللہ ی سخو النے ''ترجمہ: پاک ہوہ ذات جس نے اس سواری کو جارے لیے مخر کردیا ہے اور ہم (ق) اس کو مطبع بنانے والے والے بیس (ہوسکتے) تھے۔ اور بے شک ہم اپنے رب کی طرف لوٹ کرجانے والے بیس۔ اس کے بعد تین مرتبہ الحمد لله کہا اور تین مرتبہ الله اکبر کہا۔ پھر یہ دعا کی 'سبحانک إنّی ظلمت نفسی المنح ''ترجمہ: پاک ہے تو بیشک میں نے اپنے نفس پرظلم کیا ہے۔ پس اے اللہ میری مغفرت فرما کیونکہ آپ کے سواکوئی بھی گناہوں کی مغفرت نہیں کرتا۔ اس دعا کے بعد حضرت علی بنسے۔ میں نے عرض کیا۔ اے امیر المؤمنین آپ کیوں بنسے۔ انہوں نے کہا کہ میں نے عرض کیا۔ اے امیر المؤمنین آپ کیوں بنسے۔ انہوں نے کہا کہ میں نے عرض کیا۔ آپ کیوں بنسے۔ تو انہوں نے فرمایا کہ بیش اللہ تعالی بندے کے اس قول پر کہ 'اے میرے بنسے۔ تو انہوں نے فرمایا کہ بیش اللہ تعالی بندے کے اس قول پر کہ 'اے میرے رب میرے گناہوں کو بخش دے' بہت خوش ہوتا ہے۔ حالانکہ وہ جانتا ہے کہ میرے سواکوئی بھی گناہوں کو معاف نہیں کرسکا۔

أتى بدابة دابة كل ما يدبّ على الارض يعنى زين كاوپر وكت كرف والي بر جانداركانام ب جيساكة ومسامن دابة فى الأرض إلا على الله رزقها "بين مستعمل ب كين عرفايه محود ب في اورك مع به بولا جاتا ب (۱) -

قال بسم الله النح حضرت علی کا پیمل نی کریم آلیک کی کمی کا پرینی ہے۔ اور نی کریم آلیک نے مالیک کے ساتھ نے شاید نوٹ کے عمل پرینی ہے۔ اور نی کریم آلیک کا بینی اللہ ہوں نے بھی کشتی میں سوار ہونے کے بعد اس قتم کی دعا کئی پڑھی تھیں۔ و ماکنا کہ مقور نین لینی ہم میں بیقدرت کہاں کہ ہم اپنی طاقت سے اسے قابو دعا کی پڑی تعداد کو عاجز کردے ایک بے قابواونٹ میر کردیں۔ اگرایک گھوڑ اسرکش ہوجائے۔ تو لوگوں کی ایک بڑی تعداد کو عاجز کردے ایک بے قابواونٹ میر کرنا کئی آدمیوں کے لیے مشکل ہے۔ گراونٹوں کی ایک لیمی قطار کو ایک چھوٹا بچرایک رس سے قابو کر دہا () ملائلی قاریؒ نے لکھا ہے شم خصے ال عوف العام بندوات الاربع (جمع الوسائل ۲۵/۲) (مختار)

ہے۔ وہ آگے جاتا ہے اور بہت سے اونٹ اپنے ساتھ کھنچتا جاتا ہے۔ تو اس مٹی بحر حیثیت والے ضعیف البنیان انسان کی اتن طاقت کہاں کہ اشخ جانوروں کو مخر کر سکے۔ بلکہ آگے جاکر اجرام عالم کو تالع بنادے۔ دریا چیرے، پہاڑوں کوریزہ ریزہ کرے، ستاروں پر کمندڈ الے، لوہا اڑائے اور خلاؤں پر حکمرانی کرے، تو بہر حال یہ اللہ تعالیٰ کی دی ہوئی طاقت ہے۔ جس کی وجہ سے یہ سب کام انسان کرتا ہے اور اللہ تعالیٰ کا نئات کی چیز وں سے استفادے کی اجازت بلکہ ترغیب دیتا ہے۔ ہاں اتنا ضرور حکم دیتا ہے کہ یہ سوچ لوکہ یہ طاقت کس کی دی ہوئی ہے۔ کا نئات کی جو چیز بھی مسرح ہوکر تیرے استعال میں آئے۔ اس کے ساتھ اتنا کہوکہ سبحان الذی سنخولنا ھذا۔

یوں اپنے کمالات کوخالق کی معرفت کا ذریعہ بنادو ۔ لیکن آج کے لوگوں نے سائنس کو معرفت اللہ کا ذریعہ بنانے کے بجائے رب سے دوری کا ذریعہ بنادیا ہے۔ وہ چائد پر گئے تو کہنے لگے کہ جمیں تو وہاں خدانظر نہیں آیا۔ تق یہ ہے کہ جو یہاں اندھا ہودہ چائد پر بھی اندھا ہے۔ بلکہ فہو فی الآخر۔ قوم ان خدانظر نہیں آیا۔ تق یہ ہے کہ جو یہاں اندھا ہودہ چائد پر بھی اندھا ہے۔ بلکہ فہو فی الآخر اندان کے مصداق قیامت کے دوز بھی اندھا ہے۔ جبکہ بھن لوگ تو ایسے بھی ہیں جو چائد پر گئے تو ایمان اللہ تعالی کی اندھا کے ہم اللہ تعالی کی اور خالقیت کے خود بخو د قائل ہو گئے۔ اور اسلام کی مقانیت دل میں ساگئی۔

بہرحال یہی اصل مقصد ہے کہ انسان تسخیر کا نئات کے وقت بیسوچ کے کہ بیسب پھے اللہ تعالی نے ہمارے لیے سخر کردیا ہے۔ کیونکہ بیقوت نظری اور تحلیل وتر کیب عناصر کاعلم اگر انسان کو حاصل نہ ہوتا تو انسان پھے بھی نہیں کرسکتا تھا۔ بیتو انسان ہی ہے جوعلم کے سبب ترتی کرتا جاتا ہے ورنہ گدھا وہی گدھا ہے۔ کہیں کچاسا کمرہ بھی اپنے لئے نہ بناسکا۔ شیروہی شیر ہے۔ انسان بھی وہی حیوان ہے جو تھا۔ کیکن اللہ تعالی کی دی ہوئی صلاحیتوں نے اسے اشرف المخلوقات بنادیا۔ اور روزئی ٹی چیزوں سے کام لیتا جاتا ہے۔

وانّا إلىٰ ربّنا المنح مبداكے بعدمعادكاذكر ہے۔اوراس پر تنبیہ ہے كدونیا مل واللہ تعالى كى دى موئى طافت كا استعال ہے اور پھر واپس اسى كے پاس جانا ہے۔اس استمتاع كى ايك حد بھى ہے۔ يہ سفر آخرى نہيں بلكہ ايك اور سفر بھى ہے۔خداكى طرف، آخرت كور جوع كا سفر، يہ دعا سفر ميں ابتداءكرتے وقت

سامنے ہاتھ پھیلائے۔

بھی مسنون ہے۔ ظلمت نفسی المنح حضرت علی بھی فرماتے تھے کہ میں نے بھی ظلم کیا ہے کیونکہ کون ہے جونعتوں کاحق ادا کر سکے۔ انسان کو آئی عجیب نعمین اور منافع دیے گئے ہیں جس کاشکر بیاوا کرنا نامکن ہے۔ اسی وجہ سے فرمایا انسی ظلمت نفسی قال رأیت المنے یعنی میں نے اس ممل میں نی کر یم الله کا اجتمام اتباع کیا ہے جنہیں میں نے الیما کرتے ہوئے دیکھا تھا۔ اور صحابہ کرام تو اتباع سنت میں تول و ممل کا اجتمام کے ساتھ پیروی کرتے تھے۔ بہر حال حضرت علی نے فرمایا کہ بالکل اس طرح نی کریم الله بھی ہنسے تھے اور میں نے بھی ان سے بوچھا تھا کہ وہ کیوں ہنسے۔ تو انہوں نے فرمایا ان رہتک لیعجب من عبدہ ادافال المنے لیمی اللہ تعالی بندے کی اس بات سے بہت خوش ہوتا ہے کہ وہ رب سے مغفرت مانگے۔ اور وہ اس لیے کہ بندہ مغفرت مانگے ہوئے بیا قرار کرتا ہے کہ گنا ہوں کا بخشنے والا فقط اللہ تعالیٰ ہی ہے۔

اوراللہ تعالیٰ اس کے گنا ہوں سے باخبر بھی ہے۔ یہ بات اسے خوش کردیتی ہے گویا نبی کریم ہے ہے گئا۔ نے فرمایا کہ دب العالمین میرے استعفار سے خوش ہوا۔ اس لئے میں ہنسا۔ حضرت علیٰ کے بیان کے مطابق حضرت علیٰ بھی اسی موجہ سے ہنسے۔ اور ان سے روایت کرنے والے دوسرے راوی بھی اس موقع پر اسی طرح ہنس دیئے۔

علم الله لا يغفر الذنوب النحية جملة قال كي ضمير فاعل سے مال واقع مواہد اور معنى بيہ كر بنده مغفرت طلب كرتا ہے كيكن غفلت جہالت اور بينينى كے ساتھ نہيں بلكه "عالما إنه لا يغفر النح" كينى اس يقين كے ساتھ نہيں ہے۔ كينى اس يقين كے ساتھ طلب مغفرت كرتا ہے كہ اللہ تعالى بندے كاللہ تعالى بندے كى اور ممكن ہے كہ يہ جملہ يعلم بسط مير فاعل سے حال مو اور معنى بيہ ہے كہ اللہ تعالى بندے كى مغفرت كرنے والا بيں بى موں ميرا بنده اوركس كے مغفرت سے خوش موتا ہے۔ بہ جانے موتا ہوئے كہ مغفرت كرنے والا بيں بى موں ميرا بنده اوركس كے

یا پھر قائلاً گی تقدیر کے ساتھ بی معجب کی خمیر سے حال ہوگا۔ تقدیر یوں ہوگا کہ یعجب رہتک قائلاً '' إنّه یعلم عبدی أنّه لا یغفر اللذنوب غیری '' یعنی اللہ تعالی خوش ہوتا ہے ہی کہتے ہوئے کہ میرا موحد بندہ جانتا ہے کہ میر سے سواکوئی بخشش کرنے والانہیں۔اس لئے اس کو میں بخش دیتا ہوں۔

تنبید: بیرهدیث مسلسل بالضحک کہلاتی ہے جھے اس کی سند مخک کے ساتھ مولانا قاری مجھ طیب ہم مارالعلوم دیو بند کے واسطے سے ملی ہے۔اوران کو سند مولانا سہار نپوری سے ملی ہی مسلسلات کی اور بھی مثالیں ہیں۔ مثلاً مسلسل بالماء و التمو وغیرہ۔بہر حال یہاں پر بیسلسلہ حضرت علی سے شروع ہوا۔ پھران کے شاگر و کے بعد دیگر سے بیون کرتے ہوئے بیشتے ہیں۔

(٩) حدّثنا محمّد بن بشار أنبانا محمّد بن عبدالله الأنصارى ثنا إبن عون عن محمّد بن بشار أنبانا محمّد بن الأسود عن عامر بن سعد قال قال سعد لقد رأيت رسول الله عليه ضحك يوم الخندق حتّى بدت نواجذه قال قلت كيف كان قال كان رجل معه ترس و كان سعد رامياو كان يقول كذا و كذابالترس يغطى جبهته فنزع له سعد بسهم فلما رفع راسه رما ه فلم يخطئى هذه منه يعنى جبهته وانقلب و شال برجله فضحك رسول الله عليه على بدت نواجذه قال قلت من اى شئى ضحك قال من فعله بالرّجل (١).

ترجمہ: عامر بن سعد کہتے ہیں کہ میرے والدسعد بن ابی وقاص نے فرمایا کہ نبی

کر یم اللہ فاری خندق کے موقع پر زور سے بنسے تھے۔ ہیں نے پوچھا کہ کس بات پر

بنسے تھے۔ انہوں نے کہا ایک (کافر) آ دمی کے پاس ڈھال تھی اور سعد مشہور تیر
اثداز تھے۔ لیکن کافر ڈھال کو ادھر ادھر کرکے خود کو (ان کی تیروں سے) بچاتا تھا
حضرت سعد نے ایک مرتبہ تیر نکالا۔ پس جونبی اس (کافر) نے (ڈھال سے)
مراٹھایا۔ حضرت سعد نے تیر مارا نو اس کی پیشانی تیرسے نی نہ سکی ۔وہ شخص الٹا
موگیا۔ پاؤں اوپر کو اٹھایا (بید کھیکر) نبی کر یم اللہ اسے دورسے) بنسے کہ آپ میں اللہ کے دانت مبارک ظاہر ہوگئے۔ راوی کہتے ہیں میں نے پوچھا کہ نبی کر یم اللہ کے دانت مبارک ظاہر ہوگئے۔ راوی کہتے ہیں میں نے پوچھا کہ نبی کر یم اللہ کے دانت مبارک ظاہر ہوگئے۔ راوی کہتے ہیں میں نے پوچھا کہ نبی کر یم اللہ کے دانت مبارک ظاہر ہوگئے۔ راوی کہتے ہیں میں نے پوچھا کہ نبی کر یم اللہ کے دانت مبارک ظاہر ہوگئے۔ راوی کہتے ہیں میں نے پوچھا کہ نبی کر یم اللہ کے دانت مبارک ظاہر ہوگئے۔ راوی کہتے ہیں میں نے پوچھا کہ نبی کر یم اللہ کے دانت مبارک ظاہر ہوگئے۔ راوی کہتے ہیں میں نے پوچھا کہ نبی کر یم اللہ کی میں نے بوجھا کہ نبی کر یم اللہ کیا۔ بات سے بنسے تھانہوں نے کہا کہ حضرت سعدگا اس کافر کا کام تم ام کرنے ہے۔

(۱)منداحدار۱۸(عتار)

ضحک یوم المخندق حتی بدت نواجده لیخ غزوه خنرق کے موقع پرآ پیکھی بہت زور سے بننے تھے۔ قال قلت کیف کان قال کے قائل یا محمد بن محمد بیں۔ جوعام بن سعد سے لو چور ہے بیں۔ یا پھر عامرا پنے والد سعد سے لو چھتے ہیں کہ نی کر پھر اللہ کے اس بننے کے۔ یوں قال کے قائل عامر سے بیں۔ یا پھر عامرا پنے والد سعد وامیااً گر سائل محمد بن محمد ہو پھر تو محتی ظاہر ہے۔ صرف اتنا کیا ہے کہ عامر نے ''کان ابھی'' کی بجائے ''کان سعد '' کہا ہے۔ اورا گر سائل عامر اور جواب دینے والا سعد بہوتو حضر ت سعد نے ''کان سعد '' کہا ہے۔ اورا گر سائل عامر اور جواب دینے والا سعد بہوتو حضر ت سعد نے نے تبدیلی کر کے ''کنت و امیا'' کی بجائے اظہار کی بجائے اضار کر کے اپنانا م لیا ہے۔ یا حضر ت عامر نے بیتبدیلی کر کے روایت بالمتنی کی ہوگی۔ بہر حال سند حدیث میں اس قتم کے تصرفات بکثر ت موجود ہیں۔ مطلب یہ ہے کہ حضر ت سعد اس تاک میں ہے کہ سرح کے مسلمانوں کی گرانی کرتا رہا۔ دوسری طرف مشہور تیرا نماز کر حضر ت سعد اس تاک میں ہے کہ سرح کے مسلمانوں کی گرانی کرتا رہا۔ دوسری طرف مشہور تیرا نماز کے خال کے ذریعہ یوں یوں کرتا ہے کہا کہ دو اس کے خال کے دریعہ یوں یوں کرتا ہے کہا کہ دو میں بظاہر یہاں یقول کا محتی یفعل کیا جاتا ہے۔ دوہ ڈھال کے ذریعہ یوں یوں کرتا ہے کہا کہ دوسرت سعد گی تیروں سے پختار ہا۔ کوئی تیرآ تا تو سراور پیشانی کو گوال سے چھاد یتا تھا۔ قول کا استعال فعل کے معتی میں بکشر ت موجود ہے۔
دو اللہ سے چھاد یتا تھا۔ قول کا استعال فعل کے معتی میں بکشر ت موجود ہے۔

لیکن بیاحثال بھی ہے کہ تول اپنے معنی میں ہو۔اور مرادیہ ہو کہ وہ کافرنی کر یم اللے اور مسلمانوں کے حق میں یوں ہوں ہوں کہتا تھا یعنی گالیاں بکتا تھا۔حضرت سعد نے اس کے فتیج کلام کو کنلیہ ذکر کیا اور ''بالتسوس''بعد کے' یہ خطی ''کے ساتھ متعلق ہوگا یعنی'' وہ مخص ڈھال سے اپنی بپیٹانی کو چھپادیتا تھا۔فنزع له سعد بسهم حضرت سعد نے شست لگائی جونی اس نے ڈھال سرکایا پیٹانی تھوڑی تی ظاہر ہوئی حضرت سعد نے تیر چھوڑا۔فلم یخطئی ھذہ منہ ''ھذہ ''سے اشارہ پیٹانی کو ہے جیسے کہ خودروای اس کی فسیر کرتے ہیں۔ تو معنی یہ ہوا کہ پیٹانی تیرسے خطانہ ہوئی یہاں لفظ میں قلب ہوا ہے معنی ہے کہ اس کی فسیر کرتے ہیں۔ تو معنی یہ ہوا کہ پیٹانی تیرسے خطانہ ہوئی یہاں لفظ میں قلب ہوا ہے معنی ہے کہ تیر پیٹانی سے خطانہ ہوا۔ نشانے برلگا کافرگرا، یا دُن اٹھار ہنہ ہوگیا اور مرگیا۔

 شال برجله شول دراصل دم الله الخوائية بين شال الفوس بذنبه "ليني گورث نے بھاگتے ہوئے دم الله دیا۔ پہال پریاؤں کے لیے پیلفظ استعارة مستعمل ہے۔

من ای شند می صحک اس سوال کا مقصد بید ہے کہ یہاں پر گی اختال ہے۔ کا فرک موت و بدحالی اور ذلت اس کی عورت کا ظاہر ہوتا ، اس کے سرکا نیچے اور پاؤں کا او پر ہوتا۔ اور حضرت سعدگی مہارت اور تیرا ندازی میں اصابت ۔ تو آپ اللہ ان میں سے کس بات پر بنسے تھے ظاہر ہے کہ سائل کو یہ بات مستجد گی ہے کہ نبی کر یم آلیہ کسی کی شرمگاہ ظاہر ہونے کی وجہ سے بنسے تھے۔ چنانچہ پوچھ لیامن فعل مستجد گی ہے کہ نبی کر یم آلیہ کسی کی شرمگاہ ظاہر ہونے کی وجہ سے بنسے تھے۔ چنانچہ پوچھ لیامن فعل مستجد گی ہے کہ ایک عاصل بیہ ہے کہ آپ آلیہ حضرت سعد گی حذاقت اور تیرا ندازی میں مہارت سے بنسے تھے کہ اس نے کا فر کے ساتھ عجب معاملہ کیا۔ جیسے آج کل کھیوں میں دیکھاجا تا ہے کہ کوئی کھلاڑی جوا یک گیند بھی صحیح بھینک دیتا ہے تو سارا جمع اور تماشین ایک شور پر پاکر کے اس کی مہارت کی داد دیتے ہے۔ یہاں بھی ایسا بھی ہوا۔ مزید ہے کہ ایک مسلمان کی کامیا بی اور کفر کی شکست بھی خوشی کا باعث تھی۔ بہر حال آپ مسلمان کی کامیا بی اور کفر کی شکست بھی خوشی کا باعث تھی۔ بہر حال آپ مسلمان کی کامیا بی اور کفر کی شکست بھی خوشی کا باعث تھی۔ بہر حال آپ مسلمان کی کامیا بی اور کفر کی شکست بھی خوشی کا باعث تھی۔ بہر حال آپ مسلمان کی کامیا بی اور کفر کی شکست بھی خوشی کا باعث تھی۔ بہر حال آپ مسلمان کی کامیا بی اور کفر کی شکست بھی خوشی کا باعث تھی۔ بہر حال آپ میں ایسا تھی خوشی کا باعث تھی۔ بہر حال آپ میں ایسا تھی بھی خوشی کی بیاں بھی اور میں ہوں۔ میں بیاں بھی بی دور سے نہیں بنے تھے۔

## خلاصه بإب

اس باب میں نبی کر پر آلیگی کے بنسی کی کیفیت اوراس کے کل کابیان ہے۔ مجموعی طور پر احادیث سے خاہر ہوتا ہے کہ آپ آلیگی کی بنسی کا سبب یا تو رحمت خداوندی کا دفو راور بندے کی عابر کی و بربی جیسے کھری حقیقت ہے یا وہ خوشی اور مسرت ہے جو باطل کی شکست اور غلبہ مخ کی وجہ سے آپ آلیگی کو حاصل ہوئی۔ یا پھر حسن معاشرت اور صحابہ کی دلداری کی وجہ سے آپ آلیگی بنسے ہیں۔ دنیوی مفرحات، لذائذ، مفادات اور بجائی ہوئی۔ یا پھر حسن معاشرت اور صحابہ کی دلداری کی وجہ سے آپ آلیگی بنسے ہیں۔ دنیوی مفرحات، لذائذ، مفادات اور بجائیب آپ آپ آلیگی کے وقار کو ہلانہ سکتی تھی اور نہ مسرتوں سے بے قابو ہو کر بدمست لوگوں کی طرح آپ آپ آلیگی تھے۔ گوئی زیادہ ہوتی تو محدود ہوتی اور وہ بھی اکثر و بیشتر تبسم کی صورت میں۔ ہاں بھی خوشی زیادہ ہوتی تو محدود ہوتی اور وہ بھی اکثر و بیشتر تبسم کی صورت میں۔ ہاں بھی

بہر حال بنی آپ آلیہ کی ترجیات میں سے نہیں ہے۔اس کئے اکثر آپ آلیہ اس کی کثرت سے نع بھی فرماتے ہیں۔ سے نع بھی فرماتے ہیں۔اوراوروں کو ہنسانے پر تو بری طرح نکیر بھی فرماتے ہیں۔

(اللَّهمّ ارنا ضحك سنان الحبيب عَلَيْكُ يوم القيامة)

## ۳۲. باب ما جاء فی صفة مزاح رسول الله عَلَيْتُ اللهُ عَلَيْتُ اللّهُ عَلَيْتُ اللهُ عَلَيْتُ اللهُ عَلَيْتُ اللّهُ عَلَيْتُ اللّهُ عَلَيْتُ اللهُ عَلَيْتُ اللهُ عَلَيْتُ اللهُ عَلَيْتُ اللّهُ عَلَيْتُ اللّهُ عَلَيْتُ عَلَيْتُ اللّهُ عَلَيْتُ عَلَيْتُ اللّهُ عَلَيْتُ عَلَيْتُ اللّهُ عَلَيْتُ عَلَيْتُمْ عَلَيْتُمُ عَلَيْتُمْ عَلَيْتُ عَلَيْتُ عَلَيْتُمْ عَلَيْتُ عَلَيْتُ عَلَيْتُمْ عَلَيْتُمْ عَلَيْتُ عَلِيْتُمْ عَلَيْتُمْ عَلِيْتُ عَلِيْتُمْ عَلِيْتُمْ عَلَيْتُمْ عَلِيْتُ عَلِيْتُمْ عَلِي عَلِيْتُمْ عَلِيْتُمْ عَلِيْتُمْ عَلِيْتُعِمْ عَلِيْتُعُمُ عَلِيْتُمُ عَلِيْتُمُ عَلِيْتُمُ عَلَّا عَلِيْتُمُ عَلِيْتُ عَلَّا

نی کریم آلیک خوش طبعی بھی فرماتے ہے آپ آلیک خوش اور درشت نہ تھا۔ اس لیے آپ آلیک خوش طبعی بھی فرماتے سے آپ آلیک خوش طبعی بھی تھی کہ غم ، فکر اور بوجھ کے باوجود انسان کوچا ہے کہ وہ کشادہ روئی کے ساتھ لوگوں سے تعلقات نبھائے۔ اسی وجہ سے آپ آلیک سے گپ شپ کے علاوہ نما آق بھی ثابت ہے جس میں ایذاء نہ تھی ۔ صحابہ سے انبساط بھی فرماتے تھا تی کومزاح کہتے ہیں۔ اور عموماً ایسا مزاح ہنمی کا سبب بنما ہے۔ لہذا پچھلے باب کے ساتھ مناسبت بھی ظاہر ہے۔

آج کل تو مزاح کو بے قید آزادی دی جا چی ہے۔ ہرتتم کے گپ شپ بلکہ تسخر کو جائز قرار دیا گیا ہے۔ خصوصا کیم اپریل کو تو اس میں بہت زیادہ ایذاء رسانی ہوتی ہے۔ مثلاً کسی کوفون پر بتایا جاتا ہے کہ تیرا پچے جل گیا ہے، گھر بگر گیا ہے یا باپ مرگیا ہے۔ اس بچارے پر قیامت آ جاتی ہے اور فون کرنے والے کی جھوٹ بولنے کی شکایت کی جائے تو وہ کہتا ہے کہ میں تو اپریل فول کرر ہاتھا۔

جائز مزاح کی شرائط:

کی تذکیل و تحقیر ہویا دوسری طرح کی ایذاء رسانی پر شتم کا غذاق اڑانا جائز نہیں۔ جس مزاح میں افراط ہو، کسی کی تذکیل و تحقیر ہویا دوسری طرح کی ایذاء رسانی پر شتمل ہو، اسلامی نقطہ نگاہ سے وہ نا جائز ہے۔ اس طرح اسلام میں مزاح پر مداومت اور اس کی کثر ت کو بھی فتیج تصور کیا جاتا ہے۔ کیونکہ اس طرح ہروقت ہنستا پڑتا ہا اسلام میں مزاح پر مداومت اور اس کی کثر ت کو بھی فتیج تصور کیا جاتا ہے۔ کیونکہ اس طرح کر میں مخل گپ شپ ہے اور کثر ت بھی ضرور کی قرار دیا گیا ہے۔ آج کل تو بعض بے لگام فتم کے واعظین ان شرائط کو طوظ نہیں رکھتے۔

ببرحال ان منهیات کی وجد نے نی کریم اللہ نے فرمایا کہ لا تماد اخاک و لا تماز حه و لا تعدد موعداً فتخلفهٔ لین اپنے مسلمان بھائی ہے جھڑ اندکرو۔نداس کا نداق اُڑ اواورنداس کے ساتھ الیادعدہ کروجس کوتم پوراندکرسکو۔

حضرت سفیان بن عیدید ی نے کہا کہ مزاح تو قابل گرفت عمل ہے۔ آپ نے کہاب ل سنة

ولكن لمن يحسنه ويضعه مواضعه. نہيں مزاح سنت بيكن ان لوگوں كے ليے جواسا چھ طريقے سے كرسكيں اورايي كل ميں نبھا سكيں۔

عرفاً مزاح وہ ہوتا ہے جس کامفہوم کھو کھلا اور بے حقیقت ہولیکن آپ آلی کھو کا مزاح اس نوعیت کا خواج اس نوعیت کا خواج اس نوعیت کا خواج اس نوعیت کا خواج اللہ آپ آلی کے اللہ آپ آلی کے اللہ کہ آپ آلی کے اللہ کہ آپ آلی کے اللہ کہ اللہ کہ اللہ کہ اللہ کہ اللہ کی بات میں لگائی ہے (۱)۔

(۱) حدّثنا محمود بن غيلان أنبانا أبو أسامة عن شريك عن عاصم الأحول عن أنس بن مالك قال أنّ النبيّ عُلَيْكُ قال له ياذا الأذنين قال محمود قال أبو أسامة يعنى يمازحه (۲).

ترجمہ: حضرت انس کتے ہیں کہ نبی کر پھی اللہ نے اسے خاطب کر کے فرمایا 'نیا ذا الأذنیات " (اے دو کا نوں والے) محمود بن فیلان کہتے ہیں کہ ابواسامہ نے کہا کہ حضرت انس کا مقصد بیہ ہے کہ نبی کر پھی اللہ ان کے ساتھ مزاح کرتے تھے۔

(۱) علامة عبدالجوادالروئ في رسول التعلق كمزاح كي وجه بيان كرتے هوئ كلام عسد البعض السلف عن معزاحه على المسلف عن معزاحه على الله المسلف المسلف عن معزاحه على المسلف المسلف عن معزاحه على المسلف المسلف المسلف عن عن المسلف المسلف

(۲)سنن ابى داؤد ۳۳۵/۲ كتاب الادب باب ماجاء فى المزاح، جامع ترمذى ۴۲۳/۲ كتاب البرو الصلة باب ماجاء فى المزاح، شرح السنة للبغوى رقم حديث ۲ • ۳۲(مختار) ذالاذنین کامطلب: یاذا الاذنین لیمنی آپ آلی الیوردل گی فرمایا 'نیاذالاذنین 'اگرچه مخص کے دوکان ہوتے ہیں۔ لیکن آپ آلی الیو کے اس مزاح ہیں مخاطب کا استینا س لیمنی مخاطب پر چھا جانے والے رعب کو کم کرنا مقصود تھا۔ اور مانوس کرانا تھا۔ جس سے مزاح کا جواز بھی معلوم ہوتا ہے۔ اور ہوسکتا ہے کہ حضرت انس کا سامعہ تیز ہونے کی وجہ سے آپ آلی نے اسے ذوالا نین کہا ہو۔ جسیا کہ علامہ بیجوری کہتے ہیں کہ وصفہ بذالک مدحاً له لذکاء ہ و فطنته۔ چنا نچ بیکلام مین استماع سے کنا یہ ہوگا۔ جبکہ بعض علاء نے بیکھا ہے کہ حضرت انس کا نوں کے طول یا کوتا ہی یا کسی دوسرے عیب کی وجہ سے متاز تھے۔ اس لیے ان کواس نام سے بیکارا ہے۔

لیکن اس کے ساتھ ساتھ اس تعبیر میں بھی بڑا درس ہے۔ اس میں اس بات پر تنبیہ ہے کہ اے مخاطب اللہ تعالیٰ نے مخجے دو کان دیئے ہیں تا کہتم حق سنو اور اس میں غفلت نہ برتو۔ تیرے دماغ کو دوراستہ جاتے ہیں۔ تد ہراورتفہم کے بہترین اسباب دیئے گئے ہیں ان سے کام لو۔ اور سنی ہوئی بات کو ساع تد ہر سے سن کراس سے استفادے کے مواقع ضائع نہ کرو۔

(۲) حدّثنا هنّاد بن السرى ثنا وكيع عن شعبة عن أبى التيّاح عن أنس ابن مالك قال ان كان النبى عَلَيْكُ ليخالطنا حتّى يقول لاخ لى صغير يا أباعـميـر ما فعل النّغير قال أبو عيسى وفقه هذا الحديث أنّ النبى عَلَيْكُ كان يـمازح وفيه انّه كنّى غلاماً صغيراً فقال له يا أبا عمير وفيه انّ لا باس ان يعطى الصّبى الطّير ليلعب به وإنّما قال له النبى عَلَيْكُ ياأبا عمير مافعل النغير لأنّه كان له نغير فيلعب به فمات فحزن الغلام عليه فمازحه النبي عَلَيْكُ فقال ياأبا عمير ما فعل النغير (١).

(۱) صحيح بخارى ۹۰۵/۲ کتاب الادب باب الاستنباط إلى الناس وصحيح مسلم ۲۱۰/۲ کتاب کتاب الادب باب ماجاء استحباب نخيل ولمولدعندو لادته الخ، جامع ترمذى ۱۸۵/۱ کتاب الصلواة باب ماجاء في الصلواة على السبط، سنن الكبرئ للنسائى كتاب عمل اليوم الليلة، سنن ابن ماجة ۲۷۲/۱ کتاب الادب باب المزاح، (مختار)

ترجمہ: حضرت انس کہتے ہیں کہ نبی کریم اللہ ہم (چھوٹے بردوں) ہے میل جول رکھتے تھے۔ حتی کہ آپ اللہ میں کہ ایک چھوٹے بھائی سے (بطور انبساط) فرماتے کہ ''اے ابوعیسر تیرے بلبل کو کیا ہو گیا''

حضرت الوعمير: أبوعمير معرض الس كا عام حفى بتايا ہے۔ جبكہ علامہ بجوری نے كبعہ كھا ہے۔ كم من ميں بى انساری بي سعلامہ ابن جر نے ان كا نام حفص بتايا ہے۔ جبكہ علامہ بجوری نے كبعہ كھا ہے۔ كم من ميں بى كريم الله كا نہ ميں وفات پائى۔ ان كى وفات كے بعد ان كى والدہ ام سليم نے گھر والوں كو كہا كہ اس كے والد ابوطلح يومير سواكوئى وفات كى خبر نہ دے۔ چنا نچہ شام كو جب ابوطلحہ نے بچ كے بارے ميں پوچھا تو ام سليم نے بتايا كہ آرام سے ہے۔ انہوں نے كھانا كھايا۔ رات كو بيوى ام سليم كے ساتھ بمبسترى بحوج كو وقت ام سليم نے بتلا ديا كہ بچ كى وفات ہو بچكى ہے۔ كين ثواب كى نيت سے صبر كرنا۔ نبى كريم الله تعالى نے عبد الله بن ابى طلح كو بيدا كريم الله بن ابى طلح كو بيدا كى بيدا ہوں بيرى بركمتيں عطاكى گئي تھيں۔

لیخیا لطنالین نی کریم الله مارے ساتھ بے تکاف رہتے تھے۔ گپ شپ میں شریک ہوتے تھے۔ ابوعمیر سے مزاح کا قصدامام ترفدیؓ کے بیان کے مطابق یوں تھا کہ اس بچے نے ایک پرغدہ پال رکھا تھا۔ جومر گیا تھا۔ اس کی موت سے اسے دکھ ہوا تھا۔ نبی کریم الله نے نے اس کی خاطر داری کے لیے فرمایا ''اے ابوعمیر تیری بلبل کوکیا ہوگیا ہے'' یعنی کیا وہ تم سے ردگھ کرمر گیا ہے۔

نسفیسر چڑیا کی طرح کا ایک چھوٹا ساپرندہ ہے بعض نے چڑیا کے بچ ہی کونغیر کہا ہے۔ کچھشراح

کہتے ہیں کہ پیچھوٹے چوٹج اور سرخ سروالا ایک چھوٹاسا پر ندہ ہے جسے لال یا بلبل کہتے ہیں۔

قسال أبو عيسى المنع المنع المنع المنع المنع المنابيان عنوان ساس مديث كى باريكيال بيان کرتے ہیں کہ اس مقام پر اس کم سن بیچ کے ساتھ مزاح میں متعدد امور کو اشارہ ہے۔مثلاً بیر کہ نبی كريم الله بھي مزاح كياكرتے تھے اور بيركہ چھوٹے نيچ كوكنيت سے يكارنا جائز ہے(۱) نيزير مرول كے ساتھ کھیانا بچوں کا کام ہے۔اوران کے لیے جائز بھی ہے۔ بروں کواس سے احتر از کرنا جا ہیے۔ بعض مسائل مستنبطه: ببرحال ني كريم الله كاعباد تقاكر آيات كام كا عباد تقاكر آيات كام كا لفظ لفظ میں دقائق موجود ہیں۔ بلکہ اس جملہ کے بارے میں بعض علاء کا خیال ہے کہ اس سے سوسے زائد مسائل کا انتخراج کیا جاتا ہے(۱) بعض فوائد کوحواثی میں بھی نقل کیا گیا ہے، مثلاً

- تكنية الصغيرجائز بـ (1)
- چھوٹے بچوں کے لیے برندوں کے ساتھ کھیلنا جائز ہے بشر طیکہ وہ اسے اذبت نہ دیں۔ **(r)** 
  - مدینه منوره کے شکار کا تھم وہ نہیں جوحرم یاک کے شکار کا ہے یہی جمہور کا فد ہب ہے۔ **(m)** 
    - استفہام کے ادات استعلام کی بجائے دوسر سے اغراض کے لیے بھی درست ہیں۔ (r)
      - تفغيرالاساء جائز ہے۔ (a)
      - منجع کلام کرناممنوع نہیں البیتاس میں تکلف سے بچنا جا ہیے۔ (Y)
      - چھوٹے اور عمر رسیدہ لوگوں کی دلجوئی کے لیے ان سے دل لگی کرنا جا تز ہے۔ (4) اس طرح ضعفاء کی کمال رعایت کی ترغیب دی گئی ہے۔

(۱) یا در ہے کہ کنیت کے لئے حقیقت ضروری نہیں ۔ بھی بھار تفاو لا بھی کنیت رکھی جاتی ہے۔ جیسے ابوالکلام، ابوالحسنات وغیرہ۔ان دونوں مثالوں سے بالکل واضح ہے۔اس لئے نہ کلام کا توباپ ہوتا ہے اور نہ حسنات ۔ چونکہ اب کا ایک معنی صاحب یعنی ساتھی کے بھی آتا ہے۔اس لئے ابوالکلام سے مرادصاحب الکلام اور ابوالحسنات سے صاحب الحسنات مراد ہے۔امام اعظم ابوحنیفیڈی کنیت بھی اس قبیل سے ہے۔اس لئے کہامام ابوحنیفیڈی کوئی بیٹی نبین تھی یہ کنیت تفاولاً رکھی گئی تھی۔ تو يهال يربهي اس يج كے لئے انخضرت علي في نفاولاً كنيت استعال كى علامہ يجوري نے لكھا ہو هو لاباس به لأن الكنيّة قد تكون للتفاول بانّه يعيش ويصير اباً لكونه يولدله (المواهب اللدنية ١٥١) (مختار)

(٢)قال البيجوري أفر دهاريعني فوائد هذاالبحث) ابن القاص بجزء ١٢ المواهب اللدنية (مختار)

(٣) حدّثنا عباس بن محمّد الدورى قال أنا على بن الحسن ابن شقيق أنا عبد الله بن المبارك عن أسامة بن زيد من سعيد المقبرى عن أبى هريرة قال قالوا يا رسول الله عَلَيْكُ إِنّك تداعبنا قال إنّى لا اقول إلاحقا تداعبنا يعنى تماز حنا(١).

تداعبنا یعنی تماز حنامداعبه کسی کی دلجوئی کے لیےدل کی کرنے اور پیٹے بول پولئے اور پیٹے بول پولئے کہتے ہیں۔

(٣) حدّثنا قتيبة بن سعيدثنا خالد بن عبدالله عن حميد عن أنس ابن مالك إنّ رجلا استحمل رسول الله على فقال إنّى حاملك على ولدناقة فقال يارسول الله عليه ما اصنع بولدالنّاقة فقال رسول الله عليه وهل تلدالابل إلاّالنوق (٢).

(۱) الادب السمفردللبخسارى ٧٤ رقم الحديث ٢ ٢ ٢ بساب السمزاح، السنن الكبرى للبيهقى ١ / ٢ ٢ ، مشرح السنة رقم الحديث ٢ ٢ ٢ ، مسندا حمد ٢ / ٢ ٣ (مختار) (٢) سنن ابى داؤد ٣٣/٢ كتاب الادب باب ماجاء فى المزاح، جامع الترمذى ٣٣/٢ كتاب البرو الصلة باب ماجاء فى المزاح، السنن الكبرى ١ / ٢٣/٨ (مختار)

ترجمہ: حضرت انس کہتے ہیں کہ ایک آدمی نے نبی کریم آلی ہے سے سواری (کیلئے اونٹنی) طلب کی آپی آلی ہے دے دیتا ہوں۔ اونٹنی کا بچہ سواری کے لیے دے دیتا ہوں۔ اس شخص نے عرض کیا کہ میں اونٹنی کا بچہ لے کر کیا کروں گا۔ تو آپ آپ آلیہ نے فرمایا کہ اونٹوں کو اونٹیاں ہی جنتی ہیں۔

ان رجلاً استحمل استحمال "حملوه" لينى سوارى طلب كرنے كو كتے بيں ما اصنع بولدالنے يہاں سائل كويرو بم لائق ہوا ہے كرنى كريم اللية اونٹى كاچھوٹا كيردے رہے ہيں۔

حالانکہ اسے سوچنا چا ہیے تھا کہ کہیں اس عام کے شمن میں خاص وَلَد تو مراد نہیں ہے۔ نبی کریم آلیا گئے گئے ۔ نے نداق میں اسے تنبیہ کردی کہ کسی بات سے کوئی نتیجہ اخذ کرنے سے قبل تقلمند آ دمی کواس پر سوچنا چا ہیے۔ اور تمام پہلوؤں پرغور وفکر کرنے کے بعد اگر کوئی اشکال باقی رہے تو اس کی وضاحت کے پیچھے پڑنا چا ہیے۔

(۵) حدّثنا إسحاق بن منصور ثنا عبدالرزاق ثنا معمر عن ثابت عن أنس بن مالك إنّ رجلا من أهل البادية كان إسمه زاهراً وكان يهدى إلى النبيّ عَلَيْكُ هديّة من البادية فيجهّزه النبيّ عَلَيْكُ إذا أرادان يخرج فقال النبيّ عَلَيْكُ إنّ زاهراً باديتنا و نحن حاضروه وكان رسول الله عَلَيْكُ يحبّه وكان رجلا دميما فاتاه النبيّ عَلَيْكُ يوماً وهو يبيع متاعه واحتضنه من خلفه ولا يبصره فقال من هذا أرسلني فالتفت فعرف النبيّ عَلَيْكُ فجعل لا يالوما الصق ظهره بصدر النبيّ عَلَيْكُ حين عرفه فجعل النبيّ عَلَيْكُ يقول من يشتري هذا العبد فقال الرجل يا رسول الله عَلَيْكُ إذا والله تجدني كاسداً فقال رسول الله عَلَيْكُ لكن عندالله لست بكاسداو قال أنت عندالله غال (۱).

ترجمه: حضرت انس بن ما لک ہے روایت ہے کہ زاہرنا می ایک دیہاتی شخص تھا۔

(۱) شرح السنة للبغوى ۱۸۱/۱۳ كتاب الرقاق باب المزاح رقم الحديث ۳۲۰۴، مصنف عبدالرزاق،مسنداحمد ۲۱/۱۲ (مختار) وہ نی کر یم اللہ کوریہات کے ہدایا (سبزی، پھل اور شہدو غیرہ) لایا کرتے تھے۔اور جب مدینہ سے والیس جانے کا ارادہ کرتے تو نی کریم اللہ کی رشہری چیزیں) عطیہ کرکے رخصت فرماتے تھے۔ (ایک بار) نبی کریم اللہ نے فرمایا کہ زاہر ہمارا دیہات اور ہم اس کے شہر ہیں۔ نبی کریم اللہ کو اس کے ساتھ محبت تھی۔ زاہر برصورت بھی تھے۔ایک دن نبی کریم اللہ اس کے باس اس حال میں آئے جب وہ اپنا (دیباتی) سامان فروخت کررہ تھے۔آپ اللہ نے اسے پیچے سے آکر گود میں لیا۔ یوں کہ نبی کریم اللہ کو دیکھ نہ سکے۔حضرت زاہر ہولے کون ہے؟ جھے چھوڑ لیا۔ یوں کہ نبی کریم اللہ کو دیکھ نہ سکے۔حضرت زاہر ہولے کون ہے؟ جھے چھوڑ کے بعد دے۔ پھر تھوڑا منہ پھر کردیکھاتھ کو دیکھ نہ سکے۔حضرت زاہر ہولے کون ہے؟ جھے جھوڑ کریم اللہ کو نبی کہا کہ یارسول اللہ کا تھا کہ کہا کون ہے جو اس غلام کو خرید لے۔ اس کریم اللہ کے باک کہ یارسول اللہ کا گھائے خدا کی شم بیجے ہوئے تم جھے کم قیمت کا پاؤگے۔ نبی کریم اللہ تو نی کریم اللہ تو نبی کی بال تو تیری قیمت کم نبیس ہے۔یایوں فرمایا کہا تو اللہ تعالی کے بال تو تیری قیمت کم نبیس ہے۔یایوں فرمایا کہ تو اللہ تعالی کے بال تو تیری قیمت کم نبیس ہے۔یایوں فرمایا کہا تو اللہ تعالی کے بال تو تیری قیمت کم نبیس ہے۔یایوں فرمایا کہ تو اللہ تعالی کے بال تو تیری قیمت کم نبیس ہے۔یایوں فرمایا کہ تو اللہ تعالی کے بال بیش قیمت سے۔

حضرت زاهر اور حضورا قدس علیات کی بے تکلفی:

رہندوالے تھے۔ ابن عبدالبر نے استیعاب میں اسے بدری صحابی بتایا ہے۔ جبکہ دوسر علاءان کے بدری ہونے سے انکار کرتے ہیں۔ وہ کہتے ہیں کہ بیدراصل بدوی کی تصحیف ہے۔ حضرت زاہر بنی کریم اللہ کے بدری ہونے سے انکار کرتے ہیں۔ وہ کہتے ہیں کہ بیدراصل بدوی کی تصحیف ہے۔ حضرت زاہر بنی کریم اللہ کے اس اس استے ہوئے کھنہ کچھ دیماتی ہدیہ ضرور لاتے۔ اور آپ اللہ بھی ان کوعطایا سے نوازتے تھے۔ اس لیے نی کریم اللہ انکور تھے۔ اس محمد "کنام سے پکارتے تھے۔ عمر کے آخری حصہ میں کوفہ مقل ہوگئے تھے۔

نی کریم اللہ کے ساتھ بے تکلفی کی وجہ سے دونوں طرف سے مزاح کا سلسلہ چاتا رہتا تھا۔ اکثر دیہات کے ہدایا پیش کرتے رہتے تھے۔ بھی بھی بازار میں کوئی چیز پیندآتی تو خرید کرنی کریم آللہ کی

خدمت میں پیش کردیت تھے۔اور پھر جب بیچے والارقم کا نقاضا کرتا۔ تو نبی کریم اللہ سے کہددیتے کہاں چیز کی قیمت دےدو۔ آپ اللہ فرماتے کہ تم نے تو جھے ہدید دیا ہے۔ تو کہددیتے کہ میرے پاس کھی تین سے۔ آپ اللہ بنس کرخود قیمت جادیتے تھے۔

بادیبة اورحاضره: هدیدة من الب دیدة دیبات کابدیه موتا ب اگر اوقات مین پیل، پیول، سبزی، مرغی، شهد، اندول وغیره کی شکل مین بوتا ب فیسجه و النبی عالیه نی کریم الله بهت بهت غیور اور تی تقربان اندول وغیره کی شکل مین بوتا ب فیسجه و النبی عالیه نی کریم الله به بهت غیور اور تی تقور اور تی تا بهال پریاتو حرف تشید خدوف ب نیال بول بوگی مین النه کی الله می الله کام میالنه کے لئے باور دیات کی طرح ب یا مضاف مقدر بوگالینی آن زاه و ا اهل ب ادبیتنا "یا پیم تاء مبالغه کے لئے باور بادی به بادی کی مین بددی کومبالغة بادیة که دیا ہے۔ جیسے دادی کوراویة کهاجا تا ہے۔

ونسحن حساضروہ الین زاہر ڈیہات کی چیزیں ہمارے پاس لاتے ہیں اور ہم ان کی شہری ضروریات پوری کرتے ہیں۔ رجلا دمیسما دمیم دمامة سے صفۃ مشبہ ہے بدصورت کو کہتے ہیں لینی آپٹن بھورت نہیں تھے۔ پھر بھی نبی کریم اللہ کی ایسے کو آپٹے کے اخلاص کی وجہ سے آپٹے سے مجت تھی۔

و هو یبیع مناعه اس قصہ کوعلامہ بیجوریؒ نے کچھ تفصیل کے ساتھ ذکر کیا ہے وہ یوں کہ حضرت زاہرا یک بار بازار میں دومشک لئے ہوئے کچھ فروخت کررہے تھے کہ نبی کر یم آلی ہے کا وہاں سے گزرہوا۔ آپ آلی ہے گئے ہوئے کہ فرمائش کی ۔اوراس میں انگی ڈیوکراس (کے تھی یا شہدو غیرہ) کود کی ایر ۔اورزا ہر سے کہا کہ اس کو پکڑلو۔ پھر دوسر مشک تھلوا کرا سے دیکھا۔اورزا ہر کے دوسر ہے ہا تھ میں تھا دیا۔ اس کے بعد جب زاہر کا دھیان نہیں رہا۔ آپ آلی ہے جپ کر پیچھے سے آئے ۔اوراس کو گود میں لے کر آئھوں پر ہاتھ دکھ دیا تا کہ ذاہر کچھ دیکھ نہیں رہا۔ آپ آلی ہے ۔حضرت زاہر نے خودکو چھڑا نے کی کوشش کی مگر جب پہ چلا کہ نبی کریم آلی ہے نبی کو میں ہے اس سے آگے حدیث میں یہاں خدکور ہے۔ و الا یسالمو المنے لیمی پیچان لینے کے بعد زاہر نے اس سے آگے حدیث میں یہاں خدکور ہے۔ و الا یسالمو المنے لیمی پیچان لینے کے بعد زاہر نے اپنی پیچھ نبی کریم آلی ہے ۔ اس سے آگے حدیث میں یہاں خدکور کوئی کو تابی نہی (الاسی یسالسو المنے لیمی پیچان لینے کے بعد زاہر نے اپنی پیچھ نبی کریم آلی ہے کہ سینے کے ساتھ ملئے میں کوئی کو تابی نہی کی (الاسی یسالسو کے بعد زاہر نے اپنی پیچھ نبی کریم آلی ہے کہ اسے کے بعد زاہر نے اپنی پیچھ نبی کریم آلی ہے کہ سینے کے ساتھ ملئے میں کوئی کو تابی نہی (الاسی یسالسو کے بعد زاہر نے اپنی پیچھ نبی کریم آلی ہے کہ سینے کے ساتھ ملئے میں کوئی کو تابی نہی (الاسی یسالسو کے بعد زاہر نے اپنی پیچھ نبی کریم آلی ہے کہ اسے کے بعد زاہر نے اپنی پیچھ نبی کی کو میں کے کہ دور اس کے کہ کی کھی کو تابی نہی کی کہ اسے کے بعد زاہر نہ اس کے کہ کو کھی کو تابی نہی کی کو کھی کو تابی نہیں کی کو کھی کو کھی کو تابی نہی کی کو کھی کی کو کھی کے کہ کو کھی کو کھی کو کھی کو کھی کی کو کھی کھی کو کھی ک

(۱)كان النبي ﷺ يقبل الهدية و يثيب عليها (بخارى كتاب الهبة ٣٥٢/١ ) (مختار)

المواً كوتابى كرنے كو كہتے ہيں) ياس لين كاكراس قرب سے بركتيں حاصل ہوں۔ جوسن القاق سے آج مل گيا ہے۔ نيز اس قربت ميں جولذت ہے وہ تا دير قائم رہے۔ ما الصق ظهر ، مامسدريہ ہے الصاق ظهر كمن ميں ہے۔

من یشتری هذا العبد اگر چرحفرت زاہر فلام نہ تھے کین آ پھی نے ازراو مزاح کہا کہ اس غلام کوکون خرید ہے گا۔ اس غلام کوکون خرید ہے گا۔ حضرت زاہر گویا تو اس کی برصورتی کی وجہ سے غلام کہا ہے یا اس کی قابلِ قدر خدمات کی وجہ سے خادم کی جگہ عبد کالفظ استعمال کیا ہے یا عبد کالفظ ان کا کاروبار دنیا میں محوجونے اور غیر اللہ میں مشغولیت سے کنا یہ ہے۔ اس طرح مزاح کے ساتھ ساتھ اس جملے میں حضرت زاہر گواس بات پر تنبیہ میں مشغولیت سے کہ وہ بازار میں سوداسلف میں یوں منہمک ہے جیسے کہ دنیا کا بندہ بنا ہوا ہے۔ حالا نکہ میر ےعشاق کو دنیا میں بی نہیں لگانا چا ہے۔ تا کہ اللہ تعالی سے بُعد لازم نہ آئے۔

لکن عنداللّٰہ لست بکاسد کسدا لشّنی کھوٹا ہونے کو کہتے ہیں۔ اسی طرح کسی چیز کی بازار میں بے قدری اور قیت میں کی کوبھی کساد کہتے ہیں۔ مطلب بیہ ہے کہ آپ کا خیال ہے کہ میری قیت نہیں گئے گی۔ میرا بیچنا خسارے کا ہوگا۔ تمہارے لیے بید گھاٹے کا سودا ہوگا۔ لیکن الله تعالیٰ کے ہاں ایسا نہیں ہے۔ بلکہ عنداللّٰہ تم ایک قیمتی انسان ہو کیونکہ الله تعالیٰ بندے کی صورت اور اس کے مال کوئیس دیجھے۔ بلکہ دل اور عمل الله تعالیٰ کے ہاں کھوظ ہوتے ہیں۔ اس لیے گھاٹے کی سودا کا سوال بیدانہیں ہوتا۔

(۲) حدّثنا عبد بن حميدثنا مصعب بن المقدام ثنا المبارك ابن فضالة عن الحسن قال اتت عجوز النبّى عُلَيْكُ فقالت يا رسول الله عن الحسن قال اتت عجوز النبّى عُلَيْكُ فقالت يا رسول الله عن الله ان يد خلنى الجنّة فقال ياام فلان إنّ الجنّة لا تدخلها وهى تدخلها عجوز إنّ الله تعالىٰ يقول إنّا انشأنا هن انشاءً فجعلنا هن ابكارًا(۱).

ترجمہ: حضرت حسن بھری کہتے ہیں کہ ایک بوڑھی عورت نبی کریم ایک کے یاس

(۱)مصنف ابن الی هبیة مجمع الزوائد ۱۹۱۰ (مختار)

آئیں اور عرض کیا یا رسول الشُوالیة دعا کیجے کہ اللہ تعالی جھے جنت میں داخل فرما کیں۔ آپ اللہ تعالی جی حزت میں داخل فرما کی اسے اللہ فرما کے اللہ عند میں بوڑھی عورتیں نہیں جا کیں گی۔ راوی کہتے ہیں کہ وہ عورت روتی ہوئی لوٹے لگیں۔ تو آپ اللہ نے نے (صحابہ سے) فرما یا کہ اس عورت کو بتا دو کہ وہ بڑھا پے کی حالت میں جنت میں نہیں جا گی کی حالت میں جنت میں نہیں جا گی کو نکہ اللہ تعالی فرماتے ہیں 'نہم (جنت کی) ان عورتوں کو ایک خاص طرح کی خلقت سے پیدا کریں گے۔ پس ہم ان کو (ہمیشہ کے لیے) کنواری رہنے کی صفت سے پیدا کریں گے۔

المحسن البصرى:

البحری البحری:

البحری البحری

صورت کے لاظ سے بھی آپ بہت حسین تھے۔ جاج بن یوسف نے آپ تو آل کرنے کی کوشش کی مگر ہر بارنا کام رہا۔ العظمی بعرہ میں وفات پائی۔ تمام لوگ جنازہ کے لیے نکلے۔ حتی کہ اسلامی تاریخ میں بہلی مرتبہ بعرہ کی جامع مسجد میں عصر کی نماز نہیں پڑھی گئی۔

اتت عجوز النح ایک قول کے مطابق بربر هیا آپ الله کی پھوپھی حضرت صفیہ ہیں۔ ساام فلان النح نبی کریم الله نے بیٹے کی طرف نسبت کر کے ان کو پکارا۔ اور قول ندکور کے مطابق ' امزییر' سے بکارا ہوگا۔ مرراوی سے نام بھول گیا۔اس لئے اس نے ذکر کرتے وقت ام فلاں کہہ دیا۔ فولت تبکی نی کریم اللہ کے مزاح کا مطلب نہ بھنے کے سبب وہ عورت منہ پھیر کررونے لگیں۔ فقال اخبروها. ني كريم الله في السروهيا كوسلى دلوانه كاصحابه كوهم ديا كه الله تعالى ان كوجنت ميس داخل کرائیں گے۔ گر بڑھایے کی حالت میں نہیں۔ بلکہ جوان اور ہمیشہ کے لیے کنواری بنوا کروہ جنت میں داخل فرمائیں گے۔اور ساتھ ساتھ وہ خاوند کی محبوب ان سے محبت کرنے والی اور ہم عمر بھی ہونگیں۔

63

نی کریم میلانی کو الله تعالی نے بہت رعب بخشا تھا خود فرماتے ہیں نصر ت بالرعب مسیرة شهر یعنی ایک مہینے کے سفر کے فاصلے تک میرارعب جھایار ہتا ہے۔

شائل میں بیرحدیث بھی گزری ہے کہ''من داہ بداھة ھابله ''لینی اچا تک دیکھے والے خض پر آپ ہوئی گئر ہیں ہے کہ''من داہ بداھة ھابله ''لینی اچا تک دیکھے والے خض پر آپ ہوئی ہے گئے گئی ہے الی حالت میں ایک ہادی کے لیے لوگوں کو مانوس کرنا اور ان کے اور میران کے اسلسلہ آگے ہوئے ہے۔ اور اس لیے آپ ہوئی ہوتا ہے۔ کام لیا کرتے تھے۔

خوش طبعی اور کشادہ روئی کوئی عیب نہیں۔ بلکہ دینی مقاصد کے صول کے لیے اور عوام کو دین کی طرف ترغیب دلانے کے لیے ضروری ہے اسی وجہ سے صحابہ کرام اور انکہ کرام میں بھی مزاح بکثرت پایا جاتا ہے حضرت علی اس سلسلے میں مشہور سے حضرت عبداللہ بن حذا فہ سے بھی مزاح بکثرت منقول ہے حضرت موبط اور حضرت نعمان کے ایک مزاحیہ قصہ کو یاد کر کے نہی کریم اللہ ایک سال تک بنسا کرتے سے امام سعیر کی اور ابن سیرین بھی مزاح کیا کرتے سے اس باب میں نبی کریم اللہ ایک مال خدکور ہے مگر آپ اللہ کے المام مزاح کے واقعات میں مخصر نہیں ہے حضرت عاکش سے ایک قولی دوایت بھی مروی ہے وہ مزاح کی دوایت بھی مروی ہے وہ مزاح کی دوایت بھی شریعی شریعت نے مزاح کو چند شروط سے شروط کیا ہوا ہے جو یہ بین : مزاح کو چند شروط سے شروط کیا ہوا ہے جو یہ بین : مزاح کو چند شروط سے شروط کیا ہوا ہے جو یہ بین : مزاح کو چند شروط سے شروط کیا ہوا ہے جو یہ بین : مزاح کو سے شروط کیا ہوا ہے جو یہ بین : مزاح کو سے شروط کیا ہوا ہے جو یہ بین : مزاح کی اباعث بنتا ہے نیز ذکر اللی کے لیے مزاح ہوتا ہے۔

- (۲) کسی کی ایذاء پر مشمل نه ہو در نه نا جائز ہے۔
  - (m) وقاروتمکنت کےخلاف نہ ہو۔
- (۴) جھوٹ، بہتان اور غیبت وغیرہ منوعات ومخدورات شرعیہ سے خالی ہو۔

## ۳۷. باب ما جاء فی صفة كلام رسول الله عليه في الشعر رسول الله عليه في الشعر رسول الله عليه في الشعر وشاعرى تعلق كے بيان ميں

اس سے قبل مطلق کلام اوراس کے متعلقات جیسے نداق وغیرہ کا ذکرتھا۔ ابشعروشاعری کے ساتھ آپھیلی کے ساتھ آپھیلی کے ساتھ آپھیلی کے ساتھ آپھیلی کے ایک کیا کہ ایک کیا ہے اللہ کیا ہے جو کہ کلام کی ایک شم کے ہیں یانہیں۔ شعر کے ہیں یانہیں۔ اور دوسروں کے اشعارا پنے کلام ہیں مستعمل فرمائے ہیں یانہیں۔

شعر کے معنی ہیں 'محیلام مقفی موزون قصداً '' یعنی وہ کلام جے قصداً قافیہ اوروزن کا پابند کردیا گیا ہو۔ قافیہ اس کلمہ کو کہتے ہیں جس پر شعرختم ہو، اوروزن ان خاص بحور کا نام ہے۔ جن کے مطابق اشعار کہے جاتے ہیں۔ ہاں اس میں قصد واختیار کو دخل ہونا چاہیے۔ لہٰذا اگر کمی شخص کی زبان سے بے اختیار کوئی موزوں اورمقفی کلام نکلے تو نہ کلام شعر ہوگا نہ کہنے والا شاعر کہلانے کا مستحق ہوگا۔

حكمت الى كى وجهسة آبي الله تعالى خال المعروشاعرى سدورر بهنا: نى كريم الله كا شاعر نه بونا قطعى دلائل سے ثابت به الله تعالى نے ان الفاظ ميں اس كا فيصله كرتے بوئ فرما يا به و و ما علمناه المشعو و ما ينبغى له " يعنى نه اس يخم كروم نے شعرى تعليم دى به نشعر كہنا اسے زيب ديتا ہے۔

کیونکہ شعر میں عموماً مبالغہ آرائی ،جھوٹ اورخلاف حقیقت باتیں آتی ہیں۔ شعراء کے بارے میں اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے کہ والمشعواء یتبعہم الغاوون الم تو أتهم فی کل واد یهیمون (المشعواء) ترجمہ: اور شاعروں کی اتباع گراہ لوگ ہی کرتے ہیں کیا تو نہیں دیکھا کہ وہ کلام کی ہرصنف کی وادی میں تتحیر ہوکر پھرتے ہیں۔ (طبع آزمائی کرتے ہیں)

یمی وجہ ہے کہ نی کریم آلیفیہ کو اللہ تعالی نے شعر سے دورر کھا۔علاوہ ازیں شعروشاعری اور کتابت المتیۃ کی صفت کے منافی ہے۔ اس لئے آپ آلیفیہ شاعر نہیں ہو سکتے تھے۔ اب اگر نبی کریم آلیفیہ کے کلام میں کچھا سے جملے آئے ہیں جوشعر میں داخل ہیں تو وہ یا تو استشہاداور اقتباس کے طور پر آئے ہیں بعنی آپ آلیفیہ کچھا سے جملے آئے ہیں جوشعر میں داخل ہیں تو وہ یا تو استشہاداور اقتباس کے طور پر آئے ہیں بعنی آپ آلیفیہ کے کہ اللہ تعالی نے بہت بلنداد بی نے کسی مقصد کے لیے دوسر سے شعراء کا کلام نقل کیا ہے اور چونکہ نبی کریم آلیفیہ کو اللہ تعالی نے بہت بلنداد بی ذوق بخشا تھا شعر کی باریکیوں ، بلاغت اور حسن وقتے کو سجھتے تھے۔ اس لیے مضمون کے کا ظریف اشعار کو دوق بخشا تھا شعر کی باریکیوں ، بلاغت اور حسن وقتے کو سجھتے تھے۔ اس لیے مضمون کے کا ظریف التحاد کے ا

اپنے خطاب میں استعال فرماتے تھے اور اگر کسی موقع پرخود نبی کر یم آلیکے کی باتوں میں موزوں ومتفی کلام وارد ہوا ہو وہ شعر اوروزن کے قصد سے نہ تھا ور نہ ایسے جملے تو اتفاقی طور پر چرخض کی زبان وقلم سے تقریر و تحریر کے موقع پر نکلتے ہیں۔ جووزن پر پورا اتر تے ہیں لیکن قصد وارادہ نہ ہونے کے سبب ہم اسٹ اعز نہیں کہتے۔ در حقیقت اللہ تعالیٰ کے کلام میں اس بات کی طرف بھی اشارہ ہے کہ آپ آلیک کا شاعر نہ ہونا ہوجہ بجز نہیں کیونکہ جب بلاقصد آپ آلیک سے سال بات کی طرف بھی اشارہ ہے کہ آپ آلیک کا شاعر نہ ہونا ہوجہ بجر اور اللہ تعالیٰ کی طرف سے تا ئیر ہوتی تو پھر آپ آلیک کے شامان شان نہیں۔ دور رکھنا حکمت اللی کے سبب ہے۔ کہ رہے نزینے ہوئیک کے شامان شان نہیں۔

شعر کاحسن مرتبراس کے مضمون پر مخصر ہے:

ری یہ بات کہ شعر وشاعری کا شریعت میں ہمارے
لیے کیا تھم ہے۔ اس کا اصل جواب یہ ہے کہ تقریباً ہمرچیز میں حسن بھی ہوتا ہے۔ اور دوسری جہت سے بھی جوز برگی بھی ہوتی ہے آگر حسن کی جہت سے بھی چیز برگی بھی ہوتی ہے آگر حسن کی جہت سے بھی چیز برگی بھی ہوسی ہوسکتی اشعار ہیں۔ مثلاً جن سے اللہ تعالی کی وحدا نیت، رسالت اور دین کا دفاع ہووہ حسن ہے۔ یا پھر محض منظر کشی ہے ہم بالغہ آرائی ، جھوٹ اور فحاشی نہیں تو وہ اشعار بھی جائز ہیں۔ لیکن جو خرافات ہیں جیسے امرا القیس یا مشنی کے بعض رومانی یا بچور کام مورہ قرم ایا کہ

لان يمتلى جوف رجل قيحايريه خير من ان يمتلى شعراً (٢)

کسی آ دمی کا دل پیپ سے بھر کراس کا زہراس کے دل کو فاسد کر کے کھا جائے ہیہ بہتر ہے اس سے کہاس کا دل شعر سے بھر جائے۔

حضرت عمر نے اس شم کے بعض شعراء کوجلا وطن کردیا تھا۔ گویا شعرا یک ہتھیار ہے جے دشمن کی سرکوئی اور اپنے دفاع کے لیے بھی استعال کیا جاسکتا ہے۔ اور ایک بے گناہ پرظلم کرنے کے لیے بھی (۱) اور ایسا ہی علامہ عبد الجواد الدوگی نے حضرت عائش کے حوالہ سے کہا ہے کہ حضرت اقد ہی اللہ سے سرح کے بارے میں پوچھا گیا تو آپ اللہ نے فرمایا کہ الشعر کلام حسنہ حسن قبیحہ قبیح (الا تحافات ص ۲۹۰) (مختار) (۲) رواہ مسلم عن ابی ھریرة و ابی سعید الخدری ج۲ ص ۲۳۸ (۱۲مرتب)

استعال کیا جاسکتا ہے۔ حاصل ہے کہ شعر کے حسن وقتی کا فیصلہ کلام کے دوسر سے اصناف کی طرح مضمون کے اعتبار سے ہوگا۔ تواس میں حرام ، مکروہ ، خلاف اولی اور باعث اجروثواب ہرتم پایا جاتا ہے۔
حضورا قدس میں اللہ کے لیعض شعراء کی قدر افزائی: خود نی کریم اللہ نے بھی بعض شعراء کی تحسین فرمائی ہے۔ حضرت حسان بن ثابت کی آپ آلیہ بن کا قدر کرتے تھے بلکہ تھم دیتے تھے کہ اُھی جھے۔ یعنی کا فروں کی ہجو کرو۔ نیز فرمایا کہ جب تک تم رسول اللہ اللہ کیا گئے کی جانب سے دفاع کرتے ہواللہ تعالی جرئیل کے فرر یعے تیری تائید کرتا ہے۔ نیز فرمایا کہ رزمیہ اشعار کا فروں پر تیروں کی بارش سے بھی زیادہ سخت لگتے فرر یع ہیں۔ آپ آلیہ کے بہت سے صحابہ نے شعر کہے ہیں۔ خلفائے راشد بن سب کے سب شعر کہتے تھے (۱)۔ حضرت علی تو ان سب میں بر ھے ہوئے ہیں۔ حضرت تھا نوئ نے صحابہ کے اشعار ایک مستقل کتاب کی شکل میں جمع کے ہیں۔ جس کا نام کلام الملوک رکھا ہے۔ اس کا نسخہ دیوان مجاسہ اور دیوان منبتی کے قریب ہے۔ میں جمع کے ہیں۔ جس کا نام کلام الملوک رکھا ہے۔ اس کا نسخہ دیوان جماسہ اور دیوان منبتی کے قریب ہے۔ اور اس میں حضرت عا کھڑے کی اشعار ہیں۔ حضرت امام شافعی کا اپنا مستقل دیوان سے ۔ بیشعر بھی انہی کی طرف منسوب کیا جاتا ہے کہ ہے۔

ولو الشعر بالعلماء يزرى لكنت اليوم اشعر من لبيد المعلماء يزرى الكنت اليوم اشعر من لبيد الله المعلماء يزرى الورع المعلماء يزرى المعلماء يزرى المعلماء ين المعلم الم

(۱)الاتخافات مين حضرت مرض كايم محقول مذكور به كرت علم موا الشعر فان فيه محاسن تبتغى ومساوى تتقى (الاتحافات ص ٢٩٠) (مختار)

(۲) الادب المفرد للبخارى ۲۲۳ رقم الحديث ۸۲۷ ، جامع ترمذى ۵۷۳/۲ كتاب الاستئذان والادب باب ماجاء في انشاء الشعر، شرح السنة للبغوى ۲ ا ۳۷۳ كتاب الاستيذان باب الشعر الرجزرقم الحديث ۳۲۰ (مختار)

ترجمہ: حضرت عائش سے کسی نے پوچھا کہ کیا نبی کریم اللہ بھی کسی دوسر فے خص کے شعر کو بطور استشہاد پڑھتے تھے؟ حضرت عائش نے فرمایا کہ (ہاں بھی بھی) ابن رواحہ کے شعر کو مثال میں پیش فرماتے تھے اور بھی (شاعر کے) اس قول سے تمثل فرماتے۔ 'ویاتیک بالأخبار من لم تزوّد ''(یعنی بھی وہ خض تیرے پاس خبریں لائے گا۔ جے تم نے کوئی راستے کا خرچ نہیں دیا ہوگا۔

عبدالله ابن رواحة:
عبدالله بن رواحه بن تغلبه انصار گانز رقی صحابی بین بین بین بین بین بین شریک بوخ اس کے بعد بدراورغز وہ مونہ تک کے تمام غز وات میں شرکت کی صلح حد بیبیاور عمر ۃ القصاء میں بھی شریک رہے۔ جاہلیت میں بھی آپ کو سر دار کی نظر سے دیکھاجا تا تھا۔ اسلام میں آپ کا شاران عظیم شعراء میں ہوتا ہے جو کہ کا فرشعراء کا مقابلہ اپنے اشعار سے کرتے تھے۔ 'والشعوراء یتب معہم المعاوون ''سے آپ کی اور آپ کے دوساتھیوں حضرت حسان اور کعب بن مالک کی استثناء کے لیے الله تعالیٰ نے بیآیت نازل کی الااللہ بین آمنوا و عصلو ١ الصالحت و ذکر والله کشیراً الآیة '' جرائت اور دلیری میں بھی آپ بے مثال تھے۔ جنگ میں سب سے پہلے جاتے تھا ور سب سے آخر میں جرائت اور دلیری میں بھی آپ بے مثال تھے۔ جنگ میں سب سے پہلے جاتے تھا ور سب سے آخر میں اور نے بین طالب اور ذید بن حارث کی شہادت کے بعد فوج کی قیادت سنجالی اور درج ذیل اشعار پڑھے

يانفس ان لم تقتلي تموتي هذا حمام الموت قد صليت

وماتمنيت فقدا عطيتِ ان تفعلى فعلهما هديتِ

اے مری جان اگر تو قتل نہ کی جائے تو مرنا تو ہوگا ہی یہ موت کی حمام ہے جس میں تو داخل ہو چکی ہے مری جان تیری ہرتمنا پوری کی جا چکی ہے

اب اگرتونے ان دونوں (جعفر اورزیڈ) جیسا کام کیا تب ہی توہدایت یا فتہ ہوگی پھر تکوار لے کرخوب اڑے۔ درمیان میں تھوڑی دیر سستانے کے لیے گھوڑے سے اتر بے تو پچپا زاد بھائی نے گوشت پیش کیا تا کہ کھا کر پچھ جان میں جان آئے۔ گوشت کومنہ سے لگایا۔ادھرا یک جگہ لشکر میں ٹر بھیڑنظر آئی پھر کہا'' تعجب ہے تو ابھی دنیا میں رہتا ہے'' یہ کہتے ہوئے گوشت پھینک کر دشمن میں گھس گئے اور لڑتے ہوئے شہادت سے سرفراز ہوئے۔

آپ فی البدیہ شعر کہا کرتے تھے اور ایسے بہت سے واقعات ہیں جب نی کریم اللہ کے فرمائش کی فرمائش کی فرمائش کرتے ہوت سے واقعات ہیں جب نی کریم اللہ کو کرائے اور اس پرآپ نے بڑا قابل فخر کلام پیش کردیا۔ ایک مرتبہ اپنی ایک با ندی کے پاس بیوی سے چھپ کرآئے اور اس کے ساتھ مجامعت کی ۔ بیوی نے ہمبستری کرتے دیکھ لیا تو فراغت کے بعد اس کو ملامت کرنے لگیں۔ آپ نے نہمبستری سے انکار کردیا تا کہ بیوی ناراض نہ ہو۔ بیوی نے کہا کہ اگر تم سے ہوتو قرآن کریم کی تلاوت کے روز کیونکہ جُنْبُ شخص کے لیے قرآن کی تلاوت کرنا جائز نہیں ہے) آپ نے نے فوراً بیا شعار پڑھے۔

شهدت بان وعدالله حق وإنّ النار مثوى الكافرينا وإنّ العرش رب العالمينا وقوق العرش رب العالمينا وتحملهُ ملا تُكة غلاظً مسوّمينا

چونکہ بیوی کوقر آنی آیات یادنہیں تھیں اور ندکورہ اشعار قرآنی آیات ہی میں تھوڑی تغیر کر کے بنائے گئے تھے۔ لہذا بیوی کوتیلی ہوئی اور بولیں' صدق الله و کذبت عینی ''اللہ تعالی سے فرماتے ہیں اور میری آنکھ ہی دھوکہ کھا چکی ہے۔ آپٹے کے مناقب بے شار ہیں۔

تے مقل بشی کسی کے کلام کواپنے مقصد کے ثبوت اور شہادت کے طور پر پیش کرنے کو تمثل کہتے ہیں ہے۔ ہیں یعنی آپ مقصد کی وضاحت اور ثبوت کے لیے شعر کو بطور مثال پیش کرتے تھے۔

ویت مضّل ویقول لین عبدالله بن رواحه ی شعر کے علاوہ بھی آپ الله بلورتمثل شعر قل کرتے سے مثلاً اس شعر سے بھی تمثل کرتے ہے ''وی اُتیک النے '' لِبحض شخوں میں ''ویت مضّل بقوله '' لکھا ہے اس میں بقولہ کا خمیر عبدالله بن رواحه گورا جع نہیں ہے بلکہ مطلقا شاعر کورا جع ہے لینی وہ دوسر سے شاعر کے اس قول کو بھی استشہاداً پیش فرماتے ہے ۔اور بی قوجیہ اس کئے ضروری ہے کہ فدکورہ شعر عبدالله بن رواحہ گانہیں ہے بلکہ طرفہ بن عبد بکری جا بلی شاعر کا ہے جو اس کے معلقہ بی سے ماخو ذہ ہے ۔اور حضرت عا مَشرُ و عرب کے جا بلی شعراء کے کلام کا بہترین علم حاصل تھا (۱) ۔اس لیے بیہ بعیداز امکان ہے کہ خانہ کعبہ میں لئلے عرب کے جا بلی شعراء کے کلام کا بہترین عشر الف بیت (الاستیعاب علی ہامش الاصابة ج س م ۲۸)

ہوئے مشہور معلقہ کے اشعار کی نسبت عبداللہ بن رواحہ کی طرف کریں۔

ستُبدى لك الايام ما كنت جاهلاً وياتيك بالاخبار من لم تزّود

بیشعرطرفتہ بن العبد جا بلی شاعر کا ہے جس کاسبعہ معلقہ میں دوسراقصیدہ ہے اور دفور معانی کی وجہ ہے آ یے باللہ اس کو پڑھا کرتے تھے۔

زمانہ بڑا معلم ہے:

ال شعر کے پہلے مصرع کا مقصد یہ ہے کہ زمانہ بڑا معلم ہے وہ اپنے تجربات سے تجھے وہ چیزیں بتادے گا جو تجھے معلوم نہ تھیں۔انسان کے علم و تجربہ میں اضافہ ہوتا ہے۔مثلاً آج تو وہ تو حدیو نہیں مانتا آخرت اور رسول کی رسالت کا مشکر ہے لیکن قبر میں اور آخرت میں بلکہ دنیا ہی میں ایک دن اس پر پیظا ہر ہوجائے گا اور ان حقائق پر یقین ہوجائے گا۔اس شعر میں اس حقیقت کو اشارہ کیا گیا ہے اور نبی کریم ایک تھے۔

## بغيرزادواجرة خبررساني:

دوسرے مصرع کا مطلب ہے ہے کہ ایسے لوگ تجے خبر دیں گے جن کوئم نے زادراہ نہیں دیا ہوگا۔ یہ فتنہ وفساد کا دور ہوگا۔ بغیر مطلب اور درخواست کے تیرے ہاں خبریں پہنچائی جا ئیں گی۔ جس طرح آج ہم دکھے رہے ہیں کہ ذرائع ابلاغ مختلف قتم کی خبریں بغیر درخواست کے پہنچا کر پریشانی کا سبب بنتی ہیں۔ ریڈیو، ٹیلی وژن، اخبار اور ٹیلی فون وغیرہ سب تجھے پریشان کررہے ہیں۔ آ دھے فساد، شراور ہنگا ہے اس روزختم ہوجا ئیں گے جب اعلان ہوگا کہ کل سے کوئی اخبار نہیں چھے گا۔ مولا ناعبد الما جدوریا آبادی آئے لکھا ہے کہ ساری دنیا میں اگر اخبار بند ہوجا ئیں تو کافی امن ہوجائے گا۔ اور یہ بات ڈھی چھپی نہیں پہلے تو مہینوں بعد کسی مصیبت کا علم ہوتا اور اس وقت تک یقین ہو چکا ہوتا کہ سب پھٹل چکا ہے لیکن اب تو مہینوں بعد کسی مصیبت کا علم ہوتا اور اس وقت تک یقین ہو چکا ہوتا کہ سب پھٹل چکا ہے لیکن اب تو اعصابی نظام اس وجہ سے ختل ہو چکے ہیں کہ گھر میں پرائے غموں کے انبار پڑھے ہوتے ہیں۔ بٹن دباتے اعصابی نظام اس وجہ سے ختل ہو چکے ہیں کہ گھر میں پرائے غموں کے انبار پڑھے ہوتے ہیں۔ بٹن دباتے ہی میڈیا آپ کو ہراہ راست خبریں دکھا تا ہے اور میڈیا میں فساد کی دوڑگی ہوئی ہے۔

یا حقال بھی ہے کہ دوسر مصرع سے تمثیل کا مقصد بیہ کو کہ حضور نی کریم آلی ہے اسے بارے میں وضاحت کررہے ہوں کہ دیکھوتم ہارے پاس اللہ تعالی نے ایک ایسے مخبر صادق کو نبی بنا کر بھیجا ہے جسے تم کوئی بھی زادِراہ اجرت ادرفیس وغیرہ نہیں دیتے۔ادروہ عالم آخرت تک کی خبریں لاتے ہیں۔ دنیا کی

فلاح ونجات اورعروح وزوال کی بنیادی بھی وضاحت کے ساتھ بیان کرتے ہیں پھروہ تہارا نوکر بھی نہیں ہے ان کی اس خیرخواہی کا اس کوکوئی بدلہ تہاری طرف سے نہیں ملتا۔ اور وہ یہی صدالگا تا پھرتا ہے 'ان اجسوی الا علی الله ''بعض روایات میں آتا ہے کہ آپ آلیہ نے اس شعرکو پڑھتے ہوئے ترتیب بدل دی اور یوں پڑھا کہ ''ویا تیک من لم تزود بالاخبار''

ابو بمرصد بن فی فی می می ایستان از آپ ایستان می ان بشاعد "لین می الله ایستان از آپ ایستان می الله ایستان می می شاع نبیل بول -

(۲) حدّثنا محمّد بن بشّارثنا عبدالرحمٰن بن مهدى قال ثنا سفيان عن عبدالملك بن عمير ثنا أبو سلمة عن أبى هريرة قال قال رسول الله عليه المحمّد المحمّد كلمة قالها الشاعر كلمة لبيد الاكلُّ شئى ما خلا الله باطل وكاداميّة بن أبى الصلت ان يسلم(١).

ترجم: حضرت ابوهريرة سے روايت ہے كه ني كريم الله في ارشادفر مايا كه سب سے زيادہ تجى بات ہے "الاكل شئى ما خلا سے زيادہ تجى بات جوكى شاعر نے كهى بولبير كى بيبات ہے "الاكل شئى ما خلا الله باطل (٢)" (يعنى خردار كم الله تعالى كسوابر چيز فانى ہے) اور قريب تما كماميہ بن الصلت اسلام لے آتے۔

(۲) کمل شعر کھاں طرح ہے

وكل نعيم لامحالة زائل وأنت قريباً عن مقيلك راحلُ (مختار) الاكل شئ ماخلاالله باطل نعيمك في الدنيا غروروحسرة ذات کو بقاء حاصل ہے (ا)۔ دنیا کی تمام نعمتیں اور تمام باقی ممکنات زوال پذیریوں۔ نبی کریم الله کی شان پر غلبرتو حید کا انداز واس بات سے لگایا جاسکتا ہے کہ جس شعر میں تو حید کا مغز اور حاصل ہے آپ آلیا ہے اس کی تحسین فرمار ہے ہیں۔

لبید بن ربیعة بڑے شاعر سے سبعہ معلقہ میں چوتھا معلقہ انہی کا ہے۔ نبی کریم اللہ کے ہاتھ کرمسلمان ہوئے۔ جاہلیت کے دور میں مایہ نازشاعری کرتے سے لیکن اسلام لانے کے بعد قرآن مجید کے اعجاز اور فصاحت و بلاغت کے سامنے گردن نہاد ہوئے۔ قلم تو ڑ دیا اور شاعری چھوڑ دی۔ کیونکہ وہی لوگ قرآن کے اعجاز کوخوب سجھتے سے ۔ اسی وجہ سے لبید نے اسلام لانے کے بعد شعر نہیں کہے۔ وہ فرماتے سے کہا تھیم معانی اور فصاحت و بلاغت کے لحاظ سے میرے لئے قرآن مجید کافی ہے۔

حضرت عمر نے ایک بارکوفہ کے عامل کوآپ کے پاس بھیجا تا کہ اسلام کے زمانہ میں ان کے کسی شعرکا پو چھے تو فرمایا کہ أبدلندى الله بالشعر سورة البقرة وال عمر ان ''اللہ نے جھے اشعار کے بدل سورة بقرة اور آل عمر ان لینی قرآن دیدیا۔ ابشعروشاعری سے کیا سروکار''

ایک سوچالیس سال تک زنده رہے (۲)۔

غیر مسلم شاعر کی مؤمنا نه کلام کی تحسین:

وقال النج لینی شاعروں پر تیمرہ اوران کے کلام کی تحسین کے سلسلے میں آپ آلیت کا اوبی ذوق بہت بلند تقاعرب کے شعروشاعری سے بخبر نہ تھے۔امیہ بن صلت کی بھی تعریف کی۔ نبی کریم آلیت کا اوبی ذوق بہت بلند تقاعرب کے شعروشاعری سے بخبر نہ تھے۔امیہ بن صلت کے اشعار میں تو حیداور بعث بعدالموت کے بارے میں حکیمانہ کلام ملی تھا۔علاوہ ازیں وہ ایک عبادت گزار کی حیثیت سے پیچانا جاتا تھا۔اس لئے فر مایا کہ قریب تھا کہ وہ مسلمان ہو جائے لیکن اللہ تعالیٰ کی تو فیق شامل نہ تھی۔ نبی کریم آلیت کا زمانہ پایالیکن اسلام نہیں لایا۔اورطا کف کے محاصرے کے دوران کفر کی حالت میں مرا۔ایمان کے قریب ہوتے ہوئے اسلام نہیں کہ پی کھے قرآن پاک نے بیان کیا ہے کہ مین علیہ افسان ویسقی وجہ دبت فوالہ سلال والا کو اہرالو حمن) اور دوسرے مقام پر ہے کل شی ھالک الاوجھہ (الآیة) (مختار)

(۲) بعض روایات میں ۱۵ اور بعض میں ۱۵ سال کا ذکر ہے۔انتہائی بہادر شہوار اور تی شخص تھے۔ ہرسال بڑی تعداد میں اون خوا کو گول کو کھلاتے تھے۔(اصلات اللہ بن)

بھی بربختی آڑے آئی(ا)۔

(٣) حدّثنا محمّد بن المثنّىٰ قال أنبانا محمّد بن جعفر ثنا شعبة عن الأسود بن قيس عن جندب بن سفيان البجليّ قال أصاب حجرّ إصبع رسول الله عَلَيْكُ فدميت فقال.

هل أنت إلا إصبع دميت و في سبيل الله مالقيت(7).

(٣) حدّثنا ابن ابى عمر ثنا سفيان ابن عيينة عن الأسود بن قيس عن جندب بن عبدالله البجلي.

ترجمہ: حضرت جندب بن (عبداللہ بن) سفیان بیکل کہتے ہیں کہ نبی کریم اللہ کا انگلی کو ایک پھر لگ گیا جس کی وجہ سے وہ (زخی ہوکر) خون آلود ہو گئی تو آپ اللہ نے کہا کہ تو ایک خون آلود ہونے والی انگلی ہی تو ہے اور جومصیبت تھے پینی ہے وہ بھی اللہ کے داستے میں پینی ہے۔

جندب بن سفیان بردراصل جندب بن عبدالله بن سفیان بحلی بین بهال دادا کی طرف اوراگلی سند میں والد کی طرح منسوب بین بجلیہ قبیلہ سے تعلق ہے۔ ابتداء میں کوفہ میں رہتے تھے۔ جہال آپ گو جندب بن سفیان کہا جاتا تھا پھر بھرہ میں سکونت اختیار کی ۔ بھری لوگ آپ گوجندب بن عبداللہ کہا کرتے تھے۔ اس کے علاوہ ان کو جندب الخیراور جندب الفاروق بھی کہاجا تا ہے۔ وہ خود کہتے بین کہ نبی کر پیم اللہ کہا کہ تھے۔ اس کے علاوہ ان کو جندب الخیراور جندب الفاروق بھی کہاجا تا ہے۔ وہ خود کہتے بین کہ نبی کر پیم اللہ کے زمانے میں میں نو جوانی کی ابتدائی ایام میں تھا۔ حضرت ابی بن کعب اور حذیفہ سے بھی آپ دوایت کرتے ہیں۔

(۱) بعض روایات یس به آمن شعره و کفر قلبه (الاتحافات ۲۹۲) که اس کاشعار تواسلام لائم گریخود مسلمان نیس بواراس کی وجه علامه عبدالجوادالدوئی نے لکھا ہے کہ کسسان یسط مسع ان یسکون نبسی الامة (الاتحافات ۲۹۲) که نبوت تو میراحق تفاح میافت کیے نبی ہے۔ (مخار)

(۲) صحيح بخارى ۱ ۳۹۳ كتاب الجهاد باب من ينكب في سبيل الله ، صحيح مسلم ١ ١ / ٢ اكتاب المجهاد والسير باب مالقى النبي مَلْ الله عن اذى المشركين والمنافقين، جامع ترمذى ٢ / ٢ كتاب تفسير القرآن باب ومن سورة الضحى ، (مختار)

جان دی دی ہوئی اس کی تھی حق تو یہ ہے کہتن ادا نہ ہوا

پھر جو تکلیف کمی ہے وہ بھی تو اللہ کے داستے میں ہے جس کا ثواب ملے گا خون بیکا رخیبیں بہا۔

آ ہے تالیق کے کلام کوموز ون یا شعر کہنے کے تو جیہا ت:

تو ایک شعر ہے جو نبی کریم آلی تھے نے کہا ہے حالا تکہ آ ہے آلیہ کو شاعر کہنا ٹھیک نہیں ہے۔ اس کے متعدد جواب دیئے گئے ہیں۔

اول بیرکہ اگر بلاقصد دارادہ کوئی موزوں دعقی کلام کسی کی زبان پرآئے تو اسے شعز نہیں کہتے۔ دوم بیر کہ اگر شعر بھی ہوتو ایک آ دھ شعر کہنے سے کوئی شاعز نہیں کہلا یا جاسکتا۔ شعر کا تو مستقل ملکہ ہوتا ہے جس کے حاصل ہونے کے بعد شعر کہنے دالے کو شاعر کہتے ہیں۔

سوم ہیر کہ بعض لوگ کہتے ہیں بیشعز نہیں بلکہ ایک رجز ہے جوجنگی آوازیاتر انے کو کہتے ہیں۔جس طرح سیاسی تحریکوں میں نعرہ بازی ہوتی ہے۔اور مختلف آوازوں اور تر انوں کے ذریعے لوگوں کے جذبات کوابھارنے کی کوشش کی جاتی ہے۔

چہارم بیکہ یہاں دمیت اورلقیت کی تاءکوسا کن پڑھا گیا ہے جس سے وزن ٹوٹ جا تا ہے اور بیکلام شعز مبیں رہتا۔

یا نچواں جواب ہے کہ بعض مؤرثین کی رائے کے مطابق بیخود نی کریم آلیک کا کلام نہ تھا بلکہ بطور تمثل آپ آلیک نے دوسر سے شاعر کا کلام نقل کیا ہے۔ چنانچہ واقدیؓ کے قول کے مطابق بیولید بن

ولید کا شعر ہے اور ابن افی الدینار کے قول کے مطابق بیابن رواحد کا کام ہے(۱)۔ جس کے بارے میں پہلے آیا ہے کہ آ پی سے بیالت ان کے کلام سے تمثل کیا کرتے تھے۔ کہاجا تا ہے کہ غزوہ موجہ میں انہوں نے اپنی شہادت سے قبل جواشعار کہے تھے ان میں سے بیشعر بھی ہے۔ ان اشعار کوہم اس باب کی ابتداء میں ابن رواحۃ کے احوال بیان کرتے ہوئے ذکر کر بھے ہیں۔ البتہ اس سے بیلازم آئے گا کہ انگلی کلنے کا واقعہ غزوہ موجہ کے بعد ہو۔

حدثنا ابن أبى عمو النع امام ترفري اس حديث كے ليے دوسرى سندلار ہے ہيں۔اس سند كے مطابق حضرت جندب كى نسبت اپنے والدكى طرف ہو چكى ہے جبكہ گزشته سند ميں واداكى طرف نسبت كى گئتى ۔

أنا النّبيّ لا كذب أنا ابن عبدالمطلب(٢).

(۱) علامه عبر الجواد الدوك في المام عنه المام عنه المام عنه النفس أنّ جعفراً حين قتل بمؤتة دعاالناس بابن رواحة فاقبل وقاتل فأصيب في إصبعه فارتجزو جعل يقول.

هل أنت إلا وسبح دميت وفي سبيل الله مالقيت يانفس إلا تقتلي تموتي هذاحياض الموت قدصليت

وماتمنيت فقدلقيت ان تفعلى فعلهماهديت

ثم ثبت حتى استشهدو تمثّل النبيّ مُلْكِله بقوله (الاتحافات ٢٩٣) (مختار)

(٢)صحيح بخارى ٢/١ ° ٣ كتاب الجهاد باب بغلة النبيّ البيضاء، صحيح مسلم ٢/١ ° ١ كتاب الجهاد والسير باب في غزوة حنين، جامع ترمذى ١/ ٥٣٠ كتاب الجهاد باب ماجاء في الشباب عندالقتال (مختار)

ترجمہ: حضرت براء بن عازب سے کسی خص نے پوچھا کہ اے ابوعمارة! کیاتم لوگ نی کریم اللہ کوچور کر (جنگ شین میں) بھاگ چکے تھے۔ انہوں نے جواب دیا کہ نہیں خدا کی شم نی کریم اللہ نے نے جنگ میں پیٹے نہیں پھیری تھی۔ بلکہ لشکر کے پچھ جلد بازلوگ بھاگ نکلے تھے۔ جن کا استقبال بنو ہوازن نے تیروں سے کیا تھا۔ اس وقت نی کریم اللہ اللہ نی کریم اللہ اللہ نے خچر پر سوار تھے۔ ابوسفیان بن الحارث بن عبدالمطلب نے خچر پر سوار تھے۔ ابوسفیان بن الحارث بن عبدالمطلب نے خچر کے لگام کو پکڑا تھا اور نی کریم اللہ نے بیر جز پڑھتے تھے 'آنے الے نبی لا کہذب أنا ابن عبدالمطلب '' یعنی میں نبی ہوں۔ اس میں کوئی شبہیں اور میں عبدالمطلب کا بیٹا (بوتا) ہوں۔

غروہ حنین میں آ بی الیکے کا کلام رزمیہ:

الاوالہ النہ النہ یعنی مسلمانوں کی وہ پہائی ہوئی ہی بلکہ پھودن پہلے کے بینومسلم صحابہ کے سبب ہوئی ہوکہ ہوکہ خور رہیت یا فتہ سے سبب ہوئی ہی بلکہ پھودن پہلے کے بینومسلم صحابہ کے سبب ہوئی ہوکہ ہوکہ غیر تربیت یا فتہ سے کما تھ روں اور امیروں کے امر کا لحاظ نہیں رکھتے سے جذباتی لیکن بے تر تب اور غیر منظم سے حوصلہ اور پختگی دماغ میں نہھی ۔ قربانی پیش کرنے کے جذبہ میں ڈسپلن کا لحاظ نہ رکھا جائے اور بنظمی بیدا ہو جائے وہاں نتیجہ شکست کے طور پر نکل ہی آتا ہے ۔ جیسے کہ احد میں بھی شکست کی وجہ بہی تھی ۔ کہ بعض صحابہ کرام نے امیر کی اطاعت نہیں کی تھی اور نہایت اہم جنگی مقام سے خفلت برت کراسے چھوڑ دیا۔

یہاں بھی اوھر نومسلم جذباتی لوگ سے دوسری طرف مقابلے میں بنو ہوازن سے جن کی تیرا ندازی کی بہاں بھی اوھر نومسلم جذباتی لوگ سے دوسری طرف مقابلے میں بنو ہوازن سے جن کی تیرا ندازی کی دھاک بیٹی ہوئی تھی ۔ انہوں نے تیر چھنکے تو اس طرف بعض مسلمانوں میں افراتفری پھیلی لیکن نبی کریم سیالی ایپ خچر پر اسی طرح سوار سے بھائے تا سے حالے میں ۔ لگام حضرت سفیان کے ہاتھ میں تھی اور ہڑے ۔ حصلہ اور شجاعت کے ساتھ میں تھی اور ہڑے ہو سے کہا تھ میں تھی ہوئی تھی تھی ہوئی تھی

أنا النبيّ لا كذب أنا ابن عبدالمطلب أنا النبيّ لا كذب أنا ابن عبدالمطلب غزوة حنين كي مجموعي حالت: فتح مكه كے بعد قبيله بنو موازن نے اپنے حليفوں كوجمع كيا اور مسلما نوں كا مقابله كرنا چاہا - مكه سے طاكف كى طرف دس ميل كے فاصلے پر حنين كى وادى ہے۔ وہاں پر ہيں ہزار سے

زائد لشکر جمع کر کے مسلمانوں کولاکارا۔ وہ اپنی عورتیں ، بیچے اور مال میدان میں لائے تھے۔ تا کہ فرار کی بجائے بے جگری سے لڑیں۔ ۲ شوال ۸ ھو بارہ ہزاراسلامی فوج لے کرنبی کریم آیا ہے بھی ان کی سرکوئی کے لیے نکلے اس فوج میں اکثریت نومسلم افراد کی تھی بلکہ بعض لوگ کفر کی حالت میں محض غنیمت کے حصول کے لیے پاتما شائی بن کرشامل ہوئے۔ چند دن قبل رمضان میں مکہ معظمہ فتح ہوا تھا۔ابھی شایدنومسلموں برہیں دن بھی نہیں گزرے تھے۔ ایک ننگ گھاٹی ہے گزر کراسلامی فوج کا مقدمۃ انجیش جس میں بنوسلیم اور مکہ کے نومسلم جوانوں کی اکثریت تھی جب حنین کے میدان میں داخل ہوا تو بنو ہوازن نے بظاہر پیائی کا مظاہرہ کرتے ہوئے ان کوآ گے بڑھنے دیا۔ جب بہلوگ پہاڑی چوٹیوں کے حصار میں آ گئے تو ہواز ن کے ماہر تیراندازوں نے بہاڑی پناہ گاہوں سے نکل کرا جا تک تیروں کی بوچھاڑ شروع کردی جس سے مقدمة الحیش کے محابدین بوکھلا کر ادھر ادھر بھا گئے لگے۔اس وقت تک جیش کا مرکزی حصہ '' قلب'' بھی میدان میں آگا تھا۔جس میں خود نی کریم اللہ بھی موجود تھے مقدمۃ کمیش کے انتثار کی وجہ ہے قلب کالشکر بھی انتشار کاشکار ہوالوگ ادھرادھر بھاگ رہے تھے کسی کو کچھ بچھائی نہ دیا کہ کیا کیا جائے کیونکہ دشمن دور ہی سے صرف تیروں کی بارش کررہا تھا۔ یہاں تک کہ نبی کریم آلیہ کے ساتھ تقریباً ایک سومحابہ رہ گئے ۔گر آ ہے اللہ نے پیش قدمی حاری رکھی ادھر بنو ہوازن نے بھی بلٹ کر پیش قدمی شروع کر دی جن کومور جیزن تیراندازوں کی مدد حاصل تھی۔افراتفری کی وجہ ہے مسلمانوں کی پیش قدمی رک گئی صرف نبی کریم آلی بھی تھے جو حضرت عمر محصرت عباس اور حضرت ابوسفیان بن الحارث کی معیت میں آ گے برا مصتر رہے۔ اور حدیث میں مذکوررزمیہاشعار بھی لب بروارد ہور ہے تھے۔ دیگر ساتھیوں کی تعداد کم ہوتی گئی حتی کہایک موقع اليا آيا كه ني كريم الله السيخ أحية فحير جس كانام بيفاء يا دلدل قلات اتر كئ اورتن تنها آ كر بره ككريول اورريت مي مضى جركر''شاهت الوجوه ارجعوا ''كتيب موئے كفاركى فوج بريجينك دى۔ انتثاری اس کیفیت میں کسی کو بیمعلوم نہ ہوسکا کہ نبی کر پھیالیہ کہاں ہیں اور کیا کررہے ہیں صرف چند فدائین ہی آپ اللہ کے پاس رہ گئے تھاس لئے تجربہ کاریرانے مسلمان بھی بدحواس کے عالم میں تھے۔ نومسلم اور جذباتی مسلمان میدان سے ہٹ چکے تھے۔اس دوران حضرت عباس کو حکم دیا کہ وہ مہاجرین،

انسار اوراصحابِ بیعت صحابہ کوآ واز دیکر میدان میں بلائیں۔ چنانچ انہوں نے ایسا کیا تب ہی مسلمانوں کو نبی کریم التقاقیہ کے مقام کا پتہ چلا۔ اور انسار ومہاجرین کی جماعت نے آگے بڑھ کر بنو ہوازن کوآٹر بہت میں ایسا کی بنو کا مقابلہ نہ کر سکے اور بہت سامال غنیمت ، عورتوں اور بچوں کو چھوڑ کر بھاگ نکلے۔

اس تفصیل سے بیہ بات واضح ہو جاتی ہے کہ خلص سر فروش صحابہ کرام نبی کریم اللی کو چھوڑ کر بھا گئے۔ کو چھوڑ کر بھا گئیں تھے بدحواسی کی وجہ سے بعض منتشر ضرور ہوئے تھے اور نظم میں نقصان کے سبب نبی کریم اللیہ ان سے بچھڑ گئے تھے جبکہ خود نبی کریم اللیہ کی مسلسل، دلیرانہ اور تیز پیش قدمی جاری ربی (۱)۔

لہذا حضرت براُ ﷺ کے جواب کا خلاصہ یہی ہے کہ صحابہ کرامؓ نے اس روز نبی کریم اللہ کے حجیوڑ کر پیڑ نہیں دکھائی تھی البتہ نومسلم جذباتی مسلمان انتشار کا شکار ضرور ہوئے تھے۔

انا النبي لا كذب انا ابن عبدالمطلب

بیکلام بھی وزن و قافیہ سے مقید تھا۔لیکن اس سے آپ تابیقہ کا شاعر ہونالازم نہیں ہوتا جس طرح کہ ہم آ گے بیان کریں گے۔

تفاخر بالنسب کی حقیقت: لیکن یہ وہم ہوتا ہے کہ نبی کریم اللہ نے کہاں نسب اور نبوت سے تفاخر کیا ہے۔ جس کا جواب یہ ہے کہ اس کلام میں ایک حقیقت کا بیان محض تو یُق کے لیے کیا گیا تھا۔ گویا نبی کریم اللہ نہا ہوا ہے تھے کہ میں سچا پیغیر ہوں یہ عارضی شکست تن کو منانہیں سکتی۔ اس کی پرواہ نہیں۔ نیز دوسیں عبد المطلب کا بیٹا ہوں' یہ حقیقت بھی اس لئے بیان ہوئی تھی کہ اس سے یہ تنبیہ ہو کہ میں سچا پیغیر ہوں کیونکہ بعض کتب ساویہ میں آپ اللہ کے دادا کا نام موجود تھا۔ علامہ ابن تجر قرماتے ہیں کہ بشارات ہوں کیونکہ بعض کتب ساویہ میں آپ اللہ کے دادا کا نام موجود تھا۔ علامہ ابن تجر قرماتے ہیں کہ بشارات ہوں کیونکہ بعض کتب ساویہ میں آپ اللہ کی تاری ، علامہ بھوری اور مناوی نے لکھا ہے کہ اس پر اجماع ہے کہ آپ اللہ بھی شکست کھا کر نبیں بھا گے ہیں۔ اور اگر کوئی شخص آپ آپ اللہ کی تنقیص کرتے ہوئے کہ کہ نبی کر یم اللہ بھی ہوں اسے تی کر دیا جائے گا۔ جبکہ امام مالک کے ہاں اسے تی کر دیا جائے گا۔ (اصلاح الدین)

میں اس کا ذکر آیا تھا گویا آپ اللہ نے بھی ان بشارات کی طرف اشارہ کیا کہ میں عبدالمطلب کا بیٹا موں۔اور بشارة کامصداق سیائی ہو۔

نیزیہ بھی ہوسکتا ہے کہ والد کی بجائے دادا کی طرف نسبت کرنے کی وجہ یہ ہوکہ آپ آلی ہے کے والد عرب میں مشہور نہیں تھے بلکہ جوانی میں وفات پائے تھے جبکہ دادا قریش کے سردار اور مکہ کے رئیس تھے۔اسی وجہ سے لوگ بھی آپ آلی کے کو ابن عبد المطلب کہتے تھے۔اور ممکن ہے کہ صرف تیج کی رعایت کے لیے ابن عبد المطلب کہا ہو۔

اب اس شعر کے کہنے پر آپ آلیہ کا شاعر ہونالازم نہیں آتا۔ بعض لوگوں نے کہا ہے کہ اس لئے کہ پیشعر بھی دراصل ایک کہ پیشعر نہیں دراصل ایک کہ پیشعر بھی دراصل ایک اور شخص کا ہے جنہوں نے آپ سیالیہ کو کا طب کر کے کہا تھا کہ

"انت النبيّ لا كذب انت ابن عبدالمطلب"

آپ الله نے صرف انت کی ضمیرانا سے بدل دی تھی لیکن سب سے بہتر جواب ہے ہے کہ شعر کی تحریف میں ہم پڑھ چکے ہیں کہ قصدیت شرط ہے اگر بالقصدوزن وقافیہ کے تحت کلام کولا یا جائے تو شعر ہوگا ور نہیں۔ جبکہ یہاں میشرط مفقو د ہے کیونکہ نبی کریم الله صرف اپنے جذبات واحساسات کا مظاہرہ کرتے ہیں مقفی کلام اتفاقاً زبان پروارد ہوا ہے اس کا قصد نہیں کیا گیا۔

(۲) حدّثنا إسحاق بن منصور عبدالرزاق ثنا جعفر بن سليمان أنبانا ثابت عن أنس إنّ النبيّ عُلِيقًا دخل مكة في عمرة القضاء وابن رواحة يمشى بين يديه و هو يقول.

خلوا بنى الكفار عن سبيله. اليوم نضربكم على تنزيله ضربا يزيل الهام عن مقيله ويذهل الخليل عن خليله فقال له عمريا ابن رواحة بين يدى رسول الله عليه وفي حرم الله تعالى تقول شعراً فقال النبي عليه خلّ عنه يا عمر فلهى أسرع فيهم

من نضح النّبل(١).

ترجمہ: حضرت انس کہتے ہیں کہ نبی کریم القیائی عمرة القصناء (کے سفر) میں مکہ کرمہ داخل ہوئے اس حال ہیں عبداللہ بن رواحہ یہ کہتے ہوئے آپ القیائی کے آگے آگے جا رہے تھے 'خسلوا بسنسی المکف ارالیخ '' یعنی'' اے کفار کے بیڑا نبی کریم القیائی تربیل کو اپنی قرار گاہوں سے جدا کردے گئی ۔ اور جودوست کواپنے دوست سے فافل کردے گی۔'' اس پر حضرت عمر شنا اس کی ۔ اور جودوست کواپنے دوست سے فافل کردے گی۔'' اس پر حضرت عمر شنا اس کہا کہ اے ابن رواحہ المیاتم نبی کریم القیائی کے حرم میں کہا کہ اے ابن رواحہ المیاتم نبی کریم القیائی کے حرم میں شعر پڑھتے ہو۔ تب نبی کریم القیائی نے فرمایا اے عمر المین دواحہ کوئن نہ کرو۔ کیونکہ اس کے اشعار کفار پر اثر انداز ہونے میں تیر پر سانے سے بھی زیادہ تحت ہیں۔

عمرة القضاء اورابن رواحة كاشعار: في عمرة القضاء النح ذى القوره على نى كريم الله في المرابي المرابي المرابي المرابي المرابي المرابي المرابي المرابي في المرابي الم

خلوا بنی الکفار النح چونکهاسعمره کے دوران کفار مکہ پہلے سے مکہ چھوڑ کرنز دیک کی پہاڑیوں پر جابیٹھے تھے۔اس لئے یہاں پر خلوا بنی الکفار سے مرادبیہ وگی کہاس ترکب مکہ پر ثابت وقائم رہو۔ ہمارے لیے رکاوٹ بننے کی کوشش نہ کرنا۔

علی تنزیله ضمیر نی کریم آلی کوراجع ہے۔ لین اگرتم لوگوں نے تفض عہد کر کے نی کریم آلی کو کو کہ نازل ہونے کے باو جود عمرہ سے روکنے کی کوشش کی تو اس تنزیل پر ہم تمہاری خبر لیس گے۔ اس بار گزشتہ برس کی طرح ناکام واپس نہیں ہونگے۔ یوں 'علمی ''کالفظ تعلیلیہ ہوگا۔ لین بنیاء علمی تنزیله تنزیلکم ایاہ ۔۔یا پھر تنزیل سے قرآن مراد ہوگا۔ اور مضاف مقدر ہوگا لین ''بناء علی حکم تنزیله ای قرآنه ''۔مطلب یہ ہوگا کہ اس پر نازل شدہ قرآن کے حکم کی بناء پر تمہاری پٹائی کریں گے۔ یو یہ المهام بامد کی جمع سے۔ جو کھو ہوئی کو کہتے ہیں۔

عن مقیلہ مقیل قال یقیل قیلولہ سے مصدر میمی ہے۔ جس کے معنی ہے آرام اور نیند ۔ تو معنی یہ وگا کہ الی ضرب سے ماریں گے کہ کھو پڑیاں آرام بھول جا ئیں گی یا پھر میظر ف کا صیغہ ہے جائے قرار اور آرام گاہ کے معنی میں ہے۔ بعنی سرول کوان کی آرام گاہ بعنی گردنوں سے جدا کر کے گرادیں گے۔

افی حرم الله تقول الشعر حضرت عمر کی اس بات کا مطلب یہ ہے کہ آپ کے جذبات تو قابل قدر ہیں لیکن احترام حرم اور احترام رسول علیہ کا نقاضا کھے اور ہے۔ اللہ تعالی تو فرماتے ہیں لاتر فعو اصوات کم فوق صوت النبی عَلَیْ الله الله والان کے خیال میں نبی کریم علیہ کے سامنے اور پھر حرم کے اندراشعار کہنا سوءادب تھا۔ علاوہ ازیں یہ وجہ بھی ہوسکتی ہے کہ ابھی تو امن سے عمرہ اوا کرنے کا موقعہ ملا ہے اگر تیرے اشعار سے کفار کے جذبات بھر کی اسے موقع کی مجہ کے کہ می کفار کے حملے کی وجہ سے عمرہ تملی کے ساتھ اوانہ کرسکیں۔

مگرنی کریم الله نے عراقوع فرمایا اور کہا کہ اسے چھوڑ دو۔ کہ اپنے جذبات کا اظہار کرتا رہان

کابیکام جہادلسانی ہے کیونکہ جس طرح تکوار کے ذریعے جہاد ہوتا ہے قلم اور زبان سے بھی جہاد ہوسکتا ہے۔ رہے کفار تو وہ ہمارے جہاد اور ان کے اشعار سے ایسے مرعوب ہو چکے ہیں کہ ان کوسامنے آنے کی جرأت نہیں ہوگی۔

بہر حال یہاں پر نبی کریم اللہ نے جواجازت فرمائی ہے اس سے واضح ہوتا ہے کہ اشعار سارے فتیج نہیں ہوتے بلکہ مضمون اچھا ہوتو ان میں حسن بھی ہوتا ہے۔

أسوع من نضح النبل المخ النبل تيرول كي ي السيل المنطلب يه كه تيرول كي السيل المنطلب يه كه تيرول كي المنطلب الم

(2) حدّثنا على ابن حجر أنبانا شريك عن سماك ابن حرب عن جابر بن سمرة قال جالست رسول الله عَلَيْكُ اكثر من مائة مرة و كان أصحاب عننا شدون الشعر و يتذاكرون أشياء من أمر الجاهلية وهو ساكت و ربّما تبسّم معهم (٢).

ترجمہ: حضرت جابر بن سمرہ کی ہے ہیں کہ میں سوبار سے زیادہ نبی کر یم اللہ کی ایک ایک ایک مجلسوں میں بیٹھا ہوں جبکہ آپ اللہ کے سحابہ(ان مجالس میں) ایک دوسرے سے اشعار سنتے تھے۔ اور جاہلیت کے قصے سناتے تھے۔ نبی کر یم اللہ خاموش (ہوکر سنتے ) تھے۔ اور جاہلیت کے قصے سناتے تھے۔ خاموش (ہوکر سنتے ) تھے۔ اور بھی بھی ان کے ساتھ بسم بھی فرماتے تھے۔

حضوراقد سالی کے عالم میں شعروشاعری: یت شدون الشعبر تناشد ایک دوسرے کے ساخت کو کہتے ہیں۔ تو گویا نبی کریم اللّی کی مجلس خشک اور (ا) کفار کو ایذاء رسائی کے لئے فقہاء اسلام نے یہاں تک کھا ہے کہ شکر اسلام دار الحرب کے سانپوں اور بچووں کو بھی قتل نیکرے تا کہ وہ کاری ایڈ ارسائی کے لئے موجود رہیں۔ وعثار)

(۲) جامع ترمذى ۷/۲/۱ الستذان والادب باب ما جاء فى إنشاء الشعر، مسندا حمده ۷/۷، السنن الكبرئ للبيهقى ١ / ۲/٠، صحيح ابن حبان ۱۵/۷ (مختار)

بے لیک نتھی۔ ہروقت عقل وحکمت اوراحکام شریعت کا ذکر نہیں ہوتا تھا۔ بلکہ بھی کبار دل لگی اور گپ شپ بھی ہوتی تھی۔ شعر گوئی ہوتی تھی اور آپ آلیا منع کرنے کی بجائے سنتے رہتے تھے۔ بلکہ بھی مسکرا کران کی طبع آز مائی کی تحسین بھی فرماتے تھے۔

ظاہر ہے کہ ان اشعار میں جھوٹ، غیبت، اور نضول گوئی ، جواور مبالغہ آرائی نہیں ہوتی تھی۔ورنہ آپ علیہ فی ضم درنے آپ علیہ فی ضرور منع فرماتے۔ یہ صحابہ کی دلداری ان کی تالیف قلبی اور ان کے ساتھ اختلاط اور بے تکلفی تھی جو کہ ایک داعی کے لیے ضروری امر ہے۔ گویا آپ علیہ اپنی مجلسوں میں تحمیض پیدا فرماتے تھے۔ تفری طبح کے امور میں مشغول ہو جاتے تھے۔ جبکہ شعر گوئی عربوں کے لیے فطری طور پر محبوب چیز تھی۔ حمضو امجالسکہ.

> ترجمه: حضرت ابوهريرة بي كريم الله عند روايت كرتے بيں - كرآ ب الله الله فر مايا كرتے بيں - كرآ ب الله الله فر مايا كر من الله باطل (٢)

(۱) علامة يَجِرئ مُن الكام على مدح الإسلام ويؤخذ منه جوازبل ندب انشاء الشعر واستماعه اذاكان فيه مدح الاسلام والحث على صدق اللقاء مبايعة النفس لله تعالى (المواهب اللدنية ۵۵۱) (مختار) (۲) صحيح بخارى ۵۷۳/۲ كتاب المناقب باب ايّام الجاهلية، صحيح مسلم ۲۳۷/۲ كتاب الشعر، جامع ترمذى ۵۷۳/۲ كتاب الاستذان والادب باب ماجاء في إنشاء الشعر، سنن ابن ماجة

ص ٢ ٢ ٢ كتاب الادب باب الشعر . (مختار)

اشعب کی محلمة اشعرشعور سے ہے جوعلم کو کہتے ہیں۔ البذامعنی بیہوا کہ بنری عقمندی اور دانائی کی بات جوعر بول کے ہال کہی گئی ہے۔وہ جملہ ہے جوحسن اور دقتِ لفظی کے ساتھ ساتھ ایک بہترین اور نفس الامری کو سمیٹے ہوئے ہے۔ بیر حدیث اس باب میں دوسر نے بسریر گزر چکی ہے۔

(٩) حدّثنا أحمد بن منيع ثنا مروان بن معاوية عن عبدالله ابن عبدالرحمٰن الطائفيّ عن عمر وبن الشريد عن أبيه قال كنت ردف رسول الله عَلَيْكُ فانشدته مائة قافية من قول اميّة بن ابي الصلت كلّما انشدته بيتا قال لي النبي عَلَيْكُ هيه حتى انشدته مائة يعني بيتا فقال النبيّ عَلَيْكُ أَن كا دليسلم(١).

ترجمه: حضرت شرید سے روایت ہے کہ میں نبی کریم اللہ کے ساتھ سواری پرآپ علیہ اللہ کے ساتھ سواری پرآپ علیہ کا میں اللہ کا میں میں کریم اللہ کا کہ اللہ کا میں ساؤ۔ یہاں تک کہ میں نے ایک سواشعاران کو سنا دیئے۔ تو آپ اللہ نے فرمایا کہ قریب تھا کہ امیہ سلمان ہوجائے۔

الشرید بن سوید تقفی شہور صحابی ہیں۔ طائف میں رہتے تھے۔ مدینہ میں ہمی رہ پیکے ہیں۔ پہوری اور ملاعلی قاری نے اصل نام عبدالملک بن سوید لکھا ہے۔ کیکن علامہ ابن جر سے ہاں اصل نام ما لک بن سوید ہے۔ شرید لقب ہے۔ بیعت رضوان میں شریک ہو چکے تھے۔

مأة قافية اس سے ماتو كامل قصيده مراد ہے كيكن رائح بيہ كداس سے مراد سوشعر بيں اور قافيہ جو جزء ہے كاذكر كے اس كاكل يعنى بيت مراد ہے۔

(۱) السنن الكبرئ للنسائى ٢٣٨/١ كتاب العمل اليوم والليلة باب مايقول اذااسترات الخبر، سنن ابن مساجة ٢٠٢ كتساب الادب بساب الشعر، مصنف ابن ابسى شيبة ٣٠٨/٩٠٨ السنن الكبرئ للبيهقى • ٢٢١١ كتاب الشهادة باب لابأس باستماع الحداء ونشيد الاعراب (مختار)

غیر مسلم شاعر امیة بن صلت کے ایمان افروز کلام کی تحسین: من امیة بن أب الصلت ایمی من قیر مسلم شاعر امیة بن أبی الصلت بینو تقیف کے مایہ نازشعراء میں سے تعادر سول الشوائی کا زمانہ پایا ۔ گر ایمان سے محروم رہے ۔ حقائق اور عقائد صحیحہ سے اس کے اشعار بحرے پڑے ہیں ۔ تو حید اور بعث کی حقانیت دنیا کی بے باتی اس کے کلام کی روح ہے تی کہ نی کریم آلی نے ناس کے بارے میں فرمایا ''آمن لسانہ و کفو قلبه '' یعنی اس کی زبان مؤمن کی زبان ہے کین دل کا فرہے ۔ تو رات اور انجیل کے عالم ہونے کی وجہ سے اس کو آخری نی کے علامات کا بھی بخو فی علم تعاد بلکہ کہاجا تا ہے کہ وہ اس طبع میں عبادت اور تصوف میں شخول رہتا مگر جب نی کریم آلی کی ونبوت بخش گئ تو وہ حسد کی آگ میں جلنے لگا اور یقین کے باوجود کفر کرنے لگا۔ سب سے پہلے ''باسم کی الله ہم'' کا استعال بھی اس سے منقول ہے۔

ھی۔: بیکمہ اسم فعل ہے اور کسی کلام کے استحسان کے بعد مزید مطالبہ کے لیے بولا جاتا ہے۔ اس لئے اس کامعنی ہے' ' ذد'' یعنی اور سناؤ۔ اس کی وجہ ہم پہلے لکھے چکے ہیں کہ امید کا کلام تو حید بعثت اور دیگر عقائد اسلامیہ برمشتمل ہوتا تھا۔ علاوہ ازیں دقیق معانی اور فصاحت میں بھی ممتاز تھا۔

ان کے دلیسلم ان مخفف من المثقل ہے۔ ضمیر شان محدوف ہے جواسم ان ہے یعنی انسه کا دلیسلم ۔ قریب تھا کہ وہ مسلمان ہوجائے کیونکہ ذبان تو اسلامی ہے۔ بس دل سے انا نیت نکل جاتی تو کفریا تی ندرہتا کہتے ہیں کہ آ ہے قائدہ نے اس کا پیشعری کریے تھر وفر مایا تھا

لک الحمد والنعماء والفضل ربنا فلا شئی اعلی منک حمداً و لا مجدا (اے ہمارے دب تیرے لئے ہی تمام تعریفیں ہیں۔ تیری طرف سے تمام تعمیں اور تیرے لیے ہی سب فضیلتیں ہیں بس تجھ سے زیادہ کوئی تعریف کے قابل ہے نہ تجھ سے کوئی بزرگ تر۔)

( • 1) حدّثنا إسماعيل بن موسىٰ الفزارى و على بن حجر والمعنى واحد قالا أنبانا عبدالرحمان بن أبى الزناد عن هشام بن عروة عن أبيه عن عائشة قالت كان رسول الله عَلَيْتُ يضع لحسان بن ثابت منبراً فى السمسجد يقوم عليه قائماً يفاخر عن رسول الله عَلَيْتُ اوقال ينافخ عن رسول الله عَلَيْتُ إِلَى الله عَلَيْتُ إِلَهُ عَلَيْتُ الله عَلَيْتُ الله عَلَيْتُ الله عَلَيْتُ الله عَلَيْد حسّان بروح

القدس ما ينافع او يفاخر عن رسول اللهُ عَلَيْكُ (١).

ترجمہ: حضرت عائش سے روایت ہے کہ نبی کر پیم اللہ حضرت حسان بن ثابت کے لیے مسجد میں منبر رکھوا دیتے تھے۔ جس پر وہ بیٹھ جاتے تھے اور نبی کر پیم اللہ کی کر میں اللہ کہ اس کے لیے مسجد میں منبر رکھوا دیتے تھے۔ جس پر وہ بیٹھ جاتے تھے اور نبی کر پیم اللہ کی مدافعت میں طرف سے فخریہ اشعار پر حقتے تھے۔ نبی کر پیم اللہ الیے موقع پر قراتے کہ اللہ تعالی روح القدس سے حضرت حسان کی المداوفر ماتے ہیں جب تک وہ رسول اللہ تا لیے کی طرف سے مفاخرہ کرتے ہیں۔ یا یہ کہا کہ ان کی طرف سے مفاخرہ کرتے ہیں۔ یا یہ کہا کہ ان کی طرف سے مفاخرہ کرتے ہیں۔ یا یہ کہا کہ ان کی طرف سے مفاخرہ کرتے ہیں۔ یا یہ کہا کہ ان کی طرف سے مفاخرہ کرتے ہیں۔ یا یہ کہا کہ ان کی طرف سے مفاخرہ کرتے ہیں۔

حسان بن ثابت ابوالوليد حسان بن ثابت انسارى خزر جي مشهور صحابي بين شعراء اسلام مين سب سے متاز حيثيت كے حامل بين د حضرت ابو عبيده كا قول ہے كہ عرب كاس پر اجماع ہے كہ حسان " " الشعبر الها للمدد " بين ليخي علاقوں مين سب سے بہترين شاعر بين سناعر بين سناعر

- (۱) وه حاملیت میں شاعرالانصار تھے۔
- (٢) زمانه نبوت میں شاعرر سول الله الله عظیمة تھے۔
  - (٣) اسلام كے زمانہ ميں شاعر يمن تھے۔

جب قریش کے بعض منہ پھٹ شاعروں نے نبی کریم اللہ اور مسلمانوں کی ججو میں اشعار کہتو اور مسلمانوں کی ججو میں اشعار کہتو لوگوں نے حضرت علی سے جواب کہنے کی درخواست کی۔ انہوں نے کہا کہ نبی کریم اللہ اراجازت دیں تو جواب دوں گا تو لوگوں نے نبی کریم اللہ نے حضرت علی کے لیے اجازت طلب کی۔ آپ اللہ نے فرمایا (۱) سنن ابسی داؤد ۲۸۲۸ کتباب الادب بیاب میاجیاء فی الشعر، جامع ترمذی ۷۸۲۸۲ کتباب الاست خان و الادب بیاب میاجیاء فی الشعر، السمست درک لیاسے ایک میں ۱۸۸۸، مستدار کی لیاسے ایک میں مسئدا حمد ۲۸۲۷ کے میں مسئدا حمد ۲۸۲۷ کے دمختار)

کہ جوقوم نبی کریم اللہ کے کا کواروں سے مدد کرتی آئی ہے وہ زبانوں سے اس کی نفرت کیوں نہیں کرتی۔
اس پر حضرت حسان نے حامی بھر لی کہ بیکام میں کروں گا۔ نبی کریم آلیک نے دریافت فرمایا کہتم قریش کی جو کیونکر کرو گے حالا نکہ میں انہی میں سے ہوں اور وہ میرے بھائی بندے ہیں۔حضرت حسان نے کہا کہ میں آپ آلیک کو کوالا جاتا ہے۔ چنا نچ آپ میں میں میں کے اساب کا بیتہ لگایا اور پھر بنو ہاشم اور مسلمان خاندانوں کو چھوڑ کر دیگر قریش کے انساب کا بیتہ لگایا اور پھر بنو ہاشم اور مسلمان خاندانوں کو چھوڑ کر دیگر قریش کی خوب درگت بنائی۔

آپ کوبردی طویل عربخش گئی ہی۔ ایک سوبیس سال تک زندہ رہے۔ اس میں ۲۰ سال کفر میں اور ۲۰ سال اسلام میں کر ارے۔ بلکہ ان کے والد، دادا اور پر دادا بھی ایک سوبیس سال تک زندہ رہے تھے۔ آپ کی تاریخ دفات کے بارے میں مختلف اقوال ہیں۔ میں ہوءیا ۵۰ ہے ہوکو وفات یائے۔

نی کریم الله کایدا ہتما م فخر و تکبر کی بنیاد پر نہ تھا(۱) بلکہ چونکہ کفار سے ہرمیدان میں مقابلہ مقصود ہوتا تھا۔ان کی حوصلہ تکنی اور زبان بندی بھی جہاد کا حصہ تھی۔اس لئے حضرت حسانؓ کے اس عمل کو جہاد باللمان قرار دیکرآ پے آللیہ ان کی حوصلہ افزائی فرماتے تھے اور مدحیہ اشعار کہلواتے تھے۔

یؤید حسان بروح القدس روح القدس جرئیل کالقب ہاوراس کی تائید کامعنی میہ کہ وہ حسان بن ثابت کو بلیغ کلام اور منہ توڑجواب کا الہام فرماتے ہیں۔ نیز دشمنوں اور دیگر آفات وبلیات سے ان کی حفاظت فرماتے ہیں۔

( ) فيانّ التكبر على الكافرين قربة و على سائر المتكبرين صدقة (جمع الوسائل ج٢ ص ٥٢ (مختار) (۱۱) حدّثنا إسماعيل بن موسى و على بن حجر قالا ثنا ابن ابى الزناد عن ابيه عن عروة عن عائشة عن النبي عليه المراري.

تر جمہ: حضرت عا کشگی سابقہ روایت لفظاً ومعنی ایک دوسری سندے مذکورہے۔

مدله بینی انبی الفاظ کودوسری سند ہے بھی روایت کیا گیا ہے۔ امام ترفدی محض سابقہ روایت کی تائیدوتقویت کے لیے بیدوسری سندلارہے ہیں۔

(۱)سنن ابى داؤد۳۳۵/۲ كتاب الادب باب ماجاء فى الشعر، جامع ترمذى ۵۷۳/۲ كتاب الاستنان والادب باب ماجاء فى الشعر، مسنداح مد ۲/۲۷، المستدرك للحاكم ۱۸۵/۳ (مختار)

## خلاصئه بإب

نی کریم الله شاعر نہیں تھے۔ مگر شعر نہی کے ملکہ اور اولی ذوق سے بہر ہ مند تھے۔ خود شعر گوئی کے بارے میں آپ الله سے متعلقہ قدیم کی روایات مروی ہیں۔ چنا نچ بعض روایات میں شعر کوز ہر سے بھی بدر کہا گیا ہے۔ قرآن نے تو شعراء کو گرا ہوں کے لیڈروں کا خطاب دیا ہے۔ ملاعلی قاری ؓ نے ایک حدیث بیان کی ہے کہ ابلیس لعین کو جب زمین پراتارا گیا تو اللہ تعالی سے درخواست کی کہا ہے دب بھے بھی ایک قرآن (یعنی کتاب پڑھنے کے لیے) عطافر ما تو اللہ تعالی نے فرمایا کہ 'قسر آنک الشعر و ''کہ تیرا قرآن شعر ہے۔ ایک دفعہ نبی کریم آلی ہے نے ایک شاعر کوگاتے ہوئے دیکھا تو فرمایا ''خسفو الشیطان و قرآن شعر ہے۔ ایک دفعہ نبی کریم آلی ہے نے ایک شاعر کوگاتے ہوئے دیکھا تو فرمایا ''خسفو الشیطان متع فرمایا ہے۔ متعالیہ ہے آپ آلی ہے کہ متعالیہ ہے۔ متعالیہ ہے۔

دوسری طرف یہ بھی ثابت ہے کہ صحابہ کرام آپ پھیلیے کی مجلس میں اشعار کہتے تھے۔آپ پیلیے سنتے تھے تقریراً مسکراتے تھے۔ پر حکمت اشعار سنانے کی خود فرمائش بھی کرتے تھے۔اور شعر کہنے والے کو دعا کیں دیتے تھے۔ جبر ئیل امین کی مدد کا یقین دلاتے تھے۔خود مسجد ہی میں بڑے اہتمام کے ساتھ منبر لگوا کرشاع رسول بیلیے کو کلام پیش کرنے کی دعوت دیتے تھے۔ بلکہ ہجو بالشعر کومؤمن کا جہاد کہا کرتے تھے۔اور کا فروں کی تذکیل سے خوش ہوتے تھے۔خود بلور تمثیل واستشہاد شعراءِ جا بلیت کا کلام تقل کرتے تھے۔اور کا فرشعراء کے اچھے کلام کو حکیمانہ کہہ کراس کی مدح بھی کرتے تھے۔

نصویر کے دونوں رخ دیکھ کریہ فیصلہ کرنا مشکل نہیں رہتا کہ شعر دونتم کے ہوتے ہیں۔اول زہر میں بجھے ہوئے اشعار بھی اصار ، جن میں نا جائز جنسی اور رومانی مضامین ، تغزل یا مدح و ہجو سے متعلق جموت میں بھو ہوئے اشعار بھی اور اختلافات کو ہوا دینے والی رزمیہ باتیں ہوں۔اول الذکر احکام ایسے اشعار سے متعلق ہیں جبکہ مؤخر الذکر احکام ان اشعار کے بارہ میں ہیں۔جو حسن ہوتے ہیں۔ان میں حق کی حایت ، اللہ اور رسول کی مدح سرائی اور خدا کے دشمنوں کی زبان بندی ، جموث ، مسلمانوں کی اذبیت ، بیہودہ

اور فخش مضامین سے بیہ پاک ہوتے ہیں۔

اس باب میں جتنے بھی احادیث وارد ہوئے ہیں۔اس میں شعر کے ساتھ مثبت تعلق معلوم ہوتا ہے۔اس طرح کہ ستحن اشعار کی تحسین کی گئی ہے اور اچھے اشعار سنانے کی فرمائش آپ آلیا ہے۔
کرام سے فرمائی ہے۔

پھر جواشعار خود آپ آلیہ کی زبان مبارک پرواردوہوئے ہیں۔وہ یا تو دوسر سے شعراء کے اشعار ہیں جو بطور تمثل آپ آلیہ کی زبان پر بلا قصد واردہوا ہیں جو بطور تمثل آپ آلیہ نے نیش فرمائے ہیں۔ یا پھرا یک ایسا کلام آپ آلیہ کی زبان پر بلاقصد واردہوا ہے جو اتفاق سے موزوں بھی ہے۔لہذا عدم قصد کی وجہ سے وہ شعر کی تعریف میں داخل نہیں ہے اور بعض الفاظ رجز کے قبیلے سے ہے جونٹر میں داخل مانا جاتا ہے۔

(اللهم صلى على افصح العرب صاحب جوامع الكلم بعدد من تكلم)

## ٣٨. باب ماء جاء في كلام رسول الله عَلَيْكُ في السمر سول الله عَلَيْكُ في السمر رسول الله عَلَيْكُ في السمر

اس سے قبل نبی کریم اللی کے مطلق کلام کا ذکر ہوا۔ پھر نبی کریم اللی کی بثاشت، حسن خلق اور اس کے بعد شعرو شاعری کے ساتھ آپ اللی کے کلام کا تعلق بیان ہوا۔ اب نبی کریم اللی کے کلام کے ایک دوسر سے صنف مسامرہ کا ذکر ہے جو کہ حدیث اللیل لینی رات کے وقت یاروں دوستوں یا بیوی بچوں کے ساتھ گپ شپ کو کہتے ہیں۔

یہ مسموسکون میم یاسم و میم منتوحہ سے ہاوراس کے اصل معنی چاندنی کے ہوتے ہیں چونکہ عرب لوگ عموماً صحراؤں اور خیموں میں رہا کرتے تھے۔اس لئے ان کی رات کی مجاسیں عموماً چاندکی روشنی میں منتقد ہوتی تھیں۔ آج کل بھی دیباتی پٹھان لوگ گاؤں سے باہر کشادہ فضا میں گپشپ کیلئے نکلتے ہیں کیونکہ چاندکی روشنی میں یہ جالس بہت دلچیپ اور پر لطف ہوتی ہیں۔اور چونکہ رات یا چاندنی کا وقت اس مخصوص قصہ گوئی اور گپشپ کیلئے ظرف زمان ہوتا ہے۔اس لئے ظرفیت کے اس علاقہ کی بنا کی مرکا اطلاق خودان مجلسوں پر ہونے لگا۔

رات کی قصہ گوئی اور حدیث اللیل کی کراہیت میں تطبیق: اس باب میں یہ بیان کیا جارہا ہے کہ نی کریم اللیہ نے اور دوسروں سے نی ہیں۔ البذایہ جائز ہے۔ لیکن یہاں یہ اشکال ضرور وارد ہوتا ہے کہ بعض روایات میں حدیث اللیل کی کراہت بھی ذکور ہے۔ حدیث میں آتا ہے کہ و کان (النبی عَلَیْ الله الله و قبلها (یعن قبل صلوق العثاء) و الحدیث بعدها (۱).

تو نبی کریم آلیستا نے خوداس کا ارتکاب کیوں کیا؟ اس کا جواب یہ ہے کہ وہ مسامرہ ممنوع ہے جو خرافات لغو با توں، فضول گوئی یا غیر شرکی اور مذموم اقوال وافعال پر مشتمل ہو۔ یا پھر اس حد تک اس میں منہمک ہوجائے کہ نیند کا سارا وقت اس میں صرف ہو۔ اور پھر نماز تہجد کیلئے اٹھنا تو در کنار شبح کی نماز کیلئے اٹھنے میں بھی تکلیف ہو۔ دن کوتعلیم وتعلم اور دوسر سے واجبات کیلئے رکاوٹ بنے ۔ چونکہ اس طرح کی قصہ (۱) مثنق علیہ بحوالہ محکورہ جلا اسفی ۱۲

گوئی دینی امور میں حرج کا باعث ہے اس لئے ممنوع ہے۔ بہتر صورت یہ ہے کہ رات کو جلدی سویا جائے اور شیخ سویرے اٹھا جائے۔ بیصحت، دماغ اور دیگر مقاصد کیلئے بہت مفید ہے۔ بعض دیہا توں میں جہاں رات کو کھانا کھانے کے بعد جلد ہی نماز عشاء پڑھی جاتی ہے اور پھر لوگ سوجاتے ہیں۔ وہاں لوگوں کی صحتیں قابل رشک ہوتی ہیں۔ ضبح سویرے اٹھنا بھی مشکل نہیں ہوتا۔ اس کے برعکس نئی تہذیب و تدن کے مطابق لوگ ساری رات سینماؤں، کلبوں اور بیٹھکوں میں جاگر کر اردیتے ہیں۔ اور شبح قریب ہوتے ہی سوجاتے ہیں۔ پھر دو پہر دس گیارہ بج تک نیند پوری نہیں ہوتی۔ اس سے ایک طرف تو ترک فرائض کے سبب سارا دن نحوست کا سامنا کرنا پڑتا ہے۔ علاوہ ازیں جسمانی طور پر بھی بشاشت، نشاط اور تازگی مفقود ہوتی ہے۔

سمر میں اعتدال: ان تمام حکتوں کے سبب رسول التحقیقی نے سمر مضر فرمایا۔ لہذاوہ ساری گپشپ جو تھا وہ اور ملال کا سبب ہوگی اور دین وا خلاق کیلئے مفر ہوگی جائز نہیں ۔ لیکن دراصل اس باب میں نفس جوازی طرف اشارہ ہے۔ اور اس کی صورت سے ہے کہ کوئی شخص تھوڑی دیر کیلئے اپنی بیوی بچوں کے ساتھا ان کی دلجوئی کیلئے گپ شپ اور دل گئی کرے۔ یا دوست آپس میں عمومی گفتگو یعنی غیر باطل کلام کے ذریعے گپشپ لگا کئی سامرہ کا اطلاق نہیں ہوگا۔ اگر چہوہ جلے جورات گئے تک منعقد ہوتے ہیں مفرات سے خالی نہیں کیونکد اس طرح آ دی دن کے ہوگا۔ اگر چہوہ جلے جورات گئے تک منعقد ہوتے ہیں مفرات سے خالی نہیں کیونکد اس طرح آ دی دن کے گزار دی جائے تو دس دن تک دماغ کو اعتدال نصیب نہیں ہوتا اور طبیعت نہیں کھتی۔ لہذا افراط تو بہر حال ممنوع ہے۔ لیکن صدود کے اعمار ورشری پابند یوں کے اعمار سونے سے قبل نوش طبی کیلئے یا تیں کرنا جائز ہے منون کہا بلکہ بعض علاء نے حسن معاشرت کے اعمار شیں بیوی یا دیگر گھر والوں کی تفری طبی کیلئے اسے مسنون کہا بلکہ بعض علاء نے حسن معاشرت کے اعمار شیں بیان کئے جاتے ہیں۔ جن شیں اس بات پر سبعیہ ہے کہ نبی کرنے گئی طور پر دنیا سے انقطاع نہیں بلکہ آپ علی ہے بھی بھی ہے کہ نبی کہ نبی کو ندگی طور پر دنیا سے انقطاع نہیں بلکہ آپ علی ہے بھی بھی ہے ہیں۔ جن شیں اس بات پر سبعیہ ہے کہ نبی کو کا کا کرتے تھے۔

(۱) حدّثنا الحسن بن صبّاح البزّار ثنا أبوالنصر ثنا أبوعقيل الشقفي عبدالله بن عقيل عن مجالد عن الشعبي عن مسروق عن عائشة قالت حدّث رسول الله عليه ذات (۱) ليلة نساء ه حديثا فقالت امرء ق منهن كان الحديث حديث خرافة فقال أتدرون ما خرافة إنّ خرافة كان رجلا من عذرة أشرته الجنّ في الجاهليّة فمكث فيهم دهراثم ردّوه إلى الإنس فكان يحدّث الناس بما رأى فيهم من الاعاجيب فقال الناس حديث خرافة (۱).

ترجمہ: حضرت عائشہ صنی اللہ عنہ کہتی ہیں کہ ایک رات کو نبی آلیاتی نے اپنی ہیویوں
کوایک قصہ سنایا۔ ان ہیمیوں میں سے ایک نے کہا کہ بید قصہ تو جیرت اور چاشنی میں
بالکل خرافہ کی باتوں جیسا ہے۔ نبی کریم آلیاتی نے فرمایا کہ کیاتم جانتی ہو کہ خرافہ کون تھا
(پھر بتاتے ہوئے فرمایا) خرافہ بنوعذرہ کا ایک آدمی تھا۔ جے جاہلیت کے زمانہ میں
جنات پکڑ کرلے گئے تھے۔ ایک عرصہ تک وہ جنات کے درمیان شہر ارہا۔ پھر جنات
نے اسے لوگوں میں واپس کردیا۔ پھر وہ لوگوں کو وہ عجیب وغریب باتیں جو اس نے
جنات میں دیکھی تھیں سنایا کرتا تھا۔ اسی وجہ سے لوگ (کسی عجیب بات کوئ کر) کہتے
ہیں کہ بی خرافہ کی بات ہے۔

بيويال اس قصه كوس رى تقى \_

خرافة اوراس كى باتين: كان الحديث حديث خوافة ان ازواج مطبرات من سايك نے کہا کہ پیقصہ تو خرافہ کے قصوں کی طرح معلوم ہوتا ہے اور خرافہ کے قصوں سے تشبیہ محض عجیب اور جیران کن ہونے کے لحاظ سے ہے۔ دلچیپ وعجیب اور غیر مانوس بات کوخرا فہ کی بات سے تشبیہ دے سکتے ہیں کیونکہ خرافهالیی با تیں کیا کرتا تھا جو کہانسانوں کی باتیں نہ تھیں بلکہ عجیب اور بےسرویا باتیں ہوتی تھیں۔تو یہ بی تی بھی آپ آلی کی باتوں کومخض عجیب ہونے کے سبب خرافہ کی بات سے تشبیہ دے رہی ہیں۔جھوٹ ،افسانویت، یا بیبودگی میں تشبیم قصور نہیں ہے کیونکہ نبی کریم اللہ کا کلام ان امورے یاک ہوتا تھا۔ عورتول كوصيخة مذكر سي خطاب: اللدون ماخوافة المنزي كريم الله في أرايا كم في الشبية دی کیکن کیا تہمیں خرافہ کا کچھ یہ بھی ہے کہ خرافہ کون تھا۔ بیبیوں کوخطاب کی وجہ سے یہاں اُنڈرین چاہیے تھا۔ لیکن عورتوں کومردوں کے صیغنہ تخاطب کے ساتھ خطاب کیا جو بھی کھی کیا جاتا ہے۔قرآن مجید اور حدیث میں اس کی نظیریں موجود میں مجدوثرف اوراعز از کے طور برعورتوں کومردوں کے خطاب سے بھی یکارا جا تا ہے۔ سمجھی تو تغلیب کی وجہ سے کیا جا تا ہے یعنی عورتوں اور مردوں کی مخلوط جماعت کومخاطب کیا جا تا ہے اور مردوں کو تغلیب دینے کی بناء پر مذکر کا صیغہ لایا جا تا ہے۔اور بہ نہ بھی ہوتو صرف عورتوں کو بھی اعزاز واکرام کےطور پراس فتم کا خطاب ناجا ئرنہیں۔اس بات پر تیبیہ کیلئے کی عورتیں اگر چہ نا قصات العقل والدين بي اليكن تم مخاطب كامل العقل والدين موراوراس مقام برتو خصوصي طور بريه بات زياده لمحوظ موكى كيونكه عا نشرضي الله عندوغير باكوكون ناقصة العقل كهه سكتا ہے؟ تو آپ نے شرف بمال علم اورشرف ملازمه کیوچہ سے ان کومر دوں کا درجہ دیگرمر دوں کے صیغہ سے خاطب کیا ہے۔اور بیا خمال بھی ہے کہ ان عورتوں کی جماعت کی تاویل اشخاص ہے کر کے آپ آلیت نے جمع ند کر کا صیغہ استعمال فرمایا ۔ قر آن میں بھی اس کی مثاليه ملتى بين الله تعالى كالرشاد بي وكانت من القانتين" ال مين حضرت مريم عليه السلام كوقا نتات کی بچائے قانتیں سے گنا گیا ہے۔ دوسری جگہاز واج مطہرات کوخطاب کرتے ہوئے فرمایااتما يريدالله

ليذهب عنكم الرجس أهل البيت ويطهّركم تطهيرا مالاتكديها الرعنكن اوريطهّركن

عالى ان كادت لتبدى به لولا ان كادت لتبدى به لولا ان كادت لتبدى به لولا ان ربطنا على قلبها لتكون من المؤمنين. (الآية)

چنانچەمۇمنات كى جگەمۇمنىن كاذكر جوا ـ ايك شاعرا پنى بيويوں كوخاطب كركے كہتا ہے كه ع ولوشئت طلقت النساء سواكم. اگريس چا جوں تو تمہارے سواسب عورتوں كوچھوڑ دوں حالا تكديہاں سواكن چاہيئے تھا() ـ

قبیلہ عذرہ:

من عـذرہ المنح عذرہ یمن کے ایک قبیلہ کا مقام ہے۔ اس قبیلہ کی عور تیں اپنے مردول کے ساتھ بہت محبت کرتی تھیں۔ ایک مؤرخ لکھتا ہے کہ میں عذرہ قبیلہ میں گیا تو وہاں کوئی بوڑھا مجھے نظر نہ آیا۔ مجھے تجب ہوا میں نے بوچھا تو لوگ کہنے لگے کہ ہماری ہیویاں بہت حسین وجمیل ہیں اور خاوندوں کے ساتھ ایک محبت سے پیش آتی ہیں کہ آدمی کوسرے سے بوڑھا نہیں ہونے دیتیں۔ حقیقت بھی یہی ہے کہ بیوی اگر تھیک نہ ہوتو مردکو بہت جلد بوڑھا کردیتی ہے۔ جب پریشانیاں زیادہ ہوتی ہیں تو بر ھاپا جلدی آتا ہوی اگر تھیک نہ ہوتو مردکو بہت جلد بوڑھا کردیتی ہے۔ جب پریشانیاں زیادہ ہوتی ہیں تو بر ھاپا جلدی آتا ہوں۔ ا

عربوں میں محاورہ کے طوریہ بات بھی مستعمل ہے کہ 'فسی المعدر معدر ق''اس میں بھی عذر سے یہی عذرہ کا قبیلہ مراد ہے۔ اور مطلب ہے ہے کہ اگر کوئی بنوعذرہ میں کہیں دل لگا بیٹے تو وہ قابل ملامت نہیں بلکہ افراط حسن اور کشر ق خلوص کے باعث معذور سمجھا جائے گا۔ قصیدہ بردہ کے ایک شعر میں (۱) اس طرح حضرت موئی علیہ السلام معرآتے ہوئے کوہ طورآئے۔ تو اپنی ہیوی سے فر مایا کہ امکشو ا اتنی آنست ناراً لعلمی آتیہ ہوئے الآیہ الائکہ المال مالائکہ المال مالائکہ المالی المال مالائکہ المال الموع طوقاقال اطولکن یداً فاخذوا قصبته یذرعونها فکانت سورة المحدیث . مالائکہ یہاں فاخذن قصبه یذرعن ہونا چا ہے تھا۔ (۱۲ اصلاح الدین)

(۲) تصیده برده کے شارعین نے اس حکایت کوقدر نے تغیر کے ساتھ تحریر کیا ہے۔ وہ لکھتے ہیں کہ اس قبیلے کے لوگ عموماً جوانی کے ایام میں فرط شق کی وجہ سے مرجاتے تھے آئیک عذری سے اس کے متعلق پوچھا گیا۔ اس نے جوابا کہا' نفسسی قلوبنا خفة و فی نساء ناعفة ''(شُخ زادہ) لینی ہمارے دلوں میں وفور شق کی وجہ سے میلان زیادہ ہوتا ہے۔ اور کمال حسن کے باوجود ہماری مورش فیش وزنا سے عفیف اور یا کدامن رہتی ہیں۔

(شرح عمرالخر پوتی وشرح شخ زاده علی البرده ص۲۲) (اصلاح الدین)

علامة شرف الدين محد بن سعيد بوميري في في عذره قبيله كي اسى حبت كي طرف اشاره فرمايا ب(١)-

أسرته البحن النع جنات كاوجودت برجالميت كزماني من جنات كاغليزياده موتا تھا۔اسلام کے بعدان کے فاسداٹرات کا سلسلہ بہت مدتک رک گیا۔اگر چداب بھی کچھ کچھ ہاتی ہے لیکن اب وه اسلامی مارشل لاء کے تحت ہیں تا کہوہ اسلامی نظریات وتعلیمات میں گڑ ہیز نہ کرسکیں \_اور چونکہ اللہ تعالیٰ نے ہرمتم کی تدلیس تلبیس سےاس دین حق کومخوظ رکھنا تھا۔اس لئے اللہ تعالیٰ نے جنات پر پہرے بٹھادیئے۔سورۃ الجن میںاس یا بندی کاتفصیلی ذکرموجود ہے۔

بمارأی فیهم من الاعاجیب النج جنات سے چھٹکاراحاصل کرنے کے بعدوہ وہاں کے عجیب مشاہدات مرچ مصالحہ لگا کر بیان کرتا تھا۔اس قتم کی عجیب روایات راوی کے نام کی وجہ سے خرافات كبلا ن كيس فقال الناس حديث خوافة الخاين كرجو بسندلا يعنى اورفضول ي باتي بوتى تھیں۔لوگ کہتے کہ بیخرافہ کی بات ہے۔گویا تشبیہ کے سبب جیرت انگیز واقعات براس کااطلاق ہونے لگا۔ مثلا اگر کوئی کہے کہ میں نے ایک گھوڑا دیکھا جس کے دس کان ہیں یا وَں اور یا نچ دم تھے۔ میں اس پر سوار ہو گیا وغیرہ وغیرہ۔

ابوالعلاءمصرع عظیم شاعر گزرے ہیں متقدمین میں علم ادب کے امام ہیں۔ مادرز ادا تدھے تھے۔ کہتے ہیں کہوہ طحد بھی تھااورآخرت کامنکر تھا۔اپنی بیوی کومخاطب کرکےوہ کہتے ہیں۔

## حياة ثم موت ثم بعث حديث خرافة يا ام عمرو

(۱) فرمات ين يالائمي في الهوى العذرى معذرة منيّ اليك ولوانصفت لم تلم ترجمہ: ای عذری مجت میں مجھے ملامت کرنے والے میری طرف سے تجھے عذر پیش ہے اور اگرتو انصاف کرتا تو مجھے ملامت نەكرتاپ

تھیدہ پردہ کے شارعین نے ککھاہے کہ اُصمعیؓ اس قبیلہ کے ہارے میں جانتے تھے۔اس کی روایت کے ہارے میں عذرہ کا ا یک عاشق اس وقت مرگیا جب اس نے محبوبہ کے قافلے کی گرددیکھی مولا ناافتخار علی دیو بندی عطرالوردہ میں لکھتے ہیں کہ بنوعذرہ کی عمر س فرط عشق کی بناء پرتمیں سال سے تجاوز نہیں کرتیں اور جب ایک عذری سے اس بارے میں دریافت کیا گیا توه كينے لگا في قلوبنا دقة و في نساء ناجمال و عفة ترجم: جمارے دلوں ميں رقة اور عورتوں ميں خوبصورتی اور یا کدامنی ہے۔ (اصلاح الدین) لیخی کیا زندگی اس کے بعد موت اور پھر دوبارہ زندہ ہوناحق ہے۔اےام عمر ویہ تو خرافہ والی بات ہے لیعنی سے بعد میں خرافہ کے نام سے شتق افعال بھی استعال ہونے ہے لیعنی بے سرویا اور غیر متوزان کی بات ہے۔ بعد میں خرافہ کے نام سے شتق افعال بھی استعال ہونے گے اور اسی وجہ سے اس مادے میں دما فی عدم تو ازن کامفہوم پایا جاتا ہے کہتے ہیں کہ خَوِ فَ المو جُلُ جب وہ التی سیدھی اور بے سرویا باتیں کرنے لگے (۱)۔

اس کے بعد حدیث ام زرع کابیان ہے۔

حدیث ام زرع: بیحدیث اس باب کی دوسری حدیث بادراس می بھی رات کوقصه گوئی کا ذکر برگر اس حدیث کومتنقل عنوان دیا گیا ہے کیونکہ اس میں گیارہ عورتوں کا اپنے شوہروں کے بارے میں بیان ہے خوب فصيح وبلغ انداز سے وہ شو ہروں کے ساتھ انداز معاشرت کا اظہار کرتی ہیں اور خصوصا آخری عورت ام زرع کا بیان نہایت اہم ہے اس حدیث پر متعقل کتابیں بھی ککھی گئی ہیں اور شارحین نے اینے اپنے وق کے مطابق اسکی تشریحات کی ہیں عربی ادب اور لغت کے اعتبار سے اسمیس بہت اہم مواد موجود ہے۔ گیارہ عورتوں میں ہے آخری عورت ام زرع کا بیان چونکہ نہایت مفصل اور جامع مانع ہے پھر نبی کریم آلیافیہ نے بھی حضرت عائشہرضی اللہ عنہ کی تشبیہ ام زرع سے دی تھی ۔ پینی ابوزرع کے ہاں ام زرع کا جومقام تھا اور جوحیثیت تھی اس طرح کی محبت آ ہے ﷺ کوحضرت عا ئشدرضی اللہ سے تھی تو اس خصوصیت اورا ہتمام کی (۱) شخ عبدالجوا دالدوی بے حدیث مبارک سے عشاء کے بعداینے اہل وعیال سے اچھی اور دلجوئی کی ہاتیں کرنے اور دل لگى كرنے كے جواز كااستدلال كرتے ہوئے كھا ہوية خد من الحديث حسن معاشر الرجل الاهله وسموة معهم واخباره لهم بالخفيف من الاموروقصته عليهم القصص المفيدة اقتداء به مَلْكِلْهُ فإنّ التشبه باهل الفلاح فلاح (الاتحافات ٩٩ ٢ ، ٩٩ ٢ ) البته جن روايات مسعثاء ك بعدقصه وكي اور كفتكو يمنع وارد ب\_اس سے مراد بیوده کلام بے علام نیجوری نے لکھا ہوالنهی الوار دعن الکلام بعد العشاء محمول علی مالا يعنى عن الكلام بعدالعشاء ولذالك قال في المنهج وكره نوم قبلها وحديث بعدهالافي خیبہ (المب واهب اللدنیة ۲۲۱) اورعلامہ ملاعلی قاریؓ نے دونوں متعارض روایات کے مابین تطبیق کرتے ہوئے لکھا ب-فالنهى الوارد مجمول على كلام الدنيا مالايعنى في العبقي والحكمة ان يكون خاتمة فعله وقوله بالحسني ومكفرة لما وقع له فيما مضى (جمع الوسائل ٥٨/٢) (مختار) وجہ سے اس کے نام سے اس حدیث کو معنون کر دیا گیا ورنہ یہاں تو گیارہ عور تیں ہیں سب نے شوہروں کا بیان کیا ہے۔

قطعی طور پر ان عورتوں کے نام معلوم نہیں ہوسکے اگر چہ بعض موزمین نے ان کے ناموں اور شجروں پر بحث کی ہے کہ بیعورت فلاں قبیلے کی فلاں خاتون تھیں۔خطیب بغدادی تو ان کے اساء کا مسئلہ متحمات میں سے شار کرتے ہیں جنہوں نے آٹھ عورتوں کے ناموں کی تعین کی ہے ام زرع کا نام عا تکہ بتایا ہے عرب صحرائی اور خانہ بدوش زندگی گزار نے کے عادی تھے بیعورت بھی ایک دیہاتی عورت تھی جس کا تعلق کمہ بمن یا جمار کے دیہاتی علاقوں سے تھا۔ مزید تفصیل آگے آر ہی ہے۔

(۲) حدّثنا على بن حجر قال أنا عيسى بن يونس عن هشام ابن عروة عن أخيه عبدالله بن عروة عن عروة عن عائشة قالت جلست احدى عشروة المرلة فتعا هدن و تعاقدن ان لا يكتمن من أخبارا زواجهن شيئا (۱) فقالت الاولى زوجى لحم جمل غث على راس جبل وعر لا سهلٍ فيرتقى ولاسمين فينتقى (۲) قالت الثانية زوجى لا ابت خبره إنى أخاف ان لا اذره ان اذكره اذكر عجره وبجره (۳) قالت الثالثة زوجى العشنق ان انطق أطلق فان اسكت اعلق (۳) قالت الرابعة زوجى العشنق ان دخل فهدوان خرج اسد ولاسامة (۵) قالت الخامسة زوجى ان دخل فهدوان خرج اسد ولايسال عمّا عهد (۲) قالت السادسة زوجى ان اكل لفّ وان شرب اشتف وان اضطجع التف و لايولج الكفّ ليعلم البث (۷) قالت السابعة زوجى عيا ياء اوغيايا طباقاء كل داء له داء شجّك او فلّک اوجمع كلالک (۸) قالت الناسعة زوجى المش مسّ ارنب و الريح زرنب (۹) قالت التاسعة زوجى رفيع العماد عظيم الرّماد طويل

النَّجاد قريب البيت من النَّاد (١٠) قالت العاشر ة زوجي مالك وما مالک مالک خیر من ذلک له ابل کثیر ات المبارک قلیلات المسارح اذا سمعن صوت المزهر ايقنَّ إنَّهنَّ هو الك (١١)قالت الحاديةعشرة زوجي أبوزرع و ما أبو زرع اناس من حلتي اذني وملائمن شحم عضديّ وبحجني فبجحت إليّ نفسي وجدني في اهل غنيمة بشق فجعلني في اهل صهيل واطيط ودآئس ومنق فعنده اقول فلا اقبّح وارقد فاتصبّح واشرب فاتقمّح امّ أبي زرع فما امّ أبي زرع عكومها رداح وبيتها فساح ابن أبي زرع فما ابن أبي زرع مضجعه كمسل شطبة و تشبعه ذراع الجفرة بنت أبي زرع فما بنت أبي زرع طوع ابيها وطوع امّها وملاكسائها و غيظ جارتها جارية أبي زرع فما جارية أبي زرع لاتبتّ حديثنا تبثيثا ولاتنقث ميرتنا تنقيثا ولا تملاً بيتنا تغشيشا قالت خرج أبوزرع والاوطاب تمغض فلقي امراة معها ولدان لها كالفهدين يلعبان من تحت خصرهابرمّانتين فطلّقني فنكحا فنكحت بعده رجلا سريّاركب شريّا واخذ خطّيّا واراح علّى نعما ثريّا واعطاني من كلّ رائحة زوجا وقال كلى امّ زرع و ميرى اهلک فلو جمعت کل شئی اعطانیه مابلغ اصغرانیة أبی زرع قالت عائشة فقال لى رسول الله عَلَيْكُ كنت لك كأبى زرع الام زرع (١). ترجمه: حضرت عائشه رضي الله عنها كهتي بين كه گياره عورتين المصي بيشه كئين اوراييخ درمیان اس معاہدہ اورعہد برا تفاق کرلیا کہوہ اسینے خاوندوں کے حالات میں سے كچھ بھی نہيں چھيا ئىں گی (بلکہ ٹھيک ٹھيک بيان کريں گی) حضرت عا ئشەر ضي الله عنه

(۱)صحیح بخاری۷۶/۷۷ کتاب النکاح باب حسن المعاشره مع الاهل، السنن الکبری للنسائی ۲۵۳/۷ کتاب عشرة النساء ابواب حقوق الزوج باب شکرالمرأة لزوجها(مختار)

کہتی ہیں کہ تب (پہلی عورت بولی) کہ میرا خاوند کمزور ناکارہ اونٹ کے گوشت جیسا ہے(اوروہ بھی) پہاڑ کی چوٹی پر رکھا ہونہاس پہاڑ کا راستہ ہمواراورآ سان ہے تا کہ اس مرج حركر وشت سے مستفید ہوسكیں اور نہ كوشت چرنی والا ہے تا كه (رغبت كی وجه سے )اسے کھانے کیلئے جناجائے (یا بہاڑ کی چوٹی سے اتار کر کھایا جائے )۔ (دوسری کینے لگی ) کہ میں اپنے خاوند کی خبر یں فاش نہیں کرتی میں ڈرتی ہوں کہ میں اسے (خاوند ما اس کی بات کو)نہ چھوڑ سکوں گی۔ اگر میں اس کا ذکر کروں گی تو اس کے ظاہری اور باطن عیوب سب تچھ ہی ذکر کروں گی۔ (تیسری بولی) میرا خاوندلسا تژنگا آدمی ہے اگر میں بولتی ہوں تو مجھے طلاق دی جاتی ہے۔ اوراگر کیپ رہتی ہوں تو (ضروریات زندگی سےمحروم رہ کرگویا)معلق رہتی ہوں۔ (چوتھی بولی) میراخاوند تهامه کی دات کی طرح معتدل مزاج ہے نداس میں گرمی زیادہ ہے نہ مختذک۔ نداس سے خوف لاحق ہوتا ہے نہ دل اچاہ ہوتا ہے۔ (یانچویں بولی) میرا خاوند جب گھر میں داخل ہوتا ہےتو چیتا بن جاتا ہےاور جب باہر جاتا ہےتو شیر بن جاتا ہے۔اور ( گھر میں )جوکام اس سے متعلق ہوتا ہے اس کانہیں یو چھتا اگر سوتا ہے تو ( کیڑے یالحاف میں )سٹ کرسوجاتا ہے اور (میری طرف) ہاتھ بھی نہیں بڑھاتا تا کہا سے میری کچھ براگندگی معلوم ہوسکے۔ (چھٹی بولی) کہ میرا خاوند اگر کھاتا ہے توسب نمٹادیتا ہے۔اور جب پیتا ہے تو سب چڑھادیتا ہے۔اور جب سوتا ہے تو اسلے ہی کیڑے میں لیٹ جاتا ہے۔میری طرف ہاتھ بھی نہیں بڑھاتا۔ جے میری براگندگی معلوم ہوسکے۔ساتویں بولی کدمیراشو ہرست ودر ماندہ یا نامرد ہے یا بوں کہا کہ احتی وگراہ ہے بھاری بحرکم (یاانتہائی سردمہر)ہے ہر بیاری اس میں موجود ہے (جب مارنے برآئے) تو تیرا سر پھوڑ دے یا بڈیاں توڑ دے یا دونوں کام کرڈالے۔ (آتھویں بولی) میرا خاوند چھونے میں خرگوش کی طرح نرم اندام ہے اور اس کی

خوشبو(خوشبودار بوٹی) زرنب جیسی ہے۔(نویں بولی) میرا خاوند(حسب وشرافت میں ) بلندستونوں والا (سردار) ہے بہت زیادہ راکھ کا مالک (سخی) ہے (تکوار کی) لمبی کاٹھی والا ہے۔ اس کا مکان مجلس (قومی جائے مشاورت) کے قریب ہے۔ (دسویں بولی) میراخاوند مالک (نامی شخص) ہے اور مالک کیا ہے؟ وہ اس (نوس عورت كيشوبرس ياندكوره تمام شوبرول سي ياميرى طرف سي آ مي بيان ہونے والی صفات ) سے بہتر ہے اس کے اونٹ ہیں جو اکثر مکان کے قریب بندے ہوئے اور کم بی ج اگاہ میں ج نے والے ہیں جب وہ اونٹ ساز کی آ واز سن لیتے ہیں تو ان کو یقین ہوجاتا ہے کہ وہ ذیح کئے جانے والے ہیں۔ (گیارویں بولی) میرا خاوند ابوزرع تھا ابوزرع کیاتھا؟ (ایک عظیم مخض تھا) اس نے زیوروں سے (بہنا کر)میرے دونوں کان جھادیئے تھے اور میرے دونوں بازوج بی سے بحردیئے تھے جھے اتنا خوش وخرم رکھا کہ میں خودکو پیند کرنے لگی۔اس نے جھے جفاکش بكريوں والے (غريب) خاندان ميں مايا جوئنگی كے دن رات بسر كرتا تھا پھروہ مجھے ایسے خوشحال خاندان میں لے آیا جہاں بنہناتے گھوڑے، بلبلاتے اونٹ، فصل کو گاہنے والے بیل اور اسے صاف کرنے والے نوکر جاکر ( بکثرت ) تھے (ان کی ناز برداری کی وجہ سے ) میں ان کے ہاں جو بھی کہتی جھے کوئی برانہیں کہتا تھا۔ میں سوتی تو دن چڑھے تک سوتی رہتی تھی ، پیتی تو خوب سیر ہونے کے بعد بھی بتکلف پیتی تھی۔ (میری ساس)ابوزرع کی ماں بھلاوہ کون تھی اس کے کھانے کے بڑے برتن ہمیشہ بھرے رہتے تھے۔اس کا گھرنہایت وسیع تھا۔ ابوزرع کا بیٹاوہ کون تھا (دبلا پتلا نو جوان ) کہاس کے سونے کی جگہ ہاریکے چھڑی کی طرح تھی بکری کے بجے کا ایک دست اس کے پیٹ بھرنے کے لئے کافی ہے۔ ابوزرع کی بٹی بھلاوہ کون تھی؟ وہ اینے باپ کی تابعدار اور اپنی ماں کی فرمانبردار تھی اور (موٹائی کے باعث) اینے کپڑوں کو بھرنے والی تھی (حسن و جمال اور کمال کی وجہ سے) اپنی سوکن کو غیظ و خضب میں جتلا کرنے والے تھی ۔ ابوزرع کی بائدی کیا تھا وہ جماری بائیں گھر کے باہر ظاہر خبیں کرتی تھی ۔ جمارے گھر کو (چھلخوری خبیں کرتی تھی۔ جمارے گھر کو (چھلخوری کرکے یا گندگی پھیلاکر) کھوٹ سے نہیں بھرتی تھی۔

ام زرع بولی که (لطف کی الی حالت میں) ایک دن ابوزرع (صح سورے) جبکہ دودھ کے برتن بلوئے جارہ سے گھر سے نگلاتو ایک عورت سے ملا جس کے ساتھ چیتوں چینے (پھر تیلے) دو بچ تھے، دونوں بچ (لیٹی ہوئی) ہاں کے بہلو کے پنچ سے دوانارلڑھا کر آپس میں کھیل رہے تھے (یا اس کے انار جیسے پہلو کے پنچ سے دوانارلڑھا کر آپس میں کھیل رہے تھے (یا اس کے انار جیسے بہتا نوں سے کھیل رہے تھے) تو (اس عورت کودل دے کر) ابوزرع نے جھے طلاق دیدی اوراس عورت سے نکاح کرلیا (اس سے طلاق لے کر) میں نے اس کے بعد ایک سردار شخص سے نکاح کرلیا (اس سے طلاق لے کر) میں نے اس کے بعد حال (جنگہو) تھا۔ اس نے جھے بہت جانور دیکر مالا مال کردیا اور ہرشام کو گھر آنے حال (جنگہو) تھا۔ اس نے جھے بہت جانور دیکر مالا مال کردیا اور ہرشام کو گھر آنے دیا ہوئے (اجازت حال (اونٹ، بیل، جھٹر اور بکر یوں) سے ڈبل ڈبل مہیا کردیئے۔ جھے (اجازت دیے ہوئے) کہا کہ اے ام زرع خود بھی کھا وَاورا پنے میکو کو بھی کھلا وَ۔ گر پھر بھی اگر وہ میٹ کردوں تو بھی ابوزرع کے دہ میں جو اس شخص نے جھے دے دیں جمع کردوں تو بھی ابوزرع کے جھوٹے سے چھوٹے برتن کونہ بھر کیلئے تھا۔ تھے جھوٹے برتن کونہ بھر کیلئے تھا۔ تو جھے فرمایا کہ میں تیرے لئے ایسا بی موں جیسا کہ ابوزرع ام زرع کیلئے تھا۔

جلست احدیٰ عشر ۱ مرأة النع عورتوں کی عادت ہوتی ہے کہ وہ جب بھی موقع پاتی ہیں ایک تھیں ایک تھیں کے دومرے وفاوندوں کے قصے، ان کے عیوب یاان کے محاس بیان کرتی ہیں۔ تو بیعور تیں بھی ایس تھیں ۔
کہا کثر اسپے شوہروں سے تنگ تھیں۔

عورتوں کے جبتی خواہش کی پاسداری:

ان کے فاوند اپنے کسب معاش کیلئے یا جنگوں اور لوٹ مارکیلئے مہینوں غائب رہے۔ جیسے آج کل لوگ اکثر الوظہبی ، دئی ، قطر وغیرہ مما لک میں جا کر برسوں رہتے ہیں ادھر عورتیں بیچاریاں پر بیٹانی اور فراق کی زندگی بسر کرتی ہیں ۔ روزگار کی تلاش اور عرب کے پٹرول کے نزانوں کی وجہ سے آج بھی ہزاروں معاشرتی ، اخلاتی اور معاشی برائیاں پیدا ہوگئ ہیں ۔ خصوصاً مردوں کی غیر حاضری سے بیمسائل جنم لیتے ہیں۔ سلف صالحین نے اس مسئلہ کو ہزی سنجیدگی سے لیا ہے۔ ایک روز حضرت عمرضی اللہ عنہ ایک گھر کے قریب سے گزرے اندر سے عورت کی آواز سنی جو کچھ اشعار گارہی تھی جن کا مفہوم میرتھا کہ اگر خوا کا خوف نہ ہوتا میں بیچار پائی تو ڈویتی ۔ حضرت عمرضی اللہ عنہ بیت کا کرگئی میں کھڑے ۔ خاتون کی بات سے جیرت ہوئی۔ پہ چلا کہ بیا یک نو جوان عورت سے جس کا خاوند جہاد کو گیا ہے ۔ فطری طلب نے اسے بیاشعار کہنے پر مجبور کیا ہے ۔ آپ رضی اللہ عنہ کو بہت و کھ ہوا۔ سوچا کہ بید تو خطری مسئلہ ہے ۔ اس کے بعد تقیش کی کہ ایک عورت کتے دنوں تک خاوند کا فراق گوارا کرسکتی سوچا کہ بید تو خطری مسئلہ ہے ۔ اس کے بعد تقیش کی کہ ایک عورت کتے دنوں تک خاوند کا فراق گوارا کرسکتی ہو جو دنیس نہ مواکہ تین ماہ تک گزارہ کیا جاسکتا ہے۔ اس کے بعد آپ رضی اللہ عنہ نے اعلان فر مایا کہ تین ماہ میں ہر شادی شدہ مجام کوالز ما گھر جانا ہوگا ۔ انسانی حقوق کی اس انداز سے پاسداری جدید نظام میں ہر گزمور خیونیس نہ روس میں نہ امریکہ میں نہ کسی اور ملک میں ہے۔

(١) المواهب اللدنيه ص ١٨٦ وكذا ذكره النسائي مرفوعاً كما نقل عنه على القارى في الجمع ج٢ ص ٢٢ (اصلاح الدين)

بہرحال بیورتیں جو مکہ اور تجازی رہنے والی تھیں یا ایک قول کے مطابق یمن کے بنوشعم قبیلہ سے تعلق رکھتی تھیں جمع ہوئیں اور اس قتم کی پریشانیوں میں غم غلط کرنے کیلئے آپس میں طے کیا کہ آؤا پنے شوہروں کے بارے میں باتیں کریں۔لیکن پہلے آپس میں قتمیں کھا کیں کہ اپنے مردوں کے حالات نہیں جو بیان چھپا کیں گی ہرایک اپناراز ضرور ظاہر کریں گی۔خاوندوں کی اچھائی اور برائی میں سے جو بھی حقیقت ہو بیان کریں گی۔

بہلی عورت کا جامع تھر ہن و جمل عث النح پہلی عورت اپنے خاوند کا ذکر کرتی ہے۔ غت سخت کم ور چیز کو کہتے ہیں۔ غث اللّحم کا معنی ہے فسد اللحم یعنی گوشت ہوگیا۔ الشاہ کا معنی ہے خفت وضعفت یعنی کمز ور اورضعیف ہوگیا۔ البذاغت فی اسد، ردی اور بریکاریا نحیف اور لاغر کے معنی شل مستعمل ہوتا ہے۔ اس مقام پر اسے جرسے پڑھا جائے تو یہ جمل کی صفت ہوگا۔ یعنی ایسے اونٹ کا گوشت ہے جو کمز ور اور لاغر ہے۔ اسکو ملاعلی قاری نے روایت مشہورہ، اور علامہ پیجوری اور مناوی نے رائح قرار دیا ہے۔ کیونکہ اس طرح خت قریب ترین موصوف کیلئے صفت بن جائے گا اور اگر غث کو مرفوع پڑھا جائے تو گرا میں عن سمین کی ضدوا قع ہوا ہے۔ گئے می کی صفت ہوگا۔ اور فاسد اور ردی گوشت کا معنی دے گا۔ اصل میں غث سمین کی ضدوا قع ہوا ہے۔ صحیح اور غلط میں تمیز نہ کر نیوا لے کے بارے میں عرب کہتے ہیں ' فلائ لا یعرف المنحث من السمین ''

علی داس جبل وعو: وعو ضرب، مع اور کرم تیوں ابواب سے آتا ہے۔ سخت ہونے کے معنی پرمستعمل ہے۔ جبل وعر اس پہاڑ کو کہتے ہیں جو شخت ہو۔ اس پر بیٹھنا اور چڑھنا دشوار ہو۔ "علی داس جبل "اگر چہمل کی صفت بھی ہوسکتا ہے کی کے صفت ہونا بظاہر رائے معلوم ہوتا ہے۔ لاسمین سمن سمن سے صفت مشبہ ہے جس کا معنی ہے چی والا ہونا۔ معنی یہ ہے کہ گوشت چی فی والا بھی نہیں ہے۔

فیسنتھیٰ انتقاء کے معنی خالص اور صاف چیز چننا۔ جبکہ بعض شراح نے لکھا ہے کہ بیتی سے ہو ہدی کے درمیان گود سے اور مغز کو کہتے ہیں۔ پھر ترجمہ یوں ہوگا کہ اچھا گوشت نہیں ہے کہ اس کا گودا نکال کر کھایا جا سکے۔ اور بعض روایات میں فیسنقل مروی ہے۔ مطلب میہ ہے کہ چربی والانہیں کہ گھر استعال کیا جا سکے بلکہ بیکارہے۔

اس عورت نے مختصر، جامع اور قصیح اد بی الفاظ میں خاوند پر تبصرہ کیا ہے۔ وہ زمانہ ادب کے لحاظ سے عربوں کیلئے سر ماریا فتخارتھا۔ بعد کے دیگر تبصر سے بھی بلنداد بی مقام رکھتے ہیں۔

بی عورت دراصل فاوند کی فدمت کرتی ہے۔ فاوند کو اونٹ کے گوشت سے تشبید دی ہے اور کھائے
جانے والے جانوروں ہیں سب سے زیادہ ہے کاراور سخت گوشت اونٹ کا گوشت ہوتا ہے۔ نہ آسانی سے
پہتا ہے نہ لذت کے لحاظ سے مرغوب ہے مطلب بیہ ہے کہ میرا فاوند قابل محبت شخص نہیں۔ اور خصوصاً جب
اونٹ بھی کمزور اور ہے کارسا ہو۔ تو اس کا گوشت اور بھی ہے فائدہ ہوتا ہے۔ علاوہ اذیب اس میں اس بات
کی طرف بھی اشارہ ہے کہ میرا فاوند جنسی اعتبار سے بھی کمزور ہے۔ کیونکہ یہاں تشبیہ گوشت کے ساتھ دی
کی طرف بھی اشارہ ہے کہ میرا فاوند جنسی اعتبار سے بھی کمزور ہے۔ گویا وہ حقوق نروجیت کی اوائی میں بھی کام
ہے اور ذیجہ کے گوشت میں حیات نہیں ہوتا مردہ ہوتا ہے۔ گویا وہ حقوق نروجیت کی اوائی میں بھی کام
کانہیں۔ اس میں پھی بھی ذوق وشوق اور محبت وگری نہیں۔ رد تی بے خیر مردہ اور جامد سا ہے۔ اور اس پر
مشتر ادبیہ کہ وہ بھے سے دور رہتا ہے پھر بھی اچھا ہوتا اگر بھی ہاتھ آتا مگر ایسا بھی نہیں وہ تو گویا وشوار
گزار چڑھائی والے پہاڑ کے سرے پر ہے۔ ہاری رسائی وہاں نہیں ہوسکتی کیونکہ اس پر چڑھنے کا کوئی
طریقہ نہیں یاوہ متمر داور مشکر بھی ہوتا تو بحک کھن داس جبل '' تکبر اور سرشی کیا ہے بھی بطور کہنا یہ
استعال ہوتا ہے پھر اونٹ کا گوشت بھی آگر چر ہی والا ہوتا تو اس سے استخاب کیا جاسکتا تھا۔ اس کا بہتر حصہ
کام میں لایا جاسکتا تھایا آگر مکن ہوتا تو بحک کھن پہاڑ سے اتا رلیا جاتا مگر وہ اس کا بھی اہل نہیں بہت برکار
کام میں لایا جاسکتا تھایا آگر بھی نہیں ہوت نہیں ہے۔

ورسری عورت کا فو معنی کلام:

قالت الثانیه زوجی لاابت خبره النج، نصر کے باب سے بث
یبث کامعنی ہے اغشاء کر کے پھیلا نا اور شتشر کرنا اس کی ضد جمعیت اور اجتماع ہے، بخت یماری، بدحالی اور
غم کو بھی بیت کہتے ہیں۔ قرآن مجید میں حضرت یعقوب علیہ السلام کے قول کی حکایت ہے ''انہ ما اشکو
بشی و حُوز نسی الله '' یعنی میں اپنی بدحالی اور غم کی شکایت اللہ تعالی بی سے کرتا ہوں۔ معنی ہے کہ
میں اپنے خاور کی با تیں ظاہر نہیں کر سکتی حضور اقد سے گیائے کی دعا ہے السلے المیک الشکو ابندی
و حزنی النج۔

إنّى أخاف أن لا أذره النح وزريزرباب مع سر ك عمى من به حدور النسبى

والمسمكذ بين اور كلاّ لاو ذربھی اس سے ہے۔ معنی بیہ ہے کہ جھے ڈرہے کہ میں اسے نہیں چھوڑ سکوں گ۔
اذرہ کی ضمیر یا تو زوجہ کورا جع ہے۔ شراح کہتے ہیں کہ پھر لا زائدہ ہے اور معنی بیہ ہے کہ جھے ڈرہے کہ اسے چھوڑ دوں گی۔ یعنی اس کی باتیں بتانے کی صورت میں طلاق سے ڈرتی ہوں اور یا بیضمیر خبرزوج کورا چح ہے معنی بیہ معنی بیہ موگا کہ جھے ڈرہے کہ اس کی بات بتانے لگوں تو اسے چھوڑ نہیں سکوں گی۔ کیونکہ اس کے عیوب بہت ہیں اور بیان کرنے سے ختم نہ ہو سکیں گے۔۔

ان أذكرہ النج ضميرياتوزوج كوراجع ہے يا خبركو أذكر عجرہ و بجرہ عجر عجرة كى جمع ہے ۔ اور بہ جو بجو ہ كى جمع ہے ۔ انسانی جسم ميں اللہ تعالیٰ نے بجيب بيارياں اور نقائص بھی بيدا كی جمع ہے ۔ اور بہ جو بجو ہ كی جمع ہے ۔ انسانی جسم بھی عيوب سے پاک نہيں ۔ ان ميں سے بعض عيوب نظر بھی ہے داغ نہيں ۔ اس طرح انسانی جسم بھی عيوب سے پاک نہيں ۔ ان ميں سے بعض عيوب نظر بھی آتی ہيں ۔ مثلاً بعض لوگوں كے گردنوں يا گلوں ميں ورم ہوتا ہے گردن كے اس ظاہرى ورم كو بى دراصل بحرة ہو كہ جہتے ہيں ۔ ليكن بھی بالعموم جسم كے كسى بھی حصہ ميں گلئی يا ورم ہو ۔ اس پر بحرة ہ كا اطلاق ہوتا ہے ۔ حاصل بدكہ يہاں تمام جسمانی ظاہری عيوب بحر كے ذمرے ميں آئيں گی ۔ جبكہ بعض عيوب چھپے ہوئے ہوتے ہيں ۔ قبيل اللہ عنوارہ فيرہ سے مستورہوتے ہيں ۔ مثلاً بعض لوگوں كے ناف غلاطر بيقے ہے كے ہوئے ہوتے ہيں ۔ اورا يك گا نظرى می شكل اختيار كرتے ہيں ۔ جوتمام بحر بدنما دکھائی دیتے ہيں ۔ ناف، پیٹے ہوئے ہوتے ہيں ۔ اورا يك گا نظرى مقامات پر تخفی عيوب بجن ۔ اگر بيان كر نے لگوں تو وہی بيان كروں گی ۔ کرمير ے فاوند ميں ظاہرى اور تخفی عيوب ہيں ۔ اگر بيان كر نے لگوں تو وہی بيان كروں گی ۔

ا کشرشراح (۱) کے نزدیک بیٹورت بھی اپنے خاوندگی عیب جوئی کررہی ہے۔اس کی فدمت میں گویا کہتی ہے کہ میں تو اس کے عیوب شار نہیں کرسکتی بیان کرونگی تو ڈرہے کہ ختم ہونے کو نہ آئیں۔ بیر بڑی داستان اور نہ ختم ہونے والا موضوع ہے کیونکہ عیوب بہت زیادہ ہیں۔اس تقدیر پر'ان لا آخرہ'' میں لازا کدہ نہ ہوگا۔

(۱) بعض شراح نے اس عورت کے کلام کو مدح برحمل کرنے کیلئے یہ کہا ہے کہ بھر اور بجر سے عیوب مراد نہیں بلکہ بھر و بجر "الامرکلہ" کے معنی میں ہے اور عورت کا مطلب یہ ہے کہ میرے فاوند میں بے انتہا خوبیاں ہیں بیان کرنے کی صورت میں فتح ہونے کو نیآ کیں گیا۔ اس کے بیں اس کی بات نہیں کرتی ، لیکن شراح نے اس تاویل کو بعید کہا ہے (اصلاح الدین)

اوربعض کہتے ہیں کہ ان لا افر ہ میں حکمۃ لازائدہ ہے اور عورت یہ کہنا چاہتی ہے کہ میں مجبور ہوں خاوند کو چھوڑ نہیں سکتی۔اس لئے حالات بیان نہیں کرتی۔ میری تو اس سے عبت ہے یا جھے اس کی ضرورت ہے۔اگر چہوہ عافل اور معیوب ہے۔اولاد، نفقہ، سکنی یا دل کے تقاضوں کی وجہ سے میں اسے نہ چھوڑ سکنے پر مجبور ہوں اور اگراسے پہ چلا کہ میں نے اس کے نقائص بیان کئے ہیں تو وہ مجھے طلاق دے دیگا۔لیکن اس تشری پر بیشبہ کیا جاسکتا ہے کہ اس عورت نے تو عہد اور تم کی مخالفت کی تو اس کا جواب بیہ ہے کہ اس عورت نے تو عہد اور تم کی مخالفت کی تو اس کے ہاں تو اس کا دورج مجسمہ عیوب اور سرایا نقائص ہے۔ بقول اس کے اگر گنتی کی جائے تو بات طویل ہوجائے گی۔لہذا نفری کے مقابلے میں ایمال و کنامہ کا سہارالیا۔

تیسری عورت کی رائے: قالت الشالفة زوجی العشنق النع عشن دبلے پتلے اور لمبرز کے شخص کو کہتے ہیں۔ جو دبلا ہونے کی وجہ سے برصورت دکھائی دیتا ہے۔ اسے اردو میں لم ڈھینگ بھی کہا جاتا ہے۔ اور اس طول کے ساتھ عموماً حماقت بھی ہوتی ہے۔ جبکہ بعض شراح کہتے ہیں کہ عشنق بدا خلاق آدی کو کہتے ہیں۔ جوعموماً بیوتوفی کی بناء پر ہوتی ہے۔ اور اس کا بیان بعد میں کر ہی ہے۔

ان أنسط ق اطلق لینی اگر بولول آه و فریاد کرول تو طلاق دیتا ہے اور اگر چپر ہول تو معلق ره جاتی ہوں۔ رزق، نان و نفقہ اور کپڑ اوغیره ضروریات جاتی ہوں۔ رزق، نان و نفقہ اور کپڑ اوغیره ضروریات زندگی کیلئے ترسی ہوں تو گویا بظاہر خاوند ہوتے ہوئے بھی میرا سہارا نہیں ہوتا نہ اس کی بیوی جیسی ہو۔ دوسرے کسی سے نکاح ممکن ہوتا ہے۔ قرآن میں ہے ' فضا درو ھا کالمعلقة ''اس مورت نے بھی خاوند کی تنقیص کی ہے گویا وہ ایک اچھا خاوند نہیں ہے۔ حماقت کے ساتھ ساتھ بیوی کے حقوق واجبہ بھی ادا نہیں کرتا۔

چوتی عورت: قالت الوابعة كليل تهامة النج تهامه جاز كا غاص علاقد بهس مل مكه مى واقع بها مد جار كا غاص علاقد به س مل مكه مى واقع بها مه النج بين المرسمندر ك قريب واقع بها من من كريم الله كا من كريم الله كا كوتها مى كم كم ته بين بين بين المرسمندر ك قريب واقع بها من كا رات بوى خوشگوار بوتى بها معتدل بواجلتى بها مجمر وغيره موذى چيزين

بھی نہیں ہوتیں مکمل سکون اور راحت ہوتی ہے۔

لاحرة و لاقر النح حركر مى اورقر فق قاف كساته مطندك اور مردى كوكت بي بيل كابيان معتدل رات كى طرح بجس بيل كرى بوند مردى اور ياييزوج كى توصيف باورح سع شدت اورقر سطبى برودت اور بيوى بيل برغبتى مراد بوي قويي كرا فاوند برلحاظ سے لينديده فاطر مزاح كاما لك بـ

و لاست مقد باب مع سے سم سآمة ولى تكل اورول اچٹ جانے كو كہتے ہيں۔ بي مورت خاو عمر كا تحريف كرتے ہيں۔ بي مورت خاو عمر كا تحريف كرتى ہے كہ ميرا خاو عد حسين مزاح مقبول السيرة اور معتدل طبيعت كا مالك ہے۔ اس كى صحبت سے كسى كو ملال نہيں ہوتا۔ خوش اخلاقى كى وجہ سے اس كى رفاقت اذبت سے پاك ہوتى ہے۔

پانچویں کی معنی خیز باتیں: قالت المحامسة زوجی ان دخل فهد فهد الموسم کے وزن پر ضل کا صیغہ ہے کہتے ہیں کہ فہدالرجل ای صار کالفہدیعنی آ دمی چیتے جیسا بنا۔ اور یہ بھی ممکن ہے کہ فعل کی بجائے یہ اسم ہو۔ اور مبتدا مخدوف کی خبر ہو۔ ترکیب یوں ہوگی زوجی ان دخل فہوفہد یعنی وہ گھر آتا ہے توشیر ہوتا ہے۔ چیتا ست تکامل اور بہت زیادہ سونے والا جانور ہے لیکن حملے کے دوران اس کی تیز رفتاری اور پھرتی بھی ضرب المثل ہے۔ نیز یدر ندوں میں سرکش بھی زیادہ ہے۔

اس عورت کے کلام میں تین جملے ہیں اور نینوں ذوالوجین ہیں۔ ان میں مدح کا پہلو بھی ہے۔ اور مذمت کا پہلو بھی۔ زینظر جملے کوا گر مدح کے پہلو سے لیا جائے۔ توبیع ورت اپنے شوہر کی گر مجوثی اور جماع کے وقت پھرتی کو بیان کرتی ہے۔ کہ ایسی حالت میں وہ چیتا بن جاتا ہے۔ اس طرح گھر میں کی بیشی آجائے ان سے بھی تفافل اور تسامح برتنا ہے۔ جیسے چیتا عموماً پنی جگہ میں سویا ہوا ہوتا ہے۔ اس طرح وہ بھی گھر کے اندر سویا رہتا ہے۔ ایسانہیں کہ منکے منکے کا حساب کیکر گھر والوں کا ناک میں دم کر رکھا ہو۔

اوراگر فدمت کا پہلولیں تو مطلب یہ ہوگا کہ میرے شوہر میں ہیمیت کا اتنا غلبہ ہے کہ گھر آ کر چیتے جیسا حملہ آور ہوجا تا ہے۔ کسی تحقیق و تفتیش کے بغیر مجھے پٹنے لگتا ہے۔ اورا گرحقوق زوجیت کی ادائیگی کا وقت ہوتو پھر چیتے کی طرح کمبی تان کرسوجا تا ہے۔ گھر والول سے تعلق اور محبت میں کوئی گرمی نہیں ہے ندان کے نان ونفقہ کی فکر ہوتی ہے بس سویا پڑار ہتا ہے۔

وان خوج اسد اسد میں بھی فہدی طرح دواخمال ہیں۔ایک بیر کفعل ہو بمعنیٰ صار کالاسد اور دوسرایہ کہاسم ہو۔ مبتدا محذوف کی فہر ہو۔ یعنی فہواسد۔ معنی یہ کہ گھر کے باہر شیر بن جاتا ہے۔اس جملے کے مراد میں بھی دواخمال ہیں۔اول یہ کہ مدح پر محمول ہوتو معنی ہوگا کہ گھر میں شرافت اور چہم پوشی کے باوجود باہر جاکر شیر کی طرح جرائت و شجاعت کی دادحاصل کرتا رہتا ہے۔ کسی کے سامنے نہیں جھکتا۔ شیر کی طرح گھر کے باہر بی بہادری کا مظاہرہ کرتا ہے۔اوراگر مذمت کی جہت لیں تو مطلب بیہ ہوگا کہ وہ گھر میں طرح گھر کے باہر بی بہادری کا مظاہرہ کرتا ہے۔اوراگر مذمت کی جہت لیں تو مطلب بیہ ہوگا کہ وہ گھر میں چینے جیسا ست اور باہر شیر کی طرح بہادر بن جاتا ہے۔لوگوں کے ساتھ غضب اور تجتر سے پیش آتا ہے اور حماقت کی بناء برانجام کی برواہ نہیں کرتا۔

و لایسال عما عہد عہد یہد سمع کے باب سے علم کے معنی میں آتا ہے یعنی جس امر کااس کوعلم ہو۔ اس کے بارے میں کسی سے دریا فت نہیں کرتا۔ اس جملے میں بھی دو جہت ہیں۔ مدح کی جہت لیس تو مطلب یہ ہوگا کہ میرا شوہر وسیع الظر ف اور کریم ہے۔ گھر میں اخراجات زیادہ ہوں۔ یا کوئی نقصان ہوگیا ہواست پتہ چلتو بھی احتساب اور نکتہ چینی سے کام نہیں لیتا۔ گویا گھر کے داخلی امور میں وزیر داخلہ یعنی ہوی کو اختیارات سپر دکی ہیں۔

ندمت کا پہلولیں تو اس کا مطلب یہ ہوگا کہ میراشو ہرخانگی امور میں باوجودعلم کے بے حسی کا مظاہرہ کرتا ہے بینہیں بوچھتا کہ گھر والوں پر کیا گزرر ہی ہے کسی چیز کی ضرورت تونہیں؟ بلکہ تغافل و تکاسل کی عادت ہے۔

چھٹی کی ادیبانہ باتیں: تیوں جملوں میں مدح اور ندمت دونوں پہلوؤں کے باوجود بعض شراح نے مدح کے پہلوکورجے دی ہے اور اسے اقرب کہاہے۔

قالت السادسة زوجى ان اكل لف لِف يلف لف الف المقارباب سمع سينخاور ليبينخ كوكت بي المقافة بحى الى المقافة بحى الله المقافة بحى الى المقافة بحى الله المقافة بحى الله المقافة بحى الله المقافة بحى المقافة بحى المقافة بحى المقافة بين المقافة بين المقافة بين كما تحد المقافة بين كما تحد المقافة بين المقافة بين المقافة بين المقافة بين كما تحد المقافة بين كما تحد المقافة بين المقافة بين المقافة بين كما تحد المقافة بين المقا

اس کامعنی ہے ' نسوب الشفافة ''شفافه اس تعور سے پانی کو کہتے ہیں جو پینے کے بعد برتن میں رہ جاتا ہے تو گویا مطلب سے کہ پانی وغیرہ آخری قطرے تک پی جاتا ہے۔ برتن میں پھر ہے کہ پانی وغیرہ آخری قطرے تک پی جاتا ہے۔ برتن میں پھر ہے کہ پانی وغیرہ آخری قطرے تک باد جود سے نہیں ہوتا مزید نقاضا بھی کرتا ہے۔ سین کے ساتھ ہوتو معنی یہ ہوگا کہ بہت زیادہ بی لینے کے باد جود سے نہیں ہوتا مزید نقاضا بھی کرتا ہے۔

وان اضطجع التف الخ التف لف يلف سے اقتعال کا صیغہ ہے جوسمٹ جانے اور جمع ہونے کے معنی میں سنتعمل ہے۔

و لا یولج الکف میولج و لوج سے باب افعال کے مضارع کا صیغہ ہے۔ داخل کرنے کے معنی میں ہے۔ اور کف کامعنی ہے منع کرنا۔ اور ہاتھ چونکہ دوسری چیزوں کے منع کرنے اور دوسری اشیاء سے حفاظت کرنے میں استعال ہوتا ہے۔ اس لئے اس کو بھی کف کہتے ہیں۔

لیعلم البث بث پراگندہ حالی اور پریشانی کو کہتے ہیں نیز بیاری پر بھی اس کا اطلاق ہوتا ہے۔

قال اللّٰہ تعالیٰ ''انّما اشکو بشی و حزنی إلیٰ اللّٰه '' جیسا کہ پہلے گزر چکا ہے۔ بی ورت عام شراح کے بزد کیٹ وہر کی فدمت بیان کرتی ہے لیکن بعض کے ہاں اس کے بیان میں تعریف کا پہلو بھی لکلتا ہے۔

اول الذکر صورت میں اس مورت کے مطابق اس کا خاوند پیٹے ہے۔ دسترخوان پر جو پچھ ملے اس کھا جا تا ہے بچوں اور بیوی کیلئے پچھٹیں چھوڑتا۔ اور اگر پیتا ہے قو ہر برتن کو خالی کر کے بچھوڑتا۔ اور سوتے وقت کی جاتا ہے خواہ وہ شراب ہو، خواہ وہ دودھ ہو، کی ہو یا کوئی اور پینے کی چیز پچھٹیں چھوڑتا۔ اور سوتے وقت سمٹا کر سوجاتا ہے کہ کام کا نہیں۔ بیوی کاحق اوا نہیں کرتا۔ اس کی طرف ہا تھ بھی نہیں بڑھا تا تا کہ اس کی بیا چینی ، پریشانی ، برحالی اور تشکی کا اسے پہتے چل سکے۔ اس کی بے چینی اور حجب و بیار کی طلب کا اسے احساس نہیں ہوتا نہ اس کی بیادہ ہوا۔ اور دوسری تو جید بیہ ہے کہ میرا خاوند نہا ہے تئی مالدار اور ہا وقار آدی ہے۔ ساتھ مطابق سے نہ اور موجب کے میرا خاوند نہا ہے تئی مالدار اور ہا وقار آدی ہے۔ ساتھ عظیم اخلاق کا مالک ہے۔گھر کی چھوٹی موٹی ہا توں میں نیز بیوی بچوں کے معاملات سے اتعلق رہنے ساتھ عظیم اخلاق کا مالک ہے۔گھر کی چھوٹی موٹی ہا توں میں نیز بیوی بچوں کے معاملات سے اتعلق رہنے می کوشش کرتا ہے۔گھانے کا معاملہ ہوتو ایک شم کے کھانے پر اکتفاء نیس کرتا۔ بلکہ مختلف انواع کے کھانے دستر خوان پر بینے جاتے ہیں۔ اور وہ کھائی کرخوب سر ہوجاتا ہے۔افلاس ذوہ آدی کی طرح بجت کا عادی

نہیں۔ اور سوتا ہے تو ہے قکری کی نیند میں سے کر سوجاتا ہے کسی بات کاغم نہیں ہوتا۔ دشمنوں کا خوف نہیں ہوتا کوئی پریشانی اسے نہیں ستاتی۔ ساتھ ساتھ یہ کہ خامیوں کی تفیش نہیں کرتا تا کہ پریشانی کی کوئی بات معلوم کر لے۔ نکتہ چین اور شکی مزاج شخص ہر وقت گھر میں جھڑتا رہتا ہے۔ آنے جانے والوں کے بارے میں پوچھتا ہے۔ خرچ واخرا جات کا حساب لیتا ہے۔ اس طرح وہ گھر کے اندر بہت می کمزوریاں پاکر خواہ مخواہ خواہ مخواہ پریشان رہتا ہے۔ اس کے برعس میشخص اپنی ہیوی کے بیان کے مطابق اس طرح کا وہمی مزاج نہیں بلکہ ہیوی پراعتاد ہونے کے سبب بات بات بنہیں بگڑتا۔ نہ تھیق وقفیش اس کی عادت ہے مگر عام شراح نے فرمت کی جہت کو ترجے دی ہے۔

ساتو بي عورت كى دونوك با تيل: قالت السابعة زوجى عيايا ۽ اوقال غياياء عياياءعى ساتو بي عورت كى دونوك باب سے تكاوٹ كے معنى ميں ستمل ہے۔ قرآن مجيد ميں ہو لم سعم بالغد كاصيغہ ہے۔ بيمادہ معنى باب سے تكاوٹ كے معنى ميں سنتمل ہے۔ قرآن مجيد ميں بہت يعيى بخلقهن لين الله تعالى آسانوں كو پيدا كرنے سے تكانبيں ۔ البنداعيا ياءوہ خض ہوگا جس ميں بہت زيادہ در ماندگی اور ستی ہے۔ بعض شراح نے اس كاتر جمہ عنين يعنى نامرد سے كيا ہے كيونكہ عياياء اصل ميں اس اونٹ كو كہتے ہيں جو كہ اونئى كے ساتھ جفتی برقادر نہ ہو۔

جبکہ غیایاء فی اور غوایہ سے ہے۔ جو کہ گراہی، صلالت اور جہل کے معنی میں مستعمل ہے۔ اس لئے غیایاء وہ گراہ اور جابل ہوگا جو ہر جگہ نا مراد ہے۔ یا پیکلہ غیلیہ سے ہے جس کا معنی اندھیرا ہے لینی وہ اندھیر سے غیایاء وہ گراہ اور جابل ہوگا جو ہر جگہ نا مراد ہے۔ یا پیکلہ غیلیہ سے ہور جس مقصد کی طرف بڑھے نا کامی کا مند دیکھے۔ طباقاء ایک چیز کو دوسری چیز پر رکھنے کو طبق کہتے ہیں۔ اسی سے تطبیق مطابقة اور انطباق ہے تو طباقاء اس شخص کو کہا جاتا ہے جو نہایت سر دھ ہر ہو۔ چستی نام کی ند ہو جہاں بیٹھے گویا اس جگہ سے چیک گیا ہو بعض شراح کے مطابق طباقاء کامنی ہے 'المسندی یہ طبق علیہ الامور '' یعنی وہ شخص جس پرامور معاملات میں ابہام آئے کوئی مشکل نہ سمجھا سے۔ بعض شراح نے طباقاء اس شخص کو کہا ہے جو بھاری ہونے کی وجہ سے جماع کے وقت بیوی سے چیک جائے اور اس پر بوجھ بن جائے ۔ بعض نے کھھا ہے کہ جمل طباق اس اونٹ کو کہتے ہیں جو جفتی پر قادر نہ ہو۔ بعض نے کھھا ہے کہ جمل طباق اس اونٹ کو کہتے ہیں جو جفتی پر قادر نہ ہو۔ بعض نے کھا ہے کہ جاتا ہوں۔ کھھا ہے کہ طباق اس کے مونٹ آپس میں چیک گئے ہیں۔

کل داء له داء بر بیاری اس کی بیاری ہے یعنی متعدد بیاری کامریش ہے۔ شہر کب المخ هج زخم اورخصوصاً چبر ہے اور سر کے زخم کو کہتے ہیں اور فَ لَگ فُلول سے ہے جو کہ گند کرنے کو کہتے ہیں آلموار، چھری اور چاتو وغیرہ کی دھارٹو شئے کوفلول کہتے ہیں اور انسان کی نسبت اس کامعنی ہے ہوگا کہ وہ ہڈی یا کوئی عضوتو ڑدیتا ہے۔

جمع کلا لک لین کلا من الشج و الفلّ. یی عورت بھی خاوندکی جر پور فدمت کرتی ہے جس کا حاصل یہ ہوا کہ میراخاوند ہر وقت تھکا ما ندہ عنین ست اور کابل ہوتا ہے یا بہت جابل اور گراہ ہے۔ اچھے برے کی تمیز نہیں کرتا اس پرمتزادیہ کہ طبا قاء ہے جہال کہیں پڑار ہا تو الحصنے اور سرکنے کا نام نہیں لیتا۔ گویا جسمانی لحاظ سے بھاری بھر کم اور غیر مناسب ہے۔ یا معنی یہ کہ امتی ہے ہرتم کے معاملات اس پر پیچیدہ اور الجھے رہتے ہیں۔ معمولی مسئلہ کاسلجھانا بھی اس کے لئے مشکل اور نا قائل حل ہوتا ہے۔ نیز طبا قاء کا یہ معنی بھی محمل ہے کہ از دوائی تعلق کے وقت ہوی پر بھاری بھر کم ہونے کی وجہ سے بو جھ بنتا ہے۔ جسمانی طور پر بھاری بور اور امراض وعلل کا مجممہ ہے بدخلق اتنا کہ اگر بات کروتو سر پھوڑ دے یا ہڈیاں تو ڑ دے۔ یا دونوں تکلیف پہنچادے۔

آت الشامنة الم ورت كانام ناشره بنت اوس بتاياجا تا ب زوجى السمس مس ادنب مس اور اس دونول كاليكم عنى بها تحد لكانام ناشره بنت اوس ادر نب خرگوش كو كته بيس السمس مس ادنب مس اور ارتب خرگوش كو كته بيس جو كربهت نازك و طلائم جانور ب يهال تقدير عبارت يول بوگن له مس كمس ادنب " يا " و مسه كمس ادنب "اس صورت بيس المس كاالف لام مضاف اليه يوض به اور اداة التشبيه مخذ وف بون كي بناير تشبيه بلغ ب -

والریح ریح زرنب یعنی "له ریح کریح زرنب "یا" وریحه کریح زرنب " زرنب بهت خوشبودار بوئی ہاس سے مهک اضحی ہے۔اور بعض کے نزد یک اس سے زعفران مراد ہے یہ عورت اپنے خاوند کی مدح کرتی ہے۔ اس کا مطلب یہ ہوا کہ ظاہری اور معنوی لحاظ سے اللہ تعالی نے میرے خاوند کی بہت اچھے صفات سے نواز اہے۔ حسن و جمال اور ملائمت میں گویا وہ خرگوش ہے۔ یعنی خوش اندام اورنازک بدن ہے جبکہ اس کا کلام ، وضع قطع اور اخلاق زرنب کی مہک جیسی ہیں۔ اور اس کے ساتھ ساتھ ماتھ معاقب معرف معرف ہیں۔ اور نیک نامی سے ساتھ مقبول صحبت ومعاشرت ہے۔ بعض شراح نے تکھاہے کدرج زرنب سے تشبیہ شہرت اور نیک نامی سے کنامیہ ہے۔ اس کے برعکس بعض شراح نے اس عبارت کو مذمت پرحمل کیا ہے گویا میر عورت اپنے شوہر کو کمزور ، مردانی سے محروم اور زنانہ صفات کا مالک بتاتی ہے۔

<u>نویں کی مرحت انگیز رائے:</u>

و قالت التاسعة زوجی دفیع العماد عماد بڑے ستون کو کہتے ہیں جس پرعمارت قائم ہو۔ اس کی جمع عمد اور اعمر ہے۔ معنی ہی کہ وہ بلند ستونوں والا ہے۔ کشیر ماد رمادرا کھ کو کہتے ہیں۔ اس کے گھر میں را کھذیا دہ ہوتی ہے۔ کیونکہ مہمانوں کی کثر ت ہوتی ہے۔ طویل المنجاد نجا دہ تلوار کی کاٹھی کو کہتے ہیں بیدراصل رفعتِ قد کیلئے استعارہ ہے کیونکہ تلوار کی کھائی تب طویل ہوتی ہے جب آدمی خوددراز قد ہوتا ہے۔ علاوہ ازیں کمی تکواروں کا استعال امیر ، سردار اور جنگجو و بہادرلوگرتے ہیں۔

قریب البیت من الناد بیاصل میں نادی ہے۔نادی، نادیہ اور ندوہ تینوں مجلس کے معنی میں مستعمل ہیں۔دارالندوہ مقام مشاورت واجھاع کو کہتے ہیں ہی یا تو ندکی بیدو عدوا سے ہے۔جس کے معنی جمع ہونا اور مجلس میں حاضر ہونا ہیں۔ یا ہی عدی ندی عدی و نداوۃ سے ہے۔جس کے معنی تر اور گیلا ہونا ہے۔ چونکہ مجلسوں اور اجھاع گا ہوں میں عمو ما خوردونوش اور شراب کا دور چلتا رہتا تھا اس لئے وہاں زمین نم آلود اور گیلی رہتی تھی۔اس سے مقام اجھاع اور مجالس پرنادی کا اطلاق ہونے لگا(ا)۔اس جملہ کا مطلب سے ہوگا کہ قوم کے دارالمشاورت اسمبلی اور پارلیمنٹ کے قریب ہی میرے خاوند کا گھر ہے جو کہ سیادۃ و حکومت کی علامت ہے۔

یہ عورت بھی خاوند کی مدح کرتی ہے۔ مطلب یہ ہے کہ میرا خاوند بہت امیر وسر دار ہے اور بلند
ستونوں والے بڑی عمارتوں کا مالک ہے۔ یامعنی یہ کہ بلند جگہ اور منفر دمقام پراس کامحل ہے۔ اس جملے میں

(۱) صاحب جلالین نے ایک وجہ شمیہ یہ بھی ذکر کی ہے کہ ' لانسه ینتدیٰ فید '' یعنی مجلس میں چونکہ ایک دوسر کے وہلایا جاتا ہے۔ اور آوازیں دی جاتی ہیں۔ ابدا اسے نادی کہا جانے لگا۔ ولیو اجع الی جلالین سورة علق. (اصلاح الدین)

عظمت اورخاندانی و جاہت کوبھی اشارہ ہے۔ کیونکہ عرب لوگ حسب ونسب کی شرافت اور شہرت سے تعبیر کرتے ہوئے عمود کو کنابۂ استعمال کرتے ہیں۔ جس طرح کے فرز دق کہتا ہے کہ

إنّ الذي سمك السماء بني لنا بيتا دعائمهُ اعزّ واطول

ترجمہ: اس ذات نے جس نے آسان کو بلندی عطا کی ہے ہمارے لیے (مجدوثرف کا) ایسا گھر بنایا ہے جس کے ستون مضبوط اور بلند ہیں۔

اس عورت کے بیان کے مطابق مہمانوں کی کشرت کے باعث ہروفت کھانا پکانے کے لئے آگ جلتی رہتی ہے۔ جس کے سبب را کھ کشرت سے پیدا ہوتی ہے۔ علاوہ ازیں عرب کے تی لوگوں کی بی بھی عادت تھی کہ رات کواو نجی جگہ آگ روشن کرتے تھے تا کہ مسافر لوگ اس طرف آئیں اور وہ ان کی ضیافت کریں۔ اس وجہ سے بھی را کھ کی کشرت ہوتی تھی ۔ طویل قد وقا مت اور جسمانی ساخت کے لحاظ سے ممتاز ، بہادر اور شجاع ہے۔ نیز بید لفظ افتد ار اور سلطنہ سے بھی کنا بیہ ہوسکتا ہے بعنی وہ لمی تکوار والا حاکم ہے جیسے ہمارے ہاں کہتے ہیں کہ فلاں کا ہاتھ لمباہے بعنی ہر جگہ رسائی ہے۔ جلس اور دار الحمثورہ کے قریب رہتا ہے۔ جو کہ سریراہی اور سرداری کی علامت ہے کیونکہ اس کے مشورہ کے بغیر فیصلہ نہیں کیا جاتا ۔ گویا اس بات کو اشارہ ہے کہ سردار اور ذی رائے ہے۔ اس کی رائے کو اہمیت دی جاتی ہے اور بیہ مختی ہمی مجتمل ہے کہ جس کے قریب گھر ہونے کی وجہ سے تمام مہمانوں کی ضیافت اس کو کرنی پڑتی ہے لیکن سخاوت کا علم چونکہ پہلے 'دی خوید

دسویں کی مدح سرائی: قالت العاشرة زوجی مالک ما لک اس خض یعنی دسویں عورت کے خاوندکانام ہے و مامالک النے بیاوراس شم کے دیگر استفہا مات نظیم فخیم کیلئے ہوتے ہیں۔ یعنی شہیں کیا پہتے ہے کہ ما لک کیا چیز ہے۔ جیسے المقارعة ماالقارعة اور المحاقة ماالحاقة میں ہے۔ مرادیہ ہے کہ آم اس کی شان وشوکت اور عظمت کو کیا جانتے ہو۔ مالک خیر من ذالک ما لک ان فرکورہ خاوندوں میں سب سے بہتر ہے۔ یا پھر ذالک میں اشارہ صرف نویں عورت کے خاوندکو ہے کیونکہ اس سے قبل تو بعض خاوندوں کی فرمت کی گئی تھی۔ ان سے افضیات تو واضح ہے۔ لہذا صرف زوج تاسع کو اشارہ ہوگا۔ یعنی خاوندوں کی فرمت کی گئی تھی۔ ان سے افضیات تو واضح ہے۔ لہذا صرف زوج تاسع کو اشارہ ہوگا۔ یعنی

میرا خاونداس زوج تاسع سے اچھا ہے(۱)۔ له ابل کٹیرات المبادک النے ۔مبارک مبرک کی جمع ہے جو بروک سے ظرف ہے۔ اورس کی برح سے ظرف ہے۔ جس کے معنی ہیں آزاد چھوڑنا۔ جانوروں کو چراگاہ میں چرنے کیلئے آزاد چھوڑنے کوسرح اور چراگاہ کومسرح کہتے ہیں۔

تو مطلب بیہ ہوا کہ ان اونٹوں کا مبارک کے ساتھ تعلق مسارح کے ساتھ تعلق کی نسبت زیادہ ہوتا ہے۔ اذا سمعن صوت الممز ھر المنح مزہر چنگ در باب ادر ساز کے آلات کو کہتے ہیں۔ یا پھران میں سے ایک خاص قتم کے رباب کو کہتے ہیں۔ لیکن مرادیبی آلات طرب ہیں۔ اسی طرح مزہر کا اطلاق غلیل کے مانندایک کلڑی پر بھی ہوتا ہے جس کے ذریعے آگ جلایا کرتے تھے وہ بھی مراد ہوسکتا ہے۔ تو معنی یہ ہوگا کہ سازکی آوازیا آتش دان میں آگ جلانے کی آوازین کروہ اونٹنیاں یقین کرلیتی ہیں۔ کہ ان کی ہلاکت کا وقت آن پہنچا ہے۔

بیر مورت بھی خاوند کی مدح کرتی ہے۔اس کے بیان کا مطلب سے کہ میراخاوند تنی اور مالدار ہے۔اس کے بیان کا مطلب سے ہے کہ میراخاوند تنی اور مالدار ہے۔اس کے بہت اونٹ ہیں۔ جنہیں وہ چراگاہ نہیں بھیجتا بلکہ یہیں بائدے رکھتا ہے۔اس لئے کہ وہ گھر میں ان کو پالنے کی خوب استطاعت رکھتا ہے۔صحرائی چراگا ہوں میں چرانے کی ضرورت ہی نہیں پڑتی ۔اور اس لئے بھی کہ کسی وفت بھی ضرورت پڑسکتی ہے تو پکڑ کر ذرائح کرنے میں آسانی ہو۔اور مہمانوں کو دودھ پیش کرنے کیلئے بھی جانور ہروقت گھر پرموجود ہوں۔

چراگاہوں میں اس شخص کے اونٹ چرتے رہتے ہیں جس کے مہمان نہ ہوں۔ اور ذری کرنے کا موقع نہ آئے بلکہ تجارت اور کمائی کیلئے اونٹ رکھتا ہو۔ مالک کی سخاوت کی بناء پر اونٹ بھی اتنا ہم چھ چکے ہیں کہ سازی تھوڑی ہی آوازس لیس تو سمجھ لیتے ہیں کہ اب وہ ذری کئے جائیگے۔ گویا کثر ت تجربہ کی وجہ سے ان کو اس بات کا شعور ہو چکا ہے۔ ساز کا ذکر اس لئے کیا ہے کہ سر داروں کے ہاں مہمان آتے تو مجالس کو نغموں، چنگ ورباب اور مجروں سے خوب گرم کر لیتے تھے۔ وہ اپنی داشتہ لونڈ یوں کو مہمانوں کی خوشی کی خاطر ہی جنگ ورباب اور مجروں سے خوب گرم کر لیتے تھے۔ وہ اپنی داشتہ لونڈ یوں کو مہمانوں کی خوشی کی خاطر ہی لائی ہی ممکن ہے کہ ذاک میں اشارہ بعد میں آنے والی تو صیف کو ہوتو عبارت کی تاویل یوں ہوگی کہ ''مالک خیر من ذالک اللہ ی اقولہ فی حقہ و سنذ کر ہ بعد ''مطلب یہ وگا کہ بعد میں میں جو تحریف کرنے والی ہوں وہ بہت کم ذالک اللہ ی اللہ حالے اللہ یہ انہ کی کئیر من المشواح ۔ (اصلاح اللہ ین)

رقص وسرود کی تعلیم دیتے تھے۔ اور دیگر طریقوں کے علاوہ اس لحاظ سے بھی ان کا اکرام کرتے تھے۔ بہر حال ساز کی آواز مہمانوں کی آمداونٹوں کی ہلاکت کی علامت ہوتی تھی۔ یا پھر مزہر سے آتش دان مراد ہے۔جس میں آگ جلنے کی آواز کان میں پڑتی۔اور آگ جلنے گئی تو اونٹوں کو شعور ہوجا تا تھا کہ اب ہم میں سے کوئی تو ذرج کیا جانے والا ہے۔

گیاروی عورت حدیث کی محورام زرع:

قالت المحادیة عشوة به آخری عورت ام زرع به اوریه می خاوند کی مدر کرتی ہے۔ زوجی أبوزر ع المخاس خاوند کا نام ابوزرع ہے اور تجمل کیلئے اس عورت نے بھی و ما ابوزرع کا استفہام کیا ہے۔ اس کنیت میں بھی شروت کی طرف اشارہ ہے کیونکہ ذرع فصل کو کہتے ہیں اور اس شخص کی بھی زمینیں ، جا کدا داور فصلیں تھیں یا یہ معنی کہ پیخص کثیر الاولاد تھا۔ اور اولاد بھی ایک قصل ہے۔ تو ممکن ہے اس کنیت میں اس بات کی طرف اشارہ ہو۔

انساس من خلی اذنی انساس ینوس اناسة حرکت دین اور ہلانے کے معنی میں ہے۔ یہ نوس سے ہے۔ جس کے معنی میاری چیز کوہلانے کے ہیں جسطر ح کہ کویں میں جری بالٹی کو حرکت دی جاتی ہے۔ اسنوس کمتے ہیں اور خیلی جاء کے خم اور لاء کمور کے ساتھ حَلی (جاء مفتو حداور سکون لام) کی جمع ہے جوز یور کو کہتے ہیں۔ اُذنکی آناس کا مفعول بہ ہے یعنی اس نے بھاری زیور میرے کا نوں کیلئے بنوا کران کوہلا کے رکھ دیا۔ تو گویا وہ مالدار ہونے کے ساتھ ساتھ جمھ پر مہریان بھی تھا۔ و مسلام من شحم المنے یعنی میں گھرسے آئی تھی تو لاغری تھی لیکن ان کے ہاں ایسے کھانے ملے کہ میرے باز و چر بی سے جرگئے۔

عسندی عضد کہنی کے اوپر ہاتھ کو کہتے ہیں۔ یہاں تثنیہ متعلم کی یاء کی طرف مضاف ہے اور علامہ زخشر کی رحمۃ اللہ علیہ نے لکھا ہے کہ بازوؤں کا ذکر خصوصی طور پراس لئے کیا ہے کہ ان پر سب سے آخر میں گوشت اور چربی آتی ہے اس لئے مطلب یہ ہوگا کہ میں ساری چربی سے بحرگئی حتیٰ کہ بازوجھی جرگئے۔
میں گوشت اور چربی آتی ہے اس لئے مطلب یہ ہوگا کہ میں ساری چربی سے بحرگئی حتیٰ کہ بازوجھی جرگئے۔
و بہتے جنی ، بجع فتے کے باب سے فرح اور عظم دونوں کے معنی میں آتا ہے۔ یہاں پر تفضیل کا صینہ مستعمل ہے۔ جس کا معنی ہی ہے فرحتی یا عظمتی لیعنی اس خاوند نے جمھے بے حد خوش کیا۔ یا میری تعظیم کی ۔ اور قدرومنز است بودھادی۔

حتى بىجىت الى نفسى يعنى حتى كەيلى خود پرعاشق بوگى خود پيندى اورغرور كىسبب قريب تقاكدا بنى حقيقت بعول جا ول يااس جملے كامعنى بي بوگاكه عنظمنى فعظمت الى نفسى يا فعظمت الى نفسى -

وجدنسي في اهل غنيمة الخ غنيمة غنم كي تفغير بغنم بهير بكريول كے كلے كوكت إلى البذا غُنیمة چند بھیٹروں یا بکریوں کو کہا جائے گا بیشہ ق شق یاشین کے فتح کے ساتھ ناحہ اور طرف کو کہتے ہیں لینی دور دراز ، بادیہ وصحرا کے ایک غریب گھرانے میں مجھے بایا۔ یا یہ ایک مخصوص جگہ کا نام بھی ہوسکتا ہے۔ اسی طرح شق شین کے کسرہ کے ساتھ مشقت و تکلیف کے معنی میں بھی مستعمل ہے۔ جیسے قرآن میں ہے کہ ولیم تكونوا بالغية الابشق الانفس دونون صورتون من مطلب يرموكا كم مجهاس فايك غريب گھرانے میں پایااور پیندآنے پر ہیوی بنایا۔اهل صهیل صهیل گھوڑوں کی آواز کو کہتے ہیں۔واطیت اطیت اصوات الابل کو کہتے ہیں لیعنی وہاں سے اٹھا کرا پیے گھر میں مجھے لایا۔ جہاں گھوڑ ہے اور اونٹ كثرت سے تھے۔ادھر كھوڑے بنہناتے توادھراونٹ بلبلاتے جاتے تھے۔ دائے و منق دائس داس يدوس دوس سے اسم فاعل ہے جو كدروندنے كو كہتے ہيں فيصوصاً غله صاف كرنے كيلئے فصل ا كا ھنے كو كہتے ہیں۔اور منق روایت کےمطابق تنقیہ سے اسم فاعل کا صیغہ ہے۔غلہ کو بھوسہ سے صاف کرنے والے جانور یا چھلنی کے ذریعے صاف کرنے والے غلام مراد ہیں۔ تو معنی پیرہوا کہ میں ایسے گھر میں آئی جہاں نصل گاہنے کیلئے بیل اورصاف کرنے کیلئے غلام اور جانورموجود تھے۔ گویا پیگھر بہت مالداراورزمینداری کا گھر تھا۔صاف ستھرا غلہ کھانے کوملتا تھا۔اس کےعلاوہ نسق جب فعل مستعمل ہوتو اس کامعنی آ واز نکالنا بھی ہے کہتے ہیں۔نقت الدجاجة مرغی نے آواز لگائی گویا کہاس گھر میں اس کام کیلئے بھی نوکر جا کرموجود تھے کہ فصلوں سے مرغیوں اور دیگر نقصان دہ پر ندوں کو جھگا ئیں یا ذبح کرنے کیلئے مرغیوں کو پکڑیں جس سے مرغیاں شور میائیں ۔الغرض بعرا گھر تھا۔ٹھاٹ بھاٹ اور امیرانہ طرز زندگی میں میں ایک غریب گھرانے ہے منتقل ہوگئی۔

فعنده اقول فلا أقبح الغ تقیم سے مضارع مجبول کا صیغہ ہے۔ جس کے معنی ہیں کی کی قباحت بیان کرنا یعنی اگر چہ ایک دیہاتی عورت ہونے کی وجہ سے میری باتیں نامنا سب ضرور ہوتی تھیں گر

وہ لوگ محبت سے پیش آ کرمیری سب باتوں کو قبول کر لیتے تھے۔ مجھے پر ابھانہیں کہاجاتا تھا۔ وارقسد فاتصبح تصبح کے معنی ہیں میں دن چڑھے تک نیند کرنا۔ تو معنی بیہوا کہ ہیں سوکر من کو دیر سے اٹھی تھی۔ اور خاوند مجھے نیند سے نہیں جگاتا تھا کیونکہ محبت کی وجہوہ مجھ سے خدمت نہیں لیتا تھا۔ نیز خدمت کے لئے دیگر نوکر جا کرموجو دہوتے تھے۔

اشرب فاتقمح بخاری اور مسلم کی روایت میں فاقتے آیا ہے۔ تجے اور قی دونوں فتے کے باب سے آتے ہیں۔ دونوں کا مفہوم ایک ہے جب پیتے پیتے آدمی کسی مشروب سے سیر ہوجاتا ہے۔ پھر بھی بادل ناخواستہ وہی مشروب پینے لگتا ہے۔ اس کو قمع المرجل اور قبح کہتے ہیں اور باب تفعل سے ہو کر بھی دونوں کا مطلب لغت کی کتابوں نے بیکھا ہے کہ 'ت کارہ علی المسّر ب بعد المرّی '' یعنی پانی سے سیر ہونے کے بعد بھی بادل ناخواستہ پیتار ہا۔ بہاں پر نینداور مشروبات میں توسع اور کثر ت کا بیان ہے جبیا کہ کھانوں میں توسع کا بیان پہلے گزر چکا ہے۔

یہاں تک ام زرع نے جو کچھ کہا ہے اس میں اپنے خاوند کی محبت مہر پانیاں اورعنایت والتفات کا تذکرہ ہے وہ کہتی ہیں کہ ابوزرع نے جھے اسے زیور پہنائے کہ کان جھو منے لگ جاتے کھانوں سے خوب فربہ ہو گئی تھی ۔غریب گھرانے سے اٹھا کرعیاش کے گھر لے آیا جہاں ہر نعت موجود تھی اور ہر لحاظ سے جھ پر فراوانی تھی ۔اس کے ساتھ ساتھ میری ناز برداری بھی کی جاتی تھی ۔خاوند کی جیتی ہونے کی وجہ سے میری ہریات قبول کی جاتی تھی ۔ آرام اور نیند میں خلل اندازی نہیں ہوتی تھی ۔ چنا نچہ نہ جھے ڈا نا جاتا تھا اور سوتی تو بے فکر سوتی رہتی تھی کوئی جگاتا بھی نہ تھا۔ کیونکہ گھریار، غلوں اور جانوروں کیلئے نوکر چا کر موجود تھے اور کھانی چیتی تھی ۔ جی کہ دل جمر جاتا تھا۔ ام آبسی زرع المنے گھر میں ایک عورت کیلئے اس کا خاوند ہی سب پچھ نہیں ہوتا ۔ بلکہ اس کا تعلق خاوند کی ماں ، اس کی بہن بھا نیوں اور اگر اس کی دوسری شادی یا اس کی اولا دہوان سے بھی ہوتا ہے۔ اس طرح گھر کی کیفیت سے بھی اس کا اگر اس کی دوسری شادی یا اس کی اولا دہوان سے بھی ہوتا ہے۔ اس طرح گھر کی کیفیت سے بھی اس کا واسط پڑتا ہے۔ بھی خاوند مہریان اور مجبت کر نیوالا ہوتا ہے لیکن ساس اور ندیس جینا حرام کردیتی ہیں۔ اب واس گھر کی ہر طرح سے تو صیف کرتی ہے کہر ف ابوزرع ہی مہریان نہ تھا بلکہ ایں خانہ ھمہ آ فی است وہ اس گھر کی ہر طرح سے تو صیف کرتی ہے کہ صرف ابوزرع ہی مہریان نہ تھا بلکہ ایں خانہ ھمہ آ فی است

فما ام ابی زرع بیاستفہام تعظیم کیلئے ہے جیسا کہ پہلے بھی گزر چکا ہے۔ عکو مھا رداح النع عکم کی بخت ہے جو طعام اور کھانے کے برتن کو کہتے ہیں۔ عنلف قتم کی برتنوں میں کھانے کی چیزیں رکھی جاتی ہیں۔ کی میں آٹا، کسی میں چنا دال کسی بھی آلوٹماٹر وغیرہ ۔ تو ان اوعیۃ الطعام کو عکوم کہتے ہیں۔ رداح راء کی فتۃ کے ساتھ صفت کا صیغہ ہے مفرد ہے مگر جمع کی خبراس لئے واقع ہوا ہے کہ مبتداء میں کل عکم مراد ہے۔ علاہ اذیں غیر ذری العقول کی جمع ہے خبر اور صفت مفرد بھی واقع ہوتی ہے جیسے لے درای من آیات رہے۔ الکبری ۔ ردح خوب بھرنے لب ریز ہونے اور ساتھ ساتھ وسعت وعظیم کے معنی کا بھی صامل ہے۔ امر أة رُدَاحًای عظیمة الا کفال و الا لیتین لینی اس عورت کو کہتے ہیں جس کے و لیے اور سرین پُر گوشت اورخوب بھرے ہوں۔

وبیتھا فساح فاء مفتو حداور مضمومہ دونوں کے ساتھ مردی ہے۔ فتح کشادگی اور وسعت کو کہتے ہیں۔ اور ایک روایت میں فیاح آتا ہے۔ اسکا معنی بھی فراخی اور وسعت ہے چونکہ گھرکی مالکن عموماً ساس بوتی ہے۔ کھانوں وغیرہ پروہ عموماً اپنا اختیار جمّاتی ہے۔ اور اسی وجہ سے اکثر بہوکو شکایت بھی ہوتی ہے کیکن بیٹورت ساس کی تعریف کرتے ہوئے کہتی ہے کہ وہ منجوس نہتی۔ اس کے کھانے کے برتن بڑے وسیج اور خوب بھرے ہوئے تھے۔ گھر بھی کشادہ تھا۔

ابن ابی زرع خاوند کے بیٹے گاتعریف کرتی ہے۔ مضجعہ کمسل شطبہ مضجع بسر ہاورخصوصاً اس جگہ کو کہتے ہیں جہاں انسان کا پہلو بسر ہے۔ ساتا ہے اور مسل سسل یہ اسل سے ہے۔ جس کے معنی با ہر نکا لئے کے ہیں۔ مسل یہاں مسلول کے معنی میں مستعمل ہے۔ اور شطبہ شین کفتی کے ساتھ شطب یشطب (نفر) سے اسم ہے جوطولاً کا شخ کو کہتے ہیں۔ شطبہ اور شطیبہ "قطعہ تقطع طولا" لین کسی چیز کاوہ قطعہ جو لمبائی میں کا ٹاجائے۔ اس کا اطلاق کجور کی شاخ سے جدا کے جانے والے لمب کلڑے ہی ہوتا ہے۔ اور کھجور کے چوں پر بھی جو کہ شاخ سے الگ کردی جا نیں۔ جب ہتر تلوار کیلئے بھی یہ لفظ بولا جا تا ہے۔ مسل ہطبہ میں صفت کی اضافت موصوف کو ہوئی ہے۔ لہذا یہ ہطبۃ میں صفت کی اضافت موصوف کو ہوئی ہے۔ لہذا یہ ہطبۃ مسلولہ کے معنی میں ہے۔ اور مرادیہ ہے کہ کھجور کی شاخ سے جدا کی جانیوالی شبنی کی طرح بار یک اور تھوڑی میں جا ۔ اور مرادیہ ہے کہ کھجور کی شاخ سے جدا کی جانیوالی شبنی کی طرح بار یک اور تھوڑی میں جگھرا کی بار مردوں کے باں مردوں کی جگور کی سارے بسر کو بھر لے۔ اور عربوں کے باں مردوں کی جگھرا کی بسر دوں کے باں مردوں کے باں مردوں کی جگور کی شاخ سے کہ کھور کی ہو کہ کھور کے بیان مردوں کے باں مردوں کی جگور کی شاخ سے کہ کھور کی ہوتا ہے۔ موانا ور بھاری بھر کم نہیں ہے کہ سارے بسر کو بھر لے۔ اور عربوں کے باں مردوں کی جگھور کی شاخ سے کہ کھور کی ساتھ کو کھور کی سے کہ کھور کی شاخ سے کہ کھور کی ساتھ کے کہ کھور کے کہ کھور کے کو کھور کی سے کہ کھور کے کہ کھور کے کھور کے دور کے کہ کو کھور کے کہ کھور کے کہ کھور کے کھور کے دور کے دور کی سے کہ کھور کے کھور کے دور کے کہ کھور کے کہ کھور کے کہ کھور کے کھور کے دور کھور کے کھور کے دور کھور کے کھور

میں بہ صفت ممدوح ہے۔وتشبیعیہ ذراع جیفرہ تشیع اشاع سےمضارع کا صیغہ ہے بھرنے اورسیر کردینے کو کہتے ہیں۔ ذراع جانور کے اللہ یاؤں کو کہتے ہیں اور جفرہ بکری کے بیچ لیلے کو کہتے ہیں جو ماں کا دودھ پیپا چھوڑ دے۔بعض شراح کے ہاں جب جار ماہ کا ہوجائے تو اسے جفرہ کہتے ہیں غلام جفر اس یے کو کہاجاتا ہے جس کے پہلو بڑے ہوجائیں۔ یہاں مقصود بہے کہوہ کم کھانے والا ہے۔ لیلے کے صرف ایک ہاتھ سے سیر ہوجا تا ہے۔ جس پر گوشت بھی کم ہوتا ہے۔ اس کلام کا مطلب بہ ہے کہ ابوزرع کا بیٹا جاک وچو بندنو جوان تھا۔ چست اور پھر نیلا تھا کھانا بھی کم کھا تا تھا۔ زیادہ کھانا بیداری اور چستی کوختم کرتا ہےاورستی پیدا کرتا ہے۔علاوہ ازیں دولتمندی اورتغیش کوبھی اشارہ ہے کہوہ نفیس اورقیتی کھا نا کھا تا ہے۔ بنت أبي زرع النح دوسرى يوى سے ابوزرع كى بيٹى كى تعريف كرتى ہے۔ فمابنت ابى زرع يهال بهى استفهام تعظيم كيلي بي يعنى وه بهى عظيم اورشريف عورت تقى - طبوع أبيهاو طوع أمّها الخطوع مصدر ب مبلغة فاعل كمعنى مين مستعمل مواب جيسے زيد عدل زيد عادل كمعنى مين ب يہاں مطلب بيهوگاكه مطيعة لوالديها كثيرة الاطاعة \_ وياوالدين كيار عين سرايااطاعت تقى نافر مان نتھی۔اوراسی مبالغہ کیلئے والدہ کے ساتھ دوبارہ طوع کالفظ لائی ہےور نہ اہیں اسے عطف کرنا بھی کافی تھا۔وملا کساء ھا ملا یملا سے مصدر ہے۔جس کے معنی جرنے کے ہوتے ہیں۔ یہاں اسم فاعل كمعنى مين بيعنى مسالسة كسساء ها ايخ كيرون اور برقعه وجرن والى يعنى خوب فربدائدام تقى (١) وغيظ جارتها. غيظ كمعنى كوغصرولا نااورناراض كرنام يعنى مغيظة لجارتها. اور جارة اسمقام ير ضرة يعني سوكن كمعنى من بدايك روايت من عقر جارتها آيا بدجس كامعنى ہے کہ وہ سوکن کی موت تھی ۔مطلب بیر ہے کہ وہ اتنی حسین فربداور خوش اندام تھی کہ اس کی سوکن ہمیشہ اس ہے جلتی رہتی تھی۔اسے دیکھنا گوارانہیں کرتی تھی۔گویا ابوزرع کی بیٹی اس کے لئے غیظ وغضب کا سبب بنی رئتی هی - جاریة أبی زرع المخاب هری خادمه کی تعریف کرتی ہے که وہ بھی بہت اچھی تھی ۔ (۱) بعض روایات میں بہاں ایک اور صفت کا اضافہ بھی مروی ہے۔ وہ ہے 'وصفو دیداء ہا'' کینی اس کی رواء خالی ہوتی تھی اس کا مطلب یہ ہوگا کہاس کا سینہ اور کچھلا حصہ گوشت سے بھرا ہوتا تھا جبکہ پیٹ بتلی تھی جس کی وجہ سے درمیان میں رداء خالی رہتی تھی البنة رداء کااو بری حصہ اوراز ارفریجی کی وجہ سے بھرار ہتا تھا۔ (اصلاح الدین ) لیکن یہاں فرق مراتب کی وجہ سے تعظیم واستفھام کا کھر نہیں لائی (۱)۔ تو ابوزرع کی خادمہ کی مدح کرتے ہوئے کہتی ہے کہ وہ بھی اللہ تعالی نے ایسے دی تھی کہ لا تبث حدیث تبیشا المنح بث اور تبیث وہ ہماری گھر کی دونوں نثر کرنے اور پھیلانے کو کہتے ہیں تبیف مفعول مطلق من غیر باب الفعل ہے۔ یعنی وہ ہماری گھر کی بات اور راز کو ظاہر وشائع نہیں کرتی تھی۔ بلکہ راز کوراز رکھی تھی۔ و لاتنقٹ المنے نقث (باب نھر) ایک چیز کو دوسری جگہ چوری چھے یا علائی طور پر لے جانے کو کہتے ہیں۔ گرھی ہوئی چیز کو نکال کرلے جانے اور راشن کو دوسری جگہ چیں۔ تو لاتنقٹ کامعنی ہوالا تنقل میر تنا ماریمیو کھانے پینے کی چیز یں لے جانے اور راشن کہید کہنے ایک رسمد کو میرہ کہتے ہیں۔ قرآن مجید بین ہے۔ 'و نمیو اہلنا'' یعنی گھر کیلئے راش لائیں گے۔ حاصل کلام یہ واکہ وہ خادمہ خائے نہ نہی کہ راشن کی چیز وں میں ہیر چھر کرکے خیانت کرے۔ اور جب کھانے پینے کی چیز وں میں خیانت نہیں کرتی ہوئی۔

و لاتملا بیتنا اورایک نسخه میں بینا ہے لینی ہمارے درمیان یا ہمارے گھر میں کھوٹ نہیں ملاتی تھی تنشیش عش سے ہے جو ملاوٹ دھو کہ اور فریب کو کہتے ہیں اورا گرید لفظ تعشیش ہوتو عُش سے ہے جس کا معنی گھونسلا ہوتا ہے اور وہ بھی تکوں، پروں، پتوں وغیرہ سے بنتے ہیں۔ تو تعشیش کے معنی ہیں۔ کوڑا کر کٹ اور شکے وغیرہ جمع کرنا پہلی صورت میں مطلب بیہ ہوگا کہ عمو ما پر نے فد متکار گھر میں بڑے برٹے فساد پیدا کرتے ہیں ایک کی با تیں دوسرے تک پہنچا کر گھروں میں جھگڑے پیدا کرتے ہیں رازوں کوفاش کرتے ہیں۔ لیکن سے فادمہ ان نقائص سے پاک تھی۔ ساس نندوں اور میر بدر میان آگنیں کھڑکاتی تھی۔ بعض شراح نے بیا ترجمہ کیا ہے کہ وہ عفیف الفرج تھی اور کسی کو خود پر قابونہیں دلاتی تھی۔ اور تعشیش مین کے ساتھ ہوتو معنی سے ہوگا کہ ہمارے گھرکو گھاس، پھوس کوڑا کر کٹ سے نہیں ہمرتی تھی تا کہ ایک اور خادم صفائی کیلئے رکھنا ہوگا کہ ہمارے گھرکو گھاس، پھوس کوڑا کر کٹ سے نہیں ہمرتی تھی تا کہ ایک اور خادم صفائی کیلئے رکھنا ہوگا کہ ہمارے گھرکو گھاس، پھوس کوڑا کر کٹ سے نہیں ہمرتی تھی تا کہ ایک اور خادم صفائی کیلئے رکھنا ہوگا کہ ہمارے گھرکو گھاس، پھوس کوڑا کر کٹ سے نہیں ہمرتی تھی تا کہ ایک اور خادم صفائی کیلئے رکھنا ہوگا کہ جمارے گھرکو گھاس، پھوس کوڑا کر کٹ سے نہیں ہمرتی تھی تا کہ ایک اور خادم صفائی کیلئے رکھنا ہوگا کہ جمارے گھرکو گھاں۔ کہوں گھرکے تھا میں می تا کہ ایک اور خادم صفائی کیلئے در کھنا کہ سے تھوں تھوں کو تھا در گھر جنت کا نمونہ تھا۔

(۱)واضح رہے کہ بخاری مسلم اور تمام شروح میں 'جاریة ابی زرع فعا جاریة ابی زرع'' آیا ہے۔ البتہ تر مذی کے ساتھ چھنے والے شاکل کے ننخ میں 'فعا جاریة ابی زرع''کاکلم نہیں ہے اور حضرت شخ استاد محترم کی توجیہ اس کیلئے ہے۔ (اصلاح الدین)

ام زرع کا دوسراشو ہر: خوج أبو زرع النح اس كے بعدا پنى کامياب اور خوشحال زندگی کا زوال بيان کرنے گل ہے۔ والا طاب مخص النح اوطاب وطب کی جمع ہے جود ہی اور لی کے برتن کو کہتے ہیں اس کا ترجمہ اسقیۃ اللبن سے کیا جاتا ہے اور لبن آج کل دہی کو کہتے ہیں۔ جبکہ دود دھ کو صلیب خض جسکے اور شدت سے کسی چیز کو ہلانے کا نام ہے حورت کا جس وقت بچہ پیدا ہوتا ہے تو اس کو جسکے لگتے ہیں۔ ان جسکوں کے بعد بچے کی ولادت ہوتی ہے۔ اس وجہ سے در دزہ کو بھی مخاص کہتے ہیں اور دہی بلونے کو بھی خض اس لئے کہتے ہیں کہ دہی بلوتے وقت اوطاب کو دھیکے دیے جاتے ہیں۔ وہ فصیح و بلیغ لوگ تھے سویرے لگلئے کہتے ہیں کہ دہی بلوتے وقت اوطاب کو دھیکے دیے جاتے ہیں۔ وہ فصیح و بلیغ لوگ تھے سویرے لگلئے کہتے ہیں کہ دہی طور کنلیۃ استعمال کرتی ہے اور دراصل بیسفر پر نگلنے سے کنا ہے ہے کیونکہ سفر پر جاتے وقت آ دمی کوسویرے اٹھ کر گھر سے جانا ہوتا ہے ایک شاع کہتا ہے۔

جوانی میں عدم کے واسطے سامان کر غافل مسافر شب کواشتے ہیں جو جانا دور ہوتا ہے

اس کے ساتھ اس جملے میں اس طرف بھی اشارہ ہے کہ وہ ایسے دنوں میں لکلا جب دودھ زیادہ ہوتا ہے۔ یہ عموماً عربوں کے تجارت کے ایام ہوتے تھے۔ پرانے زمانے میں عور تیں سویرے اٹھتی تھیں تا کہ صحن میں عرب دہی شخنڈ اٹھنڈ ابوتا ہے اسے بلوئے۔ اس طرح محصن زیادہ ٹکلتا ہے۔ اس لئے فجر سے تعلی پہلے یہ عور تیں اٹھ کر دہی بلوتی تھیں۔ اب قو مغربی تہذیب نے عور توں کو محنت اور کام کاج سے آزاد کردیا۔ سورج پڑھنے تک سارے لوگ سوئے رہتے ہیں۔ بہر حال ابو زرع صبح سویرے جب کہ عور تیں ابھی دہی بلونے میں گئی ہوئی تھیں گھرسے لکلا۔

فلق المعنى المعرفة المنع ليعنى ميرى شامت جوآئى تواس سفريس اسے ايك مورت ملى جس كے ہمراہ دونچ تھے۔ كالمفهدين وہ ايسے چست اور چاك وچو بند تھے جيسے كہ چيتے ہوں اچلتے اور كودتے تھے گويا چيتوں كے ساتھ كھيل اور پھرتی ميں تشبيہ ہے۔

یلعبان من تحت المخصو بوما نتین الن اس جملے میں منظری دکشی کے بیان کے ساتھ ساتھ فیکورہ عورت کی کمریتی اور سینداور سرین کا ساتھ فیکورہ عورت کی کمریتی اور سینداور سرین کا حصہ جمرا ہوااور فربہ تھا۔وہ لیٹی ہوئی تھی اور اس کے سینداور سرین کے درمیان جو خلاسا پیدا ہوتا تھا بیٹی کمر کی

وجہ سے اسی کو تحت الخصر سے تعبیر کیا گیا ہے۔ یہاں اس کے دو بچے دواناروں کے ساتھ کھیل رہے تھے لینی اس کے پہلو کے بنچے سے انارادھرادھر چھنکتے جاتے تھے۔ یہ دلر با منظر دکھی کراس آ دمی کو تعب ہوا۔ اور ایک تو جہ یہ بھی ہے کہ اس جملہ میں رمائٹیں عورت کے دولپتا نوں کیلئے استعارہ کے طور پر مستعمل ہے۔ جسیا کہ بعض روایات میں تحت صدر ہا اور دوسری میں تحت درعہا سے اس قوجیہ کی تا ئیر ہوتی ہے۔ بپتا نوں کو اناروں کے ساتھ کھیل رہے تھے اور اس قسم کی تشبیہ کے ساتھ کھیل رہے تھے اور اس قسم کی تشبیہ متعارف بھی ہے۔ ایک شاعر کا مصرع ہے ع و غصنا فیہ دیمان صغار کہ لینی وہ محبوبہ ایک ٹبنی کی طرح ہے۔ بسیر دوانار گے ہوئے ہیں۔

فطلقنی النج لینی اس عورت کے حسن سے متاثر ہوا اور بیوں کی پھرتی سے نجابت کاعلم ہواتو ابوزرع نے جھے طلاق دیکر اس عورت سے نکاح کرلیا۔ فند کے حث بعد النج اس زمانہ میں عورت کیلئے دوسر سے مرد کے ساتھ شادی کوئی معیوب بات نہ تھی بلکہ آج بھی عرب معاشر سے میں صالت تقریباً یہی ہے اور یہ بین اسلامی طریقہ بھی ہے اس میں نہ مرد کیلئے کوئی مسئلہ ہے نہ عورت کو مشکلات۔ الغرض عورت نے اس کے بعد اس مرد سے نکاح کیا۔

رجلا سویاد کب شویا سرق سرواد کمعنی میں بھی مستعمل ہے۔اورجادی نہرکوبھی کہتے ہیں۔
اسی وجہسود قامریم کی آیت قَلْ جَعَل رَبّکِ تخت ک سویّا کا ایک معنی تو یہ کیاجا تا ہے کہ اللہ تعالیٰ نے تیر سنزد کی بی نشیب میں ایک چشمہ یا نہر جاری کردیا۔اوردوسرامعنی یہ بھی کیاجا تا ہے کہ اللہ تعالیٰ نے تیجہ سے ایک بڑے سروارکوجنم دینے کا انظام کردیا ہے یعنی وجیه فی اللہ نیا و الآخو قی پیغیر حضرت عیسی علیہ السلام کو پیدافر مایا ہے اور شری اس گھوڑ ہے کہ ہیں جو کہ خاص انداز سے ستی اوردکی چال چلے۔نیز مسلسل سفر کرتا جائے اور سفر کے دوران رکنے کا نام نہ لے۔اخد خطیّا المخیئر کی صفت ہے۔ یعنی مسلسل سفر کرتا جائے اور سفر کے دوران رکنے کا نام نہ لے۔اخد خطیّا المخیئر ہے جس میں بنائے دمحا خطیاً . خطیر تریۃ العرب کے جنوب شرقی علاقے میں ممان کا ایک ساطی شہر ہے جس میں بنائے جانے والے نیز سے بہت مشہور ہوتا ہے۔
مطلب یہ ہے کہ ابوزرع کے بعد میں نے ایک الیے فیص مما لک کا اسلحہ بہت مشہور ہوتا ہے۔
مطلب یہ ہے کہ ابوزرع کے بعد میں نے ایک الیے نعص مما ٹویا اراح برت کرواح سے مطلب یہ ہے کہ ابوزرع کے بعد میں نے ایک الیے نعص میں نویا اراح برت کرواح سے مطلب یہ ہے کہ ابوزرع کے بعد میں نے ایک الیے نعص میں نویا اراح برت کرواح سے مراد ہوتا تھا جنگ جواور نیز وبازیمی تھا۔واداح علی نعما ٹویا اراح برت کرواح سے مرکش گھوڑ سے برسوار ہوتا تھا جنگ جواور نیز وبازیمی تھا۔واداح علی نعما ٹویا اراح برت کرواح سے سرکش گھوڑ سے برسوار ہوتا تھا جنگ جوافر نیز وبازیمی تھا۔واداح علی نعما ٹویا اراح برت کرواح سے سرکش گھوڈ کے برسوار ہوتا تھا جنگ کو برائری میں تھا کے بعد میں دوراداح علی نعما ٹویا اراح برت کی کورو

افعال کا صیغہ ہے۔شام کے وقت کوئی چیز لا کر دینے کو کہتے ہیں۔شام کو گھر واپس آنے والے جانوروں کو رائحہ جانور کہتے ہیں۔ نعم کا اطلاق اونٹ، بیل اور بھیڑ بکر یوں پر ہوتا ہے۔ بعض نے اونٹوں کے ساتھ اسے خاص کہا ہے لیکن بید درست نہیں ہے۔اور ثریا ثروۃ سے کثرت کے معنی کا حامل ہے۔ یعنی بہت زیادہ مولیثی اور جانور جھے مہیا کر دیئے۔شام کو گھر آتے تو گھر بھر جاتا تھا۔

واعطانسی من کل رائحة زوجاً رائحت برراحت کی چیز مراد ہے۔ یاشام کے وقت گرآنے والے جانور مراد ہیں مطلب سے ہے کہ گائے بھیڑ بکری وغیرہ دیئے۔ بعض روایات میں ذال کے ساتھ ذابحہ کا لفظ آیا ہے۔ یعنی مایہ جوز ذبحہ (ذنح ہونے والے جانور) جھے گئ دیئے ایک پراکتفاء نہیں کیا۔

و میری اهلک میری ماریمیو سے امر حاضر واحد مونث کا صیغہ ہے میرة راش پہنچانے کو کہتے ہیں مطلب میہ ہے کہ گھر والول لین رشتہ داروں، والدین کوبھی دیتی رہو پر واہ نہ کرویعنی والدین اور میکے والوں کے پاس کھے بیجے سے مجھر نے نہیں ہوگا۔ ہر عورت اس بات سے خوش ہوتی ہے کہ اس کا خاو شد میکے والوں کے پاس کھے بیجے ۔ ام زرع بھی اس بات سے اپنے خاو تدکی کشادہ دلی بیان کر رہی ہے۔

فلوج معت المنح تمام نعتو اوراحمانات كے باوصف ام زرع ابوزرع اوراس كى محبت كوياد كررہى ہے۔ اس جملے كا مطلب بيہ ہے كه اگر زوج ثانى كے تمام احسانات اوراس كى نعتيں جمع كردوں تو ابوزرع كے احسانات كے چھوٹے سے برتن ميں ساجا ئيں۔ بلكه اس تك بھى نه بھي سكي سكي سكي ماو دور كى بي عادت بعض لوگوں ميں ہوتى ہے كہ عليحدگى كے باوجود بھى وہ پہلے خاوندكو يا دكرتى ہے اور خوشحالى كے باوجود اسى كاذكر كررہى ہے (ا)۔

(۱) یمی در حقیقت پہلی محبت کا جذب بھی ہے جس کی طرف ابوتمام نے یوں اشارہ کیا ہے۔

ماالحب الاللحبيب الاول

نقل فؤداك حيث شئت من الهوى

وحنينه ابدأ لاوّل منزل

كم منزل في الارض يا لفة الفتي

ای وجہ سے کہا جا تا ہے کہ'الشیب نصف السمواۃ '' کیونکہ پوری نہ ہوتو کم ازکم آدھی محبت وہ پہلے خاوند کودے دیتی ہے اور حضرت عائشہرضی اللہ عنہ کی محبوبیت اورام زرع کا مقام دینے کی ایک وجہ یہ بھی تھی کہ وہ واصد کواری تھیں جو آپ بھی تھے کے پاس تھیں۔(اصلاح الدین) حضرت عائش نگاہ رسول اللہ علیہ میں: قالت فقال رسول الله علیہ المنے قصر تم ہوجانے کے بعد نی کریم اللہ علیہ اللہ علیہ اللہ علیہ میں تیرے لئے نی کریم اللہ علیہ حضرت عائشہ رضی اللہ عنہ کی دلجوئی بے مثال انداز سے فرماتے ہیں کہ میں تیرے لئے ابوزرع کے مرتبے میں ہوں لینی اس طرح کی محبت میں تیرے ساتھ کرتا ہوں جس طرح کی محبت تو زرع آخردم تک یاد کرتی رہی۔ اورایک روایت میں ہے غیب و انسی لم اطلقک را لینی میری محبت تو ولی ہی ہے کیان ابوزرع نے بے وفائی کرکے ہوی کوطلاق دے دی اور میں بیکام نہیں کروں گا۔ بعض روایات کے الفاظ یوں ہیں گئنت لک کابی ذرع لام ذرع فی الالفة والرفاء (۲) ایک دوسری روایت کے مطابق حضرت عائشہ رضی اللہ عنہ نے فرمایا کہ نہیں بلکہ آپ ایف میرے لئے ابوزرع سے ہزاروں درجہ بردھ کر ہیں ابوزرع کیا تھا (۳)۔ کیونکہ وہ تو صرف د نیوی لذات مہیا کرتا رہا اور پھر طلاق بھی دیدی گئن نبی کریم اللہ نہیں ابوزرع کیا تھا (۳)۔ کیونکہ وہ تو صرف د نیوی لذات مہیا کرتا رہا اور پھر طلاق بھی دیدی گئن نبی کریم اللہ نبی کریم اللہ اللہ نبی کہ کابی خوری منافع سے بھی مالا مال فرمایا۔

حدیث سے مسائل مستنبطہ: اس حدیث سے علاء نے متعدد مسائل مستبط کئے ہیں لیکن امام ترفدی رحمۃ اللہ علیہ حدیث اس مقصد کیلئے لائے ہیں کہ ایک دائر ہے کے اندر اور حدود شریعت کا پابندر ہے ہوئے حسن معاشرت کی خاطر رات کے وقت سونے سے پہلے قصہ گوئی جائز ہے۔ جس طرح کہ نبی کریم میں معلے کے محمل سے ظاہر ہوتا ہے اس کے علاوہ اس حدیث سے دیگر مسائل بھی مستبط کئے گئے ہیں مثلًا

- (۱) فضیلت عائشہ رضی اللہ عنداور نبی کریم اللہ کے ہاں ان کا مرتبہ اس وجہ سے امام سلم رحمۃ اللہ علیہ نے بیحد بیث حضرت عائشہ رضی اللہ عنہ کے فضائل کے باب میں ذکر کیا ہے(۲)۔
- "(۲) بیویوں کے ساتھ محبت اور حسن معاشرت کا اہتمام کرنا۔ اس کئے بخاری شریف میں اس حدیث کو باب حسن المعاشرة مع الاہل کے تحت لایا گیا ہے (۵)۔

(۱) جمع الوسائل ج ۲ ص۲ ک

(٢) نقله القارى في الجمع عن بعض الكتب ج ٢ ص ٤٢

(٣) ذا دالزبير إلا آنه طلقها وإنّى لااطلّقك فقالت عائشة رضى الله عنها بابى انت وامى لانت خير لى من أبى زرع لام زرع. تو شيخ على حاشية البخارى ج اص ٥٨٠ (اصلاح الدين)

(۴) مسلم شریف ج۲ص ۲۸۷

(۵) بخاری شریف ج۲ص ۷۷۷

(٣) امم سابقد كواقعات كابيان اور تاريخ كوئي كاجواز

- (۴) بیر کہ مشبہ اور مشبہ بہ میں تمام وجوہ میں مماثلت شرط نہیں جبیبا کہ نبی کریم اللے نے خود کو ابوزرع سے تشبیہ دی لیکن خود ہی بعض صفات کی نفی بھی کر دی۔
- (۵) اگر کئی عنه غیر معروف ہواوراس کی حکایت سے اس کی بے عزتی نہ ہوتو اس کے عیوب کا بیان غیبت کے زمرے میں نہیں آتا۔

#### خلاصه بإب

اس باب میں نبی کر یم اللہ سے رات کوقصہ گوئی نقل کی گئی ہے۔ جس سے بظاہراس کا جواز معلوم مور باہے اور ابتدائے باب میں ہم لکھ بچے ہیں کہ جہاں کرا ہت کا ذکر آیا ہے اس کا اپنا محمل ہے۔

نی کریم القطاعیت سے ان دوا حادیث کے علاوہ دیگر احادیث میں بھی سمر لینی رات کی قصہ گوئی اور بات چیت منقول ہے۔ابو بکر صدیق رضی اللہ عنہ کے ساتھ بھی رات کونماز کے بعد بھی مشورہ اور باتیں کرتے تھے جس کاروایت میں ذکر موجود ہے۔

خلاصہ یہ کہ رات کوقصہ گوئی جائز اور نبی کریم آلی کے عمل سے ثابت ہے۔ لیکن اس کے ساتھ ان دونوں احادیث میں مزید بے شارا حکام کوبھی اشارہ ہے۔ جن کوہم دوران تشریح بیان کر چکے ہیں۔

## 9 ... باب ما جاء في صفة نوم رسول الله عَلَيْكُ الله عَلِيْكُ الله عَلَيْكُ اللهُ عَلَيْكُ الله عَلَيْكُ اللهُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ اللهُ عَلَيْكُ اللهُ عَلَيْكُ اللهُ عَلَيْكُ اللهُ عَلَيْكُ اللهُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ اللّهُ عَلَيْكُ عَلَيْكُمُ عَلَيْكُوالِي اللهُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُمُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُمُ عَلِي عَلِي

گزشتہ باب میں نیند سے پہلے قصے سانے کا ذکر تھا چونکہ ایسی قصہ گوئی کے بعد نیند ہوتی ہے اس لئے اس باب میں نیندکا ذکر کیا جاتا ہے۔ نوم (۱) ذہول کی اس کیفیت کا نام ہے جس میں حواس اپنا کا م چوڑ دیتے ہیں اور علم ومعرفت اور ادر اک مائد پڑجاتی ہے۔ اس لئے اسے اخو السموت یعنی موت کا بھائی کہا جاتا ہے۔ اس سے قبل کچھودیگر کیفیات بھی ہوتی ہیں جن کے لیے عربی میں اپنے نام ہیں۔ مثلا سِسنة اس کیفیت کو کہا جاتا ہے جس میں صرف سر بھاری ہوجاتا ہے۔ اس کے بعد جب آسمیس بھاری ہوکر بند ہونے گئی ہیں تو اسے نعام کہ جیں۔ اور جب یہ کیفیت دل تک پنج جاتی ہے تو نوم کہلاتی ہے۔ میں نیندکی کیفیت کے ساتھ وہ دعا کیں بھی معتول ہیں جو آسے میا تھ وہ دعا کیں بھی سے بہلے یا اس کے بعد پڑھی تھیں۔

(۱) حدّثنا محمّد بن المثنى أنبأنا عبدالرحمٰن بن مهدى أنا إسرائيل عن أبى إسحاق عن عبدالله بن يزيد عن البراء بن عازب إنّ رسول الله عن أبى إسحاق عن عبدالله بن يزيد عن البراء بن عازب إنّ رسول الله عن أبى تحت خدّه الله عن عندا اخذ مضجعه وضع كفّه اليمنى تحت خدّه الأيمن وقال ربّ قنى عذابك يوم تبعث عبادك (۲).

ترجمہ: حضرت براء بن عازب سے روایت ہے کہ جب نی کریم اللہ اپنے بستر پر لیٹ جاتے تھے تو اپنا ہاتھ رضار کے نیچے رکھ کر لیٹ جاتے تھے۔اور بیدعا فرماتے

(۱) نوم كالغوى متى بونا، او كهنا اورم نا اور اصطلاح شرخشية ثقيلة تهجم على القلب فتقطعه عن المعرفة بالاشياء (المواهب اللدنية ص ٢١) اورعلام مناوى في يول تحريف كل بوالنوم حالة طبعية تتعطل معها القوى تسير في البخار إلى الدماغ (المناوى على هامش جمع الوسائل ٢٠/١) (مختار) (٢) السنن الكبرى ٢٨٨١ كتاب عمل اليوم والليلة باب مايقول اذا أوى إلى فراشه جامع ترمذى ٢٠ / ١٨٨ المعرد الماع الماع الذا وى الى فراشه ، الادب المفرد للامام البخارى ٣١٠ رقم الحديث ٢١ مصنف ابن ابى شيبة ٢٠ / ٤ (مختار)

تھے کہ ' د ب قنبی عنداہک یوم تبعث عبادک ''لینی اے میرے رب جھے اس دن کے عذاب سے بچاجس دن توایخ بندوں کوزندہ کر کے اٹھائے گا۔

إذا اخذ مضجعه مضجع صَبَعَ عَظرف كاصيغه بـ مضجع لين كَا بَهُ كَا بَهُ كَا مِهُ كُوكَة بين المستر مراد ہے۔وضع كف السمنى كف عن الله على مراد ہے۔ اس سے يہ پنة چاتا ہے كہ بى كريم الله الله وائيس كروٹ سويا كرتے تھے۔اس طرح كے سونے عيں ايك تو دائيں جانب كى تفضيل ہے۔ آپ الله كرامت كے كاموں عيں دائيں كو بائيں پر ترجيح ديا كرتے تھے ادر يہى وجہ سب سے بہتر وجہ ہے۔ دوسرى وجہ يہ كہدا ئيں كروٹ سونے سے دل پر ديگر اعضاء كابو جو نہيں ہوتا كيونكدول سينے عيں بائيں جانب كو ہے۔ اس لئے الله نيند عيں استخراق نہيں ہوتا۔ اور بائيں جانب ليننے سے دل ينچ دب جاتا ہے۔ جس كى وجہ سے نيند سے بيدارى عيں دفت ہوتی ہے۔ ليكن مية جيداس وقت درست ہوگى جب كى كو دائيں جانب ليننے كى عادت نہو۔ورنہ بگرت دائيں جانب ليننے سے جب اس كى عادت پڑ جاتی ہے تو اس طرف جانب ليننے امت كى تعليم كے ليے ہوگا (۱)۔ ورنہ آپ الله كا دل كروٹ ليننے عيں مزہ آتا ہے۔ اور اس جانب ليننا امت كى تعليم كے ليے ہوگا (۱)۔ ورنہ آپ الله كا دل سوتے عيں ہي بيدار ہوتا تھا۔ لہذا آپ الله كے ليے دائيں بائيں سے فرق نہيں پڑتا تھا۔

ر ب قسنی عدابک اس دعا میں نی کر پھی اللہ نے نہایت تواضع سے کام لیا ہے ور نہ عذاب سے بچنے کی دعا کی ضرورت آپ اللہ نے کے لیے نہیں تھی۔ یا پھر تعلیم امت کے لیے آپ اللہ نے یہ دعا فرمائی ۔ یو پھر تعلیم امت کے لیے آپ اللہ نے یہ دعا فرمائی ۔ یو ہم تبعث عبادک چونکہ نیندموت کی طرح اور بیداری بعث بعدالموت سے مشابہ ہے۔ البذا الرا اس روایت سے یہ بات تابت ہے کہ دائیں کروٹ سونام سخب ہے اور چت لیٹنا یا بائیں پہلو پر لیٹنایا المالیٹنا مروہ ہے۔ علام عبدالمجوا اوالدوئی نے لکھا ہو ہذا دلیل علی استحباب النوم علی الشق الایمن، وقد کو ہ العلماء النوم علی الظہرو البطن و علی الجانب الایسو (الاتحافات ۲۰۳) طبی لحاظ سے بائیں جانب سونا گرچہ مولا ناز کریاصا حب نے نکھا ہے کہ بعض اطباء نے بائیں جانب سونے کواچھا بتایا ہے کہ گہری نیندا نے ہے ہم مجم بہتر ہوتا ہواد رہے کے ہیکن اس میں ایک معزت بھی ہے جس کی طرف ان کا ذہن نہیں گیاوہ یہ کہ جب دل نیچ کی جانب ہوگا تو ممالا برائر ہونا بھی بہت سے امراض کا سبب اس لئے بائیں کروٹ سونے میں اگر طبی مصلحت ہوتا کہ کی معزت بھی ہواد معرف سائر ہونا بھی بہت سے امراض کا سبب اس لئے بائیں کروٹ سونے میں اگر طبی مصلحت ہوتا کہ کی محزت بھی ہواد معظرت سے بھی دائیں کروٹ سونے میں اگر طبی مصلحت ہوتا کہ میں کروٹ کا وزار کر می کا دورائی کروٹ کی ہونا کو کا کی معزت بھی ہواد کیں کروٹ برسونا بہتر ہے۔ (خصائل ۲۰۹،۲۰۰۸) ویکار)

نیند کے ساتھ بعثت کی یا دفطری بات تھی۔

(۲) حدّثنا محمّد بن المثنى أنبانا عبدالرحمٰن انا إسرائيل عن أبى اسحاق عن أبى عبيدة عن عبدالله مثله و قال يوم تجمع عبادك. ترجمه: حضرت عبدالله بن مسعودٌ عن محل الله مثله و قال يوم تجمع عبادك مديث مروى ب (صرف يفرق ب) كم آپ فرمايا 'يوم تجمع عبادك ''يين جبتم بندول كوجح كروگه

عن ابی عبیدة عن عبدالله ابوعبیدة حضرت ابن معود کے بیٹے ہیں۔ اپنے والدسے حضرت براٹ کی طرح کی صدیث نقل کرتے ہیں صرف بوم تبعث کی بجائے یوم مجمع کہا ہے۔ جمع بعثت کے بعد قیامت کے روز ہی ہوگی(۱)۔

(٣) حدّثنا محمود بن غيلان ثنا عبدالرزاق أنا سفيان عن عبدالمالك بن عمير عن ربعى بن حراش عن حليفة قال كان النبى عليه الذي أوى الى فراشه قال اللهم باسمك أموت و أحيى وإذا ستيقظ قال الحمد لله الذي أحيانا بعد مااماتنا وإليه النشور (٢).

ترجمہ: حضرت حذیفہ کہتے ہیں کہ نی کر یم اللہ جب بستر پر لیٹتے تو یہ کہتے ''اے اللہ تیرے ہی نام سے زئدہ ہوتا (جاگا) اللہ تیرے ہی نام سے زئدہ ہوتا (جاگا) ہوں اور تیرے ہی نام سے زئدہ ہوتا (جاگا) ہوں۔اور جب جاگ جاتے تو فرماتے ''تمام تعریفیں اس اللہ کے لیے ہیں جس نے ہمیں موت کے بعد زئدگی بخشی اور اس کی جانب ہم نے رجوع کرنا ہے۔

(۱) بهلى روايت من يوم بعث باوراس من يوم بمح باس كى وجماس تيكوري قال بوت جمع عبادك أى بدل يوم تبعث عبادك أى بدل يوم تبعث عبادك و لابدمن تحق البعث والجمع معافا كتفى فى كل حديث بأحدهما لأنه يكون البعث ثمّ الجمع ثمّ النشور كما ورد (المواهب اللدنية ص ١٥١) (مختار)

(۲) صحيح بخارى ۹۳۳/۲ كتاب الدعوات باب مايقول اذانام، سنن ابى داؤد ۳۳۰/۲ كتاب الادب باب مايقول عندالنوم، جامع ترمذى ۲۵۲/۲ كتاب الدعوات باب منه، السنن الكبرئ للنسائى ۱۸۷/۲ كتاب عمل اليوم والليلة باب ما يقول اذا ارادأن ينام (مختار)

إذا آوى الى فواشه النع حضرت حديقة قرماتي بين كه جب آپ يالية اپ بستر كوآت تو خدكوره دعا پڑھتے ۔ايواء حفاظت كى جگه كو يَنفِخ كو كہتے ہيں۔ ٹھكانے كوماً وكى كہتے ہيں۔ قرآن مجيد ميں ہے آو آوِ ى إلى دُكنِ شَدِيدٍ. حضرت لوظ فرماتے ہيں كه كاش مير الجمي مضبوط ٹھكانہ اور مرجع ہوتا جہاں ميں سرچھيا تا اور جن سے دشمنان وين كے خلاف مد وحاصل كرتا۔

اللقم باسمک اموت (۱) واحییٰ النه یعنی تیرےنام کومتحضر کرتا ہوں میراایمان ہے توحید پر۔اوراسی حالت میں سوتا ہوں۔ نیندا یک لحاظ سے موتِ اصغر ہے۔

نيندى موت سے مثا بہت: كيونكه اس ميں حواس معطل ہوجاتے ہيں۔ نيز موت كا اطلاق تعطل اور زوال حواس پر بھی ہوتا ہے۔ كہتے ہيں المنوم اخو المصوت. و احيى اور تير عنام كے ساتھ زندہ ہوتا ہوں۔ یعنی جاگا ہوں۔ اور حواس كانقطل ختم ہونے كو حياة كہا ہے۔

اس سارے جملے میں حضرت اہرائیم کول کی طرف اشارہ ہے۔ انہوں نے فرمایا کہ ان صلائی و نسکی و محیای و ممائی لله ربّ العالمین ۔ نیز اس بات پر شبیہ ہے کہ نیندے پہلے یہ تصور کرنا چاہیے کہ شاید یہ آخری نیند ہواورائ میں روح قبض ہو۔ لہذاحسن خاتمہ کے لیے اللہ تعالیٰ کا ذکر چاہیے۔ اور بیدارہونے کے بعدادراک اور صوح کر کت دوبارہ طنے پر خداوندِ تعالیٰ کا شکراداکرنا چاہیے۔ لیکن یہ سب پچھ ظاہری اعتبار سے ہے ور خد تقیقت میں نی کریم اللہ کے کزد کیک موت ہی بیداری ہوئے۔ لیکن یہ سب پچھ ظاہری اعتبار سے ہور خر تقیقت میں نی کریم اللہ کے تبدنہ بیں بیدار ہوئے۔ انتبہوا کہ زندہ لوگ خوابیدہ ہیں جب مریکی کی حالت میں نیند میں ہیں۔ مرجا کیں گے تب ہی بیدار ہوئے۔ انتبہوا کہ زندہ لوگ خوابیدہ ہیں جب مریکی ہوجا کین گایف انتبہوا کہ وقت سارے تھا کی حوسات کی طرح منکشف ہوجا کیں گے۔ المناس نیام اذا ماتو اانتبہوا کیونکہ اس سے نہیں ڈرتا۔ وہ ہوی مصیبتوں کو صبر واستقامت سے جھیل سکتا ہے کیونکہ خواب کی تکلیف در حقیقت سے نہیں ڈرتا۔ وہ ہوی مصیبتوں کو صبر واستقامت سے جھیل سکتا ہے کیونکہ خواب کی تکلیف در حقیقت سے نہیں ڈرتا۔ وہ ہوی مصیبتوں کو صبر واستقامت سے جھیل سکتا ہے کیونکہ خواب کی تکلیف در حقیقت سے نہیں ڈرتا۔ وہ ہوی مصیبتوں کو میز داسکت وقدیست عمل فی زوال القو قالعاقلة وہی الہ جھالة کھوله تالہ کھوله تالہ الموال والہ رام والمورام والموسیة و غیر ذلک (جمع الوسائل ۲۵/۲) (محتار) مالئاقة کالفضور والذل والسوال والہ رام والمعصیة و غیر ذلک (جمع الوسائل ۲۵/۲) (محتار)

تکلیف ہے ہی نہیں۔ جاگئے کے بعد ساری کدورت دور ہو جاتی ہے۔ جبکہ کافرو فاسق دنیا میں مزے اڑا ئیں تو کیا؟ ابھی موت آئی آئکھیں کھلیں اور مار پڑنے لگی تو زندگی کے خواب میں مزوں سے کیا فائدہ۔ جب جاگئے کے بعد کدورت ہی کدورت ہے۔

نیندسے بیداری کی بعثت سے مشابہت: والیہ النشور (۱) نیندسے بیدارہونے کے بعد آخرت کی بعثت اور الله تعالیٰ کے ہاں حاضری کا دھیان ہونا چاہیے۔ اور اعمال کے حساب کو یادکرنا چاہیے۔ تاکدا ستقامت میں فرق نہ آئے۔

(٣) حدّثنا قتيبة بن سعيدثنا المفضّل بن فضاله عن عقيل اراه عن النوسري عن عروة عن عائشة قالت كان رسول الله عليه الموالله الله عليه الموالله الله عليه الله عن عروة عن عائشة فيهما وقر أفيهما قل هو الله احدو قل فراشه كلّ ليلة جمع كفّيه فنفث فيهما وقر أفيهما قل هو الله احدو قل أعوذ برب الناس ثم مسح بهما ما استطاع من أعوذ برب الناس ثم مسح بهما ما استطاع من جسده يبدء بهما راسه ووجهه و ما أقبل من جسده يصنع ذلك ثلاث مرات ٢٠٠٠.

ترجمه: حضرت عاكشه بن كه بي كريم الله به بررات كوجب بستر برلينة تو دونون باته مرات كوجب بستر برلينة تو دونون باتهون كوطلاكران بردم فرمادية تقداور (تين سورتين) قبل هو السله احد، قبل اعوذ برب الناس بره لية تقد جهال تك ان

(۱) علامه المالمي قارئ اليه النشور كي تشرئ كرتے بوئ كله ين اى وإليه السمرجع فى نيل النواب مسمّانك تسبه فى حياتناهذه (جمع الوسائل ۲۵/۱) اورعلام أووئ نشور سيعث بعد الموت ليا عوقال النفوري السمراد باماتنا النوم وامّا النشور هو الاحياء للبعث يوم القيامة فنبه عَلَيْكُ باعادة اليقظة بعد النوم الذى هو شبيه بالموت على اثبات البعث بعد الموت اور بعض في تثور سيمراد التفرق فى امر المعاش كا لافتراق حال المعادليا برجم الوماك (عمّار)

(٢)صحيح بخارى ٢/ ٥٥٠ كتاب فضائل القرآن باب فض المعوذات، سنن ابى داؤد ٢/ ٣٣٠ كتاب الادب باب مايقول عندالنوم، جامع ترمذى ١/ ١٥١ كتاب الدعوات باب ماجاء فيمن يقرأ القرآن عندالمنام، السنن الكبرئ للنسائى ١/ ٩٠ كتاب عمل اليوم والليلة باب مايقول من يفزع في منامه، سنن ابن ماجة ص ٢٤١ كتاب الدعاء باب مايدعوبه إذا اوى إلى فراشه. (مختار)

کے ہاتھ پینچتے اپنے ہاتھوں کو بدن پر پھیر لیتے تھے۔ سراور چبرے سے شروع کرکے بدن کے اللہ اس کے اللہ اس کے اللہ اللہ کا معلم کے ایسا کرتے تھے۔ بدن کے اللہ اللہ کا معلم کے اللہ کا معلم کا معلم کے اللہ کا معلم کے اللہ کا معلم کا معلم

دم ڈالنااور پھونک مارنا: فنفٹ فیھما نفخ پھونک مارنے کو کہتے ہیں جس کے ساتھ لعاب نہیں ہوتے۔نفٹ بھی بعض لوگوں کے ہاں اس معنی میں ہے اور پھولاگوں کے ہاں نفث میں تھوڑ اسالعاب ہوتا ہے جبکہ تفل تھو کئے کہ کہتے ہیں۔امام نوویؓ نے اہل اللغت سے قل کیا ہے کہ المنفث لطیف بلاریق لینی نفث نرم پھونک کو کہتے ہیں جس میں لعاب شامل نہ ہو عموماً دم کرتے وقت ایسانی کیا جاتا ہے۔اس سے مقصود برکت ہوتی ہے۔ تو آ ہے قایقے ہاتھوں کو جمع کر کے اس میں نفث فرماتے تھے۔

لینی کچھ پڑھ کر دونوں ہاتھوں پر دم کرتے تھے گویا ذکر کی دجہ سے منہ میں اور پھر لعاب اور پھونک كواسط سے باتھوں ميں بركت آجاتى ہے۔وقر أفيهما يہاں واومطلق جمع كے ليے ہے كيونكه نفث عموماً قراءة ك بعد بوتا ب(١) بحض روايات من فقرأ فاء كساته آيا بلكن فاء كويهي واو كمعنى میں لیا گیا ہے(۲)۔ آپ آلیہ قرآن مجید کی آخری تین سورتیں پڑھتے اور بعض روایات میں مسجات کا ذکر (١) اوريمي جمهوركى رائ بي لأن النفث ينبغي ان يكون بعدالت الاوة ليوصل بركة القرآن إلى يشرته (حاشيه شمائل ترمذى) اور ملاعلى قاري في كساب لأن تقديم النفث على القرأة ممّالم يقل به احـــدُ (جـمع الموسائل ٢ / ٧٧) اگرچ بعض حضرات نے اولاً نفث اور پھر قرأة كوتر جح دى ہے جيباروايت بالا سے بظابر معلوم بوتا ہے. قال العلامه البيجوري (قوله وقرأفيهما)وفي رواية فقرأبالفاء ومقتقى الرواية الاولىٰ أنّ تقديم النفث على القرأة وعكسه سيان حيث كانابعدجمع الكفين ومقتضى الرواية الثانية أن النفث يكون قبل القرأة وبه جزم بعضهم وعلّل ذلك بمخالفة السحرة فانّهم ينفثون بعد القرأة (المواهب اللدنية ص ١١) لكنّ ظاهر كلام الشيخ ابن حجرٌ أنّ الاولىٰ تقديم القرأة على النفث فأنه حمل رواية الفاء على أنّ قوله فنفث فيهما فقرأة معناه فأرادالنفث فيهما فقرأ فنفث بالفعل (المواهب الدنية ص ١١١) مرعلامه بيجوريّ نياس توجير كي ترديد كرتي بوئ فرمايا بو والا يخفي ما في هذا الحمل من التكلف لأنّه خلاف ظاهر (المواهب اللدنية ص ١١١) اورامام فرأف فرمايا بكرالفاء التفيد الفاء الترتيب واحتج بقوله تعالىٰ اهلكناهافجاء ها بأسنابياتاًوهم نائمون (جمع الوسائل ٧٤/٢) مر جوتوجيمولاناصاحب مظلم فركرفر مائى بوه وزياده وزنى باس لئے كة اموس ميس بان الفاء تاتى بمعنى الواو (جمع الوسائل ٢ / ١٤) اور رتوجية كلف سي بهي خالى بـ (مخار) (۲) فاء والى روايت كى ابك توجيه علامه ابن حجر في كي ہے۔ (عثار)

بھی ہے یعنی وہ سور تیں جن کی ابتداء میں شہیج وار دہوئی ہے جیسے سبطن الذی اُسویٰ النے ۔ یا سَبَّح لِلله النح ۔ ان روایات میں تعارض نہیں کیونکہ مکن ہے کہ ایک وقت میں ایک سورۃ پڑھتے اور دوسرے وقت میں دوسری سورۃ پڑھتے ۔ ما استطاع یعنی جہاں تک ہاتھ پنچا اور ممکن ہوتا یعنی سرسے شروع کرتے پھر جسم کے مقدم جھے پر ہاتھ چھرتے وار تین باریٹمل دہراتے۔ تاکہ کمال برکت حاصل ہو اگر چنش برکت ایک بارسے حاصل ہو جاتی ہے۔

(۵) حدّثنا محمّد بن بشّار ثنا عبدالرحمٰن بن مهدى ثنا سفيان عن سلمة بن كهيل عن كريب عن ابن عبّاس أنّ رسول الله عَلَيْ نام حتّى نفخ و كان إذا نام نفخ فاتاه بلال فاذنه بالصّلوة فقام وصلّىٰ ولم يتوضّأ وفى الحديث قصّة (۱).

ترجمہ: حضرت عبدالله بن عباس فرماتے ہیں کہ نبی کر يم الله سوئ تو خرائے لينے ليے اور آپ الله کا درآ پہلیک کی بیعادت تھی جب سوتے تو خرائے لیتے تھے۔ پھر بلال آئے اور نماز کی تاری کی اطلاع دی چنانچہ آپ الله نے نماز پڑھی اور وضوء کی تجدید نہیں کی۔

نیند میں خرآئے: حتی نفخ النے یہاں تک کہ آپ آلی خرائے لیما شروع کردیتے تھے۔ وہ صحت مند انسان جس کا سینہ مضبوط ہوتا ہے۔ عموماً سوتے وقت خرائے لیما شروع کر دیتا ہے۔ آپ آلیہ بھی خرائے لیما شروع کردیتا ہے۔ آپ آلیہ بھی خرائے لیتے تھے(۲)۔

(۱) صحيح بخارى كتاب الدعوات باب الدعاء إذاأنتبه من اليل، صحيح مسلم كتاب الحيض باب غسل الوجه واليدين اذااستيقظ من النوم، سنن ابى داؤد كتاب الادب باب فى النوم على طهارة، سنن ابن ماجة كتاب الطهارة باب وضؤ النوم (مختار)

(۲) جدید طب کے اندازوں کے مطابق خراٹوں کا اصل سب یہ ہے کہ بیاری یا کھانے کی زیادتی کی وجہ سے قالو ڈھیلا پڑجا تا ہے اس لئے نیند کی حالت میں سانس لیتے وقت اس کی تقر تقرام ہٹ سے خراٹوں کی آواز پیدا ہوتی ہے۔ یہ آواز منہ کے ذر لیع سانس لیتے وقت پیدا ہوتی ہے۔ اگر ناک کے ذر لیع سانس کی جائے تو خراٹوں کی آواز نہیں تکلتی۔ اگر پہلوک بل سویا جائے تو بھی یہ آواز پیدا نہیں ہوتی۔ اس وجہ سے پرانے لوگ اس کے علاج کے طور پر پشت پرکوئی پھر بند ہواتے تھتا کہ مجور آپہلوکے بل سویا جائے۔ بعض ماہرین نفسیات کے مطابق خرائے ایک لاشعوری عمل ہے۔ (بقیدا گل صفحہ پر) ولے میتوضّا نی کریم آلی کے منید بالا تفاق ناقِض وضو نہیں تھی۔ یہ آپ آلی کی خصوصیت ہے آپ آلی فرماتے ہیں تنام عینا ی و لاینام قلبی (۱) وراس میں حکمت بیتی کہ آپ آلی کے لیے وی کی خاطر ہردم بیدار ہونا ضروری تھا اور اصل بیداری دل ہی کی ہوتی ہے۔ قرآن مجید کا پاک ارشاد ہے کہ نے اللہ علی قلبے کے لیے نی جریل امین نے قرآن کو تیرے دل پرا تا را ۔ تو اگر قلب میں بیداری نہ ہو۔ تو وی کا اخذ اور حفاظت کیو کر ہو۔ اسی وجہ سے تو انبیاء کے خواب بھی وی ہوتے ہیں۔ حضرت ابرا ہیم کوسوتے میں حضرت ابرا ہیم کوسوتے میں حضرت اساعیل کو ذی کرنے کا حکم ملا اور اس برعمل بھی کیا۔

وفی المحدیث قصة النج اس مدیث میں مزید قصدوہ ہے جوحفرت میمونڈ کے گر حفرت عبداللہ بن عباس کو پیش آیا یہ واقعہ بالشفصیل الگے باب میں آر ہا ہے۔ اس مدیث میں نبی کریم آلیہ کے کی نیند کی ایک نئی حیثیت ثابت ہوئی کہ آپ آلیہ نیند میں خرائے بھی لیتے تھے۔

(۲) حدّثنا إسحاق بن منصور ثنا عفان ثنا حمّاد بن سلمة عن ثابت عن أنس بن مالك أنّ رسول الله عليه الله عليه كان إذا اوى الى فراشه قال الحمد لله الذى أطعمنا وسقانا وكفانا و آوانا فكم ممّن لا كافى

(بقیہ حاشیہ صفحہ ک) پرانے زمانے میں انسان معنر جانوروں کوڈرانے کے لیے اس متم کی آوازیں جاگتے ہوئے نکالٹا تھا۔ پھر بھی آوازیں وہ نبیند کی حالت میں بھی لاشعوری طور پر ٹکا لئے لگتا تھا۔اور رفتہ رفتہ بیآوازیں انسان کی فطرت کا جزوین سکیس (از بی بی ہی)

کین طباور نفیسات کی ان تخمینی باتوں کاوزن اس وقت کم ہوجاتا ہے جب ہم بی حدیث پڑھتے ہیں۔ کیونکہ نبی کر پیم اللہ کی کر پیم اللہ تعلقہ کی صحت آخر دم تک قابل رشک تھی۔ بلکہ مشاہرہ بھی بہی ہے کہ خوب صحتند لوگ خرائے لیتے ہیں۔اگر چہوہ بھو کے کیوں نہ سوئیں۔اوراگر فطرت کی بات ہوتی تو کمزور لوگوں کی فطرت کا جزوکیوں نہ نبیتی (اصلاح الدین)
(۱) به خاری کتاب التو او یہ جاب ۱، اور کتاب التھ جد باب ۲ (مختار)

(٢)صحيح مسلم ٣٥٢/٢ كتاب الذكر والدعاو التوبة باب الدعا عندالنوم، سنن ابى داؤد ٣/٠/٢ كتاب الدعوات باب داؤد ٣/٠/٢ كتاب الدعوات باب ما يقول عندالنوم، جامع ترمذى ٢/٠٥ كتاب الدعوات باب ما جاء في الدعا إذا أوى إلى فراشه، السنن الكبرى للنسائى ٢/٠ ١ اكتاب عمل اليوم والليلة باب ما يقول من يفرغ من منامه. (مختار)

ترجمہ: حضرت انس سے روایت ہے کہ نبی کریم اللہ جب اپنے بسترے میں تشریف لائے تو بید دعا فرمائی (ترجمہ) تمام تعریفیں اللہ تعالیٰ کے لیے ہیں جس نے ہمیں کھلایا، پلایا، ہماری ضروریات کی کفایت فرمائی۔اورسونے کے لیے ٹھکانہ دیا۔
کتے لوگ ہیں جن کا کفایت کرنے والا کوئی نہیں اور نہ کوئی ٹھکانہ دیے والا ہے۔

کفران نعمت سے نیخے کاعلاج:

نظر ڈالے تو اپنی خوشحالی پردل کے اندر سے شکر تکاتا ہے۔ اس کے برعکس اعلیٰ معیار زندگی گزار نے والوں پر نظر ڈالے تو اپنی خوشحالی پردل کے اندر سے شکر تکاتا ہے۔ اس کے برعکس اعلیٰ معیار زندگی گزار نے والوں پر نظر پرٹی ہے تو کفران نعمت میں مبتلا ہونے کا خوف ہوتا ہے۔ یہاں پر نبی کر یم اللہ تعالیٰ کی نعمتوں پرشکر گزاری کی تعلیم دی ہے اور اس کی طرف اشارہ فرمایا ہے کہ اپنی خوشحالی کا تصور کر کے شکر اداکر ناچا ہیہ۔ روٹی کیٹر ااور مکان صرف خداد بتا ہے:

اطعمنا و مسقانا نیند کے وقت کھانے پینے کی نعمت کا تذکرہ اس لئے فرمایا کہ بیند کے ساتھ ہی دیگر دوفعتیں بھی یا د آجاتی ہیں۔ بلکہ نیند کے لیے فراغ خاطر بھی چا ہے۔ اس لئے کھانے پینے کے بعد ضرور توں کا پورا ہونا اور پناہ گاہ کا میسر ہونا بھی ذکر فرمایا۔ کیکن چونکہ رزتی عام ہے اس سے کوئی محروم نہیں رہتا۔ البتہ ضروریات کی کھایت اور پناہ گاہ سے بکشر ت محرومی پیش آتی ہے اس لئے مونر الذکر دونوں کی نفی بعض مخلوقات سے کرنی پڑی۔

و کفان اینی ہماری ضروریات کی کفایت کی اور پیش آنے والے حوادث میں رحم فرما کر حفاظت فرمائی۔ ہمارے لاکھوں مسائل میں وہی ذات ہمارے لئے کافی ہوا۔ اور دشمنوں ، شرورو آفات و بلیات میں دشگیری فرمائی۔ ہمیں علم بھی نہیں ہوتا۔ اور مسائل حل ہو چکے ہوتے ہیں اور حادثات ومصائب میں نجات مل چکی ہوتی۔ ذالک بان الله مولیٰ الذین آمنوا وان الکافرین لا مولیٰ لھم.

و آوان اورہمیں ٹھکانا اور پناہ دی۔ فٹ پاتھ اور سڑک پرتونہیں رہنے دیا۔ جبکہ آج بھی ہزاروں لاکھوں انسان جنگلوں، خیموں اور سڑکوں پر پڑے ہوتے ہیں۔ بستر ہتو کجا سرچھپانے کی جگہ میسر نہیں۔ مصائب کی زندگی بسر کررہے ہیں۔ انہی لوگوں کا ذکر نبی کریم آلیک نے ان الفاظ میں فرمایا ' فکم ممن لا

کافی له و لا مؤوی له "وه بھی اللہ تعالی کی مخلوق ہے کین اللہ تعالی نے ہم پر بیاحسان کیا کہ ہماری کفایت کردی اور پناہ و محکانہ دیا۔ نبی کریم اللہ نبی کریم اللہ نبی کریم اللہ نبی کریم اللہ نبی کے اس مقام پر روٹی کپڑ ااور مکان کے بارے میں واضح کردیا کہ بین اللہ تعالی ہی دیے ہیں توفکم ممن لا کافی المنے دراصل حمد کے لیے تعلیل ہے۔ یعنی ان برحالوں کا احساس ہوتا ہے تعموں پر شکر دل سے فکل جاتا ہے۔

(2) حدّثنا الحسين بن محمّد الجريرى ثنا سليمان بن حرب ثنا حمّد بن سلمة عن حميد عن بكربن عبدالله المزنّى عن عبدالله ابن رباح عن أبى قتادة أنّ النبى عُلَيْتُهُ كان إذا عرس بليل اضطجع على شقّه الأيمن وإذا عرّس قبيل الصبّح نصب ذراعيه ووضع راسه على كفّه (۱).

ترجمہ: حضرت قادہ کہتے ہیں کہ نبی کر پیم اللہ دات کے آخری حصہ میں (صبح سے بہت پہلے) آرام کے لیے پڑاؤ ڈالتے ۔ تو دائیں پہلولیٹ جاتے تھے۔ اورا گرمیج سے کچھ پہلے آرام کا ارادہ فرماتے تو کہنی رکھ کر ہاتھ کھڑا کردیتے تھے اوراس پرسرر کھ کرقدرے آرام فرمالیتے تھے۔

ابو قتادة:

میں اختلاف ہے بعض نے حارث بن ربعی بتایا ہے بعض کے خیال میں عمر و بن ربعی یا نعمان بن عمر و ہے۔

میں اختلاف ہے بعض نے حارث بن ربعی بتایا ہے بعض کے خیال میں عمر و بن ربعی یا نعمان بن عمر و ہے۔

آپ کو فارس رسول اللہ اللہ بھی کہا جاتا ہے۔ بدر کے سواتمام غزوات میں شریک رہے۔ ایک قول کے
مطابق حضرت علی کی خلافت میں کوفہ میں وفات پائی تھی لیکن صحیح سے ہے کہ آپ نے ہے ہے ہے ہے ہے ہے ہے وفات بائی کیونکہ مروان بن الحکم سے مدینہ میں آپ کی ملاقات ثابت ہے۔

 شروع کردیتے تھے رات کے اکثر تھے میں سفر کرتے رہتے تھے۔ رات کے آخری تھے میں کسی جگہ پڑاؤ ڈال دیتے تھے۔

اس سے کے آرام کو جورات کے آخر میں ہوتا ہے تحریس کہتے ہیں۔ اس لئے کہ بیر کس سے ہے جو کہ شادی کو کہتے ہیں۔ اور عروس دلھا اور دلھن کو کہتے ہیں کیونکہ بید دونوں رات کے وقت ہی ملتے ہیں اور عمو آسب بیداری کے بعد شبح کو آرام کا موقعہ ملتا ہے۔ بہر حال الی رات کو جب آپ ایستی کو یقین ہوتا کہ انجی کافی وقت ہے نماز قضا نہیں ہوگی تو اطمینان کے ساتھ دائیں کروٹ سو جاتے تھے اور اگر وقت کم ہوتا تو صرف آرام کرتے نیند کی صورت میں نماز کے جانے کا اندیشہ ہوتا۔ لہذا ہاتھ سے تکیہ لگا کر لیٹ جاتے تھے۔ جو کہ بروقت بیداری میں زیادہ ممد ہے۔ اس سے یہ بات معلوم ہوتی ہے کہ نیند کے نظام الاوقات میں الی ترتیب ہونی چا ہے کہ سفر ، نماز ، اور دیگر مشاغل بھی بروقت ادا ہوں۔

# ٠٣٠. باب ما جاء في عبادة رسول الله عَلَيْكُ مِن الله عَلَيْكُ عَلَيْكُ اللهُ عَلَيْكُ مِن الله عَلَيْكُ عَلَيْكُ مِن الله عَلَيْكُ مِن الله عَلَيْكُ عَلَيْكُ مِن الله عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ مِن الله عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ مِن الله عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلَيْكُ عَلِي اللهِ عَلَيْكُ عَلِي عَلَيْكُ عَلِي عَلَيْكُ عَلِي عَلِي عَلِي عَلَيْكُ عَلِي عَلِي عَلِي عَلِي عَ

عبادت كامعنی اقصی عایة المحضوع و التذلل لیعنی زیاده سے زیاده عاجزی اورخشوع وخضوع ہے (۱)۔ لیکن شریعت میں ان اعمال پر بھی اسکا اطلاق ہوتا ہے۔جواس تذلل کا مظہر ہیں جیسے نمازروزہ غیرہ۔

تمام انسانوں اور خصوصاً نی کریم آلیک کی اصل صفات معنوی صفات ہیں۔ ایک خلقی خوبیاں ہوتی ہیں ان کا تعلق خالی نے نی کریم آلیک کو ہیاں ہوتی ہیں ان کا تعلق ظاہر سے ہے اور جو دکھائی دیتی ہیں۔ اس قسم کی خوبیاں بھی اللہ تعالیٰ نے نبی کریم آلیک کے ہیں کی خطیم صفات وہ معنوی صفات ہیں بدرجہ اتم عطافر مائی تھیں۔ ان محاس کے کچھ نمونے ہم پڑھ بچے ہیں کی عظیم صفات وہ معنوی صفات ہیں جواخلاق کہلاتی ہیں۔

 میں ساگئ تھی اور اسی وجہ سے قرآن میں جہاں دوسرے انبیاء کے نام آتے ہیں وہاں آپ ایکھیے کاذکر''عبد:''سے ہوتا ہے۔اس سے پتہ چلا کہ بندوں میں کامل عبدیت کی صفت کے حامل اور عبد کا فرد کامل نبی کریم ایکھیے ہیں۔ کیونکہ ضابطہ یہ ہے کہ جو چیز مطلق ذکر ہواس سے فرد کامل مرادلیا جاتا ہے۔

مثل سبحن الذی اُسری بعبدہ لیلا من المسجد (الایة) اور واته لما قام عبدالله (الایة) اور اُته لما قام عبدالله (الایة) اور اس می متعدد (۱) آیتیں ہیں جن میں آپ آلیہ کا نام لینے کی بجائے آپ آپ آلیہ کوعبد کے نام سے یاد کیا گیا ہے۔ اس صفت پر آپ آلیہ فخر بھی کیا کرتے تھے۔ کیونکہ انسا نیت کی نضیلت و مزیت اور کمال بھی عبدیت ہی میں مضم ہے۔ عبدیت سے تکانا ہے۔ اور دیگر فدا ہب عبدیت ہی میں مضم ہے۔ عبدیت سے تکانا ہے۔ اور دیگر فدا ہب میں افراط وتفریط کا سبب بھی یہی ہے کہ کس نے تو عبد (کسی پیغیر) کوعبدیت سے نکال کر الوہیت کی طرف بہنچا دیا اور کسی نے گرادیا۔ بہر حال عبدیت کی بیصفت آپ آلیہ میں بدرجہ اتم موجود ہے۔ اب بطور نمونہ مختلف اوقات میں نی کریم آلیہ کے کی عبادات کا بیان ہے۔

بعثت سے قبل عبادت کی نوعیت: نبوت سے پہلے بھی آپ تالیقہ عبادت کیا کرتے تھے۔البتہ اس میں اختلاف ہے کہ آپ تالیقہ عبادت کی تو سے پہلے بھی آپ تالیقہ عبادت کیا کرتے تھے یا نہیں۔ کچھ لوگوں کا خیال میں اختلاف ہے کہ آپ تالیقہ شریعت ابرا ہیں پر تھے۔ بعض نے شریعت موسوی اور بعض نے شریعت عیسوی کا نام لیا

لیکن سے قول یہ ہے کہ آپ اللہ کہ کہ میں ابقہ شریعت کے مقلد نہیں سے کیونکہ سابقہ تمام شریعتیں حضرت عیسی کی شریعت سے منسوخ ہو چکی تھیں اور حضرت عیسی کی شریعت تحریف کا شکار ہو چکی تھی۔اللہ تعالی فرماتے ہیں ماکنت تدری ماالکتاب و لاالایمان (الآیة) یعنی ایمان کے شرائع واحکام کا بختے وی سے قبل پیتنہیں تھا۔البتہ اس پر ملاعلی قاری نے بیشبہ کیا ہے کہ عیسی بنی اسرائیل میں مبعوث ہوئے سے ۔اس لئے بنی اسماعیل کیلئے ابراھیم کی شریعت ہاتی ہوسکتی ہے۔

ملاعلی قاریؒ لکھتے ہیں کہ اس پراجماع ہے کہ نبی کریم آلیک نبوت سے قبل بھی مؤمن تھے۔ بھی بھی بت پرستی نبیس کی۔البتہ ان کی عبادت کا انداز ہمیں معلوم نہیں۔

(۱) قرآن مجيد ميں دس مقامات پرآپ ﷺ وعبد کہا گياہے جبکہ نام سے صرف چار بارياد کيا گياہے۔

پھر پھر مریتفصیل لکھنے کے بعد لکھتے ہیں کہ ظاہر یہی ہے کہ نبوت سے قبل آپ ولی سے پھر نبی اور پھر ریالت سے مشرف ہوئے (ا)۔ ملاعلی قاریؒ نے جمع الوسائل ہیں بھی اس موضوع پرطویل بحث کی ہے کہ جہور کہتے ہیں کہ آپ ہوتی ہی بھی شریعت کے مقلد نہیں سے ورنہ کہیں تو یہ بات نقل ہوتی نیز جو تالع ہوتا ہے وہ متبوع کیسے بنتا۔ جبکہ امام الحرمینؒ نے اس سلسلے میں تو قف کو اختیار کیا ہے۔ جبکہ بعض لوگ آپ ہوتا ہے کو سابقہ شریعت کے تالع کہتے ہیں۔ پھر ان لوگوں میں سے بعض نے آدم بعض نے نوع بعض نے اور تعض نے ایرا جیم بعض نے ایرا جیم بعض نے ایرا جیم بھر پھر پھر کھے مزید تفصیل اور اقوال ذکر کرنے کے بعد لکھتے ہیں کہ ظاہر یہی معلوم ہوتا ہے کہ آپ پھر پھر کے مزید تھے۔ انگال مثلاً ذکر قبلی اور صفات الہی میں تفکر نیز آفاقی نفسی آیات اور مصنوعات میں سوچ کے قبیلے سے تھے۔ انگال مثلاً ذکر قبلی اور صفات الہی میں تفکر نیز آفاقی نفسی آیات اور مصنوعات میں سوچ کے قبیلے سے تھے۔ نیز رحم، شفقت بھل ورشا میں وشکر ، رضاء بالقصناء، شکیم وتفویض ، تو کل اور فناء و بقاء کے احوال کی رعایت جیسے اخلاق عالیہ سے آپ متصف تھے۔ جبیما کہ اولیاء واصفیاء کی حالت کا ملہ ہوتی ہے (۱)۔ واللہ اعلم۔

ترجمہ: حضرت مغیرہ بن شعبہ رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ نبی کریم اللہ اللہ اللہ عنہ سے روایت ہے کہ نبی کریم اللہ اللہ اللہ اللہ تعالیٰ نوافل پڑھیں۔ حتیٰ کہ آپ آلیہ ہے کہ نبی کرا ہے اللہ تعالیٰ نے عرض کیا کہ آپ اس قدر مشقت اللہ اللہ تعالیٰ نے

(۱)مرقات على المشكلة ةج ٣٠٥ (مختار)

(٢) جمع الوسائل ج٢ ص ٧٤،٠٨ مختصر أرمختار)

(٣) صحيح بخارى ١٥٢/ كتاب التهجد باب قيام النبى عَلَيْكُ الليل، صحيح مسلم ٣٨٥/٢ كتاب صفات المنافقين واحكامهم باب اكثار الاعمال والاجتهاد في العبادة، سنن نسائى ١٢٣٣/، سنن ابن ماجة ص ٢٠٢ كتاب اقامة الصلواة والسنة فيها باب ماجاء في قيام شهر رمضان (مختار)

آپ الله کے گزشتہ اور آئندہ تمام گناہ معاف کردیئے ہیں۔ تو آپ الله نے فرمایا کہ پھر (اتنے انعام کے بعد) کیا ہیں اللہ تعالیٰ کاشکر گزار بندہ نہ بنوں۔

140

عبادت میں مبالغہ اور مشقت شکراً تھا: فقیل که اکا برصحابہ میں ہے بعض نے عرض کیا کچھ شراح نے حضرت عمر رضی اللہ عنہ کانام لیا ہے کہ بیعرض انہوں نے کی تھی۔

الت کلف بھذا یہاں تکلف سے نفیخ مرافیس بلکہ بمشقت کام کرنامراد ہے(۱) مطلب ہے کہ کمال عنواور مغفرت کے وعد ہے کہ باوجود آپ اللہ عبادت میں اتی مشقت اٹھاتے ہیں جبکہ خوداللہ تعالی فرماتے ہیں کہ طعام انزلنا علیک القر آن لتشقی لینی ہم نے قرآن کواس لئے نازل نہیں کیا کئم خودکوتھکا دو۔ بلکہ دات کے بعض مصول میں آ رام کر کے تخفیف سے کام لو لیسٹی کام حتی جلا لین نے 'دلت عب ما فعلت بعد نزوله من طول قیامک بصلواۃ اللیل ''سے کیا ہے لیتی ساری دات ہجد پڑھ کر کھڑے کے مسلواۃ اللیل ''سے کیا ہے لیتی ساری دات ہجد پڑھ کر کھڑے ہم نے تم پرقرآن کونازل نہیں کیا ہے۔ صاحب کمالین نے اس مقام پر بی عاورہ بھی نقل کھڑے کہ سیسلہ المسقوم السقاھے بیتی قوم کامر دارزیاہ تھکا ہوا ہوتا ہے۔ آ رام کاموقع اسے نہیں مالی کیا ہوں کہ اللہ لک المنے سائل کے سوال کا منشاء ہے ہے کہ عبادت میں مبالذ تو خداکوراضی کرنے اور اپنی کیا ہوں کی معانی کیلئے کیا جا تا ہے جبکہ آپ اللے کے حاول تو گناہ ہیں نہیں۔ اور اگر بالفرض ہوں تو وہ بھی کہا ہوا ہوتا ہے۔ یہاں بیاعتراض کیا جا تا ہے جبکہ آپ اللہ کے معانی ہو چی ہیں۔ لہٰذا عبادت میں اتنی مشقت بلاضرورت ہے۔ یہاں بیاعتراض کیا جا تا ہے کہ کہا تا ہے جبکہ آپ اللہ کہا تھا تھوں کرنے ہو تھوں ہو بھی ہیں۔ لہٰذا عبادت میں اتنی مشقت بلاضرورت ہے۔ یہاں بیاعتراض کیا جا تا ہے جبکہ آپ کا نہیں ہیں تو مغفرت کا کیا معنی ؟ اس کے مضرین نے متعدد جواب کہنے ہیں مشارین نے متعدد جواب کہنے ہیں مشارین نے متعدد جواب کیا معنی ؟ اس کے مضرین نے متعدد جواب دیے ہیں مثالہ کہ اس سے مرادز نو سیامت ہیں نہ کہ خود نور کرکے میا گئا ہے۔

پیض نے یہ کہا ہے یہ فرض پر پینی ہے لین اگر بالفرض تیرے گناہ ہو نگے بھی تو وہ بخش دیے گئے ہیں۔ بیس البت ہو نہی کر یم البت ہو ہے گئے ہیں۔ بیس البت کہ یہاں پر وہ خلاف اولی با تیں مراد ہیں جو نبی کر یم البت ہے گاہے گاہے (۱) اس لئے کہ تکلف کی دو تشمیس ہیں۔ علامہ یجوریؓ نے تکھا ہے النہ کلف نوعان ان یفعل الانسان فعلا بمشقة وهو مدموم وهذا لیس مراداً هنا (المواهب الدنية ص ۲۵) اس لئے کرسول الله الله نے نفر مایا ہے انساو امتی براء من التکلف (جمع الوسائل ۱۸۰۸) اور قرآن کر یم نے فر مایا ہے وماانامن المتکلفین (سورة ص ۸۱) (مختار)

بتقاضائے بشریت صادر ہوسکی تھیں۔ بعض کہتے ہیں کہ سلوک الی الله میں تقصیرات کو اشارہ ہے جو کہ آپ اللہ سے بعجہ دیگر مصروفیات صادر ہوسکی تھیں وغیرہ۔

افلااکون عبداً شکوراً یعنی پتو ہم غلط ہے کہ عبادت میں مبالغہ کاصرف ایک سبب یعنی گناہ معاف کروانا ہے۔ بلکہ دراصل اللہ تعالی کا نبی کریم اللہ پر انعام بہت بڑا تھا۔ جس کا ذکرخود سائل نے بھی کیا ہے اور انعام کا نقاضا ہے ہے کہ اس کاشکر اداکر دیا جائے اور شکر اس بات کا متقاضی ہے کہ عبادت میں خوب انہاک ہو ۔ تو میری عبادت شکراً ہے گناہ معاف کرانے کیلئے نہیں ہے۔ اور اس کو اشارہ کرتے ہوئے حضرت علی رضی اللہ عند فرماتے ہیں کہ ان قوما عبدوا رغبة فتلک عبادة المتجار وان قوماً عبدوا شکراً فتلک عبادة المتجار وان قوماً عبدوا شکراً فتلک عبادت اور نعمتوں کی عبدوا شکراً فتلک عبادت ہونے الاحوار . لیعنی پھلوگوں نے تو اللہ تعالی کی عبادت جنت اور نعمتوں کی عبادت ہونے کے لوگوں نے اللہ تعالی سے خوف کی بناء پر عبادت کی یہ فلاموں کی عبادت ہے کہ لوگوں نے اللہ تعالی سے خوف کی بناء پر عبادت کی یہ فلاموں کی عبادت ہے (جوڈ نگر سے کے دور پر کام کرتے ہیں) اور پھلوگوں نے خدا کی عبادت بطور شکر کی ۔ بہی کا در اوگوں کی عبادت ہوں کی عبادت ہوں کی عبادت ہے۔

### توره وانتفاخ قديين:

ترجمہ: حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ نبی کر یم اللہ فی نے اتنی نفل ممازک پھول گئے۔ آپ اللہ سے کہا گیا کہ کیا آپ اللہ فی سے کہا گیا کہ کیا آپ اللہ فی اس تو یہ وی آپ کی ہے کہ اللہ کہ آپ اللہ فی سے کہا گیا کہ کیا ہے کہ اللہ کا میان تو یہ وی آپ کی ہے کہ اللہ کا میان تو یہ وی آپ کی ہے کہ اللہ کا میان تو یہ وی آپ کی ہے کہ اللہ کی ال

(١)فتفردالامام الترمذي بهذاالحديث السنة عنى تورّم (مختار)

الله تعالى نے آپ کے اگلے پچھلے تمام گناہ معاف فرمائے ہیں۔ آپ آلیک نے فرمایا تو کیا میں عیادت چھوڑ دوں اور اللہ تعالیٰ کاشکر گزار بندہ نہ بنوں؟

142

افلاا كون الخ همزة استفهام كالمرخول محذوف باورفاء عطف كيلئ بيك بيك المبالغة في التعبدا فلاا كون عبداً شكورا. كياعبادت من انهاك ترك كرلول اورشكر كرارنه بنول ـ

(٣) حدّ ثنا عيسى بن عثمان بن عيسى بن عبدالرحمان الرملى ثنى عمّى يحيى بن عيسى الرملى عن الأعمش عن أبى صالح عن أبى هريرة قال كان رسول الله عُلَيْتُ يقوم يصلى حتّى يتنفخ قد ماه فيقال له يارسول الله أتفعل هذا وقدغفر الله لك ماتقدم من ذنبك وماتا خرقال أفلاأ كون عبداً شكور ا(٢).

ترجمہ: حضرت ابو ہر برہ ہے ہے دوایت ہے کہ نبی کریم اللہ نماز اتنی طویل پڑھتے ہے کہ آپ آلیک نماز اتنی طویل پڑھتے تھے کہ آپ آلیک کی اللہ اللہ آپ آپ آلیک کی ارسول اللہ آپ آپ آپ آپ کے سب ایک پچھلے گناہ معاف کردیئے گئے ہیں۔ آپ آلیک فرماتے کہ کیا میں عبادت میں مبالغہ ترک کردوں اور ایک شکر گزار بندہ نہ بنوں۔

(۱) علامه مزاوی فی المعام کرعبادات میل حق الوسع مشقت برداشت کرنامستحب بروالمفوض من سیاق هذا المحدیث بیان انّه اعظم الخلق طاعة لربّه و فیه ندب تشمیر ساق الجدفی العبادة و ان اوی لمشقة مالم یفض إلیٰ ملال (المناوی علی هامش جمع الوسائل ۱/۲ ۸) (مختار)

(٢)سنن ابن ماجة ص٢٠١ كتاب اقامة الصلواة والسنة فيها باب ماجاء في قيام شهررمضان ص٢٠١ (مختار)

حتیٰ تنتفخ قدماہ: انتفاخ سے مضارع منصوب ہے یہ بھی تورہ کے معنی میں ہے۔اوپر کی دونوں صدیثوں کامفہوم اس باب کی بہلی صدیث سے ملتا جاتا ہے۔

### صلوة الليل اورعبادة مين حقوق الله اورحقوق العبادي رعايت:

ترجمہ: حضرت عائشرضی اللہ عنہا سے حضرت اسود بن یزید نے نبی کریم اللہ فرمایا کہ نبی رات کی نماز (تبجد) کے بارے بیں پوچھا۔ تو حضرت عائشرضی اللہ نے فرمایا کہ نبی کریم اللہ نے فرمایا کہ نبی کریم اللہ نے درات کے ابتدائی حصہ میں آرام فرماتے تھے۔ نماز پڑھے کیلئے قیام فرماتے تھے پھر جب صح قریب ہوجاتی تھی۔ تو وترکی نماز پڑھ لیتے تھے پھر اپنے بسترے پرتشریف لاتے تھے۔ اورا گرضر ورت اور رغبت ہوتی تو اہلیہ کے پاس جاکر صحبت فرماتے۔ پھر جب اذان کی آواز سنتے تو پھرتی کے ساتھ اٹھ جاتے تھے۔ اگر آب ماتے ورنہ وضوء فرما کرنماز کیلئے (مسجد) تشریف لے جاتے تھے۔

عن صلاة المنح رات كى نمازك بارك بل يو چهابات كى نماز تبجداوروتر دونول كوشائل بــ يعنى يه يو چها كرتبجداور وتر دونول كوشائل بــ يعنى يه يو چها كرتبجد تنى داول السليسل في يه يو چها كرتبجد تن اول السليسل (۱) صحيح بخارى ۱ ۲۵/۱ کتاب التهجد باب من نام اوّل الليل النح، صحيح ابن حبان مان ۱۲۵/۱، شرح معانى الاثار، السنن الكبرى للبهيقى. (مختار)

رات کے پہلے نسف تک عموماً نفل پڑھتے تھے۔فاذا کان من السحواو تو لینی رات کے آخری ھے میں وز اداکرویتے تھے۔جس سے دن رات کی ساری نمازیں وزیعنی طاق بن جا تیں۔اور ابھی مسئلہ ایسا بی ہے جو شخص یہ یقین رکھے کہ رات کے آخری ھے میں وہ جا گے گا۔ تو وزعشاء کی نماز کے ساتھ نہ پڑھے بلکہ لمن یفق بالانتباہ کیلئے وزمور کر دینا جا ہیے()۔

ثم اتی فراشه لیمی می کم از کیلئے تازہ دم ہونے اوراحیاءاللیل کا اثر زائل کرنے کیلئے قدرے آرام فرماتے (۲)۔المم باهله لیمی ازواج کے حقوق پورا فرماتے۔آپ اللہ حقوق اللہ حقوق العہ وحقوق اللہ حقوق اللہ کا دواج سب پورا فرماتے اوراس کیلئے بہترین نظام الاوقات بنادیا تھا۔جس میں حقوق اللہ کودیگر حقوق پر مقدم رکھا کرتے تھے۔دوسری طرف رہانیت اور تبتل سے آپ اللہ فیانے نے بمیشہ اجتناب کیا بلکہ خلوت میں جلوت اور جلوت میں خلوت ہوتی تھی ۔اس حدیث سے رہی گابت ہوا کہ رات کے اوقات میں بھی عبادت اکثر اور غالب رہتی تھی۔و الات وضّائی نی فیرکی نماز کیلئے یا خوب تازہ ہونے کیلئے یا وضوء کی اوضوء کی الفیل اوضوء کی نضیات کے حصول کیلئے وضوء کر کے سنت پڑھ لیتے تھے اور مہوتشریف لے جاتے۔

(٢) ليقوى بها على صلواة الصبح ومابعدها من وظائف الطاعات و لانّه يدفع صفرة السهر عن الوجه (جمع الوسائل ٨٢/٢) (مختار)

فنام رسول الله عَلَيْكُ حتى اذا انتصف الليل اوقبله بقليل فاستيقظ رسول الله عَلَيْكُ فجعل يمسح النوم عن وجهه ثم قرأ العشر الآيات المخواتيم من سورة ال عمران ثم قام إلى شن معلق فتوضاً منه فاحسن الوضوء ثم قام يصلى قال عبدالله بن عباس فقمت إلى جنبه فوضع رسول الله عَلَيْكُ يده اليمنى على راسى ثم اخذ باذنى اليمنى ففتلها فصلى ركعتين ثم ركعتين ثم ركعتين قال معن فصلى ركعتين ثم ركعتين قال معن ست مرات ثم اوترثم اضطجع ثم جاءه المؤذن فقام فصلى ركعتين خم خرج فصلى الصبح (١).

(۱) صحيح بخارى ۱ / ۳۰ كتاب الوضؤ باب قرأة القرآن بعدالحدث، صحيح مسلم ۱ / ۲ ۲ ۲ كتاب صلواة الليل وقيامه، سنن ابى داؤ د ۱ / ۹ ۹ ۱ كتاب صلواة الليل وقيامه، سنن ابى داؤ د ۱ / ۹ ۹ ۱ كتاب الصلواة باب فى الصلواة الليل، سنن النسائى ۱ / ۲ ۲۲ كتاب قيام الليل و تطوع النهار باب ذكر ما يستفتح به القيام، (مختار)

146

اپنا دایاں ہاتھ میرے سر پر رکھا، پھر جھے میرے دائیں کان سے پکڑا اسے مروڑا ا (تاکہ میری نیند دفع ہوجائے یا تاکہ جھے داھنے جانب کھڑا کردیں) پھرآپ ہوئے گئے ا نے دورکعت نماز پڑھی، پھر دورکعت پڑھیں، پھر دورکعت پڑھیں پھر دو پڑھیں، پھر دورکعت ہڑھیں ہے ا پھر دو پڑھیں، پھر دو پڑھیں۔ رادی معن نے چھر تبد دوگا نہ کاذکر کیا۔ پھر آپ ہوئے گئے ۔ نماز کیلئے) بلانے آئے تو آپ ایسے اللے اللے دورکعت مختر قرات سے پڑھیں۔ پھر مسجد کی طرف نکے اورضیح کی نماز رہھی۔

ابن عباس میں حضوراقد سے اللہ کے اعمال کے تعلیم و تعلم کاجذب: اُنہ بات عند میں و نه مختلات کے حضرت ابن عباس اس وقت نو جوان سے مردین کے تعلم کا جذب اور ترب شی جو نی کریم اللہ کی عبادت کو جانے کیا ہے حضرت ابن عباس اس وقت نو جوان سے مردین کے تعلم کا جذب اور ترب شی جو نی کریم اللہ کی محادث کی وقت جانے کیا ہے حضرت میموندرضی اللہ عنہا کے جرب میں لے آیا۔ رات کے وقت نبی کریم اللہ کی محادی۔ اس جس نے رات کو نیند کی حاجت بھی محالادی۔ اس جس نے رات کو نیند کی حاجت بھی محالادی۔ اس جند بے کا نتیجے تھا کہ جبر اللمة کامقام عالی حاصل کیا۔

و هی خالته حفرت میموندرضی الله عنها کے حالات تفصیل کے ساتھ استنمبر مدیث نمبر ۲ کی شمن میں گزر چکے ہیں۔ یہاں اس بات کی طرف اشارہ مقصود ہے کہ ابن عباس رضی الله عنه نبی کریم آلیک کے چیاز ادبھائی ہیں تو حضرت میموندرضی الله عنه کے بھی بھانچ ہیں اور ان کے بھی ذکی رخم محرم ہیں۔

 147

ممیز ہو۔ کونکہ بیوی کے ساتھ سونا اس کا حق ہوتا ہے اور آپ آلی اسلیلے میں بہت حساس تھے۔ بیوی سے الگ بستر سے میں سونا عجم کی عادت ہے جس کی بناتعلی اور تکبر پر ہے۔ البذااس کی تقلید نہیں کرنا چاہیئے۔
البتہ محرم ممیز کیلئے یہ بات جائز نہیں کہ میاں بیوی کی خلوت میں خل ہو لیکن اس کا جواب یہ ہے کہ حضرت میں دالیت میں مصر ہے۔ بخاری کی ایک روایت میں مصر ہے۔ بخاری کی ایک روایت میں یہ بھی آتا ہے کہ اکٹھے لیٹ کر آپ آلیا تھوڑی دیر کیلئے حضرت میموندرضی اللہ عنہ سے با تیں بھی کیں پھر سوگئے۔ جس سے سمر فی اللیل بھی خابت ہوتا ہے۔

اس طرف الله تعالی نے یوں اشارہ فرمایا کہ ان نسائستہ السلسل هی افسة وطاًواقوم قیلا (مزمل ۲) یعنی رات کو المحناسخت روند نے والی چیز یعنی بھاری ریاضت ہے۔ اوراس میں بات سید ھی نکلتی ہے۔ یعنی ذکر کرتے ہوئے دل و زبان موافق ہوتے ہیں اور عبادت کا بہی مفہوم ہے کہ فس کے نقاضوں کو چھوڑ کراسے خالق کا تالع بنانے کیلئے اس کے ساتھ جہاد کرو۔ المعشر الایات المنے یعنی ان فی خلف خلف اللہ حلوت والارض (الایة) دس آیتی پڑھتے ان آیات میں آفاتی اور انفسی دلائل تو حید کی خلف الله تعالی نے اشارہ فرمایا ہے۔ اور انسانی مذہر و نظر کو دعوت دی گئی ہے۔ نیند سے جاگ کر گویا انسان کوئی زندگی ملتی ہے۔ لہذا المحقے ہی اسے آیات الله میں مذہر و نظر کر دنا چاہیے۔ کہ دنیا وکا نئات میں الله تعالی کو جود و و و دو دانیت کے کتنے لا تعداد دلائل ہیں۔ سائنس کے جدید اکمش افات سے تو اور بھی ان کی دلالت واضح ہو چھی ہے۔

شم قام إلى شنّ معلّق ثن پرانے مثك كو كہتے ہيں۔ جس كا پانى زيادہ صُندًا ہوتا ہے كيونكداس كے مسامات زيادہ كشادہ ہوتے ہيں۔ بالخصوص جب اسے لئكا يا جائے۔ فت و صامنها الك نتح مل منه آتا ہے جو ظاہر ہے كيكن اگر شن كى تاويل قربة سے كى جائے تو مؤنث كى خمير راجع كرنا بھى جائز ہے۔ فاحسن

الوضوء يهال پراسباغ اورا كمال كواحسان الوضوء تجير كيا ب صحيحين بين به فتوضا وضوء أ احسن أبين الوضوء من لم يكثر وقد ابلغ يعني بانى بهى زياده استعال نبيس كياليكن اعضاء كمل دهولئے فقمت اللى جنبه مسلم اور بخارى بين تقريح بى كه حضرت ابن عباس رضى الله عنه في وضوء كركنيت ما ندهى -

این عباس کے کان مروڑ نے کی حکمتیں: ایک روایت یس آتا ہے فقمت عن یسارہ ففتل اللخ نبی کریم اللہ نبی کا کان مروڑ کراسے دائیں جانب کھڑا کردیا۔ اس مدیث میں اجمالاً ذکر کیا گیا تھا۔ سر پر ہاتھ رکھنے اور کان مروڑ نے کی وجہ کیا تھی ؟

ملاعلی قاری رحمۃ اللہ علیہ نے اس کی متعدد وجوہ ذکر کی ہیں۔ مثلاً میر کہ ہاتھ رکھنے کی ہرکت سے ابن عباس رضی اللہ عنہ کو نبی کر پر میں اللہ عنہ کو نبی کر پر میں اللہ عنہ کو نبی کر میں اللہ عنہ کو بادراک کرسیس ۔ بائیس جانب کھڑ ہے ہو کر مخالفت اللہ عنہ کی نبینداڑ جائے اور بیدار ہو کر حالات کا خوب ادراک کرسیس ۔ بائیس جانب کھڑ ہے ہو کر مخالفت سنت پراس کو تنبیہ ہوجائے اور تاکہ بائیس سے دائیس جانب آنے میں ابن عباس رضی اللہ عنہ آپ میں ہے اطاعت کریں۔

علامہ پیجوری رحمۃ اللہ علیہ نے لکھا ہے کہ معلم شاگر دکوکان سے پکڑ کرتھوڑا مروڑ ہے تواس سے شاگر دمیں ذکاوت پیدا ہوتی ہے۔حضرت رہنے رحمۃ اللہ علیہ کہتے ہیں کہ امام شافعی رحمۃ اللہ علیہ ایک دن گھوڑ ہے پرسوار ہوگئے میں ساتھ کھڑا ہوگیا تو انہوں نے میرا کان پکڑ کرمروڑ الجھے اس سے تبجب ہوا لیکن بعد میں جب ابن عباس رضی اللہ عنہ کا بیدوا قعہ جھے معلوم ہوا تو پتہ چلا کہ امام رحمہ اللہ کوئی ایسا کا منہیں کرتے جس کی کوئی اصل نہ ہو۔

قال معن ست مرات چوم تبددودورکعت کا ذکرکیایوں آپ الله نے باره رکعت تجدکے پر اور کعت تجدکے پر سے۔ امام ابوطنیفہ رحمۃ الله علیہ نے اس کو ترجیح دی ہے کہ تجد میں افضل سے ہے کہ باره رکعت پڑھی جائیں۔ ویسے اس میں توسع ہے جتنی بھی سہولت اور نشاط میں پڑھی جائیں کا فی ہیں۔

149

## كيلئة تازه دم بوسكين اوررات كي تفكا وك دور بو (١) ـ

فجر کی سنتوں کے بعد استراحت کے بارے میں اہل علم کے مختلف اقوال (۱) فجر کی سنتوں کے بعداستراحت: يُل علامه بنوريٌّ نُـ كَلَما بِ الـضـجعة بعد ركعتي الفجر قداختلف فيهاالصحابة والتابعون ومن بعدهم على ثمانية اقوال(١)الاول إنّها سنة وإليه ذهب الشافعي وأصحابه قال النوويُّ في شرح المهذب هو المختار (٢) والثاني: إنّها مستحبة وروى ذلك عن جماعة من الصحابة منهم أبوموسي، رافع بن خدريج وأبي هريرة وأنس وروى عن فقهاء المدينة السبعة وابن سيرين(٣) والثالث: انها واجبة لاتصح الصلواة الفجر بدونهاو هوقول ابن حزم فقد جعلها شرطاً في صحة صلواة الصبح وقدبالغ ابن العراقي في شرح التقريب في الردّعليه وقال هذا غلوّرٌ فاحشّ. الخ (٣) الرابع: إنّهابدعة وروى عن ابن مسعود وابن عمروالأسودابن يزيدوابراهيم النخعي. واليه ذهب مالك من الائمة وحكاه القاضي عياض عنه وعن جمهورالعلماء (٥) والخامس: إنّها خلاف الأولي روى عن الحسن البصري(٢)السادس: انها ليس مقصودة لذاتها وانما الغرض الفصل امّا بضجعة أوحديث أوغيرها وحكى ذلك عن الشافعي (٧)السابع: انّهامستحبه في البيت دون المسجدويروي عن ابن عمرويقول الحافظ في الفتح وقواه بعض شيوخنا (٨) الثامن: إنّهامستحبة لمن يقوم الليل لأجل الاستراحة لامطلقاً واختاره ابن العربي ويشهدله حديث عائشة عندعبدالرزاق والطبراني لم يضطجع سنة ولكنّه كان يدأب ليلة فيستريح (معارف السنن ١٨/٣ تا ٢٩) مذهب الحنفية كما يقول ابن عابدين في ردالمحتار.

 اس مدیث میں اس بات کی تقری ہے کہ ابن عباس رضی اللہ عنہ آپ اللہ کے ساتھ تقل میں شریک ہوگئے کے ساتھ تقل میں شریک ہوگئے تھے۔ ہمارے احتاف نے بیکہا ہے کہ نقل کی جماعت علی سبیل التداعی ہوتو مروہ ہے۔ بعض فقاوی میں بیہ جائز ہے۔ تین ہوں تو اختلاف ہے اور اگر مقتدی چارہوجا کیں تو با تفاق احتاف مروہ ہے۔ (۱)۔ والله اعلم بالصواب.

ترجمہ: حضرت عبداللہ بن عباس رضی اللہ عنہ سے روایت ہے کہ نبی کریم اللہ عنہ سے روایت ہے کہ نبی کریم اللہ اللہ ال رات کوتیرہ رکعت نماز پڑھتے تھے۔

(بقیہ حاشیہ ص ۱۳۳۱) کے شاگردوں کا اختلاف ہے۔ امام اوائی ،ائن الی الذہ عقیل، ایس، شعب اور ان کے اکثر شاگردوں نے بقل کیا ہے یہ لیٹنارکعی الفجر کے بعد ہوتا ہے جبکہ امام الگ نے مو طاش نقل کیا ہے۔۔۔۔ ٹے اور سے اور ساامام اور سے بقل السبح (مؤطا امام میں اصطح حتیٰ جاء ہ المؤذن فصلیٰ رکعتین خفیفتین ٹم خوج فصلی الصبح (مؤطا امام میں اسلک ص ۱۰) ایمی پیٹنارکعی الفجر سے پہلے ہوا کرتا تھا۔ حافظ ابن عبدالرس نے اس روایت کور ہے دوسرے اہل علم نے امام زہری کے دوسرے تلانہ ہی روایت کور جے دی ہے۔ کونکہ وہ اکثر ہوتا کور ہی جوہانے کے بعد حفیہ کے اس قول کی اور زیادہ تا ئید ہوجاتی ہے کہ آخضرت کے اس عمل اصلاح اللی سے تعب کی بناء پر تھا۔ اور آپ کے اس عمل کی حشیت سنت عادیت کی تھی نہ کہ سنت انشریعی کی ہی۔ (تکار) الماعلی قاری نے کہ تعلق الموروع النہ الفول الفول الفول المام اربعہ قال فی الکافی اِن التطوع بالجماعة انما یکرہ إذا کان علی سبیل التداعی اذا کان سوی الامام اربعہ قال فی الکافی اِن التطوع بالجماعة انما یکرہ اِذا کان علی سبیل التداعی اواحد کورہ اتفاقاً و اماماذ کرہ فی شرح النقایة من جو از الجماعة فی النوافل مطلقاً نقلاً عن المحیظ و کہ المام ادکر فی الفتاوی الصوفیة و نحوهما فمحمول علی اُن المراد بالجواز الصحة و ھی لاتنافی و کہ ذاماذ کر فی الفتاوی الصوفیة و نحوهما فمحمول علی اُن المراد بالجواز الصحة و ھی لاتنافی الکر اھة (جمع الوسائل ۲۰۲۸) (مختار)

(٢) صحيح بخارى ا / ١٥٣ كتاب التهجد باب كيف صلواة النبي مَالَيْكُ ، صحيح مسلم ا / ٢ ٢ ٢ كتاب صلواة النبي مَالَيْكُ ، صحيح مسلم ا / ٢ ٢ كتاب صلواة المسافرين وقصرهاباب الدعا في صلواة الليل وقيامه، سنن النسائي باب الوتر ثبلات عشرة ركعة ١ / ١ كتاب الصلواة ، جامع ترمذي ا / ٠ • ١ كتاب الصلواة باب منه (مختار)

صلوة الليل مين تعدادر كعات: شلاث عشرة ركعة السية بل باره ركعت تجدكا ذكر بهاور ورّك من تين ركعتيل موكيل ورّك ساته بندره بنته بين ركعتيل موكيل ورّك ساته بندره بنته بين ركعتيل موكيل تو كويا آي الله في في الله في الله

احناف کے نزدیک صرف آٹھ رکعت پڑھنے پر بھی اکتفاء جائز ہے کیونکہ اگر مجموعہ تیرہ ہوتواس میں سے تین وتر اور دو فجر کی سنتیں بھی ہوسکتی ہیں۔ الہذا تبجد کی کل آٹھ رکعتیں باقی بچیں۔ لیکن ملاعلی قاری رحمۃ اللہ علیے فرماتے ہیں کہ بارہ رکعتوں والاقول مختار ہے۔جیسا کہ بعد کی روایت میں آتا ہے۔

(ك) حدّثنا قتيبة بن سعيدثنا ابو عوانة عن قتادة عن زرارة بن اوفى عن سعد بن هشام عن عائشة أنّ النبيّ عَلَيْكُ كان اذا لم يصل بالليل منعه من ذلك النوم اوغلبته عيناه صلّى من النّهار ثنتى عشرة ركعة (١).

ترجمہ: حضرت عائشہرض اللہ عنہ کہتی ہیں کہ نبی کریم اللہ جسبرات کو تہجد نہ پڑھ سکتے۔ نینداس کے لئے رکاوٹ بنتی یا یہ کہا کہ آ نکھ لگ جاتی تو (تہجد کے بدلے) دن کوبارہ رکعت نفل پڑھ لیتے تھے۔

منعه من ذالک النوم ایخی نیندگی وجه سره گئیں۔ او غلبته عیناه رادی کاشک ہے کہ الفاظ کو نے تھے کین مطلب دونوں کا ایک ہے (۲)۔ صلی من المنهاد المخ اس میں ایک واس بات پر منبیہ ہے کہ آپ الله عام عبادة کا کتاا ہم ام کرتے تھے۔ کہ قضاء نہیں ہونے دیتے تھے۔ اگر رات کو تجبد قضاء (۱) صحیح مسلم ا ۲۵۲ کتاب صلواۃ المسافرین وقصر هاباب ماجاء فی صلواۃ اللیل و من نام عن ملوته باللیل صلی بالنهاد، سنن النسائی ا ۲۵۵۷ کتاب قیام اللیل و تطوع النهاد باب کم یصلی من نام عن الصلواۃ او منعه (مختار)

(٢) علامة يَجُوريُّ فَكُما عِكه فالمقصوديه بيان سبب عدم صلوته في الليل أو للشك من الراوى أو للتقسيم والفرق بينهما أن الاوّل محمول على ماإذااراد النوم مع امكان تركه اختياراً والثانى محمول على مااذا غلبه النوم بحيث لايستطيع دفعه (المواهب اللدنية ٢١١) (مختار)

ہوجاتی تو دن کواس کا اعادہ فرماتے(۱) اور ساتھ ساتھ اس صدیث سے امام ابوطنیفہ رحمۃ اللہ علیہ کے قول کو تقویۃ بھی ملتی ہے کہ نماز تہجد کی رکعات کی تعداد بارہ ہے۔جیسا کہ ملاعلی قاری رحمۃ اللہ علیہ نے ذکر کیا ہے باقی وترکی قضاء اس صدیث سے بطریق اولی معلوم ہورہی ہے۔ نیزیہ بھی ممکن ہے کہ آپ اللہ وترکو بھی قضاء اس صدیث سے بطریق اولی معلوم ہورہی ہے۔ نیزیہ بھی ممکن ہے کہ آپ اللہ وترکو بھی قضاء نہ ہونے دیتے تھے یا قضاء کی صورت میں صبح کی نماز سے پہلے ہی قضاء کر لیتے تھے۔ دن تک نہیں رہنے دیتے تھے۔

152

(۸) حدّثنا محمّد بن العلاء انا ابواسامة عن هشام يعنى ابن حسان عن محمّد ابن سيرين عن أبى هريرة عن النبيّ عَلَيْكُ قال اذا قام احدكم من الليل فليفتتح صلواته بركعتين خفيفتين (۲).

عبادت میں مذرخ و تخفیف:

ابتداءً تخفیف بونی چاہیے۔گاڑی بھی آ ہتدرفارے چل کر بتدرخ تیز ہوتی جاتی ہے قنی کریم ہوائی ہی ابتداء تخفیف بونی چاہیے۔گاڑی بھی آ ہتدرفارے چل کر بتدرخ تیز ہوتی جاتی ہے قنی کریم ہوائی بھی عبادت میں ایک نفیاتی طریقے کی طرف رہنمائی فرماتے ہیں۔ کہ پہلے دور کعتیں خفیف پڑھاو۔ پھر آ ہت آ ہت طبیعت میں نشاط اور آ مادگی پیدا ہوجا کی گے۔ نیز شیطان کا جواثر ہوتا ہے۔ وہ بھی زائل ہوجاتا ہے۔ اور سستی زائل ہوجاتی ہے۔ اس کے بعدنٹس پر ہو جھ بڑھایا بھی جا سکتا ہے۔

لحض علماء کا خیال ہے کہ نبی کر یم اللہ تہجد سے قبل دور کعت تحیۃ الوضوء کا حکم در ہے ہیں۔ جو (۱) الماعلی قاریؒ نے اس روایت سے دومائل کا استباط کیا ہے لکھتے ہیں وفید دلیل علی جو از قضاء النافلة بل علی استحب ابد لسلا یعتاد النفس بالترک و علی أنّ صلواۃ اللیل ثنتاعشرة رکعة کماهو المختار عند ابی حنیفة (جمع الوسائل ۸۸/۲) (مختار)

(٢) صحيح مسلم ٢ ٢٢٢ كتاب صلواة المسافرين وقصرهاباب الدعا في صلواة الليل وقيامه، شرح السنة للبغوى كتاب الصلواة رقم الحديث ٤٠ ، سنن ابى داؤ د ١ ٩ ٣/١ كتاب الصلواة باب الفتتاح صلواة الليل بركعتين، السنن الكبرئ للبيهقى ٢/٣ كتاب الصلواة (مختار)

مخضر قرات کے ساتھ پڑھی جاتی ہیں۔ جبکہ بعض شراح نے وتر سے پہلے دور کعتوں پراس مدیث کوحمل کیا ہے لیکن صلوٰ قالیل کو وتر کے ساتھ مخصر کرنا بعید معلوم ہور ہا ہے جبکہ یہاں پر مطلق صلوٰ قاکا ذکر ہے۔ لہذا تہد کی نماز سے پہلے کی دونفل لینااولی ہے۔

(٩) حدّثنا قتيبة بن سعيد عن مالک بن أنس ثنا إسحاق بن موسى ثنا معن ثنا مالک عن عبدالله بن أبى بكر عن أبيه أنّ عبدالله بن قيس بن مخرمة أخبره عن زيد بن خالدالجهنّى أنّه قال لا رمقنّ صلواة رسول الله عن زيد بن خالدالجهنّى أنّه قال لا رمقنّ صلواة رسول الله على الله على

ترجمہ: حضرت زید بن خالد جھنی رضی اللہ عند فرماتے ہیں کہ میں نے ایک رات کو بیارادہ کیا کہ رسول اللہ علیات کی نماز کو آج خور سے ضرور دیکھوں گا۔ میں آپ علیات کی جو کھٹ پر مرر کھ کر لیٹ گیا۔ نبی کریم اللہ عند کی چو کھٹ پر مرر کھ کر لیٹ گیا۔ نبی کریم اللہ نہا کہ آپ علیات کے خیمہ کی چو کھٹ پر مرر کھ کر لیٹ گیا۔ نبی کریم اللہ نہا کہ وضخ کر رکھتیں پڑھیں۔ پھر دور کھتیں خوب طویل پڑھ لیں۔ پھر دور کھتیں پڑھ لیں جو کہ ان ان سے پہلے پڑھی جانبوالی دور کھتوں سے کم تھیں۔ پھر دور کھتیں پڑھیں جو کہ ان پہلے پڑھی جانبوالی دور کھتوں سے بھی کم تھیں۔ پھر دور کھتیں پڑھی جو کہ ان جانبوالی دور کھتوں سے بھی کم تھیں۔ پھر دور کھتیں پڑھی جو کہ ان جو کہ ان جو کہ ان کہا پڑھی جانبوالی دور کھتیں ہے کہ تھیں۔ پھر دور کھتیں پڑھی جو کہ ان جو کہ ان کہا پڑھی جانبوالی دور کھتوں سے بھی کم تھیں۔ پھر دور کھتیں پڑھی جو کہ ان کہا پڑھی جانبوالی دور کھتوں سے بھی کم تھیں۔ پھر دور کھتیں ہوگئیں۔

(۱) صحيح مسلم ۲۲۲۱ كتاب صلواة المسافرين وقصرهاباب الدعافي صلواة الليل وقيامه، سنن ابى داؤد ۱/۰۰ كتاب اقامة الصلواة الليل، سنن ابن ماجة ص٩٠ كتاب اقامة الصلواة والسنة فيها باب ماجاء في كم يصلّى بالليل. (مختار)

زیدبن خالد: زیدبن خالد الجهنی رضی الله عنه مشهور صحابی بین ابوزر عدا بوعبد الرحمان یا ابوطی کنیت تھی مسلح حدید بیسی شریک رہے۔ فتح مکہ کے دن اپنے قبیلہ جھینہ کے علم بردار تھے۔ وہی میں پیاس سال کی عمر میں وفات پائی جبکہ بعض نے تاریخ وفات ۱۸ حتر برکی ہے۔ مدید میں وفات پائی (۱)۔

لارمقن (٢) صلواة الخ دين علوم كي بار يين صحابه كرص اورتجس كالبهترين نمونداس مديث مين موجود ب- جب بهي موقع ملاتوايخ منهوم في العلم مون كا ثبوت ديا-

گروں میں تاک جھانگ: فتوسدت عتبته توسدے معنی وساده بنانا یعنی بطورسر بإنه استعال کرنا ہے۔ معتبة دروازے کی چوکھٹ کی تجھلی پٹی کو کہتے ہیں لیکن اس سے گھر کا دروازه مرادنہیں کیونکہ اس شم کا تجسس قو ممنوع ہے کہ سی کے گھر کے اندر جھا نکا جائے اگر چہ مقصد نیک ہولیکن نا جائز ہے۔ بلکہ باہر سے تین بارا جازت لینا ضروری ہے۔ اگر جواب نہ ملے یا نفی میں ملے تو واپس لوٹنا لازم ہے۔ اس لئے عتبہ سے مراد بھی خیمے کے دروازے کی چوکھٹ ہے اور یہ سی سفر ہی کا واقعہ ہے۔ اس احتمال کو ملاعلی قاری ، علامہ مناوی اور علامہ بچوری رحم ہم اللہ نے ظاہر کہا ہے۔

بہر حال صحابہ آپ آلیکے کے گریں تاک جھا تک نہیں کرتے تھے۔ بلکہ چونکہ نی کر یم آلیکے کی زندگی کا ایک معتد بہ حصہ اسفار میں اور گھر سے باہر بھی گزرا ہے۔ جن میں جہاد، جج اور عمرے کے اسفار قابل ذکر ہیں۔ تو ایسے دنوں میں صحابہ کرام آپ کی عبادت اور اعمال معلوم کرنے کے متلاثی ہوتے تھے۔ عتبت او فسطاطه عتبہ چو کھٹ کو کہتے ہیں اور فسطاط ہڑے خیے کو کہتے ہیں۔ دوسری صورت میں بھی عتبہ کا لفظ مقدر رہیگا۔ یعنی اوعتبتہ فسطاطہ کے خیے کی چو کھٹ پر۔ راوی کو یہاں شک ہے۔

حضوراقد سعالیہ کی عبادت شب کے پھیمونے: بہر حال آپ اللہ جہاں مقیم تھے۔ اس مکان کے درواز ویا اس خیمے کے درواز رے پرآپ اللہ کی نماز کا انظار کرنے لگا۔ فیدالک ثلث عشر ہ کے عدو اللہ اس سے قبل بارہ رکعت کا ذکر کیا۔ اوراب وتر کے ساتھ تیرہ درکعت بتائے گئے۔ یہاں یہ بات

(١)كذافي الاصابة وقال عبدالروف المناويّ مات ٨٨هـ وله ٨٥ سنة والله اعلم.

(٢) الرمق هوبه النظر إلى الشئ على وجه المراقبة والحافظة (المواهب اللدنية ١٤١)

کہ وتر ایک رکعت ہے یا تین رکعت ، محل بحث نہیں ، کیونکہ یہ سئلہ کتاب الصلوٰ قامیں خوب تحقیق کے ساتھ گرر چکا ہے۔ یہاں آپ آلگے کی عبادت کا محض ایک نمونہ پیش کیا جاتا ہے۔ لہذا وتر کے ساتھ تیرہ رکعت مقصود ہو۔ تو تنجید دس رکعت بنتے ہیں۔ اور پہلے کے دور کعت تحیۃ الوضوءان میں ثار نہیں ہیں۔ بصورت دیگر بارہ رکعت تبجد کے ساتھ تین رکعت ملاکوکل پندرہ رکعت بنتے ہیں۔

(١٠) حدّثنا إسحق بن موسى ثنا معن ثنا مالک عن سعيد بن أبى سعيد المقبرى عن أبى سلمة بن عبدالرحمان أنّه أخبره أنّه سأل عائشة كيف كان صلواة رسول الله عَلَيْكُ في رمضان فقالت ماكان رسول الله عَلَيْكُ في رمضان فقالت ماكان رسول الله عَلَيْكُ ليزيد في رمضان ولافي غيره على احدى عشرة ركعة يصلّى اربعا لاتسال عن حسنهن وطولهن ثمّ يصلّى اربعا لاتسال عن حسنهن وطولهن ثمّ يصلّى اربعا لاتسال عن حسنهن وطولهن ثمّ يصلّى اربعا يا عائشة قلت عائشة قلت يارسول الله أتنام قبل ان توتر قال يا عائشة إنّ عينى تنا مان ولاينام قلسدن.

ترجمہ: ابوسلمہ بن عبدالرجمان رحمۃ الله علیہ کہتے ہیں کہ انہوں نے حضرت عائشہ رضی الله عنہا سے بوچھا کہ نبی کریم الله علیہ کہتے ہیں کہ انہوں نے حضرت عائشہ رضی الله عنہا سے بوچھا کہ نبی کریم الله عنہا کہ نبی کریم الله علی کریم الله علی اور کعت تبجد سے زیادہ نہ تو رمضان میں پڑھتے تھے اور نہ غیر رمضان میں ۔ آپ اولاً چار رکعت نماز (ایک سلام سے) پڑھتے تھے۔ان چار رکعتوں کے حسن کا اور طول کا مت بوچھا۔ پھر مزید چار رکعت نفل پڑھتے تھے۔ان چار رکعتوں کے حسن اور طول کا مت بوچھا۔ پھر مزید وار رکعت (ایک سلام سے) پڑھتے جار کھتوں کے حسن اور طول کا مت بوچھا۔ پھر تین رکعت (ایک سلام سے) پڑھتے جا

(۱) صحيح بخارى ۱۵۳/۱ كتاب التهجد باب قيام النبى الليل في رمضان وغيره، صحيح مسلم ۲۵۳/۱ كتاب الصلواة المسافرين وقصر هاباب صلواة الليل وعددر كعات النبى النبي في السلم ۲۵۳/۱ كتاب الصلواة باب في الصلواة الليل، سنن النسائي ۲۳۸/۱ كتاب قيام الليل و تطوع انهارباب كيف الوتربثلاث (مختار)

تھے۔حضرت عائشہرضی اللہ عنہا کہتی ہیں کہ میں نے رسول اللہ اللہ اللہ سے عرض کیا۔ کہ کیا آپ آلیہ فائی ناز وتر سے پہلے بھی سوتے ہیں (کیا وہ اس طرح قضاء نہیں ہوگی) تو آپ نے فرمایا کہ میری آ تکھیں سوتی ہیں اور دل جاگتا ہے (یوں قضاء ہونے کا خطرہ نہیں ہوتا)

غماز تہجد کے رکعات اور اضطراب روایات: کیف کانت صلواۃ النے یہاں پرنماز تہجد کے بارہ میں سوال کیا گیا ہے جو کہ نیند کے بعدادا کی جاتی ہے۔ اس لئے آپ نے جواب دیتے وقت 'و لاف میں سوال کیا گیا ہے جو کہ نیند کے بعدادا کی جاتی ہے۔ اس لئے آپ نے جواب دیتے وقت 'و لاف می خیسر ہ ''کااضافہ کردیا ہے۔ اب نیند سے قبل پڑھی جانے والی نماز جو کہ تراوت کی صورت میں آپ نے پڑھی تھیں گیارہ سے زیادہ ہوسکتی ہیں۔ چنا نچہ اس حدیث سے تراوت کے آٹھ ہونے پر استدلال لغو ہے۔ وہ الگ نماز ہے اور جمہور صحابہ کا اس پر اجماع منعقد ہو چکا ہے۔ کہ وہ بیس رکعت پڑھی جا تیں گی۔ اور یہی انکہ اربحہ کا فہ بہت ہے (۱)۔ یہاں پر سوال کا منتااصل میں یہ تھا کہ چونکہ رمضان شریف میں نبی کر یم اللہ عنہا کے عوما عبادت میں عام ونوں کی نبیت اضافہ فرماتے تھے۔ لہٰذا ابوسلمہ آنے رمضان شریف میں تہجد کے بارے میں دریافت کیا اور حضرت عا تشریضی اللہ عنہا نے فرمایا کہ رمضان شریف میں بھی آپ آگئے۔ کی نماز جومعمول کے مطابق ہوتی تھی۔

(۱)اور یبی بیس رکعات تر اوت سنت مؤکدہ ہیں۔ بعض لوگ اس سے اٹکار کرتے ہیں مگران کا اٹکار کم فہنی اور لاعلمی پرمبن ہے۔افادہ کے لئے ناچیز کا ایک تفصیلی فتو کی جو ماہنامہ الحق میں شائع ہوا ہے۔ یہاں پر بھی پیش کیا جا تا ہے۔

رسول الله في المسلمة من (٢٠) ركعات ر اور كريا صنح كالتحقيق

محترم جناب الميرير مامنامه "الحق" اكوژه خنك\_

السلامليكم ورحمة الله اميد بمزاج گرامي بخير مول ك\_

جناب! ماہنامہ الحق متمبر ۲۰۰۷ء جلد نمبر ۳۹ ص ۳۳ میں درج ہے کہ نبی کریم اللہ نے بنفس نفیس ۲۰ رکعات تر اور کی نماز ادافر مائی ہے .....حالانکہ علائے احماف اس کے خلاف فر ماتے ہیں۔

ا۔ امام ابوصنیفہ اُ بھی میں انتہائیہ نمازعشاء سے لے کرنماز فجر تک آٹھ رکعت اور تین وتر پڑھتے تھے (کتاب الآثارص۲۱) ۲۔ امام محمد تلمیذ ابو حنیفہ رسول اللہ اللہ اللہ مصان میں یا اس کے علاوہ گیارہ رکعات پر اضافہ نہیں (بقیہ اسکے صفحہ پر) احدی عشر و کعة بعض دیگر روایات میں تیره رکعات اور بعض میں اس سے بھی زیادہ کا ذکر موجود ہے بلکہ خود حضرت عاکشہ رضی اللہ عنہا کی حدیث گزرگی ہے۔ جس میں بارہ رکعات تجد کی طرف اشارہ ہے۔ کیونکہ آپ رضی اللہ عنہا فرماتی ہیں کہ رات کو بھی فوت ہونے کے بعد آپ دن کو بارہ رکعات پڑھ لیتے تھے۔ اور بارہ رکعات کے ساتھ وترکی تین رکعات ملائی جا کیں تو پندرہ بنتی ہیں۔ (بقہ جاشی 187) کرتے تھے (موطاء امام محمد مترجی سر ۱۳۲) سے امارین عام خشی مارے کی القدیر میں کھتے

(بقیہ حاشیص ۱۵۲) کرتے تھے (موطاء امام محمد مترجم ص۱۲) س۔ امام این هام حنیؓ: بداید کی شرح فٹے القدیریش کھسے میں۔ اپنے مار اور کے کی مسنون تعداد گیارہ رکعات ہے (ص ۲۰۰ ج۔ ۱) س۔ علامہ بدرالدین عینیؓ: (عمدہ القاری ص ۲۰۷ ج۔ ۱) سے علامہ بدرالدین عینیؓ: (عمدہ القاری ص ۲۰۷ ج۔ ۱) مداعلی قاری حنیؓ: (اتعلیق المجد ص ۱۹۱) ۔ حولانا عبدالمی کھسویؓ: (اتعلیق المجد ص ۱۹۱) ۔ انورشاہ کا تمیر گی (العرف الشذی ص ۱۹۷ ج)

۸۔ جلال الدین الیوطی: (المصابح فی رکعات التر اوج ص ۱۹ ۔ و عبد الحق دبلوی: (ما ثبت بالند ص ۱۲ دا ۔ واضی شمس الدین (القول الفصیح ص ۵) اا ططاوی شرح درفتا رجلد نمبراص ۲۹۵ ان المنب علی الله یہ مصله المعسوین بل ثمانیاً ۱۲ ۔ ابوالسعو وشرح کنز الدقائق ص ۱۲ دج المعری الأن المنب علی المسلم مصل عشوین بل ثمانیاً ۱۳ ۔ الشخ عبد الحق دبلوی اپنی کتاب "فتح سرالمنان فی تائید فد جب العمان " کے صفی نمبر ۱۳۲۷ میں کسے میں ۔ ولم یثبت روایة عشوین منه علی کتاب میں کو المتعادف : (مروج ۲۰ رکعت نج مالی سے المتاب نیس سے بیاب کوئی نص ہے تو بندہ کی رہنمائی فرمائیں کرسول اکرم الله نے ۲۰ رکعت تراوت اوا کی ہے۔ امید جن روایہ دیں گے۔ دعا و عبد الرحمان یز وائی (لا بربرین)

## الجواب وبالله التوفيق

آ نجناب کاوالہ نامہ بتاری ۱۹ ارا کو برم ۱۳۰۰ء بمطابق ۱۲ رمضان المبارک ۱۲۳۵ هو موصول ہوا۔ پڑھ کر بڑی خوثی ہوئی کہ آ نجناب نے احتر کے مضمون کا بغور مطالعہ کیا ہے۔ اور پھر ایک مقام (آ نخضرت سی اللہ نے خود بنفس نفیس میں رکعت تر اور ک پڑھی ہے) کے اصل ماخذ کے بارے میں مزید وضاحت طلب کی۔ اور اس روایت کورد کرنے کے لئے چند اقوال اور بعض کتابوں کے حوالجات بھی تحریر فرمائی ہے۔ آ نجناب نے جس صدیث کے بارے میں وضاحت طلب کی ہے وہ صدیث مصنف این انی شیبر ۱۳۹۲/۲ باب ماروی فی عدد رکعات الصیام فی شہر رمضان میں فرورہ ہے۔ مصنف این انی شیبر کافاظ یہ ہیں: حدثنا یزید بن ھارون آخیرنا ابر اھیم ابن عثمان عن الحکم عن مقسم عن ابن عباش آئ رسول الله مالی فی رمضان عشرین رکعة و الو تو (مصنف این کی شیبر ۱۳۹۲/۲) (بقید الله مالی فی رمضان عشرین رکعة و الو تو (مصنف این الی شیبر کی الله مالی فی رمضان عشرین رکعة و الو تو (مصنف این الی شیبر کی الله مالی فی رمضان عشرین رکعة و الو تو (مصنف این الی شیبر کی سات کی سات کی سات کان یصلی فی رمضان عشرین رکعة و الو تو (مصنف این کی شیبر کی سات کی سات کی سات کان یصلی فی رمضان عشرین رکعة و الو تو (مصنف این کی شیبر ۲۰۰۰)

\_\_\_\_\_

- (۲) ای طرح العینان و کاء السه (الحدیث) آئیسی سرین کے تئے ہیں۔ بیروایت بھی سندا ضعیف ہے گر اس کے باوجود بعض محدثین اور فقہاء کرام نے اس کومعمول بقرار دیا ہے۔
- (۳) اس کے علاوہ الماء طهور لاینجسه شنی الا ماغلب علی ریحه او طعمه (الحدیث) کے بارجود اہل مدید بارجود اہل مدید اور دوس کے نام جود اہل مدید اور دوس نے قتماء کرام نے اس کو معمول بقر اردیا ہے۔
- (٣) اى طرح كه من جمع بين الصلاتين من غير عذر فقداتى باباً من ابواب الكبائو (تومذى ١/٣) ال روايت كي باركي المردي ا

حضرت زیدین خالد جهنی کی روایت میں تیرہ رکعات کا ذکر ابھی ابھی گزر چکا ہے۔ بلکہ خود حضرت عائشہرضی اللہ عنہا کی بعض روایات میں تیرہ رکعات کا ذکر بھی آیا ہے۔ تو گویا حضرت عائشہرضی اللہ عنہا کی روایات اس باب میں مضطرب ہیں۔

159

اس لئے ہم کہتے ہیں کہ بارہ رکعتوں والی روایات کوتر جیجے دی جاتی ہے۔ کیونکہ وہ غیر مضطرب ہیں یا پھر دونوں میں تطبیق کی عادت بارہ رکعات پڑھنے یا پھر دونوں میں تطبیق کی عادت بارہ رکعات پڑھنے کی خادت بارہ رکعات پڑھنے کی تھی۔ لیکن بھی کہیں آٹھ پراکتفاء بھی کر لیتے تھے۔ اور ہوسکتا ہے کہ حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا کے چرے میں عام معمول یہی ہو۔

(بقيرماشير ١٥٨) هو بو على الرحبى وهو حنش بن قيس وهو ضعيف عنداهل الحديث ضعّفه احمد وغيره ليكن اسك بادبود والعمل على هذا عنداهل العلم ان لا يجمع بين الصلاتين إلا فى السفر اوبعرفة (الجامع الترمذى ١/٣٠٣)

ا مام ترفدی فرماتے ہیں: حنش یہ بوعلی الربی ہے اور اس کا نام حسین بن قیس ہے اور بیراوی محدثین کے ہاں ضعیف ہے۔ امام احمد اور دوسرے ائمہ جرج و تعدیل نے اس کی تضعیف کی ہے۔ لیکن اس کے باوجود اہل علم کا اس پڑمل ہے اور ان کے ہاں سفر اور عرفہ کے علاوہ جمع بین المصلا تین جائز نہیں۔

(۲) اى طرح كه طلاق الامة ثنتان وعدتها حيضتان (الحديث) الروايت كبار يشاهام ترفي فرمات بين كه حديث غريب والعمل عليه عندأهل العلم من اصحاب رسول الله عَلَيْكُ وغيرهم ترفى اورامام دارقطئ فرمات بين كه قال قاسم و سالم عمل به المسلمون وقال مالك شهرة الحديث بالمدينة تغنى عن صحة سنده (۲/۱/۳)

بیحدیث غریب ہاوراس پر آنخضرت کی گئے کائل علم صحابہ کرام اور دوسر سے اہل علم کاعمل ہے امام قاسم اور امام مام کہتے ہیں کہ اس پرمسلمانوں کاعمل ہے اور امام مالک نے فرمایا ہے کہ مدینہ منورہ میں کسی حدیث کی شہرت سند کی صحت سے مستغفی کردیتی ہے۔ اس طرح امام ترفی نے کئی مقامات برفرمایا ہے کہ بیحدیث سند کے لحاظ سے ضعیف ہے گمر اسپراہل علم کاعمل ہے۔ اور آج مک کان بیعمل تا رہا ہے۔

(2) مقدمة الله والمقدمديب كرجس طرح حديث مبارك سندكى وجد درجه صحت اور درجه سن تك پينچا ب تواسى طرح امت مسلمه كتاتي بالقبول سر بهي وه روايت باوجود سنداً ضعيف مون كر درجه (بقيد الكل صفحه ير)

حسن وطول صلوق:

معلوم ہوتا ہے۔ جو کہ نماز کے عشاق ہیں۔ ان کولنہ توں اور نماز کے دقائق معلوم ہوتے ہیں۔ نبی کریم آلیا تے اور مماز کے دقائق معلوم ہوتے ہیں۔ نبی کریم آلیا تے اور محابہ کیلئے نماز کی دنیا دوسری دنیا تھی۔ تیروں، تلواروں اور نیزوں کی بارش میں وہ نماز پڑھتے تو حرکت نہیں کرتے تھے۔ یصلی اربعاً یہ چونکہ فل ہیں۔ اس لئے ان کودودو پڑھنا اور چارچار پڑھنا پرا ہیں۔ (بقیہ حاشیہ سم 109) صحت وصن کامقام پالیتا ہے اس لئے کہ مدین عظام نے فرمایا ہے: قال بعض میں حکم للحدیث بالصحة اذا تلقاہ الناس بالقبول وان لم یکن له اسناد صحیح (تدریب الراوی الر) کا بحض نے کہا ہے کہ حدیث پرضح کا تھم اس وقت بھی لگا جائے گا۔ جب امت اس کوتول کرے اگر چاس کی سند ضعیف ہو۔

اورای وجہ سے محقق ابن هام ً نے فتح القدیراً (۳۱۱) میں فر مایا ہے کہ اذا تاید المضعیف ہما یدل علی صحته من القرائن کان صحیحاً کہ جب کی ضعیف روایت کی صحت پر قرائن شرع وال ہوں تو وہ مدیث صحیح ہے۔ اورای بناء پرمحد ثین اور فقہاء نے کافی سارے ذخیر واحادیث کصیح کہا ہے اوران کو معمول بہا قرار دیا ہے۔

ا مثلًا الاستذكار مين علامه ابن عبد البرقر مات بين كه لما حكى عن التومذى انّ البخارى صحّح حديث البحو هو الطهور ماؤه و ااهل الحديث لا يصححون مثل اسناده لكن الحديث عندى صحيح لان العلماء تلقوه بالقبول (بحواله مقدمه اعلاء السنن/ ٢١ ـ وتدريب الراوى ا/ ٢٥) 'امام ترفي فرمات بين كهام بخارك البحو هو الطهور ماء ه كوي فرمات بين اوردوس محدثين اس روايت كوسندكي وجد سي في نيس كتم مرمر يزوك يه يوايت وسندكي وجد سي في نيس كتم مرمر يزوك يك بهروايت وسندكي وجد سي في نيس كتم مرمر ين وكي بيد روايت وسندكي وجد سي في نيس كتم مرمر وايت كوتول كياب

۲-ای طرح علام محقق ابن حام و قول التومذی (والعمل علیه عنداهل علم) یقتضی قوة أصله وإن ضعف خصوص من هذه الطویق (فق القدر ا/ ۲۱۷) كهام ترزی كاقول كه الم علم كه بال اس روایت بر ممل به اس روایت كافقا ضد كرتا برا اگر چه انهول نے سند كی وجه سے اس كوضيف كها بور

اور کتاب الطلاق کے فصل اول پین کھا ہے و مسما یصحّح الحدیث ایضاً عمل العلماء علی وفقه وقال الترمذی عقیب روایة حدیث طلاق الامة ثنتان ..... حدیث غریب والعمل علیه عنداهل العلم من أصحاب رسول الله عَلَیْتُ وغیرهم (فتح القدیر ۱۳۳/۳) علاء کامل کی ان امور پی سے ہے جس کی وجہ سے مدیث کومی کہاجا تا ہے۔ امام ترذی نے طلاق الامة ثنتان و عدتها حیضتان کے بعد فرمایا ہے بیمدیث فریب ہے گرمی ابرکرام اور دوسر سے ابل علم کے ہاں اس پرمل ہے۔

اى طرح علامه سيوطي في تعقبات من ايك اورمثال ذكركرت موئ فرمايا ب: وقال التومذي (بقيه الكصفير)

-----

(بقيه حاشير ١٢٠) قدرأى ابن المبارك وغيره.

بي چندروايات بطور نموند ذكر كے گئے ورنداور بھى كافى سارى روايات فرخيره كتب مديث ميں موجود بيں - جو سنداً ضعيف بيں گرتلقى بالقول كى وجہ سے علماء نے ان كومچے كہا ہے ۔ تلقى الامة بالقول الى دليل صحت ہے كہ بھى بھى فہر تلقى الامة بالقول كى وجہ سے ضعيف روايت تو اتر كے تكم ميں بوجا تا ہے ۔ چنا نچه علامہ ابو بكر الجصاص الراز كَ نے احكام القران ميں كھا ہے۔ وقد استعملت الامة هذين الحديثين وان كان وروده من طريق الاحاد فصار فى خير التو اتر لأن ما تلقاه الناس من اخبار الاحاد بالقبول فهو عندنا فى معنى التو اتر

(احكام القرآن ١ /٣٨٦ بحواله مقدمه اعلاء السنن /٢٢)

ان دونو ل احاد ہو چا ہے مراس تعامل سے اس دونو ل احاد ہو چا ہے مراس تعامل سے میروایات اور اس نوائر کے حتی میں داخل ہوئے اس لئے کہ لوگوں کا خبارا حاد کو قبول کرنا اور اس بڑمل کرنا ہمارے ہال اور آس کے کہ لوگوں کا اخبارا حاد کو قبول کرنا اور اس بڑمل کرنا ہمارے ہال اور اس کے کہ لوگوں کا احتجاج ہونے کا اصول علامہ صدیق بن حسن خان المقوجی نے میں ہے۔ الروضة الندیة اللہ میں بھی لکھا ہے۔

(3) مقدمة ثالثة: تيسرا مقدمه بيه به كهجس طرح حديث صحت سند اورتلقى الامة بالقول كى وجهس صحت اورحسن كامرتبه بإتا به اس المرح دوسر حقر اكن شرع مثلاً اجماع امت شوابداور توالع وغيره كى وجهس بعى ضعف روايت صحت كامقام حاصل كرليتا ب-

اس لے علامہ ابوالحن بن الحصار المالكي فقر يب المدارك على مؤطاما لك يس لكها ہے: قديعه الفقيه صحة الحديث اذا لم يكن في سنده كذاب بموافقة آية من كتاب الله او بعض اصول الشريعة في حمله ذلك على قبوله والعمل به (تدريب الراوى الم ١٨) بھى فقيہ كى مديث كى صحت كومرف اس وجب عبان ليتا ہے كہوہ روايت قرآنى آيت يا اصول شرعيہ كے موافق ہوا ووہ اس روايت كو قبول كركے اس برعمل كرليتا ہے بشرطيكه اس روايت كى سند بيس كوئى كذاب راوى نه ہو۔ اور حافظ ابن تجرّ في استاد حافظ عمالى (بقيدا كل صفحه بر)

\_\_\_\_\_

(بقيرهاشير الا) كوالد كهام كه ان يتفق العلماء على العمل بمد لول حديث فانه يقبل حتى العمل بمد لول حديث فانه يقبل حتى يجب العمل به (بحوالد العليقات الحافلة على الاجوية الفاضلة ص ٢٣١)

علاءامت مدلول مدیث برعمل کرنے پر شفق بیں اور اس کو قبول کرتے بین حتی کہ اس پرعمل کرنے کو واجب اور ضروری بجھتے بین اس کا مطلب سے کہ جب وہ روایت اصول شرع کے موافق ہوا گرچہ اس کی سند میں کوئی کم زوری ہوتب بھی وہ روایت ان کے ہاں معمول بہا ہوتی ہے۔ اور اس وجہ سے محقق بن ھام ؓ نے لکھا ہے کہ فیان ضعف الاسناد غیر قاطع ببط بلان المتن بل ظاہر فید فاذا تاید بما یدل علی صحته من القرائن کان صحیحاً (فی القدری المحمد) سند کا ضعیف ہونا متن کے بطلان کی دلیل نہیں ' بلکہ اس میں ظاہر ہے کہ جب اس صحت پرقر ائن شرع میں سے کوئی قرینہ دلات کر سے کہ جب اس صحت پرقر ائن شرع میں سے کوئی قرینہ دلات کر سے کہ جب اس صحت برقر ائن شرع میں سے کوئی قرینہ دلات کر سے کہ جب اس صحت برقر ائن شرع میں سے کوئی قرینہ دلات کر سے کہ جب اس صحت برقر ائن شرع میں سے کوئی قرینہ دلات کر سے کہ جب اس صحت برقر ائن شرع میں سے کوئی قرینہ دلات کر سے کہ جب اس صحت برقر ائن شرع میں سے کوئی قرینہ دلات کر سے کہ جب اس صحت برقر ائن شرع میں سے کوئی قرینہ دلات کر سے کہ برائی ہے۔

(4) مقدمراابد: چوتهامقدمدید یک کسی بھی مدیث کوتطی طور پراس وقت تک ضعیف اور غیر معمول بھا خیس کہا جا سکتا جب تک اس کے بارے میں پوری تحقیق نہ ہو علام سیوطی قرماتے ہیں: واذا قیسل هدا حدیث صحیح فهذا معناه ای مااتصل سنده مع الاوصاف المذکورة فقبلنا عملاً بظاهر الاسناد لاانّه مقطوع به فی نفس الامر لجواز الخطاء والنسیان عن الثقة واذا قیل هذا حدیث غیر صحیح (ضعیف) فیمعناه لم یصح إسناده علی الشرط المذکور لانّه کذب فی نفس الامر لجواز صدق الکاذب واصابة من هو کئیر الخطاء (ترریب الراوی بحوالمقدم اعلاء النن / ۵۲)

جب بیر کہا جائے کہ بیروایت سی جو اس کا مطلب بیہ ہے کہ بیدہ دروایت ہے جس کی سندصفات ندکورہ کے ساتھ ہم تک پہنچا ہے تو ہم اس کو ظاہر سند کی وجہ سے قبول کرتے ہیں۔ لیکن اس کے بارے میں قطعی طور پر بینیس کہا جاسکتا کہ فلس الامر میں بھی بیروایت سی جے ہاس لئے کہ فقد راوی سے بھی خطاء اور نسیان کا احتمال ہے اور جب کہا جائے کہ بیہ صدیث سی جہنیں تو اس کا مطلب بیہ ہے کہ اس روایت کی سند ندکورہ شرائط کے ساتھ ہم تک نہیں پہنچا لیکن اس کا بیہ مقصد میر یہ شرخیبیں کہ فلس الامر میں بھی بیچوٹ ہے اس لئے کہ جھوٹے سے بھی بچ اور اصابت رائے کی تو قع کی جاسکتی ہے۔ ہرگر نہیں کہ فلس الامر میں بھی مید جھوٹ ہے ہیں جاتا ہے جب اس کی صحت پر کوئی قرید دلالت کر ساور جب کہ بی محقوب ہو تا ہے جب اس کی صحت پر کوئی قرید دلالت کر ساور جب قر ائن اس کے خلاف ہوتو صحیح صدیث بھی مجتم ہیں جاتا ہے جب اس کی صحت پر کوئی قرید دلالت کر ساور جب قر ائن اس کے خلاف ہوتو صحیح صدیث بھی مجتم ہیں جاتا ہے (اعلاء السن / ۲۵) (بقیدا گل صفحہ پر)

163

\_\_\_\_\_

-----

(بقيه حاشيه ١٢٢)

لہذاابان مقد مات کوذ بمن نشین کرنے کے بعداس روایت پرضعف کا جواعتر اض کیاجا تا ہے۔وہ یہ ہیں کہ بہ روایت سنداً ضعیف ہے اس لئے کہ اس روایت کی سند ہیں ابوشید ابرا ہیم بن عثمان العبسی ہے اور اس کومحد ثین نے ضعیف کہا ہے۔ چنانچدام بیمی فرماتے ہیں۔ تنفر دب أبوشیبة ابراهیم بن عثمان العبسی و هو ضعیف کہ ابوشیبہ ابراہیم بن عثمان عبسی اس روایت میں متفرد ہے۔ اور وہ ضعیف ہے (اسنن الکبری ۲۸/۲۷)

تُشَّ الاسلام علامة وصَّ قرمات بين ابراهيم بن عثمان ابو شيبة العبسى الكوفى قاض بواسط وجد ابى بكر بن ابى شيبة مروى عن زوج امه الحكم بن عتيبة وغيره كذّبه شعبة لكونه روى عن الحكم عن ابن ابى ليلى انه قال شهد صفين من اهل بدر سبعون فقال شعبة كذب والله لقد ذكرت الحكم فما وجدنا شهدصفين. احداً من اهل بدر غير حزيمة:

قلت سبحان الله ' اما شهدها على ! اما شهدها عمارٌ روى عثمانٌ لادارمي عن ابن معين ! ليس بثقة وقال احمد ضعيف وقال البخارى سكتو عنه وقال النسائى متروك الحديث .......... الخ (ميزان الاعتدال ٣٨/١)

ابوشیب ایراہیم بن عثان العبی الکوفی واسط کا قاضی ہاور ابو بکر بن ابی شیبہ کے دادا آپ نے اپی مال کے شوہر حکم بن عتبیہ وغیرہ سے روایت کی۔ امام شعبہ نے آپ کی تکذیب اس وجہ سے کی ہے کہ آپ نے حکم بن عتبہ فن ابن ابی لیل کی سند سے ذکر کیا ہے کہ جنگ صفین میں ۵ بدری صحابہ شریک ہوئے سے امام شعبہ فرماتے ہیں کہ بیجھوٹ ہے میں نے خود حکم بن عتبیہ سے اس کا ذکر کیا تو انہوں نے حضر سے خزیر سے کے علاوہ کی بدری صحابی کاصفین میں شرکت کا ذکر میں کیا سے اس کا ذکر کیا تو انہوں نے حضر سے خزیر سے کے علاوہ کی بدری صحابی کاصفین میں شرکت کا ذکر خور کئی بیاں کہ میں کہتا ہوں کہ سجان اللہ کیا حضر سے بی شرکت نہیں ہوئے سے اور حضر سے تھار آئے ہیں کہ ابوشیبہ کئی عثمان داری نے امام ابن معین سے قل کیا ہے کہ ابوشیبہ شفتہ نہیں ہے کہ ابوشیبہ میں داوی ہے امام احمد قرماتے ہیں کہ ابوشیبہ سے فاموش ہے اور نسائی نے کہا ہے کہ ابوشیبہ میروک الحد بیث صفیف راوی ہے۔ بیوہ احتراض ہے جو اب راوی ہے۔ بیوہ مام عشر احتراض کے جو اب کے بارے میں علامہ محمد حسن فیض پوری میں الدخون فی صلوق مصلیت سے اکارکر بیٹھے۔ مگر اس اعتراض کے جو اب

(بقيه حاشيه ١٦٣)

ا پراہیم بن عثمان کی توثیق: (الجواب) اس اعتراض کا جواب سے کہ اگر چہ اہل حدیث نے اس کومجم وح اور ضعیف کہاہے اوراس کے ضعف براصرار کیا ہے گراس عاجز فی مدال کے نزدیک بیتمام جروحات خام اور غیرموڑ ہیں اور افسوس صدافسوس ان اہل علم برجن سے بہر کت سرز دہوئی اور کسی نے مخالف اور موافق سے غور اور تامل نہ کیا تفصیل اس اجمال کی مدہے کہ چنداسیاب جرح کے متعدداور متکور ہیں مگر مأل اور انجام کاران سب کا دوامر پر ہے۔اول جرح باعتبار عدالت اورتقو کی کے اور دوسری جرح باعتبار حفظ اور ضبط کے اور میرے ناقص فہم میں ان محدثین کے جروحات سب کے سب عدالت کی طرف رائح میں۔ حفظ اور صنبط کی طرف نہیں کیونکہ حافظ این جمرؓ نے فتح الباری کے ساصفیہ ۲۸ میں اس کو حافظ كے لفظ سے تعبير كيا ہے اوراس كى عمارت بہے: اب اهيم بن عثمان ابو شيبة الحافظ انتهى للذاجب اس کے بارے میں لفظ حافظ مسلم ہوا تو اب ہاتی جروحات ان اہل حدیث کے سب عدالت کی طرف راج ہے' جبکہ بھی امر معھو د متعین ہو چکا تو میں کہتا ہوں کہ جرح باعتبار عدالت کے بھی اس کے حق میں خام اور غیرموثر ہے اور وجہاس کی بیہے كه جن الل علم نے عدالت كے روسے اس كومتروك اورضعيف كہاہے ، تؤوه سب جروحات مبهم اورغيرمفسر ہيں اور مداران سب کامفسر طور پر فقط ایک ہی جرح پر ہے وہ یہ کہ ان میں سے شعبہ بن حجاج نے سب سے مقدم اور مبین السبب جرح فرمائي بي يعني جوكية ألاسلام علامه ذبي ي في المحكم عن ابن ابع ليلع أنه قال شهد صفين من اهل بدر سبعون فقال شعبة كذب و الله لقد ذاكرت الحكم فما و جدنا شهد صفین من اهل بدر غیر حزیمة اور باقی محدثین شعبه کرقتے اور مقلد بن اورسب کے ساسکے بعد ہیں ۔ کوئی حارح ابوشیہ کا معاصر نہیں بجز شعبہ کے تو جروحات عدالت کا مدار شعبہ کی کلام بررہاجب بہی امرمحد متعین ہو چکا تو میں کہتا ہوں کہ ریبے جرح اگر چیمفسراورمبین السبب ہے مگراس قدر کی جرح سے ابو هبیة متر وک قرار دینا اورمن کل الوجوہ ضعیف کہنا غلط اور بے انصافی ہے کیونکہ اس قتم کی جرح از قبیل مہواور نسیان ہے اوروہ چنداں خارج نہیں ورندابن حجاج بلدخودتهم بن عتبيه كذاب اورمتر وك قرار ديا جاوے گا كيونكدان سے بھى اس تتم كى غلطى سرز د ہوئى ہے۔اسكئے شعبه اور حكم اس بات کے قائل میں کہ صفین میں بجوخزیمہ اللہ بدر میں سے کوئی معاصر نہ تھا حالا نکہ حضرت علی اور حضرت عمار الدونوں صحاب کرام پھی موجود تنے اس واسطے شخ الاسلام علامہ ذہبی نے شعبہ کے جواب میں کہا کہ سبحان السلسه أما شهدها علیؓ اما شهدهاعمارؓ انتهی اباگراس قدر مهواور ذهول کے سب ابوشیه متروک قرار دماجائے (بقیا کلے صفحہ بر)

164

\_\_\_\_\_

(بقیہ حاشیہ ۱۹۳۳) تو چا ہے کہ شعبہ بن جاج اور تھم بن عتیہ بھی متر وک قرار دے جاوے للعلة الواحدة المجامعة فیھم و ھی عدم حفظ اصحاب بدر 'اب شعبہ بن تجاج کوامیر الموشین قرار دینا اور تھم بن عتیہ کواجما کی امام ثقد کہنا اور ایوشیبہ کوضعیف قرار دینا مع اتحاد سبب الجرح فیھم انصاف سے بعید ہے۔ اور میں کہتا ہوں کہ ابوشیبہ کی بذبیت شعبہ اور اسکے شخ تھم بن عتید کی فلطی تخت ہے اور اسکی شخ تھم بن عتید کی فلطی تخت ہے اور اسکی آیک وجہ تو یہ ہے کہ ان ایام میں بہت سارے بدری صحابہ کرام فرندہ تھے۔

منهم رفاعة بن رافع مات فی او ل خلافة معاویة 'ابولبابة الانصاری عاش الی خلافة علی ' ابوطلحة الانصاری عاش الی خلافة علی ' ابوطلحة الانصاری مات سنة اربع و ثلاثین و قال ابوزرعة عاش بعد النبی ملائل اربعین سنة 'سعید بن زید بن عمرو بن نفیل مات سنة خمسین او بعد ها ' سهل بن حنیف مات فی خلافة علی ' عبدالله بن مسعود مات سنة اثنین و ثلاثین ' أبو مسعود البدری مات قبل الاربعین ' عبادة بن الصامت مات سنة ثلاثین او سنة ثلاثین ' عتبان بن مالک مات فی خلافة معاویة ' مالک بن ربیعة ابوالسید مات سنة ثلاثین او بعدها اب بیتمام کاباوران کر سواء دوسر برای کابرنده شے کل ذلک من التقریب '

اوردوسری وجدید ہے کہ بنسبت اور بدریوں کے حضرت علی اور حضرت عمار کا صفین میں ہونا اظھے و من المشمس تھااور ہر فر دیشر ادنی اوراعلی ذی علم میں سے اس بات کا خوب واقف ہے اور شعبداور حکم ان سے بھی عافل ہیں۔ اب باوجود الی سخت غلطی کے جب شعبداور حکم مجروح نہیں تو ابوشید بھی مجروح نہ ہو۔ اوھو المطلوب اسی واسطے خاتم المحد ثین اور ہمارے پیران پیراور شخ شخ اشخ اغنی شاہ عبدالعزیز محدث دھلوی نے رسالہ تر اوت میں لکھتے ہیں کہ حالا تکہ ابوشیبة ان قدرضعف عمارد کروایت اومطروح ساختہ شود اور میں کہتا ہوں کہ بیات خاتم المحد ثین کی راست اور درست رسائل سقة ضروریة ص ۲۰۲۰ تا ۲۰۷)

اور میں کہتا ہوں کہ علامہ فیض پوری کا یہ کلام قرین قیاں ہے۔ اس لئے کہ ابراہیم بن عثان ابوشیہ کو مجروح طابت کرنے میں بھر مہالغہ سے کام لیا گیا ہے۔ اس لئے کہ ام ابن عدی آپ کے متعلق فرماتے ہیں لے احسادیت طابت کرنے میں بھر میں ابور اھیم بن ابھی حید (تہذیب المتہذیب المتہد) ای طرح امام بخاری کے استاد الاستاذ میں مادون جو نہایت ثقہ اوراعلی درجہ کے حافظ حدیث ہیں۔ ابوشیبہ ابراہیم بن عثمان کے بڑے مداح سے آپ فرمایا کرتے سے ماقضی علی النامیں یعنی فی زمانہ اعدل فی قضاء منہ (تہذیب المتہذیب الم ۱۲۵)

لینی ہمارے زمانے میں ان سے زیادہ عادل کوئی قاضی نہیں تھا۔ یہاں یہ بات گوش گر ار کرنا ضروری ہمتا ہوں کہ بزید بن ہارون سے بڑھ کر ابراہیم بن عثان کا پر کھنے والا اور ان کے حالات سے باخبر ان (بقید اسکاے صفحہ پر)

......

(بقیہ حاشیہ ۱۲۵) جارجین میں کوئی بھی نہیں ہے۔ اس لئے کہ یزید بن ہارون ان کے تحکہ میں کا تب یعن ان کے فتی سے وہ البوهیة ہیں کا دونوں میں زبردست شہادت ہے۔ اور ویے بھی کسی راوی کی روایت کو تبول کرنے کے لئے دوبا تیں اور دیانت داری دونوں میں زبردست شہادت ہے۔ اور ویے بھی کسی راوی کی روایت کو تبول کرنے کے لئے دوبا تیں لازی طور پردیکھی جاتی ہیں۔ ایک تدین (دینداری) 'دوم اس کا قوت حافظ 'یزید بن ہارون کی شہادت کے بعداب تو ابراہیم بن عثان کے تدین میں تو کوئی شک باتی نہیں رہا۔ اور حافظ ابن تجر اور ابن عدی گی شہادت سے اس کا حافظ بھی معلوم ہوا۔ ان دونوں امور کے ثابت ہونے کے بعداس کواس حد تک ضعیف قرار دینا جس کی وجہ سے اس کی روایت کردہ حدیث کونا قابل استدلال قرار دیا جائے۔ اس کے علاوہ امام شعبہ کے بارے میں مشہور ہے کہ وہ بمیشہ تقدراو ہوں سے موایت لیا ہے اس سے صاف معلوم ہوتا ہے کہ شعبہ نے اپنی جرح سے رجوع کر لیا ہوگا اب اگر شعبہ کے رجوع کو مان لیا جائے تو راوی ابوشیہ تقد ہوا اور اگر سورے تھی تو راوی ابوشیہ تقد ہوا اور اگر روایت کی روایت بھی قابل استدلال قرار نہیں دیا جا سے تو راوی ابوشیہ تقد ہوا اور اگر سے بی قابل استدلال قرار نہیں دیا جا سکا۔ احتجاج ہے۔ اس کے بروایت صرف شعبہ کے جرح سے نا قابل استدلال قرار نہیں دیا جا سکا۔

اس کے علاوہ اگر بالفرض ان حضرات کی جرح کو مان لیا جائے اور ان کی وجہ سے ابراہیم بن عثان کو ضعیف قرار دیا تو صرف اس سے روایت کو ضعیف نہیں کہا جا سکتا۔ اس لئے کہاس کی تائید بیس عہد فارو تی کے مسلمانوں کا علانے پمل اور ائم جمتم میں کے اور ائم جمتم میں کہ اور شوس دلائل موجود ہیں۔ جس کی وجہ سے میدوایت قابل احتجاج ہے مولا نا ثناء اللہ صاحب امر تسری نے خود ایک موقعہ پراعتر اف کیا ہے کہ بعض ضعیف ایسے ہیں جوامت کی تلقی بالقبول سے رفع ہوگئے ہیں (اخبار اہل حدیث مورد نہ ۱۹ امر بل کے 19 ء بحوالہ ہیں تراوت کی کا ثبوت ص میں)

غیر مقلدین کی ناانصانی:

تلقی بالقه ل پر مزید تفصیلی بحث کرنے سے قبل حضرات غیر مقلدین کی ناانصافی بتانا ضروری ہے کہ تراوی کے مسئلہ میں تو احتاف کے مسئدل حدیث بالا پر ورق کے ورق سیاہ کرتے ہیں کہ ابراہیم بن عثان ابوشیہ بخت ضعیف ہے اس سند کو پیش کرنا بدنا می اور حماقت ہے۔ گر نماز جنازہ میں سورة فاتحہ پڑھنے کے ثبوت میں مشہور غیر مقلد حکیم محمد صادق سیا لکوئی نے اپنی کتاب صلوة الرسول کے صفیہ ۱۳۳۳ پر اسی راوی کی روایت بحوالہ ابن ماجہ پیش کی غیر مقلد حکیم محمد صادق سیا لکوئی نے اپنی کتاب صلوة الرسول کے صفیہ ۱۳۳۷ پر اسی ماجہ کی کرسول الشفیلی نے ہے۔ وعن ابن عباس أنّ النّب تَم مُلَّلِ اللّٰ اللّٰ اللّٰ اللّٰ اللّٰ کے سند قبل المجنازة بفاتحة المکتاب (ابن ماجة) کرسول الشفیلی نے نماز جنازہ میں سورة فاتحہ پڑھی ہے۔

( ایقیدا گلے صفیہ پر)

\_\_\_\_\_

(بقيرماشير ١٦٢) اورابن ماجة شراس روايت كى سنديول بخسة شنا أحمد بن منيع ثنا زيد بن الحباب ثنا إبراهيم بن عثمان عن الحكم عن مقسم عن ابن عباس أنّ النّبيّ عُلَيْتُ قُوا على الجنازة بفاتحة الكتاب إبراهيم بن عثمان عن الحكم عن مقسم عن ابن عباس أنّ النّبيّ عُلَيْتُ قُوا على الجنازة بفاتحة الكتاب (ابن مجرم ١٠٠)

(۱) چنانچیره طرت سائب بن پزید فرماتے ہیں: کنّان قدوم فسی زمان عسر بن النحطاب بعشوین رکعة والسوت علی النحطاب بعشوین رکعة والسوت و محرت عرّ کے خلافت کے زمانہ میں کیات اور آن اور تین و تر پڑھتے تھے۔ (معرفة السنل بہتی صلاح ۲۸۷) اس دوایت کی سند پرامام نووگ گلام کرتے ہوئے فرماتے ہیں کہ اس حدیث کی سند سیح ہے (شرح المحمد ب) علامہ بکی علامہ جلال الدین سیوطی ملاعلی قاری نے بھی اس کی سند کی تھے گئے ہے۔

باجماعت کااہتمام کیا گیااوراس وقت ہےلوگوں نے ہا قاعدہ طور پر ہیں رکعات تراوی کااہتمام کرنا شروع کیا۔

- (۲) ای طرح یکی بن سعید فرماتے ہیں کہ أنّ عسر بن الخطاب امر رجلاً بصلّی بھم عشوین رکعة بیشک حضرت عرصہ نے ایک آدی کو مقرر کیا کہ وہ لوگوں کو ہیں رکعات تر اوت کر پڑھائے۔
- (۳) ای طرح یزید بن رومان سے مروی ہے کان السناس یقومون فی زمان عمر بن الخطاب فی رمضان بنداث و عشوین رکعة (موطانام ما لک ص ۲۰۰۰) کہلوگ حضرت عمر کے زمانہ خلاف میں رمضان میں بیں (بقیدا کے صفحہ یہ) رکعات تراوت کا ورتین و تریز سے تھے۔ (بقیدا کے صفحہ یہ)

168

\_\_\_\_\_

(بقیہ ماشیص ۱۲۷) (۳) عن الحسن أنّ عمر بن الخطاب جمع الناس على ابى بن كعب فكان يصلّى بهم عشرين ركعة حفرت عرق فول كويس ركعات تر اور ك بهم عشرين ركعة حفرت عرق فول كويس ركعات تر اور كار مائة المشارية عمل المائة المسلمة عقد من المائة المسلمة على المائة المسلمة المائة المائة المسلمة على المائة المائة

(۵) عن ابی بن کعب ان عمر بن الخطاب امره ان یصلّی باللیل فی رمضان فصلّی بهم عشرین رکسیعة (کنرالعمال ۲۲۳/۸) حفرت ابی بن کعب عدوایت ہے کہ پیتک حفرت عمر فی استحکم دیا کہ وہ لوگوں کورمضان میں رات کو (تراوی کی پر ھائے اس لئے اس نے لوگوں کو پیس رکعات پر ھائے۔

حضرت الی بن کعب کے بیس رکعات پڑھانے کی تحقیق کے بوت کے بارے بیس شی الاسلام علامہ ابن تیمی فرماتے ہیں قد شبت أنّ ابی بن کعب کان یقوم بالناس عشرین رکعة ویو تو بثلاث فرای اکثر من العلماء أنّ ذالک هو السنة لامة قام بین المهاجرین و الانصار ولم ینکره منکر (فاوی ابن تیمیر ۱۱۲/۳۳)

یہ بات ثابت ہوگئ ہے کہ حضرت الی بن کعب لوگوں کو پیس رکعات تر اوت کا اور تین و تر پڑھائے تھے۔اس لئے علماء کی اکثریت کی رائے میں بیس بی سنت ہے کیونکہ حضرت الی بن کعب کے پیچے مہاجرین اور انصار (بیس رکعات پڑھتے تھے) اور کی منکر نے بھی اٹکارٹیس کیا۔

ورعثانی میں میں رکعات تراوت : حضرت سائب بن یزید فرماتے ہیں کہ عہد فاروقی میں لوگ ہیں رکعات تراوت کر پارٹے سے اور حضرت عثان کے زمانہ میں بھی اور لوگ لیے قیام کی وجہ سے لاٹھیوں پر سہارا لیتے سے (السنن الکبری لائے اللہ کا ۲۹۲/۲) ای طرح علام میٹن نے نوائد میں ہوں اور اید لید (سائب بین یزید) و علی عہد عشمان و علی مثله (البدیایة ۱۰۱/۳) کر حضرت سائب بن یزید سے روایت کہ لوگ حضرت عثمان اور حضرت علی کے زمانہ میں بھی ہیں رکعات بر البدیایة عدور فاروقی کی طرح عہد عثمانی میں بھی کسی رکعات تر اوت کی پڑھید نہیں کی اور نداس کو بدعت کہا ہے گویا اس دور میں سب مسلمانوں کا بیس رکعات تر اوت کی برا نفاق رہا۔

وورم تضوی میں بیس رکعات تراوی: ای طرح دورم تضوی (حضرت علی کے زمانہ خلافت) میں بھی ای پرموا طبت رہا حضرت علی کے ذمانہ خلافت) میں بھی ای پرموا طبت رہا حضرت علی نے خود قرآ کو بیس رکعات تراوی پڑھانے پر مامور فر مایا تھا۔ (۱) عن أبسی عبدالوحمن السلمی عن عبلتی قبال دعیا المقواء فی رمضان فامر منهم رجلاً بصلّی بالناس عشرین رکعة و کان علی یو توبهم (سنن کری للبیقی ۲۸ مرحزت علی نے قاریوں کو بلایا اور ان میں سے ایک آدمی کو تھم دیا کہ وہ لوگوں کو بیس رکعات برخ ھایا کرے اور خود حضرت علی تو گوس کو تھے۔ (بقیدا گلے صفحہ پر)

(بقیہ ماثیہ ۱۲۸)(۲) عن ابسی المحسن 'ان علیّا امر رجلاً یصلّی بھم فی رمضان عشرین رکسعة. (مصنف ابن الی شیب ۳۹۳/۲) ابوسن سے روایت ہے کہ بیٹک حضرت علیؓ نے ایک آ دمی کو مامور کیا کہ وہ مضان میں لوگوں کو ہیں رکعات تر اور کی بڑھائے۔

دیگر صحابہ کرام وتا بعین کا کمل: دور خلفاء ثلاثہ کے علاوہ بعد کے ادوار میں بھی قریباً جمیع صحابہ کرام کا بیس رکعات پڑھنے کا کمل تھا۔ چنانچہام حسن بھری عبدالعزیز بن رافع سے روایت کرتے ہیں:

ا. کان أبی بن کعب یصلّی بالناس فی رمضان بالمدینة بعشرین رکعة ویوتر بثلاث (مصنف ابسن ابی شیبة ۲۸۵/۲) ''کرانی بن کعبٌ مینمنوره پس رمضان مبارک پس لوگول کوپیس رکعات تر اوت اور تین رکعات و تر پرهایا کرتے تھے''

۲.عن عطاء قال ادر کت الناس وهم يصلون ثلاثا وعشرين رکعة بالوتو (مصنف ابن الي شيب ۲۹۳/۲۹۳)

د حضرت عطاء بن الي ربائ فرمات بين كه بين كه بين كه يوكول كويين ركعات راوت اور تين وتر پر هت پايا ہے۔ "اس روايت بين الناس سعم اوصحاب كرام اور تا بعين بين \_

٣-ابوحنيفة عن حماد عن ابراهيم أنّ الناس كانوا يصلّون خمس ترويحات في رمضان (كتّاب الاثارلا في يوسف ١٣) (ابراهيم تخي فرمات بين كرسب لوك (تابعين وتيع تابعين) رمضان من بين ركعات پوها كرت منظين)

ان آثار اور تعامل کے علاوہ مزید روایات و آثار کے لئے مصنف این انی شیب قیام اللیل سنن کبری بیتمی اور آثار اسنن مطالعہ کیا جاس کئے کہ ان کے علاوہ اور بھی بہت سارے حابہ کرام گئے آثار کتب حدیث میں موجود ہیں۔ ای وجہ سے شخ الحدیث مولانا کر کیا فرماتے ہیں: قسلت و الافسار فسی الب اکشر مین ان تحصی (او ہز المسالک ۵۳۵/۵۳۵) میں کہتا ہوں کو اس باب میں استے آثار ہیں جو گئے ہیں جاستے (لیتی بہت زیاد ہیں) ایما گی ہوت: اور ای پر صحابہ کرام " تا بعین اور انمر مجہدین کا ایماع ہے۔ چنا نچے علامہ بدرالدین العینی نے کھا ہے: والیہ ذهب من التابعین ابن ابی ملیکة "وعطاء و ابو البختری و المحارث الهمدانی و سعید ابن ابی المحسن البصری و عبد الرحمن بن ابی بکرو غیر ہم قالا ابن عبد البرو هو قول جمہور العلماء و به قال الکو فیون و الشافعی و اکثر الفقهاء و هو الصحیح عن ابی بن کعب من غیر خلاف من الصحابة (بحو الله معارف السن ۵۳۲/۵)

-----

(بقیہ حاشیہ ۱۲۹) ہیں تر اور کی طرف تا بعین میں سے ابن انی ملیکہ عطاء بن انی رباح ابوالیشتری عارث سعید بن انی الحت اخوائس البھری عبد الرحمٰن بن انی بکر اور دو سرے حضرات کے ہیں علامہ ابن عبد البرّ فرماتے ہیں کہ یہ جمہور علاء کا قول ہے اور یہی رائے کو فیوں امام شافعی اور اکثر فقہا کرام کی ہے حضرت انی بن کعب سے بہی صحیح طریقے نقل ہے اور اس میں کی بھی صحابی سے اختلاف مروی نہیں اور علامہ کا سائی فرماتے ہیں اُن عمر جمع اصحاب رسول اللہ عشرین رکعة ولم ینکو علیه احد اللہ عشرین رکعة ولم ینکو علیه احد فیسکون اجماعاً منهم علی ذلک . این قد امد نے المخی کے الاحماع (بحوالہ معارف السنن ۱۹۳۸م) بینک حضرت عرش نے آئے خضرت میں کھا ہے کہ و ھذا کا لا جماع (بحوالہ معارف السنن ۱۹۳۸م) بینک حضرت عرش نے آئے خضرت میں کھا ہے کہ وارمفان المبارک کے مبینے میں حضرت ابی معارف السنن ۱۹۳۸م) بینک حضرت عرش نے آئے خضرت میں کھا ہے کہ وارمفان المبارک کے مبینے میں حضرت ابی کین کعب کی افتد اء میں بحق کی اور آپ نے ان کو ہر رات ہیں رکعات تر اور کی پڑھایا کرتے تھے اور کسی نے اس پرکیر نہیں گ

اك طرح شخ الحديث مولانا محمد ذكريًّ الدسوقي على الشرح الكبير كوالد سه لكه بين: وهسسى السلاث وعشرون ركعة بالشفع و الوتر كما كان عليه عمل الصحابة والتابعين وجرى عليه العمل سلفاً وخلفاً (اوجز المسالك ٥٣٣/٢)

بیس رکعات تر اوت که دو رکعات کے ساتھ اور تین رکعات و تر پر صحابہ کرام تا بعین کاعمل رہااوراس پر سلفاوضلفاً عمل ہوتارہا ہے۔

ای طرح ملاعلی قاری فرماتے ہیں: أجمع الصحابة على أنّ التواويح عشوون ركعة (مرقات ١٩٣/٣) صحابہ كرام كا بيس ركعات يراجماع تھا۔

صاحب اتخاف سادة المتقین فرماتے ہیں: وبالاجماع الذی وقع فی زمن عمر اُخذ ابو حنیفة والثوری والشدافعی و احد اور التحدید و التحدی

بیں رکعات تراوح پر ندا ہبار بعد کا انفاق: جس طرح صحابہ کرام تا بعین اور تی تا بعین کا بیس رکعات تراوح پر انفاق تھا۔ای طرح ندا ہبار بعد میں بھی پیمسئلہ انفاقی ہے کسی بھی ندہب کے امام نے آٹھ تر اوس کا تول نہیں کیا۔ (بقدا گلے صفحہ یہ)

-----

رمضان المبارک کے مہینے میں قیام کا مسکد اہل علم کے ہاں مختلف فیہ ہے بعض اہل علم ور کے ساتھ اکتالیس رکھات کے قائل ہیں اور یہی اہل مدینہ کا قول ہے اور اس پران کا عمل ہے اور اکثر اہل علم ہیں رکھات کے قائل ہیں اور یہی اہل مدینہ کا قول ہے اور اس پران کا عمل ہے اور اکثر اہل علم ہیں رکھات کے موافق ہے اور یہی سفیان توری عبراللہ بن مبارک اور امام شافی کا قول ہے۔ اور امام شافی فرماتے ہیں کہ میں نے اپنے شہر کمہ میں ہیں رکھات پر سے در یکھا ہے۔ اور امام شافی فرماتے ہیں کہ میں اور ہی سے لے کر اکتالیس تک اس پر کوئی تھم نہیں لگایا۔ اور امام احم شبران کا کہنا ہے کہ تر اور کی میں مختلف روایات میں (ہیں سے لے کر اکتالیس تک اس پر کوئی تھم نہیں لگایا۔ اور امام اساق فرماتے ہیں۔ کہم اکتالیس رکھات کو اضار کرتے ہیں اور یہی حضر ت ابی بن کھب کی روایت کے موافق ہے امام تر ذری کی عبارت پر اگر خور کیا جائے تو معلوم ہوجائے گا کہ صحابہ تا بعین ، تیج تا بعین کے کی روایت کے موافق ہے امام تر ذری کی عبارت و تھر کھات تر اور کی کا قائل نہیں تھا۔ ور ندام مر ذری آس کا تذکرہ ضرور کرتے نوان کو فرکہ نااس بات کی دلیل ہے کہ ان ادوار میں آٹھ رکھات تر اور کی کا کوئی رواج بی نہیں تھا۔ اور نداوگ آٹھ رکھات تر اور کی طرح ہے تھے۔

اس لئے علام انورشاہ تشمیری قرماتے ہیں: ولم یقل احد من الائمة الاربعة باقل من عشوین رکعة فی التراویح والیه جمهور الصحابة رضوان الله عنهم. (العرف الشذى ١ ١ ٢١ ١) انرار لبحث سے مسل نے بھی بیں رکعات تراوی سے کم کے متعلق نیس کہا ہے اور یکی کمل جمہور صحابہ کرام شین است ہے۔

جب ان دالاً كن شرع كى تائيداس روايت كوحاصل بي قيداس بات كى بالكل واضح دليل بي كرجس روايت كو اعتراض كا نشاند بنايا گيا بي وه اعتراض غلط اورضح نبيل بي بلكه وه درست اور قائل استدلال حديث بي اس لئ شخ الحديث مولانا محمد زر ريافر ماتي بين: لاشك في أنّ تحديد التراويح في عشرين ركعة لم يثبت موفوعاً عن السبي عَلَيْنِ من رواية (بقيدا كل صفح بي) عن السبي عَلَيْنِ من رواية (بقيدا كل صفح بي)

(بقيما شير الانكار عن ثبوته بفعل على اصولهم لكن مع هذا لايمكن الانكار عن ثبوته بفعل عمر و سكوت الصحابة على ذلك واجماعهم على قبوله بمنزلة النص على ان له اصلاً عندهم عمر و سكوت الصحابة على ذلك واجماعهم على قبوله بمنزلة النص على ان له اصلاً عندهم (اوجز المسالك ۵۳۲/۲)

اں میں کوئی شک نہیں کہ میں رکعات تراوی آنخضرت علیقہ سے محدثین کے اصول کے مطابق مرفوعاً سیح طریقے سے ٹابت نہیں اور جوروایت (ہیں رکعات) کی عبداللہ ابن عباس سے مروی ہے محدثین کے اصول کے مطابق متکلم فیما ہے۔ کین اس کے ثبوت سے اٹکار کرنا حضرت عمر کے فعل اور صحابہ کرام کے سکوت سے مکن نہیں۔ان کا حضرت عمر کفتل کوتیول کرنے برا تفاق کرنانص کی طرح ہے اور یہاں مات کی دلیل ہے کیان کے ہاں اس فعل (پیس رکعات کی تراوت کا کے لئے اصل موجود ہے۔اور میں مات علامہ انورشاہ کشمیریؓ صاحب فمآویٰ تا تارخانیۃ کے حوالہ نے نقل کرکے ففي التاتار خانية: سأل ابويوسف ابا حنيفة ان اعلان عمر بعشرين ركعة هل كان له عهد منه عَلَيْكُ قال ابو حنيفة ماكان عمر مبتدعاً اي لعله يكون له عهد فدل على ان عشرين ركعة لابدمن ان يكون لها اصل منه عليه وان لم يبلغنا بالاسناد القوى . (العرف الشذى ١٢٢/١) تا تارخانیہ میں ہے کہ امام ابو یوسف نے امام ابوطنیفہ سے سوال کیا کہ حضرت عمر کے بیس رکعات کے اعلان کے لئے آ تخضرت الله کے زمانہ میں کوئی اصل ہے۔امام ابو حنیفہ نے فرمایا کہ حضرت عمرٌ بدعی نہیں تنے اس کا مطلب یہ ہے کہ اس بیں رکعات تر اور کے لئے آنخضرت اللہ کے زمانہ میں اصل موجود ہے اگر چہوہ ہم تک قوی سند کے ساتھ نہیں پہنچا ہے ۔ جب بہیں رکعات تراوی کا ثبوت آنخضرت کا لیے سے بنف نفیس ثابت ہوا۔ جمیع صحابہ کرام ' تا بعین ' تع تا بعین اورائمہ مجتہدین سلفاً وخلفاً ای برعمل کرتے چلے آ رہے ہیں تو اس کے بعد آ ٹھ رکعات کا قائل ہونا' بیں رکعات کو بدعت اور ناجائز كهناخر للا جماع بـــ ينانج يملامه بنوريّ كصة بين وبالسجملة :العشرون من التواويح و ثلاث الوتو هو الذي استقر عليه الامر أخير إكما يقوله الشعراني في كشف الغمة و السيوطي في المصابيح فمن احدث خلافاً بعد هذا الاتفاق يكون خارقاً للاجماع (معارف السنن ٥٣٢/٥)

بیں رکعات تراوح اور تین وتر پراخیر میں استفر ار (دوام) ہو۔ اجبیہا کہ علامہ شعرائی نے کشف الغمۃ اورعلامہ سیوطیؒ نے المصابح میں کھا ہے کہ پس جس کسی نے بھی اس اتفاق کے خلاف کہا تواس نے اجماع کو پا مال کیا۔ جب کسی روایت کو صحابہ کرام کے اجماع خلفاء راشدین کا تعامل تا بعین تنج تا بعین اورائمہ جبتدین اور اجماع امت کا تعاون حاصل ہوتو بھر بھی صرف ایک فرد کی وجہ سے اور وہ بھی اس وجہ سے جو حقیقتا سب جرح بھی نہیں پورے کو (بقیدا گلے صفحہ پر)

----

(بقيه حاشيص ١٤١) ضعيف اورنا قابل احتجاج قراردينا انصاف نبيس

احناف کی بعض کتابوں کے حوالہ جات کا جواب: اور جوحوالہ جات آ نجناب نے اپنے کمتوب میں تحریر فرمائے ہیں ان کے بارے میں لکھنے سے قبل یہ بات ذہن نشین کر لینا ضروری ہے کہ فقہ شغی کی کتابوں میں درج شدہ جزئیات میں سے صرف ان جزئیات کا اعتبار کیا جاتا ہے جو فقہاء امت کے ہاں رائح ہوں یا ان کا تعلق ظاہر الروایة سے ہوں اس لئے جو جزئیات ان دونوں میں سے الگ ہوں تو وہ فقہ خفی شار نہیں ہوگا۔ اس لئے اگر کسی شغی عالم نے اس تم کی کوئی بات کھی دی ہووہ اس کا تفر داور ذاتی رائے شار ہوتی ہے فقہ خفی شار نہیں ہوگی۔ محفق العصر علامداین عابدین شائی نے اپنے منظوم کلام میں لکھا ہے۔

لہذااس اصول کوذہن نشین کرنے کے بعد جوعوالہ جات آنجناب نے اپنے کمتوب میں پیش کے ہیں۔وہ ان حضرات کی یا تو ذاتی رائے ہوار یا انہوں نے کسی سے روایت نقل کی ہے اور آنجناب نے اس مقام کو بجھنے کی سمی نہیں فرمائی۔ کہ آیاواقعی بیاس مصنف کا قول ہے بھی جس کا خط میں حوالہ دیا جارہا ہے اور بیقول اس نہ بہ خنی میں رہتے ہوئے کبی ہے۔یاس نے کسی کا حوالہ یا روایت نقل کی ہے۔

آ نجناب نے کتاب الا اور کے حوالہ سے جوعبارت نقل کی ہے اس میں کہیں یہ ذکر نہیں کہ آپ اللہ نے آٹھ کہ اس میں کہیں یہ ذکر نہیں کہ آپ اللہ نے آٹھ کہ رکعات تر اوت کرچی تھی اور نہ اس میں رمضان کا ذکر ہے اس لئے اس کو تر اوت کی تعداد پیش کرنا نامنا سب ہے۔ اس میں دوایت کوامام محد نے باب الصلوة تطوعاً میں ذکر کیا ہے۔ اس سے مراد قیام اللیل یعنی تجد ہے جورمضان وغیر رمضان دونوں میں حائز اور مستحب ہے۔

ضروری تنبینا۔
دوام اوراستقر ارکے معنی میں آتا ہے قد مقصد بیہوا کہ بیاس سے مراد صلوۃ تراوی ہے اس میں لفظ کان ذکر ہے اور کان دوام اوراستقر ارکے معنی میں آتا ہے قد مقصد بیہوا کہ بیاس سے مراد صلوۃ تراوی ہے اور آتخصرت میں بھی استعال نہیں ہوتا بلکہ آتھ درکعات پڑھا کرتے تھے۔اس کا جواب بیہ ہے کہ لفظ کے ان عمو آاور کلیۃ استقر ارکے معنی میں استعال نہیں ہوتا بلکہ موقع اور کل کے اعتبار سے اس میں دوام پایا جاتا ہے۔ ہروقت دوام کے لئے نہیں ورنہ پھراس روایت کے متصل روایت کہ کہ ان عبد اللہ بن عمر قیصلی النطوع علی داحلته کا معنی ہوگا کہ عبداللہ بن عمر قیصل مواری کے اوپر پڑھا کرتے تھے۔ حالا نکہ آپ عمواً ایسانہیں کرتے تھے بلکہ یہ کیفیت آپ کی صرف حالت سفر میں ہوتی تھی کہ آپ سواری کے اوپر نشل موتا۔اور اس کے اور بھی نظائر موجود ہیں کے اوپر نظل بڑھتے تھے اس سے معلوم ہوا کہ کان عمواً دوام کے لئے استعال نہیں ہوتا۔اور اس کے اور بھی نظائر موجود ہیں جہاں لفظ کان مفارع پر دافل ہوا مگرو ہاں کی نے دوام کا معنی نہیں لیا۔

( بقیدا گلے صفحہ پر )

(بقیہ حاشیہ ۲۰۱۳) ۱-۱۳ طرح دوسرا جواب بیہ ہے کہ آنجناب نے جوعبارت امام محدی کتاب المؤطا کے حوالہ سے نقل کیا ہوہ دراصل حضرت عاکش کی روایت ہجد کی نماز پرمجمول ہے۔ ہوہ دراصل حضرت عاکش کی روایت ہجد کی نماز پرمجمول ہے۔ سے وہ دراصل حضرت این حمام ابن حمام سے حوالہ سے جوبات مکتوب میں نقل کی گئے ہے تو وہ ابن حمام کا اپنا اجتہا داور تفر دہاس کو علماء احتاف نے قبول نہیں کیا ہے اور میں نے پہلے ذکر کیا ہے کہ فقد خفی میں ند ہب کے حوالہ سے انفرادی رائے قبول نہیں ہوتی۔ اور ابن حمام کے خوالہ سے انفرادی رائے قبول نہیں ہوتی۔ اور ابن حمام کے خوالہ سے انفر دات کے بارے میں ان کے شاگر دعلامہ قاسم بن قطلو بغافر ماتے ہیں۔ تسف دات میں جنوب کے میرے شخے کے تفر دات مقبول نہیں اس لئے اس کوفقہ خفی پر لاگونیس کیا جاسکا۔

۳ ای طرح آ نجناب نے جو حوالہ عمرة القاری کا دیا ہے اس پس کہیں بین کو رئیس کہ بیاحناف کثر اللہ سوادهم یا خودعلامہ عنی گی رائے اور فتو کی ہے بلکہ علامہ صاحب تو تفصیلی بحث پس آ نجناب کے حوالہ کے خلاف فرماتے ہیں وقیسل عشرون و حکاہ التو مذی عن اکثر اہل العلم فانه روی عن عمرو علی وغیر هما من الصحابة و هو اصحابنا الحنیفة (عمره القاری ال/۱۲۲)

تراوت کی تعداد کے بارے میں ایک رائے ہیں رکعات کی ہے۔ اور اس کوامام ترفزیؓ نے اکثر اہل العلم سے قبل کیا ہے اس طرح حضرت علیؓ اور دوسرے صحابہ کرامؓ سے مروی ہے اور یہی ہمارے احتاف کی رائے ہے۔

آ نجناب نے کیے آٹھ رکعات کی نبست علم عاحناف کی طرف کردی۔ اوراس کوعلام عینی کا قول اوردائے قرار دیا گیا۔

۵ ای طرح یکی حال ملاعلی قاری کے مرقات کے حوالہ کی ہے اگر چہ اختلاف فی المسئلہ کے بیان میں انہوں نے آٹھ کا ذکر کیا ہے کین وہاں یہ بھی فرماتے ہیں۔ لیکن اجمع المصحبابة علی أن التو او یح عشرون دکعة (موقات ۱۳۸۲) کہیں رکعات تراق کی پرتمام صحابہ کرام شقق ہو بچے ہیں۔ اس سے معلوم ہوا کہ کمتوب میں درج شدہ حوالہ کی عمارت ملاعلی قاری کی ارائے نہیں۔

۲- ای طرح آ نجناب نے علام عبد الحق المحبد کا حوالہ دیا ہے اس حوالے کا جواب یہ ہے کہ انہوں نے بناء برحکایت حدیث اارکعات نقل کی ہے کین اس سے ہرگز بیمطلب نہیں کہ بیعلامہ کی رائے ہے بلکہ علامہ صاحب "وونوں طرح کی روایات کوفل کرنے کے بعد لکھتے ہیں۔ اذلاشک فی صحة حدیث عائشة وضعف حدیث ابن عباس لکن الاخذ بالراجح و ترک الموجوح إنّما یتعین اذا تعارضاتعارضاً لایمکن الجمع و ههنا المجمع ممکن بأن یحمل حدیث عائشة علی انه اخبار عن حالة الغالب کما صرّح به الباجی فی شرح السموط و غیرہ ویحمل حدیث ابن عباس علی انسه کان ذلک (بقید الحکے صفح مر)

-----

(بقيرماشير ١٤٢٧) احياناً (التعليق الممجد على الموطا للامام محمد ١/١٢)

حضرت عائش کی روایت کی صحت اور ابن عباس کی روایت کی ضعف میں کوئی شک نہیں کین رائح کو لینے اور مرجوع کوترک کرنے کا سوال تب پیدا ہوگا جب دونوں میں ایسا تعارض ہو کہ دونوں کا جمع کرناممکن ہی نہ ہواور یہاں جمع کرناممکن ہودہ اس طرح کہ حضرت عائش کی روایت غالب احوال کے متعلق ہے جیسا کہ علامہ باقی نے موطا کی شرح وغیرہ میں کھھا ہے اور حضرت عبداللہ بن عباس کی روایت أحسيا فا کے متعلق ہے۔

بلر علامرصاحب الني دوسرى تفيف شرفر مات بين: قلت اكتفاء النبى عَلَيْتُ على ثمان ركعات فى التهجد ' لوثبت انه لم يزد عليه شيئاً فى وقت ما ' ليس من قبيل التحديد الالتزامى ' بحيث لا يجوز الزيادة عليه فكيف وقد قال النبى عَلَيْتُ الصلاة خير موضوع فمن شاء فليقلل ومن شاء فليستكثر فلما جازت الزيادة و واظب على الزيادة الخلفاء كانت سنة بالنسبة الينا لا مرلزوم سنتهم

(تحفة الاخبار باحياء سنة سيد الابرار . ص ٢٤ ١)

اورحديث ابن عباس يربحث كرتے ہوئے خودعلامه صاحب فرماتے ہيں۔

لايقال هذا حديث غير مقبول كما صرّح به ائمة الفن على ماسبق ذكره لانا نقول لم يصرّح احد منهم بانّه موضوع بد غاية ماقيل أنّه حديث منكر والمنكر ليس من اقسام الموضوع بل هو من اقسام الضعيف وليس كل ضعيف ولاكل منكر كالموضوع الذى لايحل نقله والتاييد به

(تحفة الاخبار باحياء سنة سيد الابرار ص ٢٤ ١)

اور نہ یہ کہا جائے کہ بیر مدیث مقبول نہیں جیسا کہ ائمہ الفن نے تصریح کی ہے جس کی تفصیل پہلے ذکر ہو چکی ہے۔ اس لئے کہ ہم کہتے ہیں کہ ان ائمہ میں سے کسی نے بھی اس روایت کوموضوع نہیں کہا ہے بلکہ زیادہ سے زیادہ انہوں نے اس روایت کومنظر قرار دیا ہے۔ اور منکر موضوع کے اقسام میں سے نہیں بلکہ منکر ضعیف کے اقسام میں سے ہواور نہ ہرضعیف موضوع کے انتہا میں سے تائید حاصل کرنا جائز نہیں ہو۔ (بقیدا گل صفحہ پر)

\_\_\_\_\_

(بقیہ حاشیہ ۱۷۵)علامہ صاحب کے ندکورہ بالاعبارات اور تقریحات سے معلوم ہوگیا ہوگا کہ علامہ صاحب نہ خود آٹھ رکعات تراوی کے قائل ہے اور نہوہ آٹھ رکعات احتاف کا فد ہب قرار دیتے ہیں۔ بلکہ ہدلیة کے حاشیہ میں لکھتے ہیں کہ آٹھ رکعات پڑھنے والاسنت موکدہ کا تارک ہے (حاشیہ حدایہ ا/۱۰۱)

2۔ ای طرح بی حال آ نجناب کے العرف الشذی کے حوالہ کا ہے کہ حضرت شاہ صاحب ؒ نے اگر چہ آٹھ رکعات کا ذکر العرف الشذی میں کیا ہے گراس میں یہ کہیں نہیں کہ یہ حضرت شاہ صاحب ؒ کی ذاتی رائے یا انہوں نے اس کواحناف کی طرف منسوب کیا ہے۔ بلکہ انہوں نے تو آٹھ رکعات پر اکتفا کرنے والوں کو بخت الفاظ سے یا دفر مایا ہے ۔ چنا نچہ فرماتے ہیں: واما من اکتفی بالرکعات الشمانية و شذ عن السواد الاعظم و جعل ترميهم بالبدعة فلير عاقبته (فيض البار کا المراکد)

کہ جوآٹھ رکعات پر اکتفا کرتا ہے تو گویا اس نے سواد اعظم سے علیحد گی اختیار کی اور جوان کو (ہیس رکعات تر اور کے تاکلین ) کوبرعتی کہتے ہیں وہ اپنی عاقبت (انجام) کود کھے لے۔

علی هذا القیاس یہی حال ان حوالجات کا بھی ہے جو آنجناب نے متوب میں احناف کا ند بب ظاہر کرتے ہوئے تحریفر مائی ہے۔

ان میں سے کوئی بھی نہ ذاتی طور پر اور ند بہا آٹھ رکعات تراوی کا قائل ہے اورا گر بالفرض کوئی ہو بھی تو وہ اس کی ذاتی انفرادی رائے ہوگی۔ نہ بب کے ساتھ اس کا کوئی تعلق نہیں' ان کی ذاتی رائے کوہم جمہور کی رائے اور ترجیح کے مقابل بلا ضرور سے نہیں قبول کر سکتے' ان وضاحتوں کے باوجود یہ بات ذہن نظین کرنا ضروری ہے کہ کتاب میں کسی عبارت کوئش کرنے اور اسے نور کے سالم کا کوئی تعلق کی ذاتی یا اس کے مسلم کا کرنے اور اسے نئہ بہت کے خلاف جو کی کرتے گئی ان مسلم کا کہ بیار اس کے مسلم کا بیا ہے۔ ورندا گر کسی قول کا نقل کی ذاتی رائے یا غہ بہت صور کیا جانا صبحے ہو پھر تو غیر مقلدین حصر است کی کتابوں میں اس قتم کے اقوال و آراء بہت سارے ہیں جوان کی رائے کے خلاف ہیں وکلی انتہا سے۔

اس لئے بیداضح ہو کہ آٹھ رکھات تراوت نہ ضحابہ کرام کا ند ہب رہا ہے اور نداسلاف واخلاف کا اور نہ ندا ہب اربعہ میں سے کوئی آٹھ رکھات کا قائل ہے۔ بلکہ بیآٹھ رکھات تہجد کی نماز ہے جو آٹخضرت علیقہ رمضان اورغیر رمضان میں پڑھا کرتے تھے اگراس کوتراوی قرار دیا ہے تو تراوی تو صرف رمضان میں ہوا کرتی ہے غیر رمضان میں نہیں ہوتی جبکہ حضرت عائشہ کی روایت میں رمضان اورغیر رمضان دونوں میں آٹھ رکھات کا ذکر ہے۔

حضرت عائشگی بہی تضری واضح کرتی ہے کہ اس روایت کا تعلق قیام اللیل (تبجد) کے ساتھ ہے۔اورتر اول الگ نماز سے جس کی تعداد آنخضرت علیہ کے عمل مبارک سے جو بروایت عبداللہ بن عباس ذکر ہوا اور خلفاء راشدین اور صحابہ کرام' تا بعین کے تعامل سے بیس رکعات ثابت ہے۔
صحابہ کرام' تا بعین کے تعامل سے بیس رکعات ثابت ہے۔

البنة ترجيح كے لحاظ سے امام صاحب اور صاحبین كا اختلاف ہے۔ امام اعظم رحمة الله عند فرماتے ہیں كدرات كودودو ہیں۔ دن كی طرح رات كوجھ چارچارفل پڑھنا اولى ہے۔ جبكہ صاحبین رحما الله فرماتے ہیں كدرات كودودو نقل پڑھنا اولى ہے۔

شم یصلی ثلاثا نسائی شریف کی روایت ش بھی آتا ہے ویو تو بثلاث (۱) ملاعلی قاری رحمة الشعلیہ نے تین رکعات و تر پڑھنے کے جواز پر اجماع نقل کیا ہے (۲) البتہ ایک رکعت کے جواز شراختلاف ہے۔ امام ابوحنیفہ رحمۃ اللہ اسے جائز نہیں تبھتے اور دیگر ائمہ اسے جائز سجھتے ہیں۔ حضرت حسن بھری کو حضرت ابن عمرضی اللہ عنہ کے بارے میں بتایا گیا کہ وہ تو ایک رکعت الگ پڑھتے ہیں تو فرمایا کہ ان کے والد حضرت عمرضی اللہ عنہ ان سے بڑے عالم تصاوروہ ورتر کی تین رکعتیں ایک سلام سے پڑھتے تھے۔ بلکہ اس سلسلے میں حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا سے ایک روایت امام ابوداؤر ؓ نے روایت کی ہے جس میں تصرت کے ہے۔ سم میں تقری کے جہیں میں تقری کے کہ آ ہے تجور کی میازیا دہ پڑھتے تھے۔ لیک وایت اللہ عنہا ہے لیک روایت الم ابوداؤر ؓ نے روایت کی ہے جس میں تقری کے کہ آ ہے تجور کی میازیا دہ پڑھتے تھے۔ لیکن ورتر کو جمیشہ تین پڑھتے تھے (۳)۔

انبیاء کی نیند: اتنام المنع حضرت عائشرضی الله عنها کے استفسار کا مطلب یہ ہے کہ ایک طرف تو آپ علی الله عنها ہے کہ وجوب کی دلیل ہے لیکن دوسری طرف خودوتر پڑھے بغیر سوجاتے ہیں۔ جو کہ وجوب کی دلیل ہے لیکن دوسری طرف خودوتر پڑھے بغیر سوجاتے ہیں۔ اس کی کیا وجہ ہے۔ ان عیسنی تنا مان و لا بنام قلبی آپ علی ہے آپ الله تارات کی اور جن بات سمجھے میں اللہ جل شانہ سے دعا ہے کہ اللہ تعالی ہم سب کوجی بات سمجھے میں اللہ جل شانہ سے دعا ہے کہ اللہ تعالی ہم سب کوجی بات سمجھے میں اور جی پر چلنے کی تو فیق عطافر ما نے اور ہم سب کوت سب کوت میں کا داور الله والما فائل سے محفوظ و مامون رکھے۔ (آمین) اس کے علاوہ الفاظ تعبیر اور ترکی غلطی کامعذرت خوال ہوں۔ وجوالموفی

(مفتی) ابوطلحه بی ارالله حقانی خادم دارالا فمآء والتد رکیس بجامعه دارالعلوم حقاشیه اکوژه خشک ۲/رمضان المبارک ۱۳۲۵ ه

(۱)نسائی جاص۲۳۹

(۲) جمع الوسائل ج ٢ ص٩٢

(۳) قالت (عائثيرض الله عنها) كسان يوتسر بساربع و ثلاث. و سست و ثلاث و ثمان و ثلاث و عشسر و ثلاث. ابوداو دج اص ۹۳ ا . (مختار)

حاصل بیہ ہے کہ میری نیند غفلت کی نیند نہیں ہوتی بلکہ میر اول جاگ رہا ہوتا ہے۔اس بنا پرمیری نسبت سے وقر کے قضاء ہونے کا اختال نہیں ہے۔ بلکہ وتر کے وقت کا ادراک ہوجا تا ہے اور بیر بات تمام انبیاء کا خاصہ ہے کہ ان کے دل نیند کی حالت میں بھی بیدار ہوتے ہیں تا کہ وحی اور عبادات سے غفلت نہ رہے۔

باقی لیلة التعویس کی رات جو غفات نبی کریم الله پرطاری ہوئی اور شخ کی نماز جاتی رہی اس کے حق میں بعض شراح تو یہ ہے ہیں کہ طلوع فجر کا تعلق احد اک بالبصر سے ہے اور آئھوں کے بارے میں تو آپ الله خود فرماتے ہیں کہ وہ سوتی رہتی ہیں جبکہ بعض شراح کے خیال میں وہ خود الله تعالیٰ کی حکمت میں تو آپ الله خود فرماتے ہیں کہ وہ سوتی رہتی ہیں جو اگر وہ غلبہ نوم نہ ہوتا تو قضاء کے متعددا حکام ہمیں میں سے جنچتے ۔ بہر حال ان حکمتوں کی وجہ سے آپ الله تو گل ہے گاہے نیند کا غلبہ ہوا کرتا تھا۔ تو گویا نیند کی حالت میں بھی ہی آئھ کی طرح آپ کا قلب بھی سوجاتا تھا۔

(۱۱) حدّثنا إسحاق بن موسىٰ ثنا معن ثنا مالك عن ابن شهاب عن عروة عن عائشة أنّ رسول الله عَلَيْكُ كان يصلّى من الليل احدى عشرة ركعة يوتر منها بواحدة فاذا فرغ منها اضطجع على شقه الأيمن.

(۱۲) حدّثنا ابن أبى عمران معن عن مالك عن ابن شهاب نحوه وثنا قتيبة عن مالك عن ابن شهاب نحوه (۱).

ترجمہ: حضرت عائشہرضی اللہ عنہا سے روایت ہے کہ نبی کریم اللہ عنہا سے روایت ہے کہ نبی کریم اللہ است کو گیارہ رکعات نماز پڑھتے تھے ایک رکعت سے وہ نماز کو ورتر بنا لیتے تھے پھر جب وہ ان سے فارغ ہوجاتے تھے۔

(۱) صحيح مسلم ۲۵۳/۱ كتاب صلونة المسافرين وقصرهاباب صلونة الليل وعددر كعات النبى عليه في الليل، سنن النبى عليه في الليل، سنن البي داؤد ۱۹۵/۱ كتاب صلونة المسافرين باب صلونة الليل، سنن النسائي ۱۹۳/۱ كتاب قيام الليل تطوع النهارباب كيف الوترباحدى عشرة ركعة ۱۲. (مختار)

ایک رکعت نمازنین:

یوتر منها بواحدهٔ جولوگ ایک رکعت و ترکیان بیل وه اس مدیث سے بھی استدلال کرتے بین که ایک رکعت و ترکی و حکم رکعتوں کوطاق بنادیے تھے لیکن ہم جواب میں کہتے بین کہ اس قول کا یہ معنی نہیں بلکہ مقصد یہ ہے کہتم نے اگر آٹھ رکعتیں پڑھی ہیں۔اور آخر میں تین رکعتیں پڑھ لیس ۔ تو و تر تو ایک رکعت سے ہوئی باقی تو سب رکعتوں کے شفعات لیمنی جوڑے ہیں ۔ تو مطلب یہ ہوا کہ آخر میں طاق نماز تین رکعات کی پڑھتے اور اس میں ایک رکعت ہی طاق بننے کا سبب بنتی ۔ اور اگر اس میں ایک رکعت ہی طاق بننے کا سبب بنتی ۔ اور اگر اس مدیث کی بیتاویل نہیں بن سکتی کیونکہ نبی کریم ایک مدید میٹ کی بیتاویل نہیں بن سکتی کیونکہ نبی کریم ایک کے مراحت کے ساتھ ایک رکعت سے خو مرایا ہے۔ حضرت عبد اللہ بن مسعود رضی اللہ عنہ کی روایت ہے فرماتے ہیں۔

أنّ النبى عَلَيْكُ نهى عن البنيواء(١) نبى كريم الله في الكركوت كى نماز منع فرمايا السطرح حضرت حسن بعرى في في عن البنيواء (١) نبى كريم الله في الساطرة حضرت حسن بعرى في في صحابه كرام كااس بات براجماع نقل كيا ہے كه ايك ركعت نماز نبيل اور بير كه وتر تين منتقل ولائل موجود بين كه ايك ركعت نماز نبيل اور بير كه وتر تين ركعات بين -

(۱۳) حدّثنا هنّادثنا ابوالأحوص عن الأعمش عن إبراهيم عن الأسود عن عائشة قالت كان رسول الله عَلَيْهُ يصلّى من الليل تسع ركعات.

(۱۳) حدّثنا محمو دبن غیلان ثنا یحیی بن ادم ثنا سفین الثوری عن الاعمش نحوه (۲).

(۱)قال على القارئ وقيل كون الوتر واحدة منسوخ للنهى عن البتيراء ٢ اجمع الوسائل ج٢ ص٩٢ ص

(٢) جامع ترمذى ١٠٣/١ كتاب الصلواة ،سنن النسائى ١٩٣/١ كتاب قيام الليل وتطوع النهار باب كيف الوتربتسع ، سنن ابن ماجة ص٩٨ كتاب اقامة الصلواة والسنة فيها باب ماجاء فى كم يصلّى بالليل، سنن ابى داؤد باب صلواة الليل ١٩٨١ ، السنن الكبرى ٢/١ ١٩٢٠، ٢٢٨

ترجمہ: حضرت عائشہ رضی الله عنہا سے روایت ہے کہ نبی کریم الله است کو نورکعات نماز برجمتے تھے۔

یصلی من اللیل تسع رکعات الن اسکایه معنی بھی ہوسکتا ہے کہ آپ اللہ عشاء کی نماز پڑھتے جس کی تعداد نور کعات بنتی ہے۔ لیکن رائے معنی ہے کہ چھر کعات تبجد کی پڑھتے اور تین وترکی۔ بہر حال تبجد بھی مختلف اوقات میں مختلف تعداد میں آپ نے پڑھی ہے (۱)۔

نحوه اسى سابقه حديث كودوسرى سند كے ساتھ لائے ہيں۔

(10) حدّثنا محمّد بن المثنى ثنا محمّد بن جعفر ثنا شعبة عن عمروبن مرّة عن أبى حمزة رجل من الأنصار عن رجل من بنى عبس عن حذيفة بن اليمان أنّه صلّى مع رسول الله علم الله علم السلوقة قال الله اكبر ذو الملكوت والجبروت والكبرياء دخل فى الصلوة قال الله اكبر ذو الملكوت والجبروت والكبرياء والعظمة قال ثمّ قرأ البقرة ثمّ ركع فكان ركوعه نحوا من قيامه وكان يقول سبحان ربى العظيم سبحان ربى العظيم ثمّ رفع راسه وكان قيامه نحوا من ركوعه وكان يقول لربى الحمدلربى الحمدثم سجد فكان سبحوده نحوامن قيامه وكان يقول سبحان ربى الأعلى سبحان ربى الأعلى سبحان ربى يقول سبحان والنا الشعود وكان يقول سبحان والمائدة والأنعام قال المناهدة والأنعام قال والمائدة والأنعام قال

(۱) جيما كرحفرت البوداور فرق فود حفرت عائش سفا كيا ب وقد مو ما آنفا (اصلاح الدين) اورعلامه يجوري في كا المحاصل ان في رواية ثلاث عشرة وفي رواية احدى عشره وفي رواية سبعاً ولعل اختلاف الروايات بحسب اختلاف الاوقات والحالات من صحة ومرض وقوة وضعف ولذلك قال الشيخ ابسن حجر الصواب حمله على اوقات متعددة واحوال مختلفة فكان تارة يصلّى كذاوتارة يصلّى كذالذلك اولتنبيه على سعة الامر في ذلك (المواهب الدنية ٢٥١) (مختار)

أبوعيسى وأبوح مزة اسمه طلحة بن زيد وأبوجمرة الضبعي أسمه نصر بن عمران(١).

ترجمہ: حضرت حذیقہ بن الیمان کہتے ہیں کہ جب آپ الیک رات ہی کریم اللہ کے ساتھ نماز پڑھی۔ حضرت حذیقہ کہتے ہیں کہ جب آپ اللہ کا کبر ذو المملکوت و المجبروت و المکبریاء و المغطمة (اللہ تعالی فرمایا ''اللہ اکبر ذو المملکوت و المجبروت و المکبریاء و المغطمة (اللہ تعالی سب سے بڑا ہے۔ بڑی بادشاہی والی ذات ہے۔ بڑی بادشاہی والی ذات ہے۔ بڑی اور عظمت والی ذات ہے ان پھر (سورة فاتحہ کے بعد )سورة بقره کی قرآت برائی پھر رکوع فرمایا تو آپ آلیہ کا رکوع آپ آلیہ کے قیام کے برابرتھا۔ آپ اس فرمائی پھر رکوع فرمایا تو آپ آلیہ کا رکوع آپ آلیہ کے قیام کے برابرتھا۔ آپ اس شل' سبحان رہی العظیم " پڑھتے رہے پھر سراٹھایا تو آپ کا قومہ بھی رکوع جیسا مقا۔ اس شل آپ کہر ہو ہے۔ ان رہی الاعلیٰ " دہراتے رہے پھر سجدے سے مقنا تھا۔ آپ اس شل کر سبحان رہی الاعلیٰ " دہراتے رہے پھر سجدے سے سراٹھا کر بیٹھے تو آپ کا جلہ سجدے جتنا تھا۔ آپ آسیس ' دہراتے رہے پھر سورة آل عمران، سورة المقرہ، سورة آل عمران، سورة الناء اور سورة ما کہ ویا انعام ش سے ایک سورة پڑھی۔ اخیر کی دوسورتوں شل شک کرنے والے شعبہ آئیں۔

تسبیح و تحمید: فلمادخل فی الصلوة قال الله اکبر علامه مناوی کہتے ہیں کہ و خلی یہاں پر اوا دالدخول کے میں کہ و خلی ہیں کہ بیر تحریب کے بعد بطام کی قاری نے کہا ہے کہ بظام کی ہیں تر کے بعد بطور و کر کہ میں اور دوسر اجر میں مبالغہ ہے بعنی بڑے ملک با دشاہی والا اور بڑے غلب اور قبر و جر والا ہے ہیں۔ پہلا ملک میں اور دوسر اجر میں مبالغہ ہے بعنی بڑے ملک با دشاہی والا اور بڑے غلب اور قبر و جر والا ہے (۱) سنن ابی داؤ د ا ۱۳۳۱ کتاب الصلوة باب مایقول الرجل فی رکوعه و سجو ده، مصنف ابسی شیبة ا ۲۲۲ کتاب الصلوة سنن دار می ص ۳۰۳، المستدرک للحاکم ا ۱ ۲۲۲ کتاب الصلوة (مختار)

جبکہ کبریاء کبرور فع کے معنی میں آتا ہے۔ یہاں پر چونکہ آپ نوافل پڑھ رہے تھے۔اس لئے فرائض میں چومعہود تبع ہے۔اس کے فرائض میں چومعہود تبع ہے۔اس کے بغیر تبع کے دیگر الفاظ سے تبیج ادا فرمائی۔ حتی قد أ البقو ہ یعن سورة فاتحہ پڑھ کر سورة بقرہ بھی تمام پڑھ لی۔ ابوداؤد کی روایت میں سورة فاتحہ کی قراً آق کی تصریح موجود ہے۔ویسے ظہور کی وجہ سے داوی نے اس کا ذکر نہیں کیا۔ سورة بقرہ کی طرح دیگر رکعتوں میں اگلی طویل سورتیں پڑھ لیں۔

ف کان رکوعه نحوا من قیامه النج رکوع کا قیام جتنا ہونایا تواپ ظاہری معنی پرمحول ہے لین اتنالمبار کوع کیا جتنا سورۃ بقرہ پڑھنا۔اوریا مطلب سے ہے کہ جس طرح قر اُت معمول سے زیادہ طویل تھی یو نبی رکوع بھی معمول کی رکوع سے طویل تھی۔عام رکوع سے لمباتھا۔

او الانعام المنے لینی چوتھی سورۃ میں شک ہے کہ سورۃ مائدہ پڑھی ہے یا انعام لیکن مسلم کی روایات سے معلوم ہوتا ہے کہ ایک رکعت میں پہلی تین سورتیں اور دوسری میں وہی تین پڑھ لی ہیں۔ بہر حال ممکن ہے کہ بیا ختلاف تعدّ دمواقع پر ہنی ہو۔ایک موقع پر چاں سورتوں کو دور کعتوں میں اور دوسرے موقع پر چار رکعتوں میں پڑھ بچے ہوں۔ لیکن عبادت کا بیا انداز سیدالکونین ہائے کی شایان شان ہی ہوسکتی ہے۔

قال ابوعیسیٰ ابوحمزة النج امام ترخی رحمۃ اللہ یہاں ایک راوی کے نام کے بارے ش تھرہ کررہے ہیں۔ فدکورہ حدیث میں جس راوی کو تمزہ (حاء کے ساتھ) ذکر کیا گیا ہے اس کا نام طلحہ بن زید بتایا ہے لیکن نسائی نے طلحہ بن بزید کہا ہے اور یہی رائج معلوم ہوتا ہے علامہ ابن تجر نے بھی طلحہ بن بزید کھا ہے (۱)۔ جبکہ دوسراراوی جس کا ذکر امام ترفدی کررہے ہیں۔ وہ ابو جمرہ (جیم کے ساتھ) ہیں۔ ان کا نام نصر بن عمران ہے (۲)۔ بیضی ہیں۔ چونکہ جیم اور حاء کے نقطوں پر بھی بھی دھیان نہیں رہتا۔ لہذا عموما التباس کا اندیشر بتا ہے اور بھی بھی ناتخین کی غفلت سے نقطے ادھرادھر ہوجاتے ہیں۔ اس لئے امام ترفدی نے احتیاطاً دونوں کے نام ذکر کر کے بتادیا ہے کہ یہاں راوی ابو جمزہ حاء کے ساتھ پڑھاجائے جیم (۱) طلحہ بن بزید الابلی ابو حمزۃ مولیٰ الانصار نزل الکو فۃ و ثقہ النسائی من الثالثة ۲ ا تقریب التھذیب ج ا می ۲۸۰۰ (مختار)

(٢) نصر بن عمران بن عصام الضبعى ابوجمرة بالجيم البصرى نزيل خراسان مشهور بكنيته. ثقة ثبت من الثالثة مات سنته ثمان وعشرين. ٢ ا تقريب التهذيب ج٢ ص ٢٠٠٠. (مختار)

کے ساتھ نہ پڑھا جائے ۔ بعض نسخوں میں غلطی سے ابو جمرۃ کو ابو جمزہ لکھا گیا ہے۔ فلیتنبہ بوری رات نماز میں آبیت کی تلاوت:

(۱۲) حدّثنا ابوبكر محمّد بن نافع البصرى ثنا عبدالصمد ابن عبدالوارث عن إسماعيل بن مسلم العبدى عن أبى المتوكل عن عائشةٌ قالت قام رسول الله عليه من القرآن ليلة (١).

ترجمہ: حضرت عائشہ رضی اللہ عنہ فرماتی ہیں کہ نبی کریم اللہ ایک رات کو تہجد میں صرف ایک آیت نماز میں بار بارد ہرا کر کھڑے رہے۔

قام بآیة من القرآن لیلة لیلة سے تمام رات مراد ہے لینی ساری رات ایک بی آیت پڑھ کر قیام کیا۔ ابن جُرِّنے پر جمہ کیا ہے کہ ساری رات ایک بی رکعت میں قیام کرکے پڑھتے رہے۔ دوسری رکعت نہیں کی لیکن ملاعلی قاریؓ نے اس پر دو کیا ہے کہ ایک رکعت نماز بی نہیں ہے۔ بلکہ اس کا ترجمہ یوں کیا ہے کہ ساری رات ایک بی آیت کو اہتمام کے ساتھ نماز کے ارکان میں پڑھتے رہے (۲) جیسا کہ ابوذر رضی اللہ عنہ کی روایت میں اس کی تقریح ہے کہ نبی کر پر سیالتہ ایک رات نماز پڑھنے کھڑ ہے ہوگئے۔ ساری رات صفح تک ایک بی آیت کو پڑھتے رہے۔ قیام میں بھی، رکوع میں بھی اور سجد سے میں بھی یہی آیت پڑھتے رہے۔ لوگوں نے ابوذر رضی اللہ عنہ سے بوچھا کہ وہ کوئی آیت تھی تو انہوں نے کہا کہ وہ آیت بیٹی جو آپ

(۱) جامع ترمىذى ١/٠٠١،١٠١ كتاب الصلواة باب ماجاء فى قرأة الليل، سنن ابن ماجة ص ٩٤١٩ كتاب الصلواة. (مختار)

(٢)ولعل ذالك كان قبل النهى عن القراء ة فى الركوع والسجود فلا ينافيه خبرمسلم نهيت ان اقرء القرآن راكعا وساجدا على أنّ النهى للتنزيه فيكون فعله لبيان الجواز . كذاقال البيجوري ومثله عندعلى القارى (اصلاح الدين).

(٣) علامه يجورئ في الدوايت ايك متلكا التنباط كيا مجوية خله منه جواز تكرار الآية في الصلوة (الممواهب اللدنية ١٨١) (مختار)

قدرت كالمه اور صفت رحمة كااستحضار: ان تعذّبهم فإنّهم عبادك وان تغفر لهم

فاتک أنت العزيز الحكيم (مائدة ١١٨) اگرتوان كومزاد ي تيمهار بند يين اوراگرتوان كومزاد عنوي تمهار بند يين اوراگرتوان كومعاف كردي توتي تي زيردست حكمت والا ب

گویا آپ اللہ تعالیٰ کی قدرت کا ملہ کا استحضار کرتے کہ اگر تمام بندوں کو جہنم میں ڈال دیا تب بھی کوئی پوچھنے والانہیں اور اگر سب کو بخش دیا تب بھی وہ ہی بخشنے والا ہے۔ آپ آلی کے کو اللہ تعالیٰ کی صفت مغفرت سے زیادہ دلچی تھی۔ ہر طرح سے اپنی امت کو بخشوانے کی کوشش کرتے۔ زیادہ حرص کی بناء پر اس کیلئے آپ اکثر روتے رہنے۔ ایک دوسرے موقع پر حضرت عبداللہ بن مسعود رضی اللہ عنہ سے تلاوت کروائی تو سورة النساء کی اس آیت کوئ کردو پڑے اور فرط رحمت سے تاب نہ لا کر ابن مسعود گوچپ کرایا(۱) فیکیف اذا جئنا من کل امدہ بشھید و جئنا بک علی ھو لاء شھیداً (نساء اسم) جب ہر ہر امت میں سے ایک ایک گواہ کو حاضر کریں گے اور آپ کوان لوگوں پر گواہی دینے کیلئے حاضر لائیں گے۔

(١٤) حدّثنا محمود بن غيلان ثناسليمان بن حرب ثنا شعبة عن الأعمش عن أبى وائل عن عبدالله قال صليت ليلة مع رسول الله عليه فلم يزل قائما حتى هممت بامرسوء قيل له وماهممت به قال هممت ان اقعد وادع النبي عَلَيْهِ .

(۱۸) حدثنا سفيان بن و كيع ثناجرير عن الاعمش نحوه (۲).

ترجمہ: حضرت عبداللہ بن مسعود رضی اللہ عنہ کہتے ہیں کہ ایک رات میں نے نبی کر یہ میں ہے۔ کہ میں نے کریم اللہ کے ساتھ نماز پڑھی۔ آپ لمبے وقت تک کھڑے رہے حتیٰ کہ میں نے ایک برے کام کا ارادہ کیا۔ کسی نے پوچھاوہ کونسا براکام تھا جس کاتم نے ارادہ کیا۔ تو بولے کہ میں نیٹے جاؤں اور نبی کریم آلیک کے کوڑو دوں۔

(١)شمائل باب ماجاء في بكاء النبي عَلَيْكُ.

(٢) صحيح بخارى باب طول الصلواة في قيام الليل ١٥٢/١ كتاب التهجد، صحيح مسلم ١٢/١ كتاب صلولة السلولة الليل، ١٣٢١ كتاب صلولة المسافرين وقصرهاباب استحباب تطويل القرأة في صلولة الليل، مسندا حمد ١٨٥١ (مختار)

دوم بیرکه نبی کریم آلیسیه کی اقتداء تو بحال رہے کین اسے کھڑا چھوڑ کرخود بیڑھ کران کی اقتداء کروں بیکام برااس لئے ہے کہ اس میں سوءادب ہے۔اگر چہ فی نفسہ نفل میں ایسا کرنا جائز ہے۔ سوم بیر کہ بیارادہ کیا کہ جس شفع میں افتداء کیا ہے۔اسے پورا کرنے کے بعد دوسر ہے شفع میں نبیت ہی نہ با ندھوں۔اور نبی کیا کہ جس شفع میں افتداء کیا ہے۔اسے پورا کرنے کے بعد دوسر ہے شفع میں نبیت ہی نہ با ندھوں۔اور نبی کریم آلیسیه کوچھوڑ دوں وہ خود ہی نماز پڑھیں۔ یا میں الگ نماز کی نبیت با عدھوں اور مختصر نوافل پڑھوں۔ اور آپ آلیسیه کوچھوڑ وں۔اپنی نماز پڑھیت رہیں یہ بھی اگر چہ جائز ہے کیاں نبی کریم آلیسیه کی مفارقت کی وجہ سے بری بات ہے۔باخصوص ابن مسعودرضی اللہ عنہ کے نزد یک اس کی برائی واضح ہے۔

(۱۹) حدّثنا إسحاق بن موسىٰ الأنصارى ثنا معن ثنا مالک عن أبى النصر عن أبى سلمة عن عائشة أنّ النبى عَلَيْهُ كان يصلّى جالسا في قراء ته قدر مايكون ثلثين او أربعين آية قام فقرأ و هو جالس فاذابقى من قراء ته قدر مايكون ثلثين او أربعين آية قام فقرأ و هوقائم ثمّ ركع وسجدثمّ صنع فى الركعة الثانية مثل ذلك دار.

ترجمہ: حضرت عائشہ رضی الله عنها سے روایت ہے کہ نبی کریم الله عنها کی کرنماز پڑھے کے اور جب مقردَه سورة کی تمیں عالیس

(۱) صحيح بخارى ۱ / ۱۵۰ كتاب تقصير الصلواة باب إذاصلّى قاعداً الخ، صحيح مسلم ۲۵۲/۱ كتاب واصلواة باب فى كتاب صلواة المسافرين وقصرها باب جواز النافلة قائماً الخ، سنن ابى داؤد كتاب الصلواة باب فى صلواة القاعد والامام جامع ترمذى ١ / ٨٥٨ كتاب الصلواة باب فى من يتطوع جالساً، سنن النسائى ١٨٤/١ كتاب قيام الليل تطوع النهار باب كيف يعمل اذاافتح الصلواة قائماً. (مختار)

آیات رہ جاتی تھیں تو کھڑے ہوکر تلاوت فرمانے لگتے۔پھر (و بیں سے) رکوع میں اور پھر سجدے میں جھی ایسا ہی کرتے تھے۔ اور پھر سجدے میں جھی ایسا ہی کرتے تھے۔

کان یصلی جالساً النج بخاری اور مسلم کی روایت می حضرت عاکش سے بیقری منقول ہے۔ کہ بیدوہ زمانہ تقاجب نبی کریم آلی کے عمر مبارک کا بیشتر حصہ گزر چکا تھا۔ اور برد ھاپے، کمزوری مضعف و بیاری وغیرہ کے وارض لاحق تھے۔ قدر مایہ کون ثلاثین النج اس سے معلوم ہوتا ہے کہ اس وقت بھی آ ہے آلی ہے سورہ بقرہ ووغیرہ کی کمبی سورتیں پڑھے جس کا بردا حصہ بیٹھ کر پڑھ لیتے تھے۔

ایک بی نماز قائماً وقاعداً پڑھنے کا مسئلہ:

رکع و سجد دالنے اس کا مقصد بیہ ہے کہ رکوع اور سجد ہوتا میں مقصد بیہ ہے کہ رکوع اور سجدہ تو سجد کی فرف انتقال فرماتے کیونکہ رکوع اور سجدہ تو تا ہے کہ نفس تائم اور سکتے تھے۔ اس حدیث سے نفل نماز کے بارے میں انکہ اربعہ کا بیہ مسلک ثابت ہوتا ہے کہ بعض رکعات کھڑ ہے اور بعض بیٹے کہ اور بعض مارادا کی جائیں تو بیج اگر کھڑا ہوجائے۔ بیٹمام صور تیں جائز ہیں۔ بعض مالکیہ نے اس صورت کونا جائز ہیں۔ بعض مالکیہ نے اس صورت کونا جائز کہا ہے کہ کھڑ ہے ہو کرانل کی نیت کی جائے پھر بیٹے اجائے۔

اس طرح بعض حنفیہ اور بعض مالکیہ نے کہا ہے کہ فل نمازی ابتداء قیام کی حالت میں کی تو قیام ہی سے رکوع اور سجدہ ادا کیا جائے گا۔ دوسری سے رکوع اور سجدہ ادا کیا جائے گا۔ دوسری صورت جائز نہیں جس طرح کہا گلے حدیث میں آتا ہے۔ لیکن زیر نظر حدیث سے اس فد ہب پر دوہوتا ہے کیونکہ اس میں ابتداء بیٹے کر کرنے کے بعد بھی رکوع و سجدہ قیام کی حالت سے مردی ہے۔ بہر حال نوافل میں اس قتم کی باتوں کا توسع ہے لیکن فرائض میں بغیر مجبوری کے بیٹے کر پڑھنا جائز نہیں ہے۔

(٢٠) حــ قنا أحمد بن منيع ثنا هشيم أناخالدالحذاء عن عبدالله بن شقيق قال سالت عائشة عن صلوة رسول الله على الله على عن تطوّعه فقالت كان يـصــلّى ليك طويك قائماً وليلاطويلاً قاعداً فاذاقراً وهوقائم ركع

وسجدوهوقائم واذا قرأ وهو جالس ركع وسجد وهوجالس(١).

ترجمہ: عبداللہ بن شقیق کہتے ہیں کہ میں نے حضرت عائش سے نی کریم اللہ کے بارے میں دریافت کیا تو انہوں نے فرمایا کہ نبی کریم اللہ دات کے ایک طویل حصے تک بیٹھ کرنوافل اداکرتے طویل حصے تک بیٹھ کرنوافل اداکرتے سے اور جب کھڑے ہوکر قرائت فرماتے تو قیام کی حالت سے رکوع اور سجدے میں جاتے تھے اور جب بیٹھ کرقر اُت فرماتے تو قعود کی حالت ہی سے رکوع اور سجدے میں جاتے تھے اور جب بیٹھ کرقر اُت فرماتے تو قعود کی حالت ہی سے رکوع اور سجدے میں حاتے تھے۔

نوافل کا اہتمام اور توسع: کان یصلی اس سے معلوم ہوتا ہے کہ نوافل میں بہت توسع ہے۔ بیٹھ کر پڑھنا بھی جائز ہے۔ اگر چہ عذر نہ ہو۔ اس لئے آپ نے اسے مختلف انداز سے اوا کئے ہیں۔ ایک رات کھڑے ہو کر تو دوسری رات بیٹھ کر۔ یام او بیہ کہ ایک ہی رات کے پچھ جھے میں دیر تک کھڑے کھڑے نماز بڑھتے تھے اور بعض جھے میں بیٹھ کر بڑھتے تھے۔ تا کہ امت کو ہولت ہو۔

ليلا طويلاطويلاياتوزمنا محذوف كى صفت باس صورت يس بدليلا سي بدل بعض واقع بوا (١) صحيح مسلم ٢٥٢١ كتاب صلواة المسافرين وقصرهاباب جواز النافلة قائماً وقاعداً، جامع ترمذى ١٨٢٨ كتاب الصلواة باب ماجاء فى من يتطوع جالساً، سنن ابى داؤد ١٨٥٨ كتاب الصلواة ابواب التطوع الخ (مختار)

ہا در محد وف موصوف کا قائم مقام ہے یا پھر بیصلاۃ محد وف کی صفت ہے حدف محد وف کے بعد طویلۃ کی تاء کی حذف موں کے اس مورت میں بیمفعول مطلق کا قائم مقام ہے۔ تقدیر یوں ہوگی' کے ان یصلی لیلا صلوۃ طویلة''

د کع و سبحد و هو قدائم لیخی قیام کی حالت سے رکوع اور سجد کونتقل ہوتے تھے۔ یہی تاویل رکع و سجد و هو قدائم لیخی قیام کی حالت میں تو رکوع اور سجدہ کمکن نہیں البتہ قیام یا جلوس کی حالت میں تو رکوع اور سجدہ کمکن نہیں البتہ قیام یا جلوس کی حالت سے نتقل ہو کر رکوع اور سجدہ کمکن ہے۔ بہر حال اس حدیث سے یہ بات معلوم ہو رہی ہے کہ نوافل میں تو سع ہے اور جس حالت میں بھی سہولت ہواور جب بھی طبعی نشاط ہوا داکر نا چاہیے۔ حتی الوسع نوافل کا اہتمام کرنا چاہیے۔ جبکہ نبی اکر مہالی کے حتی میں دونوں صور توں میں فرق نہیں پڑتا۔ وجہ یہ ہے کہ آپی آپی ہوئی پڑھیں تو تعلیم امت کا فریضہ ادا ہوتا جاتا ہے۔

(۲۱) حد تنا اسحاق بن موسى الأنصارى ثنا معن ثنامالك عن ابن شهاب عن السائب بن يزيد عن المطلب بن أبى و داعة السهمى عن حفصة زوج النبى على النبي على المستحة قالت كان رسول الله على الله على الله على المسحته قاعداً و يقرأ بالسورة ويرتلها حتى تكون أطول من أطول من أطول منها (۱). ترجمه: حضرت حصه رضى الله تعالى عنها فرماتى بين كه نبى كريم الله النبي نفل نماز مين بيش كرنما ذا دافرمات تصاورا يكسورة كوتلاوت فرمات اوراكي آرام سورة معلويل سورة كوتلاوت فرمات اوراكي آرام سورة معلويل سورة كي نبيت بحى لجي بجي لجي بوجاتي تقي وسطويل سورة كي نبيت بحى لجي بجي لجي بوجاتي تقي و

ام المؤمنين فصية في حفصة ام المومنين سيده فقصة بنت عمر رضى الله عنها نبي كريم الله عنها نبي كريم الله عنها في كريم الله عنها في كريم الله عنها في كريم الله عنها وقل قبل تيس بن حذا في الله عنه (۲) ك ذكاح من تقس جوبدرى صحابي بين اورا حد من شهادت بإئى - (۱) صحيح مسلم ا ۲۵۲ كتاب صلواة المسافرين وقصر هاباب جواز النافلة قائماً واعداً، جامع ترمذى ا ۱۸۵۸ كتاب الصلواة باب ماجاء في الرجل يتطوع جالساً، مؤطاامام مالك ا ۱۳۷ (مختار) المراكب المراك

یوه ہونے پر حضرت عمرضی اللہ عند نے پہلے حضرت ابو بمرصد این رضی اللہ عند سے ان کا تکاح کرنا چاہا۔ وہ خاموش ہوگئے چر حضرت عثمان رضی اللہ عند سے نکاح کرنے کو کہا چونکہ حضرت ویہ رضی اللہ عند نے یہ وفات کا زمانہ قریب تھا۔ الہذا انہوں نے کہا کہ ابھی میں نکاح نہیں کروں گا۔ حضرت عمرضی اللہ عند نے یہ بات نی کریم آلیا کہ کو بتائی تو آپ آلیا کے نظر مایا ''بسزوج حفصة من هو خیر من عشمان ویتزوج عضمان من هو خیر من حفصة ''یعنی حقصة سے نکاح کرنے والماعثمان رضی اللہ عند سے بہتر ہوگا اور عثمان سے نکاح کرنے والی (ام کاثوم ' ) عقصہ سے بہتر ہوگی۔

چنانچ نی کریم الله است المحالات بی کریم الله است کار کیا۔ ایک دفعہ سی بات پر نی کریم الله است کار کیا۔ ایک دفعہ سی بات پر نی کریم الله ان کو طلاق بھی دیا تھا جس سے حضرت عمرضی الله عنہ کو بہت صدمہ ہوا۔ پھر حضرت جرئیل علیہ سلام نی کریم الله کے پاس تشریف لائے اور سفارش کی کہ 'ار جع حفصہ فانھا صوامہ قوامہ وانھازو جتک فی المجند '' لیمی خصہ سے رجوع کرو کیونکہ وہ بہت زیادہ روز سر کھنے والی اور بہت نوافل پڑھنے والی ہیں۔ اور وہ جنت میں بھی آپ آلیہ کی بیوی ہو گئیں۔ چنانچ آپ آلیہ کے ان سے رجوع فرمایا۔ جمادی الثانیة اسم میں اور ایک قول کے مطابق ۵۲ میں وفات پائی علامہ ابن مجر سے نقریب میں قول خانی کورجے دی ہے۔

فی سبحته سبحته ساسمقام پر نقلی نمازیس مرادین اور نقلی نماز کوشیج سے تشیبہ کی بنیاد پر ہجہ کہا جاتا ہے کیونکہ شیخ بھی نقل ہے کیک بھی بھی فرض نماز پر بھی شیخ کا اطلاق ہوتا ہے جیسے 'فسبّ سے بسحہ در بھی " کا ترجمہ فصلّ سے کیا جاتا ہے۔

ویر تلها یعنی آپ الله آرام اورسکون واطمینان کے ساتھ قرات فرماتے تھے۔ تجوید کی رعایت

<sup>(</sup>۱)مسلم ج ۱ ص۲۰۳ (مختار)

فرماتے تھے۔اطول من اطول منھالینی جوسورۃ آپ اللہ ترتیل کے ساتھ پڑھتے تھے وہ اتناوقت لے لیتی تھی کہ اگر بغیر ترتیل کے پڑھی جائے تو اس سورۃ سے لمی سورت اتناوقت نہیں لیتی تھی یوں وہ اپنے سے لمبی سورت سے بھی باعتباروقت کے لمبی ہوجاتی تھی۔

(۲۲) حدّثنا الحسن بن محمّدالزعفرانيّ ثناالحجاج بن محمّد عن ابن جريج قال أخبرني عشمان بن أبي سليمان أنّ أباسلمة ابن عبدالرحمان أخبره أنّ عائشةٌ أخبرته أنّ النبيّ عَلَيْكُ لم يمت حتّىٰ كان أكثر صلوته وهو جالس(١).

ترجمہ: حضرت عائشہ رضی الله عنها سے روایت ہے کہ نبی کریم الله ابھی وفات نہیں یائے تھے (بلکہ قریب الوصال تھے) کہ ان کی اکثر نماز بیٹھ کر ہوتی تھی۔

لمه به مست المنح لینی مرض وفات میں اکثر نمازیں حالت قعود میں پڑھیں اوراس میں حرج نہیں کئی عزیمت پر کھیں اور اس کیکن عزیمت پڑمل کی حالت میر تھی کہ اس حالت میں بھی نماز نہیں چھوڑی (۲)۔

## سنن مؤكده كي تعداداورزوائد:

(۲۳) حدّثنا أحمد بن منيع ثنا إسماعيل بن إبراهيم عن أيوب عن نافع عن ابن عمرقال صليت مع رسول الله عَلَيْتُ كعتين قبل الظهر وركعتين بعد المغرب في بيته وركعتين بعد العشاء

فی بیته(۳).

(۱) صحیح مسلم ۲۵۲۱ کتاب صلواة المسافرین وقصر هاباب جواز النافلة قائماً وقاعداً، السنن النسائی ۱۹۷۱ کتاب قیام اللیل و تطوع النهار باب صلواة القاعدفی النافله (مختار)
(۲) بعض لوگوں نے اس مدیث کورض وقل دونوں پرمحول کیا ہے لیکن اکثر شراح نے کھا ہے کہ یقل ہے جوکہ آپ سیالیہ نے عرک آخری صے میں بکثرت بیش کر پڑھی تھیں کیونکہ ام الموثین ام سلم گی روایت ہے 'والذی نفسی بیدہ مامات رسول الله علیہ حتی کان اکثر صلوته قاعدا الاالمکتوبة' (رواه انسائی وابن ماجة) (اصلاح الدین) رسول الله علیہ ترمذی ۱۲۲۹ کتاب الصلواة باب ماجاء فی الرکعتین بعدالظهر، صحیح مسلم ۱۲۵۲۱ کتاب الصلواة باب فضل السنن الراتبة قبل الفرائض. (مختار)

ترجمہ: حضرت ابن عمر رضی اللہ عنہما سے روایت ہے کہ میں نے نبی کریم اللہ عنہما سے روایت ہے کہ میں نے نبی کریم اللہ کے ابتدان ساتھ دور کعات مغرب کے بعد ان کے گھر میں بردھیں۔
کے گھر میں بردھیں۔اور دوعشاء کے بعد بھی ان کے گھر میں بردھیں۔

ر کے عتیب قبل المظهر المح نی کریم الله محض فرضوں پراکتفائیس کرتے تھے بلکہ وقی نمازوں کے ساتھ مداومت کے ساتھ مداومت کے ساتھ المومت کی ہے۔ اس نے تو سنت موکدہ کا مقام لیا۔ اور بعض کو بھی ادا کیا ہے بھی ترک کیا ہے وہ زوا کہ ہیں۔

یہاں ظہر سے قبل دور کعتوں کا ذکر ہے۔ اس لئے کہ وہ چار کعتیں جوست موکدہ ہیں یہاں فدکور نہیں بہاں فدکور نہیں بلکہ یہ غیر موکدہ نفل کا بیان ہے یا یہ تو تحیة المسجد ہیں یاصلوٰ قاحاجت، جنہیں آپ مسجد ہیں ادا فرماتے تھے۔ علاوہ ازیں معد کا بھی یہ معنی نہیں کہ جماعت کے ساتھ پڑھے ہیں یہاں صرف متابعت کی معیت مراد ہے بینی آپ پڑھتے تو ہم بھی پڑھتے تھے۔

وركعتين بعدهاالخ بيسنت موكده إلى

ور کعتین بعدالمفرب بیجی اوراس طرح عثاء کے بعد بھی دور کعات سنت مؤکدہ ہیں جو آپ اللہ میں بیا تھے۔ جو آپ اللہ پڑھتے تھ تو ہم بھی پڑھتے تھے۔

فی بیته اس کاتعلق یا تو صرف آخری ند کورشام کی دور کعتوں سے ہے اور بیا حمّال ظاہر معلوم ہوتا ہے جیسے کہ بعد میں عشاء کی سنتوں کے ساتھ الگ' فسی بیت ہ'' کا اضافہ کیا ہے اور ریب بھی احمّال ہے کہ پہلے کے بینوں سنتوں سے اس کا تعلق ہو۔

اس سے میر معلوم ہوتا ہے کہ نبی کریم اللہ سنت نماز عموماً گھر میں پڑھتے تھے یہی دیگر نوافل کا بھی حکم ہے تھے کہا دو اور ہے تھے یہی دیگر نوافل کا بھی حکم ہے تی کہ جوف کعبہ لیننی کعبہ کے اندر کی نسبت بھی گھر میں نوافل پڑھنے کا زیادہ ثواب ہے۔اس میں اخلاص زیادہ ہوتا ہے اور بیٹمل ریاء سے بعید تر ہوتا ہے۔

اس حدیث میں بعض سنن مو کدہ کا ذکر ہے۔ دوسری احادیث میں نضر تک ہے کہ سنن مو کدہ کی تعداد مجموعی طور پر بارہ رکعات بنتی ہیں جن میں سے ظہر سے قبل چارر کعات اور شبح کی نماز سے قبل دور کعات بھی ہیں۔ (۲۲) حدّثنا أحمد بن منيع ثناإسماعيل بن إبراهيم ثناأيوب عن نافع عن البن عمر وحدّثتنى حفصة انّ رسول الله عليه كان يصلّى ركعتين حين يطلّع الفجر وينادى المنادى قال أيوب اراه قال خفيفتين(۱).

192

ترجمہ: حضرت ابن عمر رضی اللہ عنہ سے روایت ہے وہ کہتے ہیں کہ حضرت حفصہ رضی اللہ عنہا نے مجھے کہا کہ نبی کریم اللہ عنہا نے مجھے کہا کہ نبی کریم اللہ عنہا نے ورکعات نماز (سنت) اس وقت پڑھتے تھے جب فجر طلوع ہوجا تا تھا جس وقت مؤذن اذان دیتا ۔حضرت ابوب ہم ہم ہمرا خیال ہے کہ حضرت نافع نے یہ بھی کہا کہ دوخضر کھتیں پڑھتے تھے۔

وحدثتنی حفصة رضی الله عنها داد کے بارے میں بعض لوگ کہتے ہیں کہ زائدہ ہے جبکہ بعض نے عاطفہ قرار دیا ہے۔اس صورت میں معطوف علیہ مقدر ہوگا تقدیر یوں ہوگی کہ''حدث نے غیر حفصہ و حدثتنی حفصہ "(۲) لینی مجھ کو کچھ مقصہ رضی اللہ عنہا کے علاوہ دیگر لوگوں نے بیان کیا اور پھھ مقصہ رضی اللہ عنہا نے بیم کہا کہ آپ اللہ علوع فجر کے بعددور کعات سنت پڑھا کرتے تھے۔

(۱) صحيح بخارى ۱ / ۸۵ كتاب الاذان باب اذان بعدالفجر، صحيح مسلم ۱ / ۲۵ كتاب صلواة المسافرين وقصرهاباب استحباب ركعتى سنة الفجر، سنن النسائى ۱ / ۲۷ كتاب المواقيت باب المصلواة بعد طلوع الفجر سنن ابن ماجة ص ۴ كتاب اقامة الصلواة والسنة فيها باب ماجاء فى ركعتين قبل الفجر (مختار) (۲) اقول ويحتمل ان يكون حديث نافع هو حديث ميمون الآتى. وح ف التقدير حفظت من رسول الله ملسلية ثمان ركعات وحدثتنى حفصة . اقول و لااعلم لم لم يذهب الشراح الى هذا الاحتمال (مختار) (۳) جامع ترمذى ۴ ۵ ط رحمانيه

193

ترجمہ: حضرت ابن عمر رضی اللہ عنہ کہتے ہیں کہ میں نے نبی کر پیم اللہ سے (فرض نماز کے علاوہ) آٹھ رکعات یا دکی ہیں۔ دور کعات نماز ظہر سے قبل دور کعات اس کے بعد، دور کعات مغرب کے بعد اور دور کعات نماز عشاء کے بعد۔ ابن عمر کہتے ہیں اور میری کہن حضرت حفصة رضی اللہ عنہا نے صبح کی دور کعتوں کے بارے میں جھے اور میری کہن خور نبی کریم آلی سے سنہیں دیکھ سے کا قا۔

صلوة فرکی منتین: ولم اکن اد اهما یعن حضرت هفسه رضی الله عنها نے فرمایا کرمیجی دوستین بیل بیمی منتین اولیم الکن از اهما یعنی حضرت این عمرضی الله عنه نے بیجی فرمایا کہ جھے یہ معلوم نہیں کہ حضرت نبی کر میمیلی بھی بیادا کرتے تھے۔ گویا میں اس کا مشاہدہ نہ کر سکا چونکہ نبی کر میمیلی مختلف مجروں میں قیام فرماتے تھے۔ اس لئے ممکن ہے آپ کواس حدیث کے بیان کرنے تک اس بات کاعلم نہ بو ۔ بعد میں پیت چلا ہو کہ نبی کر میمیلی بھی میان دور کعتوں کو بمیشہ پڑھتے بلکہ دیگر صحابہ رضی الله عنهم کی طرح حضرت ابن عمروضی الله عنه نے فود نبی کر میمیلی کے اس معمول کا مشاہدہ کیا تھا۔ ابتداء میں اس العلمی کا حضرت ابن عمروضی الله عنہ نے فود نبی کر میمیلی کے اس معمول کا مشاہدہ کیا تھا۔ ابتداء میں اس العلمی کا سب بیہ بوسکتا ہے کہ نبی کر میمیلی تھی تھی میں تھی ہوا کہ بیموں نے اپنے بھائی کو بتایا تو ان الله عنہا کو پیت تھا کہ آپ میالی کو میانی کو برخ صف کے ساتھ ان کو پڑھتے ہیں۔ جب انہوں نے اپنے بھائی کو بتایا تو ان کو پھی علم ہوا کہ بیموک کدہ ہیں اور پھرخوداس کا مشاہدہ بھی کیا۔ لہذا بیصد بیث اس حدیث کے منافی نہیں جس میں آیا ہے کہ میں نے ایک ماہ تک نبی کر میمیلی کو دیکھا کہ وہ شیخی کی سنتیں سورة الکا فرون اور سورة الاخلاص کے ساتھ الرق کے تھے۔

سنت مؤکدہ میں تمام سنتوں کی نسبت زیادہ مؤکدہ سنت صبح کی سنتیں ہیں حتی کہ بعض علماء نے اسے داجب بھی کہا ہے۔ اس کئے ان کوئییں چھوڑنا چا ہیں۔ ادراسی وجہ سے علماء نے یہ بھی ککھا ہے کہ اگر چہ درگرسنتوں کی قضاء بڑھنی چا ہیں۔

(٢٢) حدّثناأبوسلمة يحيى بن خلف ثنا بشربن المفضل عن خالد الخداء عن عبدالله بن شقيق قال سألت عائشه عن صلواة

النبي النبي المغرب ركعتين وبعد العشاء ركعتين وقبل الفجر ثنتين (١).

ترجمہ: عبداللہ بن شقیق کہتے ہیں میں نے حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا سے نبی کریم اللہ عنہا سے نبی کریم اللہ عنہا سے نبی کریم اللہ عنہا کہ نبی کریم اللہ عنہا کہ خرب کے بارے میں پوچھا۔ تو انہوں نے کہا کہ نبی کریم اللہ عنہاء کی نماز سے پہلے دور کعتیں ،اس کے بعد دور کعتیں عشاء کے بعد اور فجر سے قبل دودور کعتیں (سنت) پر ہے تھے۔

یصلی قبل الظهور کعتین یہاں ظہر سے بل دور کعتوں کا ذکر ہے۔ بعد میں حضرت علیٰ کی روایت میں چار کھات کا ذکر آر ہا ہے۔ اس طرح حضرت عاکشہ ضی اللہ عنہا کی بہت ہی دیگر روایات میں کھی چارکا ذکر ہے(۲)۔ اسی وجہ سے علامہ طبری رحمۃ اللہ علیہ کہتے ہیں کہ اکثر حالات میں ظہر سے قبل آپ علیہ کہتے ہیں کہ اکثر حالات میں طبر سے قبل آپ علیہ کہتے ہیں کہ اکثری احادیث میں آپ علیہ کہتے ہیں کہ خری احادیث میں علیہ کی تعرب کے۔

(١٤) حدّثنا محمّد بن المثنى ثنا محمّد بن جعفر ثناشعبة عن أبى اسحاق قال سمعت عاصم بن ضمرة يقول سألنا عليّا عن صلوة رسول الله عليّا من النهارقال إنكم لاتطيقون ذلك قال قلنا من اطاق منّا ذلك صلّى فقال كان إذا كانت الشمس من ههنا كهيئتها من ههناعند العصرصلّى ركعتين وإذا كانت الشمس من ههنا كهيئتها من ههنا عندالظهر صلّى أربعا ويصلّى قبل الظهر أربعا وبعدهار كعتين وقبل العصر أربعا يفصل بين كل ركعتين بالتسليم على الملئكة

(۱)صحیح مسلم ۲۵۲۱ کتاب صلواة المسافرین وقصرهاباب جوازالنافلة قائماً وقاعداً،سنن ابی داؤد ۱۸۵۱ کتاب الصلواة ابواب التطوع ورکعات السنة،مسنداحمد ۲۰۲۱ (مختار) (۲)روی مسلم عن عائشة کان یصلی فی بیته قبل الظهر اربعا. بل روی الشیخان کان لایدع اربعا قبل الظهر ۲ اجمع الوسائل ج۳ ص ۱۰۳ (مختار)

195

المقّربين والنبييّن ومن تبعهم من المؤمنين والمسلمين(١).

ترجمہ: عاصم بن عزہ کہتے ہیں کہ ہم نے حضرت علیٰ سے نبی کر یم اللہ عنہ نے دن کے نوافل کے بارے میں پوچھا۔ عاصم کہتے ہیں کہ حضرت علی رضی اللہ عنہ نے فرمایا کہم لوگ ان نوافل کی طاقت نہیں رکھتے۔ عاصم کہتے ہیں ہم نے عرض کیا ہم میں سے جس کوقو فیتی ہودہ تو پڑھ لے گا (اس لئے آپ بتادیں) تو حضرت علیٰ نے فرمایا کر صح کے وقت جب سورج اس طرف (مشرق کو) اتنا او پر چڑھ جا تا جتنا کہ اس طرف (مغرب کو) عصر کی نما زکاوقت ہوتا ہے تو نبی کر یم آلیک دور کھات (اشراق کی) نما ز پڑھتا جتنا کہ اس طرف (مغرب کو) طرف کی نماز کے وقت ہوتا ہے تو چار رکھات (چاشت کی) نماز پڑھتے تھے۔ اور جب سورج اس طرف (مشرق کو) اتنا او پر چڑھتا جتنا کہ اس طرف (مغرب کو) ظہر کی نماز کے وقت ہوتا ہے تو چار رکھات (چاشت کی) نماز پڑھتے تھے۔ جن کے دونوں شفعوں کے درمیان (تشہد میں) مقرب فرشتوں ، انبیاء کرام اور ان کے تبعے مؤمنوں اور مسلمانوں پرسلام بھیج کرفسل کرتے تھے۔ (یا یہ کہ دونوں شفعوں کے درمیان سلام بھیرتے تھے۔ (یا یہ کہ دونوں

سالناعلیاالنے رات کے تبجد کے بارے یں پہلے سے علم ہوگا۔اس کئے صرف دن کے نوافل کا پوچھارے بیل ۔اس کئے کہ یہ سائلین تقلید کاعزم کر کے بی نوافل کا پوچھ رہے ہیں۔اس کئے آپٹے نے فرمایا کہ تبہارے بس کی بات نہیں۔

انكم لا تطيقون ذالك الغين ون كونت آپيانية كوافل اورعباوت زياده المتمام (۱) الوداوركي روايت عن المنبي عَلَيْنِه قال اربع قبل الظهر ليس فيهن تسليم تفتح لهن البواب السماء سنن ابي داؤد ا / ۱۸ اباب الاربع قبل الظهروبعدها وعن على كان النبي عَلَيْنَه المواب السماء سنن ابي داؤد ا / ۱۸ اباب الاربع قبل الظهروبعدها وعن على كان النبي عَلَيْنَه المواب السلوة باب ماجاء في الارابع قبل الظهر اربعاً وبعد ركعتين (جامع ترمذي ۱ / ۱ ۲ كتاب الصلوة باب ماجاء في الارابع قبل الظهر كيف المصلوة باب كيف كان تطوع النبي عَلَيْنَه بالنهار، سنن النسائي ا / ۱ ۱ كتاب الامامة باب المطوة قبل العصر، ابن ماجة ص ۱ ۸ كتاب اقامة الصلوة والسنة فيها باب ماجاء فيها يستحب من التطوع بالنهار، مصنف ابن ابي شيبة ۱ / ۱ ۰ (مختار)

اورا پیے طریقے سے تھی کہ آپ لوگ اس پر عمل نہیں کر سکتے وہ خشوع وضوع اور دوام والتزام جو نبی کر سکتے وہ خشوع وضوع اور دوام والتزام جو نبی کر پر اللہ ہوتا ہے محض علم سے کیافا کدہ علم میں کر پر اللہ ہوتا ہے محض علم سے کیافا کدہ ہوتا ہے محض علم سے کیافا کدہ ہوتا ہے محض علم تعلم تو ضول بات ہے بلکہ باتی بھی نہیں رہتا۔

من اطاق ذالک مناالخ لین کسی کی طاقت اورتوفیق توبن جائے گی۔اس لئے آپ بیان کریں تا کہ اگرکوئی عمل کا ارادہ کر سے تو مشکل پیش نہ آئے۔ پھھ تو معلوم ہو۔علاوہ ازیں جس کی بس سے باہر ہوان کے لئے علم بھی غذیمت ہے کسی اور کوتو پہنچادیگا جو کس کر سکے گا۔

قال إذا كانت الشمس النح آپ نے پہلے مشرق كى طرف اشاره كيا۔ پھر مغرب كى طرف اور كہا كہ جب ادھر معنی مشرق كى جانب سورج اتنا چڑھتا جتنا ادھر مغرب كى طرف عصر كے وقت بيہ ہوتا ہے۔ يعنى جب سورج ايك دونيز بے چڑھآتا تو دور كھتيں پڑھ ليتے بيصلو قضحى تھى جواشراق كى نماز كہلاتى ہے۔ يعنى جب سورج ايك دونيز بے چڑھآتا تو دور كھتيں پڑھ ليتے بيصلو قضحى تھى جواشراق كى نماز كہلاتى ہے۔ آئندہ باب ميں اس كا تفصيلى ذكر آئے گا۔

واذاکانت الشمس النج پھراس طرح کے دواشارے کرتے ہوئے بیظا ہر فر مایا کہ ظہر کے وقت مغرب کی جانب سورج جتنا بلند ہوتا ہے جب مشرق کی جانب دو پہر کواتا چڑھتا تو چار کعات پڑھ لیتے یہ چار کھتیں چاشت کی نماز تھی ۔اسے صدیث میں صلو قالا قابین بھی کہا گیا ہے۔ بیزوال سے بل ضحوہ کہر کی کے وقت پڑھی جاتی ہے۔ عین زوال کے وقت تو نماز کروہ ہوتی ہے۔ قبل السظھر ادبعا النے یہ سنت موکدہ ہیں اور زوال کے بعد پڑھی جاتی ہیں جو کہ ہمارے ہاں بھی موکدہ ہیں۔ و بعد ھار کعتین یہ بھی سنت موکدہ ہیں۔ قبل المعصر النے بیشن زوائد میں سے ہیں۔ یہ صل بین کل النے لینی ہردور کعتوں کے بعد تشہد پڑھے جس میں ملائکہ انبیاء اور عباد اللہ پرسلام موجود ہے۔

اسی ترجمہ کو ملاعلی قاریؒ نے ترجیح دی ہے اور یہ فصل بین کل المنے کواس تو جید کیلئے قریبہ قرار دیا گیا ہے کیونکہ سلام التحلیل میں تو فذکورہ مسلم علیہم کا حاضر ہونا مناسب ہے۔ جبکہ حدیث کا لفظ عام ہے۔ وہ حاضر ہویا نہ ہوں جبکہ سلام تشہد میں حاضری ضروری نہیں ہے۔

علامہ ابن حجر سے اس تسلیم کوسلام تحلل پرمحمول کیا ہے۔ان کے نزدیک معنی میہ ہے کہ دو دو ر کعتوں پر سلام چھیرتے اور سلام کے وقت مقتربوں، فرشتوں اور اللہ تعالیٰ کے نیک بندوں کی نیت کی جاتی ہے۔ بہر حال جولوگ کہتے ہیں کہ صلاۃ النہارار بعاار بعادہ پہلی تاویل کرتے ہیں اور جو ثنیٰ ثنیٰ کے قائل ہیں وه دوسرى تاويل كرتے ہيں۔ وصلى الله عليه و آله وسلم

197

#### خلاصه بإب

اس باب کو نی کریم الله کی عبادت کا عنوان دیا گیا ہے اور احاد ہے کو مذافر رکھ کر ہم ہی کہدسکتے ہیں۔ کہ عبادت سے نفلی عبادت مراد ہے فرض مراد نہیں ہے اگر چہ نوافل کے اہتمام سے فرائض کا اہتمام بطریق اور اپنی معلوم ہوتا ہے لیکن مقصود نوافل میں مبالغہ اور اہتمام ہے بالخصوص نماز میں آپ کا شخف اور اپنی معلوریت کا جبوت وہ امر ہے جس کی تقلید ممکن نہیں ہے۔ اس لئے تو حضرت علی فیصلہ سناتے ہیں محکوریت کا جبوت وہ امر ہے جس کی تقلید ممکن نہیں ہے۔ اس لئے تو حضرت علی فیصلہ سناتے ہیں الاستھار، خشوع وضوع اور ہمہ تن میکسوئی کے ساتھ کرتے تھے۔ بقول حضرت عاکشرضی اللہ عنہا کہ کیفیت، استحصار، خشوع وضعوع اور ہمہ تن میکسوئی کے ساتھ کرتے تھے۔ بقول حضرت عاکشرضی اللہ عنہا اللہ عنہا اللہ عنہا اللہ عنہا اللہ عنہا کہ میں اور ہمتی کہ مشقت اور جفاکشی کا حال بھی بے مثال ہے۔ پاؤں کھڑے کہ مشقت اور جفاکشی کا حال بھی بے مثال ہے۔ پاؤں کھڑے کہ موجواتا ہے۔ سب سے طویل ترین سورتیں صرف ایک رکھت میں بلکہ بھی تو کئی طویل ترین سورتیں صرف ایک رکھت میں بلکہ بھی تو کئی طویل ترین سورتیں صرف ایک رکھت میں بلکہ بھی تو کئی طویل ترین سورتیں صرف ایک رکھت میں بلکہ بھی تو کئی طویل ترین سورتیں صرف ایک رکھت میں بڑھ لیے ہیں۔ جن کے صحابہ میں سے بہت جفاکش صحابہ بھی حوصلہ ہار کر آپ تھا تھا کہ وجواٹ کا کہ میں ایک ودن کو اس کے بدلے نوافل پڑھ لیس عمر کے آخر حصے میں قیام کی طاقت نہ رہی عبد بھی تیام کی طاقت نہ رہی عبد بہت بیش فرم کی راس پر دوام رہا۔ بلکہ الترام کا بیا صال کہ کہ کھی تو بھی کر کے آخر حصے میں قیام کی طاقت نہ رہی عبد بہت بیش فرم کیار سے بیت بیش فرم کیا اس عبر کے آخر حصے میں قیام کی طاقت نہ دری بھی کو میار کی جائے تو دن کو اس کے بدلے نوافل پڑھ لیس عمر کے آخر حصے میں قیام کی طاقت نہ دری بھی کو میں تیام کی طاقت نہ دری بھی کی بھی تھی دری بھی کی میں تیام کی طاقت نہ دری بھی کی کیا ہو تھی دری بھی کہ کی کو اس کے بدلے نوافل پڑھی اس عمر کے آخر حصے میں قیام کی طاقت نہ دری بھی کی بھی تھی کی کو اس کی کیار کی کو بھی کی کو اس کی کور کی کیار کی کور کور کی کور کی کور کی کور کی کور کور کی کور کی کور کور کی ک

بہرحال کمال بندگی کا جونمونہ آپ آگئے نے امت کے سامنے پیش کیا۔ وہ امت کیلئے نا قابل تقلید ضرور ہے۔ لیکن ایک مغفور بندے کی اس قتم کی عبدیت کود کمچر کرعبادت میں رغبت اورجذبہ اتباع میں تخریک ضرور پیدا ہوتی ہے۔ اللہ تعالی ہم سب کوعبدیت اور عظمت کے اس مینار کے لائے ہوئے راہ راست پر چلنے کی توفیق اور دنیاو آخرت میں اس کا قرب نصیب فرمائے۔ آمین۔ وصلّی اللّٰہ علی خیر خلقه و نور عوشه

## ا ۱۶. باب صلواة الضحيٰ حضورا قد سقائق كاثراق كي نماز كابيان

ضحی اورضحوہ: سورج نکلنے کے بعد جب اس کی روشی پھیل جائے تو اس وقت کوخوہ اورخیٰ کہا جا تا ہے۔اس کے دوجے ہیں۔ابتدائی جو کہ عین ارتفاع ہمس کے ابتدائی وقت میں یعنی مکروہ وقت گزر جہا جا تا ہے۔اس وقت کی نماز کواشراق کی نماز کہتے ہیں۔ بیدن کے رابع اول میں اداء ہوتی ہے۔دوسراوہ حصہ جوز وال سے کچھ پہلے ہوتا ہے۔اسکوخوہ کرئی کہتے ہیں۔اوراس وقت اداکی جانے والی نماز کوچا شت کی نماز کہتے ہیں (ا)۔صوفیہ کے نزد یک فرق معتبر ہے لیکن فقہاءاور محد ثین ان دونوں نمازوں کوسلو فالحی کہتے ہیں جنکا ابتدائی وقت سورج کا منور ہونا اور آخری وقت زوال سے قبل کا وقت ہے۔
صلو ق ضحیٰ بھی عبادات کے زمرے میں آتی ہے لیکن چونکہ بعض وجوہ سے اس نماز کوخصوصی صلو ق ضحیٰ بھی عبادات کے زمرے میں آتی ہے لیکن چونکہ بعض وجوہ سے اس نماز کوخصوصی

صلوٰۃ صنعیٰ بھی عبادات کے زمرے میں آئی ہے کیان چونکہ بعض وجوہ سےاس نما زکو خصوصی اہمیت حاصل ہےاسلئے اسکو مشتقل باب کی صورت میں ذکر کیا ہے۔جس میں آٹھ حدیثیں ذکر کی ہیں۔

ترجمہ: معاذہ کہتی ہیں کہ انہوں نے حضرت عائشہرضی اللہ عنہا سے پوچھا کہ کمیا نبی کریم اللہ عنہا سے پوچھا کہ کمیا نبی کریم اللہ فاضی پڑھتے تھے۔اور کریم اللہ نماز شخی پڑھتے تھے۔اور

(۱) اس نماز کوسلو قالا قابین بھی کہاجاتا ہے آگر چہ مخرب کے بعد چور کعات نقل نماز کو بھی صلو قاوا بین کہا گیا ہے۔اوا بین کا کہ معنی اللہ کی طرف رجوع کرنے والوں کی کا معنی اللہ کی طرف رجوع کرنے والوں کی کا معنی اللہ کی طرف رجوع کرنے والوں کی نماز ہفتر ہے بعد چور کعات نقل نماز کے بارے میں سنن ابن ماجة میں روایت ہے کہ جولوگ ایمان اور اخلاص کے ساتھ مغرب کے بعد چیووافل اداکرتے ہیں۔اللہ تعالی ان کو بارہ سال کی نماز کا تو اب عطافر ماتے ہیں۔ شرعاً بیسب نمازیں جاشراق ہویا جاشت کی یا وا بین مستحب ہیں۔ (عقار)

(٢) صحيح مسلم ١/ ٢٣٩ كتاب صلواة المسافرين وقصرهاباب استحباب صلواة الضحىٰ الغ، مسنن ابن ماجة ص ٩ 9 كتاب اقامة الصلواة والسنة فيها باب ماجاء في الصلواة الضحىٰ، السنن الكبرىٰ للبيهقي ٣٤/٣ كتاب الصلواة (مختار)

اس سے زیادہ جتنا اللہ تعالی کومنظور ہوتا تھا، پڑھ لیتے تھے۔

رشک کے کہتے ہیں: یوزیدالوشک رشک کئی معانی منقول ہیں (۱) آگے باب صوم النبی اللہ کی کی کے کہتے ہیں: یوزیدالوشک رشک کئی معانی منقول ہیں (۱) آگے باب صوم النبی اللہ کا کہ کہ اللہ کا میں مصنف نے کہا ہے کہ اہل بھرہ کی اصطلاح میں رشک قسام (تقسیم کرنے والے) کے معنی میں مستعمل ہے۔ اور یہ بزید بن افی بزیر حجی کا لقب ہے۔ اس لئے کہ وہ اس کام میں ماہر سے اور کو کو مت کی طرف سے تقسیم اراضی وغیرہ کا کام ان کے سپر دھا۔ (۲) بعض لوگوں کا خیال ہے کہ رشک بڑی داڑھی والے کو کہتے ہیں اور یزیدگی داڑھی اتنی بڑی تھی کہ ایک مرتبہ ایک بچھواس میں گس گیا۔ اور تین دن کے بعد نکالا جاسکا۔ (۳) بعض شراح کہتے ہیں کہ رشک فاری میں غیور کو کہتے ہیں اور چونکہ بزیر بھی مجمد غیرت تھے۔ اس لئے ان کورشک کہا جاتا ہے۔ اور چونکہ بزیر بھی مجمد غیرت تھے۔ اس لئے ان کورشک کہا جاتا ہے۔

ہیں۔بعض لوگ وجوب کے قائل ہیں۔اوربعض سنت مؤکدہ بتاتے ہیں۔لیکن احناف کے نز دیک ہیہ مستحب ہے۔

البتہ یہاں پرایک اشکال بیہوتا ہے کہ حضرت عبداللہ بن عمر نے صلاۃ ضی کو بدعت کہا ہے۔ نیزیہ کہ حضرت عثان کی شہادت تک کوئی بھی ان کو پڑھنے والانہیں تھا۔ تو اس کا جواب بیہ ہے کہ حضرت ابن عمر اور چونکہ بید نوافل ہیں جوعموماً گھر کے اندرادا کی جاتی شاید صلاۃ ضی کے بارے میں حدیث نہ پنچی ہوں اور چونکہ بید نوافل ہیں جوعموماً گھر کے اندرادا کی جاتی ہیں۔ اس لئے وہ کسی کو پڑھتے ہوئے بھی نہ دیکھ سکے۔ یاان کے اس قول کا مطلب بیہ ہے کہ نبی کر یم ایک ہوں۔ نبی کر یم ایک کام کام عنی بیہ ہوگا کہ نبی بردوام نہیں فرمایا۔ اگر چہ پڑھناان کے نزدیک بھی ثابت ہوگا یا اس کے کلام کام عنی بیہ ہوگا کہ مسجد میں جمع ہوکر بصورت اجتماع صلاۃ ضی کا پڑھنا بدعت ہے۔ اور ظاہر ہے کہ اسلاف نے چاشت کی مسجد میں جمع ہوکر بصورت تداعی اور اجتماع کے نہیں پڑھی۔

اوریہ بھی محمل ہے کہ حضرت ابن عمر کی مرادیہ ہو کہ آپ آلیتے نے اسے واجب ہمجھ کرنہیں پڑھی۔ جیسا کہ بعض لوگوں کا خیال ہے کہ آپ آلیتے پر چاشت کی نماز واجب تھی۔ تو ان پر رد کرنے کیلئے فر مایا کہ پڑھی ہونگیں مگر و جوب کے انداز سے نہیں پڑھیں۔

(۲) حدّ شنامحمّد بن المشنىٰ شنى حكيم بن معاوية الزيادى شنازيادبن عبيدالله بن الربيع الزيادى عن حميد الطويل عن أنس ابن مالك أنّ النبي مَالِّ كان يصلّى الضحىٰ ست ركعات(١).

ترجمہ: حضرت انس سے روایت ہے کہ نبی کریم اللہ چاشت کی نماز چور کعات برد ها کرتے تھے۔

ست رکعات عام معمول تو نی کریم الله کا چارد کعات پڑھنے کا تھالیکن کمی اس پراضافہ فرماتے جیسے کہ گزشتہ صدیث میں بتایا گیا ہے۔ یہاں پراضافے کی ایک صورت بیان ہے۔

(۳) حد شنام حد مد بن المشنیٰ ثنام حدّد بن جعفو اناشعبة عن

عمروبن مرّة عن عبدالرحمان ابن أبي ليليٰ قال ماأخبرني احدأنه راي (١) تفه دالامام الترمذي بهذاالحديث(مختار) النبيِّ عُلَيْكُ يصلَّى الضحىٰ إلاَّامَ هاني فانَّها حدثت أنَّ رسول اللَّهُ عُلَيْكُ دخل بيتها يوم فتح مكة فاغتسل فسبّح ثماني ركعات مارأيته عُلْبُ صلوة قط أخفّ منها غيرانه كان يتمّ الركوع و السجود (1).

202

ترجمہ: حضرت عبدالرحمان بن الى ليك كہتے ہيں كہ مجھے (صحابہ ميں سے )ام مانی کے سواکسی نے بی جزنہیں پہنچائی کہ نبی کریم اللہ نے نے صلوۃ ضحیٰ پردھی تھی۔البتہ ام مانی نے بیرحدیث بیان کی کہ نبی کر میں اللہ فتح کمہ کے دن ان کے گر تشریف لائے۔ وہاں عنسل کیااورآٹھ رکعات نماز پڑھی۔ میں نے ان آٹھ رکعات سے زیادہ مختصر نماز يرصح موئ ني كريم الله كونبين ويكها تفار كر جربهي آي الله كوع اور مجده مکمل طوریرا دا فرماتے تھے۔

عبدالرحمان بن أبى ليلى الأنصارى تابعي بير يبلم دينه من اوربعد من كوفه من ربائش اختیار کی ۔حضرت عمر ہے آپ کی ساع میں اختلاف ہے۔ کیکن دیگر بہت سے صحابہ سے ان کی ساع ثابت ہے۔ لا ۸ چوکووقعۃ الجماجم میں وفات پائی جبکہ بعض کے نز دیک آپ نے پانی میں ڈوب کروفات پائی۔ إلاّ امّ هانبي حضرت ام ہانی حضرت علیٰ کی بمشیرہ میں۔اللہ تعالیٰ نے ان کولمی عمر عطافر مائی تھی۔ حضرت علیٰ کی و فات کے بعد و فات یا کیں۔

این انی کیل کے قول کا مطلب: حضرت ابن انی کیل کے اس قول کا معنی پینہیں کہ اسے کسی دوسر مے خص نے اس کے بارے میں نہیں بتایا کیونکہ صلو قضیٰ کثرت روایات سے ثابت ہے بلکہ معنی بیہ ہے کہ صحابہ میں سے اور بالخصوص نبی کریم اللہ کے صلوۃ صحیٰ کا مشاہدہ کرنے والے صحابہ میں سے صرف ا یک صحاببہ نے اس کے بارے میں حضرت ابن ابی لیالی کو بتایا ہے۔نفس اثبات اور تابعین کی زبانی اثبات تو ابن الي ليلي كوببت سطرق سي بنياب مسلم كي روايت من تصريح بسالت وحوصت على أنّ (١) صحيح مسلم ١/٢٣٩ كتاب صلواة المسافرين وقصر هاباب استحباب صلواة الضحى الخ، سنن ابى داؤد ١ / • ٩ ١ كتاب الصلواة باب الضحيٰ، مؤطاامام مالك ١٥٢ كتاب الصلواة، ابن مصنف ابن ابي شيبة ١ / ٢ ا ٣ كتاب الصلواة (مختار)

فسبت شمانی در کعات النه لین آٹھ رکعات نقل نماز پڑھ لی۔ بیساری نمازیاتو صلوۃ شخی تھی یا پھران میں چارچا شت کی اور چار نی کھر کے شکرانہ میں پڑھی تھیں اور اگر چہ بین ارتفاع تمس کے موقعہ پر نقل پڑھنے کا موقع نہیں ملا لیکن فارغ ہوتے ہی زوال سے پہلے پہلے پھر بھی ادا فرمائے۔ اس سے معلوم ہوا کہ صلوۃ شکی کا وقت زوال تک ہے۔ انحف منها چونکہ نتج کمہ کے موقع پر ضروریات ومعروفیات زیادہ تھیں وقت کم تھا۔ اس لئے آپ اللہ نے نماز میں تخفیف کی لیکن تعدیل ارکان کو پھر بھی نقصان نہیں پہنچایا۔ رکوع اور مجدوں میں طماعیت بہت اہم ہے۔ اس لئے اسے کھو ظرکھا۔

(٣) حدّثناابن ابى عمرثناو كيع ثناكهمس بن الحسن عن عبدالله بن شقيق قال قلت لعائشة أكان النبيّ عَلَيْكُ يصلّى الضحىٰ قالت لا إلاّ ان يجئى من غيبة (١).

ترجمہ: عبداللہ بن شقیق کہتے ہیں میں نے حضرت عائشہ سے پوچھا کہ نی کر جماللہ صلوۃ ضی پر جھت تھے۔ آپ نے فرمایا کہ نہیں الابیکہ آپ سفر سے واپس لو منے (تو پر ھتے تھے)

حضرت عائشگی صلوق می کی توجید: لاالاآن یدجئی من غیبة. اس میں بیاشکال ہے کہ حضرت عائشگی صلوق می کی توجید: لاالاآن یدجئی من غیبة. اس میں بیاشکال ہے کہ حضرت عائشگی روایات سے بلکہ خود حضرت عائشگی روایات سے بلکہ خود حضرت عائشگی روایات سے تابت ہے۔ تواس کا ایک جواب توبیہ کہ نیفی دوام ہے لینی بیک فرض اور واجب کی طرح التزام سے نہیں پڑھتے تھے۔ کہ بھی بھی ترک نہ ہو۔ یہاں سائل کے سوال کا تو ہمیں اندازہ نہیں کہ س مقصد سے سوال (۱) صحیح مسلم ا ۲۳۸۸ کتاب صلوق المسافرین وقصر ھاباب استحباب علیها، مصنف ابن ابی شیبة ۲۷۰۷ کتاب الصلوق، السنن الکبری للبیهقی ۳۲ م ۵۰ کتاب الصلوة (مختار)

کیا ہے لیکن شاید حضرت عاکشہ بھی ہیں کہ سائل پوچور ہے ہیں۔ کہ آپ اللے نے ہمیشہ بینماز پڑھی ہے یا نہیں۔ چنا نچہ امام بھی ؓ نے فرکورہ بالا جواب دیا ہے اور بید دراصل سوال کی اس توجیبہ پرہنی ہے۔ دوسراجواب بعض شراح نے بید دیا کہ سائل کا مطلب اس مخصوص نماز کے بارے میں استفسار تھا جو کہ اس زمانہ میں اجتماعی طور پردائج تھا اورلوگ اسے الترا آمہ مجد میں پڑھا کرتے تھے۔ جس طرح آج کل بھی بعض لوگ می کی نماز سے اشراق تک مسجد میں بیٹھے ہوئے ہوتے ہیں اور سورج نکلنے کے بعد اشراق پڑھتے ہیں۔ لوگ می کی نماز سے اجتماعی حیثیت سے اور اجتمام والترام اور اجتماع کے ساتھ اواکر نا درست نہیں۔ حضرت ابن مسعود ؓ نے ایک دفعہ ایسے لوگوں کو مسجد سے بھگا دیا تھا جو کہ اجتماعی طور پر مسجد میں نماز کے بعد اشراق تک بیٹھے اور پھر اشراق کیلئے استھا تھے الی واس کو مسجد سے بھگا دیا تھا جو کہ اجتماعی طور پر مسجد میں نماز کے بعد اشراق تک بیٹھے اور پھر اشراق کیلئے استھا تھے الیے والے دین میں جہاں احداث اور غلو آتا ہے وہ فتیج ہے۔

تو گویاسائل بیہ پوچھ رہا ہے کہ کیابیہ ضروری ہے کہ اشراق کو اہتمام کے ساتھ مسجد میں اداکیاجائے۔ جواب کا خلاصہ بیہ ہے کہ نہیں۔ آپ ایسی اشراق کی نماز پڑھتے تھے مگر گھر کے اندر باہر مسجد میں صرف الی صورت میں پڑھتے جب اتفاقاً آپ اشراق کے وقت سفر سے واپس آجاتے اور حسب عادت سید ھے مسجد میں جاتے تھے۔ تو وین نماز بھی ادافر ماتے تھے۔

بعض حضرات نے بیہ جواب بھی دیا ہے کہ حضرت عائشگل بیر عدیث مرجو ہے کیونکہ حصیت میں دیا ہے کہ حضرت عائشگل بیر عدیث مرجو ہے کیونکہ حصیت میں دیگر صحابہ کرام سے چاشت کی نماز کا اثبات مروی ہے۔ ایکن بیتو جید درست معلوم نہیں ہوتی کیونکہ بیتب ہوتا کہ حضرت عائشة مماز چاشت سے ممکر ہوتیں۔ حالانکہ دوسری طرف خودان سے بہی نماز مروی ہے۔ جیسا کہ اس باب کی پہلی حدیث میں انہی کی روایت سے اثبات ہور ہا ہے۔

(۵) حدّثنازیادبن أیوب البغدادی ثنا محمّد بن ربیعة عن فضیل بن مرزوق عن عطّیة عن أبی سعید الخدری قال کان النبی مُلْنِیْهٔ یصلّی الضحی حتی نقول لایحها ویدعهاحتّی نقول لایصلّیها(۱).

(۱) جامع ترمذى ١٠٨٠ كتاب الصلواة باب ماجاء في صلواة الضحيَّ، شرح السنة للبغوى السرية المنافي السية المنافي السينة المنافي السينة المنافي السينة المنافي السينة المنافية الضحيِّ رقم الحديث ١٠٠١ (مختار)

ترجمہ: حضرت ابوسعید خدریؓ کہتے ہیں کہ نبی کریم آلیاتی (مجھی تو) نماز چاشت (ایسے اہتمام ودوام کے ساتھ) پڑھتے تھے کہ ہمارا خیال ہوتا کہ آپ آلیاتی اسے چھوڑیں گے نہیں اور (مجھی ایسے ) چھوڑ دیتے تھے حتی کہ ہم کہتے کہ پھرنہیں پڑھیں گے۔

205

موا طبت اور ترک کی کمتیں: حتی نقول لینی آپ آیاته کی مواظبت اور طویل زمانه تک صلوة مخی پر مداومت کود کی کرم محاببا پن دلول میں کہتے تھے یا یہ کہ ہم آپس میں ایک دوسر سے کہتے تھے کہ الاید عها لینی اب آپ آپ آپ آپ ایک دوسر سے کہتے تھے کہ الاید عها لینی اب آپ آپ آپ آپ آپ اس نماز کوچھوڑنے والے نہیں ہیں۔ حتی نقول لا یصلیها لینی پھر طویل زمانه تک ترک کود کی کرم کہتے کہ دوبارہ شروع کرنے والے نہیں ہیں۔ لیکن ہمارے دونوں خیال غلط نکلتے اور آپ آپ آپ گیا تھے۔

جہاں تک آپ آلی ہے۔ جہوڑنے کا تعلق تھا۔ تو اس کا سبب یہ ہوتا تھا کہ کہیں دیکھے والے یہ تو ہم نہ کر بیٹھیں کہ یہ نماز فرض یا واجب ہے۔ دوسری وجہ یہ ہے کہ کہیں ایسانہ ہو کہ اللہ تعالی حضو و آلی ہے۔ دوسری وجہ بعض لوگوں نے یہ کھی ہے کہ اگر آپ آلی ہے کہ ماومت فرماتے و کھی کراسے حقیقاً واجب نہ کر دیں۔ تیسری وجہ بعض لوگوں نے یہ کھی ہے کہ اگر آپ آلی ہے کہ مادمت فرماتے تو چریہ واجب یا کم از کم سنت موکدہ بن جاتی ۔ یوں اس امت کیلئے ایک نماز زائد ہوجاتی ۔ الہٰ ذا آپ آلی ہے گئے گئے ایک نماز زائد ہوجاتی ۔ الہٰ ذا آپ آلی ہے گئے گئے شفقت فرماتے ہوئے اس سے امت کو معاف فرمایا۔

بہرحال آپ آلیہ کی مل ہے کم از کم اس نماز کامستحب ہونامعلوم ہور ہاہے اور بہی احتاف رحمہم اللہ اور بہی احتاف رحمہم اللہ اور جمہور کا مسلک ہے۔ نبی کریم آلیہ نے اس نماز کے بہت سے فضائل بھی ذکر کی ہیں جو کہ حدیث کی کتابوں میں ندکور ہیں ()۔

(۱) صلوٰ قضیٰ اور بے بنیاد عوامی با تیں: بعض شروح کے مطابق عوام میں بدبات مشہور ہے کہ جو شخص صلوۃ ضخیٰ پڑھنا شروع کردے پھراسے چھوڑ دے تو وہ اندھا ہوجا تا ہے۔ یو نبی عورتوں کے درمیان بد بات مشہور ہے کہ جو عورت اس نماز کو پڑھتی رہے اور پھرچھوڑ دے تو وہ نو جوان بھی ہولیکن اس کو چیض اور نفاس آنا بند ہوجا تا ہے۔ اس لئے بدنماز آئسہ عورتیں پڑھیں تو پڑھیں تو پڑھیں لیکن جوان عورتوں کو بدنماز نہیں پڑھنی چا ہے۔ لیکن بددونوں با تیں بے بنیاد ہیں۔ شیطانی دھو کہ ہیں۔ اور ایک بڑھیں تو پڑھیں لیکن جوان عورتوں کو مرکھنے کیلئے گھڑی گئی ہیں۔ کیونکہ خود نبی کریم اللیفیف سے شاہت ہوچکا ہے کہ وہ اس نماز کو پڑھے بھی تھے اور پھر ترک بھی کر لیتے تھے۔ لہٰذا پڑھنے کے بعد چھوڑ نے میں بھی کسی قتم کے وہال کا کوئی خطرہ نہیں۔ کذائی الجمع (اصلاح الدین)

حدّثنا احمد بن منيع عن هشيم اناعبيدة عن ابراهيم عن سهم بن منجاب عن قرثع الضبّى او عن قزعة عن قرثع عن أيوب الأنصاري أنّ النبيّ عُلَيْهُ كان يدمن أربع ركعات عندزوال الشمس فقلت يارسول الله عَلَيْهُ إِنَّك تدمن هذه الأربع الركعات عندزوال الشمس فقال أنّ أبو اب السماء تفتح عند زو ال الشمس فلاترتج حتى تصلّى الظهر فاحبّ ان يصعد لى في تلك الساعة خيرقلت أفي كلَّهِنَّ قراءة قال نعم قلت هل فيهنّ تسليم فاصل قال لا.

206

حدّثنا احمد بن منيع ثنا ابومعاوية ثنا عبيدة عن إبراهيم عن سهم بن منجاب عن قزعة عن القرثع عن أبي أيّوب عن النبيّ عَلَيَّ نحوه (١). ترجمه: حضرت ابوابوب الانصاري فرمات بين كه ني كريم الله ذوال كروت بميشه جارر كعات يرص عق من في عرض كياكه يارسول التُعلِيقة آي عليقة زوال کے وقت جارکعتوں پر دوام فرماتے ہیں(اس کی کیاوجہ ہے) تو آسیالی نے فرمایا کہ آسان کے دروازے زوال کے وقت کھول دیئے جاتے ہیں۔ پھرظہر کی نمازتک بنزنہیں کئے جاتے۔اس لئے میں جاہتا ہوں کہ میراکوئی نیک عمل اس وقت آسان پرچڑھ جائے ۔ میں نے عرض کیا کہ کیااس نماز کی تمام رکعتوں میں قراءت ہے۔ تو آپ ایک نے فرمایا ہاں۔ میں نے چرعض کیا کہ کیاان چاروں کے درمیان سلام ہے۔آپ ایک نے فرمایانہیں۔

كان يدمن ادمن يدمن ادمان كسي كام كور اومت ساور بميشه كرنا يعني آسيالية صلوة صلیٰ کو ہمیشہ پڑھا کرتے تھے۔

(١) وبمعنى الحديث في سنن ابي داؤد ١٨٥١ كتاب الصلواة باب الأربع قبل الظهروبعدها، وبمعنى الحديث في سنن ابن ماجة ص ٨ كتاب اقامة الصلوة والسنة فيها باب في الاربع ركعات قبل الظهر، السنن الكبرئ للبيهقي ٣٨٨/٢ كتاب الصلواة (مختار) عندزوال الشمس كامطلب اور باب سطیق:
عندزوال الشمس المع عندكالفظ
درمج " درقبل" اور "بعد" كمعنى مين مستعمل ب-اب يهال كونسا و فت مراد ب اور نماز سي كونى نماز مراد
ہے۔ بعض شراح نے لكھا ہے كه عندكا لفظ يهال قبل كمعنى مين اور زوال سے پہلے پڑھى جانے والے
چاشت كى نماز اس كا مصداق ہے۔ يوں بيحد يث ترجمة الباب سے موافق ہوجائے گا۔ ليكن اكثر شراح
کے نزد یک عنداس مقام پر بعد كمعنى ميں ہے۔ اور اس نماز سے مراد بظاہر ظهر كی سنتیں ہیں۔

کیونکہ اس وفت ظہر کی سنتوں کے سوا اور کوئی نماز نبی کریم اللہ است سے علی سبیل الدوام ثابت نہیں ہے۔ نیز اسی باب کی آئندہ تمام احادیث بھی اس بات کی تائید کررہی ہیں کہ آپ اس وفت ظہر کی سنتیں پڑھتے تھے۔اور زوال کے بعد کاوفت اس مقام پر مراد ہے۔

البتہ اس پر بیہ اعتر اض ضرورواردہوتا ہے کہ اس صورت میں باب کے ساتھ ان احادیث کی مطابقت نہیں رہتی۔ اس کے جواب میں ملاعلی قاریؓ نے لکھاہے کہ چونکہ زوال کے بعد بردھی جانے والی نماز اس سے قبل پردھی جانے والی نماز سے بالکل قریب ہے۔ اس لئے بعد الزوال سنتوں کو بھی صلا قاضحی کہا گیا ہے۔ اور یہاں جرجوارکی نوعیت کی متابعت سے گویا بعد کی نماز قبل الزوال کی نماز کی تابع تھمری۔

جبکہ علامہ پیجوریؒ نے دواور جواب ذکر کئے ہیں۔ اول یہ کہ دراصل یہ چاروں احادیث اس باب کے نہیں بلکہ باب عبادۃ النی آلیہ کی احادیث ہیں۔ کی ناتخ نے اپنے نیخہ میں غلطی سے اسے اپنی جگہ سے مؤخر کر کے یہاں ذکر کیا ہے۔ اور باب العبادۃ کے ساتھ ان احادیث کا تعلق واضح ہے۔ دوم یہ کہ دراصل یہاں پر باب العبادۃ کے عنوان سے صرف ایک ہی باب اصل کتاب میں موجودتی ۔ اور باب صلوة المستحی، باب العطوع اور باب ماجاء فی صوم النبی عُلَیْ الله والے تین الواب کے الگ الگ عنوان اصل شخوں میں موجود ہی نہیں بلکہ یہ ساری احادیث عبادات کے حمن میں مذکورتیں۔ اگریہ بات سلیم کرلی جائے پھر تو سرے سے اعتراض کی گنجائش ہی نہیں ہے۔

فاحِبُ ان یصعدلی النع صعود سے مراد صرف قبول ہے۔ رفع الی مقام القبول ہمیں ہے کیونکہ اعمال طہر کے وقت پیش نہیں ہوتے بلکہ فرشتے اعمال کو مجا اور عصر کی نماز کے بعد آسمان پر اٹھا کر لیجاتے ہیں۔ عن سہم بن منجاب عن قزعة عن القوثع دوسری سندی امام ترفد کی دراصل بی بتانا

چاہتے ہیں کہ ہم بن منجاب اور قر تع کے درمیان قزعہ کا واسطہ ثابت ہے۔ اس میں شک نہیں ہونا چاہیے جبکہ سابقہ سند میں اس بات کوشک کی صورت میں بیان کیا گیا تھا کہ منجاب قر تع سے بلاواسطہ یا پھر قزعہ کے واسطے سے روایت کرتے ہیں۔

ترجمہ: حضرت عبداللہ بن سائب کہتے ہیں کہ نبی کریم اللہ و ال کے بعد ظہر سے قبل چارر کعات نماز پڑھتے تھے۔اور یہ بھی فرمایا کہ یہ وہ وفت ہے جس میں آسان کے دروازے کھلتے ہیں۔ چنا نچے میراول چاہتا ہے کہ اس وقت میرا کوئی نیک عمل قبولیت کا مقام یائے۔

بعدان تنزول الشمس بي تقريح بركه جو چارد كعات ني كريم الله وقت كارعايت كا خاطر پڑھتے تھے۔وہ زوال كے بعد ہوتے تھے۔البتہ باب سے عدم مطابقت كے اعتراض كا گزشته صفحات ميں ہم جواب لكھ يكے ہيں۔

<sup>(</sup>٢) وبمعنى الحديث في جامع ترمذي ا ٧٧ و كتاب الصلواة باب ماجاء في الأربع قبل الظهر، سنن ابن ماجة كتاب اقامة الصلواة والسنة باب في الاربع ركعات قبل الظهر ٨٢ (مختار)

ترجمہ: حضرت علی ظہر سے قبل جار رکعات نماز پڑھتے تھے۔اور انہوں نے بتایا کہ نبی کریم آلیاتہ بھی اسے زوال کے وقت پڑھتے تھے۔اور اس میں طویل قر اُت پڑھتے تھے۔

أنّ النّبيّ عَلَيْكُ كان يصلّيها النح ظهرى ان چارسنو لى فضيلت ش ديگرا حاديث بهى مروى على النّبيّ عَلَيْكُ كان يصلّيها النح ظهرى ان چارسنو لى فضيلت ش ديم البيت المحديث من آتا ہے 'اربع قبل السطور وبعد الزوال تحسب بمثله نّ فى السحور (١) (السحدیث) عنی زوال کے بعد ظهر سے پہلے چارد کعات اواب کے لحاظ سے مجسس السحور (١) کا ناز کے برابر شارى جاتى ہیں۔

اس مبارک وقت کے بارے میں نبی کریم اللہ نے فرمایا کہ رحمت کے دروازے کھل جاتے ہیں۔ اور تجد کے وقت کے بارے میں نبی کریم اللہ فرماتے ہیں کہ ہررات نصف شب کے بعدرب تعالیٰ نرمن برنزول فرماتے ہیں۔

زیرنظر حدیث اوراس سے پہلے دیگرا حادیث سے بیہ بات بھی بخوبی معلوم ہورہی ہے کہ ظہر سے پہلے چار رکعات پڑھنا سنت ہے۔ دو پراکتفاء نہیں کرنا چا ہیں۔ جبیبا کہ گزشتہ باب کی آخری احادیث میں ہم بیان کر چکے ہیں۔

ویمدفیها آپ این ان چارکعتوں میں طویل قرات پڑھتے تھے۔ یعنی فجر کی سنتوں کی طرح ان میں تخفیف نہیں فرماتے تھے۔امام غزالی تو فرماتے ہیں کہ ان رکعتوں میں سورۃ بقرہ یا ایم ہی کمی سورت پڑھنی چاہیے۔

(۱) ترندی شریف ج۲ص ۱۳۱

#### خلاصهباب

210

نبی کریم اللہ جس طرح راتوں کواللہ تعالیٰ کے ساتھ راز و نیاز میں مشغول رہتے تھے۔اس طرح دن کے وقت بھی تقر ب کا کوئی موقعہ ہاتھ سے جانے نہیں دیتے تھے۔اوراس باب میں اسی مبارک عادت کا بیان ہے کہ آپ اللہ اشراق اور جاشت کے وقت نوافل پڑھتے تھے اور پڑھنے کی ترغیب بھی د ما کرتے تھے۔

اس نماز میں رکعتوں کی تعداد میں اختلاف ہے۔ دور کعتوں سے کیکر بارہ رکعتوں تک کی روایات موجود ہیں۔ اکثر واغلب عار رکعتیں آ ہے اللہ نے برهیں ہیں۔ آٹھ رکعتوں کی روایات بھی کثیر ہیں۔ تمجی استجاب کے بیان کیلئے یا خوف وجوب کی بنا پر آپ آگات اس نماز کوترک بھی کیا کرتے تھے۔ شائل کے علاوہ کتب حدیث میں اس نماز کے فضائل میں متعددا حادیث مروی ہیں۔

# ٣٢. باب صلواة التطوع في البيت نفل نماز گريس يرصن كابيان

اس سے پہلے نی کریم اللہ کی عبادت اوراس کی پھیخصوص انواع کا ذکر تھا۔ یہاں پر نقلی عبادت کا مناسب انداز میں بیان کیاجا تا ہے کہ اگر نماز فرض ہووہ تو مسجد میں پڑھنااولی ہے۔ لیکن نوافل کا مسجد کی نسبت گھر میں پڑھنااولی ہے۔ اس باب میں ایک حدیث لائی گئی ہے۔

(۱) حدّثنا عباس العنبرى ثناعبدالرحمان بن مهدىّ عن معاوية ابن صالح عن العلاء بن الحارث عن حرام بن معاوية عن عمّه عبدالله ابن صالح عن العلاء بن الحارث عن حرام بن معاوية عن عمّه عبدالله ابن سعد قال سالت رسول الله عليه عن الصلواة في بيتى والصلواة في المسجد قال أن أصلى في بيتى المسجد قال أن أصلى في بيتى أحبّ إلىّ من ان أصلى في المسجد إلاّ ان تكون صلواة مكتوبة (۱).

ترجمہ: عبداللہ بن سعد سے روایت ہے کہ میں نے نبی کریم اللہ سے دریافت کیا کہ میں نے نبی کریم اللہ سے دریافت کیا کہ میری نفل نماز میرے لیے گھر میں بہتر ہے۔ تو آپ اللہ نے فرمایا کہ تم دیکھتے ہو کہ میرا گھر میں نماز پڑھنا جھے مبحد میں نماز پڑھنا جھے مبحد میں نماز پڑھنا جھے کہ نماز پڑھنا جول) نماز پڑھنے کی نسبت زیادہ پند ہے۔ البتدا گرفرض نماز ہو (تووہ مبحد میں پڑھتا ہوں)

عبدالله بن سعد انساری سحابی بین بنوترام سے تعلق ہے۔ ترام بن معاویہ بن سعد جوان سے روایت کرتے بین کے پچا بین بعض لوگوں نے اسے قرشی اموی کہا ہے۔ جنگ قادسیہ بین ان کی شرکت بھی منقول ہے۔ دمشق میں رہتے تھے بعض لوگوں نے اسے از دی کہا ہے اور بعض نے نبی تیم اللہ کی طرف اسے منسوب کیا ہے۔ امام ابوداؤڈ نے عنسل میں بھی ان کی ایک حدیث روایت کی ہے۔ جس میں عنسل کے موجبات کے بارے میں آپ نے نبی کریم سیالیہ سے یو چھا ہے (۲)۔

(۱)سنن ابن ماجة ۹۸ كتاب اقامة الصلونة والسنة فيها باب ماجاء في التطوع في البيت، مسنداحمد ۳۲۲/۲۳ شرح معاني الاثار ۱/۲۳۲ كتاب الصلونة باب التطوع في المساجد (مختار) (۲)الاصابة ۱۸/۲ ۳۱ (مختار) فلان اصلّی فی بیتی المخ لینی میرا گرمتجدسے بالکل متصل ہے۔ ازواج مطہرات کے جروں کے درواز محمید نبوی آلی ہے کے ایک جھے میں کھلتے ہیں۔ اس قرب کے باوجود گھر میں نفل پڑھنا مجھے مجبوب ہے۔ اس سے کہ مجد میں نفل نماز پڑھوں۔

عبادات میں فرض عبادات کے بارے میں بیتھم ہے کہ ان کو علائیۃ ادا کیا جائے کیونکہ بیشعائر اسلام ہیں۔اور اسلامی شعائر کا زفاء نا جائز اور اعلان مطلوب ہے۔مثلاً فرض نماز ، جج زکو ۃ وغیرہ جبراً اور علائیۃ ادا کرنا چا ہیں۔اس طرح وہ نوافل جن کی مشروعیۃ مسجد میں یا علائیۃ ہوئی ہے وہ بھی حجیب کرادانہیں کرنا چا ہیں۔مثلاً تحیۃ المسجد،طواف کی دور کعتیں ،نماز تراوت کی عیدین ،اور خوف و کسوف کی نمازیں۔
اس کے برعکس جونمازیں خالص نفل ہیں ان کو گھر میں تنہا ادا کرنا افضل ہے۔اور گھر میں ادائیگی کا رجحان کی وجوہ سے ہے۔

- (۱) اس طرح ریاسے آدی کی سکتاہے۔
- (۲) خود پسندی اور تکبرسے آدمی محفوظ رہتا ہے۔
- (۳) منافقین کی مخالفت اور مؤمنین صادقین کے ساتھ مشابہت ہوجاتی ہے۔
  - (٣) گريس فرشتول كاوروداور شياطين سے تفاظت بوجاتى ہے۔
- (۵) گراورگروالوں میں برکت ہوتی ہے۔ اس وجہ سے نبی کریم اللہ کا ارشاد ہے ''(منفق علیہ) ''اجعلوا فی بیوتکم من صلوتکم و لاتتخذو ها قبوراً''(منفق علیہ)

#### <u>خلاصہباب</u>

اس باب میں نفل نماز کو گھر میں پڑھنے کی تعلیم دی گئی ہے۔جس کے فوائد ہم بیان کر چکے ہیں۔ بخاری شریف کی ایک حدیث میں آیا ہے۔

"افضل صلواة المرأ في بيته إلا المكتوبة" مريد كلام واضح ب(١) \_

(۱) سنتیں بھی گھر میں پڑھناافضل ہے۔لیکن اگر گھر میں مشغولیت کا خدشہ ہوتو مبجد ہی میں پڑھ لی جائیں۔ چونکہ آج کل سستی کا غلیہ ہے۔اس لئے مبجد میں پڑھنے یوفتو کی دیا گیا ہے۔ (عقار)

# هم. باب ماجاء في صوم رسول الله عَلَيْتُ مَا الله عَلَيْتُ مَا الله عَلَيْتُ مَا الله عَلَيْتُ مَا الله عَلَيْتُ

یہاں پربھ نسخوں میں صیام اور بھن میں صوم نہ کور ہے۔ لغۃ دونوں صدام یہ صوم کے مصدر ہیں۔ صوم کا لغوی معنی احساک لینی رکنا ہے۔ بات کرنے سے دکنے اور ترک کلام کو بھی صوم کہا جاتا ہے۔ جیسا کہ 'اِنتی نَذَر ثُ للّر حمٰنِ صَوْماً'' میں نہ کور ہے۔

شريعت ملى الكامعيّ الامساك عن المفطرات من طلوع الفجر الى غروب الشمس بنيّةٍ "عكيا كيامي -

اس باب میں کل سولہ احادیث ذکر کی جائیں گی جن میں اصالہ تو آپ اللہ کفل روزوں کا بیان مقصود ہے۔ لیکن عبعاً فرض روزوں کا بھی ذکر ہے۔ روزوں کے بہت سے فضائل ہیں اس سلسلے میں شخ الحدیث حضرت مولا ناز کریا نے فضائل رمضان میں متعددا حادیث کو جمع فرمایا ہے۔ رمضان شریف کے روز سے معرف موتے ہیں۔ اس سے قبل آپ اللہ عاشور سے کا روز والتزام سے رکھتے تھے (۱)۔

(۱) حدّثنا قتيبة بن سعيد ثناحمّادبن زيدعن أيوب عن عبدالله بن شقيق قال سألت عائشة عن صيام رسول الله عليه قالت كان يصوم حتى نقول قدافطرقالت وماصام رسول

(۱) روزوں کی مشروعیت تخلیق آدم سے ہے۔ حضرت آدم ایا م بیض لیعنی چا ندکی ۱۵،۱۴،۱۳ تاریخ کوروزہ رکھتے تھے۔ حضرت نوع نے اس دن روزہ رکھا جب کشتی مقام جودی پر تشہری۔ حضرت داؤڈ ایک دن روزہ اورایک دن افطار کیا کرتے تھے۔ حضرت موسی نے کوہ طور پر قیام کے دوران چالیس دن روز سر کھے۔ اس طرح حضرت عیسی تا کامعمول تھا کہ ایک دن روزہ اور دودن افطار کیا کرتے تھا اورای تسلسل کی وجہ سے امت محدیثہ کو بھی روزوں کا تھم دیا گیا کے مساق ال تعالیٰ کتب علی کہ اللہ بن من قبلکم (الآیة)

میٹیس ہندوؤں میں بھی روز ہ رکھنے کا رواج ہے اور پاری نہ ہب میں بھی روزے کا حکم موجود ہے گویا روز ہ ہر نہ ہب چاہے آسانی ہویاغیر آسانی سب میں روز ہ روحانیت کانسخہ مجر بہے۔ (مختار ) الله عَلَيْكُ شهر اكاملامنذقدم المدينة إلارمضان(١).

ترجمہ: عبداللہ بن شقیق کہتے ہیں کہ میں نے حضرت عاکشہ نے نی کر پیم اللہ کے اور ہور وردہ رکھنے کے بارے میں پوچھا تو انہوں نے فرمایا کہ نی کر پیم اللہ کھی مسلسل روزہ رکھتے تھے حتی کہ ہم بی خیال کرتے کہ (اس ماہ کے سارے) روزے رکھیں گے پھر بھی مسلسل روزہ چھوڑ دیتے تھے حتی کہ ہم بی خیال کرتے کہ (اس ماہ کے سارے ایام) افطار کریں گے۔

حضرت عائش نے فرمایا کہ جبسے نبی کریم اللہ مدینہ تشریف لائے ہیں آپ اللہ نے رمضان کے سواکسی بھی مہینہ کے تمام روز نے نہیں رکھے۔

کان یصوم،اس کا مطلب ہے کہ آپ آلی مسلسل روز سر کھتے تھے اور قدصام کامعنی ہے کہ ہماراخیال ہوتا کہ آپ آلی مسلفے سارے مہینے کے روزے رکھنے والے ہیں۔کوئی روز وہیں چھوٹے گا۔

منفقدم المدينة، چوكدعام احكام كانزول جرت كے بعدمدينه من مواتھا، اس لئے بيہ قيد لگادى ورندمدينة نے سے پہلے بھى آ چياللہ نے مكمل مہينہ كروز نيرس ركھ۔

اس حدیث میں اس بات پر تنبیہ ہے کہ نبی کر پیم اللہ ومضان کے سواکسی دوسر ہے مہینے کے تمام روز نے تغییر نبیس کر رتا تھا۔ اس طرح آپ اللہ مہیدنہ کے میں دوز نے تغییر نبیس کر رتا تھا۔ اس طرح آپ اللہ مہیدنہ کے اول ، وسط یا آخر کو متعین بھی نہیں فرماتے تھے بلک نفل روز ہے آپ حسب انفاق رکھا کرتے تھے۔ آئندہ آنے والے احادیث میں آپ اللہ کے نفل روز وں کے بارے میں مزید تفصیل منقول ہے۔

رمضان کا وج تسمیة: الارمضان درمضان کا لفظ درمض سے لکلا ہے جو سخت گری کے معنی میں مستعمل ہے۔ اس مہینہ کا بینام کیسے بڑا۔ اس کے بارے میں مختلف اقوال ہیں۔

(۱) سب سے پہلے جب مہینوں کے نام وضع کئے گئے تو بیرماہ سخت گرمی کے موسم میں پڑتا تھا اس لئے اسے دمضان کہاجانے لگا۔

(۱)صحیح مسلم ۳۱۴/۱ کتاب الصیام باب اکل الناسی و شربه الخ، جامع ترمذی ۵۹/۱ کتاب الصوم باب ماجاء فی سردالصوم (مختار)

- (۲) اگرواضع لفت خودالله تعالی ہو ہتو مہینوں کے نام کے الہام کے وقت رمضان گری میں آرہا تھا۔
  - (۳) بیرمض الصائم سے ہے جس کامعنی ہے کہروزہ دار کے سیند کی گری شدید ہوگئی۔
    - (۷) میمهیندروزه دار کے گناه کوجلا دیتا ہے (۱)۔
- (۵) رمضان الله تعالی کے ناموں میں سے ہاورخصوصی عبادات کی وجہ سے اسے شہر رمضان یعنی خدا کامپینہ کہا گیا ہے۔

(۱) ای وجہ سے مالکیہ کا کہنا ہے کہ رمضان کا اطلاق غیر اللہ پر بغیر قید کے جا تزئیں۔ اورا کر شافعہ فرماتے ہیں کہ اگر غیر اللہ پر اطلاق کے لئے قرید موجود ہوتو بغیر قید کے بھی رمضان کا استعال جا تزہور نید کے رمضان کا اطلاق غیر اللہ پر اطلاق کے لئے قرید موجود ہوتو بغیر قید کے بھی رمضان کا استعال جا تزہوں آراء کے ظاف ہیں۔ ملاعلی قاری نے کھا ہوقال الشمار حسن علمائنا فیہ دلیل للمذھب الصحیح المختار الذی ذھب إلیه البخاری و المحققون أنّه یہ جوزان یقال رمضان من غیر ذکر الشہر بلاکر اھة و قالت طائفة لایقال رمضان بانفر ادہ بحال انّما یقال شہر رمضان من غیر ذکر الشہر بلاکر اھة و قالت طائفة لایقال رمضان بانفر ادہ بحال انّما یقال شہر رمضان من غیر ذکر الشہر کی اور المحقول کا جواب دیتے ہوئے کہتے ہیں قلت فیہ قرینة صارفة ایضاً و ھی تنزیہ اللّٰہ تعالیٰ عن المحئ الدخول و قد جاء فی حدیث صحیح اذ جاء رمضان فتحت ابواب الجنة فیبنی ان یمثل احبّ رمضان و نحو و دجمع الوسائل ۲/۱ ا) (مختار)

(۲) جامع ترمذى ۱ / ۵ ۹ اكتباب المصوم باب ماجاء فى سر دالصوم، صحيح بخارى ۱ / ۳۲۵، السنن الكبرئ كتاب الصيام، باب من كره ان يتخذ الرجل صوم شهريكمله من بين الشهور اوصوم يوم من بين الايام (۲ / ۹ ۹ / ۲) للبيهقى ۲/۲ اكتاب الصوم (مختار)

تھے۔ کہ خیال ہوتا کہ نبی کر پیم اللہ کا ارادہ روزے کے ترک کانہیں ہے۔ پھر بعض مہینوں میں (اتنا طویل) افطار فرماتے کہ یہ گمان ہوجاتا کہ اس ماہ میں روزے کا ارادہ ہی نہیں ہے۔ نیزا گرتم رات کے کسی جے میں نبی کر پم اللہ کو کماز پڑھتے ہوئے دیکھ لیتے اورا گراس میں سوتا ہواد کھنا چا ہے تو سوتا ہواد کھنا چا ہے تو سوتا ہواد کھیا ہے۔

فقال کان یصوم من الشهرحتی نوی، نون کے ساتھ بیلفظنوکی بھی مروی ہے۔ پھرمعتی بیری کا کہ ہم خیال کرتے اور تسری تاء کے ساتھ بھی صحیح ہے۔ پھرمطلب بیہ ہوگا کہ بچے لگنا کہ نی کریم اللہ اللہ اللہ اللہ میں افطار کرنے والے نہیں۔

نفل صوم وصلوة میں معمول کے اختلاف کی حکمتیں: بہر حال اس حدیث میں بھی اس بات کا بیان ہے کہ نفل روزوں میں نبی کر پیمالیت کا معمول تمام مہینوں میں کیسال نہیں رہتا تھا۔ اور اس اختلاف معمول کا سبب یا تو ہے کہ نبی کر پیمالیت مہینے کی مختلف تاریخوں میں روز ہ رکھ کرتمام تاریخوں میں برکت معمول کا سبب یا تو ہے کہ نبی کر پیمالیت مہینے کی مختلف تاریخوں میں روز ہ رکھ کرتمام تاریخوں میں برکت کے حصول کی کوشش فرما یا کرتے تھے ، دوسری طرف حقوق نفس کی ادائیگی بھی طوظ ہوتی تھی۔ اس لئے افطار مجمول کا عادی نہیں بنتا تھا۔ اور یوں عبادت میں نفس کی مشقت بحال رہتی ، جس سے روح کوسکون ملتا ہے۔

علاوہ ازیں روزہ نفس کیلئے ایک دوا اورعلاج بھی ہے جو کہ بوقت ضرورت کم یازیادہ استعال کیاجا تا ہے۔ کیاجا تا ہے اور بھی بھی اس کی ضرورت محسوس نہیں کی جاتی یادیگرعوارض کی وجہ سے ترک کیاجا تا ہے۔ روز سے کے ساتھ یہی معاملہ برتنا عین قرین قیاس ہے تا کہ اعتدال برقر ارر ہے۔

و کنت الاتراہ من اللّیل مُصلیّا النح ، یہاں روزے کے بارہ میں سوال ہواتھالیکن نُفل نماز کا بھی حکم زیادۃ فی الا فادۃ کے طور پر بیان کیاجا تا ہے۔ نیز اس بات پر تنبیہ کیلئے بھی کہ سائل کونماز کا بھی اہتمام کرنا چاہئے۔ خلاصہ بیر کہ آپ تہجد کے ساتھ بھی تقدیم وتا خیر اور کی وبیشی کا معاملہ روزے کی طرح کیا کرتے تھے اور اس جگہ بھی معمول میں اختلاف کی تقریباً وہی حکمتیں ہیں جو وہاں ہیں۔

مداومت اعمال اورترک اعمال کروایات میں تطبیق: یہاں ایک اعتراض ہوتا ہے کہ متعدد احادیث میں اس بات کا ذکر ہے کہ آپ علیہ اعمال میں دوام کو پیند فرماتے تھے چنا نچہ حضرت عا کشر سے روایت ہے کہ کان افداصلی داوم علیہا، ایک اور روایت میں ہے کہ کان عمله دیمة ،ایک اور روایت میں ہے کہ کان عمله دیمة ،ایک اور روایت میں ہے کہ احب الأعمال إلی الله مادیم علیه ،اور ظاہر ہے کہ زینظر احادیث میں اس کے روایت میں ہے کہ احب الاعمال الی الله مادیم علیه ،اور ظاہر ہے کہ زینظر احادیث میں اس کے برکس مذکور ہے۔اس کا جواب علامہ ابن جر نے تو یوں دیا ہے کہ جس دوام کا ذکر کیا گیا ہے وہ واجب اعمال کے بارے میں ہے اور نوافل میں آپ دوام نہیں کرتے تھے لیکن علامہ میرک نے اس پراعتراض کیا ہے کہ بیجواب تعلی پخش نہیں ہے۔

ملاعلی قاریؓ نے کہا ہے کہ تہجدکوآ گے چیچے کرنے اور بھی اول شب میں اور بھی آخرشب میں پڑھنے کا دوام سے منافات ہی نہیں ہے۔ لہذا سرے سے بیاعتراض بے جاہے۔

ترجمہ: حضرت عبداللہ بن عباس سے روایت ہے کہ نبی کریم اللہ بھی کسی مہینے کے روز مسلسل رکھتے تھے۔ حتی کہ ہم ہیں کہ راس ماہ میں )افطار کا ارادہ نہیں ہے۔ اور بھی کسی ماہ میں سلسل افطار فرماتے حتیٰ کہ ہم میہ بھتے کہ (اس ماہ میں ) روز سر کھنے کا ارادہ نہیں ہے۔ اور جب سے آپ اللہ میں دوز سے دین تشریف لائے آپ اللہ میں مہینہ کے تمام روز نہیں رکھے۔

(۱) صحيح بخارى ۲۲۱ كتاب الصيام باب يذكرمن صوم النبى عَلَيْكُ وافطاره، صحيح مسلم ٢٥٠ كتاب الصيام النبى عَلَيْكُ وغيره رمضان سنن النسائى ١٠٠ كتاب الصيام باب صيام النبى عَلَيْكُ وغيره رمضان سنن النسائى ١٠٠ كتاب الصيام باب صوم النبى عَلَيْكُ (مختار)

تفل اعمال میں میاندروی: و ماصام شهر اکاملاً النع ،اس مدیث میں بھی اس بات پر تنبیہ ہے کہ نی کریم آلی میں میاندروی: و ماصام شهر اکاملاً النع ،اس مدیث میں بھی اس بات پر تنبیہ ہے کہ نی کریم آلی ہوئے کے اس دور الموری کے اس برا تکار فرمایا اور اپنی صحابہ نے صوم الدھر یعنی ہمیشہ کیلئے روز سے رکھنے کاعزم ظاہر کیا۔ تو آپ آلی ہا تھا کہ نایا (ا)۔ میاندروی کو قابل تقلید بتایا (ا)۔

(٣) حدّثنا محمّدبن بشارثنا عبدالرحمان بن مهدىّ عن سفيان عن منصورعن سالم بن أبى الجعد عن أبى سلمة عن امّ سلمة قالت مارأيت النبىّ عُلْبُ يصوم شهرين متتابعين إلاسّعبان ورمضان (٢).

قال ابوعيسى هذااسنادصحيح وهكذاقال عن أبى سلمة عن ام سلمة وروى هذاالحديث غيرواحدٍ عن أبى سلمة عن عائشة عن النبي عَلَيْكُ اللهِ

(۱) مسلم الروزول كيار عش علام بنوري في التحقيق المناس المحمور إلى جوازه وهومست حب عندالشافعي إذا أطاقه ولم يؤ دالى فوات حق وإلى كراهته ذهب اسخق والظاهرية وهومست حب عندالشافعي إذا أطاقه ولم يؤ دالى فوات حق وإلى كراهته ذهب اسخق والظاهرية وأحمد في رواية وشذّابن حزم فقال يحرم كمافي الفتح قال ابن قدامة الذي يقوى عندى أن صوم الدهر مكروه وعز النووى الكراهة إلى أبي يوسف وغيره من أصحاب الامام ولم يذكر البدر العيني في العمدة خلاف أبي حنيفة ولا صاحبه وقد صرّح في البدائع بما يدل على كراهته عندأبي يوسف، راجعه (۲. ۹ ع)قال ابن الهمام في "فتح القدير" ويكره صوم الدهر لأنه يضعفه، أو يصير طبعاً له، ومبنى العبادة على مخالفة العادة اه. وصرح في "الدر" بكراهته تنزيها، والكراهة هي المذكورة في "البدائع" ويستفاد من "الفتاوى الهندية" أن صوم الدهر وصوم الوصال واحد، حيث قال: ويكره صوم الوصال وهو أن يصوم السنة كلها و لايفطر في الأيام المنهي عنها، وإذا أفطر في الأيام المنهية المختار أنه لا بأس به، كذا في "الخلاصة" (معارف السنن ١٩٥٨) (مختار) (٢) جامع ترمذي ١٩٥١ كتاب الصوم باب ماجاء في وصال صيام شعبان برمضان، سنن ابن ماجة الصيام، من رخص ان يصل رمضان بشعبان بشعبان برمضان، مصنف ابن ابي شيبة ٢٠/١، كتاب الصيام، من رخصة ال يا المختار المنهي في ذلك (اى في رخصة الصيام اذاانتصف شعبان) بماهواصح من حديث العيام باب الرخصة في ذلك (اى في رخصة الصيام اذاانتصف شعبان) بماهواصح من حديث العيام الماب الرخصة في ذلك (اى في رخصة الصيام اذاانتصف شعبان) بماهواصح من حديث العيام الماب الرخصة في ذلك (اى في رخصة الصيام اذاانتصف شعبان) بماهواصح من حديث العيام المابية والمابية والميام اذاانت في المناب الرخصة في ذلك (اى في رخصة الصيام المابية المابية والميام المابية والمابية والميام المابية والميام المابية والميام المابية والميام المابية والميام المابية والميام الميام الميام

ويحتمل ان يكون ابوسلمة بن عبدالرحمان قدروى هذاالحديث عن عائشة وام سلمة جميعا عن النبي على الله عن النبي المنطقة والم سلمة جميعا عن النبي على الله المنطقة والم سلمة المنطقة والمسلمة والمسلمة عن النبي على النبي المنطقة والمسلمة و

ترجمہ: ام المؤمنین حضرت ام سلمہ سے روایت ہے کہ میں نے نبی کریم اللہ کو کو سے اللہ کو سے اللہ کو سے اللہ کو سے ا شعبان اور رمضان کے سواد و مہینے مسلسل روز سے رکھتے ہوئے نہیں دیکھا۔

امام ترفدی گہتے ہیں کہ بیسند درست ہے اور اسی طرح حضرت سالم بن ابی الجعد نے یوں کہا کہ عن ابی الجعد نے یوں کہا کہ عن ابسی مائٹ ، یہ جھی ممکن ہے کہ ابوسلمۃ بن عبدالرحمان نے اس مدیث کو حضرت عائشہ ورام سلمہ دونوں کے واسط سے نبی کریم مائٹ سے روایت کیا ہو۔

وجبتسمیدشعبان: الاشعبان ورمضان، شعبان کوشعبان دود جوه سے کہاگیا ہے اول یہ کہ گرب لوگ اس ماہ بین پانی کی تلاش میں متشعب بینی متفرق ہوگئے تھے دوم یہ کہ ماہ رجب کا مہیندا کئے ہاں محترم تھا، رجب گزرنے کے بعدوہ غارات اور لوٹ مارکیلئے ادھرادھر نکل جاتے تھے چنانچہ یہ مہیندا کئے تھتب اور تفرق کا تھا۔

تعارض روایات کی توجید: اس مدیث پریداعتراض ہوتا ہے کہ اس باب کی احادیث میں یہ بات معرح ہے کہ آپ ایک احادیث میں یہ بات معرح ہے کہ آپ ایک احادیث معرح ہے کہ آپ ایک اور مضان کے علاوہ کسی بھی مہینے کے روز ہے کامل نہیں رکھتے تھے تو اس مدیث میں شعبان کے سارے روز ے رکھنے کی بات کیوں کردرست ہو گئی ہے۔ اس کا جواب متعدد وجوہ سے دیا گیا ہے۔

اول: اس مدیث میں اکثر کوکل کے قائم مقام بنایا گیاہے چونکہ شعبان میں افطار کے نسبت روز بے زیادہ ہوتے تھے۔اس لئے گویا سارے ماہ کے روز بے رکھنے کی خبر ہے۔ جبیبا کہ الگے مدیث میں اس کی طرف اشارہ ہے۔

دوم: یہاں شعبان کے سارے روزے رکھنے کا مطلب میہ ہے کہ بھی اول عشرے میں بھی دوسرے عشر میں اس عشرے میں بھی دوسرے عشرے میں آپ اللہ اس کے روزے رکھتے تھے۔اس طرح کئی سالوں میں اس کے سارے روزے رکھ لیتے تھے۔

سوم: حضرت امسلمه گی حدیث مثبت ہے اور دیگرا حادیث نافی بیں تو شایدام سلمه کواس کاعلم ہو چکا ہو۔ اور دیگر صحابہ کوعلم نہ ہو۔

چہارم: یہ کہ ہوسکتا ہے کہ شعبان کے سارے روزے رکھنے کا قصہ کی زندگی کا واقعہ ہو۔ اور دیگرا حادیث مدنی زندگی کے متعلق ہوں جیسا کہ حضرت عاکشتا کی پچھلی حدیث میں ''منذقدم المدینه''کے قید ہے بھی کہی خاہر ہوتا ہے کہ مدینہ آنے کے بعد آپ بھیلتے نے رمضان کی تخصیص کا اہتمام کیا تھا، مکہ میں کسی اور مہینے کے سارے روزے رکھے ہوں تو بعید نہیں ہے۔

رمضان کے روز بے تو فرض ہیں لیکن شعبان میں بھی آپ بکثرت روز بے رکھتے تھے بلکہ اس صدیث کی طرح اگلی حدیث اور دیگرا حادیث سے یہ بات صراحة ثابت ہے کہ شعبان میں تقریباً سارام ہینہ آپ روز بے دکھتے تھے۔اس اہتمام کی متعدد وجوہ ذکر کی گئی ہیں۔ جن کا خلاصہ یہ ہے:

- ایک مرفوع حدیث میں ہے کہ شعبان میں بندہ کے سال بھر کے اعمال اللہ کے حضور پیش کئے
   جاتے ہیں۔ میں چاہتا ہوں کہ میرے اعمال الی حالت میں اللہ کے دربار میں پیش ہوں کہ میں روزے ہے ہوں۔
- ۲) نبی کریم آلیک بر مہینے تین دن کے روزے رکھتے تھے جبکہ بعض ایام مثلاً پیراور جمعرات کو بھی اکثر روزے کا اہتمام فرماتے لیکن بھی بھی سفر، جہادیا دوسری وجوہ کی بناء پر روزے رہ جاتے تھے چنانچہ شعبان بھر کے روزے رکھ کرآ ہے آلیک وہ کی پورافرماتے تھے۔
  - m) ایک روایت میں ہے کہ شعبان کے روز بے رمضان کی تعظیم کی وجہ سے افضل ہیں۔
- ۳) ایک روایت میں آپ ایک طال میں بکثرت روزے کی وجہ یہ بیان فرمائی کہ اس مہینے میں سال بھر میں مرنے والوں کے نام درج کئے جاتے ہیں اور میں چاہتا ہوں کہ میری موت الی حالت میں کھی جائے جب کہ میں روزہ دار ہوں۔

ویحتمل ان یکون ابوسلمة الخ،امام ترندی فی جواحمال ذکر کیا ہےدوسری کتب مدیث سے اس احمال کوتقویت ملتی ہے۔

(۵) حــ د ثناهنا د ثناعبدة عن محمد بن عمر و ثنا أبو سلمة عن عائشة قالت لم أررسول الله عليه أله عليه عن سيامه في شعبان كان يصوم في شهراً كثر من صيامه في شعبان كان يصوم كله (۱).

ترجمہ: حضرت عائشہ بی جیں کہ میں نے نبی کریم اللہ کوشعبان کی نسبت کسی مہینہ میں زیادہ روز سے رکھتے ہوئے نہیں دیکھا۔ سوائے چندایام کے آپ اللہ میان کے روز سے دیکھتے تھے۔
کے روز سے دیکھتے تھے بلکہ گویا تمام شعبان کے روز سے دیکھتے تھے۔

یصوم فی شهر النح، ترکیب ش بی " لم اُر" کے مفعول سے حال واقع ہوا ہے لینی اس حالت میں کہ نبی کر یم اللہ کی ماہ کے روز برر کھتے تھے۔ بی تشریح اس وقت ہے جب " لم آر" سے رویت بھری مراد ہواورا گررویة علمی ہوتو" یصوم فی شهر " مفعول ٹانی بن جا تا ہے۔ اکشر من صیامہ یعنی لَمُ آرَهُ یصوم صیاماً اکثر من صیامہ النح، اس طرح اکثر صیااً کی صفت ہے جومفعول مطلق مقدر ہے۔ آره یصوم صیاماً اکثر من صیامہ النح، اس طرح اکثر صیااً کی صفت ہے جومفعول مطلق مقدر ہے۔ بل کان یصوم النح ، بل ترقی کیلئے ہے لینی پہلے تو چندون کی استثناء کردی لیکن بیدن اس اس مہینے روز سے ہوں باقی شعبان کے روز وں کی اہمیت کے اسباب ہوتے تھے گویا کا لعدم ہوں اور تمام مہینے روز سے ہوں باقی شعبان کے روز وں کی اہمیت کے اسباب کی خرکے جانجے ہیں۔

(۲) حــ قد شناالـ قاسم بن دينار الكوفى ثناعبيدالله بن موسى وطلق ابن غنام عن شيبان عن عاصم عن زرّ عن عبدالله قال كان رسول الله عن شيبان عن عردة كل شهر ثلاثة ايّام وقلّ ماكان يفطر

(۱)صحیح بخاری ۲۹۳۱ کتاب الصوم باب صوم شعبان،صحیح مسلم ۲۹۵۱ الباب صیام النبی علی النبی النبی

يوم الجمعة(١).

ترجمہ: حضرت عبداللہ بن مسعودٌ کہتے ہیں کہ نبی کریم اللہ ہم ماہ کے ابتداء کی تین ایام کے روزے رکھا کرتے تھے اور بہت کم جمعہ کے دن کا روزہ چھوڑتے تھے۔

222

جرماہ کے ابتداء کے تین اور جمعہ کاروزہ:
میں ابتدائی تین دنوں کا ذکر ہے جبکہ بعض روایات میں ایام بیش کے تین دنوں کے روزوں کا اہتمام میں ابتدائی تین دنوں کے روزوں کا اہتمام کا ذکر ہے اور بعض میں آخر مہینہ کا بھی ذکر ہے۔ گویا آپ کیا تھے غیر متعین تین روز ہے ہر مہینے میں رکھتے تھے اور یہی بات آئندہ صراحة کندکور ہے۔ بہر حال اگر روزے کا دس گنا بدلہ ال جائے تو تین روزہ رکھنے سے سارے مہینے کے روزوں کا ثواب ال جائے گا۔ اور گویا ہر ماہ تین دن روزہ رکھنے والا ثواب کے لحاظ سے صائم الدھر بن جاتا ہے۔

وقلگ ماکان یُفطِرُیوم الجمعة، صرف جمع کاروزه رکھنامندوب ہے، یا مروه اسبار کے میں ندا بب مخلف ہیں۔ شوافع اور حنابلہ کے نزدیک کراہت کا قول رائج ہے۔ اگر چہ ندب کا قول بھی موجود ہے۔ مالکیہ کے نزدیک جمعہ کاروزہ مندوب ہے جبکہ احناف کے ہاں ایک قول کراہة تنزیبی اور دوسراندب کا ہے۔

البنة اگرجعرات یاسنچرکاروزه ملاکر جمعه کا روزه رکھاجائے تو بالا تفاق مندوب ہوگا۔ ہوسکتا ہے یہاں بھی جمعہ کے ساتھ ساتھ آپ ایک اورروزہ بھی ملاکرر کھتے ہوں گے۔

(2) حدّثنا محمود بن غيلان ثناأبو داؤ دانا شعبة عن يزيد الرشك قال سمعت معاذة قالت قلت لعائشة أكان النبي عَلَيْنَا يصوم ثلاثة ايّام من كل

شهرقالت نعم قلت من ايّه كان يصوم قالت كان لايبالي من أيّه صام (٢).

(۱)سنن ابی داؤد ۱ / ۳۳۹ کتاب الصوم باب فی صوم الثلاث من کل شهردون مافی آخره، جامع ترمذی ۱ / ۵۱ کتاب ترمذی ۱ / ۵۱ کتاب الصوم، سنن ابن ماجة ۱ / ۲۵۱ کتاب الصیام باب فی صیام یوم الجمعة (مختار) الصوم، سنن ابن ماجة ۱ / ۲۳ ا کتاب الصیام باب فی صیام یوم الجمعة (مختار) (۲) بعض شخول می صفرت عاکش کی بیره دیث موقر کرکے بار بوی نمبر پرلائی گی ہے اورا کثر شراح نے بھی اسی شخ پر اعتاد کیا ہے۔ (مخار)

قال ابوعيسى ويزيد الرشك هويزيد الضبعى البصرى وهوثقة وروى عنه شعبة وعبد الوارث بن سعيد وحمّاد بن زيد وإسماعيل ابن إبراهيم وغير واحدمن الائمة وهويزيد القاسم ويقال القاسم والرشك بلغة أهل البصرة هو القسّام (١).

ترجمہ: حضرت معاذہ فرماتی ہیں کہ میں نے حضرت عائش سے بوچھا کہ کیا نبی

کر مہینے ہر ماہ کے تین روز بر کھتے تھے۔انہوں نے فرمایا کہ ہاں، میں نے بوچھا

کہ مہینے کے کن ایام کاروزہ رکھتے تھے۔فرمایا کہ اس کی پرواہ نہیں فرماتے تھے کہ مہینے

کے کو نے روز بر کھے۔

امام ترفدی گہتے ہیں کہ (سند میں) یزیدالرشک یزید ضبی بھری ہیں۔ جو ثقد راوی ہیں، امام شعبہ، امام عبدالوارث بن سعید، امام حماد بن زیدام اساعیل بن ابراہیم اور متعددائمہ حدیث نے ان سے روایت کی ہے۔ اسی یزیدکوالقاسم اور القسام بھی کہتے ہیں اور الرشک کے معنی بھی اہل بھرہ کی زبان میں قسام (تقسیم کرنے والے) کے ہیں۔

روایات تعین وعدم تعین ایام میں تطبیق:

کان لایب الی النے، حضور الله کے کوافل اور بالخصوص نفل روزوں کاعلم حضرت عائشہ وسب سے زیادہ ہوسکتا ہے۔ اس لئے یہ کہا جاسکتا ہے کہ گزشتہ حدیث میں مہینہ کے صرف ابتدائی ایام کا جوذ کر تھا وہ اکثر واغلب پرمحمول ہوگا۔ یایہ کسی زمانہ میں تخصیص اور کسی میں عدم تعین کا طریقہ آپ نے اپنایا ہو، اور دونوں صورتوں میں الگ الگ مصالح بھی ہیں علاوہ ازیں ہو سکتا ہے کہ عبداللہ بن مسعود کے علم میں تخصیص وقعین ہولیکن حضرت عائشہ دیگرایام میں آپ الله کے دوزوں اسلے ان سے تعیم مروی ہے۔

(۱) صحيح مسلم ۱ / ۳۱۷ کتاب الصيام باب استحباب صيام ثلاثة ايّام من كل شهرسنن ابى داؤد ۱ / ۳۳۹ کتاب الصوم باب من قال لايبالى من أىّ الشهر، جامع ترمذى ۱ / ۵ ۹ ا كتاب الصوم باب ماجاء فى ثلاثة ايّام من كل شهر، سنن ابن ماجة ۲۲/۱ ا كتاب الصيام باب ماجاء فى صيام ثلاثة من كل شهر. (مختار)

قال أبوعيسىٰ النع ،امام ترفري ايكراوي امام شعبة كاستاديزيد الرشك كاتعارف كراربي بي لیکن یہاں ایک اشکال میر ہوتا ہے کہ اس راوی کا پہلے بھی ذکر ہو چکا ہے اور ان کی روایت باب صلوۃ اضلی کی ابتداء میں بھی ندکور ہے۔ تو وہاں ان کا تعارف کیوں نہیں کیا۔ اس کا جواب بیہ ہے کہ دراصل امام ترندی ّ کو پہاں تعارف کی ضرورت کا احساس اس لئے ہوا کہ اس روایت کا گزشتہ روایت سے تدافع معلوم ہوتا ہے۔ کیونکہ سابقہ روایت میں مہینے کے ابتدائی تین ایام کانعین اور اس میں عدم نعین کا ذکر ہے۔ لہذا بہتو ہوسکتا ہے کہ میروایت کمزور ہواور اس میں بریدالرشک ضعیف ہوں تو امام ترفدی نے تعارف کے شمن میں پرتصریح کردی کہ بیراوی ثقه ہیں۔رہا تدافع کا قضیہ تو وہ ہم پہلے نمٹا بچکے ہیں۔نیزیز بدالرشک کے احوال بھی پہلے باب نمبر ۴۰ میں گزر چکے ہیں۔

224

(٨) حد تنا أبوحفص عمروبن على ثنا عبدالله بن داو دعن ثورابن يزيدعن خالدبن معدان عن ربيعة الجرشي عن عائشة قالت كان النبيَّ عَلَيْكُ يتحرّى صوم الاثنين والخميس(١).

ترجمہ: حضرت عائش سے روایت ہے کہ نبی کر پیمائی سوموار اور جعرات کے دنوں کاروزہ رکھنے کی کوشش فر ماما کرتے تھے۔

پیراورجعرات کروز اورعرض اعمال: یتحری المصوم،تحری کامعتی به طلب الاحوى" ليني مناسب ترين امركوتر جيح دينا، تو مطلب بيه وكاكمآب التي السيالية فدكوره دودنو ل كوتصدأ عمد أروزه ر کھنے کی کوشش فرماتے تھے۔ان دودنوں کی تخصیص کی وجوہ کی طرف بھی احادیث میںاشارات موجود میں۔مثلاً (۱) بیر کہ ان ایام میں اعمال کی پیشی ہوتی ہے اور روزہ کی حالت میں روزہ دار کاروزہ بھی پیش ہوگا۔(۲) پیر کے روز نبی کریم آیاللہ کی ولا دت باسعادت بھی ہوئی تھی اور پیر کے روز قر آن شریف کی پہلی (١) جامع ترمـذي ١/٥٤ اكتباب المصوم باب ماجاء في صوم الاثنين والخميس، سنن ابن ماجة ص ١٢٥ كتاب الصيام باب صيام يوم الاثنين والخميس، صحيح ابن حبان ١/٥ ٢٢ كتاب الصوم ذكر تحرى المصطفى عَلَبُ صوم الاثنين والخميس رقم الحديث[٣١٣٥] (مختار) وی نازل ہوئی تھی۔ (۳) پیراور جعرات کے روزمسلمانوں کی عمومی مغفرت ہوتی ہے صرف وہ دو تخص اس مغفرت سے محروم رہتے ہیں جن کے درمیان عداوت اور بغض کی وجہ سے ترک کلام ہو۔

> ترجمہ: حضرت عائش سے روایت ہے کہ نبی کریم ایک شعبان کی نبیت کسی بھی دوسرے مہینہ میں زیادہ روز نبیس رکھتے تھے۔

ما کان المغ، حضرت عائشہ گی اس طرح کی حدیث ابھی گزرچکی ہے جس کی تشریح وہاں ملاحظہ فرما ئیں۔اس حدیث کو بھی بعض شنحوں میں کچھ تاخیر کے ساتھ ذکر کیا گیا ہے۔

(۱۰) حدثنام حمّد بن يحيى ثنا ابوعاصم عن محمّد بن رفاعة عن سهيل ابن أبى صالح عن أبيه عن أبى هريرة أنّ النبى عَلَيْكُ قال تعرض الأعمال يوم الاثنين والخميس فاحبّ ان يعرض عملى واناصائم (۲). ترجم: حضرت ابو بريرة سروايت بكرني كريم الله في أرار الله تعالى كم بال) بندول كم اعمال بير اور جعرات كو پيش بوت بيل البندا مير اول عمرات كو پيش بوت بيل البندا مير اول عامل ولايت كرمير اعمال الي عالت ميل پيش بول كميل روزه سربول ول

عرض اعمال كوييش كى وجوه تو بم بهلي ذكركر يحك بين لين مسلم شريف كى ايك روايت على بيرا ورجعرات كون اعمال كوييش كى وجوه تو بم بهلي ذكركر يحك بين لين مسلم شريف كى ايك روايت على بيرا تائي "يوفع المه هدار ١) صحيح بخارى ٢٦٣١ كتاب الصوم شعبان، صحيح مسلم ١/ ٣١٥ كتاب الصيام باب صيام النبى عَلَيْتُهُ وغير رمضان الخ، سنن ابى داؤ د ١/ ٣٨٨ كتاب الصوم باب كيف كان يصوم النبى عَلَيْتُهُ الخ، مؤطاامام مالك ١/ ١٥ كتاب الصيام باب صوم النبى عَلَيْتُهُ الخ، مؤطاامام مالك ١/ ١٥ كتاب الصوم، (مختار)

(٢) جـامـع تـرمـذى ١ / ٥٤ اكتـاب الـصوم باب ماجاء في صوم الاثنين والخميس، سنن ابن ماجة كتاب الصيام باب صيام يوم الاثنين والخميس، سنن الدارمي٢ / ٠ ٢ كتاب الصوم(مختار) عمل الليل قبل عمل النهاد و عمل النهاد قبل عمل الليل (۱) "يعنی روزاندون آنے سے پہلے اور پھررات چھاجانے سے پہلے دومر تباللہ تعالیٰ کے ہاں اعمال پیش کئے جاتے ہیں۔ تو جب روزاند دوبار رفع عمل ہوتا ہے تو پھر ہفتے ہیں دوبار اعمال کی پیشی کا کیافا کدہ ہے۔ اس کا ایک جواب تو ہے کہ دوزانہ دوبار رفع عمل ہوتا ہے وضع مل کا ذکر نہیں ہے اور پھران اعمال کا عرض ہفتے ہیں دوبار ہوتا ہے دوسرا جواب ہیہ ہے کہ بار بارعرض عمل میں بھی بہت سی صحتی ہیں۔ مثلاً بیر مصلحت کیا کم ہے کہ اس طرح اللہ تعالیٰ بیہ ہے کہ بار بارعرض عمل میں بھی بہت سی صحتی ہیں۔ مثلاً بیر مصلحت کیا کم ہے کہ اس طرح اللہ تعالیٰ فرشتوں پر نیک عمل کرنے والوں کی شرافت ظاہر کرنا چاہتے ہیں۔ تا کہ انسان کی خلقت و خلافت کی حکمت فرشتوں پر نیک عمل کرنے والوں کی شرافت ظاہر کرنا چاہتے ہیں۔ تا کہ انسان کی خلقت و خلافت کی حکمت بھی روزانہ وہاں سے آتے رہتے ہیں۔ ورنہ اللہ تعالیٰ کے ہاں تو عرض اعمال کی سرے سے ضرورت ہی نیجیں۔ وہ تو علیم وجہر ہے روزانہ اور ہفتہ وارعرض کے علاوہ سالانہ عرض بھی ہوتا ہے۔ چنا نچہ روایت شرایاتہ القدر میں بھی عرض اعمال کا ذکر ہے۔ نیز یہ بھی ہوسکتا ہے کہ بعض اوقات احمالی ہو۔

(۱۱) حـ قنام حـ مودبن غيلان ثنا أبوأ حمدومعاوية بن هشام قالاثناسفيان عن منصور عن خيثمة عن عائشة قالت كان رسول السلامة السلامة المسلوم من الشهرالسبت والاحدوالاثنين ومن الشهرالأخرالثلاثاء والأربعاء والخميس (۲).

ترجمہ: حضرت عائش کہتی ہیں کہ نبی کر میم اللہ مہینے میں ہفتے اتوار اور چیر کے اور اور جیرات کے روزے اور پیر کے روزے رکھتے تھے۔

(١)مشكوة شريف ج اص ٢١ كتاب القدر

(١) جامع ترمذي ١ / ١٥ كتاب الصوم باب ماجاء في صوم يوم الاثنين والخميس ومنه (١٤)ر)

امة كى سهولت كے لئے تعددولتين ايام ميں توسع:

حدیث ميں ہفتے كے چودنوں كاذكر ہے جبكہ حضرت ابن مسعود كى حدیث ميں جعہ شریف كے دن كاذكر بھى گزرگيا ہے اور يوں آپ آيات نے نفتے كے ساتوں دن روز بى فضيلت كى طرف اشاره فرماديا ہے۔

آپ آيات نے ايام كى تعين اس لئے نہيں فرمائى تا كہ امت پرتوسع ہواور جن ايام ميں بھى ان كوروزه ركھنے ميں سہولت ہو، انبى ايام ميں روزه ركھنے ميں سہولت ہو، انبى ايام ميں روزه ركھنے ميں سہولت ہو، انبى ايام ميں روزه ركھنے ميں اور نبى كريم آيات كى اقتداء ميں مشكل پيش نہ آئے۔

(۱۲) حدّثناهارون بن إسحاق الهمدانيّ ناعبدة بن سليمان عن هشام بن عروة عن أبيه عن عائشة قالت كان عاشوراء يوماً يصومه قريش في البحاهلية وكان رسول الله عليه المدينة صامه والمربصيامه فلمّا افترض رمضان كان رمضان هو الفريضة وترك عاشوراء فمن شاء صامه ومن شاء تركه (۱).

ترجمہ: حضرت عائش سے روایت ہے کہ عاشور (دس محرم) کے دن کا روزہ قریش زمانہ جاہلیت میں رکھتے تھے۔ پھر جب زمانہ جاہلیت میں رکھتے تھے اور نبی کریم آلیت بھی یہ روزہ رکھتے تھے۔ پھر جب آپیت میں دوزہ دینہ ہجرت کرکے تشریف لائے تو اس دن کا روزہ خود بھی رکھا اور دوسروں کو بھی یہ روزہ رکھنے کا حکم دیا پھر جب رمضان کی فرضیت نازل ہوئی تو صرف رمضان ہی فرض روزہ رہا۔ اور آپ نے عاشورے کا روزہ (فرض رکھنا) چھوڑ دیا اب جس کا دل چھوڑ دیا اب جس کا دل چھوڑ دے۔

عاشوداء، بدوس مرم كيلي مخصوص نام بهداس مين ليلة عاشوراء تفاليكن غلبه اسميت كى وجد سه اس كاموصوف ذكر نمين كياجا تا - استخصوص نام موصوف الدارذ كرنمين كياجا تا -

(۱) صحیح مسلم ۱/۳۵۷ باب صوم یوم عاشور آء، جامع ترمذی ۱ /۵۸ اکتاب الصوم باب ما جاء فی الرخصة فی ترک صوم عاشور آء، ماجاء فی الرخصة فی ترک صوم عاشور آء، ماجاء فی الرخصة فی ترک صوم عاشور آء، مسؤطامامام مالک کتباب الصوم باب صیام یوم عاشور آء (۲۳۰)، السنن الکبری للبیهقی ۲۸۸/۳ کتاب الصوم باب من زعم ان صوم عاشوراء کان واجباً ثم نسخ وجوبه (مختار)

دس محرم کے بادگارواقعات: حضرت نوٹ کی کشتی کے نجات اور اہر اہیم کی ولادت کے علاوہ یہ دن اور بھی بہت سے واقعات کی وجہ سے یادگارون ہے۔ چنا نچہ حضرت آدم کے توبہ کی قبولیت، موٹ کی فرعون سے نجات اور فرعون کی غرقانی، بیش کی ولادت اور رفع آسانی، بینس کی مچھلی کے پیٹ سے نجات، حضرت بسے نجات ، حضرت اور فی کا کنویں سے نکلنا، حضرت ابوب کی صحب بیابی، حضرت ادر لیس کا آسان پراٹھا یا جانا، حضرت سلیمان کا حکومت پر فاکن ہونا اور دیگر بہت سے عظیم واقعات اسی دن ظہور پذیر ہوئے۔ کہا جاتا ہے کہ اس دن وحشی جانور بھی روزہ رکھتے ہیں۔ واللہ اعلم،

 آپیالی نے بیروز ہرکھااورامت کوبھی اس کا حکم دیا۔

من يرورون من المرابعد من صوم عاشور كي نوعيت: كن رمضان هو الفريضة، فرضيت رمضان رمضان هو الفريضة،

لین اس کے بعد فرضیت صوم رمضان میں مخصر ہوگئ اس جملے سے بیہ بات بخو بی معلوم ہوجاتی ہے کہ رمضان کی فرضیت سے قبل عاشور سے کے روز سے کو وجوب کا مقام حاصل تھا اور بہی احناف کا مسلک ہے جبکہ جمہور شوافع کہتے ہیں کہ عاشور سے کا روز ہ نہ پہلے واجب تھا نہ بعد میں۔ بلکہ پہلے تا کید کے ساتھ مستحب تھا بعد میں استخباب باقی رہا تا کید جاتی رہی ، لیکن خود علامہ ابن ججر سے اس رائے کی تر دید کی ہے اور گئ قرآئن سے بیٹا بت کہ عاشور سے کا روز ہ واجب تھا۔ فرضیت رمضان کے بعد وجوب منسوخ ہو کر صرف استخباب مؤکد ہاقی رہا ہے کہ درج ذیل دلائل کی طرف انہوں نے اشارہ کیا ہے۔

- ا) آپیالیہ سے اس کا امر ثابت ہے جیسا کہ زیر نظر حدیث میں آیا ہے۔
- ۲) تاکید کے لئے آپ اللہ نے اس کا اعلان بھی فر مایا جیسا کہ سلم کی حدیث میں حضرت سلمہ بن الاکوٹ سے مردی ہے۔
- ۳) جولوگ بیروزہ ندر کھ سکے۔ ان کے لئے بھی اعلان فرمایا کہ شام تک امساک کریں کھانا پیتا چھوڑ دیں۔
  - ۴) ما وُل کو تھم دیا کہ وہ بچوں کو دودھنہ پلائیں۔
- ۵) حضرت عائشه اورائن عباس سے روایت ہے کہ رمضان کی فرضیت کے بعد عاشورے کا روزہ چھوڑ دیا گیا اور چونکہ استخباب تو ترک نہیں ہوا بلکہ وفات تک آپ اللہ فیا ہے۔ اس کا اہتما م فرمایا۔ تو یہ دلیل ہے۔ اس بات کی کمر ک وجوب کا ہوا، نہ کہ استخباب کا۔

متابعت يبود كو جوبات: شخين كى جس مديث كاذكر جم نے كيا ہے كه نبى كريم الله في الله عند يبود كى متابعت يبود كى متابعت يبود كى متابعت كيوں فرمائى تواس كے متعدد جواب ديئے گئے ہیں۔

اول سے کہ نی کریم اللہ نے بہود میں سے سلمان ہونے دالوں سے یہ بات دریافت کی ہوگی نہ کہا فریبود ہوں سے۔

دوم ممکن ہے کہ اللہ تعالیٰ کی طرف سے ان یہود کی تقید بق نازل ہونے کے بعداس روزے کا حکم منتقل نازل ہوا ہو۔

سوم بی خبرس کرآپ علی نے اجتہاد کیا ہواور سبب التزام اجتہادی ہونہ کہ اتباع یہود۔

چہارم یہ کہ عاشور ہے کا روزہ بجائے خودایک متحن امراور انبیائے سابقین کی روایت رہی تھی۔
آپ اللہ نے یہودکی اتباع نہیں کی بلکہ انبیاء اور بالخصوص موئ کی تقلید کی تھی اور اس خبر طف سے پہلے کی تھی صدیث ندکور کے الفاظ اس بات پر شاہر ہیں۔ چنا نچ آپ اللہ نے نے فرمایا 'نسحن اُحق بسموسی' منکم'' البتہ جوروزہ آپ اللہ کے ایک سے رکھتے تھے الفا قایم دورجی رکھتے تھے۔ جس کاعلم آپ اللہ کو بعد میں ہوا۔

پنجم ہیکہ آپ آلی نے یہود کے استیلاف اور اسلام کی طرف رغبت دلانے کی خاطران سے موافقت کا ظاہری قول کیا ہوتا کہ وہ نبی کریم آلی کے قریب آنے سے نہ کتر ائیں لیکن جب وہ اپنی شرارتوں سے بازنہ آئے تو آپ آلی کے خالفت اور تباعد کا فیصلہ فرمایا اور اخیر عمر میں ان کے ساتھ عبادات میں مشابہت بھی نا گوار رہا۔

بلکہ ایک صدیث میں یہود کے عدم اجاع کا عند بیبی آپ آلی ہے سے مروی ہے چنانچ آپ آلیہ ہے نے فر مایا کہ اگر میں آئندہ سال زندہ رہاتو نو (۹) محرم کا روزہ بھی دس محرم کے ساتھ رکھوں گا۔اور ایک حدیث میں لوگوں کو بھی حکم دیا ہے کہ یہود کی مخالفت کرواور دسویں کے ساتھ نویں یا گیار ہویں کا روزہ رکھا کرو۔

(۱۳) حـ لد ثنا محمّد بن بشّار ثناعبد الرحمان بن مهدى ثناسفيان عن منصور عن إبراهيم عن علقمة قال سالت عائشة أكان رسول الله عَلَيْكُ من الأيّام شيئاقالت كان عمله ديمة وايّكم يطيق ماكان رسول الله عَلَيْكُ يطيق را).

(۱) صحيح بخارى ا /۲۲۷ كتاب الصوم باب هل يخصّ شيئاً من الايّام، صحيح مسلم ا /۲۲۷ باب فضيلة العمل الدائم من صيام الليل، سنن ابى داؤد كتاب الصلواة باب ما يؤمر به القصد فى الصلواة ۱/۱ ۲۰ كتاب الصلواة باب مايؤمر به القصد فى الصلواة ا / ۱ ۲۰ كتاب الصلواة باب مايؤمر به القصد فى الصلواة . (مختار)

ترجمہ: حضرت علقمہ کہتے ہیں کہ ہیں نے حضرت عائش سے پوچھا کہ کیا حضور اقدس اللہ بعض ایام کوعبادت کیلئے مخصوص فرمایا کرتے تھے؟ تو حضرت عائش نے فرمایا کہ (نہیں) نبی کریم الله کا عمل دائی ہوتا تھا اور تم میں سے کون اس عمل کی طاقت رکھتا ہے جس (عمل کی) حضور الله کا طاقت رکھتے تھے۔

اعمال مين دوام واستفامت: كان عمله ديمة ، ديمة دوام عفلة كاصيغه باصل مين دوام واستفامت: من مسلسل برسنه والى بارش كوكمة بين جوعموماً دن يارات كايك تهائى هو برميط بوتا م بلكه ملاعلى قارئ نه كلما م كم از كم مقدار م علامه ابن اثيرنهايه مين كست بين "هو المطر الدائم في السكون (١)"

یہاں آپ آپ آپ کا ملل کواس قیم کی بارش سے تشبید کے طور پردیمہ کہا ہے لینی آپ کا ممل برسات کی موسلادھار بارش کی طرح نہیں تھا جو کہ گرج چک کے ساتھ تھوڑی دیر برس کرتھم جاتی ہے بلکہ مسلسل برسنے والی بارش کی مانند غیر منقطع سلسلہ ہوتا تھا۔ حدیث کا مطلب یہ ہے کہ آپ آلی کے روزہ رکھنے کہ سلسلہ ہوتا تھا۔ حدیث کا مطلب یہ ہے کہ آپ آلی کے دوں میں جن کہ نے بفتے کے دنوں میں سے کسی دن کی تخصیص نہیں فرماتے تھے یہ مطلب نہیں کہ سال کے دنوں میں جن ایام کوایک گونہ شرف حاصل ہے ان کا بھی لحاظ نہیں رکھتے تھے کیونکہ عرفہ کے دن اور عاشور سے کی تخصیص روایات میں مصر ح ہے۔ یا یہ مطلب ہے کہ ماہوار روزوں کا جومعمول تھا۔ ان کے لئے آپ آلی کے ایام بیض کو تصویم نہیں کرتے تھے۔

بلکہ بھی مہینے کی ابتداء اور بھی آخر میں بھی تین روز رکھتے تھے۔ کین صدیث کے الفاظ میں تعیم ہے گویا آپ آلی کے اتمام عبادات میں بھی طرز عمل تھا کہ ان پردوام اور استقامت کے ساتھ عمل کرتے تھے۔

(۱۲) حدثناها رون بن اِسحاق عن عبدة عن هشام بن عروة عن ابیه عن عائشة قالت دخل علی رسول الله عَلَيْتُ وعندی امرأة فقال من هذه قلت فلانة لاتنام اللیل فقال رسول الله عَلَيْتُ علیکم من الأعمال

ماتبطيقون فوالله لايمل حتى تملّوا وكان أحّب ذلك إلى رسول الله عليه الله عليه صاحبه (١).

232

ترجمہ: حضرت عائش سے روایت ہے کہ نبی کریم اللہ میں سے پاس تشریف لائے اس حال میں کہ میرے پاس تشریف لائے اس حال میں کہ میرے پاس ایک خاتون بیٹھی ہوئی تھیں آپ آللہ فیہ نے دریافت فرمایا کہ میدکون ہے؟ میں نے کہا یہ فلال عورت ہے جورات بھر نہیں سوتیں (عبادت کرتی ہیں) آپ آللہ فیہ نے فرمایا کہ تم ففل اعمال کواتنا کروجتنا تحل ہوسکے خداکی متم اللہ تعالی تواب دینے ہے بھی تک نہیں آئے گائتی کہ تم خودتگ آجاؤگ۔

وعندی امرأة ، اس عورت کانام حولاء بنت تویت بن حبیب بن اسد بن عبدالعزی ہے۔ام المؤمنین حضرت خدیج گے قبیلہ سے تعلق ہے۔ بخاری اور مسلم دونوں نے اس کی تعین کی ہے۔ بینہایت پر ہیز گارخاتوں تھیں عبادت میں انہاک غایت درجہ کا تھا۔ بخاری نے کتاب الایمان جاص الپر بھی حضرت عائشگی ہمدیث ذکر کی ہے۔

الله كي تمار الله و نفود النفس عنه بعد محبة " يعنى كسى چيز شررغبت كے بعد برغبتى اوردل تكى الله السخة و نفود النفس عنه بعد محبة " يعنى كسى چيز شررغبت كے بعد برغبتى اوردل تكى كانام به الايمل كا فاعل مقدر ب يعنى الايمل الله حتى تملوا ، اس جمل كامريكى معنى توبي بكرالله تعلى السوقت تك تك نبيس آتا جب تك تم تنك نه آو ليكن اس ترجي شرايك اشكال ب كرحتى كا تقاضا توبي به كه بنده كے تنك آتا جب تك تم تنك آجاتے جيں حالا تكه طلال ، استقال اور تكى الله تعالى كه مشابحت برخى به دول به اس لئے بعض حضرات نے تو يهال بيجواب ديا ب كه بيصرف مشاكلت اور مشابحت برخى بيان بيجواب ديا ب كه بيصرف مشاكلت اور مشابحت برخى بيان بيجواب ديا ب كه بيصرف مشاكلت اور مشابحت برخى بيان بيجواب ديا ج كه بيصرف مشاكلت اور مشابحت برخى بيان بيد والله بي بيدالله تعالى كو اب ندوي يكولال سے تعبير كيا گيا ہے۔

(۱) صحيح بخارى كتاب التهجد باب مايكره من التشديد في العبادة ۱۵۳/۱، صحيح مسلم ۱/۲۷۲ باب فضيلة العمل الدائمن من قيام الليل وغيره والامر بالاقتصاد في لعبادة وهوان ياخذ منها مايطيق الخ، السنن الكبرى للبيهقي ٢/٢ كتاب الصلوة باب القصد في العبادة والجهد في المداومة (مختار)

جیسے نسو االلّٰ فنسی هم میں ہے۔ جبکہ بعض شراح نے کہا ہے کہ تی واو کے معنی میں ہے چر معنی بیں ہے کہا کہ اللہ تعالیٰ تک نہیں آتے اور تم تنگ آ جاؤ گے جبکہ بعض شراح نے اسے مین کے معنی میں لیا ہے لینی اللہ تعالیٰ اس وقت بھی تنگ نہیں آتے جب تم تنگ آ جاتے ہو۔ اور ایک بہتر تو جیہ یہ ہے کہ لا پیمل کامعنی '' لا یہ قطع فضلہ و ثو ابد' 'سے ہونا چا ہے ۔ لینی اللہ تعالیٰ تم کو نیک عمل کا ثو اب اس وقت تک دیتا ہے جب تم اس کور غبت سے کرتے رہواور اگرتم ملول ہوکر بے دلی سے کرو گے تو فضل الی متوجہ نہیں رہے گا۔ اس جملے میں خطاب عام مومنین کو ہے۔ اس لئے جمع فد کر کا صیخہ لایا ہے اور اگر چہ بظاہر عور تیں بی حاضر مجلس بیں لیکن تھم چونکہ عام ہے۔ لہذا مومنین کومومنات پر تغلیب دی ہے۔

و کان احب ذالک الخ، صحابہ کرام کوعبادت سے بے انہام جت تھی۔ اس لئے کئ صحابہ اس میں صدید زیادہ غلو کر جاتے تھے جس کوعموماً نبھا نامشکل ہوجا تا ہے۔ اس لئے نبی کریم اللہ اسکا اللہ داری نے اس تعمق کی ممانعت میں بہت می ابواب منعقد کی ہیں۔ فسلسو اجمع الله داری.

#### \_\_\_\_\_ (۱) بخاری شریف جاس ۱۲، ۱۲۲، ۱۲۵، ۲۲۲، ۲۲۲،

اى ممانعت كى طرح الله تعالى في العبادة على طبقات اعلاها وأسناها طريقة حقى رعايته "علام مناوى رحرالله كتم يل الناس فى العبادة على طبقات اعلاها وأسناها طريقة المصطفى عليها المصطفى عليها المصطفى عليها الى ربّه فمنهم من قام لدابته لماتحتاجه من علف وسقى واصلح عنانها بالمعروف واستعملها عليها الى ربّه فمنهم من قام لدابته لماتحتاجه من علف وسقى واصلح عنانها بالمعروف واستعملها في من أجاعها فما أسرع أن يهلك. ومنهم من رفعها فعلفها أحسن علف فاور دها أعذب مور دوجللها بانواع الزينة وقطع أوقاته فى خدمتها فهذابينه وبين الوصول حجاب وقدطر دعن الباب ومنهم من انقطع عن العبادة واعطى نفسه شهواتها وقضى بذالك مراده تعس خادم الحمار تعس عبدالدرهم والدينار والهدى كله فى أتباع طريق المصطفى عليها المناوى على هامش جمع الوسائلج ٢ ص ١٨ ا) (اصلاح الدين)

(1۵) حدّثناأبوهشام محمّدبن يزيدالرفاعّى ثناابن فضيل عن الأعمش عن أبى صالح قال سالت عائشة وامّ سلمة أىّ العمل كان احبّ إلى رسول الله عَلَيْتُ قالتاماديم عليه وان قلّ (۱).

ترجمہ: حضرت ابوصالح کہتے ہیں کہ میں نے حضرت عائش اورام سلمہ سے پوچھا کہ نبی کریم اللہ کا کہ وہ مل جس کو ہمیشہ کہ نبی کریم اللہ کہ کوکونسا عمل زیادہ پہند ہوتا تھا۔ دونوں نے فرمایا کہ وہ عمل جس کو ہمیشہ کیا جائے اگر چہوہ تھوڑا کیوں نہ ہوزیا دہ پہند ہوتا تھا۔

مادیم علیہ ان قل ،گزشتہ دونوں حدیثوں اور زیر نظر حدیث میں اگر چہروزے کا ذکر نہیں ہے لیکن چونکہ روزہ بھی ایک عمل ہے۔اس لئے اس کا حکم بھی اس سے معلوم ہوتا ہے کہ فل روزوں کو بھی اس حد تک رکھا جائے جس حد تک نبھایا جا سکے۔

(۱۲) حدّثنا محمّدبن إسماعيل ثناعبدالله بن صالح ثنى معاوية ابن صالح عن عمروبن قيس أنّه سمع عاصم بن حميد قال سمعت عوف ابن مالك يقول كنت مع رسول الله عليه فليمَرُّ باية فاستاك ثمّ توضّائمٌ قام يصلّى فَقُمُتُ معه فبدأ فاستفتح البقرة فلايمَرُّ باية رحمة إلاّوقف فسال ولايمُرُّ بلية عـذاب إلاّوقف فتعوّذثمّ ركع فمكث راكعاً بقدرقيامه ويقول في ركوعه سبحان ذي الجبروت والملكوت والكبرياء والعظمة ثمّ سجدبقدر ركوعه ويقول في سجوده سبحان ذي الجبروت والملكوت في الحبروت والملكوت والكبرياء والعظمة ثمّ سجدبقدر ركوعه ويقول في سجوده سبحان شي الحبروت والملكوت والكبرياء والعظمة ثمّ قرأال عمران ثم سورة سورة يفعل مثل ذلكري.

<sup>(</sup>۱) مسندا حمد ۲۸۹/ ۱۲۲۵ مصنف عبدالرزاق رقم الحديث ۹۹ من سنن ابن ماجةرقم حديث ۱۲۲۵ (۲) سنن ابى داؤد ۱۳۳۱ كتباب المصلواة باب ما يقول الرجل فى ركوعه و سجوده، مسند احمد ۲۸۳/ (مختار)

ترجمہ: عوف بن ما لک کہ جی ایک دات کو نبی کریم اللے کے پاس تھا حضورا قد سی اللے اس کو ایک کی کریم اللے کے پاس تھا حضورا قد سی اللے نے مسواک فرمائی پھر وضوفر مایا پھر نماز پڑھنے کھڑے ہوگئے۔ جس بھی ساتھ (نیت با ندھ کر) کھڑا ہوگیا۔ آپ آلی کے نزاز جس ) سورۃ بقرہ شروع فرمائی پڑھتے ہوئے کسی بھی رحمت والی آیت پر گزرتے تو آپ آلی ٹی ٹر جاتے اور (رحمت کی ) دعافر ماتے اور کسی بھی عذاب والی آیت پر گزرتے تو آپ آلی کے اور شرجاتے اور (عذاب سے) پناہ مائی تھے۔ پھر آپ آلی کے اور شرجاتے اور (عذاب سے) پناہ مائی تھے۔ پھر آپ آلی کے اور قیام کے مقدار آپ آلی کے رکوع میں ٹی میں ہم کے اور المحبوروت والمحبورت والمحبوری ورکھتوں میں والمحبوری والم

عوف بن مالک :

ابوعبدالرخمن یا ابوعیموف بن مالک بن ابی عوف گاتعلق اشیح قبیلے سے تھا مورضین کے مطابق فتح محد دن اپنے قبیلے کا جمنڈ اانہی کے پاس تھا ہے جہ ش اسلام سے مشرف ہوئے۔ نبی کریم آلی نے ان کے اور حضرت ابوالدرداء کے درمیان مواخاۃ قائم کی تھی۔ نبی کریم آلی کے وفات کے بعد مصل یادشق میں رہتے تھے۔ اور وہیں تا کھے میں عبدالملک کے زمانے میں وفات پائی۔ آپ بہت غتیور تھا یک یبودی کی اس لئے خوب بٹائی کردی کہ اس نے ایک مسلمان عورت سے چھیڑ چھا ڈکھی۔ حضرت عرشام تشریف لائے تو اس یبودی نے شکایت کردی ان کو بہت غصر آیا۔ لیکن تفتیش کی تو یہودی واقعی مجرم ٹہرا۔ چنا نچہ حضرت عوف بن ما لک کو کچھنہ کہا۔ الٹا یبودی کو یہ کہتے ہی بھائی دیدی کہ ہم نے الی حرکوں کی لیے تم لوگوں سے میں نہیں کی تھی۔ نے ایسی حرکوں کیلئے تم لوگوں سے میں نہیں کی تھی۔

الاوقف وتعود، نماز كاندرطلب رحمت اور بناه طلى براشكال كاجواب دية بوئ علامه في

نے کہا ہے کہ شاید بیمنسوخ ہو چکا ہے۔ یا پھر بیہ نبی کریم اللیلیہ کی خصوصیت ہوگی کین ملاعلی قاری کی سیتے ہیں میدونوں اختال ضعیف ہیں۔ بلکہ چونکہ بیٹول کا واقعہ ہے۔ اور نقل میں ایسا کرنے میں کوئی حرج نہیں ہے فرض میں ممانعت ہے اور وہ یہاں مراز نہیں۔

شم قرء آل عمران شم سورة سورة ، لين تنم قرء في الشالشه سورة وفي السوب عمر السوب المعتمر المعتم

حدیث طول قراءة کا ترجمه الباب سے مناسبت:

ہوتی۔ اس وجہ سے علامہ قسطلا ٹی نے توبیہ کہہ دیا کہ بیہ حدیث ناتخوں کی غلطی کی وجہ سے اس باب میں لایا گیا ہے۔ دراصل بیحدیث باب العبادة یاب صلا ة التطوع میں لانی چاہیے تھی بعض شراح نے یہ جواب دیا ہے کہ دراصل حجے معنوں میں باب صلا قالفی ، باب التطوع اور باب الصوم کے عنوانات سرے ہواب دیا ہے کہ دراصل حجے معنوں میں باب صلاق الفی ، باب التعادة کے عنوان کے تحت ہیں اگر یہ سے موجو دنییں بلکہ ان ابواب کی تمام احادیث مشتر کہ طور پر باب العبادة کے عنوان کے تحت ہیں اگر یہ درست ہو پھر تو سرے سے اشکال ہی نہیں ہے۔

جبکہ بعض شراح نے اس حدیث کی مناسبت یوں بیان کی ہے کہ گزشتہ احادیث میں عبادت میں اعتدال اور عدم غلوکا ذکر کیا گیا ہے تا کہ عبادت سے ملال پیدا نہ ہو۔ اب اخیر میں بیربیان فرماتے ہیں کہ شوق کے غلبہ کی وجہ سے بھی بھی اعتدال سے بھی ہو ھر عبادت میں مبالغہ ہوجائے تو شدت اشتیاق کی وجہ سے بھی جھی اعتدال سے بھی ہو ھر کر عبادت میں مبالغہ ہوجائے تو شدت اشتیاق کی وجہ سے بیرند موم نہیں ہے۔ ہاں اس فتم کے غلوکا التزام اس لئے درست نہیں ہے کہ اسے نبھانا کارے دارد۔

## <u>خلاصة باب</u>

اس باب میں دراصل آپ آلیہ کے نفل روزوں کاذکر مقصود ہے جبکہ ضمناً آپ آلیہ کی دیر عبادات میں طرز عمل کاذکر ہے۔ دیگر عبادات میں طرز عمل کاذکر ہے۔ حتی کے فرض روزوں بلکہ نماز وغیرہ میں بھی اعتدال کا بیان ہے۔

آپ آلی کے درمفان کے بغیر کسی بھی مہینے کے سارے روز نے نہیں رکھے اور نہ رہے کہ خودروزوں پر مداومت نہیں فرمائی۔ بلکہ امت کو بھی ایسے روزوں سے منع فرمایا۔ یہی معاملہ آپ آلی کے نشب بیداری کے حق میں بھی برتا۔ ساری رات قیام سے آپ آلی منع فرمایا کرتے تھے۔ البتہ آپ آلی کے سال کے بعض ایام کے روزوں کا دیگر ایام کی نسبت زیادہ اجتمام فرماتے تھے جن میں شعبان کا مہینہ اور عاشورے کا دن قابل ذکر ہے۔ علاوہ ازیں ایام بیش اور مہینے کے اول اور آخر کو بھی دیگر ایام کی نسبت زیادہ اہمیت دی جاتی تا بل ذکر ہے۔ علاوہ ازیں ایام بیش اور مہینے کے اول اور آخر کو بھی دیگر ایام کی نسبت زیادہ اہمیت دی جاتی ہے۔

پھر جوعبادات بشمول روزہ آپ آلیہ شروع فرماتے تھے۔ تو اس پر دوام آپ آلیہ کومحبوب ہوتا تھا۔ حتی کہ کہ کا میں عذر کی وجہ سے اگر روزہ چھوٹ جاتا تو اس کی قضاء کا بھی اہتمام فرماتے تھے۔

۳۴٪ باب ماجاء فی قرأة رسول الله عَلَیْهُ عَلَیْهُ مَصُوراقد سی آلیه عَلَیْهُ کُر آن پاک پڑھنے کی کیفیت کابیان اس باب میں نبی کریم ایک پڑھنے کی کیفیت کابیان ہے کہ آپ آلیہ کی انداز سے قرآن کریم پڑھتے کی آئی ہیں۔

(۱) حدّثناقتیبة بن سعید ثنااللیث بن شهاب عن ابن أبی ملکیة عن یعلی ابن مملک أنّه سال امّ سلمة عن قراء قرسول الله عَلَيْتُهُ فَاذَاهی تنعت قراء ق مفسّرة حرفاحرفا(۱).

ترجمہ: حضرت یعلیٰ بن مملک کہتے ہیں کہ انہوں نے حضرت ام سلم ﷺ ہے نبی کر میں اللہ کے جارے میں پوچھا تو وہ آپ آلیا کے گر اُق مفتر یعنی ایک ایک حرف جداجد اکر کے بیان کرنے لگیں۔

ایک ایک ترف ادا کر کے بر صنا: فیاذاهی تنعت ، یعنی حضرت امسلم شنے نبی کریم آلیک کی تراق کی تراق کی تراق کی تراق کی تنافل اتارتے ہوئے توضیح فرمائی۔ اورایک ایک حرف کوصاف اور علیجد ہ علیجد ہ ادا کرنا شروع کردیا۔ اکثر شراح نے اس عملی تشریح کواظہر کہا ہے۔ اگر چہ بیا اختال بھی ہے کہ اُم سلم شنے زبانی توضیح کی ہو، مملی خمونہ پیش نہ کیا ہو۔ کین اس باب کی تیسری صدیث میں کہلی صورت کا وضاحت کے ساتھ بیان ہے۔

(٢) حدّثنامحمّدبن بشّار ثناوهب بن جريرابن حازم ثنابي عن قتادة قال قلت لانس بن مالك كيف كان قراءة رسول الله عَلَيْكُ قال مدّاً رس.

(۱)سنن ابى داؤد ۱ / ۲ ۱ کتاب الصلواة باب كيف يستحبُّ الترتيل فى القرأة، جامع ترمذى المراب في القرأة، جامع ترمذى المراب في المراب القرآن باب ماجاء كيف كان قرأة النبي المراب السنن الكبرى للنسائى المراب القرآن باب الترتيل، السنن الكبرى للبيهقى ۱۳/۳ كتاب الصلواة (مختار) ۲۲/۵ كتاب فضائل القرآن باب مدالقرأة، سنن ابى داؤد ۱ / ۲ ۱ كتاب الصلواة باب كيف يستحب الترتيل فى القرأة ، سنن النسائى ۱ / ۱۵۵ كتاب الافتتاح باب مدالصوت بالقرأة ، سنن ابن ماجة ص ۹ ۵ كتاب اقامة الصلواة والسنة فيها باب ماجاء فى القرأة فى صلواة الليل، السنن الكبرى للبيهقى ۲/۲ كتاب الصلواة (مختار)

ترجمہ: حضرت قادہ کہتے ہیں کہ میں نے حضرت انس بن مالک ہے پوچھا کہ نبی کر میں نے حضرت انس بن مالک ہے پوچھا کہ نبی کر میں ہے تھے۔ کر میں ہے تھے۔ کر رہا ہے تھے۔ کر رہا ہے تھے۔

حروف مدّه وكالحاظ: مَدّاً، يعنى كانت قراءته ذات مدّ إو المعنى يَمُدُّ حروف المدّمداً مطلب بي بي جن حروف المدّمداً مطلب بي بي جن حروف كونيني الموتاان كونيني كرير صف تصلين حروف مد و كي تطويل مين بهي اعتدال الموتا - لهذاو صل اور درج كلام مين مدّ ايك الف سن زياده نه الموروق في صورت مين مدّ دوالف يا زياده سن زياده تمن الف (۱) مو تفصيل كيلئ قراء حضرات اوران كي كتب سن مراجعت ضروري ب

(٣) حدّثناعلّى بن حجرثنايحيى بن سعيدالاموى عن ابن جريج عن ابن أبى مليكة عن امّ سلمةٌ قالت كان النبى عَلَيْكُ يقطع قراء ته يقول الرحمٰن الرحيم ثمّ يقول الرحمٰن الرحيم ثمّ يقف وكان يقر أمالك يوم الدين ٢٠).

## وقفول کے ساتھ قراءت:

ترجمہ: حضرت ام سلمہ سے روایت ہے کہ نبی کریم اللہ قرآن قطعہ قطعہ کر کے پہر سے تھے (اس طرح کہ)الحصد لللہ دب العالمين پڑھتے گھروقف کر لیت سے ۔ پھر الموحمان الوحیم کہتے پڑھ کر شرجاتے تھے اور (اگلی آیت میں اسم فاعل کے صیغے سے ) مالک یوم اللدین پڑھتے تھے۔

عن ابن أبى مليكة الخ، ال حديث كواما مرّ فرى في جامع رّ فرى بيل روايت كيا م كيا م كيا م كيا م كيا م كيا م كيا ومال بيركها م كدير حديث منقطع م كيونكم الى روايت كوابن الى مليكة وومرى سندك ما تحدروايت كرت (١) وامّ اما ابتدعه قرّاء زماننا حتى ائمة صلواتنا انهم يزيدون على المدّ الطبعى الى ان يصل قدر الفان واكثرور بّما يقصرون المدّ الواجب فلامدّ الله في عُمُرهم و لاامدّ في امرهم قاله القاري،

(٢)سنن ابى داؤد ٢ / ٢ / ٢ كتاب الحروف القراء ت، جامع ترمذى ٥٨٢/٢ ابواب القراء ت عن رسول الله منطقة المراب المسلولة المستف ابن ابى شيبة ٢ / ٠ / ٥ كتاب الصلولة سنن دارقطنى ا / ٢ - ٢ (مختار)

ہیں۔ لیکن یعلی بن مملک آ کے واسطے سے نہ کہ بلاواسطہ البذا بلاواسطہ روایت کرتا ایک راوی یعلی کو چھوڑ دینا ہے۔ ہے کی شہورتا بعی ہیں۔ ہے لیکن شراح حدیث امام ترفدی کی اس بات سے اتفاق نہیں کرتے کیونکہ ابن ابی ملیکہ شہورتا بعی ہیں۔ کم از کم تعین صحابہ سے ملا قات ہو چکی ہے(۱)، اُم سلم سلم سے ساتھ ملا قات کی خودانہوں نے تصریح کھی کر دی ہے۔ اسی وجہ سے بیا حقی بن مملک آ کے واسطے ہے۔ اسی وجہ سے بیا حقیل بہت تو می ہے کہ اس حدیث کو ابن ابی مملکیة نے پہلی بار یعلی بن مملک آ کے واسطے سے سنا ہوگا چھر خودام سلم شسے سن لیا ہوگا۔ چنا نچہ وہ بھی اسے بالواسطہ روایت کرتے ہیں اور بھی بلاواسطہ حضرت ام سلم شسے نقل کرتے ہیں۔ اس لئے زیر نظر حدیث منقطع نہیں ہے۔

یقول الحمدلله الخ سورة فاتحد کے بیان میں بسم الله نه پر هنااورالحمدلله سے ابتداکرنا ہم احداف کے مذہب کیلئے تائید ہے۔ کہ بسم الله سورة فاتحد کا جز عبیں ہے۔

شم یقف المخ، جب آیت تام ہولیکن مابعد کا کلام اس سے متعلق ہوجیسا کہ الرحمان الرحیم ماقبل کیلئے صفت ہے تو اس صورت میں آیت پر وقف اولی ہے یا وصل؟

علامہ سجاوندی اور جمہور نے اول الذکر کوافشل اور علامہ جزری نے موخر الذکر کواولی قرار دیا ہے لیکن جواز وقف میں شک نہیں ہونا چا ہیے کیونکہ اس جگہ خود نبی کریم آلیات سے ہرآیت پروقف مروی ہے اور آپ آلیات سے نیادہ بہتر قراءة کسی کی نہیں ہوسکتی۔

ما لک اور ملک کی قراء ت: و کان یقواء ملک یوم الدین، حضرت امسلم می بیان پر "ملک" کے تقد تنفظ کا ذکر کرناچا ہی ہیں کہ نبی کریم اللہ اسم فاعل یا ملک صفة مشبہ کے صیغہ سے پڑھتے تقد اگر چددونوں قرا تیں متواتر ہیں۔اول الذکر کا معنی ما لک اور موخر الذکر کا معنی باوشاہ ہوتا ہے لیکن ام سلم می اس روایت میں کس طرح اوا کیا گیا ہے۔اس میں کتب حدیث کا اختلاف ہے۔امام ابوداؤد، امام احمد، امام بیری ،اور شائل کے اس نسخہ میں مالک لیعنی میم کے بعد الف سے روایت کیا گیا ہے۔ جبکہ امام ترفدی نے جامع ترفدی میں اور امام حاکم نے اس لفظ کو ام سلم کی اس روایت میں الف کے بغیر یعنی ملک بمعنی بادشاہ روایت کیا ہے۔

(۱)قال ابن أبى مليكة ادركت ثلاثين من اصحاب النبي عَلَيْتُهُ كلهم يخافه النفاق على نفسه الخربخارى ج اص۱)

(٣) حدّثناقتيبة بن سعيدثناالليث عن معاوية بن صالح عن عبدالله ابن أبسى قيس قال سألت عاشئة عن قراء ة النبى عَلَيْكُ أكان يسربالقراء ة ام يجهر قالت كل ذلك قدكان يفعل رُبّمااسرّوربّما جهر قلت الحمدلله الذي جعل في الامرسعة (١).

ترجمہ: عبداللہ بن ابی قیس کہتے ہیں کہ میں نے حضرت عائش سے نبی کر یم آلیہ کی گرائی کی کہ اللہ کا گرائی کے اس کے اس کے جارت کا کہ اس کے جارت کی کہا گئے گئے کا خرایا کہ دونوں طرح پڑھتے تھے۔ بھی آ ہت پڑھتے تھے اور بھی زور سے میں نے کہا کہ اللہ تعالیٰ کا شکر ہے جس نے اس سلسلے میں (بھی) سہولت فرمائی ہے۔

قراءة جهراً اورسراً على اعتدال: سالت عن قواءة النبي عليه النج، جامع ترفدى على ابواب الوترسة تعود البيلا الله عديث كواما مترفدي في دوايت كيا جدو بال يدتفر تك به كرعبدالله ابن الي تسي في الوترسة تعود البيل يعنى تبجد كي نماز على قراءة كي بار به على كيا تعادا ور تبجد على دونول متم كي قراءة جائز به وال صلوة البيل يعنى تبجد كي نماز على قراءة كي بار به على بوقاد مثلاً اگرسونے والول يا دوسرى عبادت به بمقتصائي حال بهي آجت برخ هنا بهتر بوقا اور بهي جهراً اولي بوقاد مثلاً اگرسونے والول يا دوسرى عبادت كرنے والول يا مريض وغيره كو تكليف بوتو سراً بهتر بهداوراً كرا دى تنها بواور نشاط اور استخصار بيدا كرنا مطلوب بوتو جهراً اولي بوگاد البيد اعتدال كا التزام ضرورى ہے۔ چنا نچ حضرت ابو بكر صديق آجت قراءة فرماتے تھے۔ آپ الله عند دونوں كے موقف كے بار بيل بيل بي جها اور پهر دونوں كوا والي كار شادفر مايا۔ على بوجها اور پهر دونوں كوا عندال كا حكم ويا ابو بكر الوز راجهر سے اور عراق تو تو الآب سته برخ صنح كار شادفر مايا۔

(۵) حدّثنام حمودبن غيلان ثناوكيع ثنا مسعرعن أبى العلاء العبديّ عن يحيي ابن جعدة عن امّ هاني قالت كنت اسمع قراء ة

(۱) صحيح مسلم ۱ ۳۳/۱ كتاب الحيض باب جوازنوم الجنب واستحباب الوضؤله الخ، سنن ابى داؤد ۱/۱ ۲ كتاب الصلوة باب ماجاء داؤد ۱/۱ ۲ كتاب الصلوة باب ماجاء في وقت الوتر، جامع ترمذى ۱/۱ ۲ كتاب الصلوة باب ماجاء في قرأة الليل، السنن الكبرئ للبيهقي ۱/۳ (مختار)

النبيّ مَلْكُ بالليل واناعلى عريشي(١).

ترجمہ: حضرت ام ہانی سے روایت ہے کہ میں نبی کریم آلی کے گراءت رات کے وقت سنتی تھی۔ وقت سنتی تھی۔

عویش: واناعلی عریشی النخ ، عریش مکان کی جهت، تخت یا چار پائی ، انگور کے پود کے چوت پر بولا جا تا ہے۔ یہاں پر ملاعلی چڑھانے کیلئے جنگے اور کے ٹا مائیستظل به لیعنی ساید دار چھریا کچ چھت پر بولا جا تا ہے۔ یہاں پر ملاعلی قاری نے سریر لیعنی چار پائی سے ترجمہ کیا ہے۔ اور بعض شراح نے مکان کی چھت کا معنی لیا ہے۔ ابوداو د تا ان کی اللہ تا کہ کہ کہ دوایت میں 'کنت اسمع و أنا نائمة علی فور اللہ ''کے الفاظ ہیں جو پہلے ترجمہ کی تا کید کرتی ہیں۔ یہ مکہ کا واقعہ ہے جب آپ آگا تھے حمر سے من نماز پڑھتے تھے حضرت ام ہائی کا گھر حرم سے متعلی قا۔

(۱)سنن ابن ماجة ۹ ۲ كتاب اقامة الصلواة والسنة فيهاباب ماجاء في صلواة الليل، مصنف ابن ابى شيبة ۱ / ۳۰ شرح السنة للبغوى ۴۰ / ۳۰ باب كيف القرأة بالليل رقم الحديث ۹۱ ، (مختار) شيبة ۱ / ۲۱ شرح السنة للبغوى ۳۰ / ۳۰ باب كيف القرأة بالليل رقم الحديث ۹۱ ، مختاب صلواة (۲) صحيح مسلم كتاب صلواة المسافرين وقصرهاباب ذكرقرأة النبي مَلْنِهُ منن ابى داؤ د ۱ / ۲ ۱ كتاب الصلواة باب كيف يستحب الترتيل في القرأة مصنف ابن ابى شيبة ۳۷۸/۲ كتاب الصلواة، السنن الكبرئ للنسائي ٢٢/۵ كتاب فضائل القرآن باب الترجيح الخ (مختار)

لیغفولک الله ماتقدّم من ذنبک و ماتاخّر "پڑھ رہے تھے۔ حضرت عبداللہ بن مغفّل کہتے ہیں کہ آپ الله فی یہ سورة ترجیع کے ساتھ پڑھی۔ معاویہ بن قرق (حضرت عبداللہ کے شاگرد) کہتے ہیں کہ اگراوگوں کے جھ پرجمع ہونے کا خوف نہ ہوتا تو میں اس آواز اور لیج میں تہارے سامنے پڑھنے لگ جاتا۔

عبدالله بن مغفل: ان کی کنیت ابوسعید، ابوعبدالرحمان یا ابوزیاد تھی۔ مزنی صحافی ہیں بیعت رضوان میں حاضر تھے غزوہ تبوک میں تکلدی کی وجہ سے شریک نہ ہو سکے۔ جس کی وجہ سے رویا کرتے تھے اور 'تو آلو او اعینهم تفیض من الدَّمع '' کے مصداق بنے ۔ حضرت عمر نے نو دیگر صحابہ کی معیت میں ان کوبھرہ بھیجا تا کہ وہاں پر لوگوں کو دین کی تعلیم دے سکیس اور وہیں پر 20 ھیل الا ھے میں وفات پائی۔ مرتے وقت وصیت فرمائی کہ میرا جنازہ حضرت ابو برزہ اسلمی پر موال میں ۔ چنا نچہ وصیت کی تعمیل کی گئی۔ رضی اللہ تعالی عنہ

و هویقر ء انافتحناالخ، یه آیت ملح حدیبیه سے دالسی کے موقع پرنازل ہو چکی تھی کیکن فتح مکہ چونکھی کیکن فتح مکہ چونکہ ملے صلح حدیبیہ سے دابستہ ہو چکی تھی اس لئے اس دن ان آیات کی تلاوت بہت مناسب تھی۔

مسكرترجين وهدو يرجع برجي دراصل دة المصوت في المحلق يعني آواز كوطق سے الله والله الله والله الله والله الله والله والله

خوش آوازی سے پڑھنا: دوسرے احادیث میں اس عمل کو بیان بھی کیا گیا ہے۔ چنانچہ ارشاد ہے

"زيّنواالقران باصواتكم" لين قرآن كونوش آوازى سے پڑھ كرمزين كرو "لكل شى حلية وحلية القرآن حسن الصوت "لينى مرچيز كاليك زيور بوتا ہاور قرآن كازيور فوبصورت آوازے بلك فرمايا" كيس منامن لم يتغنّ بالقرآن "لين جس فرآن كوفوش آوازى سے نہ پڑھا وہ مم مل سے نہيں حضرت الوموئ قرآن فوش آوازى سے پڑھت تو آپ فرمات" كلسف داوتيت مزماراً من مزاميوال داؤد" تجي تو داودى فوش آوازى بخشى گئے ہے۔

اور ظاہر ہے کہ نبی کریم آلی فتح مکہ کے روز انتہائی خوش اور بڑی نشاط کی حالت میں تھے۔الی حالت میں ان آیات کا جذب و کیف کے ساتھ پڑھنا مزید خوش الحانی کا سبب بنما تھا۔

غیرافتدیاری ترجیع: لین دوسری طرف بعض شراح نے یہ بھی ذکر کیا ہے کہ نبی کریم آلیہ کی جس ترجیع کا یہاں ذکر ہے وہ اضطراری تھا۔ چونکہ آپ آلیہ افٹی پرسوار تھے اور وہ مسلسل حرکت میں تھی زمین ناہموار تھی ۔ فشی برشوار تھے اور وہ مسلسل حرکت میں تھی ناہموار تھی ۔ فشی ۔ فشی برشوار نے کو جہ سے آپ کی آ واز نہ منجل سکی ۔ اور جہاں کوئی مدّ ہ آتا وہاں آ آ آ کی آ واز نکل جاتی تھی ۔ علامہ ابن اللا ثیر نے اس رائے کو افتدیار فر مایا ہے۔ جہاں تک عبداللہ بن منفل کی طرف سے اس کی توضیح آ آ آ کے ساتھ منقول ہے۔ تو محض حکایت اور نبی کریم آلیہ تھی کے آواز کی تصویر ہے نہ یہ کہ اس طرح بالافتیار کرنا قابل تقلید عمل ہے۔

لو لاان یجتمع الناس علی، یه معاویه بن قر ه کا کلام ہے۔ عبداللہ بن معقل سے رجیع کی نقل سننے کے بعدانہوں نے یہ بات کہددی۔ یعنی اگر لوگوں کے اجتماع کا خوف نہ ہوتا تو میں اس آواز کی تو شیح کی میری آواز سن کر پچھلوگ فتنہ اور معصیت کا شکار ہو نگے۔ کی میری آواز سن کر پچھلوگ فتنہ اور معصیت کا شکار ہو نگے۔ مثلاً کوئی نبی کر پھھلاگ کی اس ہیت کو منکر سمجھ یا استہزاء کر ہے قو مفتون ہوگا۔ کوئی اس کی بے جا تقلید کرنے گئے قو منکر کا شکار ہوگا۔ اور ہوسکتا ہے کہ از دھام کی وجہ سے پچھلوگوں کو تکلیف ہو۔

بہر حال اس سے بہ تھم بھی واضح ہوجا تا ہے کہ جگہ جُمع لگانا۔ اور ہر بات کو جُمع میں سنانا قرین مصلحت نہیں ہے۔ جہال تک تلاوت قرآن پاک کی بات ہے تو اسے طبعی تحسین کے ساتھ بے تکلف اور آ داب کے ساتھ بڑھنا مستحسن ہے۔ لیکن تکلف کے ساتھ قوالوں ، نعت خوانوں اور گویوں کی سُر وں سے اور آ داب کے ساتھ بڑھنا مستحسن ہے۔ لیکن تکلف کے ساتھ قوالوں ، نعت خوانوں اور گویوں کی سُر وں سے

پڑھنانا جائزہے۔

(2) حدّثناقتيبة بن سعيد ثنانوح بن قيس الحدّانيّ عن حسام ابن مصكّ عن قتادة قال مابعث الله نبيّاً إلّا حسن الوجه حسن الصوت وكان نبيّكم عليه حسن الوجه حسن الصوت وكان لايرجع(١). ترجمه: حضرت قادة كمّ بين كه الله تعالى نے كوئى بھى نبى مبعوث نبيس فرمايا جوخو برواورخوش گلونه بو۔ اور تمہارا نبى عليه بھى خو برواورخوش آواز تے (گر) آسائية ترجيع نبيس كرتے تھے۔

قتادة ، ابوخطاب حضرت قاده بن دعامه سدو کی شهورتا بعی ہیں۔ کہتے ہیں کہ مادر زاد نابینا تھے۔ بکر بن عبداللد مزنی کہتے ہیں کہ ان سے زیادہ حافظے والا ہمارے علم میں نہیں ہے۔ وہ خود کہتے ہیں کہ میری کان نے جوسنا محفوظ کرلیا۔ والھے کے بعد وفات یائی۔

بیر حدیث حضرت قادہ پر مقطوع ہے۔علاوہ ازیں حسام بن مصک راوی بھی ضعیف بلکہ بقول طبرائی متروک راوی ہیں اوران کی زیر نظر حدیث محر حدیث ہے۔

تعارض روایات ترجیع: کان لایوجع، گزشته مدیث سے به مدیث متعارض ہے چنانچ بعض علاء نے اس مدیث کوضعیف قرارد مکر گزشته مدیث کواس پر ترجیح دی ہے۔ بعض نے بہ جواب دیا ہے کہ یہاں بالقصد ترجیع کی نفی ہے جبکہ گزشته مدیث میں غیرافتیاری ترجیع کا ذکر ہے۔ بعض نے بہ کہا ہے کہ آپ اللہ گویوں جیسے ترجیع نہیں کرتے تھے جبکہ تحسین الصوت تو جائز بلکہ مندوب ہے۔ گزشتہ مدیث میں متا خرالذکر معنی مراد ہے۔ یا تریل کے معنی میں ہے۔ علامہ بیجوری نے یہ بھی کہا ہے کمکن ہے کہ آپ اللہ متدوب بے کہ آپ اللہ متا خرالذکر معنی مراد ہے۔ یا تریل کے معنی میں ہے۔ علامہ بیجوری نے یہ بھی کہا ہے کمکن ہے کہ آپ اللہ بعض اوقات میں ترجیع کرتے ہوں۔ جس کا ذکر گزشتہ مدیث میں ہوا ہے اور بالعموم نہ کرتے ہوں۔

(۸) حدّثناعبدالله بن عبدالرحمان ثنایعییٰ بن حسان ثناعبدالرحمان بن أبی الزنادعن عمروبن أبی عمروعن عکرمة عن

(۱)فتح البارى ١٠/٤ ٢

ابن عبّاس قال كان قرأة النبيّ عَلَيْكُ ربّما يسمعها من في الحجرة وهو في البيت(١).

ترجمہ: حضرت عبداللہ بن عباس کتے ہیں کہ نبی کریم اللہ کی گراء قام بھی بھی صحن میں موجودلوگ بن سکتے تھے جبکہ آپ کمرے کے اندر ہوتے تھے۔

یسمعها من فی الحجرة و هوفی البیت ، جره دراصل مکان مجور یعنی پھروں سے محصور جگہ کو کہتے ہیں یوں اس کا اطلاق صحن پر بھی ہوسکتا ہے اور خود کمرے پر بھی اگراول الذکر مراد ہوتو معنی ہے ہوگا کہ کمرہ ہیں قراءة کرتے ہوئے آپ زور سے قرآن پڑھتے ۔ لیکن اتنا کہ صرف صحن ہیں سنناممکن ہوتا تھا اس سے آگے نہیں سناجا سکتا تھا۔ اور اگر موخر الذکر معنی مراد ہوتو پھر مراد ہے ہوگی کہ آپ کمرے کے اندر آہت ہے تہاں تک کہ آپ تھا تھے کہ آواز کمرے سے باہر نہ گاتی تھی البتہ کمرے کے اندر کہی سنائی جانے گئی۔

قراة بلندآ واز سے مویا آ ہت مدیث نمبر اس ساس بارے میں کلام موچکا ہے۔

(۱)سنن ابى داؤد ۱۹۳۱ کتاب الصلواة باب فى رفع الصوم بالقرأة فى الصلواة الليل، السنن الكبرى للبيه قى ٣٠١ اكتاب الصلواة، شرح السنة ٣٩/٣ باب كيف قرأة بالليل رقم الحديث ١٤٠ مسنداحمد ١١/١ (مختار)

### <u>خلاصة باب</u>

اس باب میں نبی کریم اللہ کی قراءت کا بیان ہے مجموعی طور پر روایات باب سے آپ اللہ کی قراءت کا بیان ہے مجموعی طور پر روایات باب سے آپ اللہ کی قراءت میں درج ذیل خوبیاں ظاہر ہورہی ہیں:

- ا) آستالله مسلسل يرهنى بجائے وقفول كے ساتھ ليني ٹير ٹير كر قر آن يره صق تھے۔
  - ٢) حروف مدّه كوآ پيالية كينځ كريز هتے تھے۔
- ۳) جبرواخفاء میں آپ اللہ اعتدال سے کام لیتے تھے جبر کرتے بھی تھے کین اتنا زور سے بھی نہیں پڑھتے تھے کہدوسروں کونا گوارگزرے۔
- ﴿ وَقُلْ آوازی کے ساتھ پڑھتے تھے اور اصول وضوا بط کے ساتھ صدود کے اندررہ کرخوش آوازی ہے پڑھنے کو پہند بھی فرماتے تھے۔
  - ۵) مدود کے اندرتر جیج کوجائز سمجھتے تھے لین اختیاری طوراس سے کتراتے تھے۔

ایک مدیث میں آپ الله نے خداوند کریم جل جلالہ کے دربار میں ایک انہائی قابل توجہ بات بہ بتلائی کہ نی خوش آوازی کے ساتھ کلام اللی کی قراءت کرے۔ چنانچ فرمایا ''مساأذنَ الله لشئ ماأذِن لنبیّ یتغنیّ بالقر آن'' (متفق علیہ)

یعنی اللہ تعالی کے ہاں تمام باتوں سے زیادہ توجہ نبی کی خوش الحانی کے ساتھ کلام الہی کی تلاوت پر ہے۔ البتہ موسیقی کی لے میں قرآن پڑھنا مکروہ تحریم ہے اور اگر قتر کلمات کو مفضی ہوتو حرام ہے۔

# هم. باب به کاء النبی عَلَیْتُ کِهُ وَ نَعُ کَابِیان مُنْ کِهُ اللّٰهِ کَهُ وَ نَے کَابِیان

بكاء بكى يبكى كامصدر بي بكالف مقصوره كي ما ته بهى آتا بيداور بكاءالف ممدوده كي ما ته بهى آتا بيداور بكاءالف ممدوده كي ما ته بهى مستعمل بي ماري أور علامه مناوي دونوں ميں فرق كرتے ہوئے كہتے ہيں كه الف مقصوره كي ما ته بي خسر وج المدمع مع المحزن "ليني غم كى وجہ سے آنو بہنے ميں مستعمل بي جبكه الف ممدوده كي ما ته بلند آواز كي ما ته رو نے كو كہتے ہيں۔ صاحب قاموں نے دونوں كو برابر سمجھا ہے۔ جبكہ بعض لوگوں نے بي فرق بتايا ہے كه اگر آواز غالب ہوتو الف ممدوده اور اگر مزن غالب ہوتو الف مقصوره استعال ہوتا ہے۔

# رونے کی دس قسمیں:

علامہ پیجوری وغیرہ شراح نے رونے کی دی قسمیں کھی ہیں۔جس کی تفصیل کچھ یوں ہے۔

- (۱) کسی پررخم اور شفقت کی وجہ سے رونا۔ جیسے مال بچے کی تکلیف پر روتی ہے۔
- (۲) خوف وخشیة لینی کی در کے دجہ سے رونا۔ مثلاً خوف خدااور توبہ کے وقت کا رونا۔
  - (٣) محبت اوراشتياق كارونا جيسے ابرائيم اور نبي اكرم الله كالبض مواقع بررونا -
    - (٣) خوشی کارونا۔ بدانتهائی درجہ خوشی کے موقعہ پر ہوتا ہے۔
    - (۵) بےمبری کارونا۔ جیسے مریض درد کی برداشت سے عاجز ہوکرروتا ہے۔
      - (٢) عم كى وجد سے جيسے عزيزوں كى موت يرعمو مارويا جائے۔
      - (۷) بکاءمستعار جیسے مورتیں بھی بھی دوسروں کے لئے روتی ہیں۔
- (۸) اجرت ومزدوری کے لئے رونا۔ جیسے پیشہ ورنائحات نوحہ کرتے وقت کمائی کے لئے روتی تھیں۔
  - (۹) موافقت کارونا جیسے بغیر سبب معلوم کئے کسی اور کوروتا ہواد مکھ کر کبھی رویا جاتا ہے۔
- (۱۰) باء کذب جب کوئی گناه گارگناه پرمفر بھی ہواوراس پرروئے بھی تواسے جھوٹارونا کہا جاتا ہے۔

اسے لکاء نفاق بھی کہتے ہیں۔

(١) حدَّثنا سويد بن نصر أناعبدالله بن المبارك عن حمَّاد بن سلمة عن ثابت عن مطرف و هو ابن عبدالله بن الشّخير عن أبيه قال أتيت رسول الله عُلَيْ وهو يصلّى ولجوفه ازيز كازيز المرجل من البكاء(١). ترجمه: عبدالله بن الشخير ملتح بين كه من بي اكرم الله كي ياس آيا- آپ الله نماز پڑھ رہے تھے۔رونے کی وجہ سے آپ اللہ کے سینے سے الیی آوازنکل رہی تھی جیسے ہانڈی کے جوش کے وقت نکلتی ہے۔

249

عبدالله بن الشخير"، عبدالله بن عوف بن كعب قبيلة قريش سے تھے۔ بنوعامر بن صححه کی شاخ سےان کا تعلق ہے۔اس لئے ان کوعامری کہتے ہیں۔بھرہ میں سکونت پذیر تھے۔ فتح مکہ کے بعد مسلمان ہوئے۔ ان کے دو بیٹے مطرف اور برید فضلاء تابعین میں سے ہیں۔ امام بخاری کے سوا دیگراصحاب صحاح نے ان سے احادیث روایت کی ہیں۔

ازیز اور مرجل کے معنی: ولجوفه ازیز الخ، ازیز جوش کو بھی کہتے ہیں اور جوش کے وقت نکلنے والی آ واز کوئھی کہتے ہیں۔ پہاں دونوں مراد ہوسکتے ہیں۔

كازية الموجل، مرجل كمتعلق الل افت كا اختلاف بي بعض كاخيال بي كريتيل كي ہا تڈی کو کہتے ہیں۔بعض کا خیال پھر اور بعض کے ہاں او ہے سے بنی ہا تڈی کو کہتے ہیں۔لیکن علامہ ابن حجر عسقلا کی کے بال برمطلقاً بانڈی کو کہتے ہیں (۲)۔

مطلب یہ ہے کہ آپ کے سینے سے جو بھکیاں اٹھتی تھیں۔ان کی آواز ابلتے ہامٹری کی آواز جیسی (١)سنن ابي داؤد ١٣٤/١ كتاب الصلولة باب البكاء في الصلوة ، صحيح ابن حزيمه رقم حديث • • ٩ ، صحيح ابن حبان رقم حديث ٢ ٢ ٥، السنن الكبرى للبيهقي ٢ / ١ ٢ ٥ ، شرح السنة (٢) اوراس كوم جل اس لئے كہاجاتا ہے لانے إذا نصب فكانه أقيم على رقم حدیث ۲۹ ک رجلين (المواهب اللدنية ٢٣٢)

مقی۔آپ آلی کوخوف وحثیۃ (۱) کی بید کیفیت سیدنا ابراہیم سے وراثت میں ملی تھی۔ان کے بارے میں منقول ہے کہان کی سینے کے جوش کی آواز ایک میل تک سنائی دیتی تھی(۲)۔اوراس وجہ سے ان کواوّاہ کہا گیا ہے۔

یہ بھی ممکن ہے کہ بیرونا شوق اور محبت کی وجہ سے ہو۔ کیونکہ اللہ تعالیٰ کاعشق، شوق، وصال اور وفو رتعلق آ ہے اللہ کے ہاں انتہائی درجہ میں تھا۔

وجداورخوف کی حالت: شراح کصح بین که آپ آلیکه پر وجداورخوف کی به حالت تب طاری ہوتی تھی۔ ورنه تھی۔ جب مناجات کے موقع پر آپ آلیکه پر صفات جلال کے ساتھ صفات جمال کی تحلّی ہوتی تھی۔ ورنه صرف صفات جلال کی برداشت تو کسی کے بس کی بات ہی نہیں۔اور صرف صفات جمال کی تحلّی کے موقع پر آپ آپ آلیکه پر سروروانبساط اور نورانیت کا انتہائی پر شش مظاہرہ ہونے لگتا تھا۔اوراس وجہ سے اہل سلوک خوف ورجااور جمال وجلال کے بین بین چلنے کی ترغیب دیا کرتے ہیں۔

#### تعملانس.

(۱) اس لَحَرَسُول اللهُ واللهُ عليه وسلم تارة رحمة للامت وتارة خوفاً على أمّته وتارة من خشية الله وتارة عندسماع القرآن الخ (المناوى على هامش جمع الوسائل ١٣٣٢٢) (مختار)

(٢) جمع الوسائل ج٢ص١٢٣

(٣) صحيح بخارى ٢٥٩/٢ كتاب التفسير سورة النساء باب كيف اذا جئنابك على هولاء شهيداً، سنن ابى داؤد ٢٠٩ كتاب العلم باب فى قصص، سنن ابن ماجة ص ٩٠٩ كتاب الذهد باب الحزان البكاء ، السنن الكبرئ للبيهقى ١٨/ ٢٣١ (مختار)

اقر ءُ علیک و علیک انزل، یعن قرآن اترابی آپ پر ہے۔اب اس کاعلم ہم سے زیادہ آپ ہی کو ہے۔ تومیری قراُت آپ پر بے فائدہ،خلاف حکمت اور خلاف ادب معلوم ہوتی ہے۔

أحبّ ان أسمعه من غيرى (١)، كسى اورسے سننے ميں چونكه كچھ خاص فوائد ہيں۔اس كئے آ سيالله في اللہ ہيں۔اس كئے آ سيالله في اس كا تقاضا كيا۔

مثلاً اول یمی ہے کہ سنتے سنتے قرآن میں خوب تدبر اور معانی ومفاہیم پریکسو ہوکر سوچا جاسکتا ہے۔جوکہ خود قرآن پڑھنے کے وقت نہیں ہوسکتا۔ کیونکہ قاری الفاظ کی تھیجے اور اپنے حافظہ کی طرف توجہ میں مشغول ہوتا ہے۔

دوم ہیرکہ نبی اکرم اللہ کو جرئیل سے قرآن سننے کی عادت پر گئی تھی اور عادت طبعی طور پر مرغوب ہوتی ہے۔

سوم یہ کہ امت کو قرآن سننے سنانے کی اہمیت معلوم ہوجائے اور تنبیہ ہو کہ عرض القرآن لینی قرآن مجید کا دورایک سنت عمل ہے۔

(۱) اس روایت سے بیمسکلمستنظ ہوتا ہے کہ کی فاضل کامفضول سے استفادہ میں استنظارہ نیس کرنی چا ہے۔ اسلاف میں روایت الا کابوعین الاصاغو کی بہت ساری مثالیں ہیں۔ اس لئے علامہ پیجوریؓ نے کھا ہے فقد کان کثیراً من السلف یستفیدون من طلبتھم (المواهب الدنیة ۲۳۲)

> دوسرے نبیوں کی طرح نبی اکرم آفیہ بھی اپنی امت کے لئے گواہ ہو نگے۔ حضرت تھا نوی ؓ اس آیت کے خلاصۃ تفسیر میں فرماتے ہیں:

سواس وقت بھی کیا حال ہوگا جبکہ ہرامت میں سے ایک ایک گواہ کو حاضر کریں گے۔اور آپ کو ان لوگوں پر (جن کا آپ سے سابقہ ہوا ہے) گواہ ی دینے کے لئے حاضر فرما کیں گے (لیتی جن لوگوں نے خدائی احکام دنیا میں نہ مانے ہوں گے ) ان کے مقدمہ کی پیٹی کے وقت بطور سرکاری گواہ کے انبیاء علیم السلام کے بیانات سنے جا کیں گے۔ جو جو معاملات انبیاء کی موجود گی میں پیش آئے تھے۔سب ظاہر کردیں گے۔اس شہادت کے بعدان مخافین پر جرم ثابت ہوکر میز ادی جائے گی۔

(اگلی آیت میں اس حال کا ذکر ہے) چنا نچیفر مایا اس روز بیرحال ہوگا کہ جن لوگوں نے کفر کیا ہوگا۔اور رسول اللّٰهِ اللّٰهِ کی نافر مانی کی ہوگی۔وہ اس بات کی آرز وکریں گے کہ کاش ہم زمین کے پیوند ہوجا کیں۔اوروہ اللّٰہ تعالیٰ سے کسی بات کونہیں چھیا کیں گے۔

فرأیت عینی رسول الله عَلَیْ ، دوسری روایت میں ہے کہ آپ الله عَلیْ الله عَلیْ ، دوسری روایت میں ہے کہ آپ الله علی الله علی الله علی الله کا فی ہے (۱) دوسری طرف آپ رو رہے تھے۔(۱)

(۱) اس جملہ سے اس مسئلہ کا استباط ہوتا ہے کہ مسلحت کے تحت تلاوت کلام پاک بند کرنے کو کہا جا سکتا ہے۔علامہ ملاعلی قاریؒ نے ککھا ہے فید جو از امر السامع للقاری بقطع القرأة اذاعوض له امر (جمع الوسائل ۲۱۲۲) اس کے علاوہ چونکھ چین میں نہ کور ہے کہ آخضرت اللہ منبر پرتشریف فرما تھے۔ اس لئے علامہ مناویؒ اور ملاعلی قاریؒ نے فرمایا کہ اگرکوئی فض منبریا او فی جگہ پر بدیٹھا ہوتو وہ نیچ بیٹھنے والے کی تلاوت سُن سکتا ہے۔ شرعاً اس میں کوئی قباحت نہیں۔ (جمع الوسائل والمناوی علی حامش جمع الوسائل ۱۳۷۱) (جتار)

(۲)علامہ نوویؓ نے تکھاہے کہ تلاوت کلام پاک کے دوران رونامتحب ہے۔ بیعارفین کی علامت اور صالحین کی عادت ہے ( کتاب الاذکار ص ۹۰) (مختار)

### استماع قرآن سے رونے کے اساب: رونے کے متعدداساب بان کئے گئے ہیں۔

اس وقت آب استماع قرآن کی وجہ سے رونے لگے تصاور قرآن مجید سنتے وقت رونا الل الله کی شان بـ جيسارشادر تانى بكه اذاتسلى عليهم ايت الرحمٰن خروا سُجدًا وبُكيا. (جبان پررحن کی آیتیں پڑھی جاتی ہے تو وہ زمین پر سجدہ کرتے ہوئے اورروتے ہوئے گرجاتے ہیں) (مریم ۵۸) إنّ الذين اوتو العلم من قبله اذايتلى عليهم يخرون للاذقان سجداً ويقولون سجن ربنا ان كان وعدر بنالمفعولا ويخرون للاذقان يبكون ويزيدهم خشوعاً. (الأسراء ۷ + اتا ۹ + ا)

(بیشک جن او گوں کواس سے پہلے کتاب دی گئی ہے جب ان پر کتاب اللہ بردھی جاتی ہے۔ تو وہ مھوڑ یوں کے بل گرتے ہیں۔روتے ہوئے)

- (۲) ممکن ہے کہ آپ آلیہ کا رونامحشر کے حالات کے تصور اور شدا کد کے استحضار کی وجہ سے تھا۔ جن کاان آیات میں ذکر ہے۔
- دربار میں ہوگی۔دوسری طرف گواہی تمام امت پر ہے جن میں حاضر وغیر حاضر سب شامل ہیں۔

ایک مدیث میں آ ہے اللہ سے بہی مروی ہے کہ اے اللہ جولوگ میرے سامنے موجود نہیں ان پر کسے گواہی دول گا۔

(۴) بیاحثمال بھی ہے کہ گناہ گاروں کے حال پر شفقت کی وجہ سے آپروئے تھے کیونکہ آپ اللہ کی گواہی کی وجہ سے کچھلوگ جہنم میں بھی جائیں گے۔

اوربیرو ف اور دیم پینمبر کے لئے نا قابل برداشت ہے۔اگر چاللد کے علم کی وجہ سے آپ گواہی بھی ضرور دیں گے۔

تنبين نبي اكرم الله الرجيهاع قرآن كے وقت روئے تھے كيكن جلد ہى آپ الله نے ابن مسعود گو تلاوت سے روکا۔اس کی وجہ علماء نے بہلھی ہے کہ سماع کے قت وجداور انفعال کی کیفیت بھی بھی مقاصد میں آڑے آتی ہے۔ اس کئے آپ آلیہ نے امت کو پہلیم دی کے صبر اور برداشت اور وقار وسکون کا دامن الی حالت میں بھی نہ چھوٹے ۔ آپ کی بہی صفت اور یہی تعلیم ابو بکر صدیق نے قبول کی تھی۔ اور وفات نبوی کے موقعہ برنہا بیت متانت اور صبر واستقامت کے ساتھ آپ آلیہ نے امت کو سنجالا دیا۔ مگر عمر مرداشت نہ کر سکے۔ فراق حبیب کے صدمہ کی وجہ سے ان کا برا حال ہوگیا تھا۔

(٣) حدّثناقتيبة ثناجرير عن عطاء بن السائب عن أبيه عن عبدالله ابن عمرو قال انكسفت الشّمس يوماً على عهدرسول الله على الله

ترجمہ: عبداللہ بن عروبن العاص کہتے ہیں کہ نبی اکرم اللہ کے خرانہ میں ایک دن سورج گربن ہوا تو نبی اکرم اللہ (مسجد میں )نماز بڑھنے کے لئے چلے گئے اور

(۱) صلوة المروف كم كم بار ي بين علامه بنوري في المحتلف في حكمها فالجمهور على أنها سنة مؤكدة ذهب مشائخ الحنفية إلى وجوبهاونص به صاحب الأسرار وصرّح به أبوعوانة وعن مالك أنه أجراه ام جرى الجمعة وقيل فرض كفاية كذا في العمدة واستبعد الأخير (معارف السنن المح مهور ك نزد يك سنت مؤكده بعض ك نزد يك واجب، امام ما لك في جمد كي طرح فرمايا م جبكر بعض ك نزد كفرض كفلية عدر عثار)

(۲)سنن ابى داؤد ا / ۲۷ كتاب الصلوة باب من قال يركع ركعتين، مصنف ابن ابى شيبة ٢٩/١، صحيح ابن حزيمة رقم حديث ١٣٤٩، المستدرك للحاكم ٣٢٩/١ (مختار)

نمازیرٔ هناشروع کی \_اوراتنی دیرتک قیام کیا کیقریب تھا کیدکوع نہ کریں \_ پھر رکوع ، میں (اتنی دیر لگادی که ) قریب تھا کہ رکوع سے سرنہ اٹھا کیں۔پھرسراٹھا کر (اتنی دیر تک) کھڑے رہے کہ قریب تھا کہ مجدہ میں نہ جائیں۔ پھر مجدہ میں جا کر (اتنی دیر تک) پڑے رہے کہ قریب تھا کہ مجدے سے سرنہ اٹھا کیں۔ پھر سجدے سے سراٹھ کر (اتنی دہر تک) بیٹھے رہے کہ قریب تھا کہ دوس سے سجدے میں نہ جائیں۔ پھر دوس بے تجدے میں جاکر (اتنی دیرتک) پڑے رہے کہ قریب تھا کہ تجدے سے سرنہ اٹھائیں۔(پھراس طرح دوسری رکعت ادا کرنے کے بعد آخری سجدے میں ) زور زور سے سانس لیتے رہے اور رہر کہتے ہوئے روتے رہے کہا ہے میرے رب! کیاتم نے میر سے ساتھ بدوعد ونہیں کیا تھا کہ میری موجودگی میں آپ میری امت کوعذاب نہ دو گے۔اے میرے رب! کیا آپ نے میرے ساتھ بیدوعدہ نہیں کیا تھا کہ آپ ان کو عذاب نہ دو گے جب تک وہ استغفار کرتے رہیں گے اور ہم سب کے سب استغفار کرتے رہے۔ جب نی اکرم اللہ دور کعات نماز سے فارغ ہو گئے (تو سورج گر بن خم ہوکر) سورج روش ہو چا تھا۔اس کے بعد نی اکرم اللہ اللہ اللہ تعالی کی حمد و ثنا کے بعد فرمایا کہ سورج اور جا نداللہ تعالیٰ کی نشانیوں میں سے دونشانیاں ہیں جب ان (میں سے کسی ایک) برگر بن آئے تو اللہ تعالیٰ کی طرف (یناہ لینے کے لئے)متوجہ ہوجاما کرو۔

کسوف اور خسوف:

انکسف الشمس النح، کسفت الشمس اور انکسفت دونوں کا استعال کے بعد استعال کے بعد استعال کے بعد استعال درست ہے۔ فرّاء نے انکسف کے استعال کو غلط بتایا ہے۔ لیکن حدیث میں استعال کے بعد استعال کو نسا لفظ استعال کہنا غلط کہنا غلط معلوم ہوتا ہے۔ البتہ اس میں اختلاف ضرور پایا جاتا ہے کہ کسوف اور خسوف میں کونسا لفظ سورج گرئین کے لئے اور کونسا چا تدگرئین کے لئے استعال ہوتا ہے۔ ملاعلی قاری کی کہتے ہیں کہ لغت میں دونوں لفظ دونوں مفاجیم میں مستعمل ہوتے ہیں۔

علامہ ابن جر کہتے ہیں کہ فقہاء کے ہاں کسوف سورج اور خسوف چا نگر ہمن کے لئے استعال ہوتا ہے۔ جو ہریؓ نے اسے افتح اور بعض نے اسے متعین کہا ہے۔ قرآن مجید میں بھی خسف چا ند کے لئے استعال ہوا ہے (اللہ تعالی کا فرمان ہے فاذابر ق البصر و خسف القمر) اور یہی استعال سائنسی تحقیق سے زیادہ اقرب ہے۔ کیونکہ لغت میں خسف زمین میں دھننے کو کہتے ہیں۔ اور چا ندگر بمن کے وقت چا ند پر زمین کا سامیہ ہوتا ہے۔ جبکہ کسف چرے پرکسی چیز کے پڑنے کو کہتے ہیں۔ اور سورج گر بمن کے موقع پر سورج اور جارے درمیان چا ند حائل ہوجاتا ہے جوسورج کے چرے کو چھپا دیتا ہے۔ علامہ مناویؓ نے بھی استحقیق کو ذکر کہا ہے۔ اللہ مناویؓ نے بھی استحقیق کو ذکر کہا ہے۔ (ا)۔

ابراتیم کی وفات: علی عهدرسول الله علی ایره و دن تقاجب سیدناابراتیم بن رسول الله علی الله علی

#### (۱)مناوی چیاص ۱۳۹

 باب بكاء النبي مَلْنَظِيمُ

البته امام نووی اور ملاعلی قاری نے اس پرمحدثین کا اتفاق ذکر کیا ہے کہ صلوٰہ کسوف آپ اللہ نے نے صرف ایک بار مدینہ میں اداکی تھی میں حیجے ابن حبان میں روایت ہے کہ ہے میں خسوف قمر ہوا تھا۔اس میں بھی آپ اللہ نے اور دیگر صحابہ نے نماز خسوف پڑھی تھی اور اس کواسلام کا پہلا خسوف کہا گیا ہے۔

فلم یکن ان یسجد نم سجد، لینی طویل رکوع کے بعد طویل قومہ کیا اور سجدہ میں گئے۔ اس حدیث میں نفری کے اس حدیث میں نفری ہے کہ حدیث میں نفری ہے کہ صدیث میں نفری ہے کہ صلوٰ قو کسوف میں ایک رکوع ہے یا متعدد بعض روایات میں متعدد رکوعات ذکر ہے۔ اور اس کو تعدد واقع پر محمول نہیں کیا جا تا ہے۔ کیونکہ مکہ میں نماز کسوف اشتمس صرف ایک بار پڑھی جانے پرمحد ثین کا تقریباً انفاق ہے۔ ہم پہلے ذکر کر چکے ہیں۔

کسوف وخسوف کی حکمتیں: اللہ تبارک و تعالی سورج چا ندستاروں کوایک نظام الاوقات کے تحت جاری رکھے ہوئے ہیں۔ان میں ہمارے لئے عظیم فوائد رکھے ہیں۔لیکن بھی گرہن کی وجہ سے عارضی طور پرسورج کی روشنی اور بھی چاند کی روشنی سے محروم کردیتے ہیں۔ اس معروضی حالت میں حکمت بندوں کو تنبیہ ہے کہ اللہ تعالی اس حالت کو ستر کرنے پرقادر ہیں۔اورا گران میں سے کسی بھی جرم کی روشنی پر مستقل پابندی لگ جائے تو یہ انسان کے لئے عظیم خمارے کا باعث ہے۔جیسا کہ طبیعات کے ماہرین کا اس پراتفاق ہے۔ چنانچ سورج گربن ایک عبرتناک تازیانہ ہے۔آگے حدیث میں بھی اسے" آیہ "کہ کہ مستعلی گئی ہے۔

اب اگرگردش کے اصول اور طبعی اسباب گرہن کا سبب بن جائیں تو بھی اس کے علامت ہونے میں کوئی استبعاد نہیں۔ اور پھر بھی ان اجرام میں گرہن ایک عبر تناک نشانی ہے۔ کیونکہ اصل متصرف سے اغماض اور ماورائے اسباب علمة کی تا جیر سے صرف نظر نامناسب بلکہ ناممکن ہے۔ جیسے رات دن کی تبدیلی میں اللہ تعالی نے صراحناً فرمایا ہے کہ یہ قدرت الہیکی نشانات ہیں۔

صلوٰ ق کسوف وخسوف اورفقهاء کے آراء: پھر کسوف وخسوف کے موقعہ پر کیا کرنا چاہئے۔ ہمارے نزدیک اگر نماز جعہ کے شرائط موجود ہوں تو امام کے لئے دورکعات نماز باجماعت پڑھناسنت

مؤ کدہ ہے۔اوراگر جمعہ کے شرائط موجود نہ ہوں تو لوگ انفرادی طور پر دور کعات نماز پڑھیں۔البتہ یہ نماز عام نماز کی طرح ہوگ۔ یہی مذہب ابراہیم نخعیؓ،سفیان عام نماز کی طرح ہوگ۔ یہی مذہب ابراہیم نخعیؓ،سفیان توریؓ،ابن الی لیکؓ،ابن زبیر ؓ اور ابن عباسؓ سے بھی مروی ہے۔

لیکن ائمہ ثلاثہ کے نزدیک ہررکعت میں دو دورکوع اور دو دو مجدے ہوں گے۔ بلکہ امام احمد ؓ کے نزدیک ہررکعت میں تین تین رکوع کرنا بھی جائز ہے۔

اس کی رکوع کی تعداداور کیفیت میں وار دروایات: صلوق کسوف میں رکوع کی تعداد اور کیفیت میں واردروایات یا خ فتم ہیں۔

- (۱) امام ترفدی نے عبداللہ بن عمرو بن العاص سے ایک روایت نقل کی ہے جس میں ایک رکوع ہر رکعت میں ایک رکوع ہر رکعت میں فرکور ہے۔ اس طرح امام احمد کے ہاں محمود بن بسید کی حدیث میں بھی ہر رکعت میں ایک رکوع فر کر ہے۔ امام ابودا کو اورامام نسائی نے سمرہ بن جندب سے بھی یہی کیفیت روایت کی ہے۔ نیز دونوں نے قبیصہ بن مخارق ہلائی سے روایت کیا ہے۔ جس کے الفاظ یہ بین 'فصلوا کا حد صلوا قصلیت موھا من اللہ عن مخارق ہلائی سے روایت کیا ہے۔ جس کے الفاظ یہ بین 'فصلوا کا حد صلوا قصلیت میں ایک المسکتو بن "عبداللہ بن مسعود ہمنے میں شعبہ ابو یکر عبداللہ بن عمر اور نعمان بن بشر بھی ہر رکعت میں ایک رکوع روایت کرتے ہیں۔
  - (۲) بخاری اورمسلم میں حضرت اساء وغیرہ سے دودورکوع مررکعت میں مروی ہیں۔
    - (٣) مسلم اورابوداؤد کی بعض روایات میں تین تین رکوع مررکعت میں ذکر ہیں۔
      - (۴) چارچاررکوع بررکعت میں ابوداؤداورمسلم کی روایات میں مذکور ہیں۔
    - (۵) پانچ پانچ رکوع فی رکعت بھی ابوداؤد کی ایک روایت سے معلوم ہوتی ہے۔

اور تق بیہ ہے کہ بیتمام روایات ایک ہی موقع کے متعلق مروی ہیں۔ کیونکہ تمام واقعات میں سیدنا ابراہیم کی وفات کے دن سورج گر بن کاذکر ہے۔

جههور کےنز دیک دورکوع فسی دیکھت والی احادیث قوی اور معمول بہا ہیں۔ان کے علاوہ دیگر روایات کو وہ ضعف کی وجہ سے معلول اور غیر معمول بہ قرار دیتے ہیں۔ احناف كے دلائل: جبكه احناف بوجوه ايك ركوع والى احادیث كومعمول بها قرار دیتے ہیں۔ اس لئے كه

- (۱) اولاً تو جاری احادیث آثار صحابہ سے مؤید ہیں۔ چنا نچہ امام بخاریؓ نے عبداللہ بن زبیر گا اثر ذکر کیا ہے۔ جبکہ طبرانی اور مسند احمد وغیرہ میں حضرت عثان بن عفان گا اثر فدکور ہے۔ اور دونوں حضرات توحد رکوع کے قائل ہیں۔
- (۲) پھر جب تفر دِرکوع اور تعد دِرکوع کے بارے میں روایات مختلف تتم کے وارد ہیں تو صلو قا کسوف کود گیرمعتا دنماز وں برقیاس کرنا ہی افضل اوراچھا لگتا ہے۔
- (۳) علاوہ ازیں جب دو سے زیادہ رکوع والی روایات بھی موجود ہیں قو صرف دور کوع والی احادیث کو لیا اور باقی کو چھوڑنا ایک خاص عذر کا تقاضا کرتا ہے جو تمہارے پاس نہیں ہے۔ اور اگر ہے تو وہی عذر ہمارے لئے بھی دور کوع والی احادیث کے چھوڑنے ہیں دلیل ہوگی۔
  - (۴) نیز جاری احادیث قولی میں جوفعلی پرراج ہیں۔
- (۵) علاوہ ازیں متعدد رکوع والی روایات مستورات یا صغار صحابہ سے مروی ہیں جبکہ کبار صحابہ تو حد رکوع روایت کرتے ہیں۔ اور ظاہر ہے کہ مستورات اور صغائر پراشتباہ زیادہ ممکن ہے۔ کیونکہ وہ آخری صفوں میں کھڑے ہوکر نماز پڑھتے ہیں۔
- (۲) بعض احناف نے ان روایات کوجمع کرنے کی کوشش کی ہے۔ چنا نچی مبسوط اور بدائع میں بید کہا گیا ہے کہ دراصل نبی اکرم اللہ نے نے طویل رکوع کیا تھا۔ جیسا کہ زیر نظر شاکل تر فدی کی حدیث میں صراحة فدکور ہے۔ توا گلی صف کے پچھ لوگوں کوشبہ ہوا کہ شاید نبی کریم اللہ تھا چھے ہیں۔ البذا انہوں نے سراٹھا کردیکھا۔ پچھلی صف والوں نے اگلی صف کی اتباع میں رکوع سے سراٹھایا۔ پھراگلی صف والے نبی اکرم اللہ کی صف والوں نے سمجھا کہ شاید دوبارہ نبی کریم اللہ کوع کے اور پھیلے صف والوں نے سمجھا کہ شاید دوبارہ نبی کریم اللہ کے کہ دوبارہ البی نوبت آئی ہو میں چھلے صف والوں نے سمجھا کہ دوبارہ البی نوبت آئی ہو اور پچھلے صف والوں نے اسے تکرار پرمحمول کر کے تیسرارکوع سمجھا ہو۔ اور بہی رکوع کی تعدد کی روایت کا اور پچھلے صف والوں نے اسے تکرار پرمحمول کر کے تیسرارکوع سمجھا ہو۔ اور بہی رکوع کی تعدد کی روایت کا

منشأ بنا\_

- (2) کی محادثاف کہتے ہیں کہ نبی اکرم اللہ نے جب طویل رکوع کیا تو صف اول سے تعیر کراررکوع کی صورت میں صحابی نے کی ہو۔ جیسے زید بن خالد جن گی صدیث میں آتا ہے کہ فسصل کی حدیث میں تا ہے کہ فسصل کی حدیث حدیث میں تا ہے کہ فسصل کے خفیہ فتین ٹم صلّی رکھتین طویلتین طویلتین طویلتین ۔ تواس سے مراد طول ہے کرار نہیں ہے۔ یہاں بھی صرف طول سے تعیر کراررکوع کی صورت میں کی گئے ہے۔
- (۸) جبکہ بعض کہتے ہیں کہ دوسری رکوع نمازی رکوع نہیں تھی۔ بلکہ بعض آیات غریبہ کے مشاہدہ کی وجہ سے تھی۔ جیسے کہ بعض روایات میں آیا ہے کہ اس نماز میں آپ آتھا۔ تو ہوں۔ اس طرح روایا گیا تھا۔ تو ہوسکتا ہے کہ آیات کے مشاہدہ کے بعد آپ آتھا۔ تو اضعاً دوبارہ رکوع میں گئے ہوں۔ اس طرح بیر تعدد نی آتھا۔ کی خصوصیت بھی ہو سکتی ہے۔ دیگر لوگوں کا بیر تحمٰنہیں ہوگا۔

فخ اور بكاء: شمّ دفع دأسه فلم يكدان يسجد، لينى دونو المجدول كدرميان مين بحى بهت طويل جلسه كيارتى كرميان طويل جلسه مرف اسى طويل جلسه كيارتى كرميان طويل جلسه مرف اسى الكي حديث مين مروى ب- اورجهورائمة كنزديك بيطوالت غير مختار ب- امام غزال كمت بين كداس پر آئمة كا تقال ب-

فجعل ینفخ ویبکی، اس شرجمۃ الباب سے مطابقت ہے۔ لیخی آپ آلی اللہ ہے میں اس شرجمۃ الباب سے مطابقت ہے۔ لیک روایت ش ہے کہ شم نفخ فی پڑے پڑے ہوئی کے ماتھ مانس لیخ سے اور روتے رہتے تھے۔ ایک روایت ش ہے کہ شم نفخ فی آخر سجو دہ فقال اف اف الغ (۱)۔ اس پر ایک اشکال ہے کہ ایبا ہوش کے ماتھ مانس لیناجس سے روف پیدا ہوں مفسط وہ ہے۔ تو آپ آپ آلی ہے کسی صادر ہوسکتی ہیں۔ لیکن اس کا جواب یہ ہے کہ یہاں ایسی پھوٹھی مرادنہیں ہے جس سے آوازیا حروف پیدا ہوں بلکہ بیصرف ان سانسوں سے تعمیر ہے۔ جوزور سے نکل رہی تھیں۔ ان کواگر نفخ کہا گیا ہے تو وہ بھی صرف دکایۃ کہا گیا ہے۔ اوراگراف اف کہا گیا تو سجودہ فقال اف اف ٹم قال رب الم تعدنی الغ (ابو داؤد ج اص ۱۷ ا)

وہ بھی صرف تعبیر کی ضرورت کی وجہ سے۔ جیسے عرب لوگ کو سے کی آواز سے عاق کہہ کرتعبیر کرتے ہیں۔ حالانکہ وہاں کوئی عین الف یا قاف کا حرف ادانہیں ہوتا۔

نزول مصائب بين استنفاروانا بت: ربّ الم تعدنى ان لا تعذبهم وانافيهم الخ، يه اس قرآنى وعده كاذكر بي جس كوانفال كى اس آيت بين ذكركيا كيا بهد "وماكان الله ليعذبهم وانت فيهم وماكان الله معذبهم وهم يستغفرون (انفال ٣٢)

لیخی الله تعالی ان کوآپ کی موجودگی میں اور استغفار کرتے ہوئے عذاب نہیں دےگا۔

پھرفر مایا که 'ونسسن نسسنف وک ''لینی اس وقت تو میری موجودگی میں میری امت اور میں سب استغفار کرتے رہتے ہیں۔ لہذااس کا نقاضہ یہ ہے کہ میں عذاب سے محفوظ فرما۔

چونکہ خسوف کسوف کبھی بھی عذاب کی علامت ہوتی ہے اور بھی بھی عذاب کی عموم کا خطرہ ہوتا ہے۔ اس لئے آپ آلیٹ نے نقرع سے دعا کی۔ نیز اس دعا میں امت کوایک تعلیم بھی مقصودتھی کہ مصائب کے نزول کے وقت انابت اور رجوع الی اللہ ضروری ہے۔ پھراگر چہ یہاں موجودہ صورت میں رفع عذاب موجود تھا۔ لیکن ہروعدہ کچھ شرا لکا سے مشروط اور بعض قبود کے ساتھ مقید ہوتا ہے۔ اس لئے پھر بھی نزول عذاب یا عموم عذاب کا خطرہ تھا۔ اس وجہ سے دعا کی ضرورت تھی۔ جوآ ہے آلیٹ نے فرمادی۔

او بام جا بلیت کی تر دید کے لئے خطبہ: فق ام فحہ مدال لله، یعنی نماز اور گربن کے خاتے کے بعد آپ الله منبر پر وعظ فرمانے کے لئے کھڑے ہو گئے۔ اور جہالت کے اوبام کے ابطال کے لئے ارشاد فرمایا کہ ان الشہ مس والقمر آیان من آیات الله المخ، جا بلیت کے اوبام میں سے ایک وہم تو یہ تا کہ ان الشہ مس والقمر آیان من آیات الله المخ، جا بلیت کے اوبام میں سے ایک وہم تو یہ تا کہ سورج یا چا ندگر بن صرف اس روز ہوتے ہیں جب کوئی عظیم ستی پیدا ہوئی ہویا وفات ہونے والی ہو۔ دوسری طرف کو اکب پرسی کے زیر اثر علم نجوم والوں کا کہنا تھا کہ سورج، چا ند اور دیگر اجرام ساوی میں تغیرات زمین میں واقعات وحوادث کے لئے حقیقی عاتیں ہیں۔

چونکہ اتفاق ایسا پیش آیا کہ جس روز فرکورہ سورج گربن ہواتھا اسی روز حضورا قدس میں کے کے چونکہ اتفاق ایسا ہواتھا جو کہ جاہلیت کے ان غلط اوہام کے لئے ایک مؤید اور مزید گراہ

خطرے کوتاڑ دیا۔ لہذا فوراً اس کے ازالے کے لئے کھڑے ہوگئے۔اورلوگوں کو تنبیہ فرمائی کہ دیکھوسورج چا نداللہ تعالیٰ کی قدرت کاملہ اورتضرف نافذہ کی علامتیں ہیں۔ان کا گر بن اس بات کی عظیم دلیل ہے کہ جو کچھ عالم میں ہوتا رہتا ہے وہ خدائے ذوالجلال کے ارادے سے ہور ماہے۔ کبھی تو ان اجرام ساوی سے روشنی بکھیرنے کا کام لے رہاہے اور بھی ان کے عجز ومجبوری کامعائنہ کروانے کے لئے ان کی روشنی چھین لیتا ہے۔ تو جب اسباب تنوّ رہے لیس بیا جرام مجبور ومقہور ہیں تو ان سے نفع وضرر کی امیدیں با ندھنااور حوادث ارضی میںان کو دخیل سمجھنا حماقت کے سوا پچھنیں۔

262

اس مضمون کی تائیداس حدیث سے ہوتی ہے جس میں آیا ہے

انّ الشمس والقمر لاينكسفان لموت احدو لالحياته ولكنها آيتان من آيات الله وان الله اذاتجلي لشئ من خلقه خشع له (جمع الوسائل ج٢ ص١٠)

سورج یا جا ندگر بن کسی کی موت یا ولا دت سے نہیں ہوتا۔ بلکہ بیاللہ کی قدرت کا ملہ کی نشانیاں ہیں۔اور جب اللہ تعالی اپنی مخلوق میں سے کسی چیز برخیلی فرماتے ہیں تو وہ عاجزی اختیار کرلیتی ہے۔

اس صدیث میں مینضری ہے کہان دونوں کا گرئن اللہ تعالیٰ کے لئے عاجزی اورخشوع کا سبب ہے اوراس کا رازیبی ہے کہ جب رب ذوالجلال اپنی صفت جلال کی تحلّی فرماتے ہیں تو عالم کا جمال حسی جو نور کی شکل میں ہے عظمت البی اور ہیت کے مارے دب جاتا ہے۔اس حکمت کا ادراک کر کے حضرت طائسؓ نے جب سورج گربن دیکھاتوروتے روتے فرمایا''ھی اخبوٹ لِللّٰہ منّا ''لینی سورج ہم سے زیاده خداسے ڈرر ہاہے۔

یا پھر کلام نبوی آلیہ کا مطلب ہیہ ہے کہ سورج گر بن اور جا ندگر بن کے بارے میں اہل جاہلیت کے خیالات باطل ہیں اوران کے ساتھ خوف ورجا کا تعلق فاسد خیال ہے۔

إنَّماهذه الآيات يخوف الله بها فاذاكسفافافزعوا الى الصلواة (١)

ان نشانیوں سے اللہ تعالی اپنے بندوں کوڈراتے ہیں۔ لہذا ان کا گر بن ہوجائے تو نماز پڑھا کرو۔

بخارى شريف يس م "ولكن يخوف الله بها عباده فاذار أيتم شيئا من ذالك فافزعوا الى ذكر الله و دعاء ه و استغفار ه (٢)

بلكه انهول نے تخویف عباد كے عنوان سے ترجمۃ الباب قائم كيا ہے ( بخاري ج اص ١٣٥ )

نسائی کی ایک روایت میں ہے کہ "فیاذا رأیت مو هیاف صلوا و تذکووا النحوف' زیر نظر صدیث میں نبی اکرم ایک کا تضرع اوراستغفار بھی لحوق خوف کی واضح دلیل ہے۔

لہذا یا بھی کہا جاسکتا ہے کہ علامت سے مرادعلامت عذاب اور قبرا البی ہے۔

کسوف کے وقت خطبہ مسنون ہے یا نہیں:

اس حدیث میں فدکور ہے کہ نبی اکرم ایک نے نماز

کسوف کے بعدامت کو پھے ارشادات فرمائے۔ دیگر احادیث بھی اس پرشاہد ہیں کہ آپ آلیک نے اس روز
وعظ فرمایا تھا۔ اس وجہ سے شوافع کے ہاں نماز کسوف میں خطبہ مستحب عمل ہے۔ جبکہ احزاف، امام مالک اور
امام احمد رحمہم اللہ کے نزدیک صلوق کسوف میں خطبہ نہیں ہے۔ بلکہ نماز کے بعداس وقت تک ذکر دعا اور
استغفار کرنامسنون ہے جب تک سورج گرئمن ختم نہ ہو۔ صاحب ہدایہ اور علامہ مصلفی نے اس کی تصریح

<sup>(</sup>١)ابوداؤدج ١ ص٥٦١

<sup>(</sup>۲)بخاری شریف ج ا ص ۲۵ ا

کی ہے۔ کیکن علامہ شامی ؓ نے خلاصہ اور قاضی خان کے حوالہ سے نماز کسوف کے بعد خطبہ برا تفاق کا قول بھی نقل کیا ہے۔ کما فی فتح الملهم ج۲ ص ۳۵۳

264

ملاعلی قاری نے حدیث میں خطبہ کے ذکر سے جواب یوں دیا ہے۔ کہ دیکھونی اکرم اللہ نے کسوف کے دوران مسنون اعمال کا تفصیل سے حکم دیا ہے جن میں نماز ہے،صدقہ ہے،اعماق ہے، ذکر ہے، دعاہے، استغفار ہے۔ لیکن کسی بھی حدیث میں خطبہ کا حکم نہیں دیا ہے۔ جہاں تک کہ آپ اللہ کے خطبہ کاتعلق ہے۔ تو وہ کسوف کے لئے نہیں تھا بلکہ اس سے پیدا ہونے والے اوہام کے ابطال کی کوشش تھی۔ اس لئے اسے نماز کسوف کا حصہ نہیں بنا نا جا ہے۔

كائنات كطبعي اصول وضوالط قدرت الهي كے منافی نہيں: يہاں بہ شبہ ہوسكتا ہے كہ سورج یا جا ندگر ہن کے لئے توطیعی اسباب موجود ہیں۔ دونوں کی گر دش سے پیدا ہونے والی مخصوص حالت کی وجہ سے بیرخوادث رونما ہوتے رہتے ہیں۔اورعلم ہیئت والوں نے بعض اصول وضوابط کی بنیاد براس کاطبعی ہونا ثابت كرديا ہے۔البذا ان كوتا زيانة الهي كہنا يا علامات ونشانياں كہنا درست نه ہوگا۔ليكن بيشبہ انتہائي بے جا ہے۔ کیونکہ کسی حادثے کا کسی سبب کے تحت ہونا اور طبعی ضوابط سے مقید ہونا نہ تو قدرت الہی کے کمال پر دلالت کے منافی ہے نہ تخویف اور تعبیہ سے ۔قرآن مجید نے ساوی اور ارضی مخلوقات، اجرام کا طلوع وغروب ان میں تغیرات اورالہی تصرفات کو بار ہابطوراستدلال اور بطور عبرت پیش کیا ہے۔اور حقیقت یہی ہے کہ اہل طبیعات اگر ظاہر برستی کی مرض سے جانبر ہوجا ئیں تو

برگ درختان سبز درنظر ہوشیار ہرورتے دفتریت زمعرفت کردگار

ایک عارف بالله ان حوادث روز گارکودوسری نظر سے دیکھر ماہے۔ جن کوطبعیات کا عالم محض ایک عادی اور ماتحت الاسپاب تغیرات سمجھ ر ماہے۔

الله جل جلالہ نے ان آیات کواولی الابصار کے لئے آیات ٹہرایا ہے۔ بصیرت سے محروم عقل کے اندھوں کے لئے نہیں۔

السائب عن عكومة عن ابن عباس قال أخذ رسول الله عليه إبنة له تقضى فاحتضنها فوضعها بين يديه فماتت وهي بين يديه وصاحت أم أيسمن فقال يعنى النّبي عَلَيْهِ أَتبكين عند رسول الله عليه فقالت الست اراك تبكى قال اني لست ابكى انما هي رحمة إنّ المؤمن بكل خير على كل حالٍ إنّ نفسه تنزع من بين جنبيه وهو يحمد الله تعالى (١). على كل حالٍ إنّ نفسه تنزع من بين جنبيه وهو يحمد الله تعالى (١). ترجمه: حضرت عبدالله بن عباس فرمات بي كه ني اكرم الله على ابني قريب الوفات بي كو وو ش ليا وهر الله الله على وفات بولى وفات بولى وفات مولى وحموراقد سائلة كي باعمى) ام ايمن روق بوئي چلائى - ني اكرم الله في فوات بولى وفات بولى وفات بولى وفات بولى وفات بولى المول خدا كه بوت بويتم چلاتى موده بولى كه يارسول الله على خفر مايا كيارسول خدا كه بوت بويتم چلاتى بوده بولى كه يارسول الله على خرمايا كيارسول خدا كه بوت بويت مؤلى الله على (وتا بواد يكمتي بول - آپ الله في مؤلى مؤمن بول من غيرى عين روتا و بي كال كي درميان سي مرحال عن غيرى عين روة اله كي كراس كي روت اس كي پيلوول كورميان سي مرحال عن غيرى عين روة الله كي حداد اكرتار بتا ہے -

حضورا قد س الله ابنة له،

اس لرك س كون مراد ہے۔ چونكه نبى اكرم الله ابنة له،

اس لرك س كون مراد ہے۔ چونكه نبى اكرم الله كى تمام بیٹیاں برى ہوكروفات پائى ہیں۔ اس لئے ان كا هيئة بیٹى ہونا بھى بعید ہے۔ اور اگر بجازا كى بیٹى كى بیٹى مراد ہوتو وہ اگر چداخة تو محتمل ہے۔ گرتاریخی لحاظ سے یہ بھی محل نظر ہے كيونكه آپ آلي كى ذركى ہیں آپ آلی كی نواس كا انقال ثابت نہیں۔ اگر چہ منداجم كى ایک روایت میں ہے كہ آپ آلی کے پاس امامہ بنت ابی العاص جوزین کى بیٹی تھیں۔ نزع كى حالت میں لائى گئی۔ گردوسرى روایات میں فہ كور ہے كہ امامہ بنت زین التو حضرت علی عقد میں آئی تھیں۔ لہذاوہ تو نبى اگرم آلیہ كى وفات كے بعد بھى زئدہ تھیں۔

(۱) مجمع الزوائد ۱۸/۳ مصنف ابن ابی شیبه ۳۹۳/۳ مسنداحمد ۱۸۲۱ مصیح ابن حبان را مجمع الزوائد ۲۲۸ مصنف ابن ابی شیبه ۳۹۳/۳ مسنداحمد ا ۲۲۸ مصنف ابن حبان را مجمع الزوائد ۲۲۸ مصنف ابن ابن ابن میبان ابن ابن حبان

اس کے تین جوابات منقول ہیں۔

اول بیکہ یہاں پراس امامٹا واقعہ فدکور ہو مگروہ مری نہیں تھی۔اور نبی آلیکی کی دعا ؤں کی وجہ سے پھر جانبر ہو گئیں۔زین نظر حدیث میں وفات سے قرب وفات مراد ہے۔اور حضرت ام ایمن کارونااس کئے تھا کہوہ تھی کہوفات یا چکی ہیں۔

دوسرا جواب بید میا گیاہے کہ یہاں پر دراصل ابنہ کا لفظ تھا۔ کسی رادی کے وہم کی وجہ سے اسے ابنہ بنادیا گیا ہو۔ اور نبی اکر میں لیے کے فرزندان کی زندگی میں کم سنی کی حالت میں وفات یائے تھے۔

تیسراجواب بعض حضرات نے بیدیا ہے کہ دراصل یہال' ابن ابنیہ ''تھا۔ کسی راوی کووہم ہوا اوراسے ابنیہ ''تھا۔ کسی راوی کووہم ہوا اوراسے ابنیہ بنادیا گیا ہے۔ لینی نبی اکرم آلیہ کا کوئی نواسا وفات ہونے والا تھا اور آپ آلیہ اس کی وجہ سے روئے تھے۔ اور یہ بات بھی تاریخ کے کھاظ سے درست ہے کیونکہ بعض روایات کے مطابق عبداللہ بن عثمان جو حضرت رقیہ کے فرزند تھ صغرتی میں آپ آلیہ کے سامنے وفات پائے تھے۔ اور آپ آلیہ ترتما روئے تھے۔ نیز مند بزار میں مروی ہے کہ حضرت فاطمہ کے بیٹے حضرت محس صغرتی میں وفات پائے تھے۔ اور حضرت فاطمہ نے آپ کو بھی وفات کے وقت بلایا تھا۔

تقضى: قضى يقضى سواحدمون فك اصيغه ب- جوموت كمعنى مين مستعمل ب البذا تقضى كمعنى بين سموت كمعنى مين مستعمل ب البذا تقضى كمعنى بين تسموت ليخن وفات بالموت يعنى وفات بالموت يعنى وفات بين مستعمل ب كونكه موصوفه كى وفات بين بهوئي مقى حبكه بكه الشراف على الموت يعنى قريب موت مين مستعمل ب كونكه موصوفه كى وفات بين بهوئي مقى حبكه بعض حضرات كاخيال ب كه قصصى كااصل معنى انسقطاع شبى اورانتهاء ب بهال معنى بيهوكا كرخم بوندوالي تقى -

ف احتضنها ، احتفان سے ہے۔ جوبغل میں لینے کو کہتے ہیں۔ یعنی آ پھالی نے اسے پہلومیں لیا۔ لیکن مجازاً گود میں لینے کے لئے مستعمل ہے۔ کیونکہ حضن پہلوکی جانب سینے کے زیرین حصے کو کہتے ہیں (۱)۔

(١)الحضن هوالصدرممّا دون الابط الى الكشح ومن كل شئ ناحيته وجانبه (المعجم الوسيط)

نمائی کی روایت میں ہوضمقا الیٰ صدره

أمّ ايمنَّ: فصاحت أمّ ايمن، لينى جب بينى كى وفات بوئى \_ تواما يمن چيخ ماركرروئيں \_ ام ايمن چيخ ماركرروئيں \_ ام ايمن فيخ ماركرروئيں \_ ام ايمن فيخ اور كروئيں ـ ام ايمن في اور كروئيں ـ اس الم المن في المرسون في المسلم في المرسون في المرسون في المسلم في ا

آم ایمن اور حضور اقد سی الله کے رونے میں فرق: الست اداک تبکی، کیا میں آپ کو روتا ہوا نہیں دیکھتی؟ ام ایمن کے خیال میں رونے کی تمام صور تیں کیساں تھیں۔ اس لئے آپ الله کے آنسو بہنے اور اپنی چیخوں کے درمیان فرق نہ کرسکیں۔

انسی لست ابکی ، مین نہیں روتا۔ آپ اللہ کے کلام کے دومعنی ذکر کئے گئے ہیں۔ اول بیکہ تیری طرح ناجائز اور ممنوع رونا نہیں روتا۔ بلکہ میرا رونا صبر ورضا کے ساتھ ہے۔ جبکہ تیری چیخوں میں جزع اور بے صبری ہے۔ دوم یہ کہ تیرا رونا اختیاری فعل ہے جبکہ میرارونا بے اختیار اور جوش رحمت سے مغلوبیت کی بناء پر ہے۔ اس لئے میں اپنے اختیار سے نہیں روتا اور تم اپنے اختیار سے روتی ہو۔

انسما هی د حمة، "هی" کاخمیر بکاء کورا جع ہے۔ جومصدر ہے اور مصادر نذکر ومؤنث دونوں طرح مستعمل ہوتے ہیں۔ یا پھر بیخمیر خبر کی رعایت کی وجہ سے مؤنث لایا گیا ہے۔ جومؤنث ہے یہ بھی محمل ہے۔ بیقطرة اور دمعة کورا جع ہو۔ بہر حال اس حدیث میں نبی اکر میں بھی کا رونا نذکور ہے۔ اور اس میں ترجمۃ الباب کے ساتھ موافقت ہے۔

لیکن اس پراشکال ہے کہ حضرت عائش سے مردی ہے کہ ماہ کی رسول الله علی میت إنما غایة حُزنه ان یمسک لحیته فی اکرم الله علی میت پڑئیں روئے۔ آپ الله علی میں زیادہ سے زیادہ داڑھی کو پکڑ لیتے تھے۔

اس کا جواب بیرے کہ حضرت عا نشر کی حدیث کا مطلب بیر ہے کہ آ ہے ایک کھی ہی تا سف اور جزع کارونانہیں روئے ۔حزن ورحمت کے آنسو کی نفی مقصور نہیں ۔جومتعد دروایات سے ثابت ہیں۔

268

انّ نفسه تنزع من بين جنبيه وهو يحمدالله،اسكامطلب، بي بكمومن ك ليّ اليا ہونا جا ہے کہروح نکلتے ہوئے بھی رضائے الی اور شغل بالحق میں محومو۔اور اللہ کی حمد وثنا میں مستخرق ہو۔ موت کوبھی محبوب کی طرف سے تحق سمجھ کر خندہ روئی سے قبول کر لے۔

> (۵) حــ تثنامحمّدبن بشّار ثنا عبدالرحمٰن بن مهدى ثنا سفيان عن عاصم بن عبيدالله عن القاسم بن محمّد عن عائشة أنّ رسول الله عُلْكُ عُلْكُ قبل عشمان بن مظعون وهوميت وهو يبكى اوقال وعيناه تهرقان(١).

> ترجمه: حضرت عائش سے روایت ہے کہ نبی اکر میالیہ نے عثمان بن مظعون کواس وقت بوسه دیا جب وه وفات یا یکے تھے۔اس حالت میں کہ آپ فائلی رور ہے تھے۔یا راوی نے بیرکہا کہ آپ اللہ کے آنسوئیک رہے تھے۔

حضرت عثمان بن مظعون أ: قبل عشمان بن مظعون من محضرت عثمان بن مظعون القدر صحالي ہیں۔ نبی اکر میں کے رضاعی بھائی بھی ہیں۔ابتدائے اسلام کے زمانہ میں صرف تیرہ مسلمانوں کے بعد مسلمان ہوئے۔زمانہ جاہلیت میں بھی بھی شراب کومنہ نہیں لگایا۔اسلام کے بعدسب سے پہلے حبشہ اور پھر مدینه منوره ہجرت کی (۲)۔اور پہیں شعبان ۲ھ میں ان کا انتقال ہوا۔ مدینہ میں مہاجرین میں سب سے (۱)سنن ابي داؤد ۹۵/۲۶ كتاب الجنائز باب في تقبيل الميت، جامع الترمذي ۱۸/۱ كتاب الجنائز باب ماجاء في تقبيل الميت، سنن ابن ماجة ص ٥٠١ كتاب الجنائز باب ماجاء في تقبيل الميت ، السنن الكبوئ للبيهقي ٢/١٠ مرامختار)

والسي يريمار موسة اور البيركووفات يا كئے جبآب كاجنازه اللهايا كيا تورسول التُعلِينة في ماياطوب لك يا عشمان لم تلبسك الدنيا ولم تلبسها (جمع الوسائل ١٥٣/٢) اعتان تيرے لئے بثارت كرن و في ا يني اورنه د نيانچھے پين سکی \_(مختار) پہلے انقال آپ کا ہوا تھا۔حضوراقدس السلف کو بہت عزیز تھے۔ان کے وفات کے بعد ان کا بوسہ لیا اور روئے۔ نیز آ یے اللہ نے فرمایانعم السلف هولنا

ھویدکی، آپ اللہ بہت روئے بہاں تک کروایات کے مطابق آپ اللہ کے آنسو حضرت عثمان کے چیرے پہی شکینے لگے(۱)۔

افظ اراق اوراهراق کی تحقیق:

اول یہ کہ دراصل اہراق ارق ہی تھا۔ لیکن اداق میں تعلیلات کی کشرت کی وجہ سے بنائے کلم ضعیف ہوگئ تھی۔ کیونکہ اداق ادوق یا دیست سے بنائے ہے۔ جس میں پہلے حرف علت کو الف سے بدل دیا گیا۔ کلمہ کے وہن کو دور کرنے کے لئے ایک ہاء کو زائد لایا گیا۔ لہذا اہراق بن گیا۔ پھر اس زیادت کو پورے باب کا حقہ بنا دیا گیا۔ جبر اس زیادت کو پورے باب کا حقہ بنا دیا گیا۔ جبر اق بناء پھر بدل اور مبدل منہ دونوں دیا گیا۔ جبر حال ہے کلمہ ہر کھاظ سے صرفی قوانین کو بالائے طاق کو جمع کرتے ہوئے ، ہمزہ محذ وفہ کو دوبارہ لایا گیا۔ بہر حال ہے کلمہ ہر کھاظ سے صرفی قوانین کو بالائے طاق کو کھر مستقل ہوتا ہے۔ یہاں بعض شخوں میں تہر قان الف کے بغیر منقول ہے۔ یہ اھوق یہوق سے دور کھر کہ مستقل ہوتا ہے۔ یہاں بعض شخوں میں تہر قان الف کے بغیر منقول ہے۔ یہ اھوق یہوق سے داور علامہ جو ہری نے اسے اراق کی طرح مستقل لغۃ قر اردیا ہے۔

(۱) الماعلى قاري في ابن الجوزى كى كتاب الوفاء كواله سي حضرت عائشكى روايت فقل كى بـ قــالـــت لـمـامـات عشمـان بـن مـظعون كشف النّبي مَلْيُلِيلُهُ الثوب عن وجهه وقبّل بين عينيه ثمّ بكى طويلاً فلما رفع عن السريرقال طوبى لك يا عثمان لم تلبسك الدنيا ولم تلبسها (جمع الوسائل ١٥٣/٢) (مختار)

وه قبر میں اتر گئے۔

مرنے والی بیٹی رقیقی پاام کلثوم: شهدناابنة لسر سول الله علیہ بعض لوگوں نے ابنة السر سول علیہ السر سول علیہ کا مصداق حضرت رقیہ بیا ہے۔ لیکن بید رست نہیں ہے۔ کیونکہ حضرت رقیہ کی تدفین میں نبی اکرم الله کا محداق حضرت کا موقعہ نہیں ملا۔ ان کی وفات کے موقعہ پر آپ علیہ خوز وہ بدر میں مشغول سے۔ بعد میں آپ علیہ نے اُم کلثوم کا نکاح حضرت عثمان سے کردیا تھا۔ اس لئے اکثر شراح نے حضرت اُم کلثوم کو اس کا مصداق شہرایا ہے۔ آپ علیہ کے بیٹوں صاحبز ادیاں لینی رقیہ اورام کلثوم ابولہب کے بیٹوں عتبہ اور عضرت کا حسن میں میں میں تو والدین کے علم سے دونوں نے اور عضیہ کے نکاح میں تھیں۔ جب 'دنیہ میں مونی تو والدین کے علم سے دونوں نے ان کو طلاق دیدی۔ رقیہ رمضان سے میں وفات ہو کیں تو سے میں آپ علیہ نے اللہ تعالی کے علم سے ام کلثوم کی اور فاطم شیں کوئی چھوٹی تھیں۔ اس میں اہل سیر کا اختلاف کلثوم کی کوئی اولا ذمیں ہوئی تھی۔

(۱) صحيح بخارى ا / ۱ / ۱ كتاب الجنائز باب قول النبي مَالَيْكُ يعذب الميت ببكاء اهله عليه، شرح السنة رقم حديث ۱ / ۱ ، السنن الكبرئ للبيهقى ۵۳/۴ كتاب الجنائز (مختار)

<u>لفظ مقارفة سے مراد:</u> أفيكم رجل لم يقارف الليلة، قارف يقارف مقارفة كم عن گناه كارتكاب كرناييں - نيزيہ جماع كرنے كے معنى يس بھى مستعمل ہے۔

ابن الثيرِّ في نهايه مين دونول معنول كاذكركيا هـ كمت بين "قسار ف السذنب اذا دنساه وقار ف امرأته اذا جاء ها "الخ

امام بخاری نے ابن المبارک کے حوالہ سے فلی سے بیٹسیر ذکری ہے کہ اداہ یعنی المذنب تواس نقد رہے سے بیٹسیر ذکری ہے کہ اداہ یعنی المذنب تواس نقد رہے۔ اور ترجمہ یہ ہوگا کہتم میں سے کوئی ہے جس نے آج رات کوئی گناہ نہیں کیا ہو۔ البتداس پر اشکال کیا جاتا ہے کہ جواب میں ابوطلح گا یہ کہنا کہ میں ہوں۔ اعجاب اور خودستائی کے زمرے میں آئے گا۔ نیز ضمناً دوسرے حاضرین کے لئے ارتکاب معصیت کا اثبات بھی ہوجائے گا۔ حالانکہ دونوں با تیں بعیداز قیاس ہیں۔ اس لئے صاحب نہایہ نے بھی یہاں دوسرے معنی کو ترجی دیتے ہوئے کہا ہے "و منہ الحدیث فی دفن ام کلٹو میں۔

علامہ ابن حزم ہے بھی اس کوتر جیج دی ہے۔ اور اس کی تائید اس روایت سے بھی ہوتی ہے جے امام بخاری ہے ناری خاوسط میں اور امام حاکم نے متدرک میں ذکر کیا ہے۔

"لایدخل القبر احد قارف اهله البارحة فتنحی عثمان" اوراکثر شراح نے اس ترجمہ کوزیادہ رائح قرار دیا ہے۔

جماع نه کرنے والوں کوتر جے میں حکمت: گراس میں یہ بات قابل توجہ ہے کہ جماع نه کرنے والوں کودومروں پرتر جے دینے میں کؤی حکمت پوشیدہ ہے اس کی دووجہ ذکر کی گئی ہیں۔

اول بیر کے جو محض زمانہ قریب میں جماع سے محفوظ ہواس کانفس ترکب قضائے شہوت کی وجہ سے مطمئن ہوتا ہے۔

گویا وہ مردانہ نقاضوں اور رغبتوں کو ماضی بعید کا حصہ جان کر بھول چکا ہے۔اور قبر کے ساتھ میہ حالت بہت ہی انسب ہے۔

علامه مناوی کھتے ہیں۔ وجہ بیہ ہے کہ

إنّ الحديث العهد بالجماع قد يتذكر ذالك فيذهل عما يطلب من احكام الالحاد واحكامه()

تازہ جماع کئے ہوئے شخص کو بھی بھی بیکام یاد آجا تا ہے تو وہ تدفین کے احکام سے عافل اوراس کواحس طریقہ سے انجام دینے سے قاصر رہتا ہے۔

حضرت عثمان برلطیف تعریض: دوسری وجہ جے اکثر شراّح نے ترجیح دی ہوہ ہے کہ دراصل اس میں حضرت عثمان پر تعریض اور ان کے قصور پر تنبیہ مقصود ہے۔ ہوا یوں کہ جس رات کوسیدہ ام کلثوم کا انتقال ہوا تھا اسی رات کوسیدہ اعثمان نے اپنی ایک لونڈی ہے ہمبستری کی تھی۔ چنا نچہ آپ ایک فیائے نے بیسیم دیا کہ جماع نہ کرنے والے قبر میں اتریں۔ یہ سیدناعثمان کو تنبیہ تھی۔ کہ جماع میں شغل کی وجہ سے حضورا قدس میں ہوگئے کی گئے جگری مرض وفات میں جس کے نکاح کا تھم جرئیل لائے تھے۔ تیارداری سے غفلت ضرور ہوئی ہوگی۔ الہٰذا اب ایک تھے۔ تیارداری سے غفلت ضرور ہوئی ہوگی۔ الہٰذا اب اللہٰ فیصلے نے عمام انہیں قبر میں اتر نے سے روکا۔

لیکن ظاہرہے کہ عمّا ب کسی گناہ پرنہیں تھا۔ کیونکہ ام کلثوم طویل المیعادمرض میں مبتلاتھیں۔اورکس کوعلم تھا کہ اس رات کو وہ وفات پانے والی ہیں۔ اس لئے اگر حضرت عمّان اس رات ایک جائز عمل میں مشغول ہوئے تو اسے گناہ تو نہیں کہاجا سکتا۔ البتہ حضرت عمّان سے وفور محبت اور شدت تعلق کی بناء پر آپ مالیہ نے بغیر جرم کی پہلطیف تنمیہ کی ہوجو ہمیشہ اپنے اور صرف محبیّن ومحبوبین کوہوا کرتی ہے تو کچھ بعید نہیں ہے۔

غیر محرم کی عمل مدفین میں شرکت کا تھم:

یکھی واضح رہے کہ قبر میں اتر نے وقت حضرت ابوطلحہ المحکم:

اکیلے نہیں سے بلکہ اس خدمت میں حضرت علی ،حضرت فضل بن عباس اور اسامہ بن زید بھی شریک سے (۲)

اس سے سی جھی معلوم ہوا کہ عارم کی موجود گی میں بھی غیر محرم کسی عورت کو قبر میں اتار سکتے ہیں۔ اور شاید نبی اگرم اللہ نے نبیان جواز کے لئے ہی می عمل ان سے کروایا ہو۔ البتہ مستحب بہی ہے کہ بہ خدمت محارم خود المرم اللہ المناق انجام دیں۔ کہ مافی البحو الموائق

(١)شرح الشمائل للمناوى على هامش جمع الوسائل ٥٣/٢١

(٢)الاصابة ج ع ص ٣٢٩

امام طحاویؓ کی توجیہ:

مروی ہے کہ ذرینظر حدیث میں دراصل تھیف کی گئی ہے اور بیلفظ لے بقار ف کی بجائے لے بقاول تھا۔
جس کا معنی ہے کہ جس شخص نے کسی دوسرے کے ساتھ مقاولہ یعنی بحث اور تو تو میں میں نہ کی ہو۔ اور چونکہ عشاء کے بعد سمریعنی گپ شپ سے نہی مروی ہے۔ اس لئے کلام کا معنی یہ ہوگا کہ جو شخص آج رات عشاء کے بعد سمریعنی گپ شپ سے نہی مروی ہے۔ اس لئے کلام کا معنی یہ ہوگا کہ جو شخص آج رات عشاء کے بعد کسی سے بحث ومباحثہ اور گپ شپ سے بازر ہا ہووہ قبر میں اتر ساور تدفین کا کام کر سے مشاء کے بعد کسی سے بحث ومباحثہ اور گپ شپ سے بازر ہا ہووہ قبر میں اتر ساور تدفین کا کام کر سے کیان تی ہے کہ حضرت عثال پر تعریض یا دوسری مصلحتوں کی خاطر آپ تیافیہ کی مراد جماع ہو۔ تو اس میں کوئی استبعاد نہیں اور امام طحاد کی بلا وجہ تکلفات براتر آئے ہیں۔

حضورا قدس علی اولاد: نی اکرم ایستان کے صاحبزادوں کے بارے میں اہل سیر کا اختلاف مروی ہے۔ اس سلسلے میں آٹھ نام لئے جاتے ہیں۔

(۱) قاسم (۲) ابراہیم (۳) عبداللہ (۴) عبدمناف (۵) الطیب

(٢) المطيب (٤) الطاهر (٨) المطهر

ان میں اول الذکر دوپراتفاق ہے۔ اکثریت کے قول کے مطابق آپ میں استے کا نام عبداللہ تھا۔ بقیہ پانچ کے بارے میں رائج بات سے ہے کہ یا تو ثابت نہیں یا قاسم اور عبداللہ کے القاب کے طور پر مروی ہیں۔ ان میں سے قاسم اور عبداللہ حضرت خدیج اور ابراہیم حضرت ماریہ قبطیہ کی لطن سے تھے۔ صاحبز ادیوں میں حضرت زینب مصرت رقیع ، حضرت فاطمہ اور حضرت ام کلثو م تمام کی تمام حضرت خدیج کے اور کا میں حضرت نام کی تھاں۔ ان میں صرف حضرت فاطمہ آپ میں ہیں کو فات کے بعد چھاہ حضرت خدیج کے اور کا میں ہیں۔ ان میں صرف حضرت فاطمہ آپ میں ہیں ہیں ہیں۔ ان میں صرف حضرت فاطمہ آپ میں ہیں۔ کی میں حیات وفات یائی تھیں۔

پھرآپ آلیہ کی بڑی صاحبز ادی زینب کی بیٹی امامیھی زمانہ شباب کو پہنچ بھی تھیں۔ کیکن حضرت فاطمہ کی اولا د کو فضیلت حاصل ہے۔ جن میں حسنین اور ان کی اولا دسب سے افضل اور ان کے بعد عبد اللہ بن جعفر کی وہ اولا دافضل ہے جو کہ زینب بنت علی (زینب بنت فاطمہ ") کیطن سے ہوئی تھی۔

فصلى الله على نبيه وعلى آله الطيبين الطاهرين

#### خلاصة بإب

دنیا میں رہتے ہوئے انسان کا واسطہ خوثی اور غم دونوں سے پڑتا ہے۔ اس طرح ہنسی فداق اور رونے دھونے کی دونوں کیفیتیں انسان کو عارض ہوتی ہیں۔لیکن حق سیر ہے کہ مسرّ توں اور مستوں میں وہ فاکد نہیں ہیں جوشکہ شد دلی میں حاصل ہوتی ہیں۔اس حکمت کوایک شاعر نے یوں بیان کیا ہے ۔

ذبح ابجا بچا کے رکھواسے کہ بیآ کینہ ہے وہ آئینہ ہے وہ آئینہ ہوتو عزیز تر ہے نگاہ آئینہ ساز میں جوشکہ شدہ ہوتو عزیز تر ہے نگاہ آئینہ ساز میں

جتنابھی انسان حقیقت شناسی سے قریب تر ہوتا ہے اور اپنے بحز و بے بی کا تماشد و کھتا ہے۔ اتنا بی اس پر اکسار اور غلبہ بکاء ذیادہ ظاہر ہوتا ہے۔ نبی کریم اللہ نے ایک صدیث میں اس طرف اشارہ فرمایا ہے۔

الو تعلمون مااعلم لضحکتم قلیلاً ولبکیتم کثیراً (۱).

ترجمه: اگران ها كُن كاتم كوللم موجائي جن كا مجھے پية ہے توتم بنسو كے كم اورروؤ كے زياده۔

اس کے مقابلے میں کثرت خک کوآپ آلی ہے نے موت قلب کا ذریعہ کہاہے۔ ظاہر ہے نبی اکرم آلی ہے سے زیادہ حقائق شناسی کسی کونہیں ہے۔ اس لئے آپ آلی گئے کی بنسی نداق بہت محدود تھی۔ اور رونے کے مواقع بکثرت تھے۔ آپ آلیہ کے کرونے کے لئے شراح نے متعدد وجوہات ذکر کی ہیں۔ مثلًا

- (۱) رحمت وشفقت: جیسے میت پر آپ تابیع کا رونا ثابت ہے۔ اور باب کی مؤخرالذکراحادیث میں اس کا ذکر ہے۔
  - (۲) امت پرخوف کی وجہ ہے: جیسی دوسری حدیث میں آپ فیسے کارونا فہ کور ہے۔
    - (٣) خوف الهي اورخشية كے غلبه كي وجه سے: جيسے كسوف مثس كے وقت ہوا تھا۔

(۱) بخاری شریف ج اص۱۳۲، ج ۲ ص ۸۸۷

- (۷) اشتیاق و محبت کی وجہ سے: جیسے استماع قرآن کے وقت یا دورانِ نماز مناجات کے وقت
  - ہوتا تھا۔
- (۵) رخ و و ن کی وجہ سے بھی آپ آپ آلیہ اوے ہیں۔ جیسے اہر اہیم کی وفات کے وقت آپ آلیہ نے فرمایا ''(۱) فرمایا ''(۱)

بایں ہمہ آپ ایستہ کارونا جزع وفزع اور بے صبری کارونا نہیں تھا۔جس سے آپ آلیہ عموماً منع فرمایا کرتے تھے۔

(۱) بخاری شریف ج اص۱۷ کا

## ٣٦. باب ماجاء في فراش رسول الله عَلَيْكُ رسول التُعَلِيَّةِ كِبسر كابيان

فراش فعال کے وزن پرمفعول لینی مفروش کے معنی میں ہے۔ جیسے لباس جمعنی ملبوس ہے۔ جیسے لباس جمعنی ملبوس ہے۔ ہراس چیز کو کہتے ہیں جو بیٹے یالیٹے کیلئے بچھائی جائے۔ لینی نبی کریم اللہ کی بستر کے بارے میں یہاں احادیث لائی جائیں گی۔مصنف نے دواحادیث کا یہاں ذکر کیا ہے۔

(۱) حدّثناعلى بن حجراناعلى بن مسهرعن هشام بن عروة عن أبيه عن عائشة قالت إنّماكان فراش رسول الله عليه الذي ينام عليه من ادم حشوه ليفن.

ترجمہ: حضرت عائش قرماتی ہے کہ نبی کریم آلی کے کاوہ بسترہ جس پرآپ آلیہ آرام فرمایا کرتے تھے، چڑے کا تھا، جو مجور کی درخت کی چھال سے بھراہوا تھا۔

کان فواش النع نبی کریم آلیک کے بارے میں بیات پہلے بھی ذکر کی جا چک ہے کہ آپ آلیک کا فقرا نقتیاری تھا۔ اوراس میں حکمتیں تھیں۔ لباس، کھانے پینے اور مسکن کی طرح بسترے میں سادگ اور فقر عیاں تھا۔ چڑے کا بسترہ اورا تدریعے مجبور کی چھال سے بھرا ہوا تھا۔ بیاس زمانے میں استعال کئے جانے والے عام بستروں کی نسبت زیادہ سادہ تھا۔ علامہ عصام کہتے ہیں کہ اگرازواج مطہرات کا خیال نہ ہوتا تو شاید نبی کریم آلیک اس بسترے کو بھی اختیار نہ فرماتے بلکہ زمین پرسونے کو ترجیح دیتے۔

اس حدیث سے یہ بات معلوم ہورہی ہے کہ اگر چہ ایسے بستر سے کا استعال جائز ہے جسے ملائم بنانے کیلئے اندر سے بھراگیا ہولیکن زیادہ ملائم اور گداز بستر ہ نیند کے غلبہ کا باعث بنتا ہے۔ جوعبادت میں خلل انداز ہوتا ہے۔ لہذا اس سے احتر از کرنا جا ہیے۔

 اَدم ادیم کی جمع ہے جو پختہ چڑے یا بالخصوص سرخ چڑے کو کہتے ہیں۔حشوہ لیف حثو محشو کے سختی میں ہے اور لیف لیف حشو محسول کی جمع ہے۔ کھجور کے سخ پراس کی شاخ کے اگنے کی جگہ جو جالی نما چھال ہوتی ہے۔ لیفة کہلاتا ہے۔

(۲) حدّثناابو الخطّاب زیادبن یحییٰ البصری ثناعبدالله بن میمون اناجعفربن محمّدعن أبیه قال سئلت عائشة ماکان فراش رسول الله عَلَیْ فی بیتک قالت من اَدَم حشوه لیف وسئلت حفصة ماکان فراش رسول الله عَلَیْ فی بیتک قالت مسحاً نثنیه ثنیتین فینام علیه فراش رسول الله عَلیه فی بیتک قالت مسحاً نثنیه ثنیتین فینام علیه فلممّاکان ذات لیلة قلت لوثنیته اربع ثنیات کان اوطاله فثنیناه باربع ثنیات فلما اصبح قال مافرشتمونی اللیلة قالت فقلنا هوفراشک إلا تنیات فلما الربع ثنیات قلناهو اوطالک قال ردوّه لحالته الاولیٰ فانه منعتنی وطاته صلوتی اللیلة.

ترجمہ: حضرت عائش ہے پوچھا گیا کہ آپ کے جرے میں نی کر یم اللہ کے اور حضرت کی ساتھا۔ پولیں چڑے کا تھا جس کے اندر کھور کی چھال بھری ہوئی تھی۔ اور حضرت حفصہ ہے پوچھا گیا کہ آپ کے جرے میں نبی کر یم اللہ کا استرہ کیسا تھا۔ وہ بولیں کہ ایک ٹاٹ تھا جس کو دھرا کر کے ہم کچھا لیتے تھے اور آپ اللہ کا استرہ کو میں پر آرام فرماتے۔ ایک رات کو میں نے سوچا کہ اگر اس بستر کو میں چوھرا کر کے بچھا دوں تو بیم رید آپ اللہ کی کہ خرا کہ اس کی دور تو ہو چھا کہ آئی رات تم لوگوں نے میرے لئے کہ بسترہ دیا۔ میں جوھرا کر کے بچھا دو تھا تھا۔ ہم نے عرض کیا کہ وہ تو آپ اللہ کی درات تم لوگوں نے میرے لئے کسے بسترہ لگایا تھا۔ ہم نے عرض کیا کہ وہ تو آپ اللہ کی استرہ تھا صرف ہم نے اسے چوھرا کر کے بچھا یہ تھا تھا۔ ہم نے عرض کیا کہ وہ تو آپ اللہ کہ کہ ایک خرا کہ کہ کے ذیادہ فرم ہوگا۔ آپ اللہ کہ کے تم دیا کہ اسے واپس پہلی حالت پرلگادہ۔ کیونکہ اس کی فری نے آئے رات جمھے ہجد نے تھا دیا کہ اس منع کیا۔

جعفر بن محمّد: حضرت جعفر سے امام جعفر الصادق اور ان کے والدمحمد بن علی امام باقر مراد ہیں۔ جوامام زین العابدین علی بن الحسین کے فرزند ہیں کیکن چونکدامام محمد باقر کی ملاقات عا کشر سے نہوئی ہے نہ حفصہ سے۔اس لئے بیرحدیث منقطع ہے کیکن امام باقر جیسے تقد کا ارسال، حدیث کی صحت میں معزبیں ہے۔

مِسحا مسى كرور \_ ثاث كوكت بير\_

فلماكان ذات ليلة كان تامه عندات كالفظم اورزائد عاوراس تقرير بدات ليلة فاعليت كى بناير مرفوع بـــ

مافرشتمولی یہال صیغ جمع فرکر کا ذکر کیا ہے کین خاطب صرف حضرت هم بیں۔اس کا ایک جواب توبید دیا گیا ہے کہ بیصیف تعظیماً استعال کیا ہے جیسے موک نے اپنی بی بی کوخطاب فرمایا تھا۔قال لاھله امکٹواانی آنست نارا۔اور دوسرا جواب بیدیا گیا ہے کہ شاید خدام کوخطاب ہوجن میں مردغلام بھی ہوسکتے ہیں۔اورانہی کو تعلیب دیکر بیصیغدلایا گیا ہے۔

منعتنی وطاته صلواتی لیمی گداز ہونے کے سبب نیند غفلت کی آئی اور آئھ نہ کال کی۔ اس حدیث میں حضرت عاکثہ اور حضرت حفصہ سے بسترے کے بارے میں پوچھا گیا ہے۔ دوسری امہات المومنین کا ذکر نہیں ہے، اس کا سبب بظاہر بیہ معلوم ہوتا ہے کہ حضرت عاکشہ اور حفصہ محضرت ابو بکر اور حضرت کا ذکر نہیں ہے، اس کا سبب بظاہر بیہ معلوم ہوتا ہے کہ حضرت عاکشہ اور حفصہ محضرت ابو بکر اور حضرت عرص کی حجہ سے ان کے حضرت عمر کی صاحبز ادی ہیں۔ دونوں کا مقام نبی کر پھیلیسے کے بال بہت بڑا ہے۔ جس کی وجہ سے ان کے حجروں میں دیگر از واج مطہرات کی نبیت پُر تکلف بستر ہ ہونا چاہئے تھا۔ اس سے بھی زیادہ ناتھ بستر ہ ہونا خاہر بات ہے۔

آب الله على المريم الله على روايات: ال باب على نبى كريم الله كا ووبسر ول كابيان عبد الله عبد الله عبد الله عبد الله عبد ومراايك ثاث كى صورت على تفاد ومرى احاديث عبد آب الله كا عبد حرف جائل برجمى كم بارے على مزيد تفصيل بھى فدكور ہے۔ مثلاً بخارى شريف كى ايك حديث عبد ہے كہ صرف چائى برجمى سوئے ہيں جو كم آب الله عن بہاو عبد نشانات جھوڑ دیتا تھا۔ بہن عبد ہے كہ ايك عورت آب الله كا كے بہاو عبد نشانات جھوڑ دیتا تھا۔ بہن عبد کے دايك عورت آب الله كا كے در الله على الله عبد کا الل

لئے اون سے جراایک بسترہ ہدیہ کرگئیں۔آپ آلیہ نے حضرت عائشہ سے اصرار کر کے بسترہ واپس کروایا۔حضرت عبداللہ بن مسعود نے آپ آلیہ کے پہلو میں چٹائی کے نشانات دیکھے۔ توعرض کیا کہ اس سے کوئی بہتر بسترہ بنانے کی بمیں اجازت دیجے لیکن آپ آلیہ نے نے منع فرمایا۔حضرت عرانے ایک دفعہ آپ آلیہ کو کے دیکا تو روئے اور بولے کہ قیصر وکسری تو نفیس بستروں پر آرام کر لیتے بین اور آپ آلیہ ہوئے دیکھا تو روئے اور بولے کہ قیصر وکسری تونفیس بستروں پر آرام کر لیتے بین اور آپ آلیہ کیا تو اس پر راضی نہیں کہ اُن کیلئے دنیا اور بیا اور کے آخرت ہو۔ اس طرح کا ایک واقعہ حضرت ابن مسعود کے ساتھ بیش آیا تھا۔حضرت انس سے دوایت ہے کہ نی کریم آلیہ فیڈ فیمن پر بیٹے اور کھانا کھاتے تھے۔

ان روایات سے بستر ہے کے حق میں آپ آگائی کی بے تکلفی خوب ظاہر ہوتی ہے۔ تعداد کے لحاظ سے بستر سے کے حق میں آپ آگئی ارشاد فر مایا ہے چنا نچہ سلم شریف کی ایک حدیث میں ارشاد ہے کہ (گھر میں ) ایک بستر ہ آ دمی کا ، ایک اس کی بیوی کا ، ایک مہمان کیلئے اور ایک شیطان کیلئے ہوتا ہے۔ لینی ضرورت سے زائد بستر ہ اسراف و تبذیرین کرشیطان کی خوشی کا باعث بنتا ہے۔

# النبى عَلَيْتُ مَا جاء فى تواضع النبى عَلَيْتُ مَا جاء فى تواضع والنبى عَلَيْتُ مَا لَيْنَا لَهُ عَلَيْتُ كَلَّ وَاضْع والكسارى كابيان

تواضع کامعنی: تکبروخود پیندی سے اجتناب اورائی آپ کودوسروں کی نسبت کم تر اوردوسروں کواعلی و راصل و برتر سمجھنا تواضع ہے۔ یہوہ عظیم صفت ہے جو بلندی اور عظمت اور فعت کا سبب بنتا ہے۔ تواضع دراصل و صبع یہضع سے قاعل کا مصدر ہے۔ جس میں تکلف کی خاصیت موجود ہے یعنی تواضع بتکلف خود کو وضع اوراد فی ظاہر کرنے کو کہتے ہیں (۱)۔

نی کریم الله میں میرصفت بدرجه اتم موجود تھی۔ سینکٹروں واقعات اس پرشا کد ہیں۔ یہاں مصنف بطور نمونہ چند کا ذکر فرماتے ہیں۔

(۱) حدّثنا احمد بن منيع وسعيد بن عبد الرحمٰن المخزوميّ وغير واحدقالو ااناسفيان بن عيينة عن الزهريّ. عن عبيد الله عن عبد الله ابن عباس عن عمر بن الخطّاب قال قال رسول الله على المعروني كما أطرت النصارى عيسى بن مريم إنّما اناعبد الله فقولو اعبد الله ورسوله (۲).

ترجمہ: حضرت عمر کہتے ہیں کہ نبی کر یم اللہ نے ارشاد فرمایا کہ میری توصیف میں صدے نہ برمو جبیا کہ نصاری حضرت عیسی "کی تعریف میں صدے گزر گئے ہیں۔

(۱) اورصوفی کی المان الفلوب لعالآم الغیوب بالتسلیم لمجاری احکام الحق (جمع الوسائل ۱/۲ ا) سعبارت باورعوفاً خروج الانسان عن مقتضی جاهه و تنزله عن موتبة أمثاله اور محتقین کے بال التواضع هوأن لایری العبد لنفسه مزیة ویری الحالة التی هوفیها اعظم من أن یستقحا (الاتحافات ۳۵۲) (مختار)

(٢)صحيح بخارى ١/ ٠٩ ٣ كتاب احاديث الانبياء باب قول الله واذكر في الكتاب مريم الخ دارمي ٢/ ٠ ٣٢ مسنداحمد ١/ ٣٠ (مختار)

میں تو اللہ تعالیٰ کا بندہ ہوں تم (بھی میرے بارے میں) یہی کہو۔ کہ وہ اللہ کا بندہ اوررسول ہے۔

لات طرون کے ممااطرت النصاری عیسیٰ بن مویم اطراء مرح سرائی میں صدیح اور کرنے کو کہتے ہیں۔ کسی کی جائز اور مناسب تعریف کرنابری بات نہیں ہے۔ لیکن کسی کے مرتبے کو اتنابر ھاکر پیش کرناجس کا وہ ستحق نہ ہو۔ اطراء کہلائے گا۔ مثلاً کسی عام قتم کے عالم کوغز الی دوران ، رازی زمان اور ابو حدیث وقت کہا جائے۔

فرعونیت کی و با اوراس کی پیچان: آج ہمارے طبقہ میں بیمرض ہے کہ ان کے لئے اگر القاب کم استعمال ہوں تو ناراض ہوجاتے ہیں۔اگر اشتہار میں نام دوسرے نمبر پریا تیسرے نمبر پریا چھوٹا لکھاجائے یا دوران جلسہ استقبال اورستائش میں مبالغہ نہ کیا جائے تو خفا ہوجاتے ہیں۔

ایک دفعہ اسلام آباد میں حضرت مولا نامفتی محمود کے ساتھ گورنمنٹ ہاسٹل میں بیٹھا تھا۔ انہوں نے اس عیب کے بارے میں فرمایا کہ بیہ ایک بڑی اور عجیب فرعونیت ہے۔ خصوصاً علاء میں بہت زیادہ ہے۔ پھر فرمایا آؤیہ سوچیں کہ آیا ہے ہم میں بھی ہے یا نہیں۔ میں نے عرض کیا کہ اگر جلسہ میں استقبال کم ہو۔ سپاسامہ زورداراور مبالغہ آمیز نہ ہواور ستائش کے نعرے کم لگائے جا کیں تو کیا ہمیں اس پر غصہ آتا ہے؟ انہوں نے فرمایا واقعی اس عیب کامعلوم کرنا بڑا مشکل کام ہے ہر خص کہتا تو یہ ہے کہ میں اس سے پاک ہوں۔ کین در حقیقت یہ مہلک مرض اس میں ہوتا ہے۔ جوعالم کیلئے موت ہے اور اسی اطراء کی وجہ سے علاء کی کوششوں میں بر کمیں معدوم ہوتی جارہی ہیں۔

بہرحال مدح میں صدیتجاوز اور مبالغہ آرائی کرنااطراء ہے۔ مثلاً بیر کہ نبی کریم الفظی بشر نہیں نور ہیں۔ عالم الغیب ہیں۔ ان کی ذات اللہ تعالیٰ کی ذات میں تحلیل ہے الگنہیں۔ بریلویت کے اس قتم کے خرافات اطراء کے زمرے میں آتے ہیں۔

کے مااطر أت النصاری عیسی ابن مویم یین جس طرح نصاری نے عیسی کی مدح میں مبالغد آمیزی کی اس کوعبدیت سے تکال کرالوہیت کی صفات سے متصف کیاتم لوگ ایسے نہ کرنا۔

(۲) حدّثناعلى بن حجر اناسويدبن عبد العزيز عن حميد عن أنس بن مالك إنّ امراة جاء ت إلى النبيّ عُلَيْكُ فقالت إنّ لى اليك حاجة فقال اجلس في اى طريق المدينة شئت اجلس اليك (١).

ترجمہ: حضرت انس سے روایت ہے کہ ایک عورت نی کریم آلیفی کے پاس آئی اورعرض کیا کہ جھے آپ آئی ات ان کے بات ( تنهائی میں ) کہنی ہے۔ آپ آئی اورعرض کیا کہ جھے آپ آئی میں آئی بیٹھو۔ میں (وہیں آکر) تیری بات سننے کیلئے بیٹھوں گا۔

نی کریم الی ایک اور کہا کہ میرا تو ایک کام ہے۔ فلا ہرہے کہ وہ کام ایسا ہے جو کہ عورت جا کی سے پاس آئیں (۲)۔ اور کہا کہ میرا تو ایک کام ہے۔ فلا ہرہے کہ وہ کام ایسا ہے جو کہ عورت حاضرین سے چھپانا چا ہی تھی گویا یہ عورت نبی کریم الی ہو کہ الی ہو کہ الی کہ اس میں اسلام کے بات تھی تھیں۔ ایسے میں عموماً ہڑے لوگوں کو خصہ آتا ہے لیکن آپ الی ہو تم جہاں بھی کو خصہ آتا ہے لیکن آپ الی ہو تم جہاں بھی چا ہو کہی بھی گلی کو چ میں بیٹھ جاؤ۔ میں وہیں آؤں گا۔ بیٹرم کی بات ہی نہیں کہ ایک اونی ورت کی عورت کے پاس سردار کو نین ہو تھی۔ اس وہ بین آؤں گا۔ بیٹرم کی بات ہی نہیں کہ ایک اور تو تھا۔ وہ مدینہ کی گلیوں میں بیٹھا کرتی تھی۔ اس وجہ سے نبی کریم الی ہے کہ اس عورت کی عقل میں پھوٹور تھا۔ وہ مدینہ کی گلیوں میں بیٹھا کرتی تھی۔ اس وجہ سے نبی کریم آتا ہے کہ اس جو سے فی کریم آتا ہے کہ اس جو سے فی الم اور ہوسکتا ہے کہ اس نست ابسی داؤ د ۲۱ مرا تھی الادب باب فی السجہ لوس فی المطرف ات، مسند

(٢) علام عبرالجواد الدوى نه السواح لم يقف الشواح على اسم المواة الاتحافات ٣٥٧، البترعلامة يَجوريُّ في عقلها شئ في عقلها شئ في عقلها شئ كمافي مسلم (المواهب الدنية ٥٠٠) (مختار)

نی کر پیمالی نے اس کے عقل کے فتور کی وجہ سے ازواج مطہرات سے دورر کھنا چاہا۔ اس لئے گھر کی بیجائے اس کے ساتھ گل میں بیجائے اس کے ساتھ گل میں بیجائے اس کے ساتھ گل میں ملنے کا کہا۔ اور ممکن ہے کہ ایسا آپ آلیے گئے نے اس عورت کی حاجت روائی میں عجلت کرنے کی غرض سے کیا ہو۔ بہر حال روایات میں ریجی آیا ہے کہ آپ نے اٹھ کراس کے ساتھ ملاقات کی۔ اور صحابہ کی جماعت سے ہٹ کراس کی بات میں گی۔ اور صحابہ کی جماعت سے ہٹ کراس کی بات میں گی۔

(٣) حدّثناعلى بن حجراناعلى بن مسهر عن مسلم الاعور عن أنسس بن مالك قال كان رسول الله عليه يعود المريض ويشهد الجنازة ويركب الحمار ويجيب دعوة العبد وكان يوم بنى

قريظة على حمار مخطوم بحبل من ليف عليه إكاف من ليف(١).

284

ترجمہ: حضرت انس سے روایت ہے کہ نبی کریم اللہ یارلوگوں کی عیادت فرماتے سے۔ جنازے میں شریک ہوتے سے۔ گلاھے پر سواری فرماتے سے۔ فلام کی دعوت بھی قبول فرماتے سے۔ بنوقر یظہ کے ساتھ لڑائی کے دن آپ آلیہ گلاھے پر سوار سے۔ بنوقر یظہ کے ساتھ لڑائی کے دن آپ آلیہ گلاھے پر سوار سے۔ بنی ہوئی رسی تھی اور اس پر کا تھی بھی مجور کی چھال کے۔ بنوگھی۔ کی تھی۔

نی کریم ایستان کا کافری عیادت کرنا: بعودالسمریض بیاروں کی عیادت کرتے جنازہ میں شمولیت فرماتے۔ ایک بیودی نوجوان بلکہ عبداللہ بن ابی کی بھی عیادت کی تھی اور اس کے جنازہ میں بھی شریک ہوئے۔ نادار صحابہ کی عیادت تو معمول کی بات تھی۔ بوقت ضرورت گدھے کی سواری کرتے۔ غلاموں کی دعوت بھی قبول کرتے۔ بیسب ایسے ادفی کام ہیں۔ جو کہ عرفاً بادشا ہوں کوزیب نہیں دیتے نہ امیر لوگ سے گوارا کرتے ہیں۔ خصوصاً دیشن پر جملہ کرتے وقت تو خوب شان وشوکت کا ظہار کیا کرتے ہیں۔ تاکہ ان پر رعب چھاجائے۔ لیکن آپ ایستی تعلی نہیں۔

آپ آلی اس مان کا طلب نه کیا۔ حالانکہ اس وقت ایک اشارہ سے ہر چیز مہیا ہوسکتی تھی۔ چنا نچہ بنو قریظ پر حملے کے روز آپ آلیا ہے کیا۔ حالانکہ اس وقت ایک اشارہ سے ہر چیز مہیا ہوسکتی تھی۔ چنا نچہ بنو قریظ پر حملے کے روز آپ آلیا ہے گئے۔ اور اس پر پالان بھی مجور کی چھال کا بنا ہوا پڑا گلام بھی مجور کی تچھال کا بنا ہوا پڑا تھا۔ اس حالت میں آپ آلیہ ہی عبدیت اور تواضع کا مظاہرہ کرر ہے تھے۔

حضرت عمر کی تواضع کی مثال: حضرت عمر نے فتح بیت المقدس کے موقعہ پراس سنت کی اقتداء کا بہترین نمونہ پیش فرمایا۔ان کے ہمراہ ان کا غلام اسلم تھا۔ ایک ہی سواری تھی۔ حالا تکہ شام کی فتح کاعظیم الشان کا رنامہ انجام پایا تھا۔اوروہ جنگ جیتی جاچک تھی۔ جس کے ہر ہر معرکے میں سینکڑوں رومی کام آتے الشان کا رنامہ انجام پایا تھا۔اوروہ جنگ جیتی جاچک تھی۔ جس کے ہر ہر معرکے میں سینکڑوں رومی کام آتے (۱) سندن ابن ماجة ص ۲۲ اکتباب النہ جارات بیاب مالیلعبدان یعطی و یتصدق، جامع ترمذی الے عالم المحدال کتاب الجنائز، (مختار)

تھے۔ دوسری طرف سے روم کے بادشاہ، سید سالا راور جرنیل شان وشوکت سے آتے۔ سب سونے جاندی میں ڈویے ہوئے ہوتے تھے۔ حتیٰ کہان کی زر ہیں بھی سونے کی ہوتی تھیں۔ تکوار جواہرات سے دمک رہی ہوتی تھیں۔ واقدی نے فتوح الشام میں ان کی حالت کا خوب نقشہ تھینجاہے۔ کیکن ایسے لوگوں کا مقابلہ کر کے اور انہیں شکست دے کرفاتحانہ انداز سے حضرت عرشام آتے ہیں۔ ایک سواری پرآپ اور غلام باری باری سوار ہوتے ہیں۔ جب قریب آئے اس وقت اتفاق سے غلام کی باری تھی۔غلام نے منت کی کہ اب آب سوار ہوجا کیں کیونکہ آب اللہ فاتح اعظم کی حیثیت سے شام میں داخل ہونے والے ہیں لیکن آپ نے اٹکار کر دیا۔اورآپ غلام کوسوار کئے خو دلگام پکڑے بیت المقدس میں داخل ہوئے۔

حضرت ابوعبیدہ بن الجراح ممانڈرانچیف تھے۔استقبال کیلئے آئے تھے۔درخواست کی اب تو کچھشان وشوکت کی ہیئت ہونی چاہیے۔ پیوند بھرے کپڑوں کوتبدیل کردیں کیونکہ ہرقل اور دیگر صنادید روم آب سے ملنے آئیں گے۔ آپ نے بری بے دلی سے کچھ دیر کیلئے کیڑے بدلے۔ لیکن پھرفوراً واپس كرديخ ـ اورفر مايانـحن قوم اعـزناالله بالاسلام ـ يعنى بملوكون ناسلام كي وجه سعزت يائي ہے۔اب اسلام کے سواعزت کے دوسرے ذرائع سے اجتناب کرنا جا ہیے۔کہاجا تا ہے کہ بعض کتب الھیّیہ میں یہ پیش گوئی کی گئ تھی کہ بیت المقدس کا فاتح پھٹے برانے کپڑوں میں غلام کی سواری کا لگام تھا ہے ہوئے آئے گا۔اس لئے آپ کے دل میں اللہ تعالی نے یہ بات ڈال دی تا کہ پیش گوئی یوری ہوسکے۔اگرآپ ٹھاٹ بھاٹ سے آتے تو یہ پیش گوئی غلط ہوجاتی اورلوگ تر دد میں ہوتے کہ یہاں پیش گوئی کے مصداق ہے یا نہیں۔ بہر حال حضرت عمر نے اس بات میں نبی کریم تالیہ کی تا سی کی تھی۔ اوراسی تواضع نے انہیں دنیوی لحاظ ہے بھی بام عروج پر پہنچایا۔

ا يك فقيى اشكال: ويجيب دعوة العبديها الرايك فقيى اشكال بوتا بي كفلام تومال كاما لكنيس بن سکتا۔ اس کے قبضے میں سارامال اس کے مالک کامملوک ہوتا ہے۔ تو اس کی دعوت قبول کر کے نبی کریم آلیہ نے بلااجازت غلام کے مالک کا مال کیے کھایا۔

اس اشكال كى وجه ب بعض لوكول نے "ويجيب دعوة العبد" كا ترجمه بركيا ب كرآ سالية

کسی غلام کے بلانے پرلیک کہتے تھے۔ یعنی اگروہ مدد کیلئے پکارتا تو آپھائے حاضر ہوجاتے تھے لیکن حدیث کے سیاق وسباق کی وجہ سے اس معنی کا بُعد ظاہر ہے۔ بلکہ امام ترفریؓ نے اس حدیث کوتو اضع کے باب میں لایا ہے تو یہی معنی ہی مستبط ہونے چاہئیں جبکہ فدکورہ تو جیہ میں تو اضع کی جہت مفقود ہے۔

اس لئے علامہ مناوی نے توبہ جواب دیا ہے کہ نبی کر پم اللہ کی خصوصیات میں سے ایک بی ہمی کے علامہ مناوی نے توبہ جواب دیا ہے کہ نبی کر پم اللہ کے علامہ مناوی نے توبہ جواب دیا ہے کہ نبی اور اس میں تصرف کر سکتے ہیں۔اس لئے مالک کی اعلمی یا اس کے اجازت کے نہ ہونے سے آپ اللہ کے حق میں کوئی فرق نہیں پڑتا۔اللہ تعالی خود فرماتے ہیں کہ 'النہی اولی بالمؤمنین من أنفسهم'' (اللیة)

مراس جواب کی برنست ملاعلی قاریؒ نے جودیگر جوابات کے ہیں رائے معلوم ہوتے ہیں۔ جو یہ ہیں اول (۱) یہ کہ یہاں ماذون لہ غلام کاذکر ہے۔ اور ماذون لہ کیلئے جائز ہے کہ وہ معروف طریقے سے مہمان کی مہمان نوازی کرے۔ اس لئے بعض روایات میں ''ویہ جب دعوۃ المملوک ''کے الفاظمروی ہیں۔ دوم (۲) یہ کہ یہاں پر آزادشدہ فلام مراد ہے۔ اور ''ماکان' کینی زمانہ گزشتہ کے اعتبار سے اسے فلام کہا گیا ہے اور یہ بھی تواضع ہے کہ معاشرے کے اس اوئی طبقہ کی دعوت بھی قبول فرمائی۔ سوم (۳) یہ کہ مسکتا ہے کہ یہاں مراد یہ ہو کہ مالک کے گھر اس کی فلام کی دعوت پر بھی جاتے تھے۔ یعنی اگر مالک خود دعوت دینے کی بجائے فلام کو تھے وہ یہاں بلایا۔

(٣) حدّ ثناواصل بن عبدالاعلى الكوفيّ ثنامحمّدبن فضيل عن الأعمش عن أنس بن مالك قال كان رسول الله عليه يدعى الى خبزالشعيروالاهالة السنخة فيجيب ولقد كانت له درعٌ عنديهودى فماوجدمايفكهاحتيّ مات(١).

(١) السنن الكبرئ للبيهقي٣١/٣٦كتاب الرهن باجواز الرهن، مسنداحمد٣٠/٣٠ ا (مختار)

کی ایک زردہ ایک یہودی کے یاس (ربن) تھی آ یا اللہ نے موت تک اتنامال نہیں یایا۔ کہوہ زرہ چیٹر اسکیں۔

287

رسول التعليق كابرسى كے دعوت برجانا: حبز الشعير كسنفسى اورنہايت بنطفى كى وجهت لوگ آ پہانے کوجو کی روٹی اور ناقص کھانے ہر بلانے کی جرأت بھی کرتے تھے اگرلوگ سجھتے کہ آ پ تکلفات اوراعز از واکرام کے خواہشند ہیں مرغ یلاؤ وغیرہ کے بغیر کسی کے مال نہیں حاتے۔ توہر کسی کودوت کی ہمت نہ ہوتی ۔لین چونکہ آ پیالیہ کی تواضع کا ہر سی کوعلم تھا کہ آپ اللہ فقیری پیندفر ماتے ہیں۔اورغریب وامیر ہرکسی کی دعوت پر لبیک کہتے ہیں۔الہذا آپ اللے کو انتہائی ناقص کھانے کی دعوت بھی اگردی حاتی تو آپ الله قبول کرنے میں بچکیا ہے محسوس نہیں فرماتے تھے۔

والإهالة السنخة اهالة حربي ما يكهلي بوئي جربي كوكت بين لوگ اسيمالن كي طرح بهي استعال کرتے ہیں جبکہ سے اور زَنح کامعنی تغیر وفسکہ لینی بد بودار ہونا ہے۔ چر بی اور جربی ملاسالن وقت گزرنے سے پاسی اور بدبودار ہوجا تاہے۔

لیکن یہاں پیشبہ ہوتا ہے۔ کہ نبی کریم اللہ یا انس کودعوت دیتے وقت کیسے بیتہ جلا کہ جو کی روٹی پاہاسی جربی پر بلایا جار ہاہے۔ حتیٰ کہ تواضع ثابت ہو سکے۔ تواس کا جواب یہ ہے کمکن ہے کہ دعوت دینے والے نے تصریح کردی ہوکہ کھا نااس قتم کا ہے اور حمکن ہے کہ نبی کریم آیا آئی ہے داعی کی حالت زاراور روز مرہ کے کھانے سے بیا ندازہ لگایا ہو کہ اس داعی کے بال ملے گی تو صرف بہی چیز ملے گی اور پھھ نہیں ہوگا۔

ني كريم الله كازرع كروي ركوانا: ولقد كانت له درع عنديهو دى الخاس زره كانام ذات الفضول تفاجو حضرت سعدا بن عيادة نے آپ الله كوبدريه كيا تفااور جس يبودي كے پاس گروي ركھا تھااس كا نام ابواشح بن الارس تفا\_آ ہے ایک نے تیں صاع جواورا یک روایت کے مطابق بیں صاع جوکیکرزرہ کواس کے پاس گروی رکھاتھا۔ نبی کریم آلینے کی وفات کے بعد حضرت ابو بکرصد نق نے اسے واگز ارکر کے حضرت علی کودیدی جبکہ بعض روایات کے مطابق خود حضرت علی نے یہودی سے رہ زرہ چیٹر الی تھی۔ صحابہ کرام کی بجائے یہودی سے قرض لے کر رہن کیوں رکھا تھا۔ حالا نکہ صحابہ کرام میں بھی تو دولتمند صحابہ موجود تھے۔ بالحضوص نبی کریم اللہ کے آخری حصہ میں صحابہ است نادار بھی نہیں تھے۔ اس کا جواب یہ ہے کہ ہوسکتا ہے کہ نبی کریم اللہ نے کہ نبیان جواز کیلئے بیٹل کیا ہو کہ کا فرادر یہودی کے ساتھا اس قتم کا معاملہ جا کڑے۔ اگر چوہ وہ 'انحالون للسحت '' (حرام خور) قوم سے تعلق رکھتا ہویا ہوسکتا ہے کہ صحابہ کرام میں کوئی شخص بھی ایسانہ ہوجس کے پاس ضرورت سے زیادہ فلّہ موجود ہوجبکہ یہود کے ہاں ذخیرہ کرام میں کوئی شخص بھی ایسانہ ہوجس کے پاس ضرورت سے زیادہ فلّہ موجود ہوجبکہ یہود کے ہاں ذخیرہ اندوزی اور منافع خوری ایک عادت تھی وہاں فلّہ مل جا تا آسان تھا اور یہ بھی ممکن ہے کہ آپ سیالیہ کیا ہوگا ہویا ہوگا ہے کہ وری اور استغناء محمدی سے فلاف صحابہ آپ انگار کرتے اور یہ حمیت نبوی اور استغناء محمدی سے فلاف موتا۔ لہذا آپ گلیٹ نے یہودی سے قرض لینے سے بھی انکار کرتے اور یہ حمیت نبوی اور استغناء محمدی سے فلاف ہوتا۔ لہذا آپ گلیٹ نے یہودی سے قرض لینے سے بھی انکار کرتے اور یہ حمیت نبوی اور استغناء محمدی سے قراض لینے سے بھی انکار کرتے اور یہ حمیت نبوی اور استغناء محمدی سے فلاف ہوتا۔ لہذا آپ گلیٹ نے یہودی سے قراض لینے تھے۔

اب بظاہر سے بات دل میں مسکتی ہے کہ صدیث کے آخری صے کا ترجمۃ الباب سے تعلق ظاہر نہیں ہوتا لیعنی اس میں تواضع کا اثبات نہیں ہے اور یہی بات بعض شراح نے کہددی ہے کہ آخری صد میں تواضع کی کوئی بات نہیں صرف اتمام صدیث کیلئے اس کو ذکر کیا ہے لیکن ملاعلی قاری اور دیگر شراح نے لکھا ہے کہ اس کی کوئی بات نہیں صرف اتمام صدیث کیلئے اس کو ذکر کیا ہے لیکن ملاعلی قاری اور دیگر شراح نے لکھا ہے کہ اس عمل میں بھی تواضع مختق ہے اس لئے کہ بظاہرا گرنی کریم آلیت صحابہ کرام کے سامنے زرہ بطور رئین پیش کر کے غلہ کا نقاضا فرماتے تو اول تو رئین نہ لیتے اور لیتے بھی تو زیادہ غلہ بطور قرض بلکہ مفت دیتے جس سے نمی کریم آلیت کی قدرا فرائی کا اظہار ضرور ہوتا ۔ بایں ہمہ آپ آلیت نے منصب وعظمت اور صحابہ کے دلوں میں وقعت سے صرف نظر کر کے ان کی بجائے ایک یہودی سے قرض کی درخواست کی ۔ جو تو اضعا بھی ہوسکتا ہے بلکہ رہے جہت اس عمل میں اقوئی ہے۔

ف ماوجد مایفگهاالغ لینی وفات تک اتنا کچه ماتھ نبیں آیا کر بن چھڑا سکے۔اوراگر ماتھ آیا بھی ہوتو بھی صدقہ کر چکے ہونگے۔اس لئے کہ قرض کی مدّت ابھی باقی ہوگی۔

ترجمہ: حضرت انس سے روایت ہے کہ نبی کریم اللہ نے ایک بوسیدہ پالان پرسوار ہوکر ج کیا۔اس پالان پر ایک جمالروالا کپڑاتھا جو چاردر ہم کے برابر بھی نہ تھا آپ اللہ نے دعاما تکی اے اللہ اس ج کوالیا ج بنادے جس میں نمائش ہونہ شہرت۔

عن الدبیع بن صبیح عن یزید بن أبان بیردونوں دادی ضعف بیں جس کی وجہ سے علامہ این چروغیرہ نے اس صدیث کوضیف کہا ہے اوراگر چراس کے بعض شواہر بھی بیں لیکن وہ بھی ضعف ہیں۔

نی کر یم اللی اللہ نے ایک ج کیا: علی دحل دت نی کر یم اللی نے نی آخری اورا یک ج کیا ہے۔
اسلامی مملکت قائم ہو چکی تھی۔ جزیرۃ العرب اسلامی پر چم تلے آچکا تھا۔ ملک کے گوشے گوشے سے مسلمان
آندوالے تھے۔ ایسے موقعہ پر تو چاہیے تھا کہ خوب شان وشوکت سے ج کیلئے آئیں تاکہ عظمت فاہر ہوجائے اوراطراف وقبائل کے نومسلم مسلمانوں نیز دیگرا قوام پر اسلامی حکومت کی دھاک بیشے جائے لیکن اس سزیس بھی آپ آلیک فلا اتفاج کہ جو سیدہ پر انے پالان بیس سوار ہوکر ج کو آئے اوراس پالان پر کپڑے کا کا ایک فلا اتفاج کہ چاہد ایک برابر بھی نہ تھا۔ یہاں پر بعض شراح نے علیہ قطیفۃ کی ضمیر نبی کر یم اللی کو ایک کا ایک فلا اتفاج کہ جائے ہوا در اس کا پرزور در دکیا ہے اس باب بیس آئندہ ایک حدیث اور دیگرا حادیث بھی اس کے منافی ہیں۔ ویسے آدی پر پڑے ہوئے کر نے کوقطیفہ نہیں کہتے بلکہ قطیفہ اس دیگرا حادیث بھی اس کے منافی ہیں۔ ویسے آدی پر پڑے ہوئے کر نے کوقطیفہ نہیں کہتے بلکہ قطیفہ اس کی ٹرزور دول کے لیاس کے جمالروغیرہ بھی ہوں۔ اور بیم ردوں کے لباس کی ٹرزیس ہوتا۔

(۱)سنن ابن ماجة ۲۰ كتاب المناسك باب الحج على الرحل، مصنف ابن ابى شيبة ۲/۳ ۱۰ كتاب المناسك، الحليلة الاولياء لابى نعيم ۵۳/۳ (مختار)

لارياء فيه و لاسمعة الي حالت من بهي رياونموداورشيرت سے پناه ما كل \_رياء دكھلاوے کو کہتے ہیں لیننی کسی کودکھانے کےغرض سے عمل کرنا جبکہ سمعۃ کامعنی ہے کسی کوسنوانا۔ یعنی تشہیر کی غرض سے ۔ عمل کرنا لیکن مقصد کے لحاظ سے دونوں ایک ہیں کینی للہیت کے بغیر کوئی نیک عمل کرنا۔ نی کریم ایک کے عمل میں ریاءاور سمعة كااخمال بھی نہیں ہوتا تھا۔ آپ اللہ نے امت كی تعلیم كيلئے بيد عافر مائی تھی تا كہوہ ر باءوسمعة ہے محفوظ رہنے کی کوشش اور دعا کر س۔

دورحاضر کے لیڈراورشمرت لیندی: سجان اللہ۔ آج کے لیڈرتومعمولی کام بھی کریں تواخباروں اور فی وی براعلان کرواتے ہیں۔ ج سے آنے سے قبل ایک ماہ پہلے کارڈ چھایے جاتے ہیں۔ تمام لوگوں کواطلاع دی جاتی ہے جج کر نیوالا واپسی میں کراچی میں پیٹھ جاتا ہے لوگوں کواطلاع دیتا ہے اوروقت بتادیتا ہے تا کہ خوب انتظامات اور استقبال کا بندوبست ہوجائے بعد کے اسلامی بادشاہوں کا حال بھی نبی كريم الله كالله على الما على الله الماك جب ج کوآیا تو جارسواونٹوں براس کا صرف لباس اور دیگر ضروریات کولا دا گیا تھا۔اوراسی وجہ سے اسلامی حکومت کا نقشه بدلنے لگا۔اور بالآخرز وال ير منتج ہوا۔

اس کے برعکس نبی کریم اللہ اور صحابہ کرام نے ج میں تو بیش قیت قربانی پیش کی۔خود نبی کریم تالیق نے ایک سواونٹ قربانی کر کے مساکین میں تقسیم کئے۔حضرت عمر نے ایسے اونٹ کی قربانی دی جس کو تین سودینار کے عوض آپ سے طلب کیا گیا تھا۔ گرآپٹ نے بیچنے سے انکارکردیا۔ دوسرے صحابہ کا اخلاص بھی قابل داد ہے کیکن نمائش اورشہرت سے پنا طلبی بھی ساتھ ساتھ رہی۔

(٢) حدّثناعبدالله بن عبدالرحمٰن اناعفان اناحمّادبن سلمة عن حُميد عن أنس قال لم يكن شخص أحبّ اليهم من رسول الله عَلَيْكُمْ قال وكانوا اذارأوه لم يقوموالمايعلمون من كراهيته لذلك(١).

(۱) جامع تسرمندی ۲/۲ • اکتساب الادب بساب مساجاء فی کراهیة قیام الرحل، مسنداحمد ۱۳۲/۳۱ (مختار) ترجمه: حضرت انس سے روایت ہے کہ صحابہ کرام کونی کر پم اللہ کی نسبت کوئی شخص زیادہ مجبوب نہیں تھا۔اس کے باوجود جب صحابہ نبی کریم اللہ کودیکھتے تو کھڑ نہیں ہوتے تھے کیونکہ وہ جانتے تھے کہ نی کریم اللہ اس کونا پیندفر ماتے ہیں۔

291

قيام تعظيمي كأحكم: لما يعلمون من كواهيته لذالك مركه يترقاضعاً هي ورندوه سيدالبشر وخير الخلق بي- جب دوسرول كيلئة قيام مطلقاً ناجائز نهيل تو آب الله كيل بهي ناجائز نہیں تھالیکن تواضعاً آپ السندفرماتے تھے۔ اور صحابہ کرام بھی اپنی محبت وعقیدت کے مقابلے میں آ ہے اللہ کی مرضی کورج دیتے تھے۔ اگرچہ بھی بھی آ ہے اللہ کیلئے صحابہ کا کھڑا ہونا بھی ثابت ہے۔لیکن کھڑے ہونے کا نہ تو صحابہ نے التزام کیا تھانہ نبی کریم تلاقیہ کو یہ پیند ہوتا تھا ہاں صحابہ خودا بنی محبت ظاہرفر مادیتے تھے۔

کسی کی تعظیم کیلئے کھڑے ہونے میں فقہاء نے چندصور تیں کھی ہیں۔بعض مقامات ایسے ہیں جہاں کھڑ اہونا حرام ہے۔مثلاً وہ حکہ جہاں اس شخص میں جس کے لئے کھڑ اہوا جائے یقیناً تکبر پیدا ہوتا ہو تو وہاں کھڑا ہونا نا جائز ہے۔قاضی عیاضؓ نے لکھا ہے کہا گر بڑا آ دمی بیٹھا ہواورا تیاع تعظیماً کھڑے رہیں تو بہ صورت بھی ناجائز ہے۔ اوراگر تکبر کا اندیشہ اوراخمال ہے تو کروہ ہے اوراگر تکبر کا اخمال بھی نہیں تو جائز ہے۔اورا گرسرے سے تکبر کانام نہ ہومحض خدمت وا کرام ہوتو مستحب بھی ہے۔مثلاً کوئی مہمان باہر سے آئے تو کھڑا ہونا جا ہیں۔ اس طرح امام نوویؓ نے فرمایا کہ مشائخ اوار اہل علم کیلئے اکراماً کھڑے ہونا جا ہیے۔ کیونکہ بیددراصل کسی ذات کانہیں بلکہ علم وتقو کی کااحتر ام ہوتا ہے۔

الوداؤدكى روايت من بك كان رسول الله عليه يجلس معنافي المسجد فاذا قام قمناقياماً حتى نواه قددخل بعض بيوت ازواجه. ليني آسيالية مارى مجلس سائحة توجب تك كسى جر \_ من داخل نه بوتي بم كر \_ د بي (اخرجه عن ابي هويدة) اسى طرح نبى كريم الله نے انصار کوحفرت سعد بن معاد کی کیاہے کھڑ ہونے کا تھم دیا تھا۔قو مو إلى سيد كم لہذا شیخ عالم اوراستاد کوتو جاہیے۔ کہ وہ اپنے عقید تمندوں سے کھڑے ہونے کی طبع نہ کرے۔

لیکن طالب علم ، مریداور چھوٹوں کو چاہیے کہ وہ شیوخ اور بردوں کا احترام کریں اور ہمیشہ نہیں تو بھی بھی اس کی آمد کے موقع پر احتراماً کھڑے ہوں۔ کیونکہ بردااپنے نفس کوقا بوکرنے پر مامور ہے۔ جبکہ چھوٹا ادب واحترام پر مامور ہے۔

(٤) حدّثناسفيان بن وكيع ثناجميع بن عمر بن عبدالرحمٰن العجلّي ثني رجل من بني تميم من ولدابي هالة زوج خديجة يكنّي أباعبدالله عن ابن لابي هالة عن الحسن بن عليّ رضي الله عنهما قال سالت خالى هندبن أبى هالة وكان وصافاً عن حلية النبيّ عُلَيْكُ وأناأشتهي أن يصف لي منهاشيئاً فقال كان رسول الله عَلَيْهُ فخمامفخَّماً يتلألو وجهه تلأالو القمر ليلة البدر فذكر الحديث بطوله قال الحسن فكتمتها زماناثم حدَّثته فوجدته قدسبقني اليه فساله عـمَّاسـالتـه عنه ووجدته قدسال أباه عن مدخله وعن مخرجه وشكله فلم يدع منه شيئاً قال الحسين فسالت أبي عن دخول رسول الله عَلَيْهُ فقال كان إذا أوى إلى منزله جزَّء دخوله ثلاثة أجزاء جُزءً لِلَّه عزُّوجلٌ وجـزءُ لاهـله وجزءُ لنفسه ثمّ جزَّءَ جزءه بينه وبين الناس فير دّذلك بالخاصة على العامة و لايدٌ خرعنهم شيئًا و كان من سيرته في جزء الامّة ايشار اهل الفضل باذنه وقسمه على قدر فضلهم في الدين فمنهم ذوالحاجة ومنهم ذوالحاجتين ومنهم ذوالحوائج فيتشاغل بهم ويشغلهم فيمايصلحهم والآمة من مسئلتهم عنه واخبارهم بالذي ينبغي لهم ويقول ليبلغ الشّاهدمنكم الغائب وابلغوني حاجة من لايستطيع ابلاغها فانه من أبلغ سلطاناحاجة من لايستطيع ابلاغها ثبّت اللُّه قد ميه يوم القيامة ولايذكرعنده إلاّذلك ولايقبل من

احدغيره يدخلون روَّاداً ولايفترقون إلاّعن ذواق ويخرجون ادلّة يعنى على الخيرقال فسألته عن مخرجه كيف كان يصنع فيه قال كان رسول الله عَلَيْكَ يخزن لسانه إلاقيمايعنيه ويؤلّفهم ولاينفرهم ويكرم كريم كل قوم ويوليه عليهم ويحذرالناس ويحترس منهم من غيران يطوى على احد منه بشره ولاخلقه ويتفقداصحابه ويسأل الناس عمّافي الناس ويُحسّن الحسن ويقوّيه ويقبّح القبيح ويوهّيه معتدل الامرغير مختلف ولايغفل مخافة ان يغفلوا ويملو الكل حال عنده عتادلايقصر عن الحق والايجاوزه الذين يلونه من الناس خيارهم أفضلهم عنده أعمهم نصيحة وأعظمهم عنده منزلة أحسنهم مواساة وموازرة قال فسألته عن مجلسه فقال كان رسول الله عَلَيْكُ لايقوم ولايجلس الاعلى ذكر واذا انتهى الى قوم جلس حيث ينتهى به المجلس ويامر بذلك يعطى كل جلسائه بنصيبه لايحسب جليسه ان احداً اكرم عليه منه من جالسه اوفاوضه في حاجة صابرة حتى ا يكون هو المنصر ف منه و من سأله حاجته لم يردّه إلاّبها ااو بميسور من القول قدوسع الناس بسطه وخلقه فصارلهم اباً وصاروا عنده في الحق سواء مجلسه مجلس علم وحياء وصبروامانة لاترفع فيه الأصوات ولاتبوبين فيبه البحرم ولاتنثى فلتاته متعادلين يتفاضلون فيه بالتقوى متواضعين يوقرون فيه الكبير ويرحمون فيه الصغير ويؤثرون ذاالحاجة ويحفظون الغريب.

(۱) صحيح بخارى لم اجده فى هذاالباب كتاب العلم باب من اعادالحديث ثلاثا، جامع ترمذى لم اجده فى هذا الباب كتاب الاستيذان باب ماجاء فى كراهية ان يقول عليك السلام، مسنداحمد ۱۳/۳ ۲ (مختار)

294

ترجمه: امام حسن كم عين كه مين في اين مامول مندبن الى باله سے (نبي کریم تالیہ کے حلیہ) کے بارے میں یو جھاوہ نبی کریم آلیہ کے حلیہ مبارکہ کے بیان میں ماہر تھے۔ مجھے ان سے حلیہ کے بارے میں سننے کا اشتیاق تھا۔ (میرے یو چھنے کے بعد )انہوں نے کہا کہ نبی کر پیمائی فیا واتی طور پر باعظمت اورلوگوں کی نظروں میں بلندمرتبه تقے۔آپ ایک کاچیرہ چودھویں رات کی جاند کی طرح چیکتا تھا۔اس حدیث کوامام حسن نے یوری طرح سادیا۔ حضرت حسن کہتے ہیں کہ میں نے بیہ حدیث (بوجوه) ایک مدت تک (این بھائی) حسین سے چھیائے رکھی پھراس حدیث کومیں نے حضرت حسین کے سامنے بیان کیا تو معلوم ہوا کہ مجھ سے بھی پہلے حضرت حسین کی رسائی اس حدیث تک ہوچکی تھی۔وہ اپنے ماموں سے اس حدیث کے بارے میں خود دریافت کر چکے تھے (بلکہ) یہ بھی معلوم ہوا کہ وہ اینے والد (حضرت علیٰ ) ہے بھی حضورا قدس سالیہ کے گھر کے اندراور گھر سے باہر کے طور طریقے اور دیگرعادات واطوار کے سلسلے میں معلوم کرچکے تھے اور قابل بیان چیز نہیں چھوڑی تھی چنانچ حضرت حسین کتے ہیں کہ میں نے اینے والد سے حضور اللہ کے درون خانہ حالات دریافت کئے تو انہوں نے فرمایا کہ نبی کریم ایک جب مکان کے ائدرتشریف لے جاتے تو اوقات کو تین حصوں میں تقسیم فرماتے تھے۔ایک حصہ اللہ تبارک وتعالی کے لئے مخصوص فرماتے، دوسرا حصہ اہل خانہ کے حقوق کی ادائیگی کیلئے

پھراپ جھے کو دوحصوں پراپ اور لوگوں کے درمیان تقسیم فرماتے سے۔ (اس طرح افادہ عام کیلئے) خواص صحابہ کے ذریعے اس جزء کوعوام تک پہنچادیتے سے اورعوام وخواص سے کوئی چیز پوشیدہ نہیں رکھتے سے (بلکہ ہرمتم کا افادہ عام فرماتے سے ) امت کے اس جزء میں آپ آلیک کا طریقہ بیرتھا کہ اہل علم وضل

اورتیسراحصه خوداینے راحت وآ رام کیلیختص فرماتے تھے۔

کو (طاقات کی اجازت) میں دوسروں پرتر نیچ دیے تھے۔اورد بی وعلمی فضیلت کے اعتبار سے اس وقت کو اہل فضل پر تشیم کیا کرتے تھے۔اہل فضل میں سے کوئی تو ایک ضرورت لیکر حاضر ہوتا اور کوئی دو کام لیکر آ تا اور کوئی متعدد حاجات لیکر پیش ہوتا۔

آپیالیہ ان کی حاجت براری میں معروف ہوجاتے اور ان کو بھی ایسے امور میں مشخول فرماتے جوخود ان کیلئے اور دیگر امت کیلئے مفید ہوں بسبب صحابہ کرام کے مشخول فرماتے ہو خود ان کیلئے اور دیگر امت کیلئے مفید ہوں بسبب صحابہ کرام کے سوال اور نبی کر پھالیہ کی طرف سے مناسب جواب کے آپ اللہ ہو گئے یہ بھی فرماتے کے رہم سے استفادہ کرنے والے ) حاضرین غائب لوگوں تک پنچادیا کریں۔اور فرماتے کہ اُن ضرور تمندوں کی حاجت فرماتے کہ اُن خود کی ایسے مخص کی حاجت فرماتے کہ اُن خود کی ایسے مخص کی حاجت بہنچا تا ہے جوخود اپنی حاجت اس تک نہیں پہنچا سک تو اللہ تعالی قیامت کے روز اس کو کہ بنچا تا ہے جوخود اپنی حاجت اس تک نہیں پہنچا سک تو اللہ تعالی قیامت کے روز اس کو کہ بنی است قدم رکھیں گے۔حضور اقد سے اللہ کی اس نبی (مفید) باتوں کے علاوہ کی وکئی بات تھے۔ صحابہ کرام آ ہے بھولیہ کی مجلس میں طالب (خیر وارشاد) بن کرآ سے اور وہاں سے بغیر کی چھے نہیں ملتے تھے مجلس سے نکلتے وقت یہ لوگ رہنما بن کر نکلت۔ اور وہاں سے بغیر کی چھے نہیں ملتے تھے مجلس سے نکلتے وقت یہ لوگ رہنما بن کر نکلت۔ اور وہاں سے بغیر کی چھے نہیں ملتے تھے مجلس سے نکلتے وقت یہ لوگ رہنما بن کر نکلت۔ لیے رہنما۔

حضرت حسین کہتے ہیں کہ پھر میں نے اپنے والد سے حضوراقد سے اللے کی خارجی زندگی کے بارے میں پوچھا کہ گھر کے باہران کے طور طریقے کیے ہے تھے قو حضرت علی نے جواب دیا کہ آپ اللے بامقصد باتوں کے سوااپی زبان کی حفاظت فرماتے تھے۔ اور (لا یعنی با تیں نہیں کرتے تھے) وہ اپنے صحابہ میں الفت و محبت پیدا فرماتے تھے۔ اور ہرقوم کے عز تمندا شخاص کو خصوصی عزت دیتے تھے اور انہی کو ان کے قوم پر عہدہ دار بنادیتے تھے۔ اس کو اس قوم پر متولی بناتے تھے۔ لوگوں کو (عذاب اللی سے دار بنادیتے تھے۔ اس کو اس قوم پر متولی بناتے تھے۔ لوگوں کو (عذاب اللی سے

یا دوسرے بدقماش لوگوں سے ) ڈراتے تھے(۱) اورخود بھی لوگوں سے بچنے کی کوشش فرماتے۔

296

بایں ہمکسی کوبھی اپنی خندہ پیشانی اورخوش اخلاقی سے محروم نہیں رکھتے تھے۔ غیر حاضر ساتھیوں کے مارے میں در مافت فرماتے تھے۔لوگوں کے حالات کے پارے میں لوگوں سے یو چھتے تھے۔ان کے اچھے کاموں کی تحسین اور تائید وتقویت فرماتے اور بری باتوں کی مذمت کر کے ان کا از الہ فرماتے تھے۔ آپیاہیے اینے کاموں میں اعتدال سے کام لیتے تھے اور اختلاف (افراط وتفریط اور رنگارنگی) سے بچتے تھے۔آ پہانچہ لوگوں کی اصلاح سے غافل اور بے فکر نہ بنتے۔اس خوف کی وجہ سے کہ پھروہ بھی دین سے عافل ہو جا ئیں گے۔ یا پھر بے اعتدالی کی وجہ سے دین ہے اکتاجا ئیں گے (یاتن آسانی کا شکار ہوکردین چھوڑ دینے ) ہرکام کیلئے آپ اللہ کے باس خصوصی تیاری تھی۔ حق کی اقامت میں بھی کوتا ہی نہ برینے دیتے نہ ق سے تجاوز فرماتے۔جولوگ آپ آلینہ کی قربت اختیار کر چکے تھے وہ لوگوں میں سے سب ہے بہتر اشخاص تھے۔ آپ آلیہ کے نز دیک وہی شخص سب سے افضل تھا جس کی خیرخوا ہی سب سے زیادہ لوگوں کے لئے ہوتی۔اورسب سے عظیم المرتبہ مخص وہ ہوتا تھا جولوگوں کی موّ اسات وغمخواری اور ان کی معاونت میں سب سے بڑھ کر ہو۔ حضرت حسین کہتے ہیں کہ پھر میں نے اینے والد سے نبی کریم اللہ کی مجلس کے بارے میں دریافت کیا تو انہوں نے بتایا کہ نبی کریم اللہ تعالیٰ کی ذکر کے ساتھ ہی اٹھتے اور ذکر کے ساتھ ہی بیٹھتے۔اور جب کسی مجمع میں تشریف لے جاتے تو جہاں

(۱) بیز جمهاس صورت میں ہوگا کہ بحدّ رکا صیغہ ذال کی تشدید کے ساتھ باب تفصیل سے ہواورا گریڈ ٹلاثی مجرد سے ہوتویاء اور ذال مفتوح ہوئے اور مطلب یہ ہوگا کہ آپ ﷺ بد قماش لوگوں سے بچتے۔ یوں بعد کا جملہ محض تا کید کیلئے لایا گیا ہے۔ ولیرا جح الی الشروح فات فی اللفظ احتمالات وروایات (اصلاح الدین)

تک (بلاتکلف) رسائی ہوتی و ہیں بیٹھ جاتے تھے۔اورلوگوں کوبھی اس کاحکم فرماتے تھ (کہ جہاں پر جگہ ملے بیٹھیں) اینے ہم نشینوں میں سے ہرایک کواس کے استحقاق کے مطابق حصہ دیتے تھے ان کا کوئی ہم نشین بنہیں سمجھتا تھا کہ (حاضرین میں سے) کوئی شخص اس کی نسبت نبی کریم الله کے ہاں زیادہ قابل احر ام ہے۔ جو خص آ سیاللہ کے پاس بیٹھایاکسی ضرورت میں آ سیاللہ سے مراجعت کرتا۔ تو نبی كريم الله المينان اوريكسوئى كے ساتھ اس كے ياس بيٹھے رہتے يہاں تك كدوه محض خود بى واپس چلا جاتا \_اور جو محض آيالية سے كوئى چيز ما نكما تو آيالية اس کی مطلوب چز بخشش فرما کراہے لوٹاتے۔ یا پھر شائسۃ کلام کے ساتھ اسے واپس فرماتے۔ آپ اللہ کی خندہ روئی اور کر پمانہ اخلاق متمام لوگوں کیلئے تھی۔ سوآ سیالیہ امت کے لئے باپ کی طرح تھے اور سب لوگ حقوق کی وصولیاتی میں آپیافیہ کے ہاں برابر تھے۔

آپيالية كېلىملىم، حياء،مېراورامانت كىمجلس ہوتى تقى \_اس ميں ايك دوسرے برآ وازیں بلندنہیں کی جاتی تھیں نہاس میں کسی کی حرم بر تہتیں با عدهی جاتی تھیں نہاس مجلس میں صادر ہونے والے لغزشوں کی تشہیر کی جاتی تھی۔اہل مجلس سب کے سب آپس میں برابرشار ہوتے تھے۔البتہ تقویٰ کی بنیاد بران کوایک دوسر بے برفضیلت حاصل ہوتی تھی حالت بیتھی کہ وہ ایک دوسرے کے لئے عاجزی اختیار کرتے تھے۔صحابہ کرام آپ یا تھے۔ کی مجلس میں بردوں کی عزت کیا کرتے تھے۔ چھوٹوں پرشفقت کرتے تھے حاجت مندوں کواینے اوپرتر جی دیتے تھے اور مسافروں کی رعایت وا کرام کیا کرتے تھے۔

حفرت جميع بن عمير: حدّثناجميع بن عمير عمي تفغير كے صيغه كے ساتھ يرها جاتا ہے۔اس کے والد کا نام بھی مصغر ''عمیر'' ہے۔ یہاں بعض شخوں میں 'عمر'' اور بعض میں 'عمرو'' آیا ہے بیدونوں درست نہیں ہیں (۱) زوج خدیجة بیابو ہالہ سے بدل واقع ہوا ہے۔ نہ کدرجل من بی تمیم سے۔ عن ابن لابسی هاللة ابو ہالہ کے بیٹے سے بہاں اس کے بوتے مراد ہیں۔ اس کا نام عمر ہے جبکہ ملامیرک نے اس کا نام میر ہیں۔ اس کا نام عمر ہے جبکہ ملامیرک نے اس کا نام میر بند تلایا ہے۔ جبکہ اس کے والد کا نام بھی میند بن ابی ہالہ ہے بلکہ ابوعبید نے تو ابو ہالہ کا نام بھی میند بتایا ہے یوں اس راوی اس کے والد اور اس کے دادا تیوں کا ایک بی نام بنتا ہے (۲)۔ باب خلق النی ایک ایک بی ساتویں حدیث میں اس سند کا تفصیلی ذکر موجود ہے۔ میندین ابی ہالہ نبی کریم ایک کے یا لک بیٹے اور حضرت خدیج کے بی سے دورت شام کی ساتویں حدیث میں اس سند کا تفصیلی ذکر موجود ہے۔ میندین ابی ہالہ نبی کریم ایک کے یا لک بیٹے اور حضرت خدیج کے بی سے بیں۔ یہ حضرت شاخ کے سوتیلے ماموں لگتے ہیں۔

و کان و صافاعن حلیة رسول الله علیه الله علیه الله علیه کی باریک امول حضوراقد سی الله کی کی وشاہت کی باریک اور باریک سے باریک عادات وصفات بیان کرتے سے گویا وہ اس علم شاکل کے سپیشلٹ سے و انسا اشتھی ان یصف لمی شیئا منها دوسری جگداس کے ساتھا یک جملہ اور بھی ہے کہ اُتعلق به این میرے نانا جان کی عادات واخلاق کی تفصیل معلوم کروں اور بیاس لئے کہ میں ان باتوں کو جمت اور سند بتا و است ہو جاؤں۔ تا کہ اگر ممکن ہوتو اسے اپنے اندر بیدا کرنے کی کوشش کروں گویا صحابہ گاسوال بھی اور علم بھی برائے علم نہیں بلکہ علم برائے عمل تھا۔

حضرات حسنین کی مسابقت: حضوراقدس الله کے وصال کے وقت حسن اور حسین دونوں بھائی چھوٹے تھے۔ حسن اور حسین دونوں بھائی چھوٹے تھے۔ حسن کی عمر سات سال کی تھی اور حسین کی اس ہے بھی کم تھی۔ تو حضور الله کی وصال کے بعد اجلہ صحابہ تے پاس جاجا کر دونوں بھائی تفصیلات معلوم کیا کرتے تھے۔ اس میدان علی دونوں بھائیوں علی مسابقت رہتی تھی جب کے علم اور دین عیں یہ مسابقت اور بیر ص ورشک محمود ہے تو ہر بھائی یہ چاہتا تھا کہ میرے پاس حضوراقد سے الله کی کچھا تھیا ذی معلومات ہوں اور عیں فرسٹ آجاؤں۔ چنا نچرا کی حصہ میرے پاس حضوراقد سے الله کی کچھا تھیا ذی معلومات ہوں اور عین فرسٹ آجاؤں۔ الغرض حضرت ہند سے ایک نے دوسرے سے حدیث چھپائے کہ گئی تا کہ اسے دوسرے نمبر پر لے جاؤں ۔ الغرض حضرت ہند (ا) جمیع بن عمید بین عبدالسر حسمن العجلی ابوبکر الکو فی ضعیف دافضی من الثامنة (تقریب ارک خابل کے کہ اس کے والد کااصل نام تو عمرتھا چونکہ یہ غالی شیعہ تھا لہٰذا اس نے انزود والد کانام تبدیل کر کے عمر کردیا تا کہ عمرفاروں گاہمام نہ ہو۔ کہا قال المناوی ار ۱۸۳۰ (اصلاح الدین)

نے حضرت حسن گویہ صدیث سنائی کہ کان رسول اللہ علیہ فضماً مفتحماً وہ اپنی ذات میں بھی عظیم تصدالی سے اور لوگوں کے اوپر بھی چھا جاتے تھے۔ الی عظمت وشوکت اور دوبر بداللہ تعالی نے دیا تھا۔

یتلاً لا وَجههٔ تلا لؤ القمر لیلة البدر جیسے چودھویں کا چا مدروش ہوتا ایسے چہرہ انور چکٹا تھا۔
اوراس بارے میں علاء کا انفاق ہے کہ حضور اللہ کے ان کاس میں کوئی مبالغہ آرائی یا شاعرانہ تخیلات نہیں بیں۔ جہاں حضور اللہ نے پورے سن بیں۔ جہاں حضور اللہ نے پورے سن بیں۔ جہاں حضور اللہ نے پورے سن وجمال کوظا ہر بھی نہیں کیا کیونکہ پھر نگا ہوں میں دیکھنے کی تاب نہ ہوتی۔ صحابہ کرام طمرف انہی جلوؤں میں مدہوش ہوجاتے تو تعلیمات نبوت کو کیے کھوظ و محفوظ رکھتے۔ در حقیقت فرکورہ تشبیبات صرف تمثیلات ہیں اس سے کہیں ہو ھر کرحضور اللہ کا حسن و جمال تھا۔ مثلاً چا تم کود کھنے والے صحابی کی ایک نظر چا تم ہر دوسری کرنے آنور پر ہوتی ہے تو قتم کھا کر کہتے ہیں کہ چہرہ انور چا تدسے ہڑھ کر حسین تھا۔ سورج تو گویا آپ اللہ کو کرنے چہرے کے اندر ہی جاری وساری ہے۔ یہ روایات وضاحت سے اس بات کی دلیل ہیں کہ نبی کریم اللہ کے کہرہ صورج چا تدسے زیادہ حسین تھا۔ فیڈ کو المحدیث بطولہ وہ تفصیلی حدیث اس کتاب کریم مقرق ذکر کیا گیا ہے چھرصہ پہلے باب میں اور چھرد سے ابواب میں لائے گئے ہیں۔

ق ال الحسن فكتمتها الحسين زمانا من في وه صديث البيخ بها لى حسين سا يك عرصه تك چهيائ ركان كارول كاتو مجص فضيلت اوراوليت حاصل موكى (١) -

شم حدثته فوجدته قد سبقنی الیه گرمجھ سے صبر نہ ہو سکا کہ صحابطم کو چھپاتے ہیں تھے (۱) اس مدیث کو پوشیدہ رکھنے میں شراح نے اور بھی حکمتیں بتائی ہیں۔ مثلاً اول یہ کہ اپنے چھوٹے بھائی حضرت حسین کا امتحان لین مقصودتھا کہ وہ از خود خصیل علم کا شوقین بھی ہے یا نہیں۔ دوم یہ کہ حضرت حسین کو یہ موقع فراہم ہوجائے کہ وہ اس صلیہ کوسند عالی سے لیخی خود ماموں سے حاصل کرے۔ سوم یہ کہ حضرت حسین کی طرف سے طلب اور استفسار کا حضرت حسین کی طرف سے طلب اور استفسار کا حضرت حسین کی طرف سے طلب اور استفسار کا حضرت حسین کی از قادی کا قریباؤں گا۔ کیونکہ جو چیز طلب کے بعد حاصل ہوجائے وہ زیادہ قابل قدر ہوتی ہے۔ (اصلاح الدین)

ایک دن بیصدیث بیان بی کردی حسین گویس نے بتادیا کہ میرے پاس ق ناناجان کی بیصدیث بھی ہے۔
حسین نے ن کرکہاارے بھائی تم کس گمان میں ہو جھے قو تم سے بھی پہلے بیصدیث مبارک حاصل ہوئی اور
اس سے بڑھ کر جھے اور بھی معلومات ہیں۔ ماموں جان ہنڈ کے علاوہ میں نے تو ابا جان حضرت علی سے بھی
اس سے بڑھ کر جھے اور بھی معلومات ہیں۔ ماموں جان ہنڈ کے علاوہ میں نے تو ابا جان حضرت علی سے بھی
اس تم کی با تیں پوچھی تھیں فیسالہ عدم اسائلتہ فو جدته قد سال اباہ عن مدخلہ وعن مخوجه
المنے ، انہوں نے تو اپنے والد سے پوچھ لیا تھا کہ حضور تھا ہے کی داخلی زندگی (مرضل) گھریلوزندگی ، بیوی بچوں
کے ساتھ رہنا، خلوت کی زندگی ، نجی زندگی کیسی تھی نیز (مخرج) خارجی زندگی عوامی زندگی سٹیج کی زندگی جلوت کی زندگی کیسی تھی۔

وشکله شکل وصورت مراد نہیں بلکہ شاکلہ بمعنی المطریقة المسلوکة ہے۔ تمام طور طریقے اس میں آگئے۔فلم یدع منه شیئا ضمیر حضرت علی گورا جع ہے یعنی انہوں نے کوئی چیز بیان کرنے میں نہ چھوڑی۔ یا پھر حضرت حسین گورا جع ہے یعنی حضرت حسین نے کوئی بات پوچھنے سے نہیں چھوڑی تھی جواسے محفوظ نہ ہو۔ خاکل زندگی کے بارے میں بھی پوچھا، باہر کی زندگی تو صحابہ کرام گومعلوم ہی تھی۔

 وجرتعارف اور ذوق عبادت: ایک صحابیه خاتون (۱) حضویتالیه کے گھر میں حاضر تھیں کہ حضور اقد سے اللہ تشریف لائے تو حضرت عائشٹر نے عرض حضور اقد سے اللہ تشریف لائے تو حضرت عائشٹر نے عرض کیا کہ حضور اللہ تھیں گذارتی اور جاگتی ہے۔ اور ساری ساری رات عبادت میں گزارتی اور جاگتی ہے۔

گویا صحابہ گے ہاں تعارف بھی ان چیز وں (عبادت) سے ہوتا تھا۔ یہ نیس کہ یہ فلان نواب ہے یہ فلان جا گیردار ہے یہ فلان افسر ہے بیڈ کی کی ادرا ہے کہ اتن نما زیڑ ھتا ادرائے روز رکھتا ہے انتاج ہاد کیا ہے یہ اعمال یہ عبادات وہ کرتا ہے یہ با تیں صحابہ کے لئے قابل اہمیت اور ذریعہ تعارف تھیں۔ تو فرمایا یہ بے چاری صحح تک جاگتی ہے اور پلک تک نہیں جھی تق بلا عبادت میں ہی مصروف رہتی ہے۔ حضو ما ایک بیل تو سوتا بھی ہوں اور عبادت بھی کرتا ہوں۔ بیوی کا بھی تم پرتن ہے، آگھوں کا بھی تم پرتن ہے۔ تہمار نفس کا بھی تم پرتن ہے۔ جہم اور آگھوں کا بھی تم پرتن ہے اور ان کوآرام کی ضرورت ہے تہمیں ہر چیز اعتمال پر کھنی ہے۔

رہانیت کی سیاہ تاریخ: ورندر ہانیت ہوجائے گیجس کی ہوئی سیاہ تاریخ ہے اور جو بھی فطرت کے خلاف طریق کے خلاف طریق اختیار کئے جا کیں جوفطرت کے ساتھ نہ چل سکیں تو ان کا ردم کی آگے چل کرنہایت شدید ہوتا ہے رہانیت بھی آگے چل کرفیاشی اور بے حیائی کاعظیم ذریعہ ہنا۔

سیکلیسائی نظام یہ پاپائیت اس کی ایک بھیا تک شکل ہے۔ تو حضوراقد سی اللہ فرماتے ہیں کہ میں تو سوتا بھی ہوں ، میں تو کھا تا پیتا بھی ہوں ، میں تو ہوفت ضرورت بازاروں میں جا تا ہوں ، میں تو تو شادیاں بھی کرتا ہوں یہ تو کوئی کمال کی بات نہ ہوئی کہ انسان زندگی سے فراراختیار کر لے اور غاروں میں بیٹے جائے۔ اسلام میں تبتل اور رہبا نیت کی گنجائش نہیں ۔ کوئی بھو لے بھالے ہزرگ ہوں تو آتے ہی گھر میں ایک طرف بیٹے جاتے ۔ بیوی بچوں سے کہتے کہ جاؤ آ رام کرو جھے تو عبادت ہی سے فرصت نہیں ۔ میں ایک طرف بیٹے جات کے الفاظ میں میں ایک میں ایک میں ایک اللہ علی میں اللہ علی کریم اللہ علی کے الفاظ اللہ علی میں اللہ علی اللہ علی میں اللہ علی میں اللہ علی میں اللہ علی میں اللہ علی اللہ علی میں اللہ علی اللہ علی میں اللہ علی علی اللہ علی اللہ علی اللہ علی اللہ علی علی اللہ علی اللہ علی الل

ساری رات میں نے عبادت میں گزار نی ہے ساراوقت تبلیغ ہی کے لئے ہے۔ نہیں بلکہ حضوراقد سے اللہ علیہ علیہ حضوراقد سے اللہ علیہ علیہ علیہ حصوراقد سے اللہ علیہ علیہ علیہ علیہ علیہ علیہ کا ، ایک حصہ اللہ تعالی کا ، ایک حصہ اللہ عیال کیلئے تا کہ بیوی بچوں سے پیار کی با تیں ہوں ان کی دلجو ئی ہو۔ ان کی ضرور بیات وحوائج معلوم کی جا ئیں۔ گھر کے مسائل پر بات چیت کی جائے اور انہیں نمٹا یا جائے۔ 'و جے ز ہ کے لفسسہ ''یعنی ایک حصہ اپنے لئے مخصوص فر ماتے یعنی آرام ، سونا اور قیلولہ۔ پھر اپنے حصہ میں حتی الوسع ایٹار فر ماتے اور کوشش کرتے کہ کچھاوقات و کھات اس سے بھی امت کی صلاح و فلاح کے کاموں میں صرف ہوں۔

اصلاح امت کی فکر:

ثم جزء ه بینه و بین النّاس فیر دذلک بالخاصة علی العامة، اس این حصر کو بی دوصو سی شرخ ایا یعن اس کا آ دهاصة بھی باقی لوگوں کے درمیان تشیم فر بادیت اس کا آ دهاصة بھی باقی لوگوں کے درمیان تشیم فر بادیت اس کا آدهاص کے ذریعہ سے اس وقت کے علوم اس کے درمیان تشیم فر بادی کے درمیان تشیم فر بادی کی خوصوص سی میں اس کو بینی حضور الله کی تو ساری زعر گی است کیلیے تھی۔ زعر گی است کیلیے تھی۔ زعر گی است کیلیے تھی۔ اس کے جیب محفن میں گر اردی۔ کر حصت سے ، اعمر اعمر اعمر اعمال ہوجائے است کی مند آرام ، ندراحت ، یہاں تک کہ الله تعالی نے ایک بیگر خود ذکر کیا کہ لمعلم کی بساخت نفسک کیاتم غم سے اپنا گلم گھو شمنا چا ہے ہو۔ است کی فکر میں ایسے کر صحت ہو۔ ایسا غم کرتے ہو کہ جہیں تو بیسا پھندا لگ گیا ہو۔ جیسے کی شدیغ کی وجہ سے بااوقات گھٹ کرآ دمی مرجا تا ہے۔ نہ کچھو فکل سکتا ہے نہ استاغ کی موجو سے بیا اوقات گھٹ کرآ دمی مرجا تا ہے۔ نہ کچھو فکل سکتا ہے نہ اتناغ کیوں کرتے ہو تو اتنی فکر تھی حضور الله کے واست کی۔ اس لئے اپنے بات چیت کرسکتا ہے اور شدیغ کی وجہ سے بیا اوقات بھی بانٹ لیا کرتے تھے کہ چلئے اس میں سے بھی کچھو وقت بی فور گا انسان کی بھلائی میں ترام کے اوقات بھی بانٹ لیا کرتے تھے کہ چلئے اس میں سے بھی کچھو وقت بی فور گا انسان کی بھلائی میں حضرت عرف آتے ہیں مورت یہ ہوتی کہ دورت ابو پکر آتے ہیں، حضرت عرف آتے ہیں کوئی کی فور بی میں میں سے دورت ابو پکر آتے ہیں، داری والے صاحب ہیں۔ ضرورت ہوتی کہ دو بات ہوتی وہ کیا ہوگی؟ ای است کی صلاح کی صلاح وفلاح سے ایک ایک کو بلاتے اس طرح ان سے بھی جو بات ہوتی وہ کیا ہوگی؟ ای است کی صلاح وفلاح سے ایک ایک کو بلاتے اس طرح ان سے بھی جو بات ہوتی وہ کیا ہوگی؟ ای است کی صلاح وفلاح سے ایک کی طلاح سے سایک ایک کو بلاتے اس طرح ان سے بھی جو بات ہوتی وہ کیا ہوگی؟ ای است کی صلاح وفلاح سے سے ایک کی طلاح سے ایک کی طلاح سے سایک کو بلاتے اس طرح ان سے بھی جو بات ہوتی وہ کیا ہوگی؟ ای است کی صلاح وفلاح سے سے ایک کی طلاح سے سے ایک کی کو بلاح سے ایک کی طلاح سے سے ایک کی طلاح سے سے ایک کی طلاح سے سے ایک کی طلاح کی صلاح وفلاک سے سے ایک کی کو بلاح کی اس کی کی سے سے ایک کی خوار سے کو بی سے مورد سے بی کی کو بلاح سے سے ایک کی کی طلاح سے سے س

متعلق امور ہی ہوں گے۔ تو وہ وقت بھی اس طرح بٹ جاتا اور ان کے واسطے سے ساری امت کو پہنچ جاتا جواب قیامت تک مستفید ہور ہی ہے۔

و لایدخوعنهم شیئا ،اور حضوراقد سین الله کوئی چیز امت سے اور لوگوں سے چھپا کرنہیں رکھتے ہے بیا کی باطل تصور ہے بعض لوگوں اور فرقوں کے ہاں مشہور کہ ہمارے پاس مخصوص اسرار وعلوم ہیں ایسا ہم گرز نہ تھا حضو ویلی کے مل کی بات مخفی نہ رکھتے تھے۔ علوم الہٰیہ علوم دینیہ سب عام ہوتے۔ دوسرا مطلب اس جملے کا یہ بھی ہے کہ گھر میں جو کچھ بھی ہوتا کسی نہ کسی چیز سے ملاقاتیوں کی تواضع فرماتے۔ ادخار اور ذخیرہ اندوزی نہ فرماتے کہ یہ چیز کل میرے کام آجائے گی بلکہ جوآیا حضو ویلی ہے نہ فرماتے۔ ادخار اور ذخیرہ اندوزی نہ فرماتے کہ یہ چیز کل میرے کام آجائے گی بلکہ جوآیا حضو ویلی ہے نہ وقت میں تربانی میں تقسیم کردیا خرج کردیا۔ و کان من سیرت فی جزء الامة ایشار اهل الفضل باذنه وقسمہ علی قدر فضلهم فی اللدین ، اس خاص وقت میں یا پھر عام وقت میں جوملاقاتوں کی تر تیب ملحوظ رکھنی ہوتی سینکر وں کا ہجوم ہوگا۔ کھلے بندوں ہر شخص بات بھی نہیں کرنا چاہتا تو ملاقاتیوں کی تر تیب ملحوظ رکھنی ہوتی ہے۔ اس حکمت عملی کوآ سے میں اللہ تے۔

فرق مرات : تو صنوط الله فرق مرات محوظ رکھتے۔ ایک ایک و بلاتے سے بینہ تھا کہ جو پہلے آیا وہ پہلے ملا بلکہ 'ایشار اہل الفضل اللع ''جونضیلت والے سے علم میں تقوی میں دین میں اور جواسلام کی خدمات اور قربانیوں میں بڑھ کر سے اس کا مقام علمی لحاظ سے اونچا ہے۔ فضل کے معنی دنیاوی معیار نہ ہوتا بلکہ اہل فضل ہوتے اللہ والے کے لوق کی بھلائی کے لحاظ سے جس کا جتنا اونچا مقام ان چیز وں میں ہوتا تھا ملئے میں ان کور جج دیتے سے پھر ملاقات کا وقت بھی اسی مناسبت اور مرتبہ کے لحاظ سے طے ہوتا۔ یہ نہیں کہ ہر ہمہ شاسب کودودومنٹ بلکہ جس کا مقام اور فضل جتنا اونچا ہے اس کودقت بھی زیادہ ماتا جو کم ہے تو کم وقت یا اس کے مسائل کم ہیں تو کم اور زیادہ ہوتے تو زیادہ وقت کسی دین میں میں کہ باتا تو زیادہ وقت کسی ذاتی مسئلہ میں آیا ہے تو منٹوں میں نمٹالیا جاتا۔ تو فضیلت فی اللہ بین اور ضرور بات کے لحاظ وہ وقت تقسیم ہوتا۔

فمنهم ذوالحاجة ومنهم ذوالحاجتين ومنهم ذوالحوائج كسى كے پاس ايك فائل محمد في الحاجة ومنهم دوائل ميں۔ كوئى بہت كى حاجتيں كرآيا ہے۔ كوئى كم اورامت كے سارے مسائل

ضروریات اور حاجات کی مرجع آپ آیاتھ کی ذات تھی تو وہ مسائل کے بلندے لے کرآتے مگر حضور علیہ کوکوئی نا گواری محسوس نہ ہوتی نہ ہی کہ اس وقت صرف ایک درخواست پیش کرنی ہے بلکہ سارے مسائل اور ماجات پیش کرنے کی اجازت ہوتی۔ فیتشاغل بھم ویشغلهم فیمایصلحهم والامة ،الامة كالفظ عام ہے۔ حاضرین حاجت مندوں کو بھی شامل ہے اور قیامت تک آنے والی انسانیت کو بھی تو پیعطف العام علی الخاص کے قبیلے سے ہے تا کہ شمول وعموم مستفاد ہو۔ پس حضور اللہ یوری توجہ سے ان کے ساتھ مشغول ہوجاتے پھران کوایسے کاموں میں مشغول رکھتے کہ جن سےان کوفائدہ ہو۔ان کی اصلاح ہوتی ہو اوران کے ذریعہ ہے آ گے چل کرساری امت کی بھی اصلاح ہوتی ہو۔ دنیاوی دھندوں، سپر وتفریح، فضول كي شب اورتيشات مين صحابة ومصروف نه جونے ديت اور سربراه مملكت ايبا ہى باہر جاكركرتے ہيں وفد ساتھ ہوتا ہے اگر چندمن بھی ہوتے ہیں تو برے لوگوں کے ہالمث (Limit) لینی محدود وقت ہوتا ہے تو صدرصدر کے ساتھ مذاکرات میں مصروف ہوجا تا ہے۔وزیر خارجہ،وزیرخارجہ کے ساتھ اور ہرشعبہ کا سر براہ اپنے شعبوں سے متعلقہ افراد کے ساتھ مذا کرات میں مصروف ہوجا تا ہے تا کہ اس دورے سے زیادہ سے زیادہ فائدہ اٹھایا جائے۔تو حضور ﷺ کے پاس اتناوقت تو نہ تھا کہ کوئی آیا تو گپ شپ اور لا لیعنی باتوں میں گئے رہیں بلکہ یک دم کام کی باتیں شروع ہوجاتیں اوروں کیلئے بھی یہی تھم تھا کہ جن چیزوں میں تمبارا فائده مورانبي باتول ميس كيرموراوروه باتيس سنتم كي مواكرتي تحيس؟ من مسئلتهم عنه واخبارهم بالذي ينبغي لهم ابعض شراح نيمن كوبياني قرارديا بيتوبيبيان بمايصلحهم كيلئ مطلب یہ ہے کہامت کی بہبود اور دین و دنیا کی سرخروئی کی باتیں سب کا مشغلہ ہوتی تھیں۔ وہی جوصحابہ آ ہے اللہ سے دریافت فرماتے تھے اور آ ہے اللہ ان سائلین کے احوال واستفسارات کے مطابق جوابات مرحمت فرماتے تھے لیکن علامہ ابن حجرؓ نے اس کور دکرتے ہوئے کہا ہے کہ یہاں من تعلیلیہ ہے۔مطلب میہ ہے کہان امور کی افادیت صحابہ کرامؓ کے سوال اور آپ آلیکھ کی طرف سے جوابات کی وجہ سے ہے۔ ظاہر ہے کہ صحابہ کرام دینی امور کے بارے میں حضور علاق سے سوالات کرتے اور حضور علاق ان کوان طریقوں ہے آگاہ کرتے جوان کیلئے لینی امت کیلئے زیادہ مناسب ہوتے تھے اور جن میں ان کی بھلائی ہوتی۔

ويقول ليبلغ الشاهد منكم الغائب ، پرريجي تاكيوفر مات كجوكام كى ياتس تهميس معلوم ہوئیں۔مسائل کا جوحل معلوم ہوا، جوعلم حاصل کیا۔ یہ چیزیں جن تک نہیں پینچیں ان تک بھی پہنچا ؤ۔ بیلم اييخ ساته مخصوص ندر كھو۔شاہد يعني جو حاضر ہيں عالم ہيں وہ غائب تك پہنچا ئيں۔اگر صحابہ كوريتكم نه ہوتا اوراس يمل نه كرتے توبير عديث ہم تك نه پنجتي اوريبي درحقيقت 'يشے لهم في مايصلحهم والامة" كى اجم ترين صورت بي كم پينجبرك وارث بن كراس كى تعليمات كى اشاعت كرين ـ چرفرمایاوابلفونی حاجة من لایستطیع ابلاغها ، طلاقاتول کو بھی بیتا کیدفرماتے کہ جوبے چارے دور ہیں کسی مجبوری کی وجہ سے اپنی ضروریات مجھ تک نہیں پہنچا سکتے تو جب تم لوگ میرے ماس آیا کروتو ا پسے لوگوں کی ضروریات ومسائل بھی مجھ تک پہنچا دیا کرومثلاً کوئی دورہے، غلام ہے بیار ہے یا پردہ نشین ہے، کوئی ہیت اور رعب یا حیا کے مارے سامنے نہیں آ سکتا۔ تو ان کی ضروریات بھی مجھ تک پہنچا دیا کرو۔ خواه وه دین ضرورت ہویا دنیاوی حاجت۔ ہمارے حکام تواپیے آ دمی کوڈ انٹ دیتے ہیں کتہمیں اوروں کی کیایٹری ہے اپنی بات کرو ۔ گرحضو واللہ ایک ایک کوفر ماتے کہ جہاں جہاں کوئی مختاج ہو، مستحق ہو، مصیبت زده بومسائل كاشكار بوبتوان كے مسائل مجھتك پہنچادیا كرو۔اس لئے كه ف انّه من ابلغ سلطاناً حاجة من لايستطيع ابلاغها اثبت الله قدميه يوم القيامة ،سلطان صرف بادشاه كنيس كتتم برباا ختيار سلطان ہے۔اگرڈی سی ہے،اے سی ہے، گورنر ہےاس کواپینے دائر ہے میں سلطان کہیں گے لیتن تسلط اور اختیار والا ۔اگراس کوکسی نے کسی محتاج وغریب اورضعیف کا مسکد پنجادیا تو اللہ تعالی قیامت کے دن اسے ثابت قدم رکھے گا اسکے بدلے کہ اس نے ڈ گمگانے والوں کو دنیا میں سہارادیا۔ مشکلات کی دلدل سے نکال دیا۔ تواللہ تعالی قیامت کے دن مل صراط پراسے ثابت قدم رکھے گا۔

جائزنا جائزنا جائز سفارش کی نوعیت: یہ سفارش ہے مگروہ سفارش نہیں جوہم کرتے ہیں کہ فلاں کاحق ہے کین اس کاحق مارکراس کودے دیں۔ باتی اگرایک شخص ستحق ہے اور وہاں پہنچی نہیں سکتا۔ اپنا مسئلہ گورنر کے پاس، ڈی سی کے پاس، صدر کے پاس اور آپ سی کی حق تلفی اس سے نہیں کرنا چاہے اور اس کی سفارش کرلیں آپ کے چند جملوں سے اس کا کام ہوجائے تو اس کا اللہ تعالیٰ آپ کو اجردے گا۔ ہم تو سفارش

کامعنی میہ لیتے ہیں کہ فلاں دیا نتدار اور مستحق ہے اس عہدے کیلئے اس کو ہٹا کر دوسرے کو یہ منصب دے دو حالانکہ مستحق کا حق اس کو دینا چاہئے اگر دیا نت دار کوئی اور آ دمی ہے۔ اس کے پاس اہلیت اور سب پھے ہے کیکن تم کہتے ہو کہ بیت فلاں کو دے دو۔ بیسفارش جو ہے فدموم ہے۔ باقی بیسفارش جو حضو و الله الله نے بیان فرمائی اس کی تو ہوئی فضیلت حضو و الله نے خود فرمائی و لایہ ند کے وعندہ الا ذلک ، حضو و الله کے کہاں میں باتیں ہوتی تھیں۔ دنیوی فضول با تیں نہیں بلکہ دین و دنیا کی ضرور س کی اتبیں ہوتی تھیں۔ دنیوی فضول با تیں نہیں بلکہ دین و دنیا کی ضرور کی اور مفید یا تیں ہوتی تھیں۔

و لا بقبل من احد غیرہ ، اور میل جول رکھنے والوں میں سے اس کے علاوہ اور باتیں پند بھی نہ کرتے تھے۔ یہ ماقبل کیلئے تاکیدی جملہ ہے۔ خلاصہ یہ ہے کہ دنیوی باتیں، جہاد کے امور، مملکت کے متعلق امور، وسپلن کے انظامی امور سے متعلق یہ باتیں بھی گناہ ہیں یہ بھی عبادت ہیں لیکن بے ہودہ فضول باتیں اور بے مقصد نہ کرنے ویتے۔ یہ دخلون دُوّادًا، ہرایک طالب بن کر آتا۔ کی نہ کی چیز کا طلب گار۔ کوئی مسائل لے کر آتا، کوئی دین سکھنے کے لئے آتا، روّاد جمع ہے رائد کی رائد کہتے ہیں اس شخص کو جو قافلہ کے آگے آگے کہ کر آتا، کوئی دین سکھنے کے لئے آتا، روّاد جمع ہے رائد کی رائد کہتے ہیں اس شخص کو جو قافلہ کے آگے آگے کہا کر قافلہ والوں کیلئے پانی اور جانوروں کیلئے چارے کی تلاش کرتا ہے۔ یہاں پر حوقافلہ کے آگے آگے اور امت کیلئے مصبط وی اور منج ہمایت سے آب دیات اور زاد آخرت حاصل کرنے آتے روّاد کہا گیا کیونکہ وہ بھی منافع اور حکمتوں کے طالب ہوتے تھے۔

ولا بسفتر قبون الاعن ذواق ، حضور الله سال نه بوت ان ساواله نه جات اگر کچھ چکھا ہوتا۔ ذواق ندوق (چکھی ہوئی چیز) یا مصدر لینی چکھے کو کہتے ہیں جبکہ 'دعن' بعد کے معنیٰ ہیں آیا ہے لینی بعد ذواق۔ اس کے دومطلب ہیں۔ ایک ہیکہ حضور الله کے گریس ہروقت فقر تھا لیکن پھر بھی کسی نہ کسی چیز سے مہمان کی تواضع فرماتے۔ حضور الله کی اتنی غیرت اور حمیت تھی اور مہمان نوازی کا بیعالم کہ خصد الیانی اگر ہے اور ایک کھور ہے کم از کم وہ چکھ لو، کوئی طنے والا ان سے بغیر کچھ چکھے نہیں جا سکتا تھا۔ معلوم ہوا کہ گھر پر آیا ہوا کوئی بھی مہمان ہو۔ اسے اس طرح نہیں واپس کرنا چا ہے۔ اور دوسرا مطلب سے کہ پچھ نہیں جا کہ چکھ دیکھ میں اس کے کہ جاتے تو ذواق علم وہوایت سے کنایہ ہے وہ خالی دامن میں لے کہ جاتے تو ذواق علم وہوایت سے کنایہ ہے وہ خالی دامن آتے اور

دامن جرکے لےجاتے اپنے اپنے ظرف اور اپنے دامن کی وسعت کی بات تھی۔ تو جو کوئی آتا بالکل محروم نہ جاتا کھنہ کھنے کہ حصہ علم کا اور کھر دین کے فائد سے لے کرجاتا۔ ویہ خسر جون ادلمہ اور پھر جب وہ واپس جاتے تو ہرایک ایک عظیم رہنما ہوتا۔ ولیل کا معنی ہے دلالت علی الخیر کرنے والا، ہرایک روشن کا مینار بن کر چلا جاتا۔ فیر اور بھلائی، رہنمائی کی با تیں بیان کرنے والا۔ چنا نچ آپ ایک فرماتے ہیں اصحابی کی کر چلا جاتا۔ فیر اور بھلائی، رہنمائی کی با تیں بیان کرنے والا۔ چنا نچ آپ ایک فرماتے ہیں اصحابی کہ وہ جو کا لئنہ جوم باید ہم اقتدیتم اھتدیتم۔ جبکہ بعض شخوں میں اذلتہ یعنی ذال کساتھ بھی آیا ہے کہ وہ جو ہدایت من لیتے تھے۔ اس کے لئے مرگوں اور قبول کرنے والے ہوتے تھے۔ اس کے لئے گردن نہا دہو جاتے تھے۔ قال سالته عن مخو جعہ فرمایا پھر میں نے ان سے پو چھا۔ حضور اقد سی اللہ کی کوامی زندگی جاتے تھے۔ قال سالته عن مخو جعہ فرمایا پھر میں نے ان سے پو چھا۔ حضور اقد سی قبلہ کی کوامی زندگی وسی حضور قبلہ کے کہا جاتے تھے گھر کے باہر آپ تھا تھی کی معاشرتی اور سیاسی زندگی اور مدیر انہ طرزم کی ک

العنی باتوں سے احراز:

کان رسول الله یخون لسانه الاقی مایعنیه ، حضور الله با برجی اپنی با برجی اپنی با برجی اپنی با برجی اپنی زبان محفوظ رکھتے تصوائے ضروری باتوں کے۔ ' مایعنی' ان باتوں کو کہتے ہیں جن سے کوئی دینی فائدہ ہو یا دغیوی فائدہ ہو۔ یا مقصد باتوں میں تو تو ت گویائی صرف کرتے تے اور لا یعنی (بے مقصد بے کار) باتوں سے اجتناب کرتے تھے۔ زبان کو بیتی خزانہ کی طرح رکھتے تھے۔ زبان تو ایک بیتی خزانہ ہے۔ اس کو بمحمد حضائع نہیں کرنا چا ہے اس کواگر ہم نے سے مصرف پرلگایا تو بہت عظیم چیز ہے اور غلط جگہ پرخرچ کیا تو مضور عیالیہ فرماتے ہیں کہ بعض اوقات انسان گپ شپ میں الی بات کہ جاتا ہے کہ اسے احساس تک خیوں ہوتا اور جہنم کے آخری اور نجی کہ درج میں پہنچ جاتا ہے۔ اکثر لوگ زبان قینی کی طرح چلاتے ہیں کی نہیں ہوتی لیکن کی آبروریز کی کی کی غیبت کی کسی پر تہمت لگائی کسی پر الزام تر اثنی کی ، اس کو پر واہ بھی نہیں ہوتی لیکن تبای کی کارے پہنچ جاتا ہے۔ ایک اور حدیث میں آپ میالیہ نے اس قسم کی باتوں کو حصائد الالنۃ کہا تبای کے کنارے پہنچ جاتا ہے۔ ایک اور حدیث میں آپ میالیہ نے اس قسم کی باتوں کو حصائد الالنۃ کہا ہوں حصد کہتے ہیں کھیت کا شرخ کو، اب گندم جس سے ہم کا شیخ ہیں اسے ہم پشتو میں لور کہتے ہیں لیعن درانتی ہو بیانی کے کنارے کرنے جاور کیا کا ٹتی ہے جشنی عیادات اس نے کی ہیں۔ نمازیں ، روزے ، جی جوا خلاق، ورانتی ہو بیز بان درانتی ہو اور کیا کا ٹتی ہی جوا خلاق، ورانتی ہو تیز بان درانتی ہو اور کیا کا ٹتی ہے جشنی عیادات اس نے کی ہیں۔ نمازیں ، روزے ، جی جوا خلاق، ورانتی ہو تیز بان درانتی ہو اور کیا کا ٹتی ہو جوا خلاق ،

جواعمال جوئیکیاں تھیں وہ کا دیں اس درانتی نے اس وجہ ہے ہم کامیاب نہیں ہوتے کیونکہ جس طرح درانتی چلاتے ہیں تو درانتی چلاتے ہیں تو درانتی چلاتے ہیں استعال کرتے ہیں اور سارے کئے کرائے پریانی چھیر لیتے ہیں تو یہاں حضوراقد سی میلات کے بارے ہیں ارشاد ہے کہ وہ کسی جگہ بلامقصد ایک جملہ بھی نہیں استعال کرتے ہیں۔

ایک سحابی آئے ان کے کپڑوں پر حضور اللہ نے کھرنگ دروغن دیکھا جومردانہ لباس کے ساتھ مردائل کے ساتھ مناسب نہیں تھا۔ جب وہ مجلس سے اٹھ کر چلے گئے تو حضور اللہ نے دوسروں سے کہاتم لوگ اسے سمجھاتے کیوں نہیں تم اسے سمجھا دوتو بہتر ہوگا لینی خودرو ہرو تقیید بھی گوارانہ کرتے (۱)۔

آج کے مولوی صاحب ممبر پر بیٹے ہوتے ہیں اور وعظ میں سب کوایک ہی ڈیٹر سے ہا تک رہے ہیں اور وعظ میں سب کوایک ہی ڈیٹر سے ہا تک رہے ہیں اور گالی گلوچ دے رہے ہیں اس سے کیافا کدہ؟ ہر شخص میں خامیاں تو ہوتی ہیں مجلس میں بیٹے (۱) آپ ایک کی اس خوبی کا بیان قرآن میں مجموع دے قال تعالیٰ: ولو کنت فظا غلیظ القلب الانفضوا من حولک. (اصلاح اللدین)

ہی اسے طحد اور زندیق بنا دیا تو وہ دوسرے دن کیا آئے گا؟ ہرگز نہیں، جب کوئی ملاقاتی آپ کے پاس آیا اور آپ نے پاس آیا اور آپ نے درشت لہجہ میں اور تختی سے اس سے بات چیت کی تو آئندہ وہ آپ کے پاس کیے آئے گا؟ آپ کیے این ایس کیے آئے گا؟ آپ کیے این فرائض سے سبکدوش ہوں گے۔دوسری جگہ جنور اللہ نے ارشاد فرمایا۔

قومی رہنما کا احترام: جس قوم کا جومعزز ہوتا تھا حضور اللہ اے بھی عزت کی نگاہ سے دیکھتے ہارانظام سیاسی اسی وجہ سے ابتر ہے ہنگا ہے اس وجہ سے ہوتے ہیں کسی قوم نے ایک شخص کو اپنا ملک بنایا، خان بنایا، ہمر دار بنایا اسے منتخب کیا اور سارا قبیلہ اس پر راضی ہے کہ یہ ہمار ارہنما ہے جمبر ہے، ہما را نواب ہے یہ ہمارا افسر ہے ادھر ملکی انتظامیہ اسے گھاس نہیں ڈالتی، اس کے برعس حضور اللہ ڈیڈ الیکر قومی معززین کو پس منظر میں جانے پر مجبور نہیں کرتے تھے کہ میں نے جب مکہ فتح کرلیا ہے اور اسلام آگیا تو تم کون ہو ہے جاؤ، اس منصب سے معزول ہوجاؤ۔ ہیں اپنے افراد کوتم پر حاکم بناؤں گا۔ عرب کا نظام قبائلی نظام ہے اور اسلام تھیا تو وہ حضور اللہ کے دیثمن ہوجاتے اور تھا۔ اگر ذرا بھی ان کے رہنما اور سردار کی طرف ٹیڑھی نظر سے دیکھتے تو وہ حضور اللہ تھی کے دیثمن ہوجاتے اور خاسلام پھیا تو کسی قوم کا جومعزز ہے اس کی عزت فرماتے تھے کیونکہ وہ قوم دیکھتی ہے کہ فلاں افسر ہے۔ نہا سلام پھیا تو کسی قوم کا جومعزز ہے اس کی عزت فرماتے تھے کیونکہ وہ قوم دیکھتی ہے کہ فلاں افسر ہے۔

فلاں حاکم ہے۔وہ ہمارےاس سر دارکے ساتھ نمائندگی کا کیا معاملہ کرتا ہے۔ویولیہ علیہ ہ ، پھر جب وہ علاقه مقبوضه بوجاتا تھااورو وضخص شرعاً نااہل نه بوتا قوم نے اسے نمائندہ بنایا ہوا ہوتا تو حضور علیہ بھی اعلان فر مادیتے کہ جماری طرف سے بھی یہی والی ہے کیونکہ سی دوسر ہے کوقو می نمائندے برتر جے دینے سے بڑے فسادات کاخطرہ ہوتا ہے۔مثال کے طور برعرض کرتا ہوں۔ بگلہ دیش () والوں نے منتخب کیا شیخ مجیب الرحمٰن کو، اب انہوں نے اسے معز زسمجھا تو انہوں نے کہا کہ جمارا جا کم اور والی یہی ہوگا اور ادھر سے شور مج گیا کہ ہیں ادھرتم ادھر ہم۔ پھروہ جب کہتا ہے کہ میں یا کستانی ہوں اور یار لیمنٹ ایک ہوگا مجھے اپنی قوم نے چنا ہے تو تم کون ہو مجھے ہٹانے والے۔اس سے سارابحران آیا کتناعظیم بحران کہ یا کتان دو ککڑے ہو گیا۔ پھریہاں صوبہ سرحد میں لوگوں نے ایک پارٹی کو نتخب کیا اور بلوچ تنان میں دوسری کو نتخب کیا اورا دھر بھٹوصا حب نے اعلان کیا کہان کے گورنروں کو میں نہیں رہنے دیتا۔ان کے گورنر ہٹا دیئے۔آپ کو پہتہ ہے کہ دوسراعظیم بحران اس سے شروع ہوا۔اور بیساری رسکشی اب تک جاری ہے ورنہ جمعیت علماء اسلام، عوا می نیشنل مارٹی اور پیپلز مارٹی کا اتحاد ہوتا اورآ کے بیہ بحران نہ پیدا ہوا ہوتا تو سات سال کتنے استحکام اور ترتی ہے گزرے ہوتے ملک کا نقشہ ہی اور ہوتا۔ راتوں رات آرڈرآ گیا کہ فلاں قوم کا حاکم ہٹا دیا گیا۔ بزنجوہٹ گیااورادهروہ ناراض ہو گئے کہ بیکون ہوتا ہے ہم نے جسے چنا ہے۔خراب ہے یاضیح ہے۔ براہے یا اچھاہے۔ابتم بھی اس کوعزت کی نگاہ سے دیکھو۔ یہی صورت اگر حضور علاقہ کے فیصلوں میں ہوتی تو مسلمانوں کا شیرازہ تہس نہس ہوجا تا ۔ توبیر بڑے قیتی الفاظ ہیں' ویکرم کریم کل قوم ''حضور علیہ مرقوم كمعززاورس دار ، خان اور ملك جوان كابر ابوتااس كاحتر امكرت ويوليه عليهم اوراس كو پران کا نگران اور نمائندہ اور والی بناتے کہ چلو بھی گورنر ہے بہی نمائندہ ہے ہمیں بھی منظور ہے۔ جمہوریت ، خوداختیاری اور شخصی دوٹ کا کتنااحر ام کیا۔آپ آفی کا بیروبیا یک ادنی سی جھک ہے ادر سبق ہے کہ ایک قوم نے ایک شخص کو فتخب کیا تو آیان کوعزت کی نگاہ سے دیکھیں۔ جب تک وہ بنیا دی مقاصد کے خلاف نہ ہوتو اور اس کے ساتھ چلتے رہیں تب تو آپ کامیاب ہوں گے۔ اگرآپ نے لاتھی لی کہنیں ایسانہیں 

ہوسکتا۔تو پھروہ سیاست کامیاب نہیں ہوسکتی۔

الله كعذاب سے درانے والا: ویحد درالناس اورلوگوں کو دراتے بھی تھے۔اللہ کے عذاب سے برائیوں سے اورظلم سے کہ اس کے نتائج خراب ہیں۔ بداعمالی کے نتائج خراب ہیں۔ مخاط رہو چورا چکوں سے مختاط رہو، تمام مضرچیز وں سے بھی مختاط رہا کرو۔ ایسے سادہ لوح مت بنو کہ کوئی بکس اٹھا كرلے جائے كوئى كيڑے اٹھاكرلے جائے كوئى زمين ير قبضه كرے، ہروقت مخاط اور بيداررہو، و یعتوس منهم، خود بھی حضور واللہ بہت مجتاط رہتے خود کولوگوں کے تکلیف یا نقصان سے محفوظ رکھتے تھے۔ ملاقاتی ہزاروں فتم کے آتے تو آپ دیکھتے کہ بُر سے ارادہ سے تو نہیں آیا، یا کوئی الی بات میں کہوں کہ راز ظاہر ہوجائے اور کل بد دوسری جگہ ساری بات پہنچادے تو آپ کے ساتھ تو ساری زندگی میں عوامی زندگی میں ایسےلوگ آئیں گے توضیح حکمران اورایڈ منسٹریٹروہ ہے جولوگوں کے بارے میں مختاط رہے۔اینے آپ کی بھی حفاظت کرے بعض آ دمی ہرفتم کی بات کہہ جا تا ہے ہرشخص کو بیکدم دوست بنالیتا ہے ہرشخض كوايناراز دان بناليتا بيآ كے جاكراس كوشوكر كتى بے حالانكه المومن لا يحدع و لا يُحدع كمون نه دھو کہ دیتا ہے اور نہ دھو کہ کھا سکتا ہے۔ تو حضور علیہ خود بھی مختاط رہتے تھے اگر کسی کے بارے میں معلوم ہے کہ دشمن ہےاورخطرناک ہے پھراس کے سامنے میں کیوں ادھرادھر کی باتیں کروں کیکن آ گے مکارم اخلاق کی ایک عجیب بات بھی ہے کہ جب ایک شخص آیا مشتبہ تنم کا ان کو پیتہ بھی ہے کہ بیر گر برقتم کا آ دمی ہے ملاقات میں مختلط تو ہو گئے کیکن بیثاشت میں اور ظاہری خلق میں اور چیرے کی بیثاشت میں کوئی فرق نہ آتا۔ اس طرح تیاک سے ملتے ،اس طرح محبت سے ملتے ،اس کوبیان فرمایا که من غیر ان بطوی عن احد النخ"كريماندرويئ ميں بخل نہيں كرتے تھے۔

خوش خلقی اور بداخلاقی: حضور علیه حضرت عائش کے ساتھ بیٹے ہوئے تھے کسی نے کہا کہ فلاں شخ آیا ہے ملاقات کیلئے تو حضور علیہ نے کہا کہ یہ بدترین آدمی ہے اپنی قوم کا شریر ترین آدمی ہے۔ تھا وہ خطرناک شم کا، مطلب یہ بھی تھا کہ حضرت عائشہ چی تناط ہوجا ئیں کوئی ایسی ولی بات نہ کریں حکومت تھی، نظام تھا۔ فیبت کی نیت سے نہیں کہا بلکہ یہ کہا کہ یہ کس شم کا آدمی ہے؟ پھر حضرت عائش پردے میں چلی گئیں اور اس مخص کو بلایا جب وہ آیا تو حضور اللہ برے تپاک سے ملے اور بڑے اخلاق عالیہ سے ملے جب وہ باہر چلا گیا حضرت عائشہ نے یہ مظرد کیے لیا تھا تو حضور اللہ سے کہا کہ آپ اللہ نے نو فر مایا تھا کہ براخطرناک آ دی ہے مگر آپ اللہ تو اس سے بڑی محبت سے ملے قو حضور اللہ نے نفر مایا کہ بدترین آ دمی وہ ہے جے لوگ اس وجہ سے چھوڑ دیں کہ اس کا میل جول ٹھیکنہیں اس کی پیشانی پر بل آ جاتے ہیں اور بدخلقی سے پیش آتا ہے۔

حزب اختلاف اوراختلاف میں اعتدال: ویحسن المحسن ویقویه ، اچھی بات کی تحسین فرماتے اوراس کو تقویت پہنچاتے ، یوانسان کی ایک بڑی خوبی ہے ہم لوگ تو حزب اختلاف میں ہوجاتے

ہیں تو پھر انھی لے لیتے ہیں کہ کوئی فرشتہ بھی ہے بس مارو کہ یہ خبیث سے بڑھ کر خبیث ہے اگراس نے اچھا کام بھی کیا تو اچھا نہ کہیں کہ کوئی اچھائی نہیں ما نے اور اگر حزب افتد ار میں ہیں یا اس کے دوست ہیں تو اس کی ہر برائی اچھی اور قابل داد بچھتے ہیں۔ تو حضو رہ اللہ کے میں کرتے تھے۔ بھلائیوں کی تائید کرتے اور تحسین کرتے تھے۔ اچھائیوں پر شاباش دیتے ، انعامات سے نواز تے اور حوصلہ افزائی کرتے ۔ ویہ قبت تحسین کرتے تھے۔ اچھائیوں پر شاباش دیتے ، انعامات سے نواز تے اور حوصلہ افزائی کرتے ۔ ویہ قبت اللہ بعد ماگر برائی دیکھتے ، فلط کام دیکھتے تو اس کی تقیم کرتے اس پر آ تکھیں بندنہ کرتے ، اچھے کو اچھا کہنا اور ہرے کو برا کہنا ، اگر یہ دونوں پہلو ہیں تو پھر آپ اعتدال میں ہیں اور آپ کی بات کا اثر بھی ہوگا ورنہ لوگ کہیں گے بیتو تعصب کی وجہ سے ہروقت لاٹھی اٹھائے ہوئے ہوئے ہاور اس کے پیچھے پڑا ہوا ہے۔

ویقب المقبیع ،اور برائیوں اور قباحتوں کی تھے فرماتے، ویو ھیدہ، اور اسے کمزور کرنے کی کوشش کرتے کہ برائی کمزور ہوجائے اگر مث نہ سکے تو کچھاس پر ضرب لگا دو کسی حد تک تو اس کو کنٹرول کردو کچھ بریک قواس کولگا دو۔ همعتدل الاهم غیر مختلف ، دونوں لفظوں کا معتی قریب تربیب خلاصہ یہ ہے کہ حضور قبالیت میں اعتدال میں ہوتے تھے میا نہ روی ہوتی تھی اور بے اعتدال زندگی نہیں تھی۔ غیر مختلف اور متوازن شخصیت کے مالک تھے۔ اس کا معتی یہ ہم عالم ہوازن تھا نہ کہ تکون کہ آج کے بہر معالم ہوازن تھا نہ کہ تکون کہ آج کچھ کہا اور کل دوسری بات کہ دی۔ اور بات کے بھی پکے تھے۔ بعض آدی ہوتے ہیں تک کوایک فیصلہ کرتا ہے شام کو بھر دوسرا ، دو پہر کو تیسرا الوگ کہتے ہیں کہ فلاں صاحب کان کے بچے ہیں اس کی بہی فیصلہ کرتا ہے شام کو بھر دوسرا ، دو پہر کو تیسرا الوگ کہتے ہیں کہ فلاں صاحب کان کے بچے ہیں اس کی بہی صورت ہے کہ درائے پر قائم نہیں رہ سکتا۔ ایک بات کر لیتا ہے بچارہ دوسرا ملا قاتی آیا اس نے اس کا دماغ ادھر بدل دیا ، تیسرا آیا ادھر یہ مو قائم قال کی کی اور اخلاقی کم زوری کا اثر ہوتا ہے جو مداہت اور عدم استقامت پر شنج ہوتا ہے۔ حضور قبالیت میں اسی بات نہیں تھی جنوں قائن اور تصلب واستقامت تھی۔ پر متا تھا، متلون مزاجی نہیں تھی۔ حضور قبالیت میں اسی بات نہیں تھی۔ حضور قبالیت کی مواسلہ واستقامت تھی۔

ما کم کی ذمدداری: و لایه خفل مخافة ان یغفلوا ، حضور الله کی وقت بھی امت کی خیرخوابی تذکروار شاد اور دینی و دینوی مصالح سے عافل نہیں ہوتے تھے ورنہ خطرہ تھا کہ امت بھی غفلت کا شکار ہوجائے کیونکہ چھوٹا ہوئے کی متعابعت کرتا ہے اس سے سیکھتا ہے اگر حکمران اور حاکم اور اصلاح کرنے

والالمبى تان كرسوجائے توامت خود بخو د غافل ہوجائے گی وہ كب بيدار ہوگی اورا گرحكمران بے ثم اور بے فكر ہے اور ادھر روس اور امریکہ کیا کیامنصوبے بنارہاہے سرحدات کے اندر کیااورسرحدات کے پاہر کیا کیاسازشیں ہورہی ہیں۔اس سے برخبر ہوجائے تو قوم اور رعایا کب بیداررہ سکے گ۔

314

امير شريعت سيدعطاء الله شاه بخاريٌ كالطيفه: هار يسيدعطاء الله شاه بخاريٌ صاحب كاابك لطيفه ہے عجیب شخصیت تھی بڑے انقلابی انسان تھے عظیم کام کیا۔ امیر شریعت ان کو کہتے تھے تو بیٹوام دیہاتی کسان' امیر شریعت' وغیرہ الفاظ کوتو جانتے نہیں عمر محرحضرت شاہ صاحبؓ پیجارے دین کے فکر میں گےرہے جیلوں اور ریلوں میں زندگی گزاری۔ شاہ صاحبؓ کی زندگی آزادی کی جدو جہد، دین کی تبلیغ اورختم نبوت کی اشاعت میں گزری۔ توشاہ صاحبؓ نے فرمایا میں نے ان سےخود پرلطیفہ سناتھا کہ ایک دفعہ ایک جگہ میں سویا ہوا تھا تو ایک دودیہاتی کا شکارتنم کے لوگ آئے ملنے کیلئے۔ انہوں نے جما تک کردیکھا تو کہا کہ 'شریعت سی بی اے' کمشریعت توسوئی پر ی ہےاب شاہ صاحبؓ نے کہا کہ میں نے س لیا تواس جملے سے مجھ برایس چوٹ لگی کہ گویا کسی نے چھرا گھونپ دیا ہو۔ میں نے اللہ کی طرف سے بیریات سمجھ لی کہ ا جيماا گر ہم اسى طرح لمبى تان كرسو جا ئىيں اور غافل ہو جا ئىيں اور غيش دعشرت ميں لگ جا ئىيں تو پھرتو سارى شریعت سوجائے گی۔اگرمولوی صاحب معاشرے سے پالکل بےفکر ہوگیا تو شریعت کا کیا ہوگا؟اس طرح ا یک حکمران نے اگراینے علاقے میں غفلت برتی یا کوئی افسر بے فکر سوگیا، درواز ہبند کردیا کہ چلویار جانے دوتو کیاجالت ہوجائے گی۔

تو حضورة الله كيار عين فرماياكه و اليغفل مخافة ان يغفلو اجضورة الله كس المربعي عافل نہیں ہوتے تھے کہ میا داسار بےلوگ بھی غافل ہو جا ئیں گے۔

اویه ملوا، ایک نسخه میں ویملوا ہے۔ لینی امت کی غفلت کے خوف سے اور امت کی مستی اور تھک جانے کے خوف سے خود بھی غفلت سے بچتے تھے۔مطلب بیرے کہ اگر آ سے پانسے مسلسل امت کی ڈ ھارس نہ با ندھیں تو وہ بھی حوصلہ ہار بیٹھیں گے اور تکلیفات شرعیہ سے در ماندگی کا مظاہرہ کرلیں گے جبکہ بعض شخوں میں او یملوا ہے ''اؤ' یہاں تنویع کیلئے ہے کہ کچھلوگ غفلت اور کچھدر ما ثدگی کا شکار ہوجا کیلئے بعض ننخوں میں اویمیلوا ہے جس کا مطلب ہیہ ہے کہ آپ آگئے غفلت برت کرمسلسل دیکیری نہ فرما ئیں تو امت جاد ہُ حق سے باطل کی طرف اور دیگرادیان کی طرف مائل ہو جائے۔اس لئے آپ آگئے بھی بھی ان کو مہمل چھوڑنے پر آمادہ نہ ہوئے۔

جبر بعض شخوں میں ہے کہ 'و لایک فعک محافة ان یَفعلوا فیملوا ''یعی'' ولایفعل العباده مخافة النے "پر بیر مخافة النے "پر مطلب بیہ وگا کہ آپ آلیہ عبادات میں اعتدال سے کام لیتے اور غلوسے اس لئے پر بیر کرتے کہ صحابہ بھی آپ آپ آلیہ کی اتباع میں غلوسے کام لیتے اور پھر بالاخرعاجز آکراسے چھوڑ دیتے۔ جس طرح ایک مدیث میں آتا ہے کہ خذو امن الاعمال ما تطبقون فان الله لایمل حتی تملوا.

لکل حال عندہ عتاد، عماد عین کے فتح کے ساتھ اور عدۃ عین مضموم کے ساتھ ہم معتی الفاظ ہیں۔ اس کے معنی تیاری کے بھی آتے ہیں کی ام کوسرانجام دینے کے اسباب ووسائل پر بھی اس کا اطلاق ہوتا ہے مثلاً جنگ کیلئے سامان جنگ عُدہ اور عماد ہے۔

اب معنی یہ ہے کہ زندگی کے مدارج طے کرنے میں آپ ایک الکے عمل اور منظم تاریخی ہے۔ پاس ایک الکے عمل اور منظم تاریخی ۔ پنہیں کہ جیسے گزرے گزارا کرنا ہے۔ بعض لوگوں نے بیر جمہ کیا ہے کہ احکام اسلام میں سے ہر عمم کیلئے آپ ایک دلیل موجود تھی۔ بعض نے بیر جمہ کیا ہے کہ عبادات ومعا ملات میں سے ہر چیز کیلئے آپ ایک ایک دلیل موجود تھی۔ بعض نے بیر جمہ کیا ہے کہ عبادات ومعا ملات میں سے ہر چیز کیلئے آپ ایک ایک منظم زندگی گزارتے تھے یعنی ہرکام کیلئے آپ آلیک کے ہاں ایک خاص انتظام تھا۔ ہر چیز کیلئے صفور والیک ایک ٹائم ٹیمل تھا لوگوں کو معلوم ہوتا کہ اس منٹ پر جا گئے ہیں اس منٹ پر باہر تشریف لاتے ہیں یعنی ہرچیز ڈسپلن کے مطابق ہوم خواہ سفر ہو یا حضر، جنگ ہو یاامن لایہ قصور عن المحق و لایہ جاوزہ ، تن کہنے اور اسے قائم کرنے میں کوتا ہی نہیں کرتے تھے اور نہ کی اور کوتا ہی تھی نہ صد سے تجاوز کرتے رہے تھے اور انہ کی اور کوتا ہی تھی نہ صد سے تجاوز کرنے دیتے تھے ۔ تو امرحق میں کسی طرح کوتا ہی تھی نہیں کرتے تھے لیکن استحقاق مراد ہوتو معنی یہ ہے کہ صاحب حق آگر حق طلب کرتے تو اس میں کوتا ہی نہیں کرتے تھے لیکن استحقاق مراد ہوتو معنی یہ ہے کہ صاحب حق آگر حق طلب کرتے تو اس میں کوتا ہی نہیں کرتے تھے لیکن استحقاق مراد ہوتو معنی یہ ہے کہ صاحب حق آگر حق طلب کرتے تو اس میں کوتا ہی نہیں کرتے تھے لیکن استحقاق سے زمادہ کئی نہیں دلواتے تھے۔

مواسا ق دراصل مہموز ہے ہمزہ واوسے بدل دیا جاتا ہے آسی یو اسسی مواسا ق تسویة کے معنی میں بھی مستعمل ہے کی کواپنا معنی میں بھی مستعمل ہے کی کواپنا ہمسر بنانا نیز آسے فی الان ایسم مستعمل ہے دیا ہم کی کی مصیبت میں اس کوتیلی دینا بھی ہے چونکہ یہاں مطلقاً مستعمل ہے۔اس لئے مرادیہ بوسکتا ہے کہ کی پریشانی کواپٹی پریشانی سجھ کراس کی مدد کرنا۔

جبکہ موازرۃ اُزَرَت ہے جس کے معنی قوت کے ہیں یہ بھی مہموز ہے۔قرآن میں ہے 'اشدد به ازدی'' لینی ہارون کی نبوت سے میری قوت میں اضافہ کیجئے۔ حدیث میں ورقۃ بن نوفل کا قول ہے 'انصوک نصواً مؤزرًا''لینی فراشد یدا قویاً یہاں تقویت اور معاونت مراد ہے۔

خلاصہ یہ ہوا کہ جو مخص مخلوق خدا کی ہمر دی ،غمگساری اورلوگوں کی معاونت میں پیش پیش ہوتا جو تکلیف ویریشانی میںغریبوں اورغمز دہلوگوں کی مدد کرتاوہ ہی نبی کریم آلیکی کی نظر میں سب سے عظیم المرتبه انسان ہوتا تھا۔ ظاہر ہے کہ جب دوسروں میں بہی خوبیاں آ ہے ﷺ کو پیند تھیں تو خودان اوصاف کو بدرجهٔ اتم اینائے ہوئے ہونگے۔

317

قال فسألته عن مجلسه، پر حضرت حسين في فرمايا كه من في اين اتاسي يوجها كه حضور آلاتہ مجلس میں تشریف فرما ہوتے تو کیا طور طریقے اختیار فرماتے۔ ظاہر ہے کہ نبی کریم آلیکے میں بے ا نتها عاجزی تھی وہ اپنے لئے شان وشوکت پیندنہیں کرتے تھے اور یا وجو داس کے کہ آپ ایک سربراہ مملکت ہو گئے تھے۔آ پیافیہ تکبرور تونت سے یاک تھے۔

مصنوعی بروٹو کول: سارے بروٹو کول ہم نے جواینے لئے مصنوعی بنار کھے ہیں۔اینے اورا پی رعایا کے درمیان اتنے برے برے جاب اور دیواریں کھڑی کردی ہیں اور جو بیوروکر لیمی کا نظام ہم نے بنایا ہے بیرسب چیزیں اپنے لئے حضور اللہ پندنہیں فرماتے تھے بلکہ جب صحابر ان کیلئے اٹھتے تھے تو حضور الله في المات والمات المات الما براٹھیں جبیبا عجی لوگ اٹھتے ہیں۔اس طرح سلامیں اورسلوٹیس مزاج مبارک کے خلاف تھیں غالب شان شان عبدیت تھی۔حضور اللہ کی عظمتیں آ سانوں تک ،عرش تک پنچی تھیں لیکن شان وشوکت کسی چیز میں پیندنہیں ۔ راستہ میں حضور علیقہ صحابہ کے ساتھ جلتے ۔صحابہ کہتے ہیں کہضروری نہیں تھا کہ وہ آ گے چلیں اور ہم پیچیے پیچیے بلکہ بھی ہارے ساتھ ساتھ چلتے بھی اتفاقاً آگے چلتے بھی پیچیے چلتے کسی سفر میں جب قا فله کسی منزل پرتھبر جا تا جب صحابةً کا م کاج میں لگ جاتے تو صحابةً کہتے ہیں کہ ہمنع کرتے کیکن حضو ملاقے بھی ہارے ساتھ کام میں لگ جاتے تھے۔لکڑی جمع کررہے ہیں،لکڑی جلارہے ہیں، یانی بھر کرلارہے ہیں سب کاموں میں صحابہ ﷺ کے ساتھ شریک ہیں۔ یہ بتانے کیلئے کہ میں بھی تمہاری طرح ایک انسان ہوں تو اب جب منزل يعني سي مجلس مين اورنشست گاه مين تشريف لات اورا مهنا بيشمنا موتا تووه كييم بوتا؟ فيقال كان رسول الله لايقوم و لايجلس الاعلىٰ ذكو ، مضوياته كا المنابيه مناسب يحمالله كامول کیلئے دین کیلئے تھا۔مسلمانوں کی بھلائی کیلئے تھا۔یہ بھی ذکراللہ ہے لیکن شراّح نے یہاں اسانی ذکر مرادلی ہے یعنی اٹھتے بیٹھتے آ ہے اللہ تعالیٰ کو یا دفر ماتے جو کہ بڑی عبادت ہے۔

318

مجلس میں بیٹے کے آواب:

و اذاانتھا ی الی قوم ، جب کی مجلس میں تیٹے لے آواب یہ جہاں میں تشریف لے آتے اور پہلے سے اورلوگ بیٹے ہوتے جلس حیث بنتھی بدہ المحلس ، جہاں مجلس کا آخری سرا ہوتا و ہیں بیٹے جاتے ۔ یہ بیش کہ لوگوں کے کا عموں پر پھلا نگ کر آ کے جاتے اور خصوصی نشست تک لاز ما چینچ بلکہ کسی مجلس میں حضور والیہ تشریف لاتے تو جہاں جگہ خالی ہوتی و ہیں بیٹے گئے۔ بدالگ بات ہے کہ جہاں وہ بیٹے محلس میں حضور والیہ تھے اورو ہی جگہ صدارت کی مند بن جاتی ۔ ویامر بذالک ، باتی لوگوں کو بھی منع کرتے کہ جب تم کسی مجلس میں آؤتو یہ نہ کرو کہ تم لوگوں کے کا عموں پر پھلا نگ جاؤاور جاکرا پئی مخصوص کرتے کہ جب تم کسی مجلس میں آؤتو یہ نہ کرو کہ تم لوگوں کے کا عموں پر پھلا نگ جاؤاور جاکرا پئی مخصوص نشست پر ، اسٹی پر اور کرسی پر بیٹے جاؤ کہ جہاں جگہ ہے وہیں بیٹے جاؤ۔ سب انسان برابر ہیں اس کو تھی میں اس کو تھی کہا گیا ہے جو نا جائز ہے تو خود بھی اسی بڑمل تھا اور دو سروں کو بھی کہی امر تھا (۱)۔

وفود كرساته انداز تخاطب: يعطى كل جلسائه بنصيبه "ديعطى" كامفعول ثانى خود بنصيبه به اوراس كاباء زائد بحريبات كام كيك آيا به جبكه بعض شراح نے مفعول ثانى پرباء كريادت كومستجد قرار ديا ہے۔

لایحسب جلیسه ان احداا کوم علیه منه ، بیخاص بات ب که اخلاق عالیه کی وجه سے ہر فضی بیہ جمتا تھا کہ میں حضوری اللہ کی وجہ سے ہر فضی بیہ بہت تھا کہ میں حضوری کے سب سے زیادہ قریب ہوں۔ ہر خض بیہ ہرا تھا کہ میر برا ساتھ خصوصی دوستی ہے اور جھ سے ہر ہوکرکوئی ان کوعزیز نہیں۔ اس رویت کا سب سے برا افا کہ ہی بہوا کہ صحابہ کرام میں تحاسد و بخض پیدا نہیں ہوا۔ جیسا کہ عمواً بادشا ہول کے مصاحبول میں پیدا ہوتا ہے۔ جب ہر کسی کو بی خیال ہوکہ میں بی نی کر یم اللہ کا چہیتا ہوں، عزیز ہول، تو حسد کس کیساتھ ہوگ ۔ یہ معمولی چیز نہیں ہے مکارم ہوکہ میں بی نی کر یم اللہ کا چہیتا ہوں، عزیز ہول، تو حسد کس کیساتھ ہوگ ۔ یہ معمولی چیز نہیں ہے مکارم (۱) اصادیث میں آپ کے اس کا صراحة امر دیا ہے مثال طبرانی اور بھتی نے شیبہ بن عثان سے روایت کیا ہے کہ اندان تھی احد کم الی المجلس فان وسع لکم فلیجلس والا فلینظر الی اوسع مکان یواہ فلیجلس فیہ (جمع ۲/۲ مال) (اصلاح الدین)

۔ اخلاق کی انتہاہے کہ ہرایک کے ساتھ ایساسلوک اور ایسابر تا ؤہو کہ وہ انسان سیستھے کہ بس میں ہی سب سے زیادہ محبوب اور مقرب ہوں۔

صركاعمده نموند: من جالسه او فاوضه في حاجة صابرة حتى يكون هوالمنصرف، مفاوضه كامعنى بهال مراجعت كي بين التي الريش في صفوط الله كي بين الريش كياس مفاوضه كامعنى بهال مراجعت كي بين بين الريش في مفاوط الله كي و عظيم معروفيات في سالك، معالمه بين كوني ضرورت ليكر حفوط الله كي بين مسلمانول كحالات تجاويز ومشور عبادت كلم يلومسائل، طوف امور مملكت بين، جهاد كامور بين، مسلمانول كحالات تجاويز ومشور عبادت كلم يلومسائل، وفودكا آنا جانا اليضي كي توايك ايك منك فيتى بوتا به لين ادهم مركايه عالم بهاورا خلاق التي او في بين كدايك في مهاكم الرا كربيش على الرا كربيش جات الرا كي بين الماركة بيش جات بين المواجعة المن كي بين بينها بول وه تواجع كي شب بين لكار ومنت بين الما قات كادهم تحقق بين كدومن بين الماقات كادهم تحقق كي بين بين كردومن بين الماقات كادهم كي وجود بين من كي كردومن بين كردومن بين كردومن بين بيان بين بين مرد بين من كي كردومن بين عبا بول تو مين من كي كردومن كي كردومن كي خود بين كردومن كي خود بين كردومن كي بين كردومن كون كرا المائل كون كردومن كردومن كون كون كردومن كون كردومن كردومن

تو آپ آلیہ اپنے نفس کورو کے رکھتے تھے کہ جب تک وہ خودا ٹھ کرنہ جاتے حضو میں ہے۔ مبارک اور پیشانی پرکوئی بل بھی ندآ تا نہ رہے کہتے کہ بس آب کا کام ہو گیااب جائیں۔

(۱) صابرہ مصابرۃ سے ہے اکثر شراح نے مفاعلہ کو مغالبہ کیلئے لیا ہے یعنی آپ ایسی وقت میں دوسروں پرصبر میں عالب آجاتے سے لیکن شاید مفاعلہ کو مغالبہ کی بجائے عالب آجاتے سے لیکن شاید حضرت الاستاذ کو ملاعلی قاری کی رائے پیند ہوجنہوں نے یہاں پر مفاعلہ کو مغالبہ کی بجائے مبالغہ کیلئے لیا ہے۔واللہ اعلم (اصلاح الدین)

ایک بڑھیانے آواز دی کہ میراایک کام ہے۔ آپ کے ساتھ بوڑھی عورت تھی۔ حضور ایک کام ہے۔ آپ کے ساتھ بوڑھی عورت تھی۔ حضور ایک کام ہے۔ آپ کے ساتھ بوڑھی عورت تھی دن کو بلائے گی دن کو بلائے گی دن کو بلائے گی جس جگہ تہمارا گھر ہے۔ بس ججھے اطلاع دینے کی ضرورت ہے۔ آنے کی تکلیف مت کیا کرو، میں خود پہنچ حاؤ تگا۔

سائل کی حاجت برآری: من ساله حاجة لم یو ده الابها، اگر کی خض نے کوئی چیز ما گی کوئی حاجت لی کرآیا کوئی مسئلہ لے کرآیا رحضور الله کوشش کرتے کدوه اس کی حاجت پوری کر کے اسے واپس کردے ۔ بغیر مقصد برآری کے اس کونبیں چھوڑتے تھے۔ کسی نے کپڑے مائل ، کسی نے کھاناما نگا۔ تو جو بس میں ہوتا تھاوہ دے دیے ۔ اور بھی بھی انسان کے بس میں پھی بھی نہیں ہوتایا طالب حاجت کی ضرورت صحیح نہیں ہوتا تھا اوہ دیت کے ساتھ دخصت کرتے ہیں۔ مگرآ پی ایک مسئل برگز انسانہیں کرتے ہیں تو پھر ڈانسٹ ڈیٹ کے ساتھ دخصت کرتے ہیں۔ مگرآ پی ایک ہوتا تو بیاراور محبت کی اور میر کے ساتھ ان کو سے بھی نہ ہوتا تو بیاراور محبت کی انہیں کرتے تھے۔ نرمی اور میر کے ساتھ ان کو سمجھا دیتے کہ یہ چیز ہمارے بس کی نہیں نہ ہم پوری کرسکتے ہیں اور اس کوا چھے طریقے سے واپس کردیتے تھے۔

قدوسع الناس بسطه و خلقه ،خلاصه بيب كه حضوينا في بثاشت اور رحمت اور كلى پيثانی معالم پر محيط موگئ تقى -اس نے گوياسارے بنی نوع انسانيت كواپنی لپيث ميں ليا تھا -ان كے اخلاق اور ان كى بثاشت سارى مخلوق كوسمو چكى تقى كوئى اس سے محروم نہيں رہا -

(۱) المسمیسور مصدر علی و زن المفعول ضدالمعسور یسر کے معنیٰ میں ہے یہاں صفت واقع ہوا ہے یعیٰ تول میسور کے ساتھ والی کرتے ہوئے آسان اور خوبصورت میسور کا "پیمل کرتے ہوئے آسان اور خوبصورت اعماز سے والی کردیے مطلب یہ ہے کہ جو جودنہ ہوتو وعدہ کردیے کہ جب میرے پاس کوئی چیز موجود ہوگاتو پخش دول گا۔ اس وجہ سے صفرت ابو بکر صدیق کو خلافت کے پہلے ایا مہی میں حضور تالیق کے ڈھیر سارے وعدوں کو پورا کرنے کا شرف حاصل ہوا۔ (اصلاح الدین)

وصادوا عندہ فی المحق سواء ،اورسار ہانسان حضوطی کے نگاہ میں حقوق کے لحاظ سے برابر تھے۔ بہتیں کہ ایک کاحق تو پوراہوجائے اور دوسرامحروم رہے۔ وہ میرا قریب ہے یاعزیز ہے اس کے تعلقات ہیں اس کی دوئتی ہے۔ اگر کسی کا کوئی حق ہے تو اس کو ضرور ملتا۔ تو سارے انسان ان کے نگاہ میں بالکل برابر ہیں یعنی کوئی ترجیح اور کسی کوئم وم کرنا اور کسی کونواز نانہیں تھا۔

مجلسه مجلس علم وحیاء و امانة و صبر بجلس کیاتھی مجلس علم تھی ،لوگوں کی جروں میں اور بیٹھکوں میں جو یہ گپ شپ یہ بنگا ہے اور بیخرافات ہوتے ہیں تو یہ باتیں نہ تھیں بلکہ حضو تعلیقے کی مجلس اور صحابہ کی مجلس تھی حیااور امانت کی مجلس تھی اور صبر کی مجلس تھی یہ نہیں کہ ایک بات کرتا ہے ایمی اس نے بات ختم نہیں کی دوسرا شور مچا تا ہے۔ ایک کہتا ہے میں پوچھتا ہوں دوسرا کہتا ہے میر ایہلات ہے اور ایک کہتا ہے میں تعلیہ ہوگیا ہوں بابا، باہر جاتا ہوں تو یہ صورت نہیں تھی بلکہ پورے وقار، ادب اور سکون کا ماحول ہوتا تھا۔

اقوام عالم کی تاریخی آمبلی: ایک روایت میں آتا ہے حضور اللہ کے ہاں قطع کلای نہیں تھی جب ایک صحابی بات کرتا تھا تو سارے فاموثی سے سفتے تھے ایسی پارلیمنٹ اور الیں آمبلی اقوام عالم کی تاریخ میں نہیں ملتی وہاں قطع کلای نہیں ہوتی تھی وہاں غصے میں آپ سے باہر ہوکرایک آدی دوسرے پر حملہ نہیں کرتا تھا۔ گالی گلوچ نہیں کرسیاں نہیں چلتیں۔ جو کچھ یورپ کی بنائی گئی آسمبلیوں میں ہم دیکھتے ہیں کہ مبرلوگ تشنیع و تقید بڑی بے مبری سے کرتے رہتے ہیں۔ یہاں ہرخض پرسکون اور پروقار ہے۔ حقیقت میں بیمثالی پارلیمنٹ کی بیمالت ہے نیز فرمایا کہ وہ امانت کی مجلس ہوتی پارلیمنٹ کی بیمالت ہے نیز فرمایا کہ وہ امانت کی مجلس ہوتی میں امانت ہیں ()۔

مال ودولت سونا چا ندى بيراه نت بين تو برمجلس ايك امانت بهدانت يل خيانت كرناعظيم ظلم بهر مجلس ايك امانت بهر خيانت يل المانت بير بيش آتى بين كى خاميان سائة آجاتى بهر مجلس بين آتى بين كسى خاميان سائة آجاتى بهر وى ابو ذرعن جابر (۱) المحالس بالامانة مرفوع حديث به الخطيب في تاريخه عن على وروى ابو ذرعن جابر مرفوعاً المجالس بالامانة الآثلاثة مجالس سفك دم حرام او فرج حرام او اقطاع مال بغير حق نيز امام ترني نابواب الادب بين ترجمة الباب بين اس كاذ كركيا بـ (اصلاح الدين)

کاراز اورکسی کی خامی اور کمزوری بتادیتے ہیں اور میں اسے آؤٹ کردوں بیر میں نے گویا امانت میں خیانت کردی۔مجلس کی باتیں باہزہیں پھیلائی جاتیں۔خلاصہ یہ کہآ پیالیک کی مجلس میں علم حیاءامانت اورصبر کا کامل نمونہ در کیھنے کو ملتا ۔ بعض نسخوں میں علم کی جگہ حلم کالفظ پایا جاتا ہے جس کامعنی بر داشت اور عقلندی سے کیا گیاہے۔

لاتسوف عفيه الاصوات ،اس مجلس مين السيار ليمن مين ايك وسر يرآ وازين او ني نبين ہوتی تھیں پہنیں کہ ایک باتیں کرر ہاہے دوسرااس کی بنسبت زورز در سے اور چیخ چیخ کر بولتا ہے کہ پہلے جھے باری دوتا کہ میری تقریر بیلوگ سن لیس اور دوسرے کی آواز دب جائے۔موجودہ دور کی اسمبلیوں والی صورت نتھی صحابہ کرام کی کیفیت مجلس میں کیسی ہوتی تھی ایک صدیث میں آتا ہے کا تسب علی رؤوسهم الطير. الله تعالى كالرشادب يايهاالذين المنوا لاترفعوا اصواتكم فوق صوت النبيّ (الایة) که نبی کی آواز سے تیری آوازاو نجی نہونے یائے۔

و لاتـؤبن فيه الحوم ،عزت اورآ بروايك دوسركى داغداريس كى جاتى تقى أبن يأبن أبناً کے معنی ہیں عیب بتلا نا اور مُرم مُرّم کی جمع ہے جس کامعنی ہے ہرقابل احترام اور قابل حفاظت چیز عموماً اس کا اطلاق گھروالی اور دیگراہل وعیال بر ہوتا ہے۔ چنانچہ دست درازی اور زبان درازی سے کسی کی عزتوں، عصمتوں، آبروؤں کوداغدار بنانے کو تابین کہتے ہیں گویااسمجلس میں عیب جوئی اور مکتہ چینی نہیں کی جاتی تھی۔آپس میں ایک دوسرے کی عزت اور حرمت یر۔

و لاتنشع فلتاته، نثاينثو كهيلان، اشاعت وتشميركو كهتم بن اورفلتاث فلته كي جمع بيجس کے معنی ہفوات اور خلاف ادب ماتوں کے ہیں۔ ظاہر ہے کہ لغزشیں ہمجلس میں ہوتی ہیں۔ کوتا ہی ہرانسان سے ظاہر ہوتی ہے تو مجلس کی لغزشیں وہیں دیادی جاتی تھیں بنہیں کہ ہم نے ایک خامی یہاں ایک مجلس میں دیکھی اور پھر باہراس کو پھیلاتے رہے دہراتے رہے۔اس کے پھیلانے کو بھے ہیں۔مثلا کسی کی سبقت لسانی کی وجہ سے غلط لفظ نکل گیایا کسی ساتھی ہے مجلس میں کوئی شرمناک قتم کا کام ہوگیا تو بہنہیں کہ اب سارے جاکر ہاہر ڈھول پیپ رہے ہیں کہ فلاں نے اس مجلس میں الی حرکت کی بلکہ کوئی لغزش کوتا ہی تقریر میں عمل میں کسی سے ہوتی تو وہ وہیں دب جاتی تھی۔اس کمرے سے باہروہ بات نہیں پھیلائی جاتی تھی کیکن اس کمرے سے باہروہ بات نہیں پھیلائی جاتی تھی کیکن میں ابعض شراح نے بیکھا ہے کہ آپ کی مجلس میں مرے سے فلتات یعنی ہفوات اور نامناسب بات ہوتی ہی نہتی۔اسی لئے اس مجلس کی کوئی بیہودہ تشم کی بات پھیلانے کا کسی کو بھی موقع نہیں ملتا تھا۔

مت عدادلین به بسالت قدوی فیده بالت قدوی متواضعین ، متعادلین ، تعادلین ، تعادلین ، کا نوامقدرکا خبرواقع ہوا ہے لینی کا نوامتعادلین ، تعادل سے اسم فاعل ہے جس کا معنی ہے ایک دوسر کو برابر جانتے تھے۔ان میں نبی دوسر کو برابر جانتے تھے۔ان میں نبی تعلی اور خاندانی برتری کا گھمند نبیس تھا بلکہ تقوئی ہی سبقت کی بنیاد تھا۔ 'مت واضعین ''منصوب ہے تعلی اور خاندانی برتری کا گھمند نبیس تھا بلکہ تقوئی ہی سبقت کی بنیاد تھا۔ 'مت واضعین ''منصوب ہے ترکیب میں حال واقع ہوا ہے۔ یتفاضلون کی ضمیر سے لینی اس حال میں کہ ایک دوسر کے کیلئے تواضع اور عاجزی اختیار کرتے تھے۔اس کلام کا خلاصہ بیہ ہوا کہ آپس میں بالکل عدل وانساف کرنے والے تھے۔ ایک کودوسر بے پر برتر بیھنے والے نہ تھے کہ کوئی دوسر کو نیچا سمجھ حسب اور نسب کے لحاظ سے کسی کواونچا سمجھنایا مال ودولت کی وجہ سے درجہ بندی کرنا کہ یہ فسٹ کلاس ہے اور بیسینٹہ کلاس ہے بی تھر ڈ کسی سے تعادلین تھے دولت اور مادی چیزوں کے لحاظ سے بیا ترقائم کہیں کرتے تھے سب صحابہ برابر تھے ہال بیت فیاضلون فیہ بالتقوی ایک کودوسر بر پراگر فنیات تھی ، نہیں کرتے تھے سب صحابہ برابر تھے ہال بیت فیاضلون فیہ بالتھوی ایک کودوسر بر پراگر فنیات تھی ، اور اہمیت تھی تو تقوئی کے لحاظ سے جو اللہ سے زیادہ ڈ درتا تھا اور اس میں خوف خداو مدی ہوتا تھا اس کوفنیات تھی اور اس کوکلاس ون سمجھا جاتا تھا اور کوئی دوسری حیثیت درجہ بندی نہیں کرتی تھی ہوتا تھا اس کوفنیلت تھی ۔ ہوتا تھا اس کوفنیلت تھی ہوتا تھا اس کوفنیلت تھی ۔ ہوتا تھا اس کوفنیلت تھی ہوتا تھا اس کوفنیلت تھی ہوتا تھا اس کوفنیلت تھی ہوتا تھا ہوتا ہوتا تھا اس کوفنیلت تھی ہوتا تھا ہوتا تھا اس کوفنیلت تھی ہوتا تھا ہی کہا تھی ہوتا تھا اس کوفنیلیت کو دوسری کوئیس کرتی تھی ہوتا تھا ہوتا تھا اس کوفنی دوسری کوئیل کرتی تھی ہوتا تھی ہو

یوقون فیده الکبیو ،اس پارلیمنداور مجلس میں احترام کیاجاتا تھا۔ بروں کا کوئی بوڑھا آتا ہے، کوئی معمر آتا ہے، بزرگ آتا ہے، تو صحابہ کرام احترام کے ساتھ پیش آتے۔حضور الله فیا منا ، اہتمام سے بروں کے ادب کا حکم دیا ہے کہ ان کی عزت کرواور فرمایامن کسم یوقور کبیونا فلیس منا ، دوسری جگدفرمایا کہ جس نے ہمارے چھوٹوں پر شفقت نہ کی اور بردوں کی عزت نہ کی تو ہم میں سے نہیں ۔ تو یہاں صحابہ شب ایک دوسرے کی عزت کرتے تھے اور بردوں کا احترام تھا۔ ویسو حصون فیده المصغیر ،

اور جو چھوٹے ہوتے تھان پررتم اور شفقت فرماتے تھے۔ ویسو شرون ذا المحاجة ،اورا گرکوئی تاج ہوضرورت مند ہوتو اس کوتر جج دیتے تھے۔ مثلاً ایک شخص آیا ہے وہ ایم جنسی میں مبتلا ہے اور پریشانی میں ہو وہ کہتے تھے کہ بھائی پہلے اس کا نمبر ہے اس کی ضرورت مقدم ہے۔ صحابہ دکھے لیتے تھے کہ اس کی حاجت زیادہ ہے تو فیصلہ کرتے تھے کہ بیا پنا معاملہ پہلے پیش کردے کیوں کہ اس کی ضرورت زیادہ اہم ہے۔ ہم بعد میں ملاقات کرلیں گے۔

ويحفظون الغويب ،اورجويردليى اسمجلس من آجاتا تقااور اجنبى اورمسافراور شطاوك تو ان کی پوری مگہداشت اور حفاظت کرتے تھے یعنی ان کے آرام وراحت اور کھانے کا انتظام کرنا گھروں میں لے جانا ان مسافروں کاحق سمجھا جاتا تھا اور اس کا خاص اہتمام ہوتا تھا۔ یا پیہ مقصد ہے کہ صحابہ تلاش میں ہوتے تھے کہ کسی پر دلیمی مسافراوراعرانی کولے آئیں تا کہ وہ کچھ بات یو چھے۔صحابہ کرام حضور علیقہ کے ساتھ بہت ہی یا تیں کرنا چاہتے تھے لیکن اوب اورعظمت اور حرمت الیی تھی کہ حضرت ابو بکڑ ،حضرت عمرٌ ا جیسے صحابہ کو بھی ہمت نہیں ہوتی تھی دیہاتی اور گنوارشم کے لوگ سب کچھ یو چھے لیتے تھے۔وہ تو آ داب سے بے خبرسید ھے سادے تھے۔ صحابہ انتظار میں ہوتے کہ آج نئی باتیں معلوم ہوں گی۔ پر دیسی تو اس ڈھنگ وآ داب کوئیں سیجھتے۔ باہر سے کھڑ ہے ہوکرز ورز ور سے بکارتے یا حمد (صلی اللہ علیہ وسلم)''اخب ج المینا'' اے محمد (علیقہ ) باہرنکلوجمیں بتلا دو کہ فلاں مسئلہ کیسا ہے۔ کوئی آ کریو چھتا اور کہتا کہ سیدھی سادی باتیں بتا دولمبی چوڑی نہیں بس دو جملے۔دور دراز سے آیا ہوں ایس با تنیں کہ میں اس کوحفاظت سے یا در کھ سکوں اور اس برعمل کرسکوں۔ تو دیہاتی لوگ اس انداز میں ایسے ایسے سوال کرجاتے تھے تو صحابیعوش ہوجاتے تھے کہ ہم سے تو بہبیں ہوسکتا تھالیکن آج انہوں نے ہماری معلومات اور علم میں نئی باتوں کا اضافہ کر دیا تو بہجی حفاظت غریب ہے بردیسی مسافرمہمان کوغریب کہاجاتا ہے بعنی صحابہ بردیسی لوگوں کی آمد کا انتظار کرتے تھے۔اللہ تعالیٰ حضور علیہ کے اخلاق عالیہ پر چلنے کی تو فیق عطا فرمائے۔اس مدیث کے پچھاور جھے بھی ہیں۔ وہ بڑے عجیب ہیں۔ بیرروایت کی ٹکڑوں میں ہے۔ ایک ٹکڑا ابتداء میں گزر چکا ہے۔حضور ایک کا عجیب انداز و ہاں بھی مفصل مذکور ہے۔ وہ بھی حضرت حسین کی بہی روایت ہے۔حضرت علیٰ سے آ کے بھی کچھ حصہ آئے گا۔ا گلے باب میں پچھفصیل ذکر ہے۔

> (٨) حدَّثنا محمَّد بن عبدالله بن بزيع ثنابشربن المفضَّل ثنا سعيد عن قتادة عن أنس بن مالك قال قال رسول الله عَلَيْ الله الله عَلَيْ الله الله عَلَيْ الله عَلَيْ الله كراع لقبلت ولودعيت عليه لاجبت(١).

> ترجمه: حضرت انس بن ما لک عدوایت ہے کہ نبی کریم اللہ نے فرمایا کہ اگر مجھے بکری کا ایک پایہ بھی ہدیہ کیا جائے تو میں قبول کروں اور اگر اس کی دعوت پر مجھے بلاما حائے تو میں ضرور حاوں۔

لواهدی التی کو اع، کراع جانور کی پچپلی ٹانگ کے ٹنوں سے بھی نیچے کے جھے کو کہتے ہیں۔ اوربعض شراح نے بیڈلی کے گوشت سے خالی جھے کو کراغ کہا ہے۔ بہر حال پیکھانے کے لحاظ سے برکارت م کا حصہ ہوتا ہے۔ کین رسول اللہ اللہ فاقعہ فرماتے ہیں کہ اگر چہ بیہ حصہ بہت ادنیٰ درجے کا ہے کین میں اس کوبطور بدیبه اور بطور دعوت قبول کروں گا کیونکہ قبول نہ کرنے کا مطلب تعلٰی وتکبر ہے۔اور اس طرح مدیبہ دینے والےاور دعوت پربلانے والے کی دل آ زاری ہوگی۔

> (٩) حدّثنا محمّد بن بشّار ثنا عبدالرحمٰن ثنا سفيان عن محمّد بن المنكدر عن جابر قال جاء ني رسول الله عليه ليس بو اكب بغل و لابرذون(۲).

(١) جامع تومذي ١/٣٨٨ كتاب الاحكام في قبول الهداية، السنن الكبري ١/٠١، مصنف ابن ابی شیبة ۲/۲۵۵ (مختار)

(٢) صحيح بخارى ٨٣ ٢/٢ كتاب المرضى باب عيادة المريض راكباً الخ، سنن ابي داؤد ٨٥/٢ كتاب الجنائز، باب المشي في العيادة، جامع ترمذي ٢٢٣/٢ كتاب المناقب باب في مناقب جابر بن عبدالله، (مختار) ترجمہ: حضرت جابر کہتے ہیں کہ رسول اکر میافیہ (میری عیادت کرنے) تشریف لائے نہ نچر پر سوار تھے اور نہ ترکی گھوڑے پر۔ (بلکہ پیادہ تھے)

لیسس بسر اکسب بغل و لابسر ذون ، بغل خچرکواور بر ذون ترکی یا فاری گور کو کہتے ہیں۔
آپ آلیہ امراء وسلاطین کے برعکس بلاضر ورت سواری پرسوار نہیں ہوتے تھے۔ بلکہ پیادہ چلنے کے عادی تھے اور یہی اس حدیث کو باب تواضع میں ذکر کرنے کی وجہ ہے۔ بیحدیث بخاری شریف میں ذرا تفصیل کیسا تھوذ کر ہے۔ جس میں حضرت ابو بکر صدیق کی معیت کا ذکر بھی ہے۔ نیز حضرت جابر گی ہے ہوتی ، نبی کر ساتھ کا وضوء کے یانی کوان پر چھڑ کنا اور حضرت جابر گی میراث کے بارے میں سوال کا بھی ذکر ہے۔

(۱۰) حدّثنا عبدالله بن عبدالرحمٰن انا ابونعیم ثنایحی بن ابی الهیشم العطّار قال سمّانی وسف بن عبدالله بن سلام قال سمّانی رسول الله عُلَيْتُ یوسف و اقعدنی فی حجره و مسح علی راسی(۱).

ترجمہ: یوسف بن عبداللہ بن سلام کہتے ہیں کہ نبی کریم اللہ نے میرانام یوسف رکھا جھے اپنی گودیں بٹھایا اور میرے سریر ہاتھ پھیرا۔

یوسف بن عبدالله ،بابنمبر۲۷ کی حدیث نمبر۳۲ کے من میں یوسف اوران کے والد کے احوال کے الدی اوران کے والد کے احوال کا تذکرہ ہو چکا ہے۔ امام بخاری کے نزدیک یوسف صحابی ہیں جبکہ بعض نے اسے تا بعی کہا ہے۔ زر نظر حدیث امام بخاری کی تا ئید کرتی ہے۔

فسی حسوہ ، جمر گود کو کہتے ہیں جبکہ بعض لوگوں نے جمر کا ترجمہ جو لی کیا ہے۔اس مدیث میں تیمرک کے طور پر بچوں کو ہزرگوں کے ہاں پیش کرنے اوران سے نام رکھوانے کاعمل ثابت ہوتا ہے۔ صحابہ کرام جبی اس بات کی کوشش کرتے تھے جبیہا کہ احادیث میں آیا ہے اور نبی کر پھیا گھا۔ ان کی فرمائش کو پورا کرتے تھے۔ بیاستن کا ف نہ تھا کہ پنجمبر ہوکر کیسے دوسروں کے بچوں کواہمیت دوں۔

(۱۱) حدّثناإسحاق بن منصور ثناأبو داؤد أنباناالربيع وهوابن صبيح ثنا يزيد الرقاشي عن أنس بن مالك أنّ النبيّ عَلَيْكُ حجّ على

(۱)مسنداحمد ۲۲۰ محیث نمبر ۲۹ ۹۵۱ (مختار)

رحل رث و قطيفة كنّانرى ثمنها اربعة دراهم فلمّا استوت به راحلته قال لبيك بجحّة السمعة فيها و الرياء (١).

ترجمہ: حضرت انس کہتے ہیں کہ نبی کریم اللہ نہا ہوسیدہ کباوے اور جمالروں والے ایک ایسے کپڑے پرتج کیا جس کی قیت ہمارے خیال میں (صرف) چاردرہم تھی۔ پھر جب آپ آللہ کواٹھا کرآپ کی اونٹنی سیدھی کھڑی ہوگئ تو آپ آللہ نے دعافر مائی ''اے میرے رب میں تیرے لئے حاضر ہوں ایک ایسے تج کے ساتھ جس میں نام ونمو دنہیں ہے۔''

کنائری ثمنھاالخ ،یے صدیث اس باب کی پانچویں صدیث ہے جوامام ترفرگ نے محود بن غیلان کے واسطے سے روایت کی ہے لیکن اس میں ایک اشکال ہے کہ وہاں تو یہ آیا تھا کہ اس قطیفہ کی قیت چار درہم بھی نہیں تھی اور یہاں چار درہم قیت بتارہے ہیں۔اس کا جواب اکثر شار حین نے یہ دیا ہے کہ دراصل اس کمبل کی قیت چار درہم سے کم بی تھی لیکن یہاں پر تقریبی قیمت بتائی گئ ہے (۲)۔

لاسمعة فيها ولارياء ،علامه يجوري في اس جملے على تواضع كا اثبات كيا ہے - كه باوجود معصوم مونے كي آپ الله في كا مونمودكي نفى كى دعاكرتے ہيں يرسب تواضعاً ہے - حديث كى حزير تشريح بہلے كرريكى ہے۔

(۱) سنن ابن ماجة ۲۰۷ كتاب المناسك باب الحج على الرحل، مصنف ابن ابى شيبة ۲/۲ ۱۰ الحلية الاولياء لابي نعيم ۵۳/۳ مختار)

(٢) اقول يمكن ان يكون عندالنبي الله في هذا الحج قطيفتان احدهما على الرحل تحت النبي الله النبي الله وكانت على النبي الله وكانت المناوي خلافاً للقاري، اما في هذه الرواية فلفظ القطيفة عطف على السابقة ) كمارجحه الحنفي والمناوي خلافاً للقاري، اما في هذه الرواية فلفظ القطيفة عطف على الرحل لاغير. فكانت تحت النبي الله والقي عليه القطيفة الرخيصة وذلك تواضع منه ونفي الرياء عليه السلام جلس على الغالية والقي عليه القطيفة الرخيصة وذلك تواضع منه ونفي الرياء والسمعة خلافاً لماهو داب المترفين المتكبرين.

ثم اعلم ان هذ التوجيه من مقترحات قريحتى لم اره عند احدفان وافقنى احدفالحمدلله على ذلك وان ردّه اهل العلم فلايسؤني ان يرمى به على وجهى. (اصلاح الدين الحقائي) الأحول عن أنس بن مالك أنّ رجلاخيّاطا دعارسول الله عَلَيْكُ فقرّ ب له ثريداعليه دبّاء وكان رسول الله عَاليُّه عاخذالدباء وكان يحبّ الدباء قال ثابت فسمعت أنسا يقول فماصنع لى طعام اقدر على ان يصنع فيه دباء إلاّصنع(١).

328

ترجمہ: حضرت انس بن مالک فرماتے ہیں کہ ایک درزی نے نی کریم اللے کی دعوت کی۔اس نے آپ کوٹر بدپیش کیا جس پر کدور کھا ہوا تھا۔ نبی کر پھیالیہ کدو کے مکڑے اٹھاتے رہے کیوں کہآ ہے اللہ کو کدویہ ندتھا۔حضرت ثابت کہتے ہیں کہ میں نے حضرت انس کو رہ کہتے ہوئے سنا کہاس کے بعد میرے لئے کوئی ایسا کھانا تیار نہیں کیا گیا۔جس میں جھے کدو ڈلوانے کی قدرت ہو گراس میں کدوضرور ڈالا گیا۔

ان رجلاً خيّاطاً ، يُحض ني كريم الله كا آزادشده غلام تفارجبياكه بإبادام الني الله كي گیار ہو س حدیث میں گزر چکا ہے۔

فيقوب له ثويدا، يهان بربه مات آئي ہے که اس درزي نے ثريد آ سائيلة کي خدمت ميں پيش ك جبكه باب ادام ش آيا بك ك " فقرب الى الرسول عَلْكُ خبزاً من شعيروموقا" بظاهرية تعارض معلوم ہوتا تھا لیکن تطبیق ممکن ہے۔ کہ دونوں چیزیں ہوں یاثر پد کو پہلی حدیث میں روٹی شور یا کہا گیا ہو۔ کیونکہ ٹریداسی سے مرکب ہوتا ہے۔البتہ وہاں پر کدو کے ساتھ قدید یع لیعنی گوشت کے نکڑوں کا بھی ذکر ہے۔ یہاں برٹرید کے شمن میں ان کا ذکر ہور ہاہے۔ کیونکہ ٹرید میں گوشت کے ٹکڑے ہوتے ہیں۔اس حدیث میں نبی کریم تالیقہ کے ایک غلام کی دعوت براور وہ بھی جو کی روٹی اور کدو کے سالن بر جانے کا ذکر ہے۔ جوآ پہلینے کی تواضع کی بین دلیل ہے۔

(١)صحيح بخاري ٧/٢ ا ٨، صحيح مسلم ٧/ ١٨ اكتاب الاشربة باب جوازاكل المرق الخ جامع ترمذي ٢/٢ كتاب الاطعمة باب ماجاء في اكل الدباء ،سنن ابن ماجة جلد باب الدباء ص٢٣٤، مؤطاامام مالك، السنن الكبرى ٢٧٣/٤، دارمي ١/١٠ (مختار) (١٣) حدّثنامحمّدبن اسمعيل ثناعبدالله بن صالح حدّثني معاوية بن صالح عن يحيى بن سعيد عن عمرة قالت قيل لعائشة ماذاكان يعمل رسول الله عليه في بيته قالت كان بشراً من البشر يفلي ثوبه ويحلب شاته ويخدم نفسه(١).

329

ترجمه: حضرت عائش سے يوجها كيا كه ني كريم الله كم كيا كام كيا كرتے تھے۔انہوں نے جواب دیا کہ نی کریم ﷺ انبانوں میں سے ایک انبان تھے۔ ( گھر میں ضرورت ہوتی تو وہ ) اینے کپڑوں میں جو ئیں تلاش کرتے تھے۔ بکری کا دود هدو هتے تھے۔اوراینے کاموں میں خود لگےرہتے تھے۔

كان بشراً من البشر العني آيمالية بنيادي طور يرانسان عي تصاور انسانيت نبوت كمنافي نہیں ہے۔ مشرکین کوآ ہے اللہ کی انسانیت پراعتراض تھا۔ لہذاوہ کہتے تھے مسالھ فدا السر سول یا کل البطيعيام ويسمشيي في الاسواق ،ليني ابيابهي كوئي رسول موتاب جوكهانا كهائ اوربازارول مين پھرے ۔لیکن حضرت عا نشکہتی ہیں کہآ ہے ایک بشری نقاضوں سے مبرانہیں تھے۔ بلکہ گھر میں بھی انسانی ضرور مات كوخود بورافر ماتے تھے۔

يفلي ثوبه، بعض روايات من آيا ب كهجوين ني كريم الله كواذيت نبين دي تصي تو پرجوس تلاش کرنے کا کیامطلب؟ علامه مناوی کلصتے ہیں۔ کہ نبی کریم آلی کا پیپینہ خوشبودار تھا۔ جبکہ جو س تو تعفن کی وجہ سے پیدا ہوتی ہیں۔اس لئے آ ہوائی میں جوؤں کا ہونا مستجد لگتا ہے لیکن اس کے متعدد جواب دیئے گئے ہیں۔ کہ نبی اکر میافیہ میں جو بین ہیں تھیں یہاں قوصرف تلاش کرنے کا ذکر ہے جوامت کی تعلیم کیلئے بھی ہوسکتا ہے۔ اور بیبھی اخمال ہے کہ نظافت اور خوشبو کی وجہ سے خود آ ہے اللہ کے بالوں میں جویں پیدانہیں ہوتی تھیں لیکن بھی دوسر بےلوگوں کی جویں آپ آپیانی کے سرمیارک میں گھس جاتی تھیں۔ پھر بھی يه جوين آپ الله كواذيت نبيل ديت تعين كين آپ ان كوكنده مجه كرخود زكال ديت تھے۔

(١) مصنف عبدالرزاق رقم حديث ٢ ٩ ٩ م ٢ مشرح السنة ٢ ٢ ٢ ٢ كتاب المناقب باب في شيبه وخضابه عُليا المحديث ٢ ٢٤٧، مسنداحمد ٢ / ٢ • ١ (مختار)

ویخدم نفسه ،مثلابعض روایات میں آیا ہے کہ آپ آلی اپنے اپنے اپنے کپڑوں کی سلائی کرلیا کرتے سے ۔ پھٹے کپڑوں کو پیوندلگانا، جوتوں کی مرمت کرنا، خود ہی وضوء کا پانی اپنے لئے مہیا کرنا، اورخود ہی پانی والن آپ آلیہ کا معمول تھا۔ ایک روایت میں یہ بھی آیا ہے کہ 'ویسمل عمل البیت' یعنی آپ آپ آلیہ گھر کے کام کاج خود کیا کرتے تھے۔

الغرض درون خانہ اور گھر کے باہر ہر جگہ آپ تاہی تواضع کا مظاہرہ فرماتے تھے۔اور دوسروں کی نسبت خود کواعلی و ہر ترسمجھ کرا متیازات کی طلب اور جبتجو سے اجتناب فرماتے تھے۔

## خلاصة بإب

اس باب میں نبی کر پھوٹیا ہے کی فروتی اور تواضع کا بیان ہے۔ ضابط ہے ہے کہ آدمی جتناعظیم المرتبہ ہوتا ہے۔ اتنابی اس میں احساس عبد بہت اور فروتی زیادہ ہوتی ہے اور جتنی عاجزی زیادہ ہوتی ہے۔ بندہ اتنابی بلندی اور مقام عروج کے قریب تر ہوتا ہے۔ تکبر صرف اور صرف واجب الوجود اور رب العالمین کا خاصہ ہے۔ اور یبی وجہ ہے کہ نبی کر پھوٹی ہیں تواضع صد درجہ کی تھی۔ جتنامقام بلند تھا اتنی ہی فروتی تھی۔ بلدیں وجہ آپ تھا تی ہی فروتی تھی۔ بلدیں وجہ آپ تھا تی ہی کہ مبالغہ آمیز ستائش سے منع فرماتے تھے۔ اگروہ محبت کی وجہ سے بھی کھڑے ہونے کی کوشش فرماتے تو آپ تھا تھے گرگراں گزرتا۔ غلاموں، بائدیوں بلکہ فاتر العقل عورتوں کے ساتھ ملنے اور ان کے نقاضے پورے کرنے سے استنکا ف نہیں فرماتے تھے۔ نشست و برخاست، ملاقات، ساتھ ملنے اور ان کے نقاضے پورے کرنے سے استنکا ف نہیں فرماتے تھے۔ نشست و برخاست، ملاقات، سلام وکلام، کھانے ، لباس ، بستر ے ، سواری اور مکان وغیرہ میں سادگی برتنا آپ تھی تھے۔ کا وطیرہ تھا۔

یماروں کی عیادت کرنا، جنازوں میں شرکت، سادہ دعوتوں کو قبول کرنا، گھر کے کام کاج میں شرکت کرنا، اپنی خدمت کسی اور سے نہ کروانا، سرراہ سائلوں کی حاجت براری کرناوغیرہ ایسے کام اس بات کی غماز میں کہ آپ آلینے اپنی ذاتی عظمت اور منصب سے پوری طرح صرف نظر فرمایا کرتے تھے۔اورخود کوایک عام آدمی کی طرح پیش فرماتے تھے۔منداحمد میں حضرت حسن کی ایک روایت میں آپ آلینے کی تواضع کا نقشہ یوں ذکر کیا گیا ہے۔

لاوالله ماكانت تغلق دونه الابواب ولاتقوم دونه الحجاب ولايغدى عليه بالجفان ولايسراح عليه بالجفان ولايسراح عليه بها، ولكنه كان بارزاً من ارادان يلقى نبى الله لقيه. كان يجلس بالارض ويوضع طعامه بالارض ويلبس الغليظ ويركب الحمار ويردف ويلعق والله يده،

ترجمہ: نہیں خداکی سم آپ کے پیچے دروازے بندنہیں کئے جاتے سے نہ آپ پر پہرہ بھایا جاتا تھا، نہ صح کے وقت آپ کے پاس کھانے کے برتن لے جائے جاتے سے نہ شام کو۔ بلکہ آپ آلیا ہے کھا پھرتے سے جو بھی چاہتا کہ پخیر خدا کے ساتھ ملے مل لیتا تھا۔ زمین پر بیٹھ جاتے سے ان کا کھانا بھی زمین پر رکھ دیا جاتا تھا۔ موٹا کپڑا پہنتے سے ۔ گدھے پر سواری کر لیتے سے ۔ دوسر رکو بھی پیچے بٹھا لیتے سے ۔ اور خدا کی قشم انگلیاں بھی چائے ۔

يتقى مينارعظمت كى كسرنفسى اور فروتنى \_الله تعالى بميس بهى انتاع كى توفيق بخشے \_آمين

## ٣٨. باب ماجاء في خُلق رسول الله عَلَيْكُ مَ الله عَلَيْكُ مَ الله عَلَيْكُ مَ الله عَلَيْكُ مَ الله عَلَيْكُ م

حقیقت اخلاق: خُلق خاء کے ضمہ اور لام کے سکون نیز دونوں کے ضمہ کے ساتھ طبیعت اور نش کے باطنی اوصاف و معانی کا نام ہے۔ جس طرح کہ انسان کی ظاہری صورت ہوتی ہے۔ اس صورت میں محاس بھی ہوتے ہیں۔ اور قبائے بھی ہوتے ہیں۔ اور قبائے بھی اس طرح نفس انسانی کیلئے باطنی صورت بھی ہوتی ہے۔ اس صورت میں بھی محاسن اور قبائے دونوں ہو سکتے ہیں۔ باطنی صفات اور معانی میں سے وہ صفات جو خدا اور سلیم الفطرت انسانوں کے ہاں مقبول اور مجود ہوں اور جو ظاہری اعمال ستحتہ کیلئے بنیا دبنتی ہوں اخلاق حنہ کہلاتی ہیں۔ اور چونکہ اللہ تعالیٰ کے ہاں ظاہری صورت و ہیئت کی کوئی قیمت نہیں۔ اس لئے ثواب اور مقبولیت کا دارومدارا نہی باطنی صفات اور اخلاق حنہ پر ہوتا ہے اور انسان کے کمال کا ہڑا وسیلہ اخلاق ہی ہیں۔ دارومدارا نہی باطنی صفات اور اخلاق حنہ پر ہوتا ہے اور انسان کے کمال کا ہڑا وسیلہ اخلاق ہی ہیں۔ صافظ حسن طبق کا مصداق ہیں کہ فضل کی محضول اور رز ائل کے ترک کا نام ہے۔ قاضی عیاض ہیں کہ جیں کہ لوگوں کے مستقل کی تبین کہ فضائل کی مخصیل اور رز ائل کے ترک کا نام ہے۔ قاضی عیاض ہیں جین کہ لوگوں کے ساتھ شاک تنہ دو یہ رکھنا، خندہ بیٹیانی نرم مزاجی، ہر داشت، شفقت، صبر جیسی صفات کو اپنا نے نیز تکبر، لوگوں کی بے عزتی ، غیظ وغضب اور مؤاخذہ ہے تجب کا نام حسن طبق ہے۔

ہیں۔ تو آپ آلی اللہ نے فرمایا کے نہیں بلکہ دونوں خصاتیں قدیم سے ہیں۔ چنا نچہ علامہ ابن مجر کہتے ہیں کہ منذر گا سوال کرنا، پھر نبی کریم آلیت کا سوال کوردنہ کرنا بلکہ جواب دینا اس بات کی دلیل ہے کہ پچھا خلاق وہبی اور فطری ہوتی ہیں۔ اور اس وجہ سے اخلاق حسنہ کے اکتساب کا حکم بھی دیا جاتا ہے کیونکہ یہ اختیاری ہیں۔

لیکن ملاعلی قاری گہتے ہیں کہ اخلاق تمام تر دراصل توجبتی صفات ہوتی ہیں۔البتہ بیزیادت اور نقصان کو قبول کرتی ہیں۔اس لئے علمی اور عملی امور پر بٹنی ریاضات اور جدو جہدسے ان کو کم وکیف کے اعتبار سے بردھایا جاتا ہے اور بھی غفلت کی وجہ سے ان میں نقص آنے لگتا ہے (۱)۔

اخلاق نبوی الله کا کمال: نبی کریم الله انسانیت کے عروج پر بلکہ تمام مخلوقات میں اکمل وافضل میں۔ اور اس کی سب سے بڑی وجہ بھی آپ الله کے اخلاق کا کمال ہے۔ خود الله تعالی نے آپ الله کو اخلاق کے معراج پر قرار دیا ہے۔ ' إنّک لعلیٰ خلق عظیم ''، انّ، جملہ اسمیہ، لام تا کیداور عظیم سے توصیف کر کے اللہ تعالیٰ نے آپ الله کے اخلاق عظمت کا خوب نقشہ کھینیا ہے۔

حضرت عائش جوحضور والله کے ظاہر وباطن کوشاید تمام لوگوں کی نسبت سب سے زیادہ جانے والی تھیں۔خود کو اخلاق نبوی الله کے بیان سے عاہر جیسی تصور کر کے فرماتی ہیں ''کسان خطاف کے بیان سے عاہر جیسی تصور کر کے فرماتی ہیں استقصاء ممکن نہیں اسی طرح آپ الله قل الله قل آن '' یعنی جس طرح قرآن مجید کے معانی محاسن اور خوبیوں کا استقصاء ممکن نہیں اسی طرح آپ الله تعالی نے آپ الله کو انسانوں کے اخلاق جمیلہ کے احاطہ سے کلام عاہر ہے۔ اور یہی وجہ ہے کہ الله تعالی نے آپ الله کو انسانوں کے مطبقے ، جنات کے تمام انواع بلکہ بقول ملاعلی قاری گلائکہ ، نیا تات و جمادات کیلئے نبی بنا کر بھیجا۔

خلاصہ بیر کہ اخلاق جمیلہ باطنی فضائل سے اتصاف اور رزائل سے اجتناب کانام ہے۔ نبی کر پیم المل بنا کی مشت نموند خروار کے طور پر ان کا ذکر فر مایا ہے کیونکہ (۱) امام غزائی نے فر مایا کہ اخلاق گو جہلی جیں البتدان پر جوآ ٹارمر تب ہوتے جیں وہ اختیاری جی اس کے امرونی ان آ ٹار پر ہوا ہے مثلاً کی کی جبلتہ میں غضہ رکھا ہوا ہے ، بیغیر اختیاری ہے۔ اس پر جوگا کی دے بیٹھا بیام اختیاری ہے اور اس پر ہوگا کی دے بیٹھا بیام اختیاری ہے اور اس پر ہوگا کی دے بیٹھا بیام اختیاری ہے اور اس پر ہوگا کی دے بیٹھا بیام اختیاری ہے اور اس پر ہوگا کی دے بیٹھا بیام اختیاری ہوئائل تر نہ کی ص ۸۹۲ کو نظر سے دنی گوشائل تر نہ کی ص ۸۹۲ کو بیٹھا بیام اختیاری ہوئائل تر نہ کی سے موجوز کی دور کی موجوز کی دور کی موجوز کی دور کی موجوز کی دور کی دور کی موجوز کی دور کی موجوز کی دور کی دور

"مالایدرک کله لایترک کله" لین سب کھینہ طاقو کھی کھی کافی ہے۔ چنا نچاس سلسلے میں بندرہ احادیث ذکر کر کے انہوں نے اپنی ذمدداری کونھایا ہے۔

(۱) حدّثناعبّاس بن محمّدالدورى ثناعبدالله بن يزيد المقرى ثناعبدالله بن يزيد المقرى ثناليث بن سعد حدثنى أبوعثمان الوليد بن أبى الوليد عن سليمان ابن خارجة عن خارجة بن زيد بن ثابت قال دخل نفرعلى زيد بن ثابت فقالوا له حدثنا أحاديث رسول الله عليه قال ماذا احدّثكم كنت جاره فكان اذا نزل عليه الوحى بعث الى فكتبته له فكنا اذا ذكرنا الدنيا ذكرها معنا واذا ذكرنا الأخرة ذكرها معنا واذا ذكرنا الطعام ذكره معنا فكل هذا احدّثكم عن النبي عليه الله فكله فكله المدته المهنا واذا ذكرنا الطعام ذكره

ترجمہ: حضرت زید بن ثابت کے پاس پھولوگ آئے اور درخواست کی کہ نبی

کریم اللہ کی پھی با تیں سنا ئیں۔ انہوں نے کہا کہ پھی سناؤں؟ میں ان کا پڑوی تھا
جب آپ اللہ پروی نازل ہوتی تو جھے بلوالیتے تھے۔ میں (حاضر ہوکر) وہ وی لکھ
لیتا تھا(۲)۔ پھر جب ہم (صحابہ) دنیا کی با تیں کرتے تو آپ اللہ بھی ہمارے
ساتھ (ہماری دلداری کی خاطر) دنیا کی با تیں کرتے تھے اور جب ہم آخرت کو یاد
کرتے تو آپ اللہ بھی ہمارے ساتھ آخرت کو یادفر ماتے۔ اور اگر ہم کھانے پینے کی

(۱) شرح السنة للبغوى ۲۳۵/۳ كتاب المناقب باب فى تواضعه عَلَيْ وقم المستولة المستولة

(۲) کاتین وی کی تعداد میں علاء کا ختلاف نو پرتوسب متفق میں البتہ بعض نے ۱۹ بتائی ہے۔ علامہ عبد الجواد الدو می قیاد کر کرتے ہوئے لکھا ہو کتاب الوحی هم زیدو عثمان و علی وأبی و معاویة و خالد بن سعید و حسظ لمة بن الربیع و العلاء بن الحضومی و ابان بن سعید (الا تحافات ۲۹ ۳) اگر چ بحض معزات نے امیر معاویة کے بارے کہا ہے کہ آپ ضمرف مراسلات لکھتے تھے گر حقیقت یہ ہے کہ آپ کا تبین وی میں ثمار میں (مختار)

بات کرتے تو آپ آپ آفٹہ بھی اس کا ذکر فرماتے تھے۔ بیسب پچھ میں نبی کریم آفٹہ کے حالات بیان کرر ہاہوں۔

ا صاطراخلاق نبوی الله ناممکن: فقال ماذا احد فکم ، جب ساتھوں نے بی کریم الله کے حالات سانے کی فرمائش کی تو حضرت زید بن ثابت نے بطور تجب فرمایا کہ کیا کیا ساؤں، گویا تم تو نبی کریم الله کے حالات کریم الله کے احوال ، افعال واقوال کا احاطہ چاہتے ہو حالا نکہ یہ ناممکن امرے۔ آپ الله کے اخلاق وشائل کا بیان تو کجاس کے عشر عشیر کا ادراک بھی محال ہے۔

آپ الله کن میں مرح جتنی بھی کی جائے کہ ہے بلکہ ایک شاعر کے بقول
تجاوز حق المدح حتی کانه باحسن مایٹنی علیه یعاب
لیمن آپ الله مرائے اور تعریفوں کے صدود سے آگے جاچکے ہیں کہ یہاں تک کہ اگر پچھ سے بہتر
تعریف و تو صیف سے آپ الله کی مرح کی جائے وہ بھی آپ الله کیلئے عیب جیسی ہے۔

۔ دفتر تمام گشت و بپایاں رسید عمر ماہم کیاں دراول وصف تو ماندہ ایم بہر حال حضرت زید گامقصد ہے کہ سب کچھ بیان کرنامشکل ہے البتہ محبوب کا ذکر آئے اور کچھ بھی نہ کہا جائے یہ بھی عشق کی ناقدری ہے۔ اس لئے آپ نے رسول کر پیم اللہ کے اخلاق کا ایک پہلو اجا گرکردیا کہ کس طرح آپ ایک ایک ولداری کیا کرتے تھے ایسے موضوع اور باتوں میں بھی

شرکت فرماتے تھے جو صحابہ کرام کی نظر میں دنیاداری کے امور تھے۔

ذکورها معنا ، ہمارے ساتھ دنیا کا بھی ذکر کر لیتے تھے۔ دنیا کے ذکر سے مرادیٹیس کہ دنیا کی عجب و تنافس میں مبتلا ہوکر بولتے تھے بلکہ مرادیہ ہے کہ ہمیں دنیا کی باتوں سے شخ کرنے کی بجائے اس میں بھی شریک ہوجاتے تھے۔ البتہ ایسے درخ کی طرف اسے موڑ دیتے جس سے صحابہ کی توجہ دین کی جانب مبذول ہوجاتی تھی۔ مثلاً تجارت کے اصول اس کی پرکتیں، دولت کے نوائد ونقصانات، اسے اللہ کے مبذول ہوجاتی تھی۔ مثلاً تجارت کے اصول اس کی پرکتیں، دولت کے نوائد ونقصانات، اسے اللہ کے راستے میں خرج کرنے کی ترغیب دنیا ہی کی بات ہوتی تو بھی آپ اللہ کے کو اکد نقصانات اس دین کی جانب ہے۔ اس طرح کھانے پینے کی بات ہوتی تو بھی آپ اللہ کے کو اکد نقصانات اس کے آداب، بعض کھانوں کی صلت و حرمت دو مرول کو کھلانے کی فضیلت وغیرہ امور کا تذکرہ کر لیتے تھے۔

جیسا کہ احادیث کی کتابیں اس قتم کی مثالوں سے بھری پڑی ہیں یوں صحابہ کو وحشت بھی نہ ہوتی تھی نہ ہوتی تھی نہ ہوتی تھی نہ کسی بات کو کرنے کیلئے مجلس نبوی اللہ سے نکلنے کی ضرورت پڑتی ۔ ساتھ ساتھ منصب نبوت کا تق بھی ادا ہوتا تھا اور اگر یہاں ذکر سے مرادا حکام ومعارف نہ بھی لیس تو بھی بیافا کہ کیا کم ہے کہ صحابہ کو انس حاصل ہو۔ نیز یہ پہلو بھی سامنے آیا کہ امیر عوام کے ساتھ مجالس میں شریک ہوسکتا ہے۔

(۲) حدّثناإسحاق بن موسى ثنا يونس بن بكير عن محمّد ابن إسحاق عن زياد بن أبى زياد عن محمّد بن كعب القرظى عن عمرو بن العاص قال كان رسول الله على على يقبل بوجهه وحديثه على اشرّالقوم يتالفهم بذلك فكان يقبل بوجهه وحديثه على حتى ظننت أنى خيرالقوم فقلت يارسول الله انا خيراو ابوبكر فقال ابوبكر فقلت يارسول الله انا خيرام عمر فقال عمر فقلت يارسول الله اناخيرام

عشمان فقال عشمان فلما سألت رسول الله عَلَيْكُ فصد قنى فلو ددت أنّى لم اكن سألته (١).

ترجمہ: حضرت عمرو بن العاص ملے جن کہ نبی کر یم اللہ الوگوں میں برترین مخص کی طرف بھی اپنی توجہ مبذول فرماتے تھے۔ آپ آلیک اس رویئے سے) ان کو مانوس فرماتے تھے۔ چنا نچہ پنی توجہ اور باتوں سے جھے بھی نواز تے تھے۔ جن کہ میں مانوس فرماتے تھے۔ چنا نچہ پنی توجہ اور باتوں سے جھے بھی نواز تے تھے۔ حتی کہ میں سے بہتر ہوں۔ اس لئے میں نے ایک دن پوچھا کہ میں (ان کے فرد یک) تمام لوگوں میں سے بہتر ہوں۔ اس لئے میں نے ایک دن پوچھا کہ میں بہتر ہوں یا ابو بکر۔ آپ آلیک نے فرمایا ابو بکر الیک بیر بہتر ہوں یا عمر۔ تو آپ آلیک نے فرمایا عمر، پھر میں نے پوچھا کہ میں بہتر ہوں یا عمر۔ تو آپ آلیک نے فرمایا عمر، پھر میں نے پوچھا کہ میں بہتر ہوں یا عمان۔ آپ آلیک نے فرمایا عمان، تو جب میں نے بوچھا کہ میں بہتر ہوں یا عمان۔ آپ آلیک نے فرمایا عمان، تو جب میں نے بوچھا کہ میں بہت سے صحابہ کے بعد ہوں) تو اب جھے افسوس ہے کہ کاش میں بہت سے صحابہ کے بعد ہوں) تو اب جھے افسوس ہے کہ کاش میں بہت سے صحابہ کے بعد ہوں) تو اب جھے افسوس ہے کہ کاش میں بہت سے صحابہ کے بعد ہوں) تو اب جھے افسوس ہے کہ کاش میں بہت سے صحابہ کے بعد ہوں) تو اب جھے افسوس ہے کہ کاش میں بہت سے صحابہ کے بعد ہوں) تو اب جھے افسوس ہے کہ کاش میں بہت سے صحابہ کے بعد ہوں) تو اب جھے افسوس ہے کہ کاش میں بہت ہے جہ تو بھی تا یا (کہ میں فضیات میں بہت سے صحابہ کے بعد ہوں) تو اب جھے افسوس ہے کہ کاش میں بہت ہے جو بھی تا یا (کہ میں فضیات میں بہت سے صحابہ کے بعد ہوں) تو اب جھے افسوس ہے کہ کاش میں بہت سے صحابہ کے بعد ہوں) تو اب جھے افسوس ہے کہ کاش میں بہت سے صحابہ کے بعد ہوں) تو اب جھے افسوس ہے کہ کاش میں بہت سے صحابہ کے بعد ہوں) تو اب جھے افسوس ہے کہ کو کہ کو کہ کو کی کو کی کی کے کہ کو کہ کی کی کی کو کہ کو کو کہ کو کہ

عمروبن العاص: عدم وبن العاص، بن واكل بهى صحابي بيل هي ما اسلام لائے علامه ابن جُرِّ اور نے لكھا ہے كہ آپ اور خورت خالد بن وليد دونوں صفر م هي وفق كله سے پہلے اسلام لائے جبہ بعض حصرات نے لكھا ہے كہ آپ اور حضرت خالد بن وليد دونوں صفر م هي وفق كله سے پہلے اسلام لائے سے ۔ آپ انتہائى زيرك سياستدان اور مدير سے ۔ اس لئے آپ وداهية العرب بھى كہاجا تا ہے ۔ غزوه ذات السلاسل ميں ني كريم الله نے آپ وامير مقرر كيا ۔ بعد ميں آپ وكو عمان كا والى مقرر كيا ۔ اور حضور و الله في كى وفات تك بيد خدمت انجام ديت كوامير مقرر كيا ۔ بعد ميں آپ وكو عمان كا والى مقرر كيا ۔ اور انہوں نے مصر پر آپ ووالى مقرر كيا ۔ پھر حضرت عثمان لائے عبد ميں آپ ووالى مقرر كيا ۔ اور انہوں نے مصر پر آپ ووالى مقرر كيا ۔ پھر حضرت عثمان مصر ميں رہے ۔ حضرت عرف كو الله على حضرت معاوية كے عبد ميں آپ ووباره مصر كے والى مقرر بہوئے اور وفات تك مصر ميں رہے ۔ آپ كى وفات آپ كى وفات آپ كى عمرو بال مقروب الفركي رات كو ہوئى ۔ جبکہ بعض لوگوں نے وقع كے بعد وفات ہونے كا لكھا ہے ۔ اس وفت آپ كى عمر نو ے سال تھى ۔ مصر ميں آپ كے خام سے مشہور جامع عمرو بن وفات ہونے كا لكھا ہے ۔ اس وفت آپ كى عمر نو ے سال تھى ۔ مصر ميں آپ كے خام سے مشہور جامع عمرو بن وفات ہونے كا لكھا ہے ۔ اس وفت آپ كى عمر نو ے سال تھى ۔ مصر ميں آپ كے خام سے مشہور جامع عمرو بن وفات ہونے كا لكھا ہے ۔ اس وفت آپ كى عمر نو ے سال تھى حسن خلقه و حيائه النج (مختان)

العاص آج بھی موجود ہے۔

تالیف قلب کی حکمت: یت آلفهم بذلک ، چونکداشر القوم معنی کے لاظ سے جمع ہے۔ اس کئے یت الفہم کی خمیراشرالقوم کو بھی راجع ہوسکتی ہے اور یہ بھی ممکن ہے کہ بیغیر قوم کو راجع ہو۔ پہلی صورت میں معنیٰ یہ ہوگا کہ قوم کے بدترین افراد پر بھی ان کی تالیف قلب کے لئے توجہ فرماتے تھے۔ دوسری صورت میں مطلب یہ ہوگا کہ قوم کے بدترین افراد پر بھی ان کی تالیف قلب کے لئے توجہ فرماتے تھے۔ دوسری صورت میں مطلب یہ ہوگا کہ قوم کے صلحاء اور اخیا تو ویسے بھی نبی کریم آلیف سے مانوس تھے۔ ان پر اتنی توجہ کی ضرورت بھی نبیر سے تھی۔

البته اشرار پرخصوصی توجه کر لیتے تھے۔ تو اس طرح ساری قوم بلا استثناء تابع ہوجاتی تھی یا یہ مطلب بھی ہوسکتا ہے کہ جب نیک لوگ اشرار کے ساتھ آپ اللّیہ کا روبیا ورحسن خلق دیکھ لیتے تھے تو نبی کریم اللّیہ کی عظمت اور محبت اور بھی دل میں بڑھ جاتی تھی۔ ساتھ ساتھ اشرار کو بھی انس ہوجاتا تھا۔ لہذا معنی مقتمی تو مکورا جع کرنا درست ہوجائے گا۔

خندہ پیشانی نہ کہ مدح سرائی: لیکن یہ بات یا در ہے کہ نبی کر پھر اللہ صرف باتوں کارخ ایسے لوگوں کی طرف موڑتے یا خندہ پیشانی کے ساتھ توجہ فرماتے تھے جہاں تک ان لوگوں کی مدح سرائی اور ثنا وقوصیف ہے وہ کہیں بھی ثابت نہیں ہے کیونکہ ان کی تعریفیں کرنا ، اور ایسے لوگوں کے غلط افعال کی تقریر کرنا پینیمبر کے شان کے منافی ہے بلکہ مدامت متصور ہوگی جو شرعاً مفاسد پر مشتمل ہے۔

اور یہی وجہ ہے کہ جب حضرت عمر و بن العاص ؓ نے پوچھ لیا تو آپ ﷺ نے دوسرے صحابہ ؓ کو ان پر جج دے دی۔ ان برتر جج دے دی۔

فقلت یارسول الله أناخیر او أبوبكر، بیسوال حفرت عمروبن العاص فی این عمطابق اور نبی كريم آلی فی کثرت توجه سے متاثر موكر كيا۔ فصد فی الیتی آپ آلی فی خواب میں كئی كیك كامظامرہ نہيں كیا بلكہ فیك فیك تتاویا كرديگر صحابة مسے افضل ہیں اور كسى تتم كى تر دداور مدامنت سے كام نہيں لیا۔

فلوددت أنّی لم اکن سألته، اپنسوال پرندامت کی وجدوراصل بیتی کراس سے قبل اپن بارے میں ایک حسن ظن قائم تھا کہ میں نبی کر یم آلی کے برا پیارا اور تمام صحابہ کی نسبت زیادہ مقرب ہوں لیکن سوال کے بعد وہ حسن ظن جاتا رہا۔ اور اصل حقیقت معلوم ہوگئ کہ آپ آلی نے فیصلے نے مجھے استیناس اور

## تالف قلب کی وجہ سے مرکز توجہ بنایا ہے۔ دراصل میر انمبر بہت پیچیے ہے۔

ترجمہ: حضرت انس کتے ہیں کہ میں نے دس سال تک نی کریم اللہ کی خدمت کی۔ اس دوران انہوں نے کبھی بھی جھے (ناراضگی اور بیزاری کا لفظ) اف تک نہیں کہا۔ نہ کسی کام کے کرنے پر بیفر مایا کہ کیوں ایسا کیا نہ کسی کام کے چھوڑ جانے پر بیہ کہا کہ کیوں ایسا کیا نہ کسی کام کے چھوڑ جانے پر بیہ کا کہ کیوں نہیں کیا۔ اور نی کریم اللہ کے کا خلاق تمام لوگوں سے بہتر تھے۔ میں نے بھی کسی ریشی کپڑا، ریشم اور نہ کسی اور ملائم چیز کو ہاتھ لگایا جو نی کریم اللہ کے ہاتھ سے زیادہ نرم ہو۔ اور نہ میں نے بھی کوئی ایسامشک یا عطر سونگھا ہے جو نی کریم اللہ کے کہا تھے کے باتھ سے زیادہ نوشبودار ہو۔

ف ماقال لی اف قط ،أف، ہمزہ کے تینوں حرکات کے ساتھ موق ن اور غیر موق ن بولا جاتا ہے۔

بلکہ بعض ائمہ نے اس میں دس لغات اور بعض نے اس سے بھی زیادہ کا ذکر کیا ہے۔ یہ اسم فعل ہے جو

تزجو اور کراہت کے دوران بولا جاتا ہے۔ اس کا اصل لغوی معنی نا خنوں اور کا نوں کی گندگی ہے جس سے

کراہت ہوتی ہے۔ پھریدا سے موقعوں پر بولا جاتا ہے جہاں مخاطب کی کوئی چیز نا پیند اور طبیعت پر بھاری

ہو۔ اور شکایت کا ظہار کرنا ہو۔

(۱) صحيح بخارى باب صفة النبى مُلْكُ كتاب المناقب ۵۰۳/۱ صحيح مسلم كتاب الفضائل، بساب حسسن خسلق م مسلم كتاب الفضائل، بساب حسسن خسلق م مسلم كتاب البروالصلة باب ماجاء في خلق النبي مَلْكُ ١/٢ (١/١ مختار) النبي مَلْكُ ١/٢ (١/١ مختار)

عنایت نبوی علیف خدام پر:

حدیث کا مطلب بیہ اواک اس دس سالہ (۱) خدمت کے دوران ناممکن

ہم کہ مجھ سے کوئی قصور نہ ہوا ہو۔ بایں ہم آپ علیف کی طرف سے کوئی شکایت یا ڈانٹ ڈ بٹ و کیھنے میں

نہیں آئی۔ ظاہر ہے کہ بیآ پ علیف کے اخلاق عالیہ کی وجہ سے ہے۔ لیکن یا در ہے کہ آپ علیف کی بینا موثی

اور در گزرخدمت کے سلسلے میں تھی ور نہ اگر حضرت انس سے کوئی کوتا ہی امور شرعیہ میں ہوتی تو آپ علیف ضرور مواخذہ فرماتے جیسا کہ دیگر روایات میں تصریحات ہیں کہ حق کے لئے آپ علیف خصہ بھی فرماتے سے ۔ البتہ حضرت انس کی منقبت کی طرف بھی اس حدیث میں اشارہ موجود ہے کہ باوجود و خرش کے آپ قصور بی کہ تا کہ اگر کسی قصور پرکوئی اور شخص بھی کسی کوعماب کرتا تو بھی آپ علیف خرما کر کہتے کہ چھوڑ و بس بھی اللہ تعالی کومنظور تھا اگر کسی قصور پرکوئی اور شخص بھی کسی کوعماب کرتا تو بھی آپ علیف خرما کر کہتے کہ چھوڑ و بس بھی اللہ تعالی کومنظور تھا اگر اللہ تعالی چا ہے تو کوتا ہی نہ ہوتی گویا ایسے موقع پرآپ علیف درضاء بقضائے الی کی تعلیم دیتے تھے۔ اگر اللہ تعالی چا ہے تو کوتا ہی نہ ہوتی گویا ایسے موقع پرآپ علیف درضاء بقضائے الی کی تعلیم دیتے تھے۔

وکان النبی من أحسن النّاس خُلقا، شایدمطلب بیہ کمیرے ساتھ جو حسن اخلاق کارویہ تھاوہ میری خصوصیت نہیں تھی بلکہ آپ آگا فطری طور پر اخلاق حسنہ کے حامل تھاور ہر کسی سے یہی معاملہ تھا۔

و لامسست خسزًا السخ، حسن اخلاق کے بعد آپ آلی کے خاتی حسن کا بیان ہے کہ آپ آلی کے خاتی حسن کا بیان ہے کہ آپ آلی خال مری طور پر بھی بہت خوبیوں کے مالک تھے" خز" بعض لوگوں کے ہاں ایک جا نور (۲) کا نام ہے جس کا اون بہت ملائم ہوتا ہے اس کے اون سے بنے ہوئے کیڑے کو بھی خز کہا جا تا ہے۔علامہ ابن اشیر گئے ہیں۔ فرنز اون اور دیثم سے مرکب کیڑے کو کہتے ہیں۔

مسک او لاعط را، عطر کاذکرمشک کے بعد ذکر العام بعد الخاص کے قبیلے سے ہے۔
(۱) اس روایت میں دس سال کی خدمت کا ذکر ہے لین بعض روایات میں آتا ہے کہ حفرت انس و نبی کر یم اللہ کی خدمت میں بیش کرنے والے حضرت ابوطلی تھے جو حضرت انس کی والدہ ام سلیم کے شوہر ہیں اور ابوطلی قاام سلیم سے تکا ح
اور اسلام دونوں جمرت نبوی اللہ ہے کے کھی ماہ بعد واقع ہوئے ہیں۔ اس لئے بیدت دس سال سے قدر رہے م ہوگی اور اسی وجہ سے بعض روایات میں کسر کے الغاء کر کے دستے سنین ' ایعنی نوسال ذکر ہے۔ (اصلاح الدین)
وجہ سے بعض روایات میں کسر کے الغاء کر کے دریائی جانور ہے جے قدیں بھی کہاجاتا ہے اس پر ریشم کی طرح ملائم اون ہوتا

(۲) بعض شراح کے خیال میں بیدا یک دریائی جانو رہے جسے قندس بھی کہاجا تا ہے اس پر رکیٹم کی طرح ملائم اون ہوتا ہے۔(اصلاح الدین) كان أطيب من عوق رسول الله عَلَيْهِ، ليني ني كريم الله كي ييني سيزياده خوشبودار کوئی بھی چیز نہیں دلیھی۔اس میں کوئی مبالغہ آمیزی نہیں بلکہ روایات اس پر شاہد ہیں کہ بعض صحابیات آ ہے اللہ کے بینے کوجمع کرتی تھیں اور اس کو دوسری خوشبوؤں میں ملاتیں تو وہ خوشبوہمی بےمثال بن جاتی تھی(۱) اس کے باوجود آپ آیا ہے مصنوعی خوشبوبھی زیادہ استعال فرماتے تھے تا کہ ملائکہ سے ملا قات اور عجامع المسلمین میں حاضری کے وقت فرشتے اورلوگ زیادہ مخطوظ ہوں۔اسی وجہ ہے آپ آیا فی فرمایا کرتے تص، حبّب الى من دنيا كم ثلاث النساء والطيب وقرة عيني في الصلوة، ليني يويال اور خوشبوسے مجھے محبت دی گئی ہےاور نماز تومیری آنکھوں کی ٹھنڈک ہے۔

341

(٢) حدّثنا قتيبة بن سعيد واحمد بن عبدة هو الضبيّ و المعنى واحدوقالاحة ثناحمّاد بن زيدعن سلم العلوى عن أنس بن مالك عن رسول الله عَلَيْكُ أَنّه كان عنده رجل به اثرصفرة قال وكان رسول اللُّه عُلَيْكُ اللَّهُ الدِّواجه احداًبشئ يكرهه فلمّا قام قال للقوم لوقلتم له يدع هذه الصفرة(٢).

ترجمہ: حضرت انس کہتے ہیں کہ نی کریم آلیہ کے پاس ایک فخض بیٹا تھا جس کے کیڑے بر زعفران کا رنگ لگا ہواتھا نی کریم آلیہ کی عادت تھی کہ آپ آپ اللہ کسی کی منہ پرالی بات نہیں کہتے تھے جواسے نا گوار ہو جب وہ خض مجلس سے اٹھ کر جلا گیا

(1) بلکہ ایک روایت میں ہے حضرت انس کی والدہ نے رسول اللہ انسانیہ سے آپ علیہ کے بیینے کے بارے میں عرض کیا ياد مسول الله عَلَيْكُ ونوجو بوكته لصبيانناقال اصبت (الحديث) ملاعلى قاري اس روايت ساستدلال كرت موككها بوفيه استحباب التبرك والتقرب بآثار الصالحين قيل لما حضر أنس بن مالك الوفاة اوصى ان يجعل في جنوبه من ذالك الطيب (مرقات . مشكواة) (مختار)

(٢) سنن ابي داؤد ٢٢٣/٢ ايضا كتاب الادب باب حسن المعاشرة ٢/٢ ا ٣ كتاب الترجل باب في الخلوق للرجل، السنن الكبرئ للنسائي ٢٧/٧ كتاب عمل اليوم و الليل باب ترك مواجهة الانسان بمایکره الادب المفر دللبخاری ۱۱ رقم الحدیث ۳۳۷ (مختار) تو آپ آیستالی نے حاضر لوگوں سے فرمایا کہ اگرتم لوگ اس شخص سے کہددو کہ وہ بیرنگ استعال کرنا چھوڑ دیتو بہتر ہوگا۔

لایک ادیواجه احداً بشی یکوهه، یعنی کی پرروبرواعتراض کرنے سے غالباً کتراتے تھے کہ مبادا حضور علیقہ کا اعتراض اسے نا گوارگزرے یا اعتراض پراعتراض کردے اور انکار صادر ہوتو پھر کفر کا خدشہ ہے لہذا آپ علیقہ اس اعتراض کو کسی دوسرے موقعہ کیلئے مؤخر کردیتے تھے یا بالواسط اس کو عبیہ فرماتے تھے۔ اور مزاج پرحیا کا اتنا غلبر تھا کہ کسی سے خت بات نہیں کر سکتے تھے۔

اعتراض نه کرنے کے حدود: لیکن آ منے سامنے اعتراض نه کرنا، آپ الله کی غالب عادت تھی اوروہ بھی فہ کورہ خدشات کی وجہ سے تھی اگر مخاطب کی طرف سے اطمینان ہوتا کہ بات بری نہیں لگے گی تو آ منے سامنے بھی منع فرماتے تھے جیسے کہ سرخ رنگ کپڑا پہننے کی وجہ سے حضرت عبداللہ بن عمرو بن العاص پر گرفت فرمائی۔ بلکہ پہنے ہوئے کپڑے کوجلانے کا حکم بھی مردی ہے۔

لین آپ آلی کا بردن این ایستالی کا بردقی انجاش ایسے امور میں ہوتا تھا جوشر عا حرام اور ناجا کزند ہوں بلکہ ایسے موقع پر تنزیبی کرا ہت کے حامل اور خلاف اولی باتوں کو ہرداشت کرتے تھے۔ محر مات کے بارے میں تو آگے حدیث میں آرہا ہے کہ۔۔۔۔ 'فاذاانتھ ک من محارم اللّٰہ تعالیٰ شئ کان من اُشد ہم فی ذالک غضباً ''ایک اور روایت میں ہے' فاذاتعدی المحق لم یقم لفضبہ شئ ''اب ایک اعتراض یہ ہوسکتا ہے کہ زعفر ان کی خوشبولگانا مردوں کیلئے اس کے رنگ کی وجہ سے ممنوع اور ناجا کز ہے۔ او آپ آلی نے اسے کوئکر ہرداشت کیا ضا بطے کے مطابق تو اس مخص کوئے کرنا چاہئے تھے کیونکہ وہ شرعاً نا جائز کام کا مرتکب تھا۔ اس کا جواب یہ ہے کہ ممکن ہے کہ ابھی تک' مفرق'' کے استعال سے نبی نازل نہ ہوئی ہو۔ آپ آلی نے صرف نسوانی عادت سمجھ کراس کو طبعی طور پرنا پیند فرمایا اور صرف مکروہ تنزیبی کے درج میں سمجھ کراس پرانکار نبیل فرمایا ہو، یا یہ کہ یہ صفرة اس درج کی نہ ہو جہاں حرمت کا محم لگایا جا سکے۔ بلکہ زعفران کے رنگ کا چیکا سااثر باتی ہو جیسے کہ صدیث کے لفظ میں 'اثر صفرق'' کا ذکر ہے' مصفرق'' نہ کور

(۵) حدّثنا محمّد بن بشّار ثنا محمّد بن جعفر ثنا شعبة عن أبى اسحاق عن أبى عبدالله الجدلي واسمه عبد بن عبدعن عائشة أنّها قالت لم يكن رسول الله علينا فاحشا و لامتفحشاً و لاصخّاباً فى الأسواق و لا يجزى بالسّيّئة السّيئة و لكن يعفو و يصفح (١).

ترجمہ: حضرت عائشہ جمی بین کہ نبی کریم آلیہ نہ خصی طور پر فخش گوتے نہ بنکلف فخش گوئی فرماتے تھے برائی کا بدلہ فخش گوئی فرماتے تھے نہ بائی کا بدلہ برائی سے نبین دیتے تھے بلکہ معاف فرماتے اوراع اض فرماتے تھے۔

و لاَمتفحشا، تقدرہ کو کا معنی ہے کھٹ گوئی اور بدکلای کی عادت تو نہ ہو کین عادت تو نہ ہو کین کا ور بدکلای کی عادت تو نہ ہو کین کو کو اس کی وجہ سے تکلفاً برا بھلا کہا جائے تو گویا نی کر بھا اللہ بلکا ہی کے دونوں قسموں سے بر اسے نہ عادت تھی اور تہ بھی تکلفاً بہودہ بات کرتے تھے و لاصخا بافی الا سواق، علامہ زمشری کہتے ہیں کہ یہ اصل میں تا بسین کے ساتھ ہے ۔ سین صاد سے بدلا گیا ہے ۔ یہاں بھی سین اور صاددونوں کے ساتھ موقع زیادہ ہوتا ہے گر نی کر یہ ہو گئے ہیں چونکہ بازار شی شوروغل ہوتا ہے اس لئے وہاں چیخنے چلانے کا موقع زیادہ ہوتا ہے گر نی کر یہ ہو گئے ہیں چونکہ بازار شی شوروغل ہوتا ہے اس لئے وہاں چیخنے چلانے کا آواز پست ہوتی تھی دومری جگر تو بطریق اولی والے نہ تھے۔ دومری جگر تو بطریق اولی والے نہ تھے۔ اس میں مبالغہ کو نی نہیں۔ بلکہ نس صخب یعنی شور کی نئی مقصود ہے ۔ بعض علماء کہتے ہیں کہ فعال کے صنع کی نئی المبالغہ نہیں بلکہ مبالغہ نی الشی مقصود ہے مطلب یہ ہے کہ شور کرنا آپ بھی ہیں کہ شدومہ سے نئی تھا۔ کہ نہیں کہ شورکیا کرتے تھے۔ ولکن یعفو و یصفحہ ، بین مشدومہ سے نئی تھا۔ کہ نہیں کہ المبالغہ نی المبالغہ نی المبالغہ کی کا معنی ہے ' اعبوا صن بسے محمقہ اللوجہ ' جس کا لفظی معنی منہ کی برائی کو معافہ فرماتے تھا اور می محملی کا معنی ہے ' اعبوا صندہ النہ کی تعلی کی کرائی کا ذکر اس کے رویرو معنی منہ مدی مدین ابن ابی شیبة کر ۳۳۰ سنن ابی داؤد الطیالسی رقم بساب ماجاء فی خلق النہ می تابئی مصنف ابن ابی شیبة کر ۳۳۰ سنن ابی داؤد الطیالسی رقم المحدیث بن حبان ۲۰۱۸ (مختار)

نہیں فرماتے تھے نہاس کا اثر آپ آلیا ہے کے چروا نور پر ظاہر ہوتا تھا یعنی برائی کے بدلہ پر قادر ہوتے ہوئے بھی اس کا بدلہ نہیں لیتے تھے۔ یہ کھن دعویٰ نہیں بلکہ ہزاروں واقعات اس کے شاہد ہیں۔ کھارنے آپ آلیا ہے کہ کاس کا بدلہ نہیں لیتے تھے۔ یہ کھن دعویٰ نہیں بلکہ ہزاروں واقعات اس کے شاہد ہیں۔ کھارنے آپ آلیا ہے کہ مقابلے میں ان کیلئے بدوعا تک گوارہ نہیں کی البتہ جہاں دین حق کو نقصان پہنچا تو ان لوگوں کیلئے آپ آلیا ہودعا بھی دیتے تھے بلکہ عملاً ان کے ساتھ قل وقال روار کھتے تھے۔

يمثال حلم اور درياد لي كي مثالين: الماعلى قاري في يهال ير دووا فع آي الله كي كشاده دلى اور اعراض کے بیان کئے ہیں۔ایک واقعہ یبودیوں کے ایک عالم کا لکھا ہے جو کہتے ہیں کہ میں نے نبوت کی تما معلامات نبی کریم اللہ کے چرہ انور میں دیکھتے ہی محسوں کر لئے تصروائے دوعلامتوں کے۔ان دو علامتون كاامتحان لين كيليم مين موقع كي تلاش مين تقاايك مدكر يسبق حلمه جهله "ليني آسياليه كي برداشت آ سِعَلَيْ كَ غصر برغالب موكى، دوم بيكة الإيزيد شدة الجهل عليه الاحلما "العنيان کے ساتھ جتنا بھی زیادہ جہالت کا روبہاختیا رکیا جائے اس سے ان کی ہر داشت اور زیادہ ہوگی۔ چنانچہایک موقع بر میں نے آ بیٹائی سے مجور کا سودا طے کیا میں نے رقم دے کر کچھ مجوران سے خریدے۔ مجور کی ادائیگی میں ابھی دو تین دن باتی تھے کہ میں آپ اللہ کے پاس آیا اوران کے قیص اور جا در کو ہاتھ سے تھینج كرترشروكي اورختى سے كها كه اے محمد كياتم ميراحق ادانيس كرتے \_ خداكي فتم تم سب بن عيدالمطلب قرضخوا ہوں کوٹا لنے والے ہو۔حضرت عمرؓ نے میری بات سن کر کہا کہ اے خدا کے دشمن تم رسول التُعلِيُّ سے ایسی یا تیں کرتے ہو۔ خدا کی فتم اگر نبی کریم اللہ کی (موجود گی کی وجہ سے ان کی تکلیف) کا خوف نہ ہوتا تو میں تیرا سرتکوار سے اڑادیتا۔اس دوران نبی کریم تالیقہ حضرت عمر کی طرف بہت سکون اوراطمینان کے ساتھ مبنتے ہوئے دیکھتے رہے۔ پھر فرمایا، کہا ہے مراجی اور یہ یہودی (تیرے اس رویے کے بجائے ) ا یک اور بات کے زیادہ مختاج میں وہ بیر کہتم مجھے حسن ادائیگی اور اس کو حسن طلب کی تلقین کرتے۔اب جاؤتم اس کا قرضہ ادا کرو۔ اور بیں صاع تم اس کو اینے حق سے زیادہ دے دو کیونکہ تم نے اس کے ساتھ جھگڑا کیا ہے۔ چنانچہ جب حضرت عمرؓ نے میرا قرضہا دا کر دیا اور زائد بھی دے دیا تو میں نے ان سے کہا کہ ا عظمیں نے نبی اکرم اللہ میں نبوت کی تمام علامات دیکھ کی تھیں سوائے دوعلامتوں کے وہ ریکہ ''یسبق

حلمه جهله و لایزید شدة الجهل علیه الاحلما "اب ش نے ان دونوں کا مثاہرہ بھی کرلیا۔ البذا تم گواہ رہوکہ میں ایمان لا تاہوں اور خدا کی ربو بیت اسلام کی حقا نیت اور محمد الله کی نبوت پر راضی ہوں۔ دوسر اواقعہ یہ لکھا ہے کہ ایک اعرابی آپ آلیا ہی آیا اور آپ آلیا ہی کی چا در کواس زور سے کھینچا کہ آپ آلیا کہ کر دن مبارک میں اس کا اثر ظاہر ہوگیا ۔ اس کے ساتھ ساتھ یہ بھی کہا کہ میرے دواونٹوں پر غلہ لادکر جھے دیدو کیونکہ تم جھے اپنے اور اپنے باپ کے مال سے تو نہیں دیتے ۔ آپ نے از راہ ملاطفت فرمایا کہ جب تک میری گردن میں چا در کھینچنے کا بدلہ جھے نہیں دو کے میں غلہ نہیں دونگا۔ اس نے کہا کہ خدا کی قتم میں بدلہ نہیں دونگا۔ آپ آلیا ہے در گوا اور در گرز فرماتے ہوئے ایک آدی کو تھم دیا کہ ایک اور اس کے حوالے کردو۔

بہر حال آپ آلی کو ذاتی تکلیف پہنچانے کا آپ آلی انقام نہیں لیتے تھے بلکہ کشادہ دلی سے معاف فرماتے تھے۔ معاف فرماتے تھے اور مجرم کے سامنے اس کا کوئی تذکرہ تک نہیں فرماتے تھے۔

> ترجمہ: حضرت عائشہ سے روایت ہے کہ نبی اکر م اللہ نے اپنے ہاتھ سے جہاد کے علاوہ کسی موقع پر کسی بھی چیز کوئیس مارانہ خادم کونہ کسی عورت کو۔

الله تعالیٰ کی رضا کی خاطر ضرب ہے لیکن رینہیں لکھا کہ صدودوقصاص میں بھی خود آپ علی ہے ارصادر ہوچی ہے مانہیں۔

و لاضرب خادماً و لاامر أة، هى كالفظ عموم كى وجه سے فادم اور عورت كو يكى شامل ہے۔ تو كويا يہ دونوں ضمناً فذكور بيں كيكن عموماً ان دونوں كى مار بكثر ت بہوتى ہے۔ البنداان كاذكر خصوصى طور پركيا كيا نيزان كا مارنا تاديب كے طور پر اگر چه جائز ہے كيكن آپ آلية كے اخلاق عاليہ نے يہ بھى گوار انہيں فرمايا كه تاديب كيلئے بھى ان پر ہاتھ اٹھائے۔ البتہ اولاد كى اخلاقى ودينى تربيت كيلئے آپ آلية نے مارنے كا حكم ديا ہے۔ يہاں اگرا شكال بوجائے كہ بعض روايات ميں نى كريم آلية كا پچھ صحابہ كو مارنے كاذكر ہے كى كو ديا ہے۔ يہاں اگرا شكال بوجائے كہ بعض روايات ميں نى كريم آلية كا پچھ صحابہ كو مارنے كاذكر ہے كى كو سيند پر مارا۔ كى كو پاؤں سے مارا۔ اى طرح حضرت جاہر كے بياراونٹ كو بھى مارا تھا۔ اس كا جواب بيہ ہے كہ بہتے نام مراد بيہ ہے كہ اپنے غصہ كو شخد اگر نے كيلئے آپ آلية في نے كى كو تكليف بہتے ئى بواور مذكورہ واقعات ميں ايمانہيں ہوا۔ بلكم آپ آلية اللہ كے بيار كے استشفاء كيلئے يا پھركى كواليمال بركت كيلئے مارا ہے واسے مارنہيں كہتے بلكم بياتو عين ترتم ہے۔ مارا ہے واسے مارنہيں كہتے بلكم بياتو عين ترتم ہے۔

ترجمہ: حضرت عائشہ ہی ہیں کہ میں نے بھی بھی نبی کر پم اللہ کو کسی ایسے ظلم کا بدلہ لیتے ہوئے ہیں کہ باللہ تعالی بدلہ لیتے ہوئے ہیں دور ذاتی طور پر ) آپ آلیہ پر کیا گیا ہو۔ لا یہ کہ اللہ تعالی کی حرمتوں میں سے کسی حرمت کا جنگ ہوا۔ پھر جب حرمات اللی میں سے کسی حرمت

(۱) صحيح بخارى ۱ / ۵۰۳ كتاب المناقب باب صفة النبي عُلَيْكُ ، صحيح مسلم ۲۵۲ كتاب الفضائل ، محيح مسلم ۲۵۲ كتاب الفضائل باب مباعدة النبي عُلِيْكُ ، سنن ابى داؤد ۲/۲ ۱ ۳باب في التجاوز كتاب الادب باب في التجاوز في الامر ، مسنداحمد ۲/۸۵ ( ۱۶ ر)

کی اہانت ہوتی تو آپ آلیہ اس کی وجہ سے سب سے زیادہ غضبناک ہوتے تھے۔ نیز نبی کریم آلیہ آلیہ کہ کہ کی اور سے اللہ اللہ کی کریم آلیہ آلیہ کی کہ کی اس کے درمیان اختیار نبیس دیا گیا مگر آپ آلیہ نے ان میں سے آسان ترکا انتخاب فرمایا جب تک کہ وہ (آسان تر) گناہ نہ ہوتا۔

347

منتصراً، انتصارے اسم فاعل ہے جس کامعنی انتقام اور بدلہ لینے کے ہیں۔ منظلمة لام کے مسرہ کے ساتھ اس چیز کو کہتے ہیں جو ظالمانہ طور پرلوٹی گئی ہواور لام کے فتہ کے ساتھ ظلم کے معنی میں مصدر ہے۔ خلسمہ مجبول کا صیغہ ہے نائب فاعل کی خمیر نبی کریم ایک کے کواور منصوب خمیر مظلمہ کوراجح ہے۔ مفعول کی طرف تعدید پراعتراض ہوسکتا ہے جس کا جواب شر اح نے بیدیا ہے کہ یہاں حرف جرمقدر ہے معنون کی طرف تعدید پراعتراض ہوسکتا ہے جس کا جواب شر اح نے بیدیا ہے کہ یہاں حرف جرمقدر ہے لیتی دیا ہے کہ یہاں حرف جرمقدر ہے لیتی دیا ہے۔

انقام لغت نبوی مین نبیس ہے:

اب کلام کامعنی یہ ہوا کہ نبی کریم آلیک ایسے ایسے ایسے اسلام کا انقام نبیس لیتے ہوآ پہر آلیک پر کریم آلیک ایسے ایسے ایسے ہوا ہو مثلاً سے جو آپ آلیک پر کیا گیا ہو خواہ وہ بدنی ظلم ہو، مالی ہو یا آپ آلیک کی بہر حتی کا ارتکاب ہوا ہو مثلاً بسید بن الاعصم یہودی نے آپ آلیک کو زہر دیا جس کا اثر آپ آلیک کی وفات تک باقی رہا۔ احد میس عتبہ نے آپ آلیک کو پھر مارے طاکف والوں نے آپ آلیک کو لہولہان کردیا۔ کی بد بخت شعراء نے آپ آلیک کی بہوکی آپ آلیک نے رواداری سے برو صرفیات کی بہوکی آپ آلیک نے رواداری سے برو صرفیات کے حرم مبارک پر بھی انگلیاں اٹھائی گئیں گر آپ آلیک نے رواداری سے برو صرفیات کے دیا تھ سب کھ معاف کردیا۔

مالم ینتهک، مجهول کا صیغہ ہے نهک سے اقتعال مجرد کے معنیٰ میں بھی آتا ہے۔ ''نهک الامر فلاناً'' کا معنیٰ ہے کہ یہ چیز اس فخض پرغالب آئی اور اس کو تھکا دیا۔ انتهاک المحرمات کا معنی الامر فلاناً'' کا معنیٰ ہے کہ یہ چیز اس فخض پرغالب آئی اور اس کو تھکا دیا۔ انتهاک المحرم کی جع ہے ارتکاب حرمات کا معنی میں ہاتھ ڈالنے کو کہتے ہیں۔ من محارم الله ،محارم محرم کی جع ہوں کو راصل مصدر میری ہے جو مفعول کے معنی میں آیا ہے۔ یہاں مرادوہ امور ہیں جو اللہ تعالیٰ نے حرام کردی ہوں۔ کان من اشلاھم فی ذلک غضباً، ارتکاب محرم کی وجہ سے آپ تھا ہے۔ میں کمال ملم وصبر ہوتے۔ اور انتقام بھی لیتے تھاور یہی دراصل اعتدال ہے۔ اخلاق عالیہ کا کہذاتی اذبت میں کمال ملم وصبر اور اللہ تعالیٰ کی نافر مانی میں کمال بے صبری تھی نہ ہر جگہ غیظ وغضب اور نہ ہر جگہ درگز راور نظر اندازی تھی۔ اور اللہ تعالیٰ کی نافر مانی میں کمال بے صبری تھی نہ ہر جگہ غیظ وغضب اور نہ ہر جگہ درگز راور نظر اندازی تھی۔

نی کی بے حرمتی سے صرف نظر کیوں: یہاں بیا عتراض ہوتا ہے کہ نی سیالی پڑھا بھی تو انہاک حرمت ہے لینی یہ بھی تو ایک بڑے حرام کام کاار تکاب اور عظیم جرم ہے تو آپ اللہ نظر سے اس جرم کو کیوں نہیں دیا ہے اور اس کا انتقام کیوں نہیں لیا اس کا جواب شر آح ہوں دیتے ہیں کہ ٹھیک ہے کہ یہ بھی ایک دینی جرم اور تق اللی کا ضیاع ہے لیکن پنج برکی اذبت بھی بھی نا دانستہ طور پر یا سادگی یا دیماتی گوار پن کی دوجہ سے جرم اور تق اللی کا ضیاع ہے لیکن پنج برکی اذبت بھی بھی نا دانستہ طور پر یا سادگی یا دیماتی گوار پن کی دوجہ سے کسی سے صادر ہو ۔ تو اس صورت میں اغماض اور کفار تو ان کے حق میں آپ آپ آلی گوئی دراصل کی معلم ہوتی تھی ہوتی تھی ہوتی تھی ورنہ نبی کی بے حرمتی کی نسبت تالیف قلب اور دیگر لوگوں کو اسلام کی طرف را غب کرنے کیلئے بھی ہوتی تھی ورنہ نبی کی بے حرمتی کی نسبت نیادہ بڑا جرم تو وہ کفر صورت میں کررہے تھے ۔ خلاصہ ریہ کہ جہاں مصلحت ہوتی وہاں آپ اغماض نیادہ بڑا جرم تو وہ کفر صورت میں کررہے تھے ۔ خلاصہ ریہ کہ جہاں مصلحت ہوتی وہاں آپ اغماض سے کام لیت خواہ وہ کفار کے ساتھ ہو یا مسلمانوں کے ساتھ اور انتقام بھی لیتے تھے گر ذاتی تکلیف کی دجہ سے نہیں بھی تھے گر ذاتی تکلیف کی دجہ سے نہیں بھی تھے گر ذاتی تکلیف کی دجہ سے نہیں بلکہ حقوق اللہ یہ کے ضیاع کی دجہ سے نہیں بلکہ حقوق اللہ یہ کے ضیاع کی دجہ سے نہیں۔

اولین ترجی امت برسہولت:

مالم یکن ماثما، ماثم اثم کے معنی میں مصدر میں ہے بخاری شریف روا مورش ہے ہے۔

شریف روایت میں ہے۔فان کان اثما کان ابعد الناس منه ،مطلب یہ ہے کہ جن دوا مورش آپ اللہ کے وافقیار دیاجا تا تھا اگر ان میں سے ایک بہل اور دوسرا مشکل ہوتا تھا۔ تو آپ اللہ است کی سہولت کو ترجی دیے تھے تا کہ امت کو تکلیف سے بچاسکیں۔مثل کسی جنایت کی وجہ سے دوسر اور میں افتیار دیا گیاتو آسان ترکوترجی دیے۔کفار کے تل اور جزیہ یافدیہ میں قرائے تھے۔

میں افتیار دیا گیاتو آسان ترکوترجی دیے۔کفار کے تل اور جزیہ یافدیہ میں قبل کا انتخاب نہیں فرماتے تھے۔

میں افتیار دیا گیاتو آسان ترکوتر جی دیے۔کفار کے تل اور جزیہ یافدیہ میں قبل کو ترجی دیے۔اس لئے کہ امت پر اسانی اور ان کو مشقت سے بچانے کی آپ اللہ میں میں افتیار کی وجہ سے لوگوں کی دلوں میں آسانی اور ان کو مشقت سے بچانے کی آپ اللہ کی میں میں میں میں دو جب بھی بڑھ جاتی تھی۔

آسانی اور ان کو مشقت سے بچانے کی آپ اللہ کے میں میں میں میں بڑھ جاتی تھی۔

ہمارے بعض فضلاء اور بالحضوص نے نے فارغ ہونے والے عوام میں جا کر تشدد کی انتہا کرجاتے ہیں۔ ہر ہر بات پر گرفت ہوتی ہے چھوٹے بڑے گناہ پر جنت کو حرام کردیتے ہیں۔عوامی رواجوں اور علا قائی روایات پر بدعتوں کے فتو ہے لگا لگا کراورمسخبّات کے ترک پر وعیدات سنا کرلوگوں کا ناک میں دم کر لیتے ہیں اس طرح لوگ ان سے دور دورر بتے ہیں۔ بلکہ بھی بھی اس کیلئے ماحول اتنا تلخ ہوجاتا ہے کہ گزارہ مشکل ہوجاتا ہے۔ نبی کریم اللہ کا روبیہ عوام کے ساتھ خیرخواہانہ ہوتا تھا اور ان کو مريريثاني سے بچانے كى فكر ميں رہتے تھے۔اس لئے آسانى كور جح ديتے تھے۔البتہ اگروہ جہت جوآسان ہو، شرعا گناہ اور ناجائز ہوتی تو آپ آیٹ اس کے قریب بھی نہ جاتے تھے۔ ایسی صورت میں مشکل جہت کا انتخاب ناگز برموتاتھا۔

349

(٨) حدّثناابن أبي عمر ثنا سفيان عن محمّد بن المنكدرعن عروة عن عائشة قالت استاذن رجل على رسول الله على وأناعنده فقال بئس ابن العشيرة اواخ العشيرة ثمّ اذن له فآلان له القول فلمّا خرج قلت يارسول الله عليه قلت ماقلت ثم النت له القول فقال يا عائشة إنّ من شرّالناس من تركه الناس اوو دعه الناس اتّقاء فحشه(١).

ترجمہ: حضرت عائشہ ہیں کہ ایک شخص نے نبی کر یم اللہ کے یاس آنے کی اجازت جابی آپ ایس نے فرمایا کہ پیخص بہت برا آدمی ہے این قبیل کا۔اس کے بعدآ ہے آلیا ہے اس محض کوآنے کی اجازت دیدی۔ پھراس کے ساتھ زم کلامی سے بات کرنے لگے جب وہ آ دمی باہر چلا گیا تو میں نے آخضرت اللہ سے یو جھا کہ یارسول التعلقہ آ ہے اللہ نے نے اس محض کے بارے میں وہ بات کہی جو کہی ( یعنی اس کی ندمت کی ) پھر ( کیوں ) بات کرنے میں زی فرمائی ؟ تو آپ اللہ نے ارشاد فر مایا کہ اے عائش و ہخض بدترین لوگوں میں سے ہے جسے دیگر لوگ اس کی بد کلامی کے ڈرکی وجہ سے چھوڑ دیں۔

(١)صحيح بخارى ١/٢ ٩ ٨ كتاب الادب باب لم يكن النبي عُلَيْ فاحشا و لامتفاحشاً، صحيح مسلم ٣١٢/٢ كتاب البروالصلة والادب باب مدارة من يتقى فتحشه، سنن ابي داؤد ٣١٢/٢ كتاب الادب باب في حسن العشيرة، جامع ترمذي كتاب البرو الصلة باب ماجاء في المدار اة (الرار) استأذن رجل،اس مخص كى تعين مين تين نامون كاذكركيا كياب-

- ا) عیبینہ بن حصن الفر اری، جس کوالاحتی المطاع بھی کہاجا تا تھا نبی کریم اللے کے زمانے میں اس کی برمعاثی اوراذیوں سے لوگ نگ تھے۔
- ۲) حضرت مخرمہ بن نوفل الزهري (مسور کے والد) جو ابتداء ميں مؤلفه القلوب ميں سے تھے اور انتہائی زبان دراز تھے ليكن ان كے حج الاسلام ہونے ميں كوئى شك نہيں ہے۔

## ۳) نزیر

مؤخرالذكركا نام ايك انتهائي ضعيف روايت مين وارد ہےاس لئے بيا حمّال بھى ضعيف ہے۔ حضرت مخر مدفر ليش كے معزز صحابی ہيں اس لئے بعض شراح نے تو اس كا انكار كيا ہے البتہ بعض حضرات كا خيال ہے كہ ہوسكتا ہے كہ اسلام لانے سے قبل جب وہ مؤلفہ القلوب ميں سے تھے اس دور ميں بيدواقعہ ہوا ہو۔

جبدا کشرشراح کاخیال بیہ ہے کہ بیعید بن صن فزاری ہے بیمنہ پھٹ میم کا آدمی تھافتے مکہ سے پہلے مسلمانوں میں شامل ہوا تھا اور فتے مکہ کے دوران مولفہ القلوب میں ان کا شار ہوتا تھا۔ ابو برصد ان سے زمانہ میں مرتد ہوا پھر گرفتار ہوکر ابو بکر سے سامنے پیش ہوا اور تو بہ سے جان بخش ہوئی لیکن حضرت عمر فاروق کے زمانہ میں بھی اس کے ناجا کز حرکات کا سلسلہ جاری رہا۔ بلکہ ابن ججر نے کتاب الام للشافعی کے حوالے سے لکھا ہے کہ حضرت عمر نے اس کو حالت ارتد ادمیں قبل کردیا تھا۔ اس صورت میں تو اس کی صحابیت ہی ختم ہوجاتی ہے لیکن بعض حضرات نے اسے صحابی کہا ہے۔ اور رہے کہ اس کی موت حضرت عثمان کے زمانے میں واقع ہوئی۔

کیانی کریم الله نظیم نیست کی؟ به مس ابن العشیرة او قال اخو العشیرة عشیره سے خوداس آنے والے فضی کا قبیلہ اور خاندان مراد ہے اور عربی زبان میں خاندان کی طرف نسبت ''ابن'' اور ''ان'' دونوں طریقوں سے ہوتی ہے۔ اس جملے پر بعض ظاہر پر ستوں نے بیاشکال کیا ہے کہ نی کریم آلیات کا بیکام غیبت کے زمرے میں آتا ہے کیونکہ اس محض کی غیر حاضری میں آ سے آلیات نے اس کی تنقیص کی ہے اس کا

ایک جواب تو بددیا گیا ہے کہ آپ اللہ نے حاضرین اور خصوصی طور پر حفرت عائشہ کو فرردار کرنے کیلئے آنے والے کی برائی بیان کی تا کہ وہ مختاطر بیں اور آنے والے کی ضرر سے حفوظ رہ کیں ۔اس کے سامنے داز کی بات نہ کہدیں بلکہ احتیاط سے کام لیس نیز اس کی بدزبانی سے پریشان نہ ہوں اور کسی شریر کی شرسے بچانے کیلئے لوگوں کو فیر دار کرنا غیبت محرمہ نہیں ہے۔ چنا نچے علامہ ابن جڑ نے اس عیبنہ بن حصن کا واقعہ لکھا ہے کہ وہ جب نی کریم اللہ کے پاس آیا پردے کا حکم ابھی نازل نہیں ہوا تھا حضرت عا منشر ساتھ بیٹھی تھیں اس نے پوچھا کہ یہ کون بیٹھی بیں تو آپ اللہ نے نفر مایا بیعا کشہ بنت ابی برخ بیں وہ بولا کہ کیا میں تیرے لئے اپنے بیٹوں کی ماں (بیوی) نہ چھوڑ وں جو اس (عاکشہ) سے بہتر ہے جس پر حضرت عاکشہ تو بہت غصہ آیا۔ نی کریم اللہ نے بیٹوں کی ماں (بیوی) نہ چھوڑ وں جو اس (عاکشہ ) سے بہتر ہے جس پر حضرت عاکشہ نے بوچھا کہ یہ کون ہے؟ تو نی کریم اللہ نے عینہ کو باہر نکل جانے کا حکم دیا اور جب حضرت عاکشہ نے بوچھا کہ یہ کون ہے؟ تو آپ اللہ حمق المطاع" یہا بی تی قوم کا بیوقو ف سربراہ ہے۔

351

دوسراجواب بیددیا گیا ہے کہ کسی فاسق معلن کے فتق کو بیان کرنا غیبت نہیں ہے۔اور عیمینہ کم از کم ان دنوں جبراً بدمعاثی کا ارتکاب کرتار ہتا تھا چنا نچہ لاج میں نبی کریم اللہ کے بیس اونٹوں کو چرا کر لے جانے والوں میں عیمینہ اور اس کے بیٹے ملوث تھے جن کے تعاقب میں نبی کریم اللہ نے لئکر بھیجا اور غزوہ ذات قردوا قع ہوا۔

فالان که القول، نی کریم الله نے رواداری اور مدارات کے طور پراس کے ساتھ کلام ش نرمی اور ملاطفت فرمائی تا کہ اسے اور اس کی قوم کو اسلام کی طرف راغب کرسکیس اور اس کے شرسے لوگوں کو بچاسکیس۔ قبلت ماقلت ثم النت المخ، حضرت عائش نی کریم الله کے عمل میں حکمت جاننا چاہتی ہیں کہ جب ایک باراس شخص کوقوم کا برا آ دمی قرار دیا تو پھر برے آ دمی کی طرح روبی بھی ہونا چاہئے تھا۔ با توں میں کچک اور زمی تو کم از کم نہیں ہونی چاہئے حالا نکہ آپ الله نے قواس کے ساتھ بردی نرمی سے با تیں کیں اس میں کوئی حکمت ہے؟

حكتول بريخي مدارات: ان من شرالناس من تركه الناس او ودعه الناس اتقاء فحشه، ودع يدع كمعنى بين تركرناليكن عرب كاكثر لغات بين اسكاماضى استعال نبين بوتار

مضارع اورامر کے صیغے مستعمل ہیں کہتے ہیں کہ "امسات المنساس مساحنی یدع ویذر" کہ لوگوں نے و دع یدع اورو ذریدنر میں ماضی کوم دادیا ہے۔ لیخی متر وک الاستعال ہے۔ اس کے بعض لوگوں نے تو یہ کہا ہے کہ نبی کر پھر اللہ کا اس مقام پر ودعہ کہنا شاذ ہے لیکن ملاعصام گہتے ہیں کہ یہ کلام ان لغات عرب پر بئی ہے جن میں املتہ اور ترک نہیں ہے جملے کا معنی یہ ہے کہ جس شخص کولوگ اس کی بدزبانی کی وجہ سے چھوڑ دیں وہ بدترین لوگوں میں سے ہاس جملے کا مطلب کیا ہے؟ اس سلسلے میں دوقول منقول ہیں۔ کلام نبوی بالیقیہ کا مقصد: اول یہ کہ نبی کر پھر اللہ اس حکمت کو بیان کرتے ہیں جس کے بارے میں سوال ہوا ہوا ہوا اس نے دویتے کیلئے تو جیہ اور علت بیان کررہے ہیں حاصل کلام بہ ہے کہ میں تو اس شخص کی بدزبانی اور اس کے قوم کی شرسے نبیجے کہلئے اور قوم کے تالیف قلب کیلئے اس کے ساتھ اچھار و یہ اپنایا ہے ماتر بلا ریب جائز بلکہ مستحن اور مندوب ہے۔ اس سے بڑھ کر آپ بھر اس کے ساتھ اچھار و یہ اپنایا ہے اور یہ بلا ریب جائز بلکہ مستحن اور منافقت نہیں تھی نہ دینی اقد ارکو دنیا کی خاطر داؤ پر لگانا تھا نہ اس میں اموال بھی دیتے ہے یہ مداون اور مندوب ہے۔ اس سے بڑھ کر آپ بھر اللہ کی خاطر داؤ پر لگانا تھا نہ اس میں اموال بھی دیتے ہیں میں کوئی صفائی اور تا نکر تھی بلکہ "بہنے میں ابن العشید ہ "بھی اپنی جگہ تی بات تھی۔ آپ دار خول کوئی صفائی اور تا نکر تھی بلکہ "بہنے میں ابن العشید ہ "بھی اپنی جگہ تی بات تھی۔

دوسری توجیہ بعض شراح نے یہ کی ہے کہ نبی کر پہمائی حضرت عائشہ سے یہ ہیں کہ تیرے کلام سے تو یہ معلوم ہوتا ہے کہ دوسر ہے لوگوں کی طرح میں بھی ہر ہے لوگوں کے ساتھ بدز بانی اور گالی گلوچ کارویہ اپنا وَں گا حالا نکہ مجھ سے بیتو تع ہے جا ہے۔ کیونکہ بدز بان آ دی توشہ والمناس ہوتا ہے اور میں مشہر المناس نہیں بنتا چا ہتا۔ اور اگر چہ میشن تلخ کلامی کامستق بھی ہے لیکن مجھ سے بنہیں ہوسکتا کیونکہ پھر لوگ جھے اس فیش گوئی کی بناء پر چھوڑ دیں گے اس لئے اس تیم کا رویہ اپنایا ہے اور یہ ستحسن امر ہے۔ اسے کچھاوگ مدارات، کچھ مصانعت، کچھالی وحکمت اور کچھ تقیہ کانام دیتے ہیں۔

واضح رہے کہ ملاعلی قاریؓ نے دوسری توجیہہ کواس مقام کی تشریح کے طور پر نامناسب بلکہ خطا کہا ہے اور پہلی توجیہ کوتر جیح دی ہے۔

(٩) حدّثنا سفيان بن وكيع ثنا جميع بن عمر بن عبدالرحمٰن

ترجمہ: حضرت حسن کہ جی (میرے بھائی) حسین نے بتایا کہ میں نے اپنے والدمخرم (حضرت علی سے نی اکرم اللہ کے کاہل مجلس کے ساتھ رویئے کے بارے میں پوچھا تو انہوں نے بتایا کہ نبی کریم اللہ بیشہ خندہ پیشانی اور نرم اخلاق والے رہے نہ بی کریم اللہ بیشہ خندہ پیشانی اور نرم اخلاق والے رہے نہ بیشہ خندہ پیشانی اور نرم اخلاق والے رہلہ کی مہر بان ہونے والے تھے۔ نہ آپ اللہ سخت کو تھے نہ سنگ دل، نہ چینے چلانے والے تھے نہ بدز بان تھے، نہ عیب چین تھے نہ بخیل تھے، غیر مرغوب چیز ول سے غفلت برتے تھے اور اس سے دومروں کو مایوس بھی

نہیں کرتے تھے اور خود اس کو آپ آلی ہے نین باتوں کے بارہ میں خود کوروک رکھا تھا۔ جھڑے سے ، تکبراور لا یعنی کا مول سے اور تین چیزوں سے لوگوں کو بچار کھا تھا۔ آپ آلیہ کسی کی فدمت نہیں کرتے تھے اور نہ کسی کی برائی بیان کرتے تھے نہ عیب جوئی کرتے تھے۔ کسی سے بات کرتے تو وہی بات کرتے جو باعث اجرو ثواب ہو۔ اور جب آپ آلیہ ہولتے تو ہم نشین سر جھکا کر (بغور) سنتے تھے جیسے ان کے سروں پر پرندے بیٹے ہوں۔ جب آپ آلیہ گئی ہوجاتے تھے تو تب وہ بات کرتے۔

آپ اللہ کے ہا سے دوہ کی بات میں نزاع نہیں کرتے تھے۔ آپ اللہ کے کہاں کوئی بات کرتا تو سب حاضرین خاموث ہو کر سنتے جی کہ وہ اپنی بات سے فارغ ہوجا تا۔ آپ اللہ کی مجلس میں ہرا یک کی بات سے فارغ ہوجا تا۔ آپ اللہ کی مجلس میں ہرا یک باتیں تا بل قد رہجی جاتی تھیں جیسا کہ وہ پہلا ہو لئے والا اور پہلامقر رہو۔ جس بات پر صحابہ ہنتے آپ اللہ ہمی ہنتے اور جس بات پر وہ تجب کرتے آپ اللہ بھی تجب فرماتے تھے۔ مسافر لوگوں کی باتوں میں اور مانکنے والوں کے درشت ابجہ کو ہر داشت کرتے تھے۔ یہاں تک کہ صحابہ کرام اللہ یہ کو ہر داشت کرتے تھے۔ یہاں تک کہ حب کسی حاجت مند کو حاجت طلب کرتے ہوئے دیکھوتو اس کی مدد کیا کر وصرف ان لوگوں سے تعریف قبول کرتے تھے جو آپ اللہ کی شان کے لائق تعریف کرتے تھے جب تک وہ حد اعتدال سے تجاوز نہ کرتا اور تعریف کرتا تو اسے روک کراس کی بات کاٹ لیتے تھے یا خودا ٹھر کے طرح جاتے تھے۔

رہتے تھے۔ شرآح نے اس کا جواب بید یا ہے کہ آپ آلیک کی پریشانی اور فکر مندی تو امور آخرت کے سلسلے میں ہوتی تھی اور امت کو قیامت کی ہولنا کی سے اور جہنم کے عذا بول سے نجات کی فکر ہمیشہ دامن گیررہی تھی لیکن دنیوی امور میں کمال تو کل اور زہدگی بناء پر آپ آلیک کو کی فکر نہیں ہوتی تھی اور ظاہری طور پر ہشاش بیثاش نظر آتے تھے کہ منشین آپ آلیک سے تک نہیں ہوتے تھے اور بیا خلاق نبوی آلیک کا کمال ہے۔

بہر حال آپ اللہ کتہ جینی اور عیب جوئی بھی نہیں کیا کرتے تھے۔ بعض لوگ ہروقت دوسروں کے عیوب کی تلاش میں رہے ہیں۔ محاس کی طرف ان کی نظر اٹھتی ہی نہیں۔ دوسروں کے پیچھے پڑے رہے ہیں۔ مان سے دوست، استاد، پڑوسی، والدین اور اہل محلّہ میں سے کسی کی عزت محفوظ نہیں رہتی۔ دراصل اس بدباطن شخص کا اپنا آئینہ خراب ہوتا ہے جس میں عکس میح نہیں پڑتا۔ صحیح انسان تو وہی ہے جو دوسروں کے بدباطن شخص کا اپنا آئینہ خراب ہوتا ہے جس میں عکس میح نہیں پڑتا۔ صحیح انسان تو وہی ہے جو دوسروں کے

محاس کی تلاش میں ہو۔ حسن طن کے حامل ایسے بزرگ بھی ہیں جنہیں کوئی بھی شخص برانہیں لگتا۔ مثلاً مارے والد ما جد حضرت شخ الحدیث نوراللہ مرقدہ کواگر ساری دنیا کہے کہ فلاں ایسا برا آ دمی ہے فلاں اتنا گنا ہوں میں ڈوبا ہوا ہے گر حضرت کو گویا یہ بات سرے سے بچھ میں نہیں آتی۔ انہیں ہر شخص پا کیزہ نظر آتا ہے ناہوں میں ڈوبا ہوا ہے گر حضرت کو گویا یہ بات سرے سے بچھ میں نہیں آتی۔ انہیں ہر شخص پا کیزہ نظر آتا ہے۔ بہر حال عیب گیری بجائے خود بڑا عیب ہے۔ لوگ ایسے شخص کی مجلس سے دور بھا گتے ہیں۔

و لامشاح، شی سے باب مفاعلہ کے اسم فاعل کا صیغہ ہے شی بخل کی نبیت عام معنی پر بولا جاتا ہے جس میں مال، عہدے وغیرہ پر بخل آ جاتا ہے۔ مطلب سے ہے کہ آپ آلیا ہے ہے ہرتسم کا بخل منفی تھا کیونکہ بخیل آ دی کے پاس دوسال کے بعد جا ئیں تو بھی چیں بجبیں ہوجاتا ہے۔ اس لئے لوگوں سے اس کا رابطہ کٹ جاتا ہے۔ بعض شخوں میں مدّ اس کا لفظ آ یا ہے۔ شراح نے اسے بھی سی کہا ہے بعنی آپ آلیا ہے رابطہ کٹ جاتا ہے۔ بعض شخوں میں مدّ اس کا لفظ آ یا ہے۔ شراح نے اسے بھی سی کہا ہے بعنی آپ آلیا ہے زیادہ مدت کریز کرتے سے زیادہ مدت کرنے والے نہ سے مثل کھانے ، مکان، لباس وغیرہ کی مدت میں مبالغہ سے گریز کرتے سے کیونکہ ان اشیاء کی زیادہ مدت ان چیز وں سے مجت پر بنی ہوتی ہے جس سے آپ آلیا ہے بری سے۔ البت بھی کہی آپ آلیا ہے تھوڑی ہی مدت کرلیا کرتے تھے۔

یت خافل عما لایشتھی النے، اکثرلوگ اپنی مرضی کے مطابق قتم تم کے پروگرام بناتے ہیں جو مباح ہونے کے باوصف بعض حضرات کو پیند نہیں ہوتے ایسے موقع پر حکمت کا تقاضا یہ ہوتا ہے کہ دوسروں کو منع کرنے کی بجائے خود لاتعلق ہوجاؤ۔ اور اس پروگرام سے اپنی بے تعلقی نبھاؤ۔ اگر ساتھی مشترک طور پرکوئی پروگرام بنا ئیں ۔ تو ان کی خواہش کا احترام کرتے ہوئے انہیں مت ٹوکیس ۔ اور اگران کے ساتھ شریک نہ ہونا چاہیں تو بتکلف انجان بن جاؤ۔ آپ آلیک ایسے موقعوں پرخود تو انہاک سے حصہ نہیں لیتے تھے لیکن وسعت ظرفی کا مظاہرہ کر کے دوسروں کو مایوس نہ کرتے۔

اور اس جملے کا بید معنی بھی ہوسکتا ہے کہ اگر کوئی شخص کسی غیر مناسب بات کی فرمائش کرتا جو آپھائی کے کا ناپیند ہوتا تو اول تو خود کو انجان بنادیتے ۔ لیکن اس کو اپنے کرم وسٹاوت سے بالکل مایوس بھی نہیں ہونے دیتے تھے۔ نہیں ہونے دیتے تھے۔

توبت خاف ل عما لایشتهی ،کامعنی ہے کہ جوبات یا جوکام آپنیں چاہتے تھاس کے کرنے سے بت کلف غفلت برتے تھے۔ و لایہ ؤیس منه ، یاء کے ضمہ کے ساتھ ایاس سے ہے یعنی کسی اور کوا یسے غیر مرغوب فعل سے مایوں نہیں کرواتے تھے لیمنی اگر کوئی ایسا کام کرتا جو مباح ہولیکن آپ آلیا گئے کے نزدیک قابل رغبت نہ ہوتو اس کو کرنے دیتے اور کرنے والے کی رغبت کو کھوظ رکھتے لیکن اپنی عدم رغبت کا مظاہر ہ زبان سے کرنے کی بچائے بصورت تغافل اور عدم توجہ فرماتے۔

بعض شراح نے ''منہ' کاضمیر عسا لایشتھی کی بجائے نبی کر پھائے کورا جھ کیا ہے پھر مطلب
یہ ہوگا کہ آپ آلیے ایک لوگوں کوا پی طرف سے مایوس نہیں کرتے تھے اگر کوئی آپ آلیے ہے کہ کام کی توقع
رکھتا تو آپ آلیے اس کوکورا جواب دے کر مایوس نہیں کرتے تھے بلکدا گروہ کام آپ آلیے نہ کرتے تو بھی ان
کوکرنے دیے اور نفر سے کا ظہار نہ کرتے البتہ و لا یہ جیب فیمہ ،اگر کوئی دعوت دیتا تو ایسے غیر مرغوب کام
میں شامل نہ ہوتے بلکہ خوش اخلاقی اور زم گفتار سے اس کوواپس کردیتے تھے بعض علاء حضرات بھی لوگوں
کے جائز کھیل کوداور مشاغل کوایسے انداز میں لے لیتے ہیں جیسے وہ گناہ کیرہ کررہے ہوں۔ جس کی وجہ سے
وہ لوگوں سے دور ہوجاتے ہیں ایسا کرنے کی بجائے مباح کاموں میں لوگوں کی خواہشات کا کشادہ دلی
سے لحاظ کرنا چاہئے میڈھیک ہے کہ بعض اس طرح کے کام علاء کی حیثیت سے قابل ترک اور وقار کے منا فی
ہوتے ہیں اس کا نقاضا ہوتا ہے کہ ان کوترک کیا جائے مگر اس کے کرنے والوں کو جہنم کی وعید ہیں سانا بھی
مصلحت کے خلاف ہوتا ہے نہ شرعاً اس کی کوئی راہ نگاتی ہے۔

قدتوک نفسه من ثلاث، ترک منع کے معنیٰ کو مضمن ہے لین تین باتوں کواپی ڈائری سے
کال دیا تھا اور ان باتوں کے قریب بھی نہیں جاتے تھے۔المہ مواء، بعض شراح نے اس کا ترجمہ المہ جدال
بالباطل کیا ہے کین ملاعلی قار گ کہتے ہیں کہ مطلق جدال مراد ہے۔ لینی بحث ومباحثہ اور کئے جتی پیندنہ
منگی۔ جیسے کہ ہمارے بعض طالب علم وقت اور استعداد کو سیاسی بحثوں میں ضائع کردیتے ہیں یہ کوئی نتیجہ
خیز بحث نہیں ہوتی بلکہ محض دماغی تھکان اور وقت کا ضیاع ہوتا ہے ساتھ ساتھ محبتوں کو نفرتوں میں تبدیل
کرنے کا موجب بنتا ہے۔

والا کبسار، باء کی اتھ یہ تکتر یعنی خود کو برا اظاہر کرنے کو کہتے ہیں یعنی آپ آیا انست و برخاست اور آمد ورفت میں خود کو امتیازی مقام دینے سے کتر اتے تھے۔ جہاں تک "انساسیدو لد آدم" اور اس جیسے کلمات ہیں۔ تو وہ تحدیث نعمت کے طور پر آپ آیا گئے نے ذکر فرمائے ہیں۔ فخر ومباہات کیلئے نہیں۔ بعض شخوں میں اکبار کی جگہ اکٹسار ٹاء کے ساتھ منقول ہے اس کا معنیٰ ہے کثر ت کلام یعنی آپ آیا گئے ذیادہ بولئے نے اور اس جی تھے۔ و ما لا یعنیه، یعنی جو چیزیں دین و دنیا میں بے فائدہ ہوتی تھیں اس سے بھی آپ آیا گئے دور رہتے ہیں۔

و تسوک النساس من ثلاث ، پہلے بین امور کوتو نبی کر پیم اللہ نے اپنی رعایت کرتے ہوئے کھوڑ دیا تھا، کسان لایسلم احساراً چھوڑ اتھا لیکن ان تین امور کود بیگر کو گوں کی رعایت کرتے ہوئے چھوڑ دیا تھا، کسان لایسلم احسری بین امور کودی کی فیرمانس کی خیوب بیان کرتے تھے اور نہ کسی کے عیوب بیان کرتے تھے یامتی ہے کہ کھوٹن کے اختیاری افعال پراس کی فدمت نہیں کرتے تھے اور نہ کسی کے فطری اور طبعی عیوب پر انگشت نمائی فرماتے تھے جبکہ بحض شراح نے کہا ہے کہ بہاں پر ذم اور عیب دونوں ہم معنی بیں اور والا یعید صرف تاکید کے طور پر کہا گیا ہے گریہ بات یا در ہے کہ آپ بھیلی کی ہر معایت ان لوگوں کیلئے تھی جو محصیت کے مرتکب نہ ہوں نہ حدود ترعیہ سے تجاوز کر گئے ہوں ۔ و لا یطلب عود ته نہ کسی خض کے مستور امور اور پر دول کے بیچ پڑتے تھے تورت سے مرادوہ امور ہیں جن کا اظہار موجب رنے وختے مرادوہ امور ہیں جن کا اظہار موجب کر فید نے کو اتے ہے تم لوگ ہروت دو مرول کے حالات کر یہ نہ کی کوشش کرتے ہیں ہیری عادت ہے ہمارے حکر ان تو ہر اہم شخصیت کی فائل بناتے ہیں گرید نے کی کوشش کرتے ہیں ہیری عادت ہے ہمارے حکر ان تو ہر اہم شخصیت کی فائل بناتے ہیں وکیلیٹروں میں یہی پڑا عیب ہوتا ہے کہ وہ دو سرے کے عوب کاریکارؤر کھتے ہیں تا کہ انہیں بلیک میل کرکے ان کی سرگرمیاں قابو میں رکھیں آپ پہلے گئے اس سے احر از کرتے اور دومروں کو اس سے احر از کرتے اور دومروں کو اس سے احر از کرتے اور دومروں کو اس سے احر از کرتے ہیں۔ تھے۔

ا يك صديث ش آيا ہے كه من تتبع عورة اخيه المسلم تتبع الله عورته و من يتبع الله عورته و من يتبع الله عورته و من يتبع الله عورته يفضحه ولوفى جوف رحله (١)،

(١) جامع ترمذي ٢٤/٢ ؟ باب ماجاء في تعظيم المؤمن(ابواب البروالصلة) ٢ ا (مختار)

جو شخص اپنے مسلمان بھائی کے پردے کے پیچے پڑا اللہ تعالیٰ اس کے پردے کے پیچے پڑا اللہ تعالیٰ اس کے پردے کے پیچے پڑجائے گا۔اورجس کے پردے کے پیچے اللہ تعالیٰ پڑجائے اس کواللہ تعالیٰ رسوا کردے گااگر چہوہ اپنے کجاوے کے اندر ہویا وہ اپنے گھر کے پیچوں پچے رہے۔

و لایتکلم الافیمار جاٹو ابد، یہ تیسری بات ہاس کا مطلب یہ ہے کہ کس سے بات کرتے تو ایسے امور کے بارے میں کرتے جن میں منتکلم اور خاطب کے ثواب کی توقع ہو۔ بے مقصد بات نہیں کرتے تھے نہ دنیوی مقاصد میں منہمک رہتے بلکہ لوگوں کے اخروی منافع کھوظ ہوتے تھے۔ اس صورت میں ثوابہ کا ضمیر احد من الناس کوراجع ہے اور اس کو ملاعلی قاریؓ نے ترجے دی ہے۔

شوق استماع: اطرق جلساء ه، اطراق کامنی بر جھکانا لینی آپ آپ آگئے ہولتے تو سحابہ کرام ملا میں میں میں میں میں می استماع: مرجھکا کرخور سے سنتے تھے۔اور یوں ساکت وصامت اور جمہ تن متوجد ہے "کسان عسلیٰ رؤسہ مالے طیو" گویا سروں پر پر ندے بیٹھے ہیں اور ان کے اڑنے کے خوف سے وہ حرکت نہیں کرتے ہوں۔اس طرح یہ کمال استماع سے کنا یہ ہے جو کہ آپ آلیہ کی بیت رعب اور صحابہ الے کمال اوب کی وجہ سے تھا۔

بعض شراح نے اس جملے کو استلذاذ سے کناری شہرایا ہے یعنی صحابہ آپ میں گئے کے کلام سے لذت ماسل کرتے ہے اور اس کی تفصیل یوں کی ہے کہ کو ہاور مینا وغیرہ بعض پرند ہاونٹ کے سر پر بیٹھ کر اس کے سر سے جو یں اور دیگر تکلیف دہ کیڑے چن چن کر کھاتے ہیں اس صورت میں اونٹ سر کو بالکل ساکن کر کے رکھ دیتا ہے تا کہ پرندے میہ موذی کیڑے چن لیس اور اس کو راحت ملے یو نبی صحابہ کرام گو آپ مالیک کرکے رکھ دیتا ہے تا کہ پرندے میہ مون کیڑے چن لیس اور اس کو راحت ملے یو نبی صحابہ کرام گو آپ مالیک کی باتوں میں لذت اور روحانی سکون ماتا تھا۔ لہذاوہ سرتگون ہوکر سنتے تھے۔ اس سے میہ جسی معلوم ہوتا ہے کہ دور ان تعلیم درس کو خاموثی سے سنتا چا ہے کوئی اشکال ہوتو اختنا م درس کے بعد استاد سے پو چھنا چا ہے۔

لایت نازعون عنده المحدیث، آپ آلی کی کی سی ایک دوسرے کی بات داخلت اور قطع کا کی کی بات داخلت اور قطع کا می نہیں کرتے تھے یا مطلب ہے کہ باتوں میں ایک دوسرے کے ساتھ جھڑ تے نہیں تھے و مسن تکلّم عنده النح، یہ 'لایتنازعون'' کی تفسیر ہے۔

حدیثهم عنده حدیث اوّلهم، "اوّلهم" کامتی ہے سب سے پہلا۔ اس کے مصداق تین قول ہیں۔ پہلا یہ کہ یہاں مراد پہلے ہولئے والا ہے لینی آپ آیات کی مجلس میں ہر ہو لئے والے کواس طرح سناجا تا تھا۔ سناجا تا تھا۔

جر بو لنے والے کی قدر نے جمع کا جلسوں میں آپ کو بیتج بہو چکا ہوگا کہ ابتداء میں تو سامعین میں جوش ہوتا ہے اور بات جیسے بھی ہوس لیتے ہیں لیکن جول جول وقت گزرتا ہے وہ تھک کر کھسے رہے ہیں۔

آخر میں لوگ تنگ آجاتے ہیں خصوصاً جب ایک ہی موضوع پر بولاجا تا ہے۔ تو لوگ اٹھ اٹھ کر مجلس چھوڑتے ہیں کین حضوراً بھی ایسانہیں ہوتا تھا بلکہ تمام حاضرین کی بات پہلے بو لنے والے کی بات جیسے قابل قدر جمی جاتی تھی ہور تھی ہور کی مظاہر ونہیں ہوتا تھا تا کہ اس کی دل تکنی نہ ہو۔

بات جیسے قابل قدر جمی جاتی تھی ہی جاتی تھی اور تنگ دلی کا مظاہر ونہیں ہوتا تھا تا کہ اس کی دل تکنی نہ ہو۔

دومرایہ کہ اول سے مراد پہلے آنے والا ہو پھر مطلب بیہ وگا کہ آپ آپ آپ کے کہ اس میں پہلے آنے والے کو پہلے بولئے کاحق ملتا تھا۔ بعد میں آنے والے بعد میں بولئے تھے گویا کسی کا استحقاق مجروح نہیں ہوتا تھا۔ تیسرا بید کے کاحق ملت ہو گور مطلب بیہ وگا کہ آپ آپ آپ کے کہ کس میں افضل واثر ف وافضل ہو پھر مطلب بیہ وگا کہ آپ آپ کے کہ کس میں افضل واثر ف لوگوں کو پہلے کہ اول سے مرادا شرف وافضل ہو پھر مطلب بیہ وگا کہ آپ شیابیت کی مجلس میں افضل واثر ف لوگوں کو پہلے کی کاموقعہ دیا جاتا تھا اور لوگ ان کے بات کو اصل بات بھے کر توجہ سے سنتے تھے گویا عام صحابہ رضی اللہ تو الی عنہ ما جمعین کی رعابیت کرتے تھے۔

تعالی عنہم الجمعین اکا برصحابہ رضی اللہ تعالی عنہم الجمعین کی رعابیت کرتے تھے۔

یضحک ممایضحکمون و بتعجب ممایتعجبون، جسبات پر سحابہ بینت آپ آلیاتیہ بھی اس پر تبہم فرماتے اور جس بات سے وہ لوگ تعجب کرتے آپ آلیاتیہ بھی تعجب فرماتے تھے گویا یہ آپ آلیاتیہ کے حسن اخلاق کی تصویر کشی ہے کہ آپ آلیاتہ ایسے امور میں سحابہ گی دلجوئی کی خاطران کے ساتھ حتی المقد ور گھل مل کر شرکت کی کوشش فرماتے تھے۔

خمل کانموند: ویصبر للغریب علی الجفوة، عرب کے بعض صحرائی لوگ آداب معاشرت سے البلد ہونے کے سبب نا قابل برداشت حد تک نامناسب روبیا پناتے تھان کی باتوں میں درشتی، نشست و برخاست میں بے ادبی اور کھانے پینے میں گنوار پن ہوتا تھا۔ ما نگنے کا انداز تحکمانہ تھا بلکہ مسائل پوچھتے ہوئے سوء ادب کا ارتکاب کر لیتے تھے گر بایں ہمہ آ سے الله ان کے ان عیوب کو ان کی فطرت برجمول

کر کے ان کو ہر داشت کر لیتے تھے اور ان کی ا کھڑین کے باوصف ان کی فرمائش بھی پوری فرماتے تھے۔

دیہاتیوں کے برعکس مہذب، متمدن اور تعلیم یا فتہ لوگوں کے طرزطریقے اور قتم کے ہوتے ہیں۔
اسی طرح صحابہ کرام گوتو آ داب مجلس اور اطوار مصاحبت معلوم تھے لیکن صحراؤں اور پہاڑوں سے آنے والے نو وار دحضرات عموماً آپ اللہ کے ساتھ انداز مخاطب نیز دیگر تکلفات وآ داب سے ناواقف ہوتے تھے وہ نام لے کر دور سے چیخ کر پکارتے تھے اس طرز مخاطب میں باوجو داخلاص کے بات کرنے کا ڈھنگ آ داب سے خالی ہوتا تھا۔ بایں ہم آپ آلیہ ان لوگوں کی سخت اور بے ڈھنگ باتوں کا پر آئیس مانے تھے۔
ان کے درشت انداز کو پر داشت کرتے۔

شوق علم: حتى ان كان اصحابه يستجلبونهم، إنّ محففه من المثقل باوراستجلاب كامعنى بيل معنى متعدد معانى بيان كؤ كئي بيل -

اول یہ کہ صحابہ کرام ہدوی صحرائی لوگوں کی آمد کی تمنا کرتے تھے کہ کاش وہ آکر الٹی سیدھی باتیں پوچس تا کہ نبی کر یم اللہ ہوگئے سے ان باتوں کے بارے میں علم حاصل ہوجن کے بارے میں صحابہ کرام ادب اور رعب کی وجہ سے نہ پوچھ سکے کیونکہ بدوی اور اجڑ قتم کے لوگ ادب واحترام کومسائل کیلئے حجاب نہیں بناتے تھے۔

دوم بیر کہ صحابہ کرام میروی لوگوں کو ہاہر سے نبی ا کرم اللہ کے مجلس میں تھینچ کرلاتے تا کہ وہ پچھ پوچھیں اور صحابہ استفادہ کر سکیں۔

سوم ہیں کہ بدوی لوگ نبی کریم آلی کے مجلس سے کتراتے تو صحابہ کرام ضحرائی لوگوں کیلئے نبی کریم آلی کے خصوصی رعایت اور صبر بیان کر کے ان کو مجلس میں آنے کی ترغیب دیتے تھے تا کہ وہ حاضر ہوکر کے مصاصل کرسکیں۔

چہارم یہ کہ صحابہ کرام ہدوی لوگوں کی بے ادبی کود کھے کر ان کو مجلس نبوی تالیقہ سے تھنچ کر باہر نکالتے تا کہ مزید ہے ادبی نہ کریں اور نبی کریم تالیقہ کے عما ب کا نشانہ نہ بنیں لیکن موخرالذ کر تو جیہہ کوشراح نے نامناسب تو جیہہ قرار دیا ہے۔ ف د فدوه، اد ف د کے معنی ہیں معاونت کرنا، صحابہ کرام گوہدایت تھی کہ ضرور تمندوں کی حاجت برآ ری میں ان کے ساتھ تعاون کریں خواہ وہ مالی ہوبدنی ہویا بصورت سفارش ہو۔

و لایے قبل الشناء إلا من مکافئ، مکافی مکافات کا اسم فاعل ہم مکافات کفو، بمعنی بمسر سے مفاعلہ ہے جس کے معنی مماثلث بیں تو معنی یہ بوگا کہ آپ آلیہ مکافات و مماثلث کرنے والے سے تو اپنی تعریف قبول کر لیتے تھے کسی اور سے نہیں پھر اس کلام کے مطلب میں ملاعلی قاری گرمتے ہیں کہ مماثل سے مراود مقارب فی مدحه غیر مجاوز به عن حدمثله و لا مقصر به عمّا رفعه الله المیه "ہے لیمی و و خص جو آپ آلیہ گئی مدح میں اعتدال برتا ہو مطلب یہ ہے کہ آپ آلیہ تھے تھے ماری سنتے تھے روبرومرح سرائی سے ناراض ہوجاتے تھے۔ سپانا ہے اور القابات قبول نہیں کرتے تھے ہاں حقیقت حال بیان کرنے والے کی تعریف بھی من لیتے تھے مکافی کفوسے ہے جو برابری اور بمسری کے معنی میں آتا ہے لین اس خص کی مدح پر کان دھرتے جو کہ برابر برابر مدح کرتا تھا۔ حدسے تجاوز کرنے کی بجائے عین سے نی اس ختی صال کہنا اور مبالغہ آمیزی سے اجتناب کرتا مثل اگر اگر کئی آپ آلیہ کو خدا، مشکل کشایا عالم الغیب کہنا اس فتم کی توصیفات سے آپ آلیہ خوش ہوتے تھے۔ اطراء و تنقیص دونوں کونا پیند فرماتے تھے۔ سے بکارا جاتا تو آپ آلیہ خوش ہوتے تھے۔ اطراء و تنقیص دونوں کونا پیند فرماتے تھے۔

جیسا کہ ایک اور حدیث میں آپ اللہ نے فرمایا کہ میری مدح میں مبالغہ آرائی نہ کروجیسے عیسائیوں نے بیسی گی مدح میں کی ہے۔ جمھے اللہ کا ہندہ اور رسول ہی کہو۔ یہی معنیٰ علامہ مناویؒ نے بھی لیا ہے اور علامہ میرک نے تعمیر یوں کی ہے کہ فنس الامراورواقع سے مطابقت رکھنے والی مدح قابل قبول ہوتی باقی نہیں۔ جبکہ بعض حضرات نے ترجمہ یہ کیا ہے کہ مکافی کا معنیٰ ہے بدلہ دینے والا تو مطلب یہ ہوا کہ اگر کوئی آپ اللہ کے احسان کے بدلے میں بطور شکر یہ کے مدح کرتا تب تو آپ اللہ کے ہاں مدح قبول ہوتی ور نہ نہیں لیکن علامہ میرک نے اسے رد کیا ہے اور این حجر نے وجہ یہ بیان کی ہے کہ آپ اللہ کے کہ اس مدح قبول احسانات تو تمام عالم پر میں پھر کسی سے مدح قبول نہ کرنے کی صورت نہیں بنتی۔

بعض حضرات فن عافی کامعنی برابر اور بمسرے کیا ہے اور مطلب بین کالا ہے کہ آپ اللہ

ایمان میں اپنے ساتھ برا برخض کی مدح سنتے اور کا فروں اور منافقوں کی مدح قبول نفر ماتے۔ بہر حال جو مدح آیا ہے ا

و لايقطع على احد حديثه، كسى كاقطع كلامى نفر ماتے، حتى يجوز، بعض ننخول مل حتى أي يجوز ، بعض ننخول مل حتى أي يجود راء كے ساتھ ہے جو جو رہ سے ہے لينى جب وہ ظلم اور كے روى نه كرتا تب تك بولنے ديتے تھے ليكن رائے حتى يہ يہ وؤل مداعتدال سے تجاوز نه كرتا اورا گركرتا تو آپ الله اس كولوك كراس كى بات كوظع كر ليتے يا پھر اٹھ جاتے تاكہ وہ خود بات چھوڑ دے آج كل تو سپيكرول كى وجہ سے اسمبليوں كا براحال ہے ہرايوان ميں بنظى ہوتى ہے ٹھيك اور جائز بات بھى نہيں كرنے ديتے اور اگر برتبذي اور خلاف شرع بات ہوتواس كوموقع ديديا جاتا ہے۔ فإلىٰ الله المشتكىٰ.

ترجمه: حضرت جابر بن عبدالله کتے ہیں کہ نبی اکرم آیا ہے سے سی بھی چیز کا تفاضا نہیں کیا گیا جس پر آپ آیا ہے نے "ننہ" کہا ہو۔

فقال لا ،مرادیہ ہے کہ آپ اللہ یا تواس کا مطالبہ پورافرماتے یا آئ کونہ کہہ کرواپس نہیں کیا بلکہ یا تواس کا مطالبہ پورافرماتے یا آئندہ کیلئے وعدہ کر کے رخصت فرماتے یا اس کو منتخیٰ کرنے کیلئے اس کے حق میں دعافرماتے اور بقول فرزدق

ماقال لاقط الافي تشهّده لولاالتشهّد كانت لاء ه نعم لولاالتشهّد كانت لاء ه نعم لعني المرتبية الرتشهدند بوتاتوان كي بررون كي جيد المرتبية الرتشهدند بوتاتوان كي بروان كي جيد المرتبية الرتشهدند بوتاتوان كي بروان كي جيد المرتبية الم

(۱)صحیح بخاری ۱/۲ و ۸ کتاب الادب باب حسن الخلق او السخاء، صحیح مسلم کتاب الفضائل، الفضائل، مصنف ابن ابی شیبة ۱ / ۵ ا ۵ کتاب الفضائل، مسنداحمد ۱/۵ - ۳۰ (مختار)

اس پرایک اعتراض ہوتا ہے کہ غزدہ تبوک کے دوران جب ابوموی اشعری اوران کے قبیلے والوں نے سوار یوں کا نقاضا کیا تو آپ آلی ہے نفر مایا" و الله الاحملکم" اس کا جواب بید یا گیا ہے کہ آپ آلیہ ہے کہ آپ آلیہ کا نقاضا کیا تو آپ آلیہ ہے کہ اس کا جواب بید یا گیا ہے کہ آپ آلیہ ہے کہ اورا ثکار کے طور پر آپ کے میں ہے لین آپ آلیہ کے خور اس کو عذر کے طور پر کہا کہ میرے پاس چونکہ اس وقت سواری نہیں ہے۔ اس لئے میں دینے سے معذرت کر رہا ہوں جیسا کہ قرآن مجید میں صراحة عذر ہی کے الفاظ سے بیان ہے۔ اس لئے میں دینے سے معذرت کر رہا ہوں جیسا کہ قرآن مجید میں صراحة عذر ہی کے الفاظ سے بیان ہے۔ اس لئے میں دینے سے معذرت کر رہا ہوں جیسا کہ قرآن مجید میں سواری نہیں ہے یا چرمطلب بیہ ہے 'قلت الا اجدماا حملکم ''لینی آپ نے عذر کیا کہ میرے پاس سواری نہیں ہے یا چرمطلب بیہ ہے کہ جب بار بار عذر پیش کرنے کے باوجود اشعری لوگ اصرار کرنے گئو آپ آلیہ کہ کو اونٹ میسر ہو گئو تو تھی کو اخت میسر ہو گئو تو تھی کو اخت میسر ہو گئو تو ان کی تو تع ہی کو ختم کرنا چاہا۔ اور' واللہ لا انملکم '' کہد یا جی اونٹ عطافر مائے (ا)۔

(۱۱) حدّثنا عبدالله بن عمران ابوالقاسم القرشي المكي ثنا إبراهيم بن سعدٍ عن ابن شهاب عن عبيدالله عن ابن عبّاسٌ قال كان رسول الله عن أجود الناس بالخير وكان أجود مايكون في شهر رمضان حتى ينسلخ فياتيه جبريل فيعرض عليه القرآن فاذالقيه جبريل كان رسول الله عَلَيْكُ أجو دبالخير من الربح المرسلة (۲).

ترجمہ: حضرت عبداللہ بن عباس کہتے ہیں کہ نی کر یم اللہ تمام لوگوں کی نسبت ایسال خیر میں زیادہ تخی سے پھرآ بھی اللہ رمضان شریف میں تو اختیام مہینہ تک اور بھی زیادہ فیاض موجاتے سے پس (رمضان میں) آپ اللہ کے یاس جرئیل آتے زیادہ فیاض موجاتے سے پس (رمضان میں) آپ اللہ کے یاس جرئیل آتے

(۱)بخاری شریف ج۲ ص ۹۳۰

(۲) صحیح بخاری باب کیف کان بدء الوحی ۱ /۳ کتاب البدء الوحی باب مکااجودماکان النبی ا

اورآپ آلی کو قرآن مجید سناتے جب بھی آپ آلی کی ملاقات جرئیل سے ہوجاتی تو آپ آلیہ نفع رسانی میں بارش لانے والی ہواسے بھی زیادہ فیاضی فرماتے۔

عن عبیدالله بن عیاض (مناوی) تعیین میں تین قول ہیں۔(۱) عبیدالله بن عیاض (مناوی) (۲) عبیدالله بن الله بن عیاض (مناوی) (۳) عبیدالله بن الله بن ا

أجو دالناس بالنحيو ، خير سے مرادد نيوى اور اخروى منافع ہے۔ اس لئے يہ آ پ الله كى طرف مالى ، حالى ، اخلاقى ، على اور عملى نفع رسانى كوشامل ہے اور بير نفع رسانى صرف انسانوں تك محدود نہيں بلكه حيوانات ، نباتات اور جمادات تك متعدى ہے۔

و کان اجود مایکون فی شهر د مضان، اجود ش اگر چرنصب بھی جائز ہے کین رفع رائ ہے اور ابن حاجب نے اس کے لئے پانچ وجوہ ذکر کی ہیں۔ سب سے بہتر تو جیہ رہے کہ یہ کان کا اسم ہے اور مامصدر سے ہیا جود کا مضاف الیہ بنتا ہے جبکہ فی شہر دمضان حال کے مرتبے میں ہے اور نبر کا قائم مقام ہے جو محذوف ہے نقد برعبارت یول ہوگ 'و کان اجو دا کو انسه حال کونسه فی شهر دمضان حاصلا '' حسے یہ نسسلخ ، لین اختیا ماہ تک تو بے خاشا جود ہوتی تھی لیکن اس کے بعد اپنی اصلی فطری سخاوت عود کر آتی جود کر آتی جود کی لوگوں کی سخاوت سے پھر بھی ہو ھرکتھی۔

 نزول کا زمانہ ہے"شہور مضان الذی انول فیہ القو آن"اس کئے آپ اللّیہ تحدیث نعمت کے طور پر بھی زیادہ سخاوت نا میں الذی انول فیہ القو آن، یعرض فاعل کا شمیر نبی کریم آلیہ کے کو دعلیہ کا شمیر بھی زیادہ سخاوت میں فیدارسہ القرآن جبر کیا گورا جم کرنا اور اس کے برعکس دونوں جائز ہیں کیونکہ بخاری شریف کی روایت میں فیدارسہ القرآن آیا ہے۔ اس کا مطلب یہ ہے کہ جر کیا ٹبی کریم آلیہ کے کہ جر کیا ٹبی کریم آلیہ کے کہ جر کیا تبیا کہ کریم آلیہ کے کہ جر کیا تا ہے۔ اس کا مطلب یہ ہے کہ جر کیا ٹبی کریم آلیہ کے کہ جر کیا تا ہے۔ اس کا مطلب یہ ہے کہ جر کیا تا ہے۔ کریم آلیہ کی کریم آلیہ کی کریم آلیہ کی کا مطلب یہ ہے کہ جر کیل علیہ السلام کو سناتے تھے۔

لیکن اکثر روایات میں نبی اکر میلائیہ کا جرئیل گوسنانے کا ذکر ہے۔اس لئے یہاں شراح نے یعرض کا فاعل کاضمیر نبی اکر میلائیں۔ کوراجع کرنے کوتر جے دی ہے۔

لقاء جريل كاثرات: فاذالقيه جبريل كان رسول الله أجود بالمخير من الريح السموسلة، يعني عموى سخاوت بوتى شي كيكن جرئيل عليه السلام كساته ملاقات كي بعدتو اور بحي سخاوت بين اضافه بوجاتا تعادا ورآ پيالية بارش لانے والى بوات بحي اضافه بوجاتا تعادا ورآ پيالية بارش لانے والى بوات بحي زياده تن بوجات تھے۔ يہاں بواكے ساتھ تشبيه دو وجوه سے ہداول اس لئے كهمواً الى بواتي جو تي ايت بارش اور اس لئے كهمواً الى بواتى تھے۔ دوم بي جرجگه تک جلدى رسائى كر ليتى ہے يونى آ پيالية بحى انتهائى سرعت سے ايسال خير فرماتے تھے۔ دوم بيكہ الى بواكى نفع رسائى عام بوتى ہے اور ہركس وناكس تك بارش اور اس كے منافع پنچادي ہے۔ اسى طرح ني كريم آلية كى نفع رسانى عام بوجاتى تھى۔

جواؤں سے تشبید ناقص ہے:

ارش کی منفعت ظاہری اور محدود ہے صرف ادی حیات کا سب بنتے ہیں جبکہ نبی اکر مہلی و ریان دلوں کی ارش کی منفعت ظاہری اور محدود ہے صرف ادی حیات کا سب بنتے ہیں جبکہ نبی اکر مہلی و ریان دلوں کی آبیاری کر کے حیات جاودان بخشتے ہیں اور فانی رونق کے مقابلے میں دائمی اور حقیقی نعمتوں سے مالا مال کرتے ہیں۔ اس لئے بہ تشبید ناقص اور صرف تفہیم کیلئے ہے ورند آپ ایسٹی کی سخاوت کے مقابلے میں ہوا، بارش ، سورج، جاندو غیرہ کی فع بخش ہی ہے ہے ()۔

حضورا قدس الله کی مادی سخاوت اور فیاضی کی مثالیں: خلاصہ یہ ہے کہ آپ الله خداو ثد عالم کے بعد عالم کے بعد عالم سب سے زیادہ تی تھے حتی کہ آپ الله کی صرف مادی سخاوت و کھی کر انسان دنگ رہ جاتا ہے دریا ہوں کے دریا ہوں کی من جو دک الدنیا و ضرتها ومن علوم کے علم اللوح و القلم (بردہ)

مثلاً ایک عورت نے ایک چاور ہدیہ کردی ضرورت کی وجہ سے پہن کی ، صحابہ میں سے کسی نے ما تک کی اور اتار کردیدی۔ ایک آدی کو بھیڑ ، بکریوں کا ایک بردار یوڑ جودو پہاڑوں کے درمیان چردہا تھا سارے کا سارا بخش دیا۔ جر انہ کے مقام پر ایک ایک آدی کو سوسواونٹ دیتے رہے۔ کیم بن حزام گوسودر ہم دیتے ، انہوں نے اور ما نگے تو فوراسواور دیدیئے۔ ایک مرتبہ نوے ہزار درہم آئے۔ فورا ہی چٹائی پھیلا کرتقسیم شروع کردی اور سب کے سب تقسیم کردیئے۔ بحرین سے علاء بن الحضر کی نے ایک لاکھ درہم (۱) بھیج دیئے۔ مسجد میں پھیلا دیئے اور تقسیم کرتے رہے۔ بخاری شریف کی روایت میں ہے کہ ف سے اقسام رسول مسجد میں پھیلا دیئے اور تھی ہے کہ ف سے اقسام رسول اللہ عالیہ اللہ عالیہ ورہم بھی باتی نہیں تھا۔

حنین کے روزایک عورت کوا تنامال دیا جس کی قیت پچپاس کروڑ درہم کے برابرتھی (۳)، دوسری طرف خوف فقر وفاقے کی حالت ہوتی تھی۔مہینے بحرگھر میں آگنہیں جلتی تھی۔ پیٹ پر بھوک سے پھر بائدھ لیت تھے بھو کی روٹی معمول کا کھانا ہوتا تھالیکن جب کوئی مانگ لیتا تھا تو قرض لے کربھی دے دیتے تھے۔

(۱۲) حدّث اقتيبه بن سعيد ثناجعفر بن سليمان عن ثابت عن أنس ابن مالك قال كان النبي عَلَيْكُ لايدّخر شيئالغدر من ...

ترجمہ: حضرت انس کہتے ہیں کہ نبی اکرم اللہ کوئی بھی چیز دوسرے دن کیلئے (اپنی خاطر ) ذخیرہ نہیں کرتے تھے۔

كمال توكل كے وجہ سے عدم ادخار: لايد خر شيئاً لغد ، يعنى اپنے لئے كوئى چيز نہيں ركھتے تھے جو آپ مال تو كل كابين ثبوت ہے۔ البتہ يہاں ايك اعتراض ہوتا ہے كہ بخارى وسلم ميں ہے كہ آپ مالیت ابل خانہ كيلئے ايك برس كا نفقہ ذخيرہ كيا كرتے تھے۔اس كے كہ بخارى وسلم ميں ہے كہ آپ مالیت ابل خانہ كيلئے ايك برس كا نفقہ ذخيرہ كيا كرتے تھے۔اس كے

<sup>(</sup>۱) فتح الباري ج اص ۲۸۰

<sup>(</sup>۲) بخاری جام ۲۰

<sup>(</sup>۳)مناوی چهص۱۲

<sup>(</sup>٣) جامع ترمذى ١/٢ ٥٠ كتاب الزهدباب ماجاء في معيشة النبي الماسي المامع المامع

جواب میں کئی اقوال ہیں۔اول میہ کہ بیداد خارائے لئے نہیں بلکہ اہل خانہ کے حقوق کی اوائیگی کیلئے تھا۔
ان کیلئے ذخیرہ کر لیتے تھے اور وہ بھی بسااوقات اس نفقہ کوجلد ہی تقسیم کرلیتی تھیں۔دوم میہ کہ آپ آلیا تعلیماً
للامۃ اور بیان جواز کیلئے بیاد خارفر مایا کرتے تھے۔سوم بیر کہ خالب اوقات میں ادخار کی عادت نہ تھی بھی بھی کم کرتے بھی تھے۔ چہارم میہ کہ غزوہ خیبر سے قبل تو آپ آلیا گھا ایک سال کیلئے ادخار کیا کرتے تھے کیان فتح خیبر کے بعد ادخار نہیں کی اور حضرت انس کی میے حدیث فتح خیبر کے بعد کے زمانہ پر محمول ہے۔

(۱۳) حدّثناهارون بن موسى بن أبى علقمة الفروى المدنى حدّثنى أبى عن هشام بن سعد عن زيد بن أسلم عن أبيه عن عمر ابن الخطاب أنّ رجلاً جاء إلى رسول الله على فاذاجاء نى شى قضيته فقال النبى على الله على فاذاجاء نى شى قضيته فقال عمر يارسول الله قداعطيته فما كلف الله مالاتقدرعليه فكره النبى على فالله على فالله على الله مالاتقدرعليه فكره النبى على فلا عمر فقال رجل من الأنصار يارسول الله انفق ولاتخف من ذى العرش إقلالافتبسم رسول الله على وعرف البشر في وجهه لقول الأنصارى ثمّ قال بهذا امرت().

ترجمہ: حضرت عرا کہتے ہیں کہ ایک شخص نی اکرم اللہ کے پاس آیا اور کھودینی کے سوال کیا۔ آپ اللہ کے فرمایا کہ میرے پاس کوئی چیز موجود نہیں ہے لیکن تم میرے نام سے قرضہ لے کرخریدلو جب میرے پاس کھھ آجائے گا میں قرضہ اتاردوں گا۔ حضرت عرا نے وض کیا کہ یارسول اللہ اللہ کہ اس سائل کو (مقدور بحر) دے چکے ہیں اور جو آپ کے طاقت سے باہر ہے اس کے دینے پر اللہ تعالیٰ نے آپ اللہ کو کا فت سے باہر ہے اس کے دینے پر اللہ تعالیٰ نے آپ اللہ کو کہ مایا۔ تب ایک مکلف نہیں فرمایا۔ تب ایک افساری صحابی نے عرض کیا، یارسول اللہ مال (اللہ کی رضاکی خاطر) خرج کیجئے اور افساری صحابی نے عرض کیا، یارسول اللہ مال (اللہ کی رضاکی خاطر) خرج کیجئے اور

( ا )تفردالامام الترمذي بهذاالحديث

عرش والے ہے کسی کی کا خوف نہ کیجئے (یہ ن کر) نبی اکر مہلکے گئے نے تبسم فرمایا اور انصاری کی بات کی دجہ ہے آ ہے آگاتھ کے رخ انور پر بثاشت ظاہر ہونے گلی پھرارشاد فرمایا کہاسی (انفاق) کامجھے تھم دیا گیاہے۔

369

ولكن ابتع المخ، ابتياع سے امركا صيغه بليكن اشتراء كے معنى ميں مستعمل بي يين خريدلو على عبارت مقدر بلين ابتع المطلوب بثمن يكون ديناً على "ايي مطلوب كوخر يدلواور قيت کی ذمہ داری مجھ پرڈال دو۔

قداعطیته، تم اس آدی کودے چے ہومفعول ٹانی محذوف ہے۔اس کی تعین میں اقوال ہیں۔ بعض لوك كبتے بيل كمراديب كه قداع طيت ماعليك من القول الميسور اليخي تم الشخف كو اچھی بات کہہ بھے ہو۔ اب مزیداسے ٹال دو اور قرض لے کر دینے کی ضرورت نہیں کیونکہ یہ تکلیف بمالا بطاق ہے یہی اخمال محققین شراح پسند کر کیے ہیں۔

بعض لوگوں كاخيال بى كە تقداعطىتە، مرة بعداخرى "بوناچا بىغ يىنى سائل كواس سىقبل ہی آپ بار بار کافی مال دے چکے ہیں۔اب قرض لے کر دینا مناسب نہیں بعض لوگوں کا خیال ہے ایک مرتبہ آپ اللہ نوے ہزار درہم تقسیم کردیئے اس کے بعد ایک شخص آپا اور مدد ما تکی تو آپ اللہ نے فرمایا کہ میرے نام خرید کرمطلوب چیز لے لوتو گویااس شخص کو پہلے بھی مال سے حصال چکاتھا مزید مانگئے یرا ہاتھ نے یہ پیشش کردی۔

بعض شراح نے لکھا ہے کہ تقدیر یوں ہوگی کہ 'قداعطیتہ سوالہ و جعلتہ دیناً فی ذمتک ف لاته فعل غيو ذلك "ليني الشخص كے مطلوب كي قيت اپنے ذمے لے كرآ سے اللہ فيا فيا الشخص كا مطلوب تواس کودے دیا۔اب اس ہے آ گے بڑھ کر مزید سخاوت نہ کرنا کہ بہآ ہے گئے گی وسعت سے باہر ہے۔لیکن اس موخرالذ کرتو جیہہ کوا کثر شراح نے ردکیا ہے۔

انفاق مين احتياط كي نالسنديد كي: فكره النبيّ عَلَيْكُ قول عمرٌ ، حضرت عركى بات برى لكنه كا سبب يمي تفاكريكمال سخاوت كانقاضانهين تفااكر چيثريعت عضالف نه تفاكرآ ييايين كي فطرت من جو سخاوت كوك كوك كرجرى موتى تقى اس كالمقتصى كيهاورتها جوكه إنصاري صحابى نے بيان كيا۔ و لا تنحف من ذی العوش اقلالاً، اقال قلت سے افعال ہے کم ہونے کو کہتے ہیں۔ جملے کا مطلب یہ ہے کہ جو بے انہنا سخاوت آ پھیا ہے کہ وعطا کی گئی ہے اس کے نقاضے کے مطابق بے خطر مال صرف کرتے رہتے اور اس صفت پر ثابت قدم رہتے ۔ حضرت عمر نے اگر چہ بطور خیر خواجی کے مشورہ شریعت کے مطابق دیا ہے مگر اس کی بنیا و بی بنیا ہو اس کی بنیا و اس کی طرف سے کم ملنے کے خطرہ پر ہے جو متوکلین اور بالخصوص انبیاء اور پھر بنظام عرش کے مالک کی طرف سے کم ملنے کے خطرہ پر ہے جو متوکلین اور بالخصوص انبیاء اور پھر سیدالانبیا علیق کے شایان شان بیس ہے۔ بھاندا احسرت ، ہذا میں اشارہ انفاق وتو کل کو ہے یا پھر قول میں ورعند فقد ان المال کو ہے۔

(۱۳) حدّثناعلیّ بن حجوثنا شریک عن عبدالله بن محمّد ابن عقیل عن الربیع بنت معوّذ بن عفراء قالت اتیت النبیّ عَلَیْ بقناع من رطب و اجروزغب فاعطانی ملاً کفّه حلیًّا و ذهباً (۱).

ترجمه: ربّع بنت معوّدٌ بنی بی که مین نبی کریمییی یاس ایک چھنگیر مین کمجوراور یبی یبی کمری لائی تو آپیایی نی کریمییی میارک بحرکر زیور اور

یر مدیث باب نمبر ۲۹ باب ف کھة دسول الله عَلَيْكُ مِن چَوَقَى اور پانچوي مديث ب وہاں تفصیل کے ساتھ ذکر ہے کہ معاذ بن عفراء فیے یہ مدید آپ کے پاس بھیجا تھا اور آپ عَلَيْكَ نے بحرین سے آئے ہوئے مال سے حضرت رہے گوز پور بخشا تھا۔

(١٥) حدّثنا على بن خشرم وغيرواحد قالواانا عيسىٰ بن يونس عن هشام بن عروة عن أبيه عن عائشة أنّ النبي عليها كان يقبل الهديّة ويثيب عليها ٢٠).

( ا )مسنداحمد۲ */ ۳۵۹* 

سونا عطافر ماياب

(٢) صحيح بخارى باب المكافة الخ ١ / ٣٥ كتاب الهبة باب مكافاة في الهية، سنن ابي داؤد الا ٢ / ٢ صحيح بخارى باب المكافة الخ ١ / ٣٢ / ٢ تتاب البر والصلة باب ما جاء في قبول الهدية ص ٢٥٩، مصنف ابن ابي شيبة ٢ / ٥ ٥ (مختار)

ترجمہ: حضرت عائشہ ہی کہ نبی کریم اللہ مدیہ قبول فرماتے تھاوراس کابدلہ بھی دیتے تھے۔

ویٹیب علیها ، جہاں تک ہدیہ کے قبول کرنے کا مسلہ ہے تو وہ تو مکارم اخلاق میں سے ہے کیونکہ اس سے ہدیدد سے والے کی دلداری ہوتی ہے۔ اور اس کا بدلہ مطلقاً واجب تو نہیں لیکن آپ اللے اللہ اس کا بدلہ دیتے تھے جو کم از کم ہدیہ کے برابر ہوتا تھا بلکہ بھی تو دس گنا تک بدلہ بڑھ جاتا تھا۔

کیابدی کابدلہ واجب ہے؟ یہاں پر بیر مسئلہ قابل تحقیق ہے کہ کیا بدیہ کا بدلہ واجب ہے یا نہیں ۔ ملاعلی قاریؓ نے بیتحقیق کی ہے کہ اگر کوئی شخص طیب خاطر کے ساتھ ہدید دے تب تو قبول کرنا چاہئے اور بدلہ بھی واجب نہیں ہے اور اگر کوئی شخص ہدید دیر کوئی کام نکالنا چاہے یا شرم ورواج کی وجہ سے ہدید دے مثلاً بھی حاجی لوگ مبار کباد کیلئے آنے والوں میں بادل نا خواستہ ہدایا تقلیم کرتے رہتے ہیں یا کسی اور مجبوری سے مہدید دینا چاہے تواس صورت میں ہدید لینا جا کرنہیں اور اگر وہ بھی شرم کی وجہ سے قبول کر بے واس کا بدلہ اس میرواجب ہے کم از کم ہدید کے قیت کے مساوی بدلہ دے۔

صورت اول میں اگر چہ بدلہ واجب نہیں لیکن اگر ہدیے قبول کرنے والا ایسے انداز سے ہدید دینے والے کا بدلہ چکائے کہ اسے بدلہ کا احساس نہ ہو بلکہ اسے محبت پر حمل کردے تو یہ بہتر ہے کیونکہ اس سے محبت میں مزیدا ضافہ ہوجا تا ہے۔

### خلاصةباب

اخلاق نبوی الله کے بارے میں ابتدائے باب میں ہم تحریر کر بھکے ہیں کہ ان کا احاطہ ناممکن ہے۔ خود جمال نبوی الله کا مشاہدہ کرنے والے صحابہ اس کے بیان سے عاجزی کا اظہار کرتے ہیں۔ البت اس باب میں جو چیدہ چیدہ باتیں بظاہر نظر آتی ہیں ان کا خلاصہ یہ ہے کہ آپ ایک کا پنے صحابہ کرام سے

رویدانتهائی شفیقا نه تھا خدام کے ساتھ صددرجہ کی فرمی اور خدمت میں سستی اور کوتا ہی کے باوجود آپ آلیہ ان کی ڈانٹ ڈپٹ نہیں فرماتے سے عمر بھر کسی خادم یا بیوی کو مارانہیں کخش گوئی گالم گلوج تو کجا بے وقار بات سے بھی اجتناب فرماتے سے برازار کے اندر آپ آلیہ فرور سے بولتے نہ سے مخوودر گزر کی بیرحالت تھی کہ کہی کسی سے ذات کیلئے انتقام نہیں لیا غزوات کے سواکسی کو تھیٹر تک نہیں مارا۔ البتہ خداوند کریم یا انسانوں کی حق تلفی پر غصہ فرماتے سے بدزبان اور بداخلاق لوگوں کے ساتھ بھی مدارات کے طور پر حسن اخلاق سے پیش آتے سے تاکہ ان کواپنی کمی کا احساس ہو حتی کہ بدترین شخص کے ساتھ ایسارویہ ہوتا تھا کہ وہ خود کو بہترین تبحی لگنا تھا۔ صحابہ کی دلداری کی خاطر آپ آلیہ ان کی گپ شپ میں شریک رہتے تھے۔ ان کے ساتھ میشتے ، تبجب فرماتے ، ساتھ ساتھ ان کی تربیت فرماتے ، ان کے جائز مرغوبات سے نفر سے کا اظہار کئی میں کر بیت فرماتے ، ساتھ ساتھ ان کی تربیت فرماتے ، ان کے جائز مرغوبات سے نفر سے کا اظہار کہیں پر مسلط فرماتے تھے۔

کلام میں شیر یُ تھی جی کہ صحابہ کرام بے چینی اور شوق سے سفتے تھے۔ شرکا نے جُلس کی پندکا کحاظ فرماتے۔ ان کی تو قعات کے مطابق ہو لئے۔ بدوی لوگوں کے سخت رویئے کے مقابلے میں تخل و برداشت سے کام لینے تھے۔ خندہ پیشانی اور نری عموماً غالب رہتی تھی۔ تکبر ، لا یعنی باتوں ، عیب جوئی ، عیب چینی اور فرمت سے کوسوں دور تھے۔ سخاوت کوٹ کوئیری تھی کسی بھی سائل کیلئے آپ تھی تھے۔ کی اس د نہیں "کا لفظ نہیں تھا۔ سخاوت پند کرنے والوں کو پند فرماتے اور اس سلسلے میں احتیاط کی تلقین نا قابل قبول سجھتے تھے۔ عمومی طور پر انتہائی حساس تھے۔ عمومی طور پر انتہائی حساس تھے۔ حتی کہ دوسروں کو بھی اس کا حکم فرماتے تھے۔ کمال توکل کی پاسداری فرماتے تھے اور فقر کو ترجی حتے ہوئے آئندہ کیلئے نفقہ تک ذخیرہ کرنے سے کتر اتے تھے۔ جو ہدایا پیش ہوتے دینے والوں کی دلداری کیلئے قبول فرمالیتے مگر اس سے گئی گنازیادہ بخش دیتے تھے۔ اور بایں ہمدا پئی تعریف ناپند تھی بلکہ دلداری کیلئے قبول فرمالیتے مگر اس سے گئی گنازیادہ بخش دیتے تھے۔ اور بایں ہمدا پئی تعریف ناپند تھی بلکہ دلداری کیلئے قبول فرمالیتے مگر اس سے گئی گنازیادہ بخش دیتے تھے۔ اور بایں ہمدا پئی تعریف ناپند تھی بلکہ دلداری کیلئے قبول فرمالیتے مگر اس سے گئی گنازیادہ بخش دیتے تھے۔ اور بایں ہمدا پئی تعریف ناپند تھی بلکہ دلیا اس میں مبالغة آرائی کرنے والوں کو خور ماتے تھے۔

### 9 م. باب ماجاء فی حیاء رسول الله عَلَيْكُ رسول التُعَلِّقُ کے حیاء کے بیان میں

حیاء الف مروده کے ماتھ ہے۔ اس کا لغوی معنی ہے تھے۔ اس کا لغوی معنی ہے تھے۔ وانسکہ اربھت اور الھی ہے جو ملامت اور عیب وانسکہ اس العتبر کے خوف سے الاق ہو۔ یہ انسانی فطرت کا حصہ ہے اور عمواً غیر اختیاری ہوتا ہے لیکن یہاں پر یہ معنی مراد نہیں ہے کیونکہ نبی اگر میں اللہ فطرت کا حصہ ہے اور عمواً غیر اختیاری ہوتا ہے لیک اختیاری فعل مراد نہیں ہے کیونکہ نبی اگر میں اللہ فطرت کے مطابق حیاء اخلاق حسنہ کے قبیلے سے ایک اختیاری فعل ہے۔ شریعت علی اجتناب القبیح ہے۔ شریعت علی اجتناب القبیح ویہ من المتقصیر فی حق ذوی المحق (۱) "لیعنی حیاء وہ فاق ہے جو فتی کام کے ارتکاب سے اور صاحب تن کی اوا کی علی فتانی سے بچائے اخلاق عیں اس کامر تبہ بہت اہم ہے۔ نبی اگر میں اس کامر تبہ بہت اہم ہے۔ نبی اگر میں المی المحیاء من الایمان (۲)، ایک حدیث علی ہے۔ المحیاء خیو کلہ (۳)، ایک اور روایت علی ہے۔ المحیاء خیو کلہ (۳)، ایک اور روایت علی ہے۔ المحیاء خیو کلہ (۳)، ایک اور روایت علی ہے۔ المحیاء خیو کلہ (۳)، ایک اور وایت علی ہے۔ اس کیلئے متنقل باب کا انعقاد کیا گیا ہے۔ اس باب علی دومد یثوں کا ذکر ہے۔

(۱) حدّثنام حمودبن غيلان ثنا أبو داؤ دثنا شعبة عن قتادة قال سمعت عبدالله ابن أبى عتبة يحدّث عن أبى سعيد الخدرى قال كان رسول الله عن أبى سعيد الخدرى قال كان رسول الله عن الله عن العذراء فى خدرها وكان اذاكره شيئاعرفناه فى وجهه(۵).

ترجمه: حضرت ابوسعيد خدري سے روايت ہے كه نبى اكرم الله برده ملى بيشى بوئى

(۱) علامه يَجُوريٌ حياء كَ شرع تعريف كرتے ہوئے لكھتے إلى هو خلق يبعث على تجنب القبيح ويحض على ارتكاب الحسن و مجانبة التقصير في حق ذي الحق (المواهب الدنية ص ) (مختار)

(۲)صحیح بخاری

(٣)صحيح مسلم

(۱/) صحیح بخاری (۵) صحیح بخاری ۱ / ۴۰ ۵ کتاب المناقب باب صفة النبی مَلْنِهُم، سنن ابن ماجة ص ۸ ۰ ۳ کتاب الزهدباب الحیاء، مصنف ابن ابی شیبة ۳۳۵/۸ مسندا حمد ۱ / ۱ / (مختار)

کنواری لڑکی سے بھی بڑھ کر حیاء کرنے والے تھے۔ آپ الله کسی بات کو ناپند فرماتے تو ہم آپ الله کے جرم انور سے آپ الله کی ناگواری محسوس کر لیتے تھے۔

حیاءاور بردہ فطری کمل ہے:

من العدراء فی خدر ھا، خدر اس پردے کو کہتے ہیں جو
کواری لڑکوں کو اجنبیوں کے ساتھ اختلاط سے بچانے کیلئے بنایاجاتا تھا۔ عرب کے معاشرے میں
مردوزن کا اختلاط عام تھا لیکن بعض معزز کواری لڑکیوں کو پھر بھی ایک پردہ لگا کراجنبی مردوں بلکہ بعض
اوقات اجنبی عورتوں سے بھی پردہ کرایاجاتا تھا۔ ظاہر ہے کہ عورت جو طبعی طور پر باحیا ہوتی ہے جب اختلاط
سے بھی محفوظ ہوتو اور بھی زیادہ حیادار ہوتی ہے مگر نبی اکرم آلیاتے کی حیااس سے بھی ہڑھ کرتھی حتی کہ بعض
روایات میں ہے کہ آپ آلیاتے شدت حیاء کی وجہ سے کس کے جمرہ پر نظر شبت نہیں فرماتے تھے۔

بعض شراح نے ''المعاند اء فی خدر ہا ''کاتر جمینی نئی بیاہی ہوئی عورت سے کیا ہے جوشب زفاف کو پردے میں تنہا کردی گئی ہولیکن ملاعلی قار کی آنے اس احتمال کوضعیف قرار دیا ہے۔

عرف ناہ فی وجھہ ، یعنی آپ آلی کی ناپسندیدہ بات پرناپسندیدگی بوجہ شدت حیاء کے زبان سے ظاہر نہیں فرماتے تھے بلکدر خانور پر تغیر ہے ہمیں پہتا چل جا تا تھا کہ یہ چیز نا گوار خاطر ہے۔ جس طرح سفس وقمر کے سامنے غبار آ جا تا ہے اور روشنی مدھم پڑجاتی ہے یونہی چیرے کے نور میں تغیر آ جا تا تھا۔ اس طرح کنواری لڑکی بھی اپنی پسندنا پسند کا ظہار نہیں کرتی۔ زیادہ سے زیادہ قر ائن سے کام لیاجا تا ہے۔ طرح کنواری لڑکی بھی اپنی پسندنا پسند کا ظہار نہیں کرتی۔ زیادہ سے زیادہ قر ائن سے کام لیاجا تا ہے۔ شریعت نے بھی اس کے سکوت کورضا تھی رایا ہے کیونکہ وہ بعض امور میں بھراحت ہو لئے سے شرماتی ہے۔

(۱)سنن ابن ماجة ص ۳۸ كتاب الطهارة ابواب التيمم باب نهى ان يرئ عورت اخيه، مصنف ابن ابى شيبة ۱ / ۲ • اكتباب البطهارة، مسند احمد ۲۳/۲،السنن الكبرئ ۹۳/۷ كتاب النكاح باب ماتبدى المرأة من زينتها للمذكورين في الإية (مختار)

ترجمہ: حضرت عائشہ ہیں کہ نبی اکرم ایک (کی حیاء کی وجہ سے) میں نے بھی بھی ان کی شرمگاہ نہیں دیکھی۔

375

ریبھی واضح بات ہے کہ جب حضرت عائشہ کمال محبوبیت اور بے تکلفی کے باجود آپ اللہ کی کا مشرمگاہ نہ دیکھ کی ساید ہے شرمگاہ نہ دیکھ کی کا کوئی بھی شخص شاید ہے مشرمگاہ نہ دیکھ کی کہاس کی بیوی اور اس کے درمیان ایسا پردہ رہا ہے۔

اللاتعالى خود فرماتے ہیں هن لباس لکم و انتم لباس لهن ،اور ظاہر ہے کہاں ہن شدیدا تصال ہوتا ہے نہ لہاس سے پردہ ممکن ہے اگر چہوہ ساتر ہے اس کی وجہ سے دوسر عیوب چھپ (۱) اولی اور بہتر ہے کہ شوہرا پی بیوی اور بیوی اپ شوہری شرمگاہ کوندد کیے گئی اگرد کینا چاہتو دیکھ سے ہیں اس شر کراہت نہیں۔ کساقال ابن نجیم وینظر الرجل إلیٰ فرج امته و زوجته یعنی عن شهوة و غیر شهوة قال علیه الصلوة و السلام غض بصرک إلا عن زوجت کو وامت کو ماروی عن عائشة قالت کنت اغتسل أنا ورسول الله عُلَيْتُ فی إناء واحدو لائه بیجوزله المس والغشیان فالنظر اولیٰ إلا آن الاولیٰ ان لاینظر کل منهما إلی عورة صاحبه. لقوله علیه الصلوة و السلام إذا آتی احد کم فلیستتر مااستطاع و لایت جردان تجردالبعیر لأن النظر إلی العورة یورث النسیان (البحر الرائق ۱۳۵۸) صاحب ہدایہ خطرت عبدالله بن عمر گلامت کی ہے کہ آپ کے ہاں میاں بیوی کا ایک دوسرے کی شرمگاہ دی کھنا بہتر عبدالله بن عمر گلاولیٰ المبداله فی تحصیل معنی اللذة لکن فی شرح الهدایة للعینی آن هذا لم یثبت عن الول کے ان ناب عصر یہ بست مو کہ کہ اللہ المام ابو یوسف سے موی ہاسا قال اس عصر لابسند صحیح و لابسند ضعیف (ردالمحتار ۲۸۷۱) البترام ام ابویوسف سے موی باسا قال سالت آبا حنیفة عن الرجل یمس فرج آمراته و ھی تمس فرجه لیتحرک علیه اهل تریٰ باسا قال سالت آبا حنیفة عن الرجل یمس فرج آمراته و ھی تمس فرجه لیتحرک علیه اهل تریٰ باسا قال الوار جوان یعظم الأجر (ردالمحتار ۲۷۷۲) المام الوبور دالمحتار ۲۷۲۲)

جاتے ہیں بالکل اسی طرح شادی سے بھی عیوب جیپ جاتے ہیں لیکن ہیوی سے پردہ نہیں رہتا ہایں ہمہ نبی کریم اللہ کا حیاء میں وہ مقام ہے کہ حضرت عاکشتان شم کا دعویٰ کرتی ہیں۔

(۱) بخاری جاس۵۲

<sup>(</sup>۲) مناوی چهس ۲۱۸

### خلاصهباب

اس باب میں نی اکرم آلی کے کو اوکا ذکر ہے کہ آپ آلی کے میں بیصفت بدرجہ اتم موجود تھی۔ اس سلسلے میں آپ آلی کے ساقت میں اور فعلی بھی بہاں امام ترفدی بطور نموند دومد بیث لائے ہیں۔
میں آپ آلی کے ساق کے میں مروی ہیں اور فعلی بھی بہاں امام ترفدی بطور نموند دومد بیث لائے ہیں۔
نوجوانی میں صرف ایک مرتبہ آپ آلی ہی بر بہ ہوکر بے ہوش ہوئے تھا س کے بعد بھی بھی بر ہنہ نہیں ہوئے بلکہ حضر ساہن عباس کے جنہ ہیں کہ فعک ان اوّل شیسی دائی من المنبوة ان قبل لمه "السنت " فیل من المنبوة ان قبل لمه "السنت " فیل من المنبوة ان قبل لمه المنہ المنہ کہ المنہ کے اور اس دور سے آپ آلی کے کہ میں سب سے پہلا تھم (قبل نبوت) آپ آلی کے بی ملاقا کہ "بردہ چھپاؤ" اور اس دور سے آپ آلی کے کا بردہ بھی نہیں دیکھا گیا۔
بہرحال اس بات میں نی اکرم آلی کے اخلاق عالیہ کا ایک گوشندزر میں نمایاں کیا گیا ہے۔

# ۵۰ باب ماجاء فی حجامة رسول الله عَلَيْنَ مَا الله عَلَيْنَ عَلَيْنَ الله عَلَيْنَ عَلَيْنَ الله عَلَيْنَانِ الله عَلَيْنَ عَلَيْنَ الله عَلَيْنَ عَلَيْنَ عَلَيْنَ عَلَيْنَ عَلَيْنَ عَلَيْنَانِ عَلَيْنَ عَلَيْنَ عَلَيْنَ عَلَيْنَ عَلَيْنَ عَلَيْنَ عَلَيْنَانِ عَلَيْنَ عَلَيْنَانِ عَلَيْنَانِ عَلَيْنَانِ عَلَيْنَ عَلْمَ عَلَيْنَانِ عَلْمَانِيْنَ عَلَيْنَانِ عَلَيْنَا عَلَيْنَ عَلَيْنَانِ عَلَيْنَانِ

علاج تو كل كے خلاف نہيں: جم اور اجتجام تحجينا اور سينگ لگوانے كو كہتے ہيں اس كا اصل معنى مصل يعنى چوسنا ہے۔ جامة اس جم سے اسم ہے يہ نبى كريم الله كے علاج كے طريقوں ميں ايك طريقة تھا۔ ثما كل ميں اس باب كولانے كيلئے علامه مناوئ نے يہ كھا ہے كہ چونكہ كمال توكل نبى اكرم الله كے خلاق عاليہ كا حصه تھا جبكہ توكل كا نقاضا ہے كہ الله تعالى پراعتا دكرتے ہوئے علاج اور دم تعويذ وغيرہ سے پر ہيز كيا جائے تو امام ترفيل كے اس تو ہم كود فع كرتے ہوئے يہ باب منعقد كيا تاكہ تنبيہ كرديں كہ جامت بلكہ كوئى بھى علاج خلاف توكل نہيں اور نہ كمال توكل كے منافى ہے۔ اس باب ميں مصنف نے چھو مديثيں بيان كى ہيں جن خلاف توكل نہيں اور نہ كمال توكل كے منافى ہے۔ اس باب ميں مصنف نے چھو مديثيں بيان كى ہيں جن ميں نبى اگرم الله كے کہ عمول كا بيان ہے۔

جامت مجرب طریقہ علاج: خون کی صفائی کیلئے اور اس کے جوش اور دباؤ کو کم کرنے کیلئے زمانہ قدیم سے خون کا کوئی حصہ نکالنا بطور علاج رائج تھا۔ اس نوعیت کا علاج کی مقامات پر جھونکیں لگوانے سے بھی زمانہ قریب تک رائج رہاس پر بیشبہ نہ کیا جائے کہ خون نکا لئے سے علاج کیسے ہوسکتا ہے؟ اس لئے کہ آئ کی طب جدید میں بھی خون کی بیاریوں میں ڈاکٹر اور حکیم حضرات اس نوعیت کے علاج تجویز کرتے ہیں۔ کل طب جدید میں بھی خون کی بیاریوں میں ڈاکٹر اور جوش کو اگر تجامت کے ذریعے ختم کیا جائے تو کیا حرج ہے خون اگر سخت اور گاڑھا ہویا اس میں چربی کے ذرات شامل ہوں اور بیشریا نوں میں بسہولت جاری نہ ہوتو آئے کل بھی ڈاکٹر لوگ دوا کی اور اخراج خون کے ذرات شامل ہوں اور بیشریا نوں میں بسہولت جاری نہ ہوتو آئے کل بھی ڈاکٹر لوگ دوا کی اور اخراج خون کے ذرات شامل ہوں اور جہتے میں جس سے خون شریا نوں میں بسہولت کیا جائے تھوں کے دریا جائے تا تھا۔ ابن سینا اور دوسر سے مسلم وغیر مسلم اطباء نے اس طریقہ کی شسین وتا سکری ہے اور ثابت کیا ہے کہ یہ بہت اہمام سے جاری ہے اور اس کے بڑے ماہرین سے عرب کھینگواتے ہیں۔ کہ یہ بہت اہمام سے جاری ہے اور اس کے بڑے ماہرین سے عرب کھینگواتے ہیں۔

ترجمہ: حضرت انس سے جام کی کمائی کے جواز اور عدم جواز کے متعلق پو چھا گیا تو انہوں نے کہا کہ نبی کر یم آلی نے خود کچھے لگوائے سے ابوطیبہ نامی ایک غلام نے آپ آلی کے خود کچھے لگوائے سے ابوطیبہ نامی ایک غلام نے آپ آلی کے نام کو دوصاع کھانا ( کھجور ) بخشنے کا کھی اور اس کے آفاوں سے بات کر کے اس کے اوپر خراج ( نیکس ) میں کی کرادی۔ نیز فرمایا کہ تمہارے علاجوں میں سے بہترین علاج جامت ہی ہے یا ہے فرمایا کہ تجامت ہی ہے یا ہے فرمایا کہ تجامت ہی ہے یا ہے فرمایا کہ تجامت ہی ہے یا ہے

عجامت براجرت: كسب المحجام المنع ، عجام يعنى تحيين لكان والحاكى كمائى كے بارے ملى حضرت النس سے دريافت كيا گيا عجام سے ہمارے ہاں كامتعارف عجام يعنى نائى مراونيس بيشايداس لئے مشہور ہوا ہوكدا كثر اوقات نائى ہى تحجينے لگايا كرتے تھے نيز تحجينے لگانے سے قبل عجام سرمونڈتے تھے يا تحجينے لگانے كے جگہ سے بال مونڈتے تھے۔اس لئے سرمونڈ نے والوں كو بھى عجام كہا جانے لگا و يسے عربی زبان ميں آئ كى حكم اللہ مونڈ تے تھے۔اس لئے سرمونڈ نے والوں كو بھى عجام كہا جانے لگا و يسے عربی زبان ميں آئ كى حكم اللہ تھے ہیں۔

یہاں سائل نے تجام کی کمائی کے بارے میں پوچھا کہ کسی ہے اس سوال کا منشاء یہ ہے کہ تجام کا کام چونکہ بظاہر گندہ ہے لہذا سائل کوشہ ہوگیا ہوگا کہ اس کی کمائی بھی درست نہ ہوگی یا پھر بیسوال اس لئے (۱) صحیح بخاری ۱ ۲۸۳۱ بیاب ذکر الحجامة کتاب البیوع، جامع ترمذی ۱ ۵۳۸۱ ابواب البیوع بیاب میاجاء فی الرخصه فی کسب الحجام سنن ابی داؤد ۲۸/۲ ا کتاب الاجارات باب فی کسب الحجام سنن ابی داؤد ۲۸/۲ کتاب الاجارات باب فی کسب الحجام، مسنداحمد ۳/۰ مصنف ابن ابی شیبة ۲ ۲۵/۲ السنن الکبری للبیهقی ۹ / ۳۳۷، مؤطاامام مالک (مختار)

كياكه ني كريم الله في الكه مديث من فرمايا م كه "كسب الحجام خبيث" يعنى حجام كى كمائى

احتجم رسول الله عَلَيْكُ المح ،حضرت الس في جواب ديا كديه كمائي حلال بي كيونكم العطيب نا می جام نے نبی کر یم ماللہ کو تجھنے لگائے تھے اور خود آ پیالیہ نے اسے اجرت میں دوصاع طعام کے دیئے تھے۔ چنانچہ بہ جائز ہے۔ اب بظاہر جو دونوں مدیثوں میں تعارض معلوم ہور ہا ہے تو اس کی تطبیق یوں ہوگی کمحل جواز وہ ہے جہاں اجرت اورعمل دونوں معلوم ہوں اورمحل زجروہ ہے جہاں اجرت مجہول ہوکہ عام کو کتنا ملے گا یا عمل مجہول ہو لیتن پہینۃ نہ ہو کہ کتنے تھیے لگیں گے۔امام طحاویؓ نے بیجی ککھا ہے کہ ابتداء میں حجام کی اجرت ناجا ئز تھی بعد میں اباحت کا حکم نازل ہوا تھا جبکہ امام احمد منظیق میں فرماتے ہیں کہ پیہ فرق حراور عبد میں ہے یعنی حرکیلئے تو بدپیشاختیار کرنا جائز نہیں اور نہ اسے کمائی لینا جائز ہے الا بد کہ وہ اس كمائى كوغلامون اورچويايون برخرچ كرية درست بجبكه غلامون كيليح بيمل اور كمائى مطلقاً جائز باور اس کی کمائی سے کھانا بھی درست بےلین اکثر روایات سے معلوم ہوتا ہے کہ نبی تنزیبی ہے اور بیال اور اس کی اجرت لینا ہر کسی کیلئے جائز ہے کسی کیلئے مضا لَقہ نہیں اور یہی باقی ائمہ کا مسلک بھی ہے کیونکہ اگر حرام موتو پھر حروعبد ميں فرق نہيں ہونا جا ہے اور حلال ہوتو بھی دونوں كيليے حلال ہوگا۔اسلام نےعبد كوانسا نيت اور تکلیف کے دائرے سے کب نکالا ہے جی کہ اسے حیوانات سے ملاکراس کے اور آزاد آ دمی کے درمیان احکام میں فرق کیا ہو۔اسلام حتی الوسع اسے انسانیت کے تمام تقاضوں میں آزاد کے برابرشار کرتا ہے بلکہ اسلام انسان کی غلامی کاروادار ہی نہ تھالیکن دوسری طرف دوسرے انسان کے حقوق مالیہ کالحاظ کر کے مجبوراً باقی رکھنا پڑا۔ یہی وجہ ہے کہ اسلام نے غلامی کومحدود کر دیا غلام کوپستی سے نکال کرمعاشرے میں قابل لحاظ رعایتیں دینے کے ساتھ ساتھ اس کی آزادی کے مختلف راستوں کی ترغیب دلائی۔ بہر حال غلام اور آزاد میں فرق کی بات غیرمعقول نظرآتی ہے۔لہذا اصل جواب یہی ہونا چاہئے کہ نہی تنزیبی ہواور ایک نجس چز (خون) کے ساتھ تلبس کی وجہ مے مض احتباطاً نی کریم اللہ نے کسب الحجام خبیث کا حکم لگایا ہواوراس میں راز کی بات پیر ہے کہ بعض اوقات حجام خون کومنہ سے چوستا ہے جس سےخون کے نگلنے کی نوبت آسکتی ہے۔ آج کل بھی خون ٹیسٹ کرنے کی لیبارٹری میں سرنج پر مندلگا کرخون کینیجے ہیں۔اس طرح اس کے جہم اورلباس کو ویسے بھی خون عموماً لگ جاتا ہے جوشر عاً اور طبعاً ایک فیجے امر ہے لیکن کشرت ملابست کی وجہ سے تجام کی طبعی نفرت جاتی رہتی ہے اس لئے شرعاً قباحت کی بقاء اور اظہار کیلئے آپ آلی ہے نے اس فعل کی تقلیج کی۔ رہی جو از کی بات تو اس سلسلے میں خود آپ آلی ہے سے عملاً تجامت کروانا بھی ثابت ہے اور اجرت دینا بھی۔ فدکورہ صدیث بھی اس کی شہادت دیتی ہے بعض حضرات نے بیقطیت بھی کی ہے کہ تجامت کا عمل اور اس کی اجرت لیٹا تو جائز امر ہے لیکن اسے بطور کا روبار اپنا نا اور پیشر بنا نا مکروہ ہے اور نہی کی صدیث کا محمل بھی وہی ہے جبکہ بعض حضرات نے نہی کی وجہ سے بتائی ہے کہ چونکہ پیارشخص کی مجامت کرنے پر مجبور کو جاتا ہے اس کی مجبور کی سے فائدہ اٹھانے کے بجائے اس سے جمدردی کرکے مفت میں علاج کرنا چاہئے دیے کہا ہے اس کی مجبور کی سے فائدہ اٹھانے کے بجائے اس سے جمدردی کرکے مفت میں علاج کرنا چاہئے دیے کہا ہے اس کی مجبور کی سے فائدہ اٹھانے کے بجائے اس سے جمدردی کرکے مفت میں علاج کرنا چاہئے دیے کہا ہے اس کی مجبور کی سے فائدہ اٹھانے کے بجائے اس سے جمدردی کرکے مفت میں علاج کرنا چاہئے دیے کہا ہے اس کی مجبور کی سے فائدہ اٹھانے کے بجائے اس سے جمدردی کرکے مفت میں علاج کرنا چاہئے نہیں۔

و کی کم اهده، ابوطیب یا تو ماذون غلام تھااس کا ما لک حضرت محیصه بن مسعودانصاری تھا۔ یا بن حارثہ میں سے کسی اور کا غلام تھا جواس سے تین صاع تیکس لیتا تھا۔ آپ علی کے اس کی سفارش کی اور اس کے بام میں متعدد اقوال منقول ہیں۔ بعض نے کیلئے مالکوں سے ایک صاع کی رعایت حاصل کی۔ اس کے نام میں متعدد اقوال منقول ہیں۔ بعض نے نافع بعض نے میسرہ اور بعض نے دینار کھا ہے لیکن ملاعلی قاری نے موخرالذکر دونا موں کو درست قرار نہیں دیا الغرض اس کے اہل یعنی مالکوں سے بنی حارثہ اور پالحضوص محیصه بن مسعود انصاری مراد ہیں۔

او ان من امثل دو انکم الحجامة، او ، یہاں شک کیلئے ہے راوی کوالفاظ کی تعیین میں شک ہے نبی اکرم اللہ نے جامت کی تحسین فرمائی ہے جو ایک مفید طریقہ علاج ہے بالخصوص عرب کے گرم علاقے میں اس کی افادیت مسلم ہے کیونکہ وہاں حرارت کی شدت کی وجہ سے خون کی کثافتیں بدن کی ظاہری حصہ میں جمع ہوجاتی ہیں جس کی وجہ سے مختلف قتم کی بیاریاں پیدا ہوتی ہیں ۔ جامت سے ریک افتیں فارج ہوجاتی ہیں۔ ابن سینا حکیم کا قول ہے فارج ہوجاتی ہیں۔ ابن سینا حکیم کا قول ہے

ومن تكن عادته الفصادة فلايكن قطع تلك العادة ترجمه: جس كورگ مارنے كى عادت مواس كيلئے بيعادت چھوڑ نانہيں جا ہے۔

ایک اور جگہ کہتے ہیں \_

ووفّرعلى الجسم الدمأ فانه لصحة جسم من احل الدعائم

البتہ بڑے بوڑھوں کواس عمل سے پرھیز کرنا چاہئے کیونکہ ان کےجہم میں قولیدخون کا نظام کمزور پڑجا تا ہے جس کی وجہ سے وہ حجامت کو برداشت نہیں کرسکتے اسی طرح روزہ دار کوبھی اگر کمزوری یا نقصان کا خوف ہوتو کچھنے لگوانے سے پر ہیز کرنا چاہئے۔

(۲) حدّثناع مروبن على ثنا ابوداؤ دثنا ورقاء بن عمر عن عبدالأعلى عن أبى جميلة عن على أنّ النبي عَلَيْهُ احتجم وأمرنى فاعطيت الحجام اجره(١).

ترجمہ: حضرت علی کہتے ہیں کہ نبی اکرم اللہ نے کھیے لگوائے اور جھے اجرت دینے کا حکم دیا پس میں نے تجام کواس کی اجرت ادا کی۔

وأمرنى ال مديث سي بهى تجامت كا جواز اور تجام كواجرت ديخ كاجواز ثابت بهور باب رسي المحدون الثوري (٣) حدثناها رون بن إسحاق الهمداني ثنا عبدة عن سفيان الثوري عن جابر عن الشعبي عن ابن عبّاس أظنّه قال أنّ النبي عَلَيْتُ احتجم في الاخد عين وبين الكتفين و اعطى الحجّام اجره و لو كان حراما لم

يعطه(۲).

ترجمہ: حضرت عبداللہ بن عباس کے جین کہ نبی اکرم ایک نے گردن کے دونوں جانب اور دونوں کندوری دے جانب اور دونوں کندھوں کے درمیان مجھنے لگوائے اور تجام کواس کی مزدوری دے دی۔ اگر کسب تجام حرام ہوتا تو آپ ایک کے اس کومزدوری نددیتے۔

( ۱ ) سنن ابن ماجة ص ۵ ۷ اكتاب التجارات باب كسب الحجام، مسندا حمد ۱ / ۰ ۹ ، مصنف ابن ابي شيبة ۲ ۲۲/۷ كتاب الإجارات. (مختار)

(۲)صحیح بخاری ۳۰،۲۱ کتاب الاجارات باب خراج الحجام، صحیح مسلم ۳۰،۲ کتاب البیوع باب حل اجرة الحجامة ، مصنف ابن ابی شیبة ۲۲۲ ۲، سنن ابی داؤد ۱۳۹/۲۶ کتاب الاجارات باب کسب الحجام، مسنداحمد ۱۵/۱ (مختار)

علی الاخدَ عین و الکاهل، اخدَعین گردن کے دونوں جانب موجود دورگوں کا نام ہے جبکہ کا ہل کندھوں کے درمیان پیٹھ کے بالائی حصہ کو کہتے ہیں جوریڑھ کے ہڈی کے اوپر کے چھ مہروں پر شتمل ہے اور پیٹھ کا تقریباً ایک تہائی حصہ ہے۔

جامت کی بیار بول کاعلاج ہے: اہل طب کہتے ہیں کہ اخذ عین لینی گردن کے دونوں جانب کچنے گوانے سے سر، منه، کان، آ تکھ اور دانت کے امراض ختم ہوجاتے ہیں جبکہ کندھوں کے درمیان پیٹھ کے بالائی حصے میں تجینے لگوانا کندھوں اور حلق کے درد میں مفید ہے۔ ای طرح بعض دوسر مخصوص اعضاء پر تجینے کچھ خصوص امراض میں فائدہ مند ثابت ہوتے ہیں۔

نی اکرم آلیکه کوبھی سر درد کا عارضہ بکثرت ہوتا تھا بلکہ مرض وفات میں بھی زیادہ تکلیف سر در دکی ہوتی رہی اور اس کا سبب محققین کے ہاں وہ زہر یلا گوشت چھنا ہے جوسلام بن مشکم یہودی کی ہوی اور مشہور یہودی پہلوان مرحب کی بہن زینب بنت الحارث نے آپ آلیکه کو پیش کر کے کھلایا تھا۔اس کا اثر تمام سریا آ دھے سرکے درد کی صورت میں اخیرز نمرگی تک باقی رہااور ہرسال بیدورہ آپ آلیکه پرلوٹ کرآتا آ سے آلیکہ اس کا علاج پیٹے برجامت کے ذریعے کرواتے تھے۔

ولو کان حراماً لم یعطه، لین جب کام جائز ہوگا تب اس کی اجرت بھی جائز ہوگی اور کام کے بارے میں تو نبی کریم اللہ نے اش وافضل کہا۔ لہٰذا اجرت کیوں حرام ہو۔علاوہ ازیں نبی کریم اللہ کے نے خوداجرت دی ہے تو حرام کیسے ہوگی اس لئے نبی کی احادیث میں تاویل واجب ہوگی۔

یہاں کوئی بینہ کیے کہ اس حدیث کی روسے جامت ہر بیاری کیلئے علاج ہونا چا ہے اس لئے کہ جامت ایک علاج ہونا چا ہے اس لئے کہ جامت ایک علاج ہے اور ہرعلاج اور دوا ایک خاص مرض کیلئے ہوتی ہے جو کہ خاص حالات بلکہ خاص موسموں میں خصوصی پر ہیزوں کے ساتھ کیا جاتا ہے ورنہ پھر وہی علاج مضر بھی ہوسکتا ہے۔ جامت بھی ہر مرض کیلئے اور ہر حال میں نہیں کیا جاتا مثلاً اگر کوئی شخص خون کی قلت کا مریض ہے اور اس حدیث کے پیش نظر اس سے مزید خون بھی تکال لیا جائے تو اسے تو موت کے منہ میں پہونچا دیا جائے گا۔ اسی طرح اگر سروعلاقوں میں جہاں بدن میں خون کی کثرت اور گرمی کی ضرورت ہوتی ہے تم احتجام سے کسی مریض کا

علاج کرو گے تو اس مریض کی موت کا خطرہ ہے۔ اس صورت میں بینہیں کہاجائے گا کہ نبی کریم اللیہ کا کا نبی کریم اللیہ کا علاج غلاج غلاج غلاج غلاج غلاج غلاج علاج کے محتلاج کرم علاج کے محتلاج کرم علاج نبی کریم میں خون کی حدت کے دوران کیا جائے تو مفید ہوگا ہر جگہ اور ہرموسم میں نہیں۔ جس طرح کہ اکثر علاجوں میں علاقہ ، موسم ، مرض اور مریض کی حالت کو مد نظر رکھنا لازم ہے۔ اس وجہ سے اطباء جماع کرنے ، شس ، زیادہ کھانا کھانے ، اور زیادہ بھوک کی حالت میں تجامت کو مضر کہتے ہیں۔

(٣) حدّثناهارون بن إسحاق ثنا عبدة عن ابن أبى ليلىٰ عن نافع عن ابن عمر أنّ النبيّ عليه الله عن عنه عنه عنه صاعا واعطاه اجره(١).

ترجمہ: حضرت ابن عمر سے روایت ہے کہ نبی اکر مہلی نے ایک تجام کو بلایا اس نے آپ چھا کہ تجھ پر کتنا خراج نے آپ کی اس سے بوچھا کہ تجھ پر کتنا خراج (نیکس) مقرر ہے۔ اس نے عرض کیا کہ تین صاع آپ کی نے اس کے مالک سے اس پرایک صاع نیکس کم کروایا اور اسے اجرت بھی دے دی۔

دعاحہ اما، بیغالبا ابوطیبہ بی ہیں جن کا ذکر پہلے ہو چکا ہے کہ آپھی کے کا سفارش پراس کے ماکوں نے تیکس کم کردیا تھا۔

فقال ثلاثة آصع، ماذون له، غلامول كوخدمت سے چھوٹ ديكر كاروباركى اجازت درى حال خاتى تقى اور عوماً ان پر يوميه يا ماہوار محصول لگايا جاتا تھا وہ معين محصول آقا ؤں كوادا كرتے تھے اور وہ آزاد لوگوں كى طرح كاروباركرتے تھے۔ يہ غلام بھى اپنے آقا ؤں سے تين صاع پراس قتم كاعقد كر چكاتھا جس ميں نبى كريم اليقة كى سفارش برايك صاع كى تخفيف كردى گئى۔

بعض شراح نے یہاں پیاشکال کیا ہے کہ صاع کی جمع صیعان یا اصوع تو لفت کی کتابوں میں مذکور ہے لیکن آصع خلاف قیاس ہے پھر اس کا جواب بید دیا ہے کہ آصع دراصل اصوَع تھا۔ صاد کے بعد کا مصنف ابن ابی شیبة ۲۷۱۷،مسنداحمد ۳۵۳سمداری

ہمزہ قلب کے قاعدے سے صاد سے پہلے نتقل ہو گیا اور پھر الف سے بدل دیا گیا اس طرح آصع بن گیا۔

ترجمہ: حضرت انس سے روایت ہے کہ نبی اکر م اللہ گردن کے دونوں جانب اور کنجمہ: حضرت انس سے روایت ہے کہ نبی اکر م اللہ کا کہ میں انیسویں یا کیسویں تاریخ کو بچینے لگواتے تھے۔ تاریخ کو بچینے لگواتے تھے۔

علاج کیلے مناسب وقت ہونا چاہئے:

اور خصوصاً جرای اور آپریشن کے معاطے میں اب بھی ڈاکٹر موسم کو فاص ابمیت دیتے ہیں۔ گری اور سردی نیز مریض کی حالت کالحاظ رکھتے ہیں۔ اسی طرح آپ سیالت بھی تجامت کیلئے وقت کا خیال رکھتے تھے۔

مہینے کی کا، 19 اور ۱۲ تاریخ ل میں کرتے تھے بیدراصل چا ند کیایا م اور اس کی تاریخوں کا اعتبار تھا چا ند بھی مدوجذ راور موسم کی کیفیت پراٹر انکراز ہوتا ہے۔ اس لئے آپ سیالت نے بھی ان ایام میں جواعتدال کے بھی مدوجذ راور موسم کی کیفیت پراٹر انکراز ہوتا ہے۔ اس لئے آپ سیالت نے بھی ان ایام میں جواعتدال کے بھی علاج کروایا۔ ابن سینا نے بھی قانون میں اس کی تقریح کی ہے کہ علاج کیلئے جی وقت کا انتخاب کرنا گیا ہے تھا۔ اور وہ پر نہ تھا بلکہ جگم اور مصالے پر بٹی تھا۔ اور وہ بے کہ چا ند طلوع ہونے کے بعد دور ان خون میں عموماً ہجان آ جا تا ہے اسی حالت میں تجامتہ میں ضرور دست نے اوجود فاسر مواد کا اخراج نہیں ہوتا۔ البذا تجامت کا سب سے بہتر وقت مہینے کار کھ ٹالث بتایا گیا ہے پھر ان باوجود فاسر مواد کا اخراج نہیں ہوتا۔ البذا تجامت کا سب سے بہتر وقت مہینے کار کھ ٹالث بتایا گیا ہے پھر ان ایام میں طاق ایام کا انتخاب شاید اس وجہ سے ہوکہ آپ سیالت بھت کی نبست طاق اعداد کو ترجی دیے اس المحجام، جامع تر مذی ۲۸۸۲ کتاب الطب باب ماجاء فی الحجامة، مسندا حمد ۱۹۳۳ اس کسب الحجام، جامع تر مذی ۲۸۸۲ کتاب الطب باب ماجاء فی الحجامة، مسندا حمد ۱۹۳۳ اور اور استوں کا اس میں باب حسب الحجام، جامع تر مذی ۲۸۸۲ کتاب الطب باب ماجاء فی الحجامة، مسندا حمد ۱۹ اور محتار)

تصاور فرماتے تھے کہ 'ان اللّٰہ و تبر ویبحبّ الوتو'' یعنی الله تعالیٰ خود بھی وتر ہیں اور وتر اعداد کو پسند

حــ لدَّثنا إسحاق بن منصور انا عبدالرزاق عن معمر عن قتادة عن أنس ابن مالك أنّ رسول الله عَلَيْكِ احتجم وهو محرم بملل على ظهر القدم(١).

ترجمه: حضرت انس سے روایت ہے کہ نبی اکر میں نے ملل کے مقام پر تجینے لَكُوائِ جَبِكُهُ آپِيَالِيَّةِ مُحرم تھے۔

بملل الله مل مدينه ساتقريباً سترهميل دور مكه كراسة مين ايك مقام كانام ب جهال احرام كي حالت میں آپ ایک نے کی لگوائے تھے۔

علماء کہتے ہیں کہ حالت احرام میں احتجام جائز ہے لیکن اس کیفیت سے ہو کہ بال نہ کا شنے پڑیں۔ کیونکہ بال کا شنے سے احرام ٹوٹنے کا خطرہ ہوتا ہے۔ویسے علاج تو حالت احرام میں بھی ممکن اور جائز ہے۔ کین بالوں کے ساتھ احتیاط ضروری ہے۔ ہاں اگر بال دور کرنا ضروری ہو پھرا سے بھی دور کرنا اضطرار أجائز موگا لیکن بال کاٹنے کی جنایت ادا کرنی موگی ۔ بہر حال بال کاٹنے سے حتی المقدور احتر از کیا جائے تو احتجام جائز ہے۔ بیاحناف کا مسلک ہے۔ جبکہ امام مالک کہتے ہیں کہ مروہ ہے نبی کریم اللہ نے ضرورت کی بنیاد یر شاید کیا ہو۔ کیکن احناف کے ہاں یہ تجھنے یاؤں کے ظاہری حصہ پر لگائے گئے تھے۔ جس میں بالوں كوكافيخ كي نوبت نهيس آئى نفد بهواجب موا

ر ۱) سنن ابى داؤد ۱/۲۲ كتاب المناسك باب المحرم يحتجم، السنن الكبرى للنسائى كتاب الطب، مسنداحمد ۲۳/۳ ا (مختار)

## ا ۵. باب ماجاء في اسماء رسول الله عَلَيْكُ مَا مَا لَكُهُ عَلَيْكُ مَا مَا لِللهُ عَلَيْكُ مِنْ مَا اللهُ عَلَيْكُ مَا مُول كابيان

نی کریم الیست کے اساء پر مستقل کتابیں: جبکہ آپ کیلئے توصیف کی خاطر جواساء ہولے جاتے ہیں کہ کم ایس بھی کسی گئی ہیں۔
ہیں بعض حضرات نے ان کا استقراء اور تنج بھی کیا ہے۔ اور اس سلسلے میں مستقل کتا ہیں بھی کسی گئی ہیں۔
بعض کتا ہوں میں یہ القاب و خطابات ہزاروں کی تعداد میں بتائی گئی ہیں۔ امام سیوطیؓ نے اس سلسلے میں البھ جمة السنید فی الاسماء النبویة کے نام سے ایک رسمال تحریکیا ہے جس میں آپ آپ آپ آپ کو رہا ہے جس میں آپ آپ آپ کی طرح نی پانی سونام جمع کئے گئے ہیں۔ ملائلی قاریؓ نے نانو سے نام ذکر کئے ہیں۔ اللہ تعالی کے اساء حسیٰ کی طرح نی کر کے ہیں۔ اللہ تعالی کے اساء حسیٰ کی طرح نی کر کے ہیں۔ اللہ تعالی کے اساء حسیٰ کی طرح نی کر کے ہیں۔ اللہ تعالی کے اساء حسیٰ کی طرح نی کر کے ہیں۔ اللہ تعالی کے اساء حسیٰ کی طرح نی کر کے ہیں۔ اللہ تعالی کے اساء حسیٰ کی طرح نی کر کے ہیں۔ اللہ تعداد اساء گرای کی بار بارذکر ہوا ہے۔ مثل می جیب خطابات والقاب ہیں۔ قرآن مجید میں بھی آپ آپ آپ آپ آپ آپ کا اساء کی کا بار بارذکر ہوا ہے۔ مثل میں میں اللہ ماحمد، نی ، رسول ، مزمل اور مدثر وغیرہ۔

اس کے علاوہ احادیث وآثار میں بھی متعدد اساء وارد ہوئے ہیں نیز کتب ساویہ میں بھی مختلف ناموں سے حضور علیہ ہے اللہ علی بٹارٹیں نازل ہوئی ہیں۔ان اساء کے معانی بھی اللہ تعالی نے قرن اول میں آپ علیہ کے بارے میں بٹارٹیں نازل ہوئی ہیں۔ان اساء کے معانی بھی اللہ تعالی نے قرن اول میں آپ علیہ کے لئے ایک طرح سے ثابت کر کے اس بات کی نشاندہی کی کہ یہی شخصیت ہی ان فرکورہ ناموں کا حقیقی مصداق ہے۔ اس باب میں بھی جونا م ذکر ہیں ہرنا م کی مخصوص تشریحات اور ہرکات شروح میں موجود ہیں۔ ملاعلی قاری گئے ہیں کہنا موں کی کثرت مسمل کی عظمت و شرف کی غماض ہے۔

(۱) حدّثناسعيدبن عبدالرحمٰن المخزوميّ وغيرواحدقالواثنا سفيان عن الزهريّ عن محمّدبن جُبيربن مطعم عن أبيه قال قال

<sup>(</sup>١)علامة يجوري في كلما بوالقاعدة أن كثرة الأسماء تدلّ على شرف المسمى (المواهب الدنية) (عمّار)

رسول الله عَلَيْكُ إِنّ لَى اسماءً انا محمّد وأنا احمد واناالماحيّ الذي يمحوالله بني الكفر واناالحاشر الذي يحشر الناس على قدمى واناالعاقب والعاقب الذي ليس بعده نبي (١).

ترجمہ: جبیر بن مطعم سے روایت ہے کہ نبی اکرم اللہ نفر مایا کہ میرے گئ نام ہیں۔ میں محمد ہوں، میں احمد ہوں، میں ماحی (مثانے والا) ہوں میرے ذریعے اللہ تعالی کفر کو مثاتا ہے میں حاشر ہوں کیونکہ (قیامت کے دن) تمام لوگوں کو میرے قدموں میں جمع کیا جائے گا اور میں عاقب (آخری) ہوں جس کے بعد کوئی نبی نبیس ہے۔

حضوت جُبيوبن مطعم: جبیر بن مطعم بن عدی بن نوفل بین جبیر کے والد کا واوانوفل اور نبی اکرم اللہ کے کالد کے والد کے وادا ہاشم بن عبر مناف آپس میں بھائی بین قرایش کے بڑے لوگوں میں ان کا شار بوتا تھا انساب کا بھی ماہر تھا جو انہوں نے ابو بکر صدیق سے بھی تھیں ابو بکر صدیق کو انسب العرب کہا کرتے تھے۔ بدر کے قید یوں کو چھڑا نے کیلئے جبیر گمہ سے مدینہ آئے تھے تو نبی اکرم اللہ کے کومورہ طور پڑھتے ہوئے سنا۔ آپ کہتے بین کہ اسی وقت اسلام نے میرے دل کے اندر گھر کرلیا تھا۔ نبی اکرم اللہ نے نبی آپ کی سفارش عزت افزائی فرمائی اور کہا کہ اگر مطعم بن عدی (جبیر کے والد) زندہ ہوتے اور ان قید یوں کی سفارش کرتے تو بیں ان قید یوں کو چھوڑ دیتا۔ پھر صلح حد بیبیہ کے بعد فتح کمہ سے پہلے جبیر اسلام لائے۔ آپ شکر کے دی ہے میں وفات یائی۔

اِنّ لی اسماء ، لین میرے لئے پیم خصوص نام ہیں یہاں ظرف کی تقدیم اس بات پر دلالت کرتی ہے۔ کہ بینام آپ آلی ہے۔ کہ بینام آپ آلی ہے کہ بینام آپ آلی ہے۔ کہ بینام آپ آلی ہے۔ کہ بینام آپ آلی ہے کہ اس بینام آپ آلی ہے۔ کا اور شایدا میں سب سے زیادہ معظم ہیں نیز دیگر معتوں کے درمیان بھی سب سے زیادہ مشہور ہیں۔

(۱) صحیح بخاری کتاب المناقب باب ماجاء فی اسماء رسول الله علی محیح مسلم ۲۲۱/۲ کتاب الفضائل باب فی الاسماء، جامع ترمذی ۱۱/۲ کتاب الادب باب ماجاء فی اسماء النبی علیه مسنداحمد ۱/۰ ۸ (مختار)

أناأحمد، احمد کالغوی معنی ہے سب سے زیادہ حمد کرنے والا، اور نی کریم اللہ اللہ تعالیٰ کا سب سے زیادہ حمد کرنے والے نظے۔ اس امت پر اللہ تعالیٰ نے ایک عمومی رنگ کو حاوی کر دیا ہے اور وہ حمد سے تعلق ہے یہی 'صبغة اللہ'' کا مطلب و مقصود ہے۔ چنا نچے حمد کے ساتھ اسی مناسبت کی وجہ سے نی کریم آلیہ کے کانام محمد اور احمد ہے نیز اس امت کانام محمادون ہے۔ اس امت کے پیغیر فرماتے ہیں ہیسدی لے واء المحمد. کہ قیامت کے دن میر ہے ہاتھ ہیں حمد کا جمنڈ اموالی علاوہ ازیں اس امت کو جو کتاب ہدایت دی گئی ہے۔ اس کی ابتداء بھی حمد سے کی گئی ہے اور نی کریم آلیہ کے مقامات عالیہ کی انتہاء بھی مقام محمود پر بوگ ۔ اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے عسیٰ ان یبعث کی ربّک مقاما محمود داً. قریب ہے کہ آپ کا رب آپ کومقام محمود شریب ہے کہ آپ کا رب آپ کومقام محمود شریب ہے کہ آپ کا رب آپ کومقام محمود شریب ہے کہ آپ کا رب آپ کومقام محمود شریب ہے کہ آپ کا رب آپ

شفاعت کبریٰ کے بارے میں آیا ہے کہ نبی اکرم اللہ اس وقت جب سجدے میں جا کینگے تو اللہ تعالیٰ ایسے مخصوص محامد کا القاء سجدے میں فرما کینگے جوآ پھالتے سے پہلے کسی کومعلوم بھی نہ ہوں گی۔ نیز اہل جنت کے قول آخرکا بیان کرتے ہوئے قرآن مجید کہتا ہے کہ واخر دعواہم ان الحمد لله ربّ العالمین (پونس

۱۰ پاره۱۱)"جنت مین "اکل اخیر بات به بوگی که"المحمد لله دب العلمین "الغرض اس امت کوابتداء سے انتهاء تک حمد سے جوڑا گیا ہے۔ احمد کانام کتب سابقه میں بھی فدکور ہے جسکی طرف قرآن مجید نے بھی اشارہ کیا ہے فرمایا مبشو ابر سول یأتی من بعدی اسمه أحمد (الصف: ۲)

لیعنی میں (عیسی ") میر بے بعد آنے والے پیغیبر کی بشارت دینے والا ہوں جن کا نام احمہ ہے۔

کتب سابقہ میں اگر چہ اسی مفہوم کو دوسر بے الفاظ سے ادا کیا گیا ہے لینی احمہ کے لفظ کی بجائے وہاں اس کا ہم معنی لفظ '' کا ذکر ہے اس لفظ اور اس کے معنی مراد کو بدلنے کیلئے عیسائی پادریوں اور راہیوں نے ہزار ہاتھ بیفات وتاویلات کا سہار الیالیکن تحقیقات کے مطابق اس کا صحیح صحیح مفہوم'' احمہ'' ہی کا مفہوم ہے اور انصاف پیند مستشرقین نے اس بات کا اعتراف کیا ہے کہ احمہ کے سوافار قلیط کا دوسر اکوئی معنی بنتا ہی نہیں ۔ ہبر حال قرآن مجید اور دیگر کتب ساویہ میں شجہ اور احمہ کے دونام نہ کور ہیں۔

منانے والا، مائی:

وانسان السماحی، آپ الله کے دونام چونکد آپ الله کے مرتبہ میں سایک نام مائی (منانے والا) ہے۔ جو کہ محانک سے ہاں سے قبل کے دونام چونکد آپ الله کے ان کی وجہ تسمیہ بیان تربی فرمائی ۔ لیکن باقی تین وضی نام ہیں۔ اس لئے ان کی وجہ تسمیہ بیان کرتے ہوئے فرماتے ہیں۔ یس محو الله بی الکفر، لیمن الله تعالیٰ میرے ہاتھ سے شرک و تفراورظم و جہالت کومنا تا ہے جزیرة العرب میں تو آپ الله کے حین حیات میں تفرکا نام ندر ہا جبکہ سارے عالم میں بھی تفرکا اضحال اور جزیرة العرب میں تو آپ الله کے حین حیات میں تفرکا نام ندر ہا جبکہ سارے عالم میں بھی تفرکا اضحال اور عیسیٰ سے نام میں تو آپ الله کا تربید کی الله میں اس کا خاتم مسلم بات ہے۔ قرآن کا ارشاد ہے ہو المذی أد سسل د سوله، بالهدیٰ و دین المحق لیظهرہ علی الله ین کله (فتح ۸ ۲ وصف ۹) (ترجمہ) و بی ہے جس نے الله ین رسول کو بھیجا سیر ھی راہ اور سے دین پرتا کے خالب کرے اسے ہردین پر۔

بعض روایات میں ایک اور وجہ بھی اس نام کیلئے ذکر کی گئی ہے وہ یہ 'فیان اللّٰه یمحوبه سیّنات میں تبعه ''لینی اللّٰہ تعالٰی آ پہلیّن کے میں آپ کی است کی گنا ہوں کومٹادیں گے۔کافروں کوائمان سے سرفراز فرمائیں گے۔اورمؤمنوں کے تی میں شفاعت قبول فرمائیں گے۔

بن نوع انسان کوجم کرنے والا : و انساالحاشو ، فرماتے ہیں ہیں جمع کرنے والا ہوں۔ حشر جمع کرنے کو کہتے ہیں۔ آپ آپ آپ آپ آپ قیادت میں اطراف واکناف کے منتشر لوگوں کو ایک صراط منتقیم پر جمع کرنے والے ہیں۔ آپ آپ آپ آپ آب کا میں منازع کا میں ملا۔ اور تمام ادیان کو چھوڑ کردین حق کی اتباع کا حکم ملا۔ اور تمام ادیان کو چھوڑ کردین حق کی اتباع کی دعوت دی گئی جو وحدت کی ضانت ہے آپ آپ آپ است سے اعلان کروایا گیا کہ وات ھندا صراطی مستقیماً فاتبعوہ و لا تقبعوا السبّل فتفرّق بکم عن سبیلہ (انعام ۱۵۳) (ترجمہ) بیدین میرا مست جو کہ سیدھا ہے کہن اس راہ پر چلواور دوسرے راستوں پر مت چلو کہ وہ راہین تم کو اللہ کی راہ سے جو کہ سیدھا ہے کہن اس راہ پر چلواور دوسرے راستوں پر مت چلو کہ وہ راہین تم کو اللہ کی راہ سے حواکر دیں گی۔

اورجس طرح الله تعالی کی تو حید انسانیت کیلئے وحدت کا ذریعہ ہے۔ اسی طرح آپ علیقے کی رسالت بھی بنی نوع انسان کے اتفاق واتحاد کا پیغام ہے۔ یور فی طحدین کو خدا بہب پراعتراض ہے کہ فدا بہب انسانیت میں تفرقہ پیدا کرتے ہیں لیکن جب دیگر فدا ہب کوختم کر کے اسلام نے اتفاق واتحاد کی دعوت دی تو پھر تفرقہ کا کیا سوال ؟ آپ علیقے کوختم نبوت کا تمغہ دیا گیا تو اب دوسرے ادیان کوختم کر کے تمام لوگوں کو متحد ہونا ہے اور یہی حشر انسانیت کی صورت ہے جو دنیا میں ہونا ہے۔

علاوہ ازیں قیامت کے روز بھی نی کریم اللہ اس کے پہلے میدان حشر (۱) میں نکلیں گے۔ اور پھر دوسر ہے لوگ ان کے پاس بھی ہونگے اس لحاظ ہے بھی آپ اللہ پر حاشر کا اطلاق ہوسکتا ہے۔

آخری نی:

وانا المعاقب، عاقب کے معنی آخر میں آغوالے بیں۔ اور آپ بھی انبیاء کرام کے سلسلۃ الذہب کی آخری کڑی تھے۔ آپ اللہ کے بعد کوئی نی نہیں۔ اب اگر لفظ خاتم النبین کے ہزاروں تاویلات بھی کی جا میں۔ تو یہ لفظ العاقب اور اس تتم کے ہزاروں تقریحات ختم نبوت کے واضح ولائل بیں۔ ختم نبوت کے واضح ولائل بیں۔ ختم نبوت کے منکر خاتم کا معنی مہر لگانے والے سے کرتے بیں لیکن خود آپ اللہ کی احادیث اس پیا۔ ختم نبوت کے منکر خاتم کا معنی مہر لگانے والے سے کرتے بیں لیکن خود آپ اللہ کی احادیث اس پرناطق بیں کہ خاتم کا یہ معنی نبیں بلکہ اس کا معنی آخر ہے مثلاً اس جگہ بھی لیس بعدی نئی فرمایا۔ اور دوسر برناطق بین کہ خاتم کا یہ معنی نبیل بلکہ اس کا معنی آخر ہے مثلاً اس جگہ بھی لیس بعدی نئی فرمایا۔ اور دوسر بوال النبی مائٹ اللہ بھی میں ورواہ البخاری اس کا ۲۰۲۰ عن أبی هویو آفی ابواب المناقب باب فیضل النبی مائٹ ، ورواہ البخاری اس کا ۲۰۲ عن ابی سعید فی کتاب الخصومات ولفظہ فاکون اوّل من تنشق عند الأرض النح و کذارواہ أحد مد والدرامی وابوداو دوغیر ہم ۲ ا (اصلاح الدین)

مقام پر فرمایالانی بعدی، اگر کوئی تحریف اور دجل وتلبیس کر بے تواس کا تو کوئی علاج نہیں۔ ایک متنبی خبیث فیروت کی نوت پر لانہ ہے بعدی نے نبوت کا دعوی کی کیا اور دعوی سے قبل ہی وہ خودکو' لا' کا لقب دے چکا تھا اور اپنی نبوت پر لانہ ہے بعدی سے استدلال کرتے ہوئے کہتا تھا کہ ''لانہ بی بعدی 'کامعتی ہے کہ' لا' میر بے بعد پیغیر ہوگا۔ مرزاغلام احمد تعین بھی کچھاس تم کی تحریف کے بیات احادیث احمد میں آپ میں ہے کہ تا تھا کہ اور بل تعریف کی جی سے البتدا حادیث میں آپ میں ہے گئی ہیں۔

(۲) حدّثنا محمّدبن ظريف الكوفيّ ثنا أبوبكر بن عيّاش عن عاصم عن أبي وائل عن حذيفة قال لقيت النبيّ عَلَيْكُ في بعض طرق المدينة فقال أنامحمّد وأنانبيّ الرحمة ونبيّ التوبة وأنالمقفيّ وأنا الحاشرونبيّ الملاحم(١).

ترجمه: حضرت حذیفه بن الیمان کتے ہیں کہ میں نبی کریم اللہ کے ساتھ مدیند کی ایک گلی اللہ کا تعدید بندگی ایک گلی (۲) میں ملاتو آپ اللہ کے خرمایا کہ میں محمد ہوں اور میں احمد ہوں میں نبی الرحمة ہوں، میں نبی التوبہ ہوں، میں مقتلی ہوں میں حاشر ہوں اور میں نبی الملاحم ہوں

نبى الموحمة، كامعى رحمت والاني، نبى التوبة (٣) توبوالاني، مقفى بيتيها كرف والا، مُقفى بيتيها كرف والا، مُقفى بيتيما كيابوا، حاشر جمع كرف والا، نبى الملاحم جنگول والانبي

رحمة كائنات:أنامحمد،آپ الله في المراكمة بول احمد بول اور ني الرحمة بول، رحمت بون كرجمة كائنات:أنامحمد،آپ الله في بين قرآن مجيد من عومار سلنك إلاّرحمة للعلمين. (۱)مصنف ابن ابى شيبة ۱ ۱ / ۲۵۸ مجمع الزوائد ۲۸۳ / ۸۸ مسنداحمد ۵/۵ ، ۱۰ مالحلية الاولياء لابى نعيم ۹/۵ و رمختان

(۲) اس مديث كوابوقيم في معرف من الله المن معود سطرق المدنيكى بجائف مستخة من المدنيك بجائف مستخة من السكك المدينة كفظ سر روايت كيا بهاس لئر تمة المركل كالفظ فركيا به (اصلاح الدين) (٣) الماعلى قارئ في توب كي تين اركان كه بير واركان التوبة على ماقاله العلماء ثلاثة الندم والقلع والعزم على ان لا يعودو لا اجد جعل الاستغفار اللساني شرطاً للتوبة نعم للتوبة باعتبار تعلقها بحقوق العبادو بعض حقوق الله شروط (جمع الوسائل ٢٢٧/٢)

آپ آلی می مالموں کیلئے رحمت ہیں بینی مسلمانوں کیلئے ، کفار کیلئے یہود ونصاری کیلئے حتی کہ جانوروں اور نیا تات، ممس وقمر اور ساوات وارضین کیلئے بھی آ ہے تالیقہ رحمت ہیں۔ اس سلسلے میں علاء نے مستقل کتابیر کھی ہیں مثلاً قاضی سلیمان منصور بوری کی تین جلدوں کی کتاب ' رحمة للعالمین' 'اسی موضوع مرکھی گئی ہے۔اسی طرح"نہے، البو حیمة" تین جلدوں میں مولا ناابوالحن علی ندوی صاحبؓ نے ککھی ہے نیز مفسرین نے بھی اس صفت کی عجیب عجیب تفصیلات بیان کی ہیں۔آپ ایسے کا فروں کیلئے رشدو مدایت ہونے کے علاوہ اس لحاظ ہے بھی رحمت ہیں کہ انکوخسف سنح اور دیگرعمومی عذابوں ہے آپ انگھ کے طفیل امن ملا بلي مسلمة كيلي تو آ يالية رحت كامل بير جن كيلي قرآن مجيد ن آسيالية كامنصب آیتیں بیڑھ بیڑھ کرسناتے ہیں اورانکو پاک کرتے ہیں اورانکو کتاب اور دانشمندی کی باتیں سکھلاتے ہیں۔ نيز فرماياو بالمؤمنين رؤف الرحيم (توبة: ١٢٨) اورايما ندارول كيماته براي شفق ومهربان بال توبدك قيقي راست: بهر حال آپيالله كي صفت رحت تمام عالم خصوصاً تمام بني نوع انسان كيليّ ا یک مسلم بات ہے۔ انانبی التوبة ،مطلب بہ ہے کہ میں نے توبہ کے دروازے کھول دیئے۔جواگر چہ تمجی بندنہ تھے لیکن تحریف وتاویل کرنے والوں نے غلط نظریات اور مذموم مقاصد سے اس کو بندپیش کیا عیسائیوں نے اسے بند مجھ کر گنا ہوں کے کفارے کی ضرورت پر زور دیا۔اوراسی وجہ سے عیسی کا کولطور کفارہ مصلوب مانا۔ اوربعض مذاہب والوں کے ہاں تو سرے سے گنا بگار کیلئے معافی نہیں ہے۔ آ ہے اللہ نے تو یہ کے حقیقی راستوں کو پھرسے زندہ کردیا کہ اگراللہ تعالیٰ سے معافی مانگی حائے اس کے دربار میں رویا جائے تو اللہ تعالی معاف فرمادےگا۔اللہ تعالیٰ کی ذات سے ماہوی کو کفریتایا۔ آپ اللہ کی بعثت سے قبل لوگوں پر ماہوی کی گھٹا ئیں جھائی رہیں اور جارونا جارلوگ خود کواییز گناہوں کا بڑے ظالمانہ اور راہمانہ طریقوں سے سزادیتے تھے آ ہے ہے اس کا خاتمہ کیا۔علاوہ ازی آ ہے ہے کونی التوبیۃ کہنے کی اور بھی وجوہات ہں مثلاً یہ کہ بعض امتوں کے توبہ کی قبولیت کیلئے قتل نفس وغیرہ سخت شرائط لگائی گئیں لیکن آ پیالیہ کی امت سے سیدھے سادے توبہ کا مطالبہ کیا گیایا ہیے کہ آ پیالیہ اپنی امت کو کثرت سے توبہ کی تعلیم دیتے تھے یا یہ کہ آپ آیٹ خود بکثر ت استغفار فرمایا کرتے تھے نیز آپ آیٹ کی امت کوبھی اللہ تعالیٰ نے تائبین کہا ہے۔

تالع ومتبوع: وانساله مقفی، مقفی اسم مفعول بوتومعنی به بوگا که میں متبوع بوں دوسر راوگ میں متبوع بوں دوسر راوگ میرے بیچھے آرہے ہیں گویا بی نوع انسان کیلئے آپ اللہ کے گفش قدم پر چلنا ضروری ہے اور قیامت تک کوئی اور ایسا شخص نہیں آئے گا جس کا اتباع مطلقاً لازم بواورا گرید لفظ اسم فاعل بوتو پھر معنی به بوگا که میں دوسر سے انبیاء کا اتباع کرنے والا بوں کوئی دوسر اراستہ ایجا دنہیں کیا بلکہ ان کی تعلیم میری تعلیم ہے۔ ارشاد باری تعالی ہے کہ اولئے کا المذین هدی الله فبھلاهم اقتله فرانعام: ۹۰) بیر صرات ایسے تھے جن کو اللہ تعالی نے ہدایت کی تھی سوآ ہے بھی انہی کے طریقہ پر چلئے۔

انبیاء کرام کا سلسلہ ہادبین ومہدیین کا سلسلہ تھا اور آپ اللہ کو اصول دین لیمنی تو حید اور مکارم اخلاق وغیرہ میں ان کی اقتداء کا تھم مل چکا ہے۔ یہ اور بات ہے کہ بعض فروی مسائل میں ادبیان سابقہ سے اختلاف ضرور ہے۔ لیکن اس سے وہ اقتداء مجروح نہیں ہوتا جس کا نبی کریم اللہ وی کررہے ہیں۔ بعض شراح نے مقفی کامعنی پیچھے اور آخر میں آنے والے سے کیا ہے۔ اس طرح بیما قب کا ہم معنی ہوگا جو گزشتہ حدیث میں ذکر ہوچکا ہے۔

جہاد کوزندہ کرنے والے: و انسانہ المملاحم، ملاحم کم کی جن ہے جو کہ شدید جنگ اور آل وقال کو کہتے ہیں بلکہ لام جاء اور میم کے مادے میں شدت اور مضبوطی کا معنی ہوتا ہے جیسے کم یعنی گوشت اور التحام جمعنی از دھام میں بھی یہ معنی ہوتا ہے چونکہ جنگ میں بھی لوگ ایک دوسرے میں گھس جاتے ہیں اسلئے اسے بھی ملحمہ کہتے ہیں یا اس لئے کہ اس میں لیم لیخی گوشت گرتار ہتا ہے اسے ملحمہ کہتے ہیں۔ اس میں نبی کریم اللہ اپنی ایک اور صفت لیعنی جہاد کی علمبر داری کو اشارہ فرمارہے ہیں اور اس بات پر تنم یہ ہے کہ میرے دین میں جہاد بھی وعوت کے دوش بدوش کا رفر ما ہے۔ مجر درجمت ورافتہ نہیں بلکہ میں مجاہد ہوں اب میرے دین میں جہاد بھی وعوت کے دوش بدوش کا رفر ما ہے۔ مجر درجمت ورافتہ نہیں بلکہ میں مجاہد ہوں اب باطل کے مقابلے میں تلوار سے دین حق کا تحفظ کیا جائے گا۔ آپ آلی تھی سے پہلے حضرت میسلی " کے خہ ہب باطل کے مقابلے میں تلوار سے دین حق کا تحفظ کیا جائے گا۔ آپ آلی گال پر مارے واس ظلم کا بدلہ نہ لو بلکہ دوسر ارخ

بھی اس کے سامنے پھیردو۔دورجد ید میں گا ندھی ازم بھی اہنساء کاعلمبرداررہا۔جوہندی کالفظ ہے اوراس کا معنی عدم تشدد ہے۔ ہندوؤں میں بیددراصل بدھ مت کا اثر تھا۔تو نہ بدھ مت میں جہادتھا نہ گا ندھی ازم میں اور نہ عیسیٰ علیہ السلام کے فرمب میں جہادتھا۔ جہاد کو آپ گانی نے نزندہ کیا۔اور جہاد کا تھم ملنے کے بعد مدنی زندگی کے فقر دورانیہ میں آپ گانی این سعد کی روایت کے مطابق ستائیس مرتبہ بنفس نفیس جہاد پر گئے جباد بر گئے جبا خواتی جہاد جب فرمایا ان کی تعداد ستر تک بتائی گئی ہے چنا نچہ اسی جہاد میں نے اسلام کو حیات جاود انی بخش ۔ آپ گانی نے فرمایا السجھ دو مساح میں السبی یہ وہاد السبی یہ وہاد اللہ عادی رہے وہاد قیامت کے دن تک جاری رہنے والا ہے۔

الله تعالی کی طرف سے آپ آلی کے کوخطاب ہے ماکان لنبی ان یکون له اسوی حتی مستخن فسی الأرض (انفال ۲۷) نبی کے شان کے پیلائق نہیں کہا ہے ہاں قیدی رکھے جب تک وہ زین میں اچھی طرح خوزین کی نہ کرلیں۔

بہرحال اسلام کا بیا یک عظیم اور قابل فخر پہلو ہے کہ تن کے راستے میں قوق کا استعال ہونا چاہئے بیکوئی قابل شرم بات نہیں حتیٰ کہ بیکار قتم کی توجیہات کا سہارالینا پڑے کہ اسلام جارحانہ جنگ نہیں بلکہ دفاعی جنگ کی ترغیب دیتا ہے۔

دراصل جب جسم میں فاسد مادہ زیادہ ہوجائے مریض اس کی وجہ سے مرنے گئے تو اس فاسد مادے کو تکالنا بلکہ بعض اوقات کی خراب عضوکوکا ٹنا بھی ضروری ہوتا ہے اور واضح بات ہے کہ کفر معاشرے میں ناسور کی طرح ہے اس سے بچاؤ اور معاشرے کی تطبیر کیلئے اسلام نشر چلانے کی تعلیم دیتا ہے۔ یہ تو اس صورت میں ہوا کہ کمہ سے شدت کا معنی لیا گیا ہواورا گرملحمہ سے التحام مرادہوتو اس کا معنی اجتماع بھی ہوسکتا ہے اور مطلب یہ ہوگا کہ میں اجتماع بی پینجمرہوں لوگوں کو منتشر نہیں کرتا بلکہ ان کو جمع کرتا ہوں اور نفر توں کے اندھیروں میں محبتوں اور وحدت کا پیغام لایا ہوں۔

حدّثنا اسحاق بن منصور الخ، الى حديث كيلي دوسرى سندلار بيس

(١)الجهاد ماض منذبعتني الله الى ان يقاتل آخراًمتّى الدّجال(ابوداود ١/٠٥ كتاب الجهادباب في الغزومع ائمة الجور) (اصلاح الدين)

### خلاصهباب

اس باب میں نبی اکرم اللہ کے اساء مبارکہ کا ذکر ہے جوویسے قو بہت زیادہ ہیں جیسا کہ باب کی ابتداء میں ہم ذکر کر بچے ہیں لیکن یہاں صرف چنداہم اور ان مخصوص ناموں کا ذکر ہے جو کتب سابقہ میں بھی آ ہے اللہ کا بیت ہیں جو درج ذیل ہیں:

محمد، احمد، ماحي، حاشر، عاقب، نبي الرحمة، نبي التوبة، مقفىٰ "، اور نبي الملاحم.

فصليّ الله تبارك وتعالىٰ على مسمّا ها وسلّم تسليماكثيرا

# ۵۲. باب في عيش النبي عُلَيْكُ م حضوراقد سيالية كي گزاراوقات كابيان

397

اکل وشرب لازمهٔ حیات مگراعتدال اورسادگی:

الله تعالی کی عبادت اور تن شناسی علم و مل کانام ہے لیکن علم و مل کانام ہے لیکن علم و مل کا فرض نبھانے کے لئے بدن کی سلامتی ضروری ہے اور بدن کی سلامتی کی سلامتی ضروری ہے اور بدن کی سلامتی کر رب ہے کہ اس کی بنیادی ضروریات روئی، کپڑ ااورمکان کا خیال رکھا جائے تا کہ وہ تندرست اور مطمئن رہ کر رب کے ساتھ تعلق جوڑ سکے۔اسی وجہ سے بحض بزرگوں کا مقولہ ہے کہ "الا کل من المدین" یعنی کھانا بھی دین ہے۔اللہ تعالی کا ارشاد ہے کہ "کہ لو امن الطیبات و اعملوا صالح آ"پاک چیزیں کھاؤاور نیک مگل کرو۔لیکن جو محض عبادت کیلئے تیاری کے تصور سے کھائے وہ اپنے نفس کو جانوروں کی طرح صرف خورونوش کیلئے وقف نہ کرے بلکہ شریعت کی پابندیوں اور آ داب کے ساتھ کھائے پیئے۔ضرورت سے زائد فقس کے خواہشات کوقا ہو میں رکھے بلکہ کم کھائے پیئے۔ حدیث میں ہے" مین کشور تفکرہ قلّ مطعمه فلّ تفکرہ و قساقلبہ" جو فکر مندر ہتا ہے وہ کم کھا تا ہے اور جوزیادہ کھا تا ہے اس کا شکر کم ہوجا تا ہے اور دل سخت ہوجا تا ہے۔ بالخصوص علم کے حصول کے لئے بھی پیٹ بھر کرکھانا معنر ہے۔

میں شاعر نے کہا ہے کہ

تھی زحکمتی بہ علّت آں کہ پُری از طعام تابینی بہ علّت آں کہ پُری از طعام تابینی بہر حال اس باب میں نبی کریم آلیات کی کم خوری، لباس، مسکن میں سادگی اور اختیاری فقر کا بیان ہے۔ آپ آلیہ متاع دنیا میں انہاک سے کوسوں دورا پنے رب سے تعلق میں مگن رہتے تھے۔

ال عنوان سے ایک اور باب 'باب ماجاء فی خف رسول الله علی ' سے بل لایا گیاتھا وی الله علی ' سے بل لایا گیاتھا وی الله علی کی تقریح بھی گزر چکی ہے البتہ یہ اعتراض ہوتا ہے کہ اس باب کو کرر کیوں لایا گیا ہے۔ بعض شراح نے تو اسے ناتخین کا تصرف قرار دیا ہے اور بعض نے یہ عذر کر دیا ہے کہ زیر نظر باب میں متنوع احادیث لانے سے تکرار کا شبر ذائل ہوجاتا ہے جبکہ بعض شراح نے لکھا ہے کہ مصنف ؓ نے اس موضوع کی

اہمیت واضح کرنے کیلئے قصداً ایسا کیا ہوگا۔اس سلسلے میں بعض دیگرتو جیہات اسی چھوٹے باب کی ابتداء میں ہم پیش کر چکے ہیں۔

(۱) حدّثناقتيبة بن سعيدثناأبوالأحوص عن سماك بن حرب قال سمعت النعمان بن بشير يقول الستُم في طعام وشراب ماشئتم لقدرأيت نبيكم مَالِينِهُ و مايجد من الدقل مايملأبطنه(۱).

ترجمہ: حضرت نعمان بن بشر اپنے ساتھیوں سے کہتے تھے کیاتم دل پسند کھانے پینے میں مصروف نہیں ہو؟ میں نے تمہارے نی اللہ کو کہا تھا یوں کہان کو بے کارفتم کی مجبورین بھی پیٹ بھر کرمیسر نہیں تھیں۔

ماشنتم ماموصولہ ہے یعنی 'بالقدر الذی شنتم ''جتنا کھانا بینا چا ہوکر سکتے ہو۔ ملاعلی قاری گے ہیں کہ مامصدر رہ بھی ہوسکتی ہے یعنی مقدار مشیقہ کم ، دونوں صورتوں میں درحقیقت اپنے ساتھیوں کی شعبیہ مقصود ہے کہ تم دل پند کھانے پینے میں مشغول ہو۔ حالانکہ نی اکر مقالیہ نے نقر کور جے دی تھی (۱)۔

و مایہ حدمن الدقل ، دقل چھوار سے یعنی خشک اور بن اکت کھجور کو کہتے ہیں۔ یہ صدیث باب ادام رسول التعالیہ میں گزر چکی ہے۔ وہیں مزید نشر تے گزر چکی ہے۔

(۱)صحیح مسلم ۲۰۲۱ کتاب الزهدو الرقائق، جامع ترمذی ۱۲/۲ ۵کتاب الزهد باب ماجاء فی معیشة اصحاب النبی ملیله، سنن ابن ماجة ص ۲۰۳۱ ابو اب الذهد باب معیشة ال محمد ملیله مسنداحمد ۲۸/۳ (مختار)

(۲) بعض المل الله سعمروى به جوع وانفسكم بوليمة الفردوس (المواهب اللدنية ص ٢٣٢) مرياور به كيريار نورى وه فرموم به جوع موال كتصيل من ستى كاباعث بن ورندا كرتقويت كاباعث به وهم والمعلم والعمل البيم وورث والممذموم إنّه هو الشبع المثقل الموجب للكسل المانع من تحصيل العلم والعمل وأما الأكل المعين على العبادة فهو مطلوب السيما اذا كان بقصد التقوى على الطاعة (المواهب الدنية ٢٣٢) (مختار)

هوالاالتمروالماء(١).

ترجمہ: حضرت عائشہ میں کہ بیٹک ہم محمد کے گروالے پورا مہینہ آگ جلائے بغیر کر ارلیتے تھے۔ ہمارا کھانا صرف مجوراوریانی ہوتا تھا۔

ائل بیت کی تنگریت ناد کان کتاآل محمد، ان مخففه من المقله ہاصل میں 'اتاکتا" تھا اور آل محمد دور آل محمد مناور کا اللہ مناور کی کا کہ مناور کی کہ مناور کی کا کہ کا کہ مناور کی کا کہ کا کہ

یہاں بیاعتراض ہوسکتا ہے کہ اس حدیث میں نبی کریم اللہ کی کی کی کا بیان نہیں بلکہ گھر والوں کی شکلاتی کا ذکر ہے۔ اس کا جواب سے ہے کہ آل جمہ سے مراد بشمول رسول الشفائی ہم گھر والوں کو خود پر مقدم رکھتا جواب سے ہے کہ بینے اور لباس کے سلسلے میں گھر والوں کو خود پر مقدم رکھتا ہے۔ لہذا واضح بات ہے کہ جب گھر والوں کی بیہ حالت ہے تو نبی کریم آلی کے کہ جب گھر والوں کی بیہ حالت ہے تو نبی کریم آلی کے کہ جب گھر والوں کی بیہ حالت ہے تو نبی کریم آلی کے کہ اس سے بھی ایتر ہوگی۔

نمکث شهرا، یهان ایک مهینے کا ذکر ہے بعض دیگرروایات میں بھی ایک مہینے تک آگ نہ جلنے کا ذکر ہے جبکہ بعض روایات میں پندرہ دن اور بعض میں تین ماہ کا بھی ذکر ہے کہ آپ آگ ہے۔ گھر میں آگ جلنے کی نوبت نہیں آئی۔ شاید بی مختلف مواقع کا بیان ہے جبیا کہ ملاعلی قاریؓ نے بیان کیا ہے۔

پھراس دوران اکثر تو آپ آلیتے اور آپ آلیتے کے گھروالوں کا کھانا تھجور اور پانی کی صورت میں ہوتا تھا۔ بھی بچر وسیوں کی طرف سے دودھ بھی پینے کول جاتا مگروہ پید بھر کرنہیں ہوتا تھا۔

کھانا کھاؤں تو دوسر بےروز بھوکار ہول (۱)۔

فقراختیاری: علامه مناوی کلصے بیں کہ آپ آلیہ کے بعدلوگ چارطرح کے ہوگئے۔اول وہ لوگ جنہوں نے دنیا کو چاہا نہ دنیا نے ان کوجیسے ابو برصد این کہ کہ ان کی زندگی بھی نبی اکرم آلیہ کی طرح فقر میں گزری۔ دوم وہ جنہوں نے دنیا کونہ چاہا گردنیا نے ان کو چاہا جیسے حضرت عمر کہ ان کے زمانہ میں دولت کی فراوانی ہوئی گرانہوں نے زہدسے کام لیا،سوم وہ لوگ جنہوں نے دنیا کوچاہا اور دنیا نے ان کو چاہا جیسے عمر بن عبدالعزیز کے سوااموی اورع باسی خلفاء۔ چہارم وہ لوگ جنہوں نے دنیا کوچاہا گردنیا نے ان کو کونہ چاہا جیسے عمر بن عبدالعزیز کے سوااموی اورع باسی خلفاء۔ چہارم وہ لوگ جنہوں نے دنیا کوچاہا گردنیا نے ان کو کونہ چاہا جیسے دنیا سے عبت کرنے والے فقیرلوگ (۲)۔

(٣) حدثناعبدالله بن ابى زيادثناسيارثناسهل بن اسلم عن يزيد ابن ابى منصور عن أنس عن أبى طلحة قال شكوناالى رسول الله عَلَيْتُ عن المجوع ورفعنا عن بطوننا عن حجر حجر فرفع رسول الله عَلَيْتُ عن بطنه عن حجرين قال أبوعيسى هذاحديث غريب من حديث أبى طلحة لانعرفه إلا من هذاالوجه و معنى قوله ورفعنا عن بطوننا عن حجر حجر كان احدهم يشدُّ في بطنه الحجر من الجهد و الضعف الذي به من الجوع عن .).

ترجمہ: حضرت ابوطلی کہتے ہیں کہ ہم نے نبی اکرم اللہ سے بھوک کی شکایت کی اور کپڑ اہٹا کر پیٹ پر بندھا ہواایک ایک پھردکھایا تو نبی اکرم اللہ نے بیٹ سے کیڑ اہٹا کردو پھردکھائے۔

(۱) عن أبى أمامة عن النبى عَلَيْكُ قال.عرض على ربى ليجعل لى بطحاومكة ذهباً قلت لايارب ولكن أشبع يوماً وأجوع يوماً اوقال ثلاثاً اونحو هذا فاذاجعت تضرّعت اليك وذكرتك فاذاشبعت شكرتك وحمدتك (ترمذى ج٢ ابواب الزهد ص ٩ • ٥ باب ماجاء فى الكفاف والصبر عليه) (اصلاح الدين)
والصبر عليه) (اصلاح الدين)
(۳) جامع ترمذى ٢ / ١ / ١ ۵ كتاب الزهد باب ماجاء فى معيشة اصحاب النبى عَلَيْكُ ، شرح السنة (٣) جامع تومذى كان عيش رسول الله عَلَيْكُ كتاب الرقاق رقم الحديث ٩ ٧ - ١ (مختار)

پیٹ برپھر: توجیہات: رفعناعن بطونناعن حجو حجو، لین ہمنے پیٹ پر بندھا ہوا ایک ایک پتھر دکھایا۔قدیم عرب اور ہاکھوص اہل مدینہ کی عادت تھی کہ بھوک کی شدت میں پیٹ پر پتھر ہا ندھتے تھے ، تا کہ خالی ہونے کی وجہ سے پیٹ لٹکنے نہ یائے۔ نیز پیٹ خالی ہونے کی وجہ سے کمر جھک کرکام کاج میں ر کاوٹ پیدا ہونے کا اندیشہ ہوتا تھا اور بھی بھی ہوا بھر جانے کا احتمال ہوتا ہے نیز انتزیوں کے اتر جانے کا خدشہ ہوتا ہے پھر یا ندھنے سے پیخطرہ بھیٹل جاتا تھا۔

401

علاوہ ازیں پیپے خالی ہونے کی وجہ سے پیپ کی طبعی حرارت اور تندوتیز رطوبات غذانہ پاکر معدے اور آ نتوں کیلئے مضربن جاتا ہے۔ پھر ہا ندھنے سے ایک صدتک ٹھنڈک پیدا ہوجاتی ہے جس کی وجہ سے حرارت اور رطوبات کی حدت کم ہوجاتی ہے۔

صاحب ازبار نے لکھا ہے کہ بیر مدینہ کے بعض پھروں کی خصوصیت تھی جن کو پیٹ کے اویر با ندھنے سے بھوک کی تکلیف ختم ہو جاتی تھی ان کومُشبعہ کہا کرتے تھے لیکن دیگر شراح نے ایسے خاص پچھروں کے وجود سے اٹکار کیا ہے جبکہ بعض شراح نے یہ بھی لکھا ہے کہ پیمض ایک کنابیہ ہے پچھروں کا پیٹ پر باند ھنے سے صبر کا مظاہرہ مقصود ہے جیسے صبر کی تلقین کے دوران کہاجاتا ہے کہ 'اربط علمی قلبک حبجواً '''' ول ير پتجرر كانو'' كوياراوي كامقصد به ہے كه جماري نسبت نبي اكرم پياني كئي جفاكشي اور بھوك كي برداشت بڑھ کرتھی ۔ کیکن امام تر مذیؓ نے اس عمل کوظا ہر برمحمول کیا ہے جبیبا کہ حدیث کے آخر میں وہ خود وضاحت کررہے ہیں اور یہی راج بھی ہے۔

حضورا قدس علیہ کے کو کھو<u>ک کے احساس پراشکال اور جواب:</u> فرفع...عن حجرين، يعني حدیث نے بیا شکال کیا ہے کہ نبی اکر میں ایک کو بھوک کی شدت کا احساس کیسے ہوا۔ حالانکہ جب آپ آپ کی دن تک بغیرافطار کئے مسلسل روزہ رکھ لیتے تھے تو بعض صحابہ نے ان کی تقلید میں ان کی طرح صوم الوصال يممل كرنا جابا\_آب عليه في في ان كونع كرديا ق انهول في عرض كيا كه آب الله خودتو صوم الوصال 

#### يطعمني ويسقيني(١)

اسی وجہ سے علامہ ابن حبال ؓ نے پیٹ کے اوپر پھر بائد صنے والی احادیث کا اٹکار کیا ہے بلکہ یہ بھی کہا ہے کہ کہ ا کہا ہے کہ بیافظ مجر نہیں بلکہ مُجر ہے جو تہہ بند بائد صنے کی جگہ کو کہتے ہیں۔

لیکن محققین نے ان کی رائے کی تصویب نہیں فرمائی کیونکہ آپ اللے کی کیائے بھوک کا ثبوت اور بھوک کی فروت اور بھوک کی وجہ سے تکلیف اور اس تکلیف کا چہرے وغیرہ سے دوسروں کوا حساس ایک دونہیں کئی احادیث سے ثابت ہے۔ جسیا کہ آئندہ حدیث میں اس کی تصریح ہے پھر پھر بائد ھنے اور دو پھر وں کا ذکر بھی روایات میں موجود ہے۔ لہذا بلاضرورت ان تمام روایات کی تاویل نامنا سب ہے۔

جہاں تک رہتی بطعمنی ویسقینی ،والی بات ہے تو وہ روز نے کی مواصلت کی صورت میں ہے لینی جب نبی کریم آلی ہے اللہ ایک ایک ایک ایک مورت میں ہے لینی جب نبی کریم آلی ہے اللہ ایک ایک ایک ایک ایک مورت میں مسلسل بھوک آ ہے آلی ہے کیا تکلیف دہ نہیں رہتی تھی بلکہ رب کی طرف سے کھانا پینا میسر ہوتا تھا۔

بغیرصوم وصال کے آپ اللہ سے بھوک کی نفی خلاف عقل فقل ہے۔ بلکہ بھوک توخود نبی کریم اللہ کا مطلوب تھا جیسے کہ ہم روایت ذکر کر چکے ہیں کہ آپ اللہ نے نفر مایا کہ و لک تن أجوع يو ما و أشبع يو ما ظاہر بات ہے کہ شکر بھی دل سے تب ہی فکل سکتا ہے جب بھوک کے بعد کھ کھایا جائے۔

بعض حفرات نے دیگر جوابات بھی ذکر کئے ہیں مثلاً یہ کہ ابتدائی زمانہ میں آپ اللہ کہ کو بھوک اس موقی تھی آخری زمانہ میں اللہ تعالی نے اس تکلیف سے آپ اللہ کو محفوظ رکھا تھا لیکن اس پر یہ اشکال ہوتا ہے کہ زیر نظر صدیث تو ابو ہر بر اللہ کے ایمان کے بعد کی صدیث ہے اور وہ کھے میں ایمان لائے تھا گرچہ بعض شراح نے بیکھا ہے کہ بیصد بیٹ نقو حات سے قبل کی صدیث ہے کیونکہ فتو حات کے بعد ایسے فاقوں کی نوبت نہیں آئی جیسے کہ حدیث میں ذکر ہے لیکن ملاعلی قاری اور دیگر شراح نے اس پر دو کیا ہے کہ حدیث کے راوی ابو ہر بر الا کا تعلق فتح خیبر کے بعد نبی اکر میں اللہ کے ساتھ قائم ہوا ہے اور بیقرینہ ہے کہ بیوا قعد آخری زمانہ کا ہے۔

(۱) بخاری ج اص۲۲۳

بعض محققین نے یہ جواب بھی دیا ہے کہ بھوک کا اثر نبی اکرم اللے پہنیں ہوتا تھالیکن پھروں کا بائد ہنا امرم اللہ پہنیں ہوتا تھالیکن پھروں کا بائد ہنا امت کی تعلی وقتی اور فقراء و مساکین کے ساتھ تھتبہ اور شرکت کی بناء پر تھا تا کہ امیر کود مکھ کر وہ بھی دلم میں کہ بناء پر تھا تا کہ امیر کود مکھ کر وہ بھی اور اس کے معلوم ہوتی ہے کیونکہ پھروں کا واقعہ غز وہ خند ق کا ہے اور اس غزوہ خند ق کے موقع پر حضرت جابر ہے ہیں کہ دایت بالسبب عَلَیْ ہے مصا شدیداً جس کی وجہ سے خوہ وہ خند ق کے موقع پر حضرت جابر ہے ہیں کہ دایت بالسبب عَلیْ اللہ حصا شدیداً جس کی وجہ سے انہوں نے حضورا قدس قلیلہ کی وعوت کا انظام کیا اور تھوڑے سے کھانے پر آپ پھیلیہ ایک ہزار صحابہ کو لے کر گئے (ا)۔

(٣) حدّثنامحمّدبن اسمعيل ثناادم بن أبي اياس ثناشيبان أبومعاوية ثنا عبدالمملك بن عمير عن أبي سلمة بن عبدالرحمٰن عن أبي هريرة قال خرج النبي عليه في ساعة لايخرج فيها ولايلقاه فيهااحد فاتاه أبوبكر فقال ماجاء بك يا ابابكر فقال خرجت القي رسول الله عليه فلم يلبث ان جاء عمر فقال ماجاء بك ياعمر قال الجوع يارسول الله فقال النبي عليه في وجهه والتسليم عليه فلم يلبث ان جاء عمر فقال ماجاء بك ياعمر قال الجوع يارسول الله فقال النبي عليه وانقد وجدت بعض ذلك فانطلقواالي منزل أبي الهيثم بن التيهان الانصاري وكان رجلا كثير المنخل والشجروالشاء ولم يكن له حدم فلم يجدوه فقالوالامرأته اين صاحبك فقالت انطلق يستعذب لنا الماء فلم يلبثو ان جاء ابوالهيثم بقربة يزعبها فوضعها ثم جاء يلتزم النبي عليه في فيه يفديه بابيه وأمه ثم انطلق الي حديقته فبسط لهم بساطاً ثم انطلق الي النخلة فجاء بقنو فوضع فقال النبي عليه أفلاتنقيت لنا من رطبه فقال يا رسول الله عليه إلى الماء فقال النبي عليه والذي نفسي بيده واكواو شربوامن ذلك الماء فقال النبي عليه فاكلواو شربوامن ذلك الماء فقال النبي عليه فاكلواو شربوامن ذلك الماء فقال النبي عليه فلا والذي نفسي بيده

----(۱)بخاری شریف ج۲ص ۵۸۹

من السعيم الذي تسئلون عنه يوم القيامة ظلَّ باردٌ ورطبٌ طيّب و ماءٌ باردفانطلق أبالهيثم ليصنع لهم طعاماً فقال النبيّ عَلَيْكُ لاتذبحنّ لنا ذات در فذبح لهم عناقاً اوجدياً فاتاهم بها فاكلوافقال النبي عليه هل لك خادمٌ قال لاقال فاذااتاناسبي فاتنا فاتى النبي عُلَيْهُ برأسين ليس معهما ثالث فاتاه ابو الهيثم فقال النبي عُلَيْكُ احتر منهما فقال يانبي الله اختر لى فقال النبي مُلْكُ إِنَّ المستشار مؤتمن خذ هذا فإنَّى رأيته يصلى واستوص به معروفا فانطلق أبوالهيثم إلى امرأته فاخبرها بقول رسول الله عَلَيْكُ فَقالت امرأته ماانت ببالغ مال فيه النّبيّ عَلَيْكُ إلاّ ان تعتقه قال فهو عتيق فقال النّبيّ عُلَّا الله تعالى لم يبعث نبيًا و لاخليفة إلا وله بطانتان بطانة تأمره بالمعروف وتنهاه عن المنكر وبطانةً لاتألو خيالا ومن يوق بطانةً السُّوء فقدو قي (١).

404

ترجمہ: حضرت ابو ہریرہ سے روایت ہے کہ نبی کریم اللہ ایک مرتبہ گھرسے ایسے وقت نکلے جس میں عموماً وہ گھر سے نہیں نکلتے تھے نہ کوئی شخص آ ہے ایک سے اس وقت ملاقات کرنے آتا تھا ایسے میں ابو بکر صدیق بھی تشریف لائے آپ ایسی نے ابو بکڑ سے بوچھا کہ تیرے آنے کا سبب کیا ہے وہ بولے کہ (بھوک نے ستایاتو)رسول التُعَلِينَةِ كَي ملا قات، رخ انور يرنظر والناور سلام عرض كرن كيلي فكل آيا - تعورى در گزری تھی کہ حضرت عربی حاضر ہوئے حضورا قدس علیہ نے یو جھاتم کیوں آئے اے عمر؟ انہوں نے عرض کیا یارسول التُعلِيق بھوک لکی تھی (سوچا کہ دیدار سے مٹاؤں) نی اکر میلی نے فرمایا کہ جھے بھی کچھ بھوک محسوس ہور ہی ہے۔اس کے بعد

(۱) سنن أبي داؤد ١/٢ ا ٣٥ كتاب الإدب باب المشورة، جامع ترمذي ٢/٢ ا ٥ كتاب الزهد باب مساجساء في مسعيشة اصحساب النبي عَلَيْكُم، سنين ابين مساجة ص٢٢ كتساب الادب بساب المستشار مؤتمن (مختار) 405

نتیوں حضرت ابواہیٹم بن التیمان انصاریؓ کے مکان پرتشریف لے گئے۔وہ تھجور کے درختق اورمویثی کے مالک (دولتمند صحالی) تھے لیکن (چونکہ) خادم ان کا کوئی نہیں تھا اس لئے انہوں ان کو گھر برنہیں مایا۔ انہوں نے اس کی بیوی سے دریافت کیا کہ تیراخاوند کہاں ہے؟ وہ بولیں کہ وہ تو میٹھایانی لانے کیلئے گئے ہیں۔زیادہ وقت نہیں گزراتھا کہ ابوالہینٹٹ (بھاری) مثک بدقت اٹھائے ہوئے گھرآ گئے ۔مشکیزہ رکھا پھر آ کرنی اکر میلی سے لیٹ گئے اور ان بر ماں باب شار کرنے لگے۔اس کے بعدان سب کواینے باغ میں لے یلے۔ پچھونا بچھا کران کو بٹھایا۔ اور کھجور کے ایک درخت کی طرف گئے اس سے ایک خوشہ لا کر (مہمانوں کے سامنے ) رکھ دیا۔ (یہ دیکھ کر) نی ا کرم آلیہ نے فرمایا کہتم نے (درخت کے اوپر ہی سے ) ہارے لئے کی مجبوریں کیوں نہیں چنیں۔انہوں نے عرض کیا کہ میراخیال تھا کہتم لوگ خود ہی پختہ یا نیم پختہ (من پیند) تھجوریں چن لو (تواجیما ہوگا)انہوں نے تھجوریں کھائیں۔ یانی بیا تو نی اکریم اللہ نے فرمایا اس رب کی نتم جس کے قبضے میں میری جان ہے۔ بنعمتیں ان نعتوں میں سے میں جن کے بارے میں قیامت کے روزتم سے سوال کیاجائے كاربي تفندًا سابيريي فيض مجوراوربي تفندًا يانى تسئلن يومئد عن النعيم (الآية) بعدازاں ابولھیٹم مہمانوں کیلئے کھانا تیار کرنے جانے لگےتو نی اکر مہالیہ نے فرمایا کہ ہمارے لئے دود ھ دینے والا جانور ذیج نہ کرنا (بین کر)انہوں نے بکری کا یک ماده یانر بچه ذرج کیااور (یکاکر) لے آیا۔ نتیوں مہمانوں نے اسے تناول فرمایا۔ پرنی اکرم اللہ نے یوچھا کہ کیا تیراکوئی خادم (غلام یا کنیز) ہے عرض کیانہیں۔ آ ہے اللہ نے فرمایا کہ جب ہمارے پاس جنگی قیدی آ جا ئیں تو تم میرے پاس (اپنی حاجت یاد دلانے کیلئے) آجانااس کے بعد نبی اکر میافتہ کے پاس دوغلام لائے گئے جن کے ساتھ تیسر انہیں تھا (صرف دو تھے) تو ابواہیٹم ان کے پاس آئے۔ نبی 406

و لایسلقاہ فیہ احد، لینی عاد تا اس وقت میں آپ آگئے سے کی کی ملاقات نہیں ہوتی تھی پینیں کہ آپ آگئے سے کی کی ملاقات کی جرات کہ آپ آگئے نے ملاقات کی جرات وقت میں شیخین آپ آگئے کی ملاقات کی جرات کی جرات کی کرکرتے عموماً گرمی کے موسم میں دو پہر کے وقت دوسروں سے ملاقات عاد تا نہیں ہوتی ۔ بس اس کا ذکر ہے۔

شیخین کی تنگری فقال خوجت القی الخ الیمی الفی پالعلّی القی القی اورو التسلیم علیه فعل کی تفدیر کے ساتھ القی پرعطف ہے مینی و اتشو ف بالتسلیم علیه مطلب یہ ہے کہ میں اس وقت گھر سے لکلا ہوں اس بناء پر کہ شاید نبی اکر م اللّی ہے ملاقات ان کی دیدار اور ان پر سلام کا شرف حاصل ہوجائے۔ شراح کہتے ہیں کہ ابو بکر صد ان کو بھی بھوک ہی نے ستایا تھا۔ گران کی بھوک ملاقات محبوب سے

مث جاتی تھی اوراس وجہ سے انہوں نے یہ جیر فرمائی۔ ادھر دوقالب یک جان کے مصداق نبی اکرم اللہ کو کو کو کے اسے عذا کی ضرورت ہے۔ چنا نچر آپ اللہ نے کہ نور نبوت سے بیعلم ہوا کہ صدیق کو بھوک نے ستایا ہے اسے غذا کی ضرورت ہے۔ چنا نچر آپ اللہ نے کھر سے باہر نکل کران کا استقبال کیا چرحسن ادب کا تقاضا تھا کہ صدیق نے بھوک کی شکایت تو نہیں کی المبہۃ تحدیث بالنعمۃ کے طور برحضورا قدس مالی ہے۔ ملاقات برمسر سے کا ظہار فرمایا۔

فلم يلبث ان جاء عمر بيلبث كالممير نبي كريم الله كويا ابو بمرصد بن كورا جع بـ يين تعور ي در بعد حضرت عم تشريف لائے۔

قال المجوع یا رسول الله، نی اکرم الله کاستفسار پرانہوں نے کہد یا کہ بھوک کی دجہ سے آپ آلیات کے باس آیا ہوں۔ حضرت عمر کی مرادیمی بالکل وہی تھی جوصد این اکبر کی تھی یعنی بھوک نے ستایا تو آیا تا کہ رخ انور کے دیدار سے بھوک مث جائے۔البتہ انہوں نے اصل سبب کا ذکر کیا کیونکہ ظاہر ہے کہ حضرت عمر کے یاس جب کچھ کھانے کوئیس تھا تو نی اکرم آلیت کے یاس کھانے کا موجود ہونا عاد تا اجید تھا۔

وأناقدو جدت بعض ذلک، لین جھے بھی بھوک کی ہے۔ اس سے معلوم ہوتا ہے کہ نبی اکرم آلیہ کو کبوک کی ہے۔ اس سے معلوم ہوتا ہے کہ نبی اکرم آلیہ کو بھوک لگنااور طبعی طور پراس کا تکلیف دہ ہونا مستبعد نہیں اور رب کی طرف سے خورونوش ملنے کے باوجود آپ آلیہ کو بعض مواقع پراس کا شدیدا حساس بھی ہوتا تھا مگر ہم پہلے عرض کر پچکے ہیں کہ یہ سب پچھ اختیاری تھا اور شیخین بھی اسی طرز کو بالاختیار اپنائے ہوئے تھے۔ پھر نبی اکرم آلیہ نے نشخین پر ترحم فرماتے ہوئے ان کے کھانے کا انتظام فرمایا۔

 نے عیسائی نہ ہب کےمطابق رھبانیت اختیار کی تھی۔اسلام قبول کرنے کے بعد اسے خیریا دکہا۔

نبی اکرم آلیہ نے ان کے اور حضرت عثمان بن مظعونؓ کے درمیان مواخات قائم کی تھی۔غزوہُ بدر اور اس کے بعد تمام غز وات میں شریک رہے۔ آپ کی روایات کم بیں بلکہ علامہ این حجر ؓنے ان سے مروی صرف دوروایات کی نشاند ہی کی ہےاوران پر بھی سنداً کلام کی طرف اشارہ کیا ہے۔اس کی بڑی وجہ بیہ ہے کہ آپ قدیم الوفات صحابہ میں سے ہیں۔اکثر مؤرخین کے ہاں آپٹے ۲جے میں وفات یائے تھے۔ بعض نے ۲۷ جا بھی ذکر کیا ہے جبکہ بعض نے کہا ہے کہ وہ نبی اکر میں اللہ کی زندگی میں وفات یائے تھے لیکن ۲۰ جے یا را ۲ چکا قول را جح معلوم ہوتا ہے۔

408

نبی اکرم آلیہ کے ساتھ آپٹ کی محبت کا اندازہ زیرنظر صدیث سے تو ہوہی جاتا ہے کین ایک شعرمیں آپ نے اینے دل کی ترجمانی یوں کی ہے

لقدجدعت آذاننا وانوفنا غداة فبجعنا بالنبي محمد عاسه

یعنی جس روز ہمیں میں اللہ کی فراق کا صدمہ پہنچے اسی روز ہم اپنی کا نوں اور ناک سے محروم ہوجا ئیں۔

فانط لقواالى منزل أبى الهيشم بن التيهان بيض ديگرروايات يس الوالوب انسارى(١)

کا ذکر ہے۔علامہ مناویؓ نے کھا ہے کہ نبی اکرم اللہ ابتداؤ کسی خاص شخص کے پاس جانے کیلئے نہیں نکلے تھے بلکہ تو کل کرے گھرسے نکے اورا تفا قا ابوالہیٹم کے باغ کارخ کیار سعادت انہی کیلئے مقدرتھی۔

وكان رجلاً كثير النخل والشاه الغ، شاء شاء ألى جمع بجس كي اصل شاهة بـــاسكي جع شیاہ بھی آتی ہے یعنی وہ تھجور کے بہت سے درختوں اور بہت سے مویثی کے مالک تھے البتدان کے پاس خادم بعنی غلام اور کنیز کوئی نہیں تھا۔ کا م کاج خود کرنا پڑتا تھا۔

(١)وفي رواية عندالطبراني وابن حبان في صحيحه أبي أيوب أنصاري فالقضية متعددة. وفي رواية لـمسـلـم رجلاً مـن الأنصار وهي محتمله لهما وعلى كل ففيه منقبة عظيمة لكل منهما اذأهّله عَلَيْتُهُ لذلك ١ جمع الوسائل ج٢ ص٢٣٧ (اصلاح الدين) اورشیخین کوبن بلائے گھر میں پایا تو بڑی سعادت سجھ کران کا استقبال کیا ہے

وہ آئے گھر میں ہارے خدا کی قدرت ہے تجھی ہم ان کو بھی اپنے گھر کود کیھتے ہیں ا پھر شوہر کے ہارے میں بتایا۔وہ بھی تھوڑی ہی دیر بعد گھر آگیا۔

زعب کا مطلب: جاء بقربة یزعبها، زعب یزعب باب فتے سے باس کے متعدد معانی منقول بیں ۔ اول یہ کرز عب القربة کا معنی ہے ملا القربة لیعنی مثل کجرنا۔ دوم یہ جرے ہوئے مثل کواٹھانے کے معنی عیں مستعمل ہے۔ سوم بعض حضرات جیسے صاحب نہا یہ نے یہ معنی کھی کہا ہے کہ زعب ٹھیک اور مضبوطی سے تھام کر اٹھانے کو کہتے ہیں لیکن صحاح وغیرہ میں اس کا معنی سیلاب کیلئے بولا جاتا ہے جووادی کے کناروں سے تکراتا ہوئے چلے عموماً پانی سے جراہوا ہوا ہوا ہوا ہوا ہوائی استجالنا مشکل ہوتا ہے اور اٹھاتے ہوئے ادھرادھر جھکے گئتے ہیں۔ اس کوزعب کہتے ہیں گویا ہوا ابھاری مشک اٹھائے ہوئے۔

ابوالهیشم کی مهمان نوازی: حضرت ابوالهیشم گر آئے۔ویف قدیمه النج، یعنی حضور اقد س می الله کود کیر لپیٹ گئے اور فداک ابی وای (میرے ماں باپ آپ می الله پر قربان ہوں) کہنے گئے۔

الے حدیقت دری، حدیقہ اسباغ کو کہتے ہیں جن کی جارد یواری تعمیر کی گئی ہولیکن توسعاً بغیر جارد یواری والے پر بھی بولا جاتا ہے۔

(۱) اس روایت سے معلوم ہوا کہ اگرفتہ کا خوف نہ ہوتو اجنبی مردول کا اجنبی عورت سے پردہ کے پیچے گفتگو لینی سوال وجواب کرنا جائز ہے کہ ماقال العلامة بیجوری یؤخذ منه حل تکلم الأجنبیة وسماع کلامها مع أمن الفتنة وان وقعت فیه مراجعة ثمّ انّا هذه المرأة تلقتهم احسن تلقی وانزلتهم اکرم الانزال وفعلت مایسلیق بذلک الجناب الافخم والملاذ الأاعظم یؤخذ منه جوازاذن المرأة فی دخول منزل زوجها اذاعلمت رضاه وجوازدخول المضیف منزل الشخص باذن زوجته مع علم رضاه حیث لاخلوة محرمة (المواهب اللغیة ۲۳۵) (مختار)

(٢) اس روایت سے بی جم معلوم ہوا کہ مہمان کی ضافت احسن اور بہتر کھانے سے کرنی چاہئے۔ویدؤ خذ من الحدیث اُنّه ینبغی للمضیف ان یقدم إلیٰ الضیف أحسن ماعنده (المواهب الدنیة ٢٣٥) (مختار) افلاتنقیت لنامن رطبه، لیخی تم نے ساراخوشہ تو رُکر پیش کردیااب ہم کچھ کھالیں گے لیکن باقی ضائع ہوجائے گا۔اس کی بجائے صرف پختہ کھجوریں پُن کر ہمیں لادیتے تو اچھا ہوتا۔

اردت ان تختارو ااو تخیروا، راوی کوشک ہے معنی دونوں کا ایک ہے تخیر وااصل میں تخیر وا تفاطه مضارع تخفیفاً حذف ہو چکی ہے۔ مطلب بیہ ہے کہ میں نے سوچا کہ مہمان حضرات اپنی مرض سے چن چن کرکھا کیں تو بہتر ہے ممکن ہے کسی کو پختہ، کسی کو پختہ اور کسی کو خشک تھجور پہند ہوں۔ اب جب سارا خوشہ سامنے پڑا ہے تو من پہند لے لیں۔ اس عمل میں اس بات کی طرف اشارہ ہے کہ میز بان کھا نا لانے سے قبل کچھالی چیز مہمان کے سامنے پیش کرد ہے جو بصورت بھوک اس کی بھوک کو کم کرد ہے جیسا کہ عموماً ہماں ہے کہ عمیر اس کی جو کہ کرد ہے جیسا کہ عموماً میں سے کہ عمر ہمان کی تواضع کی جاتی ہے لیکن میٹھی چیز سے اورخصوصاً کھل سے کو عموماً سے بہتر ہے کیونکہ بیز دوہ مضم ہوتا ہے۔

من النعيم الذى تسئلون، يعنى جب مجور كها كر شندًا پانى پياتو آپ الله فرمايا كريرجو كهم ملايروه نعتين بين جن كي بارے ميں پوچها جائيگا جيسا كرسورة الحكاثر ميں الله تعالى فرماتے بين فرسات بين حساب و حوامها لتسئلن يومئذ عن النعيم، ني اكرم الله اكراور حديث ميں فرماتے بين حلالها حساب و حوامها عقاب " يعنى حلال مال كرساب اور حرام كے عقاب كا سامنا كرنا ہوگا۔ يہاں حلال مال ہے كين اس كا محساب ہوگا كہاں سے كما يا اور كہاں صرف كيا۔

ظل بار دورطب طیب و ماء بارد، به یا تو بذا کیلئے خبر ان ہے یا مبتدامقدر کیلئے خبر ہے ابن جُرِّ نے اسے مبتداء یعنی بذاسے بدل قرار دیا ہے کین ملاعلی قاریؒ نے اسے درست قرار دینے سے انکار کیا ہے۔

کھجور طعام ہے فاکھة: فانطلق أبو الهیشم لیضع لهم طعاما اس جملے سے شوافع نے اس بات پر استدلال کیا ہے کہ مجور طعام نہیں بلکہ فاکھ ہے کوئکہ یہاں مجور کھانے کے بعد کہا گیا ہے کہ ابوالہیشم کھانا تیار کرنے کیلئے جانے گے مگرخود ملاعصام نے اس پر اعتراض کیا ہے کہ دلیل درست نہیں۔ اس حدیث سے زیادہ سے نیادہ بیٹا ہو سے کی فی پر صدیث سے زیادہ سے نیادہ بیٹا ہو سے کی فی پر صدیث دلالت نہیں کرتی۔ امام ابو حذیق کے ہاں مجور قاکھ یعنی پھل نہیں بلکہ غذا ہے دلیل قرآن مجید کی صدیث دلالت نہیں کرتی۔ امام ابو حذیق کے ہاں مجور قاکھ یعنی پھل نہیں بلکہ غذا ہے دلیل قرآن مجید کی تحدیث دلالت نہیں کرتی۔ امام ابو حذیقہ کے ہاں مجور فاکھ یعنی پھل نہیں بلکہ غذا ہے دلیل قرآن مجید کی آ یت فیصاف کیا گیا ہے اور یہ مغائر ت کا آ یت فیصافاکھ قو ن خل و رمّان (الآیة) ہے کیونگر کھورکوفاکھ پر عطف کیا گیا ہے اور یہ مغائر ت کا

مقتضى بتفصيل فقداوراصول فقه كى كتابون مين آپ يراه ييك بين-

دودهوالے چانورکی ذریج: لاتـذبحن لنا ذات در در دوده کوکهاجا تا بودوده والے جانورکوذیح کرنے سے نبی اکرم اللہ نے منع فرمایا اس نبی سے ایسے جانور کے گوشت کوحرام یا مکروہ ثابت نہیں کیا جاسکتا کیونکہ بیرنہی صرف ارشاد اور شفقت برمبنی ہے بعنی جب ذبح کیلئے اور جانور بھی موجود ہیں کیونکہ میز بان' کثیرالثاه'' ہے تو دودھ والی بکری کا ذبح کرنا تکلف باردہ بلکہ مال کوضائع کرنے کے مترادف ہوگا۔اب اگر کسی نے مہمان کیلئے دودھ دینے والا جانور ہی ذیح کردیا تو بالا تفاق اس کا کھانا جائز ہوگا۔ ف ذبح لهم عناقاً او جدياً برى كے مادہ يح كاجو جار ماه كوبوعنات اوراس عمر كرز يح كوجدى كہاجاتا ہے۔ بعض الل لقت کے ہاں سال سے کم بکری کے نیچے کوعنات اور جدی کہا جاتا ہے۔

411

هل لک خدادم ، نی اکرمهای نے غلام کونہ یا کربھی بیسوال اس لئے کیا کھکن ہے کہ غلام یا كنيزتو بوليكناس وقت حاضر ندهو\_

فاذااتاناسبي جنك مين قيري بنغ والول كاعموماً استرقاق كياجا تاتها راس لئر بيفرمايا كه جب ہارے ماس قیدی بصورت غلام اور کنیز کے آئیں تو مجھے یا دولا ناتا کہ گھر کی خدمت کیلئے کوئی غلام یا کنیز و بے دول ب

المستشار موتمن العني مشوره طلب كرنے والے نے متشار بر مشوره ا<u>مانت ہے:</u> اعتاد کرکے اس سے مشورہ طلب کیا اوراس برعمل کرنے کا ارادہ کیا گویا اس نے اپنے اختیار کواس کے ہاں امانت رکھ دیا۔ اب وہ ٹھیک اور مسلحت کے موافق مشورہ دے گا تو امانت بوری طرح اداہوگی اورا گرقصداً خلاف مصلحت مشورہ دے گا تو اس نے گویا مشورہ طلب کرنے والے کے ساتھ خیانت کامعاملہ کیا۔ حدیث کا پیقطعہ کی صحابہ سے مروی ہےاورتقریباً تواتر کے درجہ میں ہے۔

معيارافضليت: خُدهداف أنسى دايت يصلى (١) خادم كانتخاب من بي اكرم الله في في أماز (۱)علامه بیجوریؓ نے اس سے دوم ماکل کا استماط کیا ہے(۱) پیؤ خیذ مینہ أنّه پستدل علی خیریة الانسان بصلاته قال تعالى إنّ الصلوة تنهي عن الفحشاء والمنكر (٢) يؤخذ ايضاً انّه ينبغي للمستشار ان يبيّن سبب اشارت بأحد الامرين ليكون اعون للمستشير على الامتشال (المواهب ٢٣٧) (مختار) کومعیار تھہرایا ہے۔افسوس ہے کہ آج نماز کو ایک عیب کی نظر سے دیکھا جارہا ہے۔ ہمارے ایوانوں میں نماز یوں کوقد امت پندہ رجعت پند اور دقیا نوی خیال کیا جاتا ہے جبکہ تارک صلوۃ وصوم کومعز زگر دانا جاتا ہے جبکہ تارک صلوۃ وصوم کومعز زگر دانا جاتا ہے لوگ انتخابات میں بھی اس کا خیال نہیں رکھتے۔ غنڈوں ، کر پٹ ، بدکر دار اور چوروں کو ووٹ دے کر آگے لے آتے ہیں اور پھر نتیجہ سامنے ہے کہ ان کم بختوں کے پیٹ کا جہنم بھرتے نہیں بھرتا۔ دفتر وں میں بہی حال ہے داڑھی والے ملازموں اور نمازی افسروں کوٹھکا نانہیں ملتا۔ دفتر سے اس کو بھگا دیا جاتا ہے۔ اس سے دوسرے دفتر کو فارغ کر دیا جاتا ہے کیونکہ وہ نماز پڑھتا ہے۔ حالا نکہ نبی اکرم افسیہ کے ہاں ملازمت کی معیار نماز ہونا ہے۔

412

وصیت اور قبول وصیت: واستوص به معروف اس جملے کے دومطلب بیان کئے جاتے ہیں۔ اور آبول وصیت کامنی یہ ہوگا کہ اس غلام کو خیر کی وصیت کرنا، بھلائی کا حکم دینا۔ دوم یہ کہ استیصاء کا معنی طلب وصیت اور قبول وصیت ہو۔ پھر مطلب یہ ہوگا کہ اس غلام کے بارے میں میری طرف سے شفقت اور خیر خواجی کی وصیت قبول کر لوموخر الذکر احتمال کو ملاعلی قاریؓ نے اظہر کہا ہے۔

ماانت ببالغ فیه النح نیک دل بیوی نے شوہرکومشورہ دیا کہ اگر چہ گھر میں انتہائی ضرورت ہے گھر جی انتہائی ضرورت ہے گر جب رسول اللّٰهِ اللهِ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ الللّٰمِ اللّٰهُ اللّٰمِ اللّٰهِ اللّٰمِ اللّٰهِ الللّٰمِ اللّٰمِ اللّٰمِ اللّٰمِ اللّٰمِ الللّٰمِ الللّٰمِ الللّٰمِ اللّٰمِ اللّٰمِ اللّٰمِ اللّٰمِ اللّٰمِ الللّٰمِ الللّٰمِ اللّٰمِ اللّٰمِ الللّٰمِ اللّٰمِ اللّٰمِ اللّٰمِ اللّٰمِ اللّٰمِ الللّٰمِ الللّٰمِ الللّٰمِ الللّٰمِ اللّٰمِ اللّٰمِلْمِ اللّٰمِ اللّٰمِ اللّٰمِ اللّٰمِ الل

اچھی ہوی دنیا کی بڑی نعمت:

إن الله لم يبعث نبياو لا خليفة الاوله بطانتان اور جب
ني كيلئ اوراس كے خليفہ كيلئ بط انتان كولازم لم إيا تو اولياء، علماء، امراءاور عوام كے لئے تو بطريق اولى به
بطانتان ہو نگے ـ بطانہ ظہارہ كی ضد ہدراصل اس كيڑے كو كہتے ہيں جواو پرى تہہ كے ينچے بہنا جائے اور
بدن سے لگار ہے ۔ ایسے كیڑے پر بدن كے راز مخفی نہيں رہتے بلكہ جلد كی رنگت اس كے بالوں، عيوب اور
عاس كاعلم ہوتا ہے ۔ تو جس كے اخلاص پراعتاد كركة دى اس كے اوپراپنے راز ظام ركرتار ہے اسے بطائة
كياجاتا ہے۔

یہاں برابوالہیش کی بیوی کی مدح مقصود ہے کہوہ ایک مخلص راز دان اور خیر میں معاون بیوی ہے اور

اسى كو "خيىر مناع اللدنيا، يهى كها گياہے يعنى اچھى بيوى دنيا كابہترين سر مايہ ہے۔

ا جیما اور بُر اسائقی: ایک دوسری مدیث میں ہرانسان کے ساتھ دوساتھیوں کا ذکر ہے۔ جن میں سے ایک ملہم فرشتہ اور دوسرا وسوسہ ڈالنے والا شیطان ہے۔ فرشتہ اسے خیر کی دعوت دیتا ہے اور شیطان دوسری طرف لے جانے کی کوشش کرتا ہے۔

413

وبطانة لاتالوه خبالا توقصوراوركوتاى كمعنى مين تاباورخبال فسادكو كبتي بين بجرالا یا لو چونکہ منع یا نقص کے معنی کو منتضمن ہے اس لئے بید دومفعول کو متعدی ہوتا ہے یہاں بھی معنی ہیہ ہوگا کہ بطائة لا تسمنعه و لاينقصه من الخبال يتى ايكراز داروه موتاب جوايين سائقي كونساديرآ ماده كرني میں کوئی کسرنہیں چھوڑ تا۔

(۵) حدّثناعمر بن إسماعيل بن وقاص يقول إنّي لأول رجل اهرق دماًفي سبيل الله وإنّي لاّول رجل رمي بسهم في سبيل الله لقد رأيتني اغزوفي العصابة من أصحاب محمّد عُلَيْكُ ماناكل الإورق الشجروالحبلة حتى تقرحت اشداقنا حتى أنّ احدنا ليضع كما تضع الشاة والبعير وأصحبت بنواسد يعزرونني في الدين لقدخبت اذاً ضل عمل(١).

ترجمه: حضرت سعد بن ابي وقاص مجتبع بين كهين ببلامسلمان مول جس نے الله تعالی کے راستے میں کسی کا فرکا خون بہایا ہو۔اور میں بہلامسلمان ہوں جس نے اللہ کے راستے میں کا فروں کو تیر مارا ہو۔اورخود نبی ا کرم اللہ کے صحابہ کی ایک جماعت کی معیت میں جہاد کرتے ہوئے میردیکھا تھا کہ ہمارے کھانے بینے کے لئے سوائے درخت (کے پتوں) اور کیکر کے تخم کے اور کوئی چیز نہیں ہوتا تھا یہاں تک کہ ہماری

(۱) صحیح بخاری ۵۲۸/۱ کتاب فضائل الصحابه باب مناقب سعد بن ابی و قاص، صحیح مسلم ٨/٢ • ٣ كتاب الزهد والرقائق باب في ذكر مامضي على الصحابة رضى الله عنهم من الزهادة في الدنيا الخ، جامع ترمذي ١/٢ ٥ كتاب الزهد باب ماجاء في معيشة النبي النبي المختار) با چیس چیٹ کرزخی ہوگئیں اور یہاں تک کہ ہم میں سے ایک شخص بکری اور اونٹ کی طرح پاخانہ کرتا تھا چر بھی بنواسد کے لوگ دین (نماز) کے بارے میں جھے کو ستے ہیں (اگر میں دین سے بے فکررہا) چر تو حقیقة نامراد رہا اور میری مساعی رائیگاں گئیں۔

حضرت سعدین افی وقاص بہلاتیرانداز: انسی الاول رجل النع حضرت سعدین افی وقاص رضی الله عند متقد مین فی الاسلام صحابہ میں سے ہیں۔ ابتداء میں صحابہ مشرکین کے خوف سے چھپ کر نمازیں پڑھا کرتے تھے۔ ایسے ہی ایک موقع پر جب صحابہ کرام ایک گھائی میں نماز ادا کررہے تھے۔ مشرکین آئے اور صحابہ کوتگ کرنا شروع کر دیا۔ صحابہ کرام اور ان کے درمیان تو تو میں میں نے طول پکڑا اور ہاتھا پائی تک نوبت آئی۔ حضرت سعد نے اون نے کے جبڑے سے ایک کافر پروار کردیا جس سے وہ زخی ہوا اور یہ کسی کافر کا سب سے پہلاخون تھا جو کسی مسلمان کے ہاتھ سے بہا ہو۔ اس کا ذکر حضرت سعد بیان کررہے ہیں۔

لیکن فتح الباری وغیرہ میں آیا ہے کہ ہجرت کے تقریباً ایک سال بعد صفر میں نبی اکرم اللہ خود قریش کے مقابلے میں نظے اور ابواءیاو دّان کے مقام تک گئے۔ یہیں سے آپ اللہ نے عبیدہ بن الحارث کے سریۃ کو بھجا۔ جس میں حضرت سعد نے سب سے پہلے تیر چلایا (۱)۔

(۱) فتح البارى ج عص ۳۵۵

غُرُوة خيط وسيف البحر: وقدرايتني اغزوفي العصابة الخ، عصابدس عياليس تككي جماعت کو کہتے ہیں۔ان حملوں میں حضرت سعد جس غزوہ کا ذکر کرتے ہیںا سے غزوہ خیط اورغزوۃ مسیف البحو كنام سے يادكياجا تا ہے۔علامه ابن جُرَّا بن سعدٌ سفقل كرتے بين كه نبي اكرم الله في الرم ر ۸ ھ میں بنوجھینہ کی سرکونی کیلئے حضرت ابوعبیدہ بن الجراٹ کوتین سوصحابہ کے ساتھ ساحلی شیر قبلیۃ کی طرف بھیجا۔ علامہ ابن حجر منت میں کہ صحیحین کی روایت میں بیآتا ہے کہ بدسریہ قریش کے قافلے کیلئے بھیجا گیا تھا۔اسلئے ہے ہے اواخرے پہلے کا واقعہ ہونا جائے رجب میر میں تو قریش کے ساتھ سکے کا زمانه قاالاً بدك قريش كة قافلي بنوجهينه سي حفاظت كيليّ آب الله في المرجميا الور

415

اس غزوه میں تین سومجاہدین کوایک بوری تھجور بطور زاد دیا گیاتھا۔ راستے میں رفتہ رفتہ بیرزادختم ہو گیا اور مجاہدین کیکر کے پتوں اور اس کے تخم کھانے پر مجبور ہو گئے جس کی وجہ سے صحابہ کے ہونٹ بھٹ گئے اور ان کی قضائے جاجت بھی بھیڑ بکریوں کی مینگنیوں کی طرح نظنے گئی۔ بعد میں انہوں نے ساحل سمندر برایک بہت بڑی مچھل یائی جس کا گوشت وہ تقریباً اٹھارہ دن تک کھاتے رہے بلکہ مدینہ واپسی تک اس سے گزارا چلتارہا۔ یہیں سے ترجمۃ الباب كا استنباط بھى ہوتا ہے كيونكه ظاہر ہے كہ صحابہ كرام كى زندگى جب اتن نتک تھی تواس ہے نی اکر مہلطہ کی تنگد تن کا ندازہ بخو بی لگایا جاسکتا ہے۔

سعدٌ برنكت چيني كالپس منظر: ثم اصبح بنو اسد يعزّدونني في الدين الخ، يعني إوجودقديم الاسلام ہونے انتہائی صعوبتیں برداشت کرنے اور نبی اکرم اللہ کی قریبی مصاحبت کے بنواسد مجھے دین (نماز) کے سلسلے میں کوستے ہیں۔

بنواسد بن خزیمہ بن مدر کہ بنومفر کی ایک شاخ ہے۔ نبی اکرم ایک کی وفات کے بعد بی قبیلہ مرتد ہو گیا تھااورطلیحہ بن خویلدالاسدی کی متابعت اختیار کر لی تھی جو بنوت کا دعویٰ کرچکا تھا۔حضرت ابو بکرصد ہق خ نے حضرت خالدین ولید گلوان کے مقالمے کیلئے بھیجا طلحہ اور ان کے ساتھیوں نے تو یہ کی ان کی اکثریت کوفہ میں آباز تھی طلبحہ جنگ نہاوند میں ۲۱ چوکوشہید ہوئے۔

حضرت عمر کے زمانے میں حضرت سعد اوف کے امیر مقرر ہوئے۔ بنواسد حضرت سعد سے ناراض

ہوئے۔انہوں نے حضرت عمر کے پاس شکایات کیں جن میں سے ایک شکایت رہیجی تھی کہ حضرت سعد مخماز الچھی طریقہ سے نہیں پڑھ سکتے (ا)۔

416

حضرت عرانے بازیرس کیلئے حضرت سعد اور پند بلوایا۔ جواب طلی کی تو آپ نے بہ بیان دیا کہ بنواسد کوتو میری نمازیراعتراض ہے کیار ممکن ہے کہ میرے جیسے خص کونماز کا بھی علم نہ ہو۔

حفرت عمر في من يرتحقيق كيلئة دوآ دمي كوفه بصح - جنهوں نے ہر محلے كي مسجد ميں حاكر حضرت سعلاً کے بارے میں دریافت کیاکسی کوبھی آپ برحرف گیری کی جرأت نہیں ہوئی۔صرف ایک شخص نے ان کے بارے میں کہا کہ حضرت سعد میں تین عیب ہیں (۱) جہاد کیلئے نہیں نکلتے (۲) مال کی تقسیم میں برابری نہیں کرتے (۳) فیصلوں میں انصاف نہیں کرتے۔حضرت سعد کوعلم ہوا تو انہوں نے کہا کہ اس شخص نے تین شکایات کی ہیں۔اس لئے میں تین بدد عائمیں کرتا ہوںا ہےاللہ اگر بشخص جھوٹا ہے محض شہرت کیلئے بہ تقید کی ہےتواس کی عمرطومل کردے اس کی فقر میں اضافہ کردے اور اسے فتنوں میں مبتلاء کردے۔ حدیث کا راوی کہتا ہے کہ میں نے دیکھا کہاں شخص کی ابروئیں بڑھایے کی ونبہ سے آٹھوں پر جھکی ہوئی تھیں۔فقر کی وجہ ہے وہ بھک مانگیا تھا اور گلیوں میں چھوٹی بچیوں کو چھیڑا کرتا تھا۔ کوئی اس حال کے بارے میں یو چھتا تواقر ارکرتا کہ مجھے سعد کی بددعا لگ گئی ہے۔

لقد خبت اذاالخ، لین اگریس یاو جوداتی مشقتیں جھلنے کے دین بھی نہ سیکھ سکا نماز پر هنا بھی نه سیکھ سکا تو پھرتو د نیاوآ خرت میں میری نامرادی ظاہر ہے۔

> (٢) حدّثنامحمّدبن بشّارثنا صفوان بن عيسىٰ ثناعمرو بن عيسىٰ ابونعامة العدى وقال سمعت خالدبن عمير وشويساابالر قادقالابعث عمر بن الخطاب عتبة بن غزو ان وقال انطلق انت و من معك حتى اذا كنتم في اقصى ارض العرب وادنى بلاد ارض العجم فاقبلوا حتى اذاكانوا بالمربدوجدو اهذاالكذان فقالوا ماهذه قالواهذه البصرة

(۱)و كانواوشوابه إلى عمر قالوا لايحسن يصلّى (بخارى ج اص٥٢٨) ١ (اصلاح الدين)

فسارو احتى اذابلغواحيال الحسر الصغر فقالو اههناامرتم فنزلوا فذكر واالحديث بطوله قال فقال عتبة بن غزوان لقد رأيتني واني لسابع سبعة مع رسول الله عليه مالناطعام الاورق الشجر حتى تـقـ, حـت اشـداقـنافالتقطت بردة فقسمتها بيني وبين سعد فمامنا من اولئك السبعة احدا لاوهوامير مصر من الامصار ويستجربون الأمراء بعدنارا).

417

ترجمه: راوی (خالدٌ اورشولیسٌ) کہتے ہیں کہ حضرت عمرؓ نے حضرت عتبہ بن غزوانؓ کو (بھرہ کی طرف)روانہ کیااور تھیجت کی کہتم اور تمہارے ساتھی جاؤ۔ جب تم عرب کی زمین کے آخری کنارے اور عجم کی زمین کے قریب پہنچو (تو وہیں ڈیرہ ڈال دو) چنانچہ پہلوگ آئے۔جب وہ مربد کے مقام پر پہنچے تو انہوں نے پیر عجیب) سفید زم پھرد کھے۔انہوں نے آپس میں ہو جھا دوسروں نے جواب دیا کہ بیابھرہ (سفیدزم پھر) میں پھروہ کچھآ گے بڑھے۔جبوہ چھوٹے مل کے برابرآئے تو ہیطے پایا کہ یمی وہ جگہ ہے جس جگہ (حضرت عمر کی طرف سے )تھبرنے کا حکم ملا ہے۔ جنانچہ وہں اس لشکرنے پیراؤڈ الا۔اس کے بعدراویوں (خالداور شویس)نے تفصیل کے ساتھ قصہ ذکر کر دیا۔ راوی کہتے ہیں کہ پھر عتبہ بن غزوان نے فر مایا کہ میں نے خودکو دیکھا تھا جب میں سات میں سے ساتواں شخص نبی اکر میں کے ساتھ تھا۔ ہمارے ماس کھانے کی کوئی چیز نہیں ہوتی تھی سوائے درختوں کے پتوں کے حتی کرایتے کھانے سے )ہماری باچیس بھٹ کرزخی ہوگئیں۔ (ایک دفعہ) مجھے ایک جا درملی میں نے اسے اور سعد کے درمیان دوحصوں میں بانث دیا۔ان سات صحاب میں سے

(۱)صحيح مسلم ۹/۲ و ۴ کتباب البزهد والبرقبائق، مصنف بن ابي شيبة ۳ ۱ /۵۴، جامع ترمذی ۵۳۷/۲ کتاب صفة جهنم باب ماجاء فی قعرجهنم، مسنداحمد ۵۳/۲ ا (مختار) کوئی بھی نہیں ر ماوہ کسی علاقہ کا امیر بن چکا ہے اور ہمارے بعد ہی تم (بُرے) امراء کا تج پہنجی کرلوگے۔

418

حضرت عمر كالعثت علية: بعث عمر بن الخطاب برواقه حضرت عمر كزمانه فلافت كاب کیونکہاس میں بھرہ کی آباد کاری کا ذکر ہے جو ۱۲ اچ میں تغمیر ہو گیا تھا()۔حضرت عمرؓ نے عتبہ بنغز وان کو جس مہم پر روانہ کیا تھا۔اس کا پس منظر یہ ہے کہ حضرت عمرٌ کو اطلاع ملی کہ بیز د جرد نے ہندوستان کے بادشاموں سے مدد کامطالبہ کیا ہے تا کہ وہ مسلمانوں کے خلاف لڑائی لڑیں چونکہ عجم کیلئے عربوں پر حملہ کرنے کا یمی راستمتعین تھا۔اس لئے حضرت عمر نے اس کی ناکہ بندی کیلئے حضرت عتہ وقین سومجابدلیکر پہرہ دينے كاتھم ديا۔

عتب بن غزوان الله عتب بن غزوان ابن جابر بن وهب مازنی صحابی ہیں۔ جو بن عبد مس مابی نوفل کے حلیف تھے۔ ابتدائی زمانہ نبوت میں ہی اسلام سے سرفراز ہوئے۔ حبشہ کی طرف ہجرت فرمائی پھر وہاں سے دیند کی طرف ہجرت کی۔بدراور بعد کے تمام غودوات میں شریک رہے۔حضرت عمر فے مشرقی سرحد کی طرف بھیجا تو دریائے د جلہ پہنینے کے بعد بڑاؤڈالا۔ وہاں صاحب فرات سے مڈبھیٹر ہوئی جو جار ہزار کا لشکر لے کرآ ما تھا۔اللہ تعالیٰ کی نصرت سے مسلمانوں کو فتح حاصل ہوئی۔

شہر بھرہ کا قیام: ان سے فراغت کے بعد حضرت عمر کے پاس قاصد بھیجا کہ اس جگہ ایک ایباشہر ہونا چاہئے جومسلمانوں کامرجع ہوتا کہ فراغت کے اوقات میں وہ سکون کے ساتھ وہاں رہ سکیں۔حضرت عمرٌ ا نے اجازت دیدی۔بشرط میر کدوہ جگہ یانی اور جارے کے قریب ہو۔ چنانچ آپٹے نے بھرہ کی جگہ کا انتخاب کیااور وہاں فوجی نقشہ کےمطابق شہر کی بنیا د ڈالی۔ابتداء میں بانس اورلکڑی سے گھروں کی تغییر کی جووہاں بکشرت ہوتے تھے۔مسجد بھی پانسوں سے بنائی گئی اور ۱۲ھے میں یہاں مجاہدین کی ایک چھاونی آباد ہوگئ۔

(١)قال في الجمع ثم البصره بناها عتبه بن غزدان في خلافة عمر من ١ ٩ وقيل ١ ٩ وقيل ولم يعبد بارضها ضم ويقال لها قبة الاسلام وخزانة العرب (جمع ج٢ص ٢٣٥) هذاولكن رايت في شذرات اللهب ج ا ص ٣٣ ان عتبة مصر هيا ١ م واليه ذهب المؤرخون ولعله الراجح فان عتبة مات ١١ م على الراجح، (اصلاح الدين حقاني) حضرت عتبہ بھسین اور بلند قد وقامت کے مالک تھے، انتہائی جفائش تھے۔ انبرعمر میں حضرت عمر میں حضرت عمر کے پاس آئے تاکہ امارت سے معذرت کرلیں مگر حضرت عمر نے استعفی قبول نہیں کیا چنانچہ واپس ہوئے راستے ہی میں کا پیرکو وفات یائی۔ راستے ہی میں کا پیرکو وفات یائی۔

حتی اذا کانوابالمربد مربدبھرہ میں ایک جگہ کانام ہے۔اصل میں مربداونٹ بائد سے کی جگہ کو بھی کہتے ہیں نیز کھجور سکھانے کے خرمن کو بھی مربد کہاجاتا ہے۔وجدو اھنداالمکندان کذان اس سفید شم کے پھرکو کہتے ہیں جوزم بھی ہو۔ یہی بھرہ کا لغوی ترجم بھی ہے۔

فسارواحتی بلغواحیال المجسوالصغیو، حیال، مقابل اور برابر کے معنی میں ہے یعنی یہ عجابدین بصرہ کے اس مقام سے کچھآ کے برا سے یہاں تک کردریائے دجلہ کے چھوٹے پل کے برابرآئے جسر صغیر کو جسر کبیر تھا۔ یہ نسبتاً جسر صغیر کو جسر کبیر تھا۔ یہ نسبتاً چھوٹا تھا جو دریا دجلہ پر بنایا گیا تھا۔

فذكرواالحديث بطوله ،فذكرواكى جمع كالنمير خالداور شويس كوباعتبار مافوق الواحدران جمه لعض نخول مين فذكرا تثنيه كے صيغ سے ہاور وہى رائ اور ظاہر ہے جبكہ بعض نخول مين فذكر مفرد كے صيغ سے ہوگى۔جوام مرّفدي كے شخ بين۔

کافرحاکم صاحب فرات سے جہاد: اس حدیث کوعلامہ طبریؓ نے پچھٹریڈنفسیل کے ساتھ ذکر کیا ہے۔ وہ کہتے ہیں کہ جب عتبہ شرحد پڑھ برے تو وہاں کے کافرحاکم ''صاحب فرات'' کو پتہ چلا۔ اس نے چار ہزار کالشکر لے کرمسلمانوں کارخ کیا۔ جب پہنچ کراس نے ویکھا کہ سلمان صرف بین سو ہیں تو فوج کو علم دیا کہ ان لوگوں کے گلوں میں رسیاں ڈال کر مجھے پیش کردو۔ چنانچہ وہ آئے۔ حضرت عتبہ نے مسلمانوں کو تھم دیا کہ صرف دفاعی جنگ لڑیں۔ دشمن پرحملہ نہ کریں گری کا موسم تھا ہوا رکی ہوئی تھی جب زوال ہو گیا تو مسلمانوں کو تھم دیا کہ اب اللہ کے نام سے جملہ کردو چنانچہ ایسانی کیا گیا اور بہت سے کفار قل کئے گئے ''صاحب فرات'' کوقید کرلیا گیا۔ اس کے بعد حضرت عتبہ بن غزوان نے تھم دیا کہ کوئی اچھی جگہ منبر بنادو اور ایک بلیغ خطبہ دیا۔ جبکہ علامہ مناویؓ کہتے ہیں کہ حضرت عتبہ بن غزوان نے خوزستان کے منبر بنادو اور ایک بلیغ خطبہ دیا۔ جبکہ علامہ مناویؓ کہتے ہیں کہ حضرت عتبہ بن غزوان نے خوزستان کے منبر بنادو اور ایک بلیغ خطبہ دیا۔ جبکہ علامہ مناویؓ کہتے ہیں کہ حضرت عتبہ بن غزوان نے خوزستان کے منبر بنادو اور ایک بلیغ خطبہ دیا۔ جبکہ علامہ مناویؓ کہتے ہیں کہ حضرت عتبہ بن غزوان نے خوزستان کے منبر بنادو اور ایک بلیغ خطبہ دیا۔ جبکہ علامہ مناویؓ کہتے ہیں کہ حضرت عتبہ بن غزوان نے خوزستان کے منبر بنادو اور ایک بلیغ خطبہ دیا۔ جبکہ علامہ مناویؓ کہتے ہیں کہ حضرت عتبہ بن غزوان نے خوزستان کے منبر بنادو اور ایک بلیغ

لوگوں سے جووہاں کے مقامی باشندے تھے تاوان جیاباوہ آئے تو مسلمانوں کی قلیل تعداد کود کھے کرغداری کی اورمسلمانوں برحملہ کردیا۔ چنانچہ جنگ ہوئی اور میدان مسلمان کے ہاتھ رہا۔

420

عتبه كاطويل خطيد: فقال عتبه بن غزوان الخ ، بياس طويل خطبه كاحصه بحس كاجم ببلغ ذكركر يك ہیں واقعہ اور بقیہ خطبہ کواختصار أحذف كيا گيا ہے۔اس خطبہ كا كچھ حصہ يوں ہے۔

''اےلوگوں بدد نیاختم ہور ہی ہے اور منہ پھیر کرجار ہی ہے۔اس کا صرف اتنا تھوڑا حصہ باقی رہ گیا ہے جتنا برتن میں پانی پینے کے بعدرہ جاتا ہے تم لوگ ہمیشہ رہنے والی جگہ کی طرف منتقل ہورہے ہو۔ اس لئے تمہارے ساتھ جو بہترین مر ماہر (عمل) ہواس کے ساتھ آخرت کونتقل ہوجاؤ۔ مجھے یہ بتایا گیا ہے کہ اگرایک پھر جہنم کے منڈ چیر سے جہنم میں پھینک دیاجائے وہ ستر سال تک (بغیرر کے ) جہنم میں گرتا ہوا جائےگا۔اوراس جہنم کو تم (کافر)لوگ بھرو گے۔کیاتم اس سے تعجب کررہے ہو۔

مجھے بیبھی بتایا گیا ہے کہ جنت کے دروازہ کے دونوں کناروں میں جالیس برس کا فاصلہ ہے اور ا یک دن ایبا آئے گا جب وہ دروازہ رش کی وجہ سے بھر جائیگا اور میں نے خودکودیکھا۔۔۔۔الخ

مالناطعام الاورق الشجرالخ يجى ترحمة الباب بي يعنى تنكدتى كى دجه سے درختوں كے يتے کھاناپڑے۔

فقسمتها بيني وبين سعد،ايك نخ من سعدى جگرسبعد آيا بيكن است شحف بتاياجا تاب كوتكم سلم شريف كى روايت مل ب كرفقسمتها بينسى وبين سعدبن مالك فاتزرت بنصفهاو أتزر سعدبنصفهات

وستجرّبون الامراء بعدنا، اس کلام کامطلب بیب کہ بم لوگوں نے نی اکرم اللہ کی مصاحبت اور ریاضات دمجاہدات سے جو کچھ سیکھااس کی برکت سے خدااور بندوں کے حقوق کی ادائیگی کی تو فیق ملی ہے۔ ہمارے بعدایسے امراء آئیں گے جوعیاشیوں میں ملے بڑھے ہو نگے ان کو نہ خدا کے حقوق کی ادائیگی کی فکر ہوگی نے مخلوق کی بدحالی ان کوستائے گی۔ان کواینی خواہشات اورعیا شیوں سے فراغت ہی نہیں ملے گی۔

حدّثناعبدالله بن عبدالرحمٰن ثناروح بن اسلم ابوحاتم البصرى ثناحماد بن سلمة ثناثابت عن أنس قال قال رسول الله عَالَيْكُ لقد اخفت في الله ومايخاف احدولقداو ذيت في الله ومايوذي احدولقداتت على ثلثون من بين ليلة ويوم ومالى ولبلال طعام ياكله ذو كبدالاشع يواريه ابط بلال(١).

421

ترجمہ: حضرت انس سے روایت ہے کہ نبی اکر میں نے فرمایا کہ مجھے اللہ کے راستے میں اس زمانہ میں ڈرایا گیاتھا جس میں سی کواللہ تعالیٰ کے راستے میں نہیں ڈرایا گیا۔اور مجھےاللہ کے راستے میں اذبیتیں دی گئی جب سی کواذبیتین نہیں دی حاتی تھیں اور مجھ پرتیس دن راتیں ایس گزریں جب میر ہاور بلال کے لئے کھانے کی کوئی چیز الیی نہیں تھی جے کوئی جاندار کھا سکے۔ سوائے اس تھوڑے سے کھانے کے۔ جے بلال كالبغل جصياليتا تفا\_

مشركين كاحضورا قدس مالية ورانا دهمكانا: لقدأ خفت في الله النويين مشركين في محص ڈرایا۔الی حالت میں جب کوئی بھی نہیں ڈرتا تھا میں چونکدا کیلاتھا اورا کیلا آدمی زیادہ ڈرتا ہے بدنسبة جماعت کے۔ ثلاثون من بین لیلة ویوم لیخ تیں دن راتیں۔

علامه طبی نے کھا ہے کہ من بین لیلة ویوم ماسبق کی تا کید ہے۔ اور معنی بیر ہے کہ تیس دن اور تئیں را تیں ۔لیکن ملاعلی قاریؓ کا خیال ہے کہ بیرٹلاثون کی تمیز ہے یعنی تئیں دن رات اور مطلب بہ ہے کہ يندره دن ارويندره راتيل جوکل تيس بنتي ہيں۔

مایو ادیه ابط بلال ،بدراصل قلت سے کنابہ ہے یعنی کچھ تھوڑ اسا کھانا ہوتا تھا جو بلال کے بغل میں سموجاتا تھا۔ای براس سار سے زمانہ میں ہمارا گزارا ہوتا تھا۔

(١) سنن ابن ماجة ١٣/١ ابواب المناقب باب فضائل اصحاب رسول الله عَلَيْهُ مسند احمد ١٢٠/ ١٥ مشرح السنة رقم الحديث ٨٠ ١مرمختار) 422

اس حدیث کوام ترفری نے جامع ترفری میں ابواب صفة القیامة (۱) میں بھی ذکر کیا ہے وہاں آخر میں ان الفاظ کا اضافہ ہے و معنی ھذا الحدیث حین خوج النبی عالیہ الله هار ب من مکة و معنی بدلال إنّما کان مع البلال من الطعام مایحمل تحت ابطه، صاحب لمعات کہتے ہیں کہ امام ترفری کا مقصد ہے کہ بیواقعہ سفر بجرت کے سواکوئی دوسراواقعہ ہے جس میں حضرت بلال آپ بھیلیہ کے ساتھ سے کیونکہ بجرت میں تو بلال ساتھ نہیں سے تو شاید بیا طائف کے عبد کلال بن یا کیل کے پاس آپ ساتھ کے کونکہ بجرت میں تو بلال ساتھ نے دوحت دی تھی اور اس نے بچوں سے پھر برسوائے کیا اس سفر میں بھی آپ بھیلیہ کے ساتھ بلال کی بجائے زید بن حادثہ سے اور بیا بھی ممکن ہے کہ بیکوئی دوسرا موقعہ ہوجس میں حضرت بلال آپ بیا تھ شریک فریس استر میں بھی آپ بھیلیہ کے ساتھ شریک فریس استر میں بھی سے کہ بیکوئی دوسرا موقعہ ہوجس میں حضرت بلال آپ بھیلیہ کے ساتھ شریک سفر بھوں ۔ واللہ اعلم بالصواب ۔

(^) حدثنا عبدالله بن عبدالرحمان انباناعفان بن مسلم ثنا أبان بن يريد العطار ثناقتادة عن أنس بن مالك أنّ النّبيّ عَلَيْكُ لم يجتمع عنده غداء و لاعشاء من خبزولحم الاعلى ضفف قال عبدالله قال بعضهم هو كثرة الايدى().

### ضفف كامطلب:

ترجمہ: حضرت انس کہتے ہیں کہ نبی اکر میں گئے کے پاس (دستر خوان پر) منج وشام کے کھانے میں کہی بھی بھی روٹی اور گوشت جمع نہیں ہوئے۔ سوائے حالت ضفف (لیعنی اجماعی حالت) میں۔

الاتعلى ضفف المغ، ضفف سے اجماعی کھانا مراد ہے بعنی مہمانوں کے ساتھ یا گھروالوں کی معیت میں۔ یا دیگرلوگوں کی معیت میں کبھی گوشت اورروٹی اسٹھی مل جاتی ۔ورنہ صرف بوکی روٹی معمول کا کھانا ہوتا تھا۔

(۱)مسنداحمد۳/۰۲۷ (مختار)

قال عبدالله يهال ام ترزي كي شخ عبدالله بن عبدالرحن مراد بين وه كيتم بين كه ضفف كامعنى كم قال عبدالله يهال ام ترزي كي شخ عبدالله بن عبدالله يهال ام ترفيق في كان كثرة الايدى بي يعين دوسر بوجاتى تعين ضفف كم معنى مين ويكرا قوال بهى بين مثلا بعض لوكول ني كثرة العيال بي بعض في تناولاً مع الناس اور بعض في الشيق والشدة سياس كاتر جمه كيا بي -

423

یمی حدیث مؤلف نے پچھلے جھوٹے" باب ماجاء فی عیش النبی آلیفیہ" میں بھی ذکر کی ہے وہاں اس کی تفصیل بھی ہم عرض کر چکے ہیں۔

(٩) حدّثناعبدالرحمن بن حميدثنامحمّدبن اسمعيل بن ابى فديک ثناابن أبى ذئب عن مسلم بن جندب عن نوفل بن أياس الهذلى قال كان عبدالرحمٰن بن عوف لنا جليسا وكان نعم الجليس وانّه انقلب بناذات يوم حتى اذادخلنا بيته و دخل فاغتسل ثمّ خرج واوتينا بصحفة فيهاخبز ولحم فلمّاوضعت بكى عبدالرحمٰن فقلت له يا باآبامحمدمايبكيك قال هلك رسول الله عَلَيْتِهُ ولم يشبع هو واهل بيته من خبز الشعير فلاارانا اخر نالماهو خير لنا(١).

ترجمہ: نوفل بن ایاس کہتے ہیں کہ عبدالرحمٰن بن عوف جمارے ہمنظین سے اور وہ بہترین مصاحب سے ایک دن وہ ہمارے ساتھ (بازار سے گھر) لوٹے۔ یہاں تک کہ ہم ان کے دولت خانہ پر آئے۔ عسل خانے میں جاکرانہوں نے عسل کیا پھر باہر آئے تو ہمارے پاس یک بڑا ہر تن اور گوشت کالایا گیا۔ جسے (دسترخوان پر)رکھ دیا گیا۔ تو عبدالرحمٰن رونے گئے میں نے پوچھا کہ اے ابو محمد! مجھے کس بات نے رلایا۔ فرمایا کہ نبی اکرم ایکھے اس حال میں وفات پائے کہ وہ اور ان کے گھر والے بوکی روفی سے بھی شکم سیرنہیں ہوئے۔ ہمارانہیں خیال کہ میں کسی بھلائی کیلئے ان کے بعد زندہ رہنے دیا گیا ہے۔

حضرت عبدالرحمٰن بن عوف نن عبدالرحمٰن بن عوف بن الحارث بن زہرہ بن كلاب كا جاہل نام عبدالرحمٰن ركھا۔ عشرہ مبشرہ ميں سے ہیں۔ اور عبدالرحمٰن ركھا۔ عشرہ مبشرہ ميں سے ہیں۔ اور حضورا قدس الله كن كن الرم الله في الرم الله في الرم الله في خورت ميں ہے۔ واقعہ اصحاب فيل كدر سال بعد ولا دت ہوئی۔ قديم حضورا قدس الله خورت مبال بعد مدينه منورہ كو بھى جمرت فرمائی۔ بدراوراس كے بعد كتمام غزوات الاسلام صحابی ہیں۔ ہجرت عبشہ كے بعد مدينه منورہ كو بھى جمرت فرمائی۔ بدراوراس كے بعد كتمام غزوات ميں شريك رہے۔ غزوة احد ميں ان كواكيس زخم آئے۔ پاؤں كے ايك زخم كى وجہ سے لنگر اين بھى محسوس كيا جاتا رہا۔ مرخ وسفيدرنگ، بردى آئكھوں، خمدار پكول، بردى گردن، مضبوط ہاتھ كى وجہ سے دس ووقار آپ كى گفسيت ميں نماياں تھے۔

علم میں بھی امتیازی مقام حاصل تھا۔ نبی اکرم اللہ کی زندگی میں فتویٰ دیا کرتے تھے۔ ایک سفر کے دوران نبی اکرم آللہ نے ان کی اقتداء میں تبھی کی نماز بھی ادافر مائی تھی۔ انہوں نے جاہلیت میں بھی شراب کوحرام مجھ کرچھوڑ دیا تھا۔

کامیاب جارت کی وجہ ہے آپ کا شار چندا یک دولتمند صحابہ میں ہوتا تھا۔ گراللہ تعالی نے سخاوت کی نعمت ہے بھی مالا مال فرمایا تھا۔ نبی اکرم اللہ کے دندگی میں ایک دفعہ اپنا آ دھامال اللہ کے داستے میں دے دیا۔ پھر چالیس ہزار دینارصد قد کئے۔ پھر پانچ سوگھوڑے اور پانچ سواونٹ اللہ تعالیٰ کی راہ میں پیش کئے۔ از واج مطہرات کو ایک باغ ہدیہ کیا جو چار لا کھ درہم میں فروخت ہوا۔ از واج مطہرات کے جج اور مصارف سفر کا انتظام بھی آپ ہی فرمایا کرتے تھے۔ جعفر بن برقائ کہتے ہیں کہ ہمیں معلوم ہوا ہے کہ انہوں نے تمیں ہزار غلام اور بائد یوں کو آزاد فرمایا تھا۔ وفات کے وقت بھی وصیت کی کہ موجود ہر بدری صحابی کو چارسود بناردے دیئے جائیں۔ چنانچہ اس وقت ایک سو بدری صحابہ یائے گئے۔

حضرت عمر نے خلیفہ کے انتخاب کیلئے چھافراد کی کمیٹی بنائی۔ان میں آپ گانا م شامل تھا۔ مگر آپ ٹ نے خلافت قبول کرنے سے انکار کیا بلکہ ایک دفعہ حضرت عثمان نے ان کوخلیفہ بنانے کا وثیقہ ککھاتھا جس پرآپ ناراض ہوئے ان کی وفات ۲۳سے پاسے میں تقریباً بہتر (۲۲) برس کی عمر میں ہوئی۔ جنت ابقیع میں فن ہوئے۔ فلاار انداخو نالمه هو خیولنا، لینی نی اکرم الله اوران کے هروالوں نے تو تنگدتی کی زندگی بیتی بہتر ہم خوشحال زندگی بسرکررہ بیس اب ہمیں خطرہ ہے کہ ہماری بیہ خوشحالی ہمارے میں کوئی بہتر بات نہیں ہے بلکہ بہتر زندگی وہی تھی جو کہ سید الاولین والآخرین الله نے نتخب فرمائی تھی۔ ہماری عارضی خوشحالی میں خطرات ہوسکتے ہیں کہ ہماری نیکیوں کا بدلہ دنیا میں ہمیں دیا جارہا ہواوراخروی سعادتوں میں کی کا باعث بن رہا ہو جبکہ حضوراقد سی الله اوران کے هروالوں کے فقر میں بیہ خطرات نہیں تھے۔ اور ان کے گھروالوں کے فقر میں بیہ خطرات نہیں تھے۔ افر ان کے گھروالوں کے فقر میں بیہ خطرات نہیں تھے۔ افر میں میں حیات کم الدنیا (الآیة)

## <u>خلاصة باب</u>

اس باب میں نبی اکرم اللہ کے گزرادقات کا تذکرہ مقصود ہے۔ نبی اکرم اللہ کے کھانے پینے ،لباس اور رہائش میں نگی تھی عموماً فاقہ ہوتا تھا کھا ناملتا ، تو وہ بھی جو کی روٹی یا تھجور ہوتے تھے۔ بھی مہینہ بھر گھر میں آگ جلنے کی نوبت نہ آتی۔ بھوک کی شدت محسوس ہوتی تو پیٹ پر پھر با عدھ کر صبر سے برداشت کر لیتے تھے۔ گوشت قوشاذونا در ہی مہیا ہوتا تھا۔

گروالوں کی بھی بھی حالت تھی جو کی روٹی پیٹ بھر کرمیسر نہتی۔عام صحابہ گی تنگدستی سے بھی نبی اکرم آلی آلی کے حالت کا اندازہ لگایا جاسکتا ہے۔اس لئے شیخین کا واقعہ بھی لا یا گیا ہے۔ جب کر کتی دھوپ میں ان کو بھوک نے ستایا تو آپ آلی ہے کہ اس آئے۔آپ آلی کے کا بھی بھوک سے ان کی طرح براحال تھا چنا نجوا کی مخلص صحابی ابوالہیش کے یاس تشریف لے گئے۔اورانہوں نے خاطر تواضع کی۔

ای طرح حضرت سعد بن ابی وقاص اور عتبہ بن غزوان جھی نبی اکرم ایک کے زمانے کی معاثی در بول حالی کا ذکر کرتے ہیں کہ ہمیں درختوں کے چوں سے گزارا کر ناپڑتا تھا۔ لیکن ہم پہلے بھی عرض کر چکے ہیں کہ خیر القرون میں معاشی ایتری ایک اختیاری امرتھا وہ دنیا سے بے رغبت تھے زہد ہی نے ان کواس حالت پر پہنچایا تھا۔ اسی وجہ سے ان کا فقر ایک قابل فخر بات تھی وہ دعا میں بھی مساکین کی مصاحبت مانگا کرتے تھے۔

## ۵۳. باب ماجاء في سنّ رسول اللهُ عَلَيْكِ مِ حضورا قد سطاللہ کی عمر کے بیان میں

سِن عمر کو کہتے ہیں اور دانت کو بھی میں کہا جاتا ہے شایداس لئے کہاس سے انسان کی عمر کا انداز ہ لگایا جا تا ہے اس باب میں نبی کریم اللہ کی عمر کے متعلق احادیث لائے گئے ہیں نیز اس بات کا بیان ہے کہ نی کریم الله نے مکہ میں اپنی عمر کا کتنا حصہ گزارا ہے اور مدینہ میں کتنے سال تک رہے۔

(۱) حدّثنا احمد بن منيع ثنا روح بن عبادة ثنا زكريا بن إسحاق ثنا عمرو بن دينار عن ابن عبّاس قال مكث النبيّ عَلَيْكُ بمكة ثلاث عشرة يوحي إليه وبالمدينة عشر اوتوفي وهو ابن ثلاث وستين سنة(١).

ترجمه: حضرت عبدالله بن عبال سے روایت ہے کہ نبی اکر میلیہ مکہ مکرمہ میں تیرہ سال تک رہے جن میں آ ہے گائے پر وحی نازل ہوتی رہی اور مدینه منورہ میں دس سال 

ثلاث عشرة سنة يوحى اليه الغ، بيات مسلم بكه ني كريم الله كاعمر بعثت كوقت چالیس سال تھی اس کے بعد مکہ میں آپ ایک تیرہ سال مزیدرہے۔ گویا مکہ میں آپ ایک اپنی عمر کے تریین (۵۳)سال گزار چکے تھے اور بقیہ عمر مدینہ میں گزاری۔ نبی اکر مہانے کی عمر کے بارے میں سیجے ترین روایت یمی ہے۔

> (٢) حدّثنامحمّدبن بشّارثنامحمّدبن جعفر عن شعبة عن أبي إسحاق عن عامر ابن سعد عن جريرعن معاوية أنّه سمعه يخطب قال مات رسول الله عَلَيْكُ وهو ابن ثلاث وستين و ابو بكر وعمرو اناابن

(١) صحيح بخارى ١/ ٥٥٢ كتاب مناقب الإنصارباب هجرة النبي مَنْكُ واصحابه إلى المدينة، صحيح مسلم ٢٠/٢ كتاب الفضائل باب كم اقام النبي عُليه بمكة الخ، جامع ترمذي ١٨٣/٢ كتاب المناقب باب محاسن رسول الله عَلَيْتُ كم كان حين مات، مسنداحمد ا ١٠٥/مختار)

ثلاث وستين سنة (١).

ترجمه: جربر بن حازمٌ كہتے ہيں كه انہوں نے حضرت امير معاوية سے خطبہ كے دوران سنا کہ نبی اکرم میں تھے تر یسٹھ سال کی عمر میں وفات یائے ،ابو بکر اور عمر بھی اسی عمر میں وفات مائے ،اور میں بھی تریسٹھ برس کا ہوں۔

428

مات رسول الله عَلَيْكُ ، حضرت امير معاوية ني كريم الكلَّه كي عمر كي ساته ساته ايني سي بل ان اکابر صحابہ کی عمریں بھی بیان فرماتے ہیں جوخلافت سے سرفراز ہو چکے تھے۔فرماتے ہیں کہ نبی کریم آلیک اورشیخین کی عمر س تریسی سال تھیں جبکہ حضرت عثان اور حضرت علی کی عمریں وفات کے وقت تریسی سال نہ تھیں (۲)۔ یہ کہتے وقت گویا آیٹ کی تمناتھی کہ اسی سال مجھے موت نصیب ہو کیونکہ اس خطبہ کے وقت خود حضرت امير معاوية كي عمر بهي تريس طيسال تقي ليكن آي الواس عمر مين وفات كي سعادت ندل سكى بلكه آي كي عمراتی سال ہے بھی بڑھ گئ اگر چہ آیٹ کی نیت اور جذبہ قابل فقد رضرور ہے۔

> (٣) حدّثنا حسين بن مهدى البصرى ثنا عبدالرزاق عن ابن جريح عن الزهري عن عروة عن عائشة أنّ النبيّ عُلَيْتُهُ مات وهو ابن ثلاث و ستين سنة (٣).

> ترجمه: حضرت عائش سے روایت ہے کہ نبی اکرمیالی تریس میں کی عمر میں وفات یائے۔

(١) صحيح مسلم ٢/٠٢ كتاب الفضائل باب كم اقام النبي مَلْكِ بمكة والمدينة ، جامع ترمذي ٢٨٣/٢ كتاب المناقب باب في سنّ النبي عُلِيليّ كم كان حين مات، السنن الكبرى للنسائي كتاب الوفاة، مسنداحمد ١١/٣ و (مختار)

(٢) جَكِيمَال مجال سيوطي في في المعاب على بن ابي طالب... بوى له بالخلافة يوم قتل عثمان وقتل ليلة الجمعة لشلاث عشرة بقيت من رمضان سنة أربعين بالكوفة وهو ابن ثلاث وستين سنة. (اسعاف المبطّابر جال المؤطأ ٩ ٧٤) (مختار)

(٣) جسامع ترمىذى ٢٨٣/٢ كتساب السمنساقب بساب في سن النبي البي البي كم كان حين مات، مسنداحمدمصنف عبدالرزاق. (مختار) شسلات و ستیسن، حضرت عائش کا پیول نبی کریم آلیسی کی عمر کے بارے میں صحیح ترین شار کیا جاتا ہے۔ اس لئے حضرت عائش کی دوسری روایت (۱) جس سے آپ آلیسی کی عمر ساٹھ برس معلوم ہوتی ہے کی تاویل ضروری ہے۔

(٣) حدّثنا احمد بن منيع ويعقوب ابن إبراهيم الدورقى قالاثنا اسماعيل بن عليّة عن خالدالحدّاء حدّثنى عمّارمولىٰ بنى هاشم قالت سمعت ابن عبّاس يقول توفى رسول الله عليه وهو ابن خمس وسين (٢).

ترجمہ: حضرت ابن عباس کہتے ہیں کہ نبی اکرم اللہ پینسٹھ (۲۵) برس کے تھے جب وہ وفات یائے۔

خمس و ستین ، حضرت ابن عباس کی اس روایت میں آپ الله کی عمر پنیسٹھ (۲۵) برس بتائی کے جبکہ اس سے قبل کی احادیث میں تر یسٹھ (۲۳) کا قول آیا ہے اور اس کتاب کی ابتدائی حدیث حضرت انس کی حدیث میں جواس باب میں آگے بھی آرہی ہے ساٹھ سال کی روایت بھی آئی ہے۔ ان تینوں روایات میں سب سے اچھی تطبق یہ ہے کہ حضرت انس کی روایت میں کسر کو نفو کر کے اس کا اعتبار نہیں کیا گیا جبکہ حضرت ابن عباس کی روایت میں دوسال کا اضافہ کیا گیا ہے۔ تا کہ ساتویں دہائی کو نصف تک پورا کیا جا سکے یا اس کئے کہ اس میں ولادت اور وفات کے دوسال ذاکر ثنار کئے گئے ہیں جبکہ حضرت عروق کے نو حضرت ابن عباس کی روایت کو فلطی برجمول کیا ہے اور اسے مرجوح قرار دیا ہے۔

(۵) حدّثنامحمّدبن بشّارومحمّد ابن أبانٍ قالاثنا معاذ بن هشام حدّثنى أبي عن قتادة عن الحسن عن دغفل بن حنظلة أنّ النبيّ عَلَيْتُهُمْ

(۱)عن عائشة وابن عباس أنّ النبع لبث بمكة عشرسنين ينزل عليه القرآن وبالمدينة عشر المنه و المدينة عشر أربخارى ج٢ص ١ ٢٣)واوّلوه أنّه ما اسقطامدة فترة الوحى من لبثه بمكة وكانت نحوثلاث سنين (املاح الدين)

(۲)صحیح مسلم ۲٬۰۲۲ کتاب الفضائل باب کم اقام النبی الله بمکة والمدینة، جامع ترمذی ۱۸۳/۲ کتاب المناقب باب فی سن النبی الله کان حین مات، مسنداحمد ۲۲۳/۱ (مختار)

حضرت دغفل: وهوابن خمس و ستین، اس مدیث مین بھی حضرت ابن عبال کی مدیث کی طرح پنیسٹھ سال بتائی گئی ہے اور اس کی وہی تو جیہات ہو نکیں جو بیان ہو پکی ہیں۔

و دغفل الانعرف له سماعا النع، وغفل بن حظاله سدوی کے بارے میں اختلاف ہے۔ امام حمیدیؓ، نوح بن حبیب، ابن حبان اور احمد بن ہارون البردیجی نے اسے صحابی قرار دیا ہے اور بیر کہا ہے کہ صرف یکی ایک روایت ان سے مروی ہے لیکن امام بخاریؓ اور دیگر مخفقین کا غذہب ہے کہ دغفل مخفر م تابعی بیں لیعنی نبی اکر میں ایک رمانہ میں آپ موجو دو قصے لیکن ان سے ملاقات کا شرف خیل سکا۔ امام احمد جمعی بیٹیں۔ کہتے ہیں کہ' ما اور کی' محصے پیٹیس۔ کہتے ہیں کہ' ما اور کی' محصے پیٹیس۔ کہتے ہیں کہ' ما اور کی' محصے پیٹیس۔ البتہ یہ بات مسلم ہے کہ دغفل سدوی کا علم میں ایک بہت بڑا مقام تھا خصوصاً علم النساب اور عرب قبائل کی تاریخ میں انہائی ماہر مصحتی کہ اس سلط میں ابو بکر صد این سے بھی آپ کا معارضہ منقول ہے عرب قبائل کی تاریخ میں ان کی مہارت کو دکھر کے کہ کر حضرت امیر معاویہ نے ان کو یزید کا استاد بنایا تھا کہتے ہیں کہ وی میں خوارج کے ساتھ جنگ دولا ب میں وہ پانی میں ڈوب کروفات پائے بعض حضرات نے بیل کہ ورلقب دغفل بتایا ہے۔

ا مام ترفدیؓ بھی ان کے بارے میں جمہور کے قول کے مطابق کہتے ہیں کہ نبی اکرم ایک سے ان کا ساع تو ٹابت نہیں البتدان کے زمانہ میں دغفل آ دمی لیتنی بالغ تھے۔

(١)مجمع الزوائد ١ / ١ ١ ،الدلائل للبيهقي ٤ / ٢ ٣٠ (مختار)

كان رسول الله عليه الله عليه السبب الطويل البائن و لابالقصير و لابالأبيض الأمهق و لابالاؤدم و لابالجعد القطط و لابالسبط بعثه الله تعالىٰ على راس اربعين سنة فاقام بمكة عشرسنين وبالمدينة عشرسنين وتوفاه الله تعالىٰ على راس ستين سنة وليس في راسه ولحيته عشرون شعرة بيضاء(١).

ترجمه: حضرت انس سے روایت ہے کہ نبی اکر مہلیک نیزیادہ لمجاقد والے تھنہ پہت قد تھے نہ الکل سفید رنگ کے تھے نہ بالکل گندم گون تھے نہ آپ الکی سفید رنگ کے تھے نہ بالکل گندم گون تھے نہ آپ الکی سفید رنگ کے تھے نہ بالکل سید سے (کھلے) بالوں والے تھے۔ چالیس سال کی عمر میں آپ اللہ کا گفتہ کو اللہ تعالی نے مبعوث فرمایا۔ پھر آپ اللہ کہ میں دس سال رہے اور ساٹھ سال کی عمر میں وفات پائی اس وقت رہے اور مدینہ میں بھی دس سال رہے اور ساٹھ سال کی عمر میں وفات پائی اس وقت آپ اللہ ہے نہیں تھے۔

(2) حد ثناقتیبة بن سعید عن مالک بن أنس عن ربیعة بن أبی عبدالرحمٰن عن أنس بن مالک و نحوه.

امام ترفدي نے دوسري سند فدكوره حديث كيلتے بيان كي۔

لیس بالطویل البائن النے، بیحدیث شائل ترفدی کی سب سے پہلی حدیث ہے اور وہاں اس کی کمس سے پہلی حدیث ہے اور وہاں اس کی کمس تشری گزر چکی ہے چونکہ اس میں حضور حقاقہ کی عمر کا بیان ہے اس کے اس باب میں بھی اس حدیث کو لایا گیا ہے البت عمر جوسا تھ سال بتائی گئی ہے اس کی توجیہ غالباً یہی کی جاتی ہے کہ حضرت انسٹ نے کسر (اکائی) کا اعتبار نہیں کیا اور عقود یعنی دہائیوں کا ذکر کیا ہے۔

<sup>(</sup>۱) صحیح مسلم ۲۲۰۲۲، جامع ترمذی ۲۸۱۲، مؤطاهام مالک ص ۱۱، م مسنداحمد ۲۲۰۸۲ (مختار)

## خلاصة باب

اس باب میں نبی اکرم اللہ کے عمر مبارک کے بارے میں احادیث کا ذکر ہے۔ اور تین قتم کی روایات امام ترفدی گا لائے ہیں یعنی ساٹھ سال ، تریسٹھ سال اور پینسٹھ سال کی روایات ہیں۔ اول الذکر اور مؤخر الذکر مؤول ہیں اور صحیح قول تریسٹھ سال کا ہے۔

## مياله ۵۴. باب ماجاء في وفات النبي عَلَيْكُمْ حضورا قدر علية كوفات كابيان

433

حضور نی کریم اللہ کی وفات کے بارے میں اکثر محدثین کی رائے یہ ہے کہ بیرسانحہ ۱۲ ارہیج الاول اچوپیش آیا بعض کے نز دیک حضور علیہ کی وفات کی بہ تاریخ غلط ہے۔اس اختلاف کا سبب تقویم کے بعض ماہرین کاوہ اعتراض ہے جووہ اس تاریخ برکرتے ہیں۔وہ کہتے ہیں کہ نو (۹) ذی الحجیہ اچھری کو جة الوداع كموقعه يربالا تفاق جعه شريف كا دن تفا اور الربيج بياتوكسي صورت من بهي ١١ريج الا ول• اچکو پیرکا دن نہیں پڑتا۔خواہ بعد کے تین مہینے تیس دن کے ہوں یا انتیس کے۔یا بعض تیس کے اور بعض انتیس کے۔جبکہ نبی کریم اللہ کی رحلت بالا تفاق پیر کے روز ہوئی ہے۔اس لئے بعض محققین کا کہنا ہے۔ کہ نبی کریم آلیات کی وفات ۲ رہیج الاول(۱) کوہوئی تھی۔ جبکہ بعض لوگوں نے ۱۲ ررہیج الاول کی تاریخ میں تاویلات کاسہارالیاہے۔

رسول التُعَلِينَةُ كے مرض وفات كى ابتداء دردسر سے شروع ہوئى ۔ گرمى كا موسم تھا۔ حضور الله ایک جنازے میں شرکت فرمار ہے(۱) تھے کہ سرمیں درد ہونے لگا۔ پھر بخارنے آلیا۔اس (١) وقدروي البيهقي باسناد صحيح الى سليمان التيميّ أنّ رسول اللهُ عَلَيْهُ مرض الاثنتين وعشرين ليلة من صفر وكان اول يوم مرض فيه يوم السبت وكانت وفاته اليوم العاشريوم الاثنين لليلتين خلتامن شهر ربيع الاول ( ا م) والله أعلم ٢ اجمع الوسائل ج٢ ص٢٥٣)

(۲)علامہ مناویؓ کے بقول بہاری شروع ہونے کے روز آپ ﷺ جنت اجتبع میں تشریف لے گئے تھے۔ وہاں اہل مقبرہ کیلئے دعافر مائی۔ وہاں سے واپسی برحضرت عائش کے پاس تشریف لائے ان کوبھی اس روز سردرد کی تکلیف تھی۔ قتم میرے سر میں درد ہے۔ پھراز راہ ملاطفت آپ اللہ نے فر مایا کہ اگر تو مجھ سے پہلے مرگی تو میں تیری جمینر و تکفین اپنے ہاتھ سے کروں۔ تیری نماز جنازہ خود ہڑھاؤں اورخود ہی تھھ کو فن کر دوں۔انہوں نے عرض کیا کہ میں تو آ ہے ﷺ کو جانتی ہوں۔اگرتم مجھ سے فارغ ہو گئے تو اسی رات کو کسی نئی دلہن کومیر ہے جمرے میں لے آؤ گے۔جس پر آپ اللہ نے نتیسم فر ماما۔اوراسی دردسر نے طول پکڑا جو ما لآخر جان لیوا ثابت ہوا۔شاید حضرت شیخ مدخلد نے بقیع میں حاضری کو جناز ہ سے تعبیرکیاہے۔(مختار) مرض کی ابتداء حضرت عا نشر کے حجرے میں ہوئی۔ لیکن حضور علیہ اوراز واج مطہرات کے درمیان عدل اورقتم کا اتنایاس تھا کہشدید بیاری کی حالت میں بھی باری باری از داج مطہرات کے حجروں میں پھروانے کا تھم دیا تا کہ کسی بیوی کی حق تلفی نہ ہو۔ ظاہر ہے کہ از واج مطہرات میں بھی ہرایک کی خواہش ہوتی تھی۔ کہ بیاری کی حالت میں نبی کر پیم اللہ ان کے پاس رہیں تا کہ وہ بھی ان کی تیار داری اور خدمت کا شرف حاصل کرسکیں ۔

434

حضرت میمونڈ کے گھر میں آپ آیا ہے کی تکلیف میں اضافہ ہوا۔ حالت مرض میں ادھرا دھر پھرانے سے نی کریم اللہ کو بھی تکلیف ہوتی تھی۔ نیز ہر روز جگہ اور تیار داروں کی تبد ملی مرض میں مزید شدت کا یا عث بنتی تھی ۔لہذا تمام از واج مطہرات نے آپس میں مشورہ کر کے فیصلہ کیا کہ چونکہ قلبی محبت کی وجہ سے نی کریم اللہ کا دلی اطمینان حضرت عائشہ کے جرب میں زیادہ ہوتا ہے۔اس کئے روز روز قیام گاہ بدلنے کی بحائے رسول اللہ اللہ علیہ بیاری میں متنقلاً حضرت عائشہ کے جمرہ میں رہیں۔ چنانچہ آپ اللہ فیا نے مرض وفات کے ہارہ یا چودہ دن اس جمرے میں گزارے۔

برخض کی موت کسی نه کسی حد تک افسوسناک موت کے درواز ہے بریے پٹاہ صبر واستقامت: اور اندو ہنا ک ضرور ہوتی ہے۔ گرنی کریم آپ کی موت تو روز اول سے لیکر آج تک امت کیلئے ایک در دناک اور عظیم حادثہ اور سانحہ شار ہوتا ہے۔ اور ظاہر ہے کہ انسان جتنا بھی عظیم ہوتا ہے موت کے وقت اس کی عظمت کے اپنے ہی مظاہر سامنے آتے ہیں۔ چنانچہ وہ تخل ،حوصلہ،صبر وشکر اور مصائب وشدا کد کی برداشت کا اس نازک ترین موقعہ برمظاہرہ کرکے اپنی عظمت کا ثبوت دیتا ہے۔حضرت مولا ناابوالکلام آزادمرحوم نے عظیم شخصیتوں کی وفات کے متعلق الہلال میں 'انسانیت موت کے دروازے یو' کے عنوان سے ایک سلسلہ شروع کیا تھا۔ جس میں عظیم لوگوں کی وفات کے احوال کھے ہیں۔ اس کتاب میں مولانانے حضور علیہ کے سانحۂ ارتحال کے احوال بہت مؤثر اور در دناک انداز میں لکھے ہیں۔ان کے علاوہ بھی بہت سے لوگوں نے وفات اور مرض وفات کے بارے میں بڑے پُر در داور پُرسوز پیرائے میں کتابیں کھی ہیں۔ ا مام تر مذی بھی اس بارے میں رسول التواقیہ کی موت، مرض وفات کے شدائد اور اس موقع پر

حضور الله کے اطمینان اور صبر وسکون کاذکرکرتے ہیں۔ پھروفات کے بعد جنازے اور کفن وفن کے حالات بیان کرتے ہیں۔ جس سے یہ بھی واضح ہوجاتا ہے کہ صحابہ کرام گواللہ تعالی نے کیسے صفات سے نواز اتھا۔ اور کیسے انہوں نے استقامت سے اس سانح کری کا سامنا کیا۔ اور کینے لوگ تھے جوفر طغم سے حاس گم کر بیٹھے تھے۔

مرجع امة صدين اكبرين ديه على معلوم بوگا كدابو برصدين كامقام صحابه كانگاه ش كيسا يه على البوبر صدين كامقام صحابه كانگاه ش كيس يه على البوبر صدين البيل كوگر صورة البيل ا

(۱) حدّثناأبوعمّارالحسين بن حريث وقتيبة بن سعيد وغيرواحدقالوا ثنا سفيان ابن عيينة عن الزهرى عن أنس بن مالک قال اخرنظرة نظرتها إلى رسول الله الله الله السنارة يوم الاثنين فنظرت إلى وجهه كانه ورقة مصحف والناس يصلّون خلف أبى بكرفاشار إلى النّاس ان اثبتواوابوبكريؤمّهم والقى السّجف وتوفى من اخرذلك اليوم(۱).

(۱)صحیح مسلم ۱/۹/۱ کتاب الصلواة باب استخلاف الامام اذاعرض له عذراً الخ، السنن الصغری للنسائی کتاب الجنائز الصغری للنسائی کتاب الجنائز باب الموت یوم الاثنین، سنن ابن ماجة ص ۱۱ کتاب الجنائز باب ماجاء فی ذکر مرض رسول الله عَلَيْتُ (مختار)

ترجمہ: حضرت انس کے بین کہ نبی اکر مہلی کا آخری دیدار میں نے سوموار کے دن اس وقت کیا جب (صنح کی نماز کے دوران) آپ آلی نے نے جرے درواز بے بیس کہ بنیا آپ کی نماز کے دوران) آپ آلی نے نے جرے درواز بے بیس نے آپ آلی کے جرے کود یکھا تو وہ (صفائی، انواراور طماعیت میں) قرآن پاک کے ورق جیسا تھا۔ لوگ اس وقت ابو بکر صدیق کے پیچھے نماز پڑھ رہے تھے۔ آپ آلی نے لوگوں کو اشارہ کر کے تھم دیا۔ کہ یو نبی جے رہو۔ ابو بکر صدیق امامت میں مصروف تھے آپ آلی نے نے دوہ واپس ڈال دیا۔ اورائی دن کے آخر میں آپ آلی نے فات یائی۔

امت كاحالت سجده مين آخري مشامره: (١) آخونظرة نظرتها الخ، حضرت عاكثم ك تجرے کا درواز ہ مسجد نبوی آلیاتہ کی طرف کھاتا تھا۔ آپ آلیاتہ مرض وفات میں تین دن تک مسجد میں نہ آسکے۔ صحابہ کرام اور خودآ پینا کے ملنے کا اشتیاق تھا۔ زندگی کے سب سے آخری دن میں کو دروازے سے بردہ اٹھا کردیکھا۔ کہ تمام صحابہ دربارالی میں دست بستہ ہیں۔صدیق اکبڑامامت فرمارہے ہیں۔ امت کے ساتھ نی اکر میں کے این کی بیآخری ملاقات تھی کتنی عظیم نعت ہے کہ اللہ تعالی زندگی کے آخری کھات میں آ ہے اللہ کو کون واطمینان دلانے کیلئے بیرمنظر دکھلا رہے ہیں۔گویاوہ نبی کریم اللہ کو نتانا جا ہے ہیں۔ كه آپ آلینه نے امت كیلئے جتنی قربانیاں دیں جو تكالیف اورمصائب امت كیلئے جھیلیں وہ رائيگاں نہیں تحكيل - اورتوحيد كاجو يوداآب نے تيس (٢٣) سال قبل لگايا تھا۔اسے سينيا اوراس كي نشونما ميں جا نكاه مصائب سہے۔ بالآخروہ ثمرآ ور ہوا۔ یہی لوگ ہی تو تھے جولات ومنات اورعزیٰ کے قدموں میں بیٹے تھے۔ جہالت اورصنم برستی کے ظلمات میں سرگر داں ٹھوکریں کھار ہے تھے مگرآج اللہ تعالیٰ کے در برسر بسجو د ہیں (۲)۔ بیزنظارہ اس لئے بھی دکھایا گیا کہ نبی کر پھم اللہ اللہ تعالیٰ کے ہاں آخری گواہی بھی یہی دے سکیں (۱) آخر نظرة الغ، آخرمبتداء ب\_اور كشف السنارة خركا قائم مقام برجبك يوم الاثنين ظرف بريقذير عبارت يون بوگي آخرنظرة نظرتها الى وجهه حين كشف الستارة يوم الاثنين \_(اصلاح الدين) (۲)اور نی اکر مواقعہ کیلیجاس سے بری خوثی کی بات کوئی تھی ہی نہیں۔ چنانچے بخاری شریف کی روایت میں ہے کہ نہ ہے تبسم يضحك، لينى برد كيمرآ سيالله وثى سينس يرك (اصلاح الدين) کہاےاللہ میں نے ان لوگوں کو ہر طرف سے کاٹ کرتیری ہارگاہ میں جھکا ہوا چھوڑا تھا۔اوروہ سربسجو دیتھے ، میں نے اپنا فرض ادا کر دیا ہے۔ پھراس کے بعدا بےاللہ تعالیٰ تو ہی ان کانگران ریا۔

437

مصحف قرآن سے رُخ زیبا کی تشبیہ: حضرت انس فرماتے ہیں کہ حضور نبی کریم آیا ہے نے باہر جمانک کرد یکھا تو چیرۂ انورکود کیھتے ہوئے بہاحیاں ہوا۔'' کانہ ورفتہ مصحف'' مصحف سمیم کے ضمہ کے ساتھ اشہر ہے۔ فقہ بھی مشہور ہے اور کسرہ بھی جائز ہے۔ یہ بلیغ کلام اور بےنظیر تشبید حضرت انس نے قرآن مجید کے نورانی صفحہ کے ساتھ چرہ انور کو تشبید دی ہے۔ گویا جس طرح قرآن مجید کے اوراق میں انوار ہوتے ہیں۔اوران انوار کا بوری طرح احساس بھی صحابہ ہی کو ہوسکتا ہے۔اس طرح نبی کریم ایک کا چیرہ مبارک ا نوارالہی ، وقاروبشاشت اوراطیمنان وسکون کی وجہ سے دمک رہا تھایا پھراس تشبیہ سے غرض حضور علیہ کے صبر وشکر اور اس طماعیت کی نشا ند ہی ہے۔ جوامت کوالیی حالت میں دیکھ کرنی کریم تالیقہ کے چیزہ انور برعیاں تھی۔ نیز مسرت کی اس کیفیت کا یہ ہمی خوب چلتا ہے۔ جورفیق اعلیٰ سے ملنے کے تصور سے نبی كريم الله كوماصل بوريي تقي\_

الممت الى بكر: والنّاس يصلّون خلف أبي بكرالغ ، ني كريم اللّه في يرده المايار وصحابة سمجے کہ شاید نبی کر پم اللہ مسید میں تشریف لارہے ہیں۔ چنانچہ ان میں تعلیل مجی، مگرنبی کریم اللہ نے لوگوں کے اضطراب کومسوس کر کے اطلاع دی کہ میں نہیں آ رہا۔ اس لئے صفوں کو نہ تو ڑو، اپنی نمازیں پوری کرو،اس بات میں حضرت ابو بکرصد ہوتا کی امامت کی تقریر و تائید بھی ہےاور بیاشارہ بھی ہے کہ آئندہ کیلئے ان کی اقتداء واتباع میں ثابت قدم رہو۔خالفین ومعاندین، سازشی اور منافقین ڈ گمگاہٹ پیدا کرنے کی بار ہا کوشش بھی کریں اورعظمت الی بکر اوران کی خلافت کے بارے میں لب کشائی بھی کرتے رہیں لیکن تم لوگ ثابت قدم رہواورا جماعیت کو برقرار رکھتے ہوئے ثبات اختیار کرو۔

والقبي السبجف وتوفي الغ ،سجف سين كفتم اوركسره دونول كماته جائز بـ دروازے کے بردے کو کہتے ہیں۔ جبکہ بعض لوگوں کے ہاں بجف وہ بردہ ہوتا ہے جو دروازے کے دو طاقوں کی طرح درمیان میں چیرا گیا ہو۔ آخریوم پراشکال کاحل: صدیث سے بظاہر بیمعلوم ہوتا ہے کہ نبی کریم اللہ اس روز دن کے آخریس وفات یا گئے ۔ مگراس پراشکال وار دہوتا ہے کہ توی روایات کے مطابق نبی کریم اللہ نے نے جاشت کے وقت رحلت فرمائی تھی۔ بلکہ صاحب جامع الاصول نے اس برا تفاق نقل کیا ہے۔ اس کو مدنظر رکھتے ہوئے آخرالیوم کالفظ درست نہیں بنتا۔اس کا جواب یہ ہے کہ آخر کا اطلاق کبھی دخول فی النصف الثانی پر بھی ہوا ہے اور ضحور کبری لینی چاشت کا وقت بھی زوال کے قریب ہوتا ہے گویاضحور کبری کو قرب کی وجہ سے زوال کہا گیا ہے پھرزوال سے آخرالیوم کے لفظ سے تعبیر کی گئی۔ دوسرا جواب یہ ہے کہ آخر کا لفظ کہی مقم بھی آتا ہے جس طرح مین کالفظ بھی بھی تھم اور زائد مستعمل ہوتا ہے۔

438

تويبال بھي آخر كامعني مقصود ومرادنہيں ہوگا بلكه مطلب به ہوگا كه نبي كريم الله اسى دن انتقال کر گئے۔ تیسرا جواب یہ ہے کہ نبی کریم اللہ جاشت کے وقت انتقال فرما گئے لیکن کسی کوبھی آ ہے اللہ کی وفات کا یقین نہیں آیا۔خصوصاً حضرت عمر تق آ ہے اللہ کی موت کے پارے میں سننے کو تیار نہ تھے۔ پھر حضرت ابو بمرصدین فی نے بیعقدہ حل فرمایا مگرآ پ کے فیصلے کاعلم اکثر صحابہ کواس وقت ہوا جب دن کا بیشتر حصه گزر چاتھا۔ یوں لوگ بیجھنے لگے کہ آخرا لنہار میں حضور علیقے کی وفات ہوئی تھی۔

> (٣) حدَّثنا محمَّدبن مسعدة البصريُّ ثنا سليم بن احضر عن ابن عون عن إبراهيم عن الأسود عن عائشة قالت كنت مسندة النّبيُّ عَلَيْكُمْ إلى صدرى اوقالت إلى حجرى فدعا بطست ليبول فيه ثم بال صديله فمات عَلَيْتُ إِن .

> ترجمه: حضرت عائشه رضى الله عنها كهتى بين كه مين نے نبي اكرم الله كواييز سينے ير سہارا دے رکھاتھا کہآ ہے تالیجہ نے ایک طست منگایا تا کہاس میں پیشا ب کریں پھر اس میں پیشاب کیااس کے بعد آپ اللہ وفات یائے۔

(۱) صحيح بخاري ۱ / ۳۸۲ كتاب الوصاياباب الوصاياقول النبيّ وصية الرجل مكتوبة عنده، صحيح مسلم ٢/٢ كتاب الوصية باب ترك الوصية لمن ليس شئ يوصى به، سنن ابن ماجة ص ١١ كتاب الجنائز باب ماجاء في ذكر موض رسول الله مَلْكُ الله مِلْكُ الله مُلْكُ الله مِلْكُ الله الله مِلْكُ اللهِ مُلْكُ الله مِلْكُ اللهِ مُلْكُولُ الله مِلْلهُ مُلْكُ اللهِ مُلْكُ اللهِ مُلْكُلْمُ اللهِ مِلْ <u>حالت نزع میں طہارت اور بردے کا اہتمام:</u> فدع ابطست لیبول فیہ (۱)، طست مجمی لفظ ہے۔ عربی میں اس کا ہم معنی طش مستعمل ہے کھلے برتن کو کہتے ہیں لیکن چونکہ طست مؤنث ہے اس لئے لیب ول فیہ کے میں میں تاویل کی ضرورت پیش آگئ۔ چنا نچ ظرف یا ذکور کی تاویل سے اس کی طرف فیہ کا ضمیر راجع ہوگا۔

شدید بیاری اور انتهائی ضعف کے باوجود نبی اکر میلیک صفائی اور نظافت کا بہت زیادہ اہتمام فرماتے تھے حتی کہ زندگی کے بالکل آخری کھات میں جب آپ بستر سے اتر نہیں سکتے ۔ پھر بھی چکہی جسیا کوئی برتن منگوایا اور بردہ کرا کر بول کیا۔

ملاعلی قاریؒ نے فبال کا ترجمہ کیا ہے کہ 'ای فتخلی من الدنیا'' یعنی آ پھی کے باس ماعلی قاریؒ نے فبال کا ترجمہ کیا ہے کہ 'ای فتخلی من الدنیا'' یعنی آ پھی کے باس کے باس ماضر ہونے سے قبل دنیا سے ممل طور پر تجر داختیار کرنا جا ہے تھے۔ اس لئے بول کیا تا کہ دنیا سے رہا سہا تعلق ختم ہوجائے۔

فسسات اس کاریمطلب نہیں کہ نمی کریم اللہ پیشاب کے فور أبعد وفات پائے یہاں پرصرف آپ اللہ کے متحق کا بیان مقصود ہے۔ اسی وجہ سے حالت وفات کے دیگر واقعات کا ذکر یہاں موجو دنییں ہے ورنداس کے بعد آپ اللہ کا کمسواک کرنا، اور پانی میں ہاتھ ڈال کر چیرے پر ملنا، حضرت عا تشرضی اللہ عنہا سے باتیں کرنا، اللہ تعالی کی طرف سے دنیا وآخرت میں تخییر اور 'فی السوفیق الاعلی ''کہہ کر وصال کا اختیار کرنا وغیر وصیح احادیث سے ثابت ہے۔

گودعا تشرکی یاعلیٰ کی: البته یهاں ایک اشکال باقی رہتا ہے کہ امام حاکم اور ابن سعد نے کھر وایات روایت کی ہیں کہ وفات کے وقت نی اکرم اللہ وجہد کی گود ہیں تھا۔ اس کے دوجواب منقول ہیں اول یہ کہ اس روایت کے جتنے بھی طُرو ق ہیں کوئی بھی ضعف وطعن سے خالی نہیں ہے دوجواب منقول ہیں اول یہ کہ اس روایت کے جتنے بھی طُرو ق ہیں کوئی بھی ضعف وطعن سے خالی نہیں ہے اس لئے یہ روایت ان صحیح ترین روایات کا مقابلہ نہیں کر سکتی جو تمام صحاح ستہ میں درجنوں طرق سے مروی ہیں اس لئے یہ رائے کہی ہے کہ حضرت عاکشہ کے سینے پر سرمبارک رکھ کرآپ اللی کا انتقال ہوا تھا۔ ہیں اس لئے رائے کہی ہے کہ حضرت عاکشہ کے سینے پر سرمبارک رکھ کرآپ اللی کا انتقال ہوا تھا۔ (۱) علام مناوی نے اس جمع الوسائل ۱۲ (مختار)

بعض لوگوں نے بہ بھی کہا ہے ک<sup>م</sup>کن ہے کہ وفات سے پچھ در قبل حضرت علیؓ نے بھی آ پے ایکھ کوسہارا دیا ہواس کے بعدعین وفات کے وقت حضرت عا کشٹرنے سہارا دیا ہولہذا دونوں روایات جمع ہوسکتی ہیں۔ بہر حال اس حدیث میں نبی اکر میں ہے کے ضعف کے ساتھ ساتھ حضرت عائش کے عظیم مرتبہ اور مناقب کی طرف بھی اشارہ موجود ہے۔ کہ نبی کریم اللہ اپنی آخری سانسوں میں آیا کی گود کاسہارا لئے ہوئے تھے۔ بیاعز از حضرت عائشہ کے سواکسی اور کو حاصل نہیں ہوا۔ بخاری شریف کی ایک روایت میں ان لمحات کا بہترین نقشہ موجود ہے(ا)۔

440

(١) إِنَّ عائشيةٌ كانت تقول من نعم الله على إنّ رسول الله عَلَيَّةٌ توفي في بيتي وفي يومي وبين سحرى ونحرى وان الله جمع بين ريقي وريقه عند موته دخل على عبدالرحمن وبيده السواك وانا مسندة رسول الله عَلَيْظِ فرايته ينظر اليه وعرفت انّه يحبّ السواك فقلت آخذه لك؟ فاشار برأسه ان نعم فتناولته فاشتد عليه وقلت الينه لك فاشاربراسه ان نعم فليّنته فامّره. وبين يديه ركوة او علبة يشك عمر فيها ماء فجعل يدخل يديه في الماء فيمسح بهما وجهه يقول لااله إلاّالله إنّ للموت سكرات ثم نصب يده فجعل يقول في الرفيق الاعلىٰ حتى قبض ومالت يده . (بخارى شريف ج٢ص ٢٢٠) (اصلاح الدين)

اورمشكوة كروايت مين اورجهي عجيب اورعمره أتشر كينيا كيابيدعن جعفو بن محمّد عن أبيه أنّ رجلاً من قريش دخل على أبيه على بن الحسين فقال الاأحدّثك عن رسول الله عَلَيْكُ قال بلي حدّثنا عن ابعي القاسم عَلَيْكُ قال لمّامر ض رسول اللُّه عَلَيْكُ اتاه جبر ئيل فقال يا محمد إنّ الله ارسلني اليك تكريماً لك وتشريفاً لك خاصة لك يسألك عمّا هو اعلم به منك يقول كيف نجدك قال اجدني ياجبر ئيل مغموماً أجدني يا جبر ئيل مكروباً ثمّ جاء اليوم الثاني فقال له ذلك فردّ عليه النبي عُلْنِينَ كما رد اول يوم ثم جاءه اليوم الثالث فقال له كما قال اول يوم ورد عليه كما رد عليه وجاء معه ملكٌ يقال له اسماعيل على مائة الف ملك كل ملك على مائة الف ملك فاستاذن عليه فساله عنه ثمّ قال جبرئيل هذاملك الموت يستاذن عليك مااستاذن على أدمى قبلك والايستاذن على ادمى بعدك فقال ائذن له فاذن له فسلّم عليه ثمّ قال يا محمد انّ الله ارسلني اليك فان امرتني ان اقبض روحك قبضتُ وان امرتني ان اتركه تركته فقال وتفعل ياملك الموت قال نعم بذلك امرت وامرت إن اطبعك قال فنظر النبيّ عَلَيْ إلى جبوئيل (بقما كُلُصْفِيرٍ)

القاسم بن محمد عن عائشة أنَّها قالت رأيت رسول اللَّهُ عُلَيْتُهُ وهو بالموت وعنده قدح فيه ماء وهو يدخل يده في القدح ثم يمسح وجهه بالماء ثمّ يقول اللّهمّ اعنيّ على منكرات الموت اوقال على سكرات الموترن.

441

ترجمه: حضرت عائش قرماتی بین که میں نے نبی کریم الله کودیکھا جب آپ الله وفات فرمارہے تھے آ ہے آئیں کے پاس ایک پیالہ تھا جس میں یانی تھا نبی اکر مہلکے اس میں ہاتھ ڈالتے تھے اور ( گیلا ہاتھ ) منہ پر پھیرتے تھے۔ پھریہ دعا فرماتے تھے كهاب الله موت كي تختيون يرميري مد دفر مايئي

عن القاسم بن محمدالخ، برحضرت محمد بن الى بكرك بيش اورحضرت عا كشرك ميسيع بيل وهوبالموت، لفظ بالموت كالمتعلق مخذوف بيات تقديريه بيوهو مشرف بالموت ليني ہ ساللہ آپانی موت کے میں تھے۔

ويمسح وجهه بالماء، بعض اوقات جب بخارانتهائي سخت بهوجا تابية تبريد شند يولي اور بھی برف کے ذریعے مریض کوآ رام پہنچایا جاتا ہے۔آج کل بھی بسااوقات بخار کی حالت میں ڈاکٹر (بقيه حاشيه ص٨)فقال جبر ئيل يامحمّد انّ الله مَنْكِينَة قداشتاق إلى لقائك فقال النبي مَنْكِينَة لملك الموت امض لما اموت به فقبض روحه فلمّاتو في رسول الله عَلَيْهُ وجاءت التعزية سمعو اصوتاً من ناحية البيت السلام عليكم اهل البيت ورحمة الله وبركاته انّ في الله عز آء من كل مصيبة وخلفاً من كل هالك ودركاً من كلّ فائت فبالله فاتقواوايّاه فارجوافانّماالمصاب من حرم الثواب فقال علتي أتمدرون من هذاهو الخضر عليه السلام رواه البيهقي في دلائل النبوة (مشكوة ص ٥٣٩ باب و فاة النبي مَلْكُ (مختار)

(١) جامع ترمذي ١٩٢١ كتاب الجنائز باب ماجاء في التشديد عندالموت، سنن ابن ماجة ص ٢ ا كتاب الجنائز باب ماجاء في ذكر موض رسول الله عليه مسندا حمد ٢٣٠ (مختار)

رکھواتے ہیں۔اس بڑمل کرتے ہیں۔اورخود نبی کریم آلی ہے۔مرم وی بھی ہے۔فرماتے ہیں إنّ الحمّي من فيح جهنم فابر دوها بالماء (١)، ليني شديد بخارجتم كي براس من سے ہےاسے یانی سے معندا کردیا کرو۔

442

نيز فرمايا الحمّي فور من النار فابر دو ها بالماء (r)،

ني كريم الله كم مكرات الموت: اللهم اعنى على منكرات المع، مكرات سوونا آشااور غیرمعروف حالات مراد ہیں۔ جوموت کے وقت انسان کوپیش آتے ہیں۔ پھر بہاحوال اور اہوال طبعی طور پر بوجھاور ناپیندیدہ بھی ہوتے ہیں۔مزید براں اس سے بل انسان کا اس سے واسطہ بھی نہیں پڑا ہوتا عموماً ا یسی حالت میں آ دمی غفلت کا شکار ہوجا تا ہے۔اور جزع وفزع میں آخرت اور رضائے الٰہی کو بھول جا تا ہے۔ چنانچہا یسے شخت ترین اور خطرناک حالت میں نبی کریم اللہ نے شات اور صبر کی تو فیق طلب کی۔ تا کہ طبعی طوریر نامساعد حالات سے رضا بالقصناء میں فرق ندآئے اور شوق ملاقات مجروح ندہوجینا نجواستفامت کی دعا فرمائی ۔ کہا ہے اللہ اس مرض میں مجھ سے خلاف ادب امور سرز دنہ ہوں اور موت کے وقت کے بعد دیگرے جو بیہوثی ،غنودگی،غفلت، مدہوثی طاری ہوتا رہتا ہے۔اسےسکرات الموت کہتے ہیں اوریہی منکرات طبعی کی معلوم صورت بھی ہے۔اس لئے اکثر شراح نے منکرات اور سکرات کا مصداق ایک ہی بتایاہے۔

شدائدموت غیرمقبولیت کی علامت نہیں: اس سے رہی معلوم ہوا کہ موت کے وقت شدائداور تکالیف سے دوحیار ہونامبغوضیت کی علامت نہیں ہمارے ہاں بسااوقات اس شخص کو بدبخت اور گناہ گار تصور کیاجاتا ہے جس کے سکرات موت سخت اور طویل ہوں مگر بیفلط ہے بلکہ در حقیقت سیات وخطایا کم کرنے، صالحات کی کمی پوری کرنے، درجات کی بلندی اور مقامات عالیہ تک رسائی کی خاطرمقر بین اور اولیاءاللد بربیر تکالیف اورشدا کدزیا دہ ہوتی ہیں گویاسکرات الموت کی شدت اللہ تعالی کے دربار میں عدم

<sup>(</sup>۱) زندی ۲۵ س۲۷

<sup>(</sup>٢)الضاً

مقبولیت کی علامت نہیں اور سیدالمخلوقات رسول الڈیالیا کی نسبت اللہ تعالیٰ کواورکون زیادہ محبوب ہوسکتا ہے۔تواس لطف ومہر بانی کے زیادہ حقدار بھی وہی ہو سکتے تھے۔

443

آ ب الله كاعالم نزع بهي امت كے لئے اسوة حسنه: مرالله تعالى نے نبي كريم الله كي رحلت كواس معاملے میں بھی دنیا کے سامنے ایک قابل تقلید نمونہ بنایا۔ کہشدا ندموت میں آہ وفغاں کی بجائے صبر سے كام لينا جائة اورتجلّد واستقلال كا دامن مضبوطي سے تقام كرتسهيل وتخفيف كى دعاكرنى جائة اوريبي وجہ ہے کہ نبی کر میم اللہ نے اچا تک آنے والی موت سے پناہ ما گی ہے۔

چنانچ عمروبن العاص كى روايت ہے كه

إنّ رسول اللُّهُ عُلِيلًا استعاد من سبع موتاتٍ.موت الفجاء ة ومن لدغ الحية ومن السبع ومن الحرق ومن الغرق ومن ان اخرّ على شئى اويخر عليه شئى و من القتل عند فرار الزحف،

ترجمہ: نی کریم اللہ نے سات موتوں سے بناہ مانگی، ایا نک آنیوالی موت سے، سانپ کے ڈینے سے، درندوں کی چیر بھاڑ سے، جلنے سے، ڈوبنے سے، کسی چیزیر گر کرمرنے سے پاکسی چیز کا اس پر گرجانے سے، اور جنگ سے بھا گتے ہوئے قل ہونے ہے۔

اوربیاس لئے کہ عموماً ایسے حالات میں سوینے ، توبہ کرنے ، اللہ تعالی کے حضور کر گرانے اور وصاما کرنے کاموقعہ بیں ملتا۔

واضح رہے کہ بعض حضرات نے یہاں پرمنکرات سے منکرات شرعی مراد لی بیں لینی شدائد موت کی وجہ ہے آ ہے اللہ نے منکر اور نا جائز امور کے ارتکاب سے بیچنے کی دعافر مائی ۔ مگراس ترجمہ برعلامہ ابن حجرٌ، ملاعلی قاریؓ اور دیگر متعدد شراح نے رد کیا ہے۔

> (٣) حدّثنا الحسن بن الصبّاح البزّارثنا مبشربن إسمعيل عن عبدالرحمن بن العلاء عن ابيه عن ابن عمر عن عائشة قالت لا اغبط

احدابهون موت بعد الذي رأيت من شدة موت رسول الله عليه (١) قال ابوعيسى سألت ابازرعة فقلت له من عبدالرحمن بن العلاء هذاقال هو عبدالرحمن بن العلاء بن اللجلاج.

444

ترجمه: حضرت عائشة قرماتی ہیں کہ میں کسی بھی شخص براس کی موت کی آسانی پر رشک نہیں کرتی جب سے میں نے نبی کریم اللہ کی موت کی شدت دیکھی ہے۔امام تر ذري كہتے ميں ميں نے امام ابوزرعد سے يو جھا كد (اس سند ميس) بيعبدالرحلٰ بن العلاءكون ہیں۔انہوں نے بتایا كەرەعبدالرحمٰن بن العلاء بن المجلاج ہیں۔

موت كي آساني قابل رشك بين: قالت لااغبط احداً بهون النج ،مطلب ميكاس قبل تو ہم سکرات موت میں تخفیف کی وجہ سے بعض لوگوں پر رشک کرتے تھے۔موت کی آسانی ایک نعت معلوم ہوتی تھی اس لئے بیتمنا ہوتی تھی کہ کاش فلاں شخص کی طرح آسان موت نصیب ہومگر نبی اکر مہلیکے کی موت کی بختی ، شدائد وآلام نظر آئیں تو کسی کی مرض الموت میں تکلیف نہ ہونے بررشک وغبطہ نامناسب معلوم ہونے لگااورآ سانی موت کی تمنا ندر ہی (۲)۔

اس حدیث میں بھی نبی اکرم آلیا ہے کی موت کی شدت کا بیان ہے۔الہٰ اموت کی تہوین وتخفیف کو کرامت سجھنا خام خیال ہے کیونکہ شدائد گناہوں کی معافی اور رفع درجات کا سبب بن سکتے ہیں۔البتہ حضرت عائشٹے نہیں فرمایا کہ اب موت کی شدت کی تمنا کرتی ہوں۔ کیونکہ جس طرح موت کی شدت ناپیندیدہ ہونے کی علامت نہیں۔اس طرح اس کا ناپیندیدہ ہونا بھی حتی نہیں ہے۔البتہ نبی اکرم ایسے جیسے صاحب مبروعز بيت كيلئے يەنعت بى تقى۔

(۱) جامع ترمذي ۱۹۲/۱ كتاب الجنائزباب ماجاء في التشديدعندالموت،السنن الكبرئ للنسائي ١٨٠ ٢ ٢ كتاب الوفاة باب ذكر قوله عُليا حين شخص بصرة بأبي هو وامي، مسند احمد ۲/۹۲ (مختار)

(٢) شيخ عبد الجواد الدومي نے لكھا ہے إنّ الشائدة قد تكون تكفيراً لبعض السيّات وقد تكون لوفعة الدرجات (الاتحافات ٩٣ س) اورعلامه ما وي في الكلماج والحاصل أنّ الشدة ليست امارة على خير ولا ضده والرفق ليست علامة على سوء ولاضده (مناوى على هامش جمع الوسائل ٢٨٩٥٢)(مختار) یہاں یہ بات بھی یا در ہے کہ بہ شدت اور پریشانی مقد مات موت کی وجہ سے ہے میں موت کی وجہ سے ہے میں موت کی وجہ سے حضور اللّٰہ کو کوئی تکلیف و پریشانی نہتی بلکہ آپ اللّٰہ تو رفیق اعلیٰ کیلئے پہلے سے تڑپ رہے تھے۔ موت کے وقت بھی وصال کا تصور کر کے مسرت وبشاشت ظاہر ہوجاتی تھی۔

ق ال أبوعيسى سألت أبازرعة النع ، چونكه عبد الرحمن بن العلاء متعدد بين اس كے امام ترفری فرمائی ۔ اوراس تعيين کی ترفی نے اس کی تعیین فرمائی ۔ اوراسی تعیین کی غرض سے امام ترفدی بیسوال وجوب نقل کررہے ہیں۔

(۵) حدّثنا ابوكريب محمّد بن العلاء ثنا أبومعاوية عن عبدالرحمٰن بن أبى بكرهوابن المليكى عن ابن أبى مليكة عن عائشة قالت لمّا قبض رسول اللهُ عَلَيْتُ اختلفوا فى دفنه فقال أبوبكر سمعت من رسول اللهُ عَلَيْتُ شيئاً مانسيته قال ما قبض الله نبياً إلاّفى الموضع الّذى يحبّ ان يّد فن فيه ادفنوه فى موضع فراشه (١).

ترجمہ: حضرت عاکش قرماتی ہیں کہ جب نبی اکرم اللہ وفات پائے۔ تو صحابہ کرام فی نے آپ اللہ میں کہ جب نبی اکرم اللہ وفات پائے۔ تو صحابہ کرام فی نے آپ اللہ کے اس پر ابو بکر صدیق نے فرمایا کہ میں نے نبی اکرم اللہ ہے ایک بات سی تھی۔ جو میں ابھی تک نبیس بھولا۔ (وہ یہ کہ) آپ اللہ ہے نہیں کہ اللہ تعالی نے قبض نبیس کیا مگر ایسی جگہ پر جہاں اللہ تعالی ان کے فن کو پہند کرتے ہیں۔ لہذاتم ان کوان کے (وصال کے) بستر کی جگہ بی دون کردو۔

الوبكرصد في الوبكرصد في كاصلى نام عبرالله تها والدكا نام عثمان بن عامر تها والده كا نام سلى بنت صحر تقا و آلد كا نام عثمان بن عامر تقا والده كا نام سلى بنت صحر تقا و قريش كے تيم بن مرة شاخ سے تعلق تقا والدين دونوں اسلام سے مشرف ہو چكے تھے ۔ ایک (۱) مشكونة المصابيح ص ٥٣٠ باب وفاة النبي عَلَيْتُ الفضل الثاني ، شرح السنة ٢٨٨٣ باب في مرضه ووفاته عَلَيْتُ كتاب الفضائل رقم الحديث ٣٨٣ (مختار)

روایت کے مطابق دونوں نے حضرت ابو بکر صدیق سے میراث بھی پائی تھی۔ گویاان کی وفات آپ علیہ کی وفات آپ علیہ کی وفات کے بعد ہوئی تھی۔ عام الفیل کے ڈھائی سال بعد ابو بکر صدیق کی ولادت ہوئی۔

بعثت نبوی آیا ہے ہے پہلے ہی نبی اکرم آیا ہے ۔ دوئ کا تعلق تھا اور بعثت کے بعد سب سے پہلے آپ ہی اس بہتر میں آپ ایک بہتر میں اور تجربہ کار تا جر سے اور چالیس ہزار درہم کے اس زمانہ میں آپ ایک بہتر میں اور تجربہ کار تا جرشے اور چالیس ہزار درہم کے کثیر سرمایہ کے مالک تھے لیکن وفات کے وفت آپ نے ایک درہم بھی میراث میں نہیں چھوڑا۔ مال کا اغلب حصد اسلام کی خدمت میں صرف ہوا۔ اسلام کے بعد نبی اکرم آپائی کی صحبت وخدمت کا التزام کیا۔ شب وروز آپ آپائی کی کی فاقت کا شرف حاصل ہوا۔ مکہ مرمہ میں، ہجرت میں، غارثور کی اقامت کے دوران، پھرتمام غزوات میں حتی کے موت تک ساتھ درہے۔

اسلام لانے والے غلام بائد یوں کوخر پیخر پیکر آزاد کرتے رہے جن میں حضرت بلال عامر بن فہیر و اسلام لانے والے غلام بائد یوں کوخر پیخر پیکر آزاد کرتے رہے جن میں حضرت بلال علاوہ دیگر فہیر و نیر و نہر و اس کی بیٹی، بنی المؤمل کی کنیز اور ام عبیس مشہور ہیں۔ ان کے علاوہ دیگر نادار مسلمانوں کی معاونت بھی فرماتے رہے۔ آپ کے منا قب اور خدمات کے احاطہ کیلئے کئی جلدیں بھی ناکافی ہیں ویسے آپ کی صحابیت منصوص ہے۔ 'اذھما فی الغاد ''اور' اذیقول لصاحبہ'' میں بالاتفاق آپ کا فی ہیں ویسے آپ کی صحابیت کے منکر کوکافر کہا گیا ہے(ا)، آپ کا لقب عتیق تھا۔ جو کہ والدین کی طرف سے دیا گیا تھا۔ اس لقب کی متعدد وجوہ بیان کی جاتی ہیں مثلاً

- ا) عتیق کامعنی جمیل ہے۔اورآ یا وظاہری حسن کی وجہ سے عتیق کہا گیا تھا۔
- ٢) عتين قديم كمعنى من إدرآ في قديم في الخير تفي ليعنى بعلائي من سب سا آ كر تفيد
  - ۳) منتین نفیس چیز کو کہتے ہیں اور آ یے بھی نسب کے لحاظ سے عیوب سے یاک تھے۔
- ۳) عتیق آزادکوبھی کہتے ہیں اور چونکہ آیے کی والدہ کے ہاں اولا دزئرہ نہیں پچی تھی۔ آیے کی ولادت
  - ك بعدانهول في دعاك "اللهم هذا عتيقك من الموت"اكالله يريموت عا آزادهو

<sup>(</sup>١)كما صرّح به القارى في آخر هذاالباب، ١٢ اصلاح الدين عفي عنه

مگراسلام کے بعد آپ کو نبی اکرم اللہ کی طرف سے صدیق کالقب ملا۔ اور آپ کی کنیت ابو بکراور لقب صدیق آپ کے تمام ناموں برغالب آگئے۔

اپنے مناقب کی وجہ سے تمام صحابہ پر آپ گوتقدم حاصل تھا۔ چنانچینز وہ تبوک میں اسلامی فوج کے علم بردار تھے۔ وج میں املامی مقرر موئے۔ اور نبی اکرم اللہ نے اپنی زندگی میں املاب صغری (نماز کی امامت) میں آپ گواپنا نائب مقرر کردیا تھا۔ چنانچہ وفات نبوی اللہ کے بعد با تفاق صحابہ آپ اللہ کو کاملہ کری خلافت نبوی اللہ کے کیلئے متحب کیا گیا۔

آپ کی ایک خصوصیت بیتھی کہ آپ کوعرب کے انساب کاعلم پوری طرح حاصل تھا۔ بالخصوص قریش کے انساب اور مختلف قبیلوں کے خبر وشرکی تاریخ از برتھی۔ بڑے بڑے بڑے نساب بھی اس سلسلے میں آپ کی طرف رجوع کرنے سے مستغنی نہیں تھے۔

روایت حدیث کے سلسلے میں آپ سے شاگر دوں میں اکا برصحابہ اور اکابر تا بعین کے نام آتے ہیں۔خلفائے راشدین ،عشر ہبشرہ اور دیگر صحابہ آپ سے روایت کرتے ہیں۔

آپ کی وفات تریسٹی برس کی عمر میں جمادی الاولی ۱۳ میں میں ہوئی۔ ایک روایت کے مطابق مارث بن کلدہ شنے حارث بن کلدہ شنے ایک دوایت کے مطابق حارث بن کلدہ شنے کہ وی کے حارث بن کلدہ شنے جونی کھانے میں شریک ہوئے ایک الدی الدیا تو آپ کو کھانے مین کرتے ہوئے کہا کہ اے ابو بکر اور کئے اس کھانے میں ایک سال مہلت دینے والا زہر ملا ہے۔ چنا نچ آپ اور حارث بن کلدہ دونوں کی موت شمیک ایک سال بعد ایک بی دن واقع ہوئی ۔ اس روایت کے مطابق آپ کی موت زہر خورانی سے ہوئی جیسے کہ نی اکر م ایک کی وفات کا اصل سبب بھی زہر خورانی تھا۔ ایک گونہ شہادت کے اعزاز میں بھی اللہ نے آپ کو حضورا قدر سے اللہ نے آپ کو حضورا قدر سے اللہ سے اللہ اللہ اللہ کے آپ کو حضورا قدر سے اللہ اللہ اللہ کے آپ کو حضورا قدر سے اللہ ہے کہ ایک کیا۔

تدفین میں اختلاف: اختلفوا فی دفنه النع ،بیبات ذبن شین رہے کہ صابہ کرام عام اور معمولی باتوں میں اختلافات سے گریز کرتے تھے کین رحمۃ للعالمین علیقہ کی رحلت عام انسان کی موت نہ تھی نیز بنی اسرائیل میں انبیاء کثرت سے گزرے تھے۔اور متعدد بار انہوں نے انبیاء کی تدفین ایے

ماتھوں سے کی تھی۔اس لئے ان کے مال بہ کوئی غیرمعمو لی واقعہ نہیں ہوتا تھا۔لیکن نی کریم تالیقہ کی بعث تو امیتین میں ہوئی تھی اورانہوں نے نبی کی موت کے بارے میں سنا بھی نہ تھاوہ اس بات کا تصور بھی نہ کر سکتے تھے کہالیں مقدس ہتی برخاک ڈال دیں وہ جیران تھے کہ نبی کیسے وفات یا تا ہے؟ اور وفات کے بعداس ہے کیاروں پر تاجاتا ہے؟ اسے دفنایا بھی جاتا ہے پانہیں؟ اور ہےتو کہاں پر دفنا یاجائے گا؟ ان کا جنازہ بھی پڑھایا جائے گا یانہیں؟ جبکہ جنازہ پڑھانا بھی تو بڑے دل گردے کا کام ہے پھر جنازہ اجتماعی ہوگا یا انفرادی؟اس تتم کے دیگر سوالات کی وجہ سے وہ مششدرو بریثان تھے اور الجھنوں میں ہڑے رہے۔

448

الی حالت میں اللہ تعالی نے صدیق الامت کے دل میں عزم واستقامت کا مادہ پیدا کردیا۔ امت كاسمونس وغخوار فصابه كاتسلى اوريريشانى ختم كرف كاكام اين باته ملى ايا فقال ابوبكر، جس طرح پہلے گزر چکا ہے کہ اختلاف کی متعدد جہتیں تھیں۔ یہاں صرف تدفین کے مقام پراختلاف کاذکرے آ بیالیہ کے مدفن کے مارے میں مختلف آراء سامنے آئیں۔کوئی جنت ابقیع کا نام لیتا تھا،کوئی آ ہے اللہ کے گھر کوتر جے دیتا تھا، کوئی مسجد میں دفن کرنے برمصرتھا، کسی کی رائے بیتھی کہ آپ کواپیے مولد يني كمه كرمه من مقام ابراجيم ياحطيم من وفن كرناجا بيئ ـكوني كبتاك چونكه آبيالية ملت ابراجيي كامام ومجدد ہیں۔اس لئے اینے جدامجد کے پاس انہیں الخلیل میں دفن ہونا چاہئے۔ جہاں حضرت ابراہیم علیہ السلام کےعلاوہ حضرت الحق علیہالسلام،حضرت پوسف علیہالسلام اور دیگر جلیل القدرانبیاء مدفون ہیں۔ آج کل اس شپر کوجبر ون بھی کہاجا تا ہے جو کہ بدشمتی سے اسرائیل کے جدید مقبوضہ علاقوں میں شامل ہے۔ بعض دوسر بے صحابہ کے خیال میں بیت المقدس لیے جانا بہتر تھا()۔

الغرض ہرکوئی اپناخیال پیش کرتا۔ ابو بکڑتک بات یہونجی تو آپ نے سی تھی سلجھادی اور اس سلسلے میں نبی کریم آلی کے کا فرمان پیش کردیا۔ کہ نبی کوو ہیں فن کیاجا تا ہے جہاں ان کی موت واقع ہوتی ہے۔ واضح رہے کہ حضرت صدیق ا کبڑا سے مزاج اورعادت کی وجہ سے روایت کے سلسلے میں بہت مختلط تھے۔بلاضرورت روایت کرنے سے کتراتے تھے اوراس کا سبب بظاہر یہ تھا کہ آپ احادیث کی بہت (١)فقيل في مسجده وقيل بالبقيع وقيل عند جده ابراهيم عليه السلام وقيل بمكة، (جمع الوسائل ج٢ ص ١ ٢ ٢ (اصلاح الدين)

زیادہ تعظیم واحر ام کرتے اور ادب محوظ رکھتے تھے۔ کہ کہیں بے احتیاطی نہ ہونے پائے۔ تاہم جب ضرورت پر ٹی تو خاموش تماشائی بھی نہ بنتے تھے۔خصوصاً امت کے درمیان نزاعی مسائل میں آپ آگئے کی روایت فیصل اور تھم بنتی تھی۔ محدثین نے الیمی روایات کی نشاندہی کردی ہے۔ جن میں انتہائی نا گفتہ بہ حالات میں آپ کی رہنمائی نے امت محمدی کوسنجالادیا۔

مرفن نی کا انتخاب خدائی ہوتا ہے:

ماقبض الله نبیّا الاقبی الموضع المنح ، ایعنی پغیری روح الله

تعالی جس جگر قبض فرماتے ہیں وہی جگہ تدفین کیلے بھی نتخب فرما چکہ ہوتے ہیں۔ گویا نبی کریم الله نے خود

ہی اس قول کے ذریعے فیصلہ دے دیا۔ کہ جس جمرہ میں ہیں وہیں دفن کردو۔ اتفاق سے وہ جمرہ سیدۃ عاکشہ کا محار سب نے اس تھم کے آگے سرتسلیم نم کردیا۔ کسی نے بھی لب کشائی نہی ۔ یہ بھی نہ کہا کہ حضرت فاطمہ کا جمرہ قریب ہے یا حضرت علی کے گھر دفن ہونا چاہئے نیز یہ بدگمانی بھی کسی نے نہیں کی کہ حضرت الوبکر صدیق نے اپنی کی کہ حضرت الوبکر صدیق نے اپنی کو یہ شرف دلوانے کیلئے کوئی بات بنائی ہوگی (والعیاذ باللہ) بعد کے معائد بن اہل رفض نے ان ساری باتوں میں الزامات اور بدگمانیوں کا بازارگرم کیا۔ اس موقعہ پر اہل بیت، از واج مطہراتی، حضرت علی محضرت فاطمہ اوردیگر تم اصحابہ فوجود تھے۔ لیکن سب نے اپنے رہبرور ہنما حضرت مدین آ کہ کر کے کے قبل پر شک تک بھی ظاہر نہیں کیا۔ اگر شیعہ موجود ہوتے تو بیالزام اس وقت بھی لگاتے۔ کے صدیق نے بیسب پھا قرباء پر وری کیلئے کیا ہے۔ جبکہ حقیقت یہ ہے کہ اللہ تعالی نے حضرت عاکشہ نوری کیلئے کیا ہے۔ جبکہ حقیقت یہ ہے کہ اللہ تعالی نے حضرت عاکشہ نوری کیلئے کیا ہے۔ جبکہ حقیقت یہ ہے کہ اللہ تعالی نے حضرت عاکشہ نوری کیلئے کیا ہے۔ جبکہ حقیقت یہ ہے کہ اللہ تعالی نے حضرت عاکشہ نوری کیلئے کیا ہے۔ جبکہ حقیقت یہ ہے کہ اللہ تعالی نے حضرت عاکشہ نوری کیلئے کیا ہے۔ جبکہ حقیقت یہ ہے کہ اللہ تعالی نے حضرت عاکشہ نوری کیلئے کیا ہے۔ جبکہ حقیقت یہ ہے کہ اللہ تعالی نے حضرت عاکشہ نوری کیلئے کیا ہے۔ جبکہ حقیقت یہ ہے کہ اللہ تعالی نے حضرت عاکشہ نوری کیلئے کیا ہے۔ جبکہ حقیقت یہ ہے کہ اللہ تعالی اس میں کی نے بھی اس پر افکار نہیں فرمایا تھا۔ چنا نے صحابہ علی ہے کہ کا سیادہ اس کی انہوں کی انہ بین کی ان کوری کیا ہے۔

یہاں یہ بات بھی بخو بی واضح ہوگئ کہ نبی برت کواللہ تعالی بھی بھی غیر معزز مقام میں وفات نہیں ہونے دیتے ہاں جوجعلی اور بناوٹی نبی ہواسے ٹی (بیت الخلاء) میں مرنا نصیب ہوتو کوئی اچنجے کی بات نہیں۔ مرز اغلام احمد جیسے دجال کی تکذیب کیلئے بیر حدیث بھی کافی ہے۔ کہاللہ تعالی سی نبی کی روح اس جگہ لیتے ہیں۔ جس جگہ اسے دفن کرنا مقصود ہو۔ جب کہ اس کذاب کو ہم دیکھتے ہیں کہ اسے لا ہور میں علاج کیلئے لایا گیا تو لا ہور می مرزائیوں کی بلڈنگ میں اقامت کے دوران اسے خت ہین نہ آلیا جب قضائے حاجت کیلئے گیا تو بیت الخلاء ہی میں جہنم واصل ہوا۔ چیثم دید گووا ہوں کے مطابق غلاظت اس کے منہ بر بھی حاجت کیلئے گیا تو بیت الخلاء ہی میں جہنم واصل ہوا۔ چیثم دید گووا ہوں کے مطابق غلاظت اس کے منہ بر بھی

گی ہوئی تھی اگروہ معاذ اللہ واقعی نبی ہوتا تو نبی کریم اللہ کے اس قول کے مطابق تو اسے وہیں بیت الخلاء میں دفن کرنا تھااور قادیان کیجانے کا کوئی جواز نہیں تھا۔

(۲) حدّثنامحمّدبن بشّار وعبّاس العنبرى وسوار بن عبدالله وغير واحدقالوا نايحييٰ بن سعيد عن سفيان الثوريّ عن موسىٰ بن أبى عائشة عن عبيدالله بن عبدالله عن ابن عبّاس وعائشة رضى الله عنهم أنّ أبابكر قبّل النبيّ عَلَيْكُ بعدمامات().

ترجمہ: حضرت ابن عباس اور حضرت عائشہرضی اللہ عنہما سے روایت ہے کہ حضرت اللہ عنہما سے روایت ہے کہ حضرت ابو بکر صدیق اللہ عنہ نے اکر میں اللہ عنہ نے اللہ اللہ عنہ نے اکر میں اللہ عنہ نے اللہ عنہ نے اللہ اللہ عنہ نے اللہ اللہ عنہ نے اللہ اللہ عنہ نے الل

ابو بکرصد ان کابے پناہ صبر واستقامت: نبی کریم اللہ کی رصلت کے وقت حضرت ابو بکر صدیق کا موجود نہیں تھے۔ اکثر تو مرض وفات میں آپ حاضر رہے۔ لیکن زراعت وغیرہ کی غرض سے انہیں دورجانا پڑتا۔ وفات سے پچھ بل نبی کریم اللہ کی طبیعت پچھ بہتر ہوئی آپ اپنی زمین کے انظام کی خاطرا یک میل دور مقام کُن کی طرف چلے گئے تھے۔ ادھر نبی کریم اللہ کی کیاری میں شدت پیدا ہوگئ دو پہر کے وقت جب حضرت ابو بکرصد ہن آپنی مجد میں بیٹھے تھے کہ حضرت سالم نے یہ دلدوز خبر سنائی سب دو پہر کے وقت جب حضرت ابو بکرصد ہن آپنی مجد میں بیٹھے تھے کہ حضرت سالم نے یہ دلدوز خبر سنائی سب کچھ چھوڑ کرفور آمہد نبوی کارخ کیا۔ وہاں صحابہ کی اشک بارآ تکھیں آپ کی منتظر تھی۔

تمام صحابتم والم میں ڈو بے ہوئے تھے حضرت عراق ارسو نیخ ہوئے کھڑے تھے۔ اور کہ رہے تھے کہ نبی کر پھر اللہ الدوں گااس عظیم سانحہ نبی کر پھر اللہ کے کام موسک گااس عظیم سانحہ نے صحابہ کے حواس کو معطل کر کے رکھ دیا تھا۔ حوصلہ اور استقامت صرف صدین گاکام ہوسکا تھا۔ قبل المنبی عالیہ بعد مامات المنح (۲)، اگلی صدیث میں آئے گاکہ حضرت ابو بکر صدین آئے گائے گئے۔ السنن الکبری للنسائی ۲۲۲/۲ کتاب المعائی میں دسول اللہ عالیہ تعلقہ صدی استان ابن ماجة صدی المعائز (مختار) المحنائز باب ماجاء فی تقبیل المیت، مصنف ابن ابی شیبة ۲۸۵/۳ کتاب الجنائز (مختار) (۲)علامہ یکورگ نے کہا ہے فتقبیل المیت سنة (المواهب اللہ نیا کے المواد کا کتاب الجنائز (مختار)

پر صحابه کا جوم تھا جھوٹا سا کمرہ کھپا تھے بھر اہوا تھا حضرت صدیق کود کھتے ہی صحابہ نے راستہ بنا کرصاحب رسول اللہ مقالیہ کو آخری دیدار کا موقعہ دیا۔ چنانچہ آپ حضور اللہ عقالیہ کے پاس آئے۔ بہ پناہ قوق ہر داشت، حوصلہ اور تخل کے باوجود اس وقت عشق ودار قلگی سے بے قابو ہو کر پیشانی مبارک کو الوداعی بوسہ دیا اور وانبیاہ، واصفیاہ و اخلیلاہ کے الفاظ منہ سے نکلے۔

ابوبكرصد ان برفراق بوى الله المراز مورض حيالة كالرز مورض حيران بين كدابوبكر بناه عشق كه باوجود اتنا ضبط كيونكر كرسك الرحقيقت بيه كرآب كا صرص فن ظاهرى تفاآب واس جا تكاه صد عدا مدرى اندرى ان المرابك الدرك والمراز كرائل من المرابك ا

نی کریم ایک کے ساتھ محبت کا اندازہ اس بات سے بھی لگایا جا سکت ہے۔ کہ جب نی کریم ایک نے سے بھی لگایا جا سکتا ہے۔ کہ جب نی کریم ایک نے عین حیات میں ایک موقعہ پرخطبردیتے ہوئے فرمایا۔ اِنّ عبداً خیترہ اللّٰہ بین ان یو تیہ زهرة الله نیا ماشاء و بین ما عندہ فبکیٰ ابوبکر (۱)، ایک بندے کواللہ تعالیٰ نے ان دوباتوں میں سے اللہ نیا ماشاء و بین ما عندہ فبکیٰ ابوبکر در)، ایک بندے کواللہ تعالیٰ نے ان دوباتوں میں سے جودہ چاہے دے دیگایا پھر اسے دہ چیز ایک افتیار کرنے کا کہا کہ یا تو دہ اس دنیا کی چک دمک میں سے جودہ چاہے دے دیگایا پھر اسے دہ چیز دے دیگا جواللہ تعالیٰ کے باس ہے۔

تمام صحابہ بیٹے تھا اوراس قصہ کوایت ہی بھی بیٹے گرصدیق پر نبی کاعکس پڑتا ہے وہ بھی گئے کہ نبی کر پھوٹیا تھے کسی دوسرے کی حکایت نہیں بلکہ اپنی بات کررہے ہیں اس لئے آپ دھاڑیں مارکررو نے لگے اور کہاف دیناک بآباء نا و اُمھاتنا ، جارے مال باپ تچھ پرقربان ہوں ۔ لوگوں نے کہا اس بوڑھ کود یھو کہ نبی کر پیمیالیہ سمجھ کے کہ اس بوڑھ کود یھو کہ نبی کر پیمیالیہ سمجھ کے کہ صدیق بات کی تہہ تک بیٹی گئے ہیں اس لئے فرمایا 'وعملی رسلک یا اُبابکر'' بینی اے ابو بکر حوصلہ مدنی بات کی تہہ تک بیٹی گئے ہیں اس لئے فرمایا 'وعملی رسلک یا اُبابکر'' بینی اے ابو بکر حوصلہ (۱) صحیح بخوری کتاب المدنیة، جامع ترمذی کا کتاب الفضائل، باب مناقب ابی بکر رضی الله عنه (مختار)

ركهو سنبطور اور پر فرمايالوكنت متخذاً خليلاً لاتخذت ابابكر خليلاً الاو انّ صاحبكم خليل الله (١)

ترجمه: اگر میں کسی کودوست چنتا تو ابو بکر اہی ہوتا مگر تمہارا نبی اللہ کا دوست ہے۔

مقام صديق:

اس والہانہ عشق و محبت کے باوجود کہ وفات النبی اللہ کے تصور سے بھی پھوٹ پھوٹ کررونے گئے۔ یہاں اس موقع پراللہ تعالی نے آپ کوقوت برداشت اور صبر وقمل کا مظہر بنادیا۔ تاکہ دکھی لوگوں کوایک دلاسہ دینے والامونس وغم خوار مل جائے اور بلاشہ نیابت رسالت کا منصب ایسے شخص کے شایان شان ہے جس کے بارے میں خود نی کریم آلیک نے فرمایا کہ میں نے برخض کے احسانات کا بدلہ دے دیا ہے صرف ابو بحر کے احسانات کا بدلہ دیں نے آخرت کیلئے موخ کردیا ہے۔

ا قبال اپنے الہامی کلام میں نبی کریم اللہ کے نزد کیے صدیق کے مرجے کی یوں تصویر شی کرتے ہیں ۔
ہیں ہمولائے اس برمولائے اس کی مراقب کے نزد کیے مرجے کی یوں تصویر شی کرتے ہیں ۔
اور حضرت حسان بن ثابت شاعر رسول الشوائی نے ایک موقعہ پر ابو بکر کی شان میں کیا مجیب مدحدا شعار کیے فرماتے ہیں کہ

خير البرية اتقاهاو اعدلها بعدالنبيّ واوفاها بما حملا

وثاني اثنين في الغار المنيف وقل طاف العدويه اذ صعد الجبلا

وكان حِبُّ رسول الله قدعلموا من البرية لم يعدل به رجلا

ببرحال صدیق نے نبی کریم آلی کے کوالوداعی بوسد دیااوراس میں حضور علیہ کی اقتداءاور تیمن و تبرک کو بھی ملحوظ رکھا۔ خود نبی کریم آلیہ کے سیسنت ثابت ہے۔ چنا نچہ حضرت عثمان بن مطعون جب وفات یائے تو نبی کریم آلیہ نے نان کی پیشانی کوبوسد یا تھا۔

(2) حدّثنا نصر بن على الجهضميّ ثنامر حوم بن عبدالعزيز العطار عن أبي عمران الجونيّ عن يزيد ابن بابنوس عن عائشة أنّ ابابكر

(ا) مجيح مسلم

رضى الله عنهما دخل على النبي مَانِيه بعد وفاته فوضع فمه فاه بين عينيه ووضع يديه على ساعديه وقال وانبياه واصفياه واخليلاه (١).

ترجمہ: حضرت عائش فرماتی ہیں کہ حضرت ابو بکر صدیق آپ آپ آگئے کی وفات کے بعد حجرہ کے اندر تشریف لائے تو اپنامنہ نبی اکر مہلے کی آٹھوں کے درمیان رکھا اور اپنے ہاتھ نبی اکر مہلے کی آٹھوں کے درمیان رکھا اور اپنے ہاتھ نبی اکر مہلے کے بازوں پر رکھ کر کہا ''ہائے نبی ، ہائے اللہ کے برگزیدہ، ہائے میرے دوست''

فوضع فسمه بین عینیه النح ، یعن آپ آلیه کی پیشانی کوچو ااور ساته ساته و انبیاه و اصفیاه اور و اخلیلاه (۲) "پکار کرفراق کا بوجه باکا کردیا لیکن آپ کی به پکارنو حد کے طور پرنہیں تھی۔ اس سے بیجی ثابت ہوتا ہے۔ کہ حقق صفات کا لحاظ کر کے میت کو'وا'اور'یا' سے پکارنا جائز ہے۔ مند احمد کی روایت میں ہے کہ آپ رسول التحقیق کے سرکی جانب تشریف لائے۔ اور جھک کر پیشانی پر بوسہ دیا در جو کہ کا دیا ہوں کہ اور جھک کر پیشانی کو بوسد دیا اور'واخلیلاه''کہا(۳)، حرید تفصیل کرشتہ صدیث کے من میں گرر چی ہے۔

( ا )تفر دالامام الترمذي بهذاالحديث

(۲) علامه يَجُوري مديث بالاساس الله الكرتي بوت كاما بوهذا يدّل على جوازعد اوصاف الميت بلانوع بن ينبغى ان يندب لانه من سنة الخلفاء الراشدين والأئمة المهتدين وقدصار ذلك عادة فى رثاء العلماء بحضور المحافل العظيمة والمجالس الفخيمة (المواهب الدنية )(مختار) (٣) بلكم منداح كي روايت يس تين بار بوسر ديخ كاذكر بهر بهي بار وانبيساه "ووسرى بار" واصفيساه "اورتيسرى بار" واخليلاه "كافاظ ادافر مات ليراجع مسنداح مدكتاب باقى مسند الأنصار باب باقى المسند الله المسند الله المسند الله المسند الله المسند الله المسند الله المستدالسابق عديث نم ١٢٠٢٣ ١٥٥١ (١٢) (١٢٠٢٣ ١٥٨)

كل شئي ومانفضناايدينا عن التّراب وإنّا لفي دفنه عَلَيْكُ حتى انكرنا قلو بنارا).

454

ترجمه: حضرت انس رضي الله عنه سے روایت ہے کہ جس دن نبي کريم الله عنه سے روایت ہے کہ جس دن نبي کريم الله عنه سے میں تشریف لائے (اس روز ہے ) مدینہ کی ہرچیز روثن ہوگئی۔ پھر جب وہ دن آیا جس میں آپ ایس نے وفات یائی تو ہر چیز برائد جراجھا گیا اور ہم نبی اکر مہالے کی تدفین میں مصروف تھا بھی ہاتھ بھی (قبر کی )مٹی سے جھاڑنے نہیں یائے تھے۔کہ ہم نے اپنے دلوں کواویریایا۔

اضاء منها كل شئى النع، يهال برانواراورظلمات كيعين مين شراح كااختلاف بيامه ابن جر، علامه مناوی اوربعض دیگر شراح کا خیال ہے۔ کہ ظاہری نوراور ظلمت جوآ تھوں سے محسوں ہوتی ہوں مراد ہیں۔ گویا یہاں نبی اکرم اللہ کے ایک معجزہ کابیان ہے۔ کہ قدوم نبوی سے مدینہ میں انوار اور رحلت سے اند چیر محسوں ہونے لگے۔جیسا کقرآن کی آیت 'فقد جاء کے من الله نورو کتاب مبین ''میں صراحة آپ ایک کورکہا گیا ہے کین ملاعلی قاریؓ اوربعض دیگر شراح نے نوروظلمت سے معنوی نوروظلمت مرادلی ہیں مابعد کا کلام اس کیلئے مؤید ہے کیونکہ بعد میں دلوں کا تغیر بیان ہے تو معنوی ظلمت ہی ہے ظاہری نور وظلمت دلوں میں تونہیں ہوتی ۔ چنانچینوراس مقام پر ہدایت سے یاخوشی ومسرت سے یا دنیا وآخرت کی صلاح سے کنارہ ہوگا۔اورظلمت سےاس کا بالعکس معنی مراد ہوگا۔

نی کریم الله کی تدفین سے انوار میں کی: نی کریم الله جس دن مدینه طبیه تشریف لائے تھے۔ تو ساراشبر ظاہری وباطنی خوشیوں کی آ ما جگاہ بن گیا تھا۔انوار کی بارش سے یہ چنز ہرایک کومحسوں ہورہی تھی۔ نبی کریم الله کی آمدے مدینہ ہی کیا؟ ساراعالم منور ہو گیا۔اس وقت مدینہ کے چھوٹے بڑے سب مسرور تھے بچے خوشی میں دف بچا بچا کر گاتے

\_طلع البدر علينا من ثنيات الوداع وجب الشكر علينا مادعالله داع

 <sup>(</sup>۱) سنن ابن ماجة ص١١ اكتباب البحنيائيز بباب ذكير وفياتيه ودفنه عَلَيْكُ شرح السنة للبغوي ١ / • ٥ باب في موضه وو فاته عليه كتاب الفضائل رقم الحديث ٣٨٣٣ (مختار)

455

اس سے بل یدینہ کےلوگ دس بندرہ روز تک انتظار کی شدید کیفیتوں سے دو حارر ہے تھے۔ جھوٹے بڑے سب ثنیۃ الوداع میں جمع ہوکر نی کریم آفیجہ کا انظار کرتے۔اورحضور عصلے کونہ دیکھتے تو واپس جا كردوسر بدين استقبال كيلئ نكلتے جس روز آ پيانيك مدينه بينج تومدينه ميں عيد كي سي خوشي منائي گئی۔حضرت انس ففر ماتے ہیں کہ حضور علیہ کے قد وم سے سارامدینہ منور ہوگیا۔ ہر چیز روشن ہوگئی۔ پھر جب دس سال بعدوہ میارک ومقدس ہستی رخصت ہونے گئی۔ تو ہم لوگ وصال کے بعد مذفین سے فارغ ہوکرابھی ہاتھ سے مٹی جھاڑنے بھی نہ پائے تھے۔ کہ ہم نے دلوں کو بدلا ہوا پایا۔ ہر چیز او بری ہی لگ رہی تقی۔ یہاں تک کہ ہم نے اپنے دلوں کی کیفیت بھی متغیر محسوس کی۔ جیسے سورج کے ڈویتے ہی ظلمتوں کا بحرميط الدا تا ہے اور ساري كا ئنات او يرى سى كلتى ہے يونى نبى كريم الله كى موجود كى كے سبب جوانوار واثرات اوروی کی برکتین تھی۔صاحب وی کے اٹھتے ہی کم ہوگئیں۔حتبی انکو نا قلوبنا الخ، قلوب میں بھی وہ صفائی لطافت،طراوت وحلاوت،اورصحیت نبی کی برکت سے پیدا ہونے والی نورا نبیت نہر ہی جو اس سے قبل تھی۔ مگرا نکار قلوب سے مراد تقدیق واہمان میں کمی مراد نہیں ہے ظاہر ہے کہ نبی کریم آلیہ کی صحبت کی وجہ سے جومشاہدات اور طمانیت حاصل تھی وہ ادھوری ہوگئی۔ بلکہ آ پیافی کے بعد ہر لخطہ خیر میں کی اورشر میں اضافہ ہوتا جاتا ہے بیمی اثر نبی کریم اللہ کی موت کے قریب ترین کھات میں بھی رہا۔ جسے صحابہ گی حساس نظروں نے تاڑلیا۔ پھر خیرالقرون کے بعد تو ہر گزشتہ کل آج سے بہتر ہونے کا ثبوت ملتار ہتا ہے۔ایک حکایت کےمطابق ایک صوفی شخص نے دکان کھولی جس میں تازہ روٹی ایک رویبہ اور ماسی روٹی دورو بے میں بکی تھی۔ مگر لوگ تازہ روٹی چھوڑ کر سوکھی روٹی خرید تے تھے۔ کیونکہ وہ نبی کریم تالیقہ کے زمانے کے کچھ تریب یکی ہوتی تھی۔

(٩) حدّثنا محمّد بن حاتم ثنا عامر بن صالح عن هشام بن عروة عن أبيه عن عائشة قالت توفيّ رسول الله عليه المثنين(١). ترجم: حفرت عا نشرٌ عدوايت به كم ني الرم الله المسلمة المسلمة

(١) صحيح بخارى ٨١ كتاب الجنائز باب موت يوم الاثنين، مصنف عبدالرزاق (مختار)

توفی رسول الله عَلَيْ يوم الاثنين الغ ، ني كريم الله عَلَيْ كاوصال پير كروز مواتهايد مسكه اجماع ہے۔ كسى مورخ نے بھى اس ميں اختلاف نہيں كيا۔ جس كى تفصيل ابتدائے باب ميں گزر چكى ہے۔

(١٠) حدّثنا محمّد بن أبى عمر ثنا سفيان بن عيينة عن جعفر بن محمّد عن ابيه قال قبض رسول الله عَلَيْكُ يوم الاثنين فمكث ذلك اليوم وليلة الشّلثاء و دفن من اللّيل وقال سفيان وقال غيره يسمع صوت المساحى من اخراليل(١).

ترجمہ: محمد بن علی بن الحسین (امام باقر) سے روایت ہے کہ نی کریم اللہ پیر کے روز وفات پائے اس روز اور منگل کے رات کو یونبی (بغیر دفن کے ) رہے۔ اور (اگلی رات) یعنی بدھ کی رات کو دفن کئے گئے۔ حضرت سفیان کہتے ہیں کہ دوسرے راوی کہتے ہیں کہ دوسرے راوی کہتے ہیں کہ رات کے آخری حصے میں بھاوڑوں کی آ واز سنائی دیتی تھی۔

محمّد بن علی بن الحسین، حدیث کے راوی حفرت حسین بن علی کے بوتے ہیں۔ جوامام باقر کے نام سے مشہور ہیں۔ تا بعی ہیں۔ (۱۳۸ھ میں وفات پائی۔ بعض روایات کے مطابق انہیں زہردے کرشہید کردیا گیا تھا۔ جنت البقیع میں فن ہوئے۔

ف م کث ذالک اليوه، نبي اکرم الله کانقال پير کروز بواليکن تدفين فوري طور پرنه بوکي بلکه منگل کی رات اور منگل کادن بھی گزرگيا اور بده کی رات کوکمين تدفين کمل بوکی البذادف من الليل ،الليل سے معبودرات 'ليلة الاربعاء '' يحتی بده کی رات مراد ہے۔ گويا اس مقام بی اختصاراً ' يوم الشلاقاء '' يعنی منگل کی دن ندکورنہيں ۔ حالا تکہ وہ دن بھی بغير تدفين کرز رچکا تھا۔

تدفین میں تاخیر کا سبب: سنت اور افضل یہ ہے کہ میت کوجلدی وفن کر دیا جائے۔ لیکن خاص حالات اس سے مشتی ہیں نبی کریم الله کی قد فین بھی کوئی معمولی بات نہیں تھی۔ بلکہ وہ حالات کچھا یہ تھے کہ ہر ہر

(۱) تفردالامام الترمذي بهذاالحديث (مختار)

بات نئ ہونے کی دجہ سے جھڑا پیدا ہونے کا اندیشہ تھا۔اس لئے غور وفکرا ورمشوروں کی ضرورت تھی۔ ادھر نبی کریم آلیسے کے گفن ووفن کے احکامات بھی ہر کسی کومعلوم نہ تھے اور ان معاملات کوحضور میں کہ ترفین سے قبل ہی طے کرانا ناگز مرتھا۔تا کہ تجہیز وتدفین میں وحدت واجتماعیت برقر ارر ہے۔اور تمام صحابہ اس میں شریک ہوں۔

پھر بدشمتی سے خلافت کے مسئلہ میں ابتداءً اختلاف پیدا ہوا جس کی اہمیت کا احساس صدیق اکبر مجھے نباض امت اور عمر فاروق جیسے صاحب فراست وسیاست ہی کو ہوسکتا تھا چنا نچیاس کھے من مرحلہ میں امت کو افتر اق اور تشتت وانتشار سے بچانے کیلئے ابو بکر صدیق اور دیگر صحابہ نے پہلے اس کی طرف توجہ دینا ضروری سمجھا۔ کیونکہ وہ جانتے تھے کہ بیا ختلاف قیامت تک امت کیلئے در دسر بنار ہے گا۔

نی کریم الله کی رحلت کے فور اُبعد صحابہ میں خلیفۃ الرسول کے بارے میں مشورے ہوئے انسار نے سقیفہ بنوساعدہ میں جع ہوکر یہ مسکلہ چھٹر دیا ابو بکر صدیق اور عراقواس کے بارے میں پہۃ چلا اور محسوس کیا کر انسارا پنے مقصد میں کا میاب ہو گئے تو وحدت واجنا عیت اور بجبی ختم ہوکر امت کا شیرازہ بکھر جائے گئے چوہ بھی اس مسکلہ سے ختنے کیلئے سقیفہ بنوساعدہ چلے گئے ۔ اسی دوران انسار میں سے حضرت حباب بن منذر ٹنے ''منسا امیس و مسلم امیس ''کانفر میں گئی کردیا۔ مگر صدیق کی مندر ٹنے نے اس منذر ٹنے ''منسا امیس و مسلم امیس 'کانفر میں گئی کردیا۔ مگر صدیق کی اس مندر کی کے اس موران انسار کوایک مؤثر تقریر کے ذریعے فراست نے امت کی وحدت کی لاح رکھ لی۔ چنا نچہ آپٹے نے انسار کوایک مؤثر تقریر کے ذریعے سمجھایا جس پر انسار کے مجمع نے لیک کہا۔ حضرت عراق و ہیں آپٹے کے ہاتھ پر بیعت کر لی اور پھر دوسرے دور مسجد نبوی آلیسے میں میں میں میں میں در ہوگی۔ دیا۔ اس کے بعد ہی تدفین میں در ہوگی۔ دیا۔ اس کے بعد ہی تدفین کی طرف توجہ دیے کا موقعہ ملا۔ جس کالازمی نتیجہ بین کلا کہ تدفین میں در ہوگئی۔

تا خیر کا ایک سبب اور بھی تھا کہ نماز جنازہ اجناعی طور پر نہیں ہوا تھا۔ بلکہ صحابہ "ٹولیوں کی صورت میں جم وہ میں جم وہ میں جم وہ میں جم وہ جم و

پڑھ سکتے ہیں اور ظاہر ہے کہ ہزاروں عشاق کے نماز پڑھنے پر بہت دیر لگی ہوگی۔

یسمع صوت المساحی المخ، مساحی مسحاة کی جمع ہے۔ یدیم زائدہ کے ساتھ اسم آلہ ہے جس کا معنی کشف ہوتا ہے۔ پھاوڑ کو کہتے ہیں اور چونکدرات کا آخری حصر سکوت اور خاموثی کا وقت ہوتا ہے۔ اس وجہ سے بیآ واز دور سے بھی صاف سنائی دیتی تھی۔ اس دوسری روایت میں بین تفری ہے کہ تدفین رات کے آخری حصے تک جاری رہی۔ گویا حضرت سفیان امام باقر کی روایت کی تشریح کرتے ہیں کر رات سے مرادرات کا آخری حصہ ہے۔

(۱۱) حدّثنا قتيبة بن سعيد ثنا عبدالعزيز بن محمّد عن شريك ابن عبدالله بن أبى نمر عن أبى سلمة بن عبدالرحمٰن بن عوف قال توفى رسول الله معَلَيْ يوم الاثنين ودفن يوم الثلثاء (۱) قال ابوعيسىٰ هذاحديث غريب.

ترجمہ: حضرت ابوسلمہ بن عبدار ارحمٰن بن عوف سے روایت ہے کہ نبی اکر مہلی ہیں۔ کے دن وفات پائے اور منگل کوآپ ایک کی تدفین ہوئی۔

ابوسلمة: ابوسلمة بن عبد الرحمان، حضرت ابوسلمه مدنى تابعى بين حضرت عبد الرحمان بن عوف رضى الله عنه ك بين مع بين مع

ودف یوم الثلاثاء النے ،دراصل منگل اور بدھی درمیانی شب کوحضور علیہ کے کہ قین ہوئی تھی جس کو چاز آپوم الثلاثاء النے ،دراصل منگل اور بدھی درمیانی شب کوحضور علیہ کی تدفیل کا دن بھی کہا جا سکتا ہے اور یہ وم الاربعاء بھی ۔یا یوں کہنے کہ منگل کی شام کو تدفیل کا کام وغیرہ امور کو شروع کیا گیا اور رات کے آخری حصہ تک پخیل ہوئی یوں تدفین کی نسبت منگل کے روز کو ہوگئ ۔جبکہ بعض شراح نے یہ کہا ہے کہ شریک بن عبداللہ نے نطا اس دن کا ذکر کیا ہے خود امام ترفی گی نے بھی اس حدیث کو غریب کہا ہے۔

(۱)تفردلامام الترمذي بهذاالحديث (مختار)



(١٢) حدَّثنا نصربن على الجهضميّ انا عبدالله بن داؤد قال ثنا سلمة بن نبيط أخبرنا عن نعيم بن أبي هند عن نبيط بن شريط عن سالم بن عبيد وكانت له صحبة قال اغمى على رسول الله علي في مرضه فافاق فقال حضرت الصلوة فقالوا نعم فقال مروابلالا فليؤذّن ومرواأبابكر فليصلّ للنّاس اوقال بالنّاس ثم اغمى عليه فافاق فقال حضرت الصلوة قالوا نعم فقال مروابلالا فليؤذن ومرواأبابكر فليصل بالنّاس فقالت عائشة إنّ ابى رجل اسيف اذا قام ذلك المقام بكي ا فالايستطيع فالموامرت غيره قال ثم اغمى عليه فافاق فقال مروابلالا فليؤذن ومرواأبابكر فليصلّ بالناس فانّ كنّ صواحب اوصواحبات يوسف قال فامر بالال فاذن وامرابوبكر فصلّى بالنّاس ثمّ انّ رسول الله عَلَيْهِ وجد حقة فقال انظروإلى من اتّكنى عليه فجاء ت بريرة ورجل اخر فاتكا عليهما فلمّاراه أبوبكر ذهب لينكص فاومأاليه ان يثبت مكانه حتى قضى أبوبكر صلوته ثم أنّ رسول الله عليه قبض فقال عمروالله لااسمع احدايذكرأن رسول الله عَلَيْكُ قبض إلاضربته بسيفي هذا قال وكان النّاس اميين لم يكن فيهم نبي قبله فامسك النَّاس قالوا ياسالم انطلق إلى صاحب رسول الله عَلَيُّ فادعه فاتيت أبابكر وهو في المسجد فاتيته ابكي دهشًافلمًا راني قال لي أقبض رسول الله عليه قلت أنّ عمر يقول لا اسمع احداًيذ كرأنّ رسول الله عَالَتُهُ قبض إلاّض وبته بسيفي هذا فقال لي انطلق فانطلقت معه فجاء هو والنّاس قد دخلوا على رسول الله على فقال يا ايهاالنّاس افر جوالي فافر جواله فجاء حتى اكبّ عليه ومسّه فقال إنّك ميت

## *حديث سالم مين تفصيلات:*

ترجمہ: حضرت سالم بن عبیدرضی اللہ عنہ سے روایت ہے جو صحافی ہیں کہ نبی اکرم اللہ عنہ برمرض وفات میں غثی طاری ہوئی۔ پھرافاقہ ہواتو پوچھا کہ کیا نماز کا وقت ہو چکا ہے صحابہ کرام نے کہا کہ ہاں۔ تو آپ آلیہ نے نرمایا کہ بلال سے کہو کہ وہ اذان دیں اور ابو بکڑ سے کہو کہ وہ لوگوں کو نماز پڑھا ئیں۔ پھرآپ آلیہ بیوش ہوگئے۔ پھرش آیا۔ تو دریافت کیا کہ کیا نماز کا وقت ہوچکا ہے لوگوں نے کہا کہ

(١)سنن ابن ماجة ص ٢ ٨كتاب اقامة الصلواة والسنة فيها باب ماجاء في صلواة رسول الله عَالَبُهُ في مرضه، السنن الكبري للنسائي ٢ ٢٣/٣ كتاب الوفاة ذكر كفن النبي عَالِبُهُ وفي كم كفن (مختار)

ماں۔ پھرفر مایا کہ بلال ہے کہو کہ وہ آ ذان دس اور ابوبکرصد نق سے کہو کہ وہ نماز پڑھائیں۔(کئی ہار ایسا ہوا تو)حضرت عائشہ رضی اللہ عنہا نے عرض کیا کہ (میرے والد) ابو بکررضی اللہ عنفم سے تھ ھال ہونے والے (نرم دل) انسان ہیں۔ جب اس جگہ (جہاں آپ کھڑے ہوئے تھے) کھڑے ہو نگے۔ تو رونے لگیں گے اور نماز پڑھانے کی استطاعت نہیں ہوگی۔ لہذا اگرآ پیانے کسی اور (مثلاً حضرت عمرٌ ) کو (نماز پر صانے کا) علم دیں تو بہتر ہوگا۔ پھرآ ہے اپنے برغثی طاری ہوگئی پھر ہوش آیا تو فرمایا کہ بلال سے کہو کہ وہ آذان دیں اور ابو بکرصد ان سے کہوکہ وہ لوگوں کونماز بڑھا ئیں تم تو پوسف علیہ السلام کے قصے (میں مذکورمصر) کی عورتوں جیسی ہو۔حضرت سالم کہتے ہیں کہ پھر بلال کو تھے دیا گیا کہتو انہوں نے آ ذان دی اور ابو بکرصد نو کو کھم دیا گیا تو انہوں نے (جمعہ کی رات کوعشاء کی ) نماز برد ھائی۔ (ای طرح سرہ نمازی آٹ نے بڑھائیں) پھرآ سے ایک کات (پیری مج کوقدرے) سنجل گئی۔ تو تھم دیا کہ دیکھوکوئی مجھے سہارادینے والا ہوتو حضرت بریرہ رضی الله عنبا اور ایک اور محض آیا آی ایسی الله ان کا سہارالے کر (بابرآئے) جب ابوبرصدين رضى الله عندني آب الله كود يكما تو يجهد بلنے لكے يوني اكرم الله نے اشاره فرمایا۔ کداینی جگہ کھڑے رہو۔ یہاں تک کدابو بکرصد بن نے نمازیوری فرمائی۔ پھرنی اکرم آلیکہ (پیر کے دن ہی)وفات یائے تو حضرت عمر نے (تکوار نکال کر) کہا کہ خدا کی فتم جس کسی کو بھی ہے کہتے ہوئے میں نے سنا کہ رسول التُعلِيقَة وفات یائے ہیں میں اس تلوار سے اس کا کام تمام کردوں گا۔حضرت سالم کہتے ہیں کہ عرب کے لوگ ناخوا کدہ تھے نبی اکرم اللہ سے پہلے ان کے ہاں نبی نہیں آیا تھا (اس لئے وہ بھی وفات نبی میں مترود ہوئے۔ لوگ نبی اکرم ایک کووفات شدہ کہنے سے رک گئے۔(البتہ مجھے)انہوں نے تھم دیا کہ اے سالم رسول اللہ اللہ اللہ علیہ کے ساتھی کے پاس

حاؤان کو بلاؤ، میں ابو بمرصد نق کے ماس آباوہ اس وقت مسجد میں تھے میں دہشت کے مارے روتا ہواان سے ملاجب انہوں نے مجھے (روتا ہوا) دیکھا تو یو چھا کہ کیا رسول الله الله الله الله وفات يا بيكيا؟ ميس نے كہا كه حضرت عمر كتے ہيں كه جس كسى كوبھى بير كبتے ہوئے میں نے سنا كرسول الله الله وفات يائے ہيں میں اس تكوار سے اس كا کام تمام کردوں گا۔ ابو بکرصد بق نے جھے تھم دیا کہ آؤ میں ان کے ساتھ گیا آپ ا آئے اس حال میں کہ دوسر سے ( کچھے) لوگ بھی نبی اکرم اللہ کے بال آچکے تھے آٹ نے لوگوں سے کہا کہ اے لوگوں میرے لئے جگہ بنا وَ (لوگ بٹے) تو آپ آئے نبی اکرم الله پر جمک گئے ان کو ہاتھ لگا کر (بوسہ دے کر) یہ آیت پڑھی''انک ميت وانهم ميتون "(ا عني ميالية م بهي وفات يان والع مواوروه بهي مرن والے ہیں)اس کے بعد صحابہ کرام نے ابو بمرصد بن سے بوچھا کہا رونی رسول کیا نبي الرم الله وفات يا يك بين آيا نے فرمايا ''ال' صحابہ كو يقين ہوگيا كہ ابو بکرصد این سی کہدر ہے ہیں انہوں نے بوچھاا بر فیق رسول کیا ہم رسول التعلیق کی نماز جنازہ پر هیں گے فرمایا ہاں، انہوں نے یو چھاکس طرح پر هیں گے آپٹے نے کہا کہ ایک جماعت جمرہ کے اندرجائے۔وہ (جار) تکبیریں پڑھے اوراس کے اندر دعا اور درود بھی پڑھے پھر نکلے اس کے بعد دوسری جماعت اندرآئے اور تکبیریں اور دروداور دعایا ہے بھروہ نکل جائے یہاں تک سب لوگ جرے میں آ کرنماز پڑھ لیں صحابہ کرام نے بوچھ اکہ اے رفیق رسول کیا رسول اللہ اللہ فیصلہ وفن کئے جا کیں گے فرمایا ہاں انہوں نے یو چھا کہاں؟ فرمایا اس جگہ پر جہاں پر اللہ تعالیٰ نے ان کی روح قبض کی ہو۔ کیونکہ اللہ تعالیٰ نے ان کی روح کو پاک (اورمبارک) جگہ ہر ہی قبض کیا ہوتا ہے۔ صحابہ کو یقین ہو گیا کہ صدیق نے سے بولا ہے اس کے بعد ابو برصد ان نے نے تھم دیا کہ نی اکر میں کے دادا کی اولا دان کونسل دیدس۔

462

ادھرمہاجرین آپس میں (امارت وخلافت کے سلسلے میں ) مشورہ کرنے کیلئے جمع ہو گئے کچھ لوگوں نے کہا کہ آئیں اپنے انصار بھائیوں کوخلیفہ کے تقرر کے کام میں اپنے ساتھ شریک کرلیں (انصار سے مشورہ کے بعد) انصار نے کہا کہ ایک امیر ہم انصار میں سے اور ایک امیرتم مہاجرین میں سے ہو۔حضرت عرظ (اسمجلس میں )بولے کون ہے جس کیلئے ان تین فضیاتوں کی طرح فضیاتیں حاصل ہوں۔ (اول) شانبی اثنین اذھما فی الغاد ، لینی الویکران دومیں سے دوسر ہے ہیں جب وہ غارثور میں تنہاتھ۔(بیرمنقبت نبی اکرم اللہ کے ساتھ انتہائی گہرے ربط کی غماز ب)دوم،اذيقول لصاحبه لين جب نبي اكرم ين في في سفر مايا (بيد منقبت خداوند تعالی کی جانب سے ابوبرصد بن کی صحابیت اور نبی کریم اللہ کی رفاقت كي تصيص ب) سوم، الاسحن ن إنّ اللّه معنا ، يعني م نه كرالله تعالى ہارے ساتھ ہے (اس خبروآیت میں اللہ تعالیٰ کی معیت ونھرت کا بیان ہے کہ جس طرح وہ نبی اکرم ﷺ کے ساتھ تھی ویسے ابو بکرصد نق کے ساتھ بھی تھی) بتاؤوہ دو(غارثور کے ساتھی) کون تھے (یعنی نبی اکر مہلی اوراس کے ساتھی ابو بکرصد نق) اس کے بعد عمر فاروق نے ہاتھ بردھایا اور صدیق اکبڑ سے خلافت پر بیعت کرلی اور (عمر کی متابعت میں ) دیگرلوگوں نے بھی ان کے ہاتھ پر برضاورغبت بہت سچی ببعث کر لیا۔

463

سالم بن عبيد: حضرت سالم بن عبيدا تجعى رضى الله عنه الل صقة من سے تھے۔ بعد من كوفه من ربائش یذیر ہوئے اصحاب سنن نے ان سے دو حدیثیں روایت کی ہیں۔ایک حدیث امام ترند کی اور ابوداؤڈ نے كتاب الا دب باب ما جاء في تشميت العاطس مين روايت كي ہے اور دوسري زير نظر حديث ہے۔ اغمى على رسول الله عليلة في مرضه فافاق، مرض عمرض وفات مراد بداور افاقہ سے مراد بیہ ہے کہ کمزوری کی بناء برآپ جس بے خودی کا شکار ہوئے۔ یا جس طرح آپ ملکوت بالا کے مشاہدے میں مشغول ہوئے سے وہ حالت ختم ہوگئ اور دوبارہ عالم ناسوت میں رجوع کر گئے۔

انجماء نبوت کے منافی نہیں: اغمی علی رسول اللّه عَلَیْتِ نی اکر میں ہوگئے۔

عثی ہوتی تھی۔ اور جب ہوش آتا تو پوچھے کہ نماز کا وقت ہوگیا ہے یا نہیں؟ جواب ملنے پر فرماتے کہ بلال گوآ ذان کہنے اوار ابو برصد بین کونماز پڑھنے کا حکم دو۔ اس جملے میں انبیاء پر بیہوشی طاری ہونے کا ذکر ہوائوں کہنے اوار ابو برصد بین کونماز پڑھنے کا حکم دو۔ اس جملے میں انبیاء پر بیہوشی طاری ہونے کا ذکر ہوائوں کہنے اوار بیج بین میں ایک بیاری ہے جوانبیاء کے حق میں ممتنع نہیں لیکن علامہ کی کہتے ہیں کہا نبیاء کا اغماء بھی معمولی بیخودی ہوتی ہے ممل طور پر بے شعوری سے وہ محفوظ ہوتے ہیں جیسے کہان کی نیند بھی مکمل بے شعوری کا سبب نہیں بنتی البتہ انبیاء کے حق میں جنون متنع ہے بلکہ دیوائل سے محفوظیت پرقر آن کریم ناطق ہے۔

کریم ناطق ہے۔

 د نیوی اورخلافت کی بنیاد بننے والی تھی مگر ہاں ہمہ وہ خود کہتی ہیں کہ میرے والدرقیق القلب ہیں۔ بہت زیادہ عمکین ہونے والےاور نرم دل ہیں۔اور رسول الله الله کے ساتھان کی عشق و محبت بھی کوئی ڈھکی چھپی ا بات نہیں۔لہذا واضح ہے کہ آپ آیا ہے کی جگہ خالی دیکھ کردل یارہ ہوجائیگا۔اور آہ و بکاءاس کی نماز میں حائل ہوجائے گی اس لئے ان کی جگہ سی دوسر سے کا تقر رکروائے۔

465

صواحبات يوسف سي تشبيه: فإنّ كنّ صواحب يوسف النع، ني كريم الله عني كريم الله عنها ويجما فاقه ہوا۔ تو حضرت عا کشٹر کے اصرار کا جواب دیتے ہوئے اس کے عذر کرنے پرخفگی کا اظہار فرمایا۔ حاصل ہیر کہ میں نے ایک تھم دیا ہے اب اس میں چون وج ااور اس پر مکتہ شجیوں کی کوئی ضرورت نہیں ہم عورتیں تو وہ لوگ ہوجنہوں نے حضرت پوسٹ کو بھی مصائب میں ڈالا تھااور غلط مشور بے دیئے اسی طرح تم بھی مجھے غلط مشورے دیکر پریشان کررہی ہو۔

يهال يرنبي كريم الله في المرف عائشة كيليج جمع كاصيغه استعال كياجويا توصرف اعزاز وتشريف کیلئے ہے۔اورمعزز ومہذب لوگوں کا طریقہ بیہ ہے کہ وہ مخاطب کو جمع کے صیغے سے مخاطب کر کے پکارتے ہیں۔خواہ وہ مخاطب اس کے بیوی بچوں میں سے کیوں نہ ہو۔مثلاً حضرت موسیٰ علیہ السلام کے ہمراہ سفر میں ان کی پیوی جارہی ہیں۔ مگروہ کہتے ہیں۔ امکشوا إنّي آنست ناراً لعلّي آتیکم منها بخبر آلاية ،تو ني كريم الله في اعزاز أوتشريفاً جمع كاصيغهاستعال كيا- مااس وحد يجمع كاصيغهلائي-کہ حضرت عا نشٹ کی تائید دیگراز واج مطہرات نے بھی کی تھی۔خصوصاً حضرت حفصہ تو اکثر باتوں میں حضرت عا کشٹے ہمراہ ہوا کرتی تھیں اور بخاری اور تر مذی (پاپ منا قب الی بکڑ) میں پہتھری ہے کہ حضرت عا کشٹنے حضرت حفصہ ٹے ذریعے بھی یہ بات کہلوائی تھی۔

وجراتشبید: یہاں پرتشبیدایک بموقعہ بات کہنے اور اس پر اصرار کرنے میں ہے یعیٰ صواحبات (۱) پوسف علیہ السلام نے بھی پوسف علیہ السلام کے سامنے عجیب حیال چلی اور بے جا مطالبے میں زلیخا کی (۱) صواحیات یوسف سے اگر مصر کی عورتیں مراد ہوں تو بہتشیبہ درست ہے لیکن ملاعلی قاریؓ نے صواحب یوسف سے زلیغام ادلیکروچه شه به بیان کی ہے کہ جیسے زلیغانے بظاہرتو دعوت کا بہانہ کر کےمعم کی عورتوں کواکٹھا کر اپنا تھا مگر در بردہ وہ ا نی محت میں مجبوری اور عذر خواہی کاارادہ کر چکی تھی۔ (اصلاح الدین) سفارش کردی ای طرح حضرت عا کشش نے بھی گویا ہے گل بات کہہ کراصرار کیا۔ یا تشبیداس میں ہے کہ جس طرح زلیجا نے دعوت کا بہانہ بنایا مگر در حقیقت وہ اپنی سہیلیوں کی طعن وشنیج کے جواب میں اعتز اراور اپنی مجبوری کا اظہار چاہتی تھی۔ اسی طرح حضرت عا کشتیجی بظاہر رفت قلبی کا بہانہ کرتی ہیں مگر حقیقت میں انہیں اس بات کا اندیشہ ہے کہ نبی کریم اللہ کی کر کو گھر او کھے کر لوگ ان کے والد کو منحوس سے جیسا کہ بخاری و مسلم کی روایات میں تصریحات ہیں۔

افتداء ابو بکراورامامت ابی بکری تاکید: نبی کریم الله کی تاکید پر حضرت ابو بکر بی نے نماز پر هانی شروع کردی اده بی کریم الله نے خود بی منظر دیکھنے کیائے حضرت بریر اور ایک اور صحابی کا سہار الیا اور مسجد تک تشریف لائے حضرت ابو بکر صدیق نے سوچا کہ اب تو افضل ترین امام آ چکے بیں اس لئے فیدھب لین حص ، بین حص کاف کے ضمہ کے ساتھ ینصر کے وزن پراور کسرہ کے ساتھ یضر ب کے وزن پراور کسرہ کے ساتھ یضر ب کے وزن پرآتا ہے مؤ خرالذ کر قرآن میں بھی موجود ہے۔ یعنی نماز میں بیچھے ہٹنے لگے۔ گرنی کریم الله الله کیا ہے افتارہ کیا گئی ہو جود ہے۔ یعنی نماز بیٹ ھیے ہٹنے لگے۔ گرنی کریم الله الله کیا گئی ہو جود ہے۔ یعنی نماز بیٹ ھے کا منظر دیکھنا چا بتا ہوں۔ ابو بکر صدیق نے اشارہ کیا کہ میں نے تمہارے لئے امام اور خلیف کو مقرر کردیا کہ میں نے تمہارے لئے امام اور خلیف کو مقرر کردیا کہ میں نے تمہارے لئے امام اور خلیف کو مقرر کردیا ہے۔

حتّی فصلّی ابوبکو صلواۃ ،علامہ مناویؓ لکھتے ہیں کہ نبی کر پہ اللہ نہ آکر ابو بکر صدینؓ کی اقد اء میں نماز پڑھی بلکہ بیبی کی روایت میں اس کی تصریح منقول ہے۔ جبکہ ملاعلی قاریؓ نے اس کور جے دی افتد اء میں نماز پڑھی بلکہ بیبی کی روایت میں اس کی تصریح ہے کہ نبی اکر مہالیہ ابو بکر صدینؓ کو د کھنے کے بعد واپس ہوگئے۔ دوسری روایات میں اس کی تصریح ہے (۱) جس دن آپ اللہ کی وفات ہوئی تھی اسی روز صبح کی نماز میں بھی آپ اللہ نے جرے کے دروازے میں کھڑے ہوگئے کی وفات ہوئی تھی اس کی نماز میں بھی آپ اللہ نے اور پھر واپس دروازے میں کھڑے ہوگئے کی مفاز میں بھی آپ اللہ کی فرما نمیں۔ اور پھر واپس جرے میں تشریف لے آئے۔ اگر یہاں پر اسی نماز کا ذکر ہو پھر تو ملاعلی قاریؓ کی بات رائے ہے۔ اور اگر یہ میں تشریف لا نا۔ اور ابو بکر صدیقؓ کے پہلو میں بیٹھ اور اگر یہ میں اور نماز کا ذکر ہوتھ کی نبیاد میں بیٹھ کے کہنے کو نبیاد میں بیٹھ کے کہنے کیں بیٹھ کے کہنے کو نبیاد میں بیٹھ کے کہنے کہنے کر نماز پڑھانا بھی ثابت ہے۔

(١) كماسبق في الرواية الاول من هذاالباب ٢ ١، اصلاح الدين عفي عنه

بہرحال واقعات کے تعدد سے بیر تھی بھی سلجھ سکتی ہے اسی طرح نبی اکر م اللہ جن دو مخصوں کا سہر حال واقعات کے تعدد سے بیر تھی بھی سلجھ سکتی ہے اسی طرح نبی اکر م اللہ عضرت عباس ، سہار الیکر مسجد میں تشریف لائے تھے۔ان کی تعیین میں بھی مختلف ناموں کا ذکر آتا ہے۔ مثلاً حضرت عباس ، حضرت اسامہ بن زیل ، حضرت ثوبان ، حضرت نوبہ اور حضرت بریرة بنت صفوان ، اگر واقعات متعدد ہوں تو پھر اس اختلاف کی توجیہ میں بھی آسانی ہوجاتی ہے۔

شم أنّ رسول السلّه عَلَيْكَ قبض ، يرمطلب بيس كماس جعرات كوجس مين امامت الى بكر كل الله عَلَيْكَ كى وفات واقع ابتداء بهو كي تقى آپ الله عمراديه به كمامامت كانظام كے بعد آپ الله كى وفات واقع بوئى جو تين دن بعد بيركى دو پهر واقع ب- اس وقت ابو بكر صديق عوالى مدينه مين تخ كے مقام پر تھے جہاں ان كا اپنا گھر تھا۔

حضرت عرض الراس می کربیتے: فقال عمر الاسمع احداً النج ، عشق دیجت اوردل میں محبوب کی عظمت انتهاء کو کئی جائے وانسان کی سجھ میں محبوب کی موت ناممکن نظر آنے گئی ہے وہ بکا بکا اور جیران ہوتا ہے نبی کریم سیالی کی حیثیت تو ہوئی او نجی ہے ان سے کم تر لوگ بھی مرجا نمیں تو عقید تمندوں کو ان کی موت کا اعتبار نہیں آتا اوراس کی قریب ترین مثال امیر المجاہدین سیدا حمد شہید گی شہادت کے وقت نظر آتی ہے۔ جب اس کے کفن بردوش سپاہی اولوالعزی ، عالی ہمتی ، جفاکشی اور وفاشعاری کا پیکر بن کر مشرقی ہندوستان کے دور دراز علاقوں سے درہ بولان کے راستے افغانستان چلے جاتے ہیں۔ پھر وہاں سے بے سروسامانی کی حالت میں درہ خیبر کے ذریعے پیٹا ور آکر اسے فتح کر لیتے ہیں۔ اس کے بعد یہ قافلہ بجاہدین پیش قدمی کر کے اکو ڈ ہ خٹک آتا ہے اور یہاں پر سکھ حکومت سے مگر ہوتی ہے۔

سیدصاحب کی شہادت کا جان نثاروں پراثر: مولانا ابوالحن علی عدوی مظلم نے یہاں دار العلوم حقانیہ آمدے موقع پرایک تقریر میں فرمایا تھا کہ جھے بہت استقراء و تنع اور تاریخ کو کھنگا لئے کے بعدیہ معلوم ہوگیا کہ گرزی ہوئی چار پانچ صدیوں سے مجھے اسلامی اصولوں کیمطابق جہاد پوری قواعد شرعی کو کھوظار کھتے ہوئے یہاں اکوڑہ خٹک سے شروع ہوا اتن طویل مدت کے بعد سید احمد شہید نے اسلامی قوانین کی پاسداری کرتے ہوئے پہلے دیمن کو دوت اسلام دی ورنہ جزید یا پھر تلوارسے جہاد کیلئے تیار ہوجانے کی اطلاع دی۔

اور جہاد کے تمام مقد مات کی تحیل کے بعد اکوڑہ خٹک کے مقام پر تملہ کر کے شہداء نے اپنا خون بہایا۔
جنگ اکوڑہ خٹک:

اس کے بعد سید صاحب اور اس کے ساتھی اکوڑہ خٹک کے مقام پر شب خون کے بعد قربی گا دَن شیدو آتے ہیں اور وہاں با قاعدہ کا فرا فواج سے آمنا سامنا ہوتا ہے جنگ کی رات شیدو سے لے کر یہاں اکوڑہ خٹک اور نوشہرہ تک میدانوں میں تقریباً ایک الکوفرج خیمہ ذن تھی ہائے اللہ چشم فلک نے کیا منظر اس وادی غیر ذی ذرع میں دیکھا ہوگا۔ (حضرت شخ الحدیث تو اس وقت کے اکوڑہ خٹک کے کیا منظر اس وادی غیر ذی ذرع میں ویکھا ہوگا۔ (حضرت شخ الحدیث تو اس وقت کے اکوڑہ خٹک کے بیٹے ہیں اور بیٹے جا آب وگیا ہ زمینوں اور اس میں وار العلوم کے قیام کو کمہ کے وادی غیر ذی زرع سے تشید دیا کرتے تھے۔) رات بھر اللہ اکر کی گوئے اور جہاد کے فلغلوں سے کیا سماں رہا ہوگا یہ جہاں ہم اور آپ بیٹھے ہیں اور اس کے اردگر داطراف میں سب میدان سے اور اس چیہ چیہ پر اس رات بجا ہدین سر ہمجو د ہو کر گر ٹڑ اے ہو نئے سبح میں میدان جنگ میں غداری ہوجاتی ہے سیدصا حب کو جنگ کی رات زہر داوایا جا تا ہوہ ہا تا ہو فیا ہو نئگ میں شریک ہیں۔ ہوئے سے میاں خواج ہیں کو آپ پھر سے جمح کر لیتے ہیں اور اللہ تعالی پر تو کل کر کے جا تا ہے صحبت یا بہو کر کھر سے ہو کر کھر سے جا ہدانہ کا دروائیاں شروع کر دیے ہیں ہی تی ہی کہ بیا آل خرآ ہے کو مشہد بالاکوٹ پر لے جا کی ہو جہاں آپ کا محاسرہ ہوجا تا ہے اور اس مقام پر سیدصا حب، شاہ اساعیل شہید اور ان کے اکثر جیا لے ساتھی جا س شہادت نوش فرماتے ہیں۔

آپ کا محاصرہ ہوجا تا ہے اور اس مقام پر سیدصا حب، شاہ اساعیل شہید اور ان کے اکثر جیا لے ساتھی جا سے شہد اور ان کے اکر جیا لے ساتھی ہو ہو ہو ہو تا ہے اور اس مقام پر سیدصا حب، شاہ اساعیل شہید اور ان کے اکثر جیا لے ساتھی ہو میاں کے اس کے اس کو حرال کے اس کو حرال کے اس کے اس کے اس کو حرال کے اس کی سے جو اس کے اس کو حرال کو حرال کے اس کو حرال ک

مگرسیدصاحب اس افراتفری کے عالم میں غائب ہوجاتے ہیں ممکن ہے دشمنوں نے ان کی لاش دریا ہرد کردی ہو یا کسی مجاہد نے مزید بے حرمتی سے بچانے کیلئے وہیں کہیں دفن کردی ہو مگرآپ کے باقی ماندہ ساتھیوں میں سے پچھلوگوں نے آپ کی شہادت سے انکار کردیا بلکہ بعض جیدعلاء اور صاحب فراست لوگوں تک نے آپ کے متعلق غیوبت کا عقیدہ اپنایا۔ اور کہدیا کہ سیدصاحب مرنہیں بلکہ بادلوں میں گئے ہیں عنقریب والیس آکر ہماری قیادت فرمائیں گے۔ اور کفارکوشکست دیں گے۔ در دجیسے مشہور شاعر نے آپ جنت ہی سیدصاحب کے بارہ میں کہا

ا تناپیغام درد کا کہنا جب صبا کوئے یار سے گزرے کوئی رات آپ آئیں گے دن بڑے انظار سے گزرے بہر حال ایسی حالت میں انسان ہکا بکارہ جاتا ہے صبر کا دامن ہاتھ سے چھوٹنا ہوانظر آتا ہے ہوش

وحواس مفقود ہوجاتے ہیں اورعقل حقائق واقعیہ کو ناممکن سیجھنے گئی ہے تو یہاں حضرت عمرتهمی جذبات سے مغلوب تھے۔ حواس کھوبیٹھ تھے اور حیرت زدگی کی کیفیت سے دوجار تھے ان کے خیال میں ساری دنیا کو اسلام کے جھنڈے تلے لانے سے قبل نبی کریم اللہ کی موت ناممکن ہی بات تھی۔ یہی ودیقی کہ حضرت عمر ا نی کریم اللہ کی رحلت کی خبر کومنافقین کی اڑائی ہوئی افواہ مجھ بیٹھے۔اور اعلان کر دیا کہ جس نے حضور علیہ کی موت کے بارے میں زبان کھولی۔اس کی گردن اڑا دوں گا۔ نبی کریم تنابقہ وفات نہیں ہوئے بلکہ اپنے رب سے منا جات کیلئے گئے ہیں اور عنقریب واپس آ کران منافقین کے سرقلم کریں گے جنہوں نے آپ کی موت کی خبر پھیلائی ہے آ ہے گی تقریرین کر بعض لوگ آ ہے جمنو ابن گئے اور بعض خاموش ہو گئے۔ صحابه كاوفات انبماء سے بہلا واسطہ: قبال و كن النام اميين ،حضرت بالماس كى وجه بمان فر ماتے ہیں کہ صحابہ پر بہدوہشت کیوں طاری ہوئی۔وہ بتاتے ہیں کہلوگ ان پڑھ تھے پینیبروں اورانبیاء کی حیات وموت کا اس ہے قبل دیکھنے کا اتفاق پیش نہیں ہوا تھا۔لہذاوہ ناوا تفیت کی وجہ سے پریشان تھے گر بعض ذی ہوش صحابہ نے جب دیکھا کہ نبی کر پیم اللہ کی رحلت کا مسلما لجمتنا چار ہا ہے تو ان کو ابو برصد بیٹ کا خیال آیا۔ کہ وہی امت کواند چیروں کے اس منجد ہار سے نکال سکتے ہیں۔اس لئے انہوں نے حضرت سالمُ وآب الله عليه الماري الماري الماري الله عليه الله عليه الله عليه المراكز الله عليه المراكز الماري الم صديق اكبرُوْ صاحب رسول الله "كهام عقل وہوش كا ماتم كرنے والوں كيلئے مقام فكر ہے كہوہ كيسےاس ھخص کی صحبت سے انکار کررہے ہیں جن کی صحبت پر خیر القرون کے چھوٹے بڑے متفق ہیں۔اوراسی نام ہی 

469

فاتيت ابابكر وهو في المسجد ، يهلكرر چائ كابوبرصد ين رحلت كروزر كا عند تھے وہاں ایک چھوٹی سی مسجد میں آپ بیٹھے ہوئے تھے(۱)،حضرت سالم کہتے ہیں کہ میں ان کے یاس روتا (۱) اکثر شراح نے اس چیوٹی مید کا ذکر کیا ہے مگر بعض دیگر روایات میں ہے کہ حضرت ابو بکرصد پڑتا اس سے يملحضور عليلة كي خيريت معلوم كرنے كيلئے اين الله كومدينہ جيج على تقے۔اس نے نبي كريم الله كي موت کی خبر لاکردی تھی اور آپٹ سخ سے معجد نبوی آئے تھے۔اور شاید و ہیں برحضرت سالھ کی ان سے ملاقات ہوئی اورو ہیں انہوں نے ابو بکڑسے بات کی مولا ناز کریا نے بھی اس احمال کوتر جیح دی ہے۔واللہ اعلم بالصواب ١٢٠ اولاح الدين حقاني

ہوا آیا۔ آپٹے نے دور سے دیکھا توسمجھ کئے اور سوال کیا کہ کیاحضور علیہ وفات پا گئے۔ حضرت سالم نے کہا کہ مجھے تو یونمی لگ رہائے ہے۔ جو کہدر ہے کہ جھے تو یونمی لگ رہائے وفات یا جے جہراس کا سراڑا دود لگا۔

اس جملہ کے استصار اور برمحل بیان کی وجہ سے صدیق ٹے ایک بڑے مخصے کوختم کردیا۔حضرت ابو بکر صدیق نے وفات کی تصدیق فرمائی۔ تو صحابی کے بقول

صدیق کی صدافت اور صحابیت مسلم تھی:

ف علموا ان قدصدق، یعی لوگوں کو یعین آیا کہ وہ تھی ابو برصدین نے اس سلسلے میں کوئی فیصلہ دیا۔ تو صحابر کو یعین ہوگا۔ اور ہر بات پراطمینان کا اظہار کرتے ہوئے فرماتے کہ بیشک ابو برصدین نے نئی فرمایا۔

اور پھر نبی کر پر ایک براطمینان کا اظہار کرتے ہوئے فرماتے کہ بیشک ابو برصدین نے نئی فرمایا۔

اور پھر نبی کر پر ایک ایک جماعت اندر جا کہ بابت دریافت کیا۔ تو آپ نے فرمایا کہ ایک ایک جماعت اندر جا کہ آپ ہوگئے کہ نماز پڑھیں گے۔ پھر پوچھا کہ کیا جا کہ آپ ہوگئے کہ بابر کے اس طرح سب لوگ نماز پڑھیں گے۔ پھر پوچھا کہ کیا جا کہ آپ ہوگئے کو بابر کے جا کیں گئے وہ کا کہ باب وہ بابر کے فرمایا ہاں پوچھا گیا کہ کہاں؟ فرمایا جہاں وفات ہوئی ہو ہو تھی آپ ہوگئے کی ماحت اور قوت محابہ کی صاحت ہو تھی ہوگئے وہ سب سے پہلے کو بابر کی صاحت ہو تھی نہیں آرہا تھا کہ حضور تھی ہوگئے حضرت عثان کی ساعت اور قوت حضرت اساء بنت عمیس نے زحضور علی بیٹھ پر ہاتھ پھیر کر بتایا۔ کر مہر نبوت عائی ہو تھی ہوئی ہے اسلیک حضور تھی گئے کہ باب آئے اور صالت دیکھی تو ہوئی وہوائی حضور تھی گئے۔ اسلیک کو بیٹھ کے باب آئے اور صالت دیکھی تو ہوئی وہوائی خوال تھا کہ نبی اگر میائی بیٹوئی ہو تھی جوئی ہے اسلیک کھو بیٹھے۔ اور صالت دیکھی تو ہوئی وہوئی حضور تھی کے اسلیک کا وصال ہو چکا ہے۔ حضرت عراد جب آئی الکھا کہ نبی اگر میائی کہ نبی اگر میائی بیٹوئی ہوئی کے بیٹ اور صالت دیکھی تو ہوئی وہوئی کھو بیٹھے۔ اور صالت دیکھی تو ہوئی وہوئی کھو بیٹھے۔ اور صافرور عیائی کی موت سے انکار کر دیا انکا خیال تھا کہ نبی اگر میائی بیٹوئی ہو تھی جیں۔ اور

471

ہوش میں آکر منافقین کوسرادیں گے۔ خود ابو بکر صدیق جب حاض ہوئے تو آنو بہدر ہے تھے۔ بیکیاں جاری تھیں اور اگر چہ بظاہر حوصلہ مند معلوم ہور ہے تھے۔ گرصد ہے نے اندرہی سے کھوکھا کر دیا تھاجکی وجہ سے جلد ہی ان کا بھی وصال ہوا۔ آپ کی تیلی نے دیگر صحابہ کرام کی ڈھاری بندھائی۔ چنا نچہ جمرے میں صحابہ کے سوالات کا جواب دینے کے بعد آپ مجد میں آئے۔ حضرت عرائے سے ہا '' ایھا اللہ حالف صحابہ کے سوالات کا جواب دینے کے بعد آپ مجد میں آئے۔ حضرت عرائے کے کود کھے کر لوگ حضرت عرائو چھوڑ کر آپ المحلس ''اے شم کھانے والے بیٹھو۔ وہ وہ سے ہی کھڑ سے آپ گود کھے کر لوگ حضرت عرائو چھوڑ کر آپ کی طرف آئے آپ نے فرمایا۔ خبر دار جو تھا تھا کہ عبادت کرتا تھا تو وہ تو وفات پاگے ہیں۔ اور جو خدا کی عبادت کرتا تھا اور وفات پاگے ہیں۔ اور جو خدا کی عبادت کرتا تھا اور وفات پاگے ہیں۔ اور جو خدا کی عبادت کرتا تھا اور میں اور جو خدا کی خوال قلد کے رسول قلد نے میں اور قال انقلبتہ علی اعقابہ کہ المخ، (ترجمہ اور جمہ الارسول قلد کورسول قلد نے میں اس کے جو اس اور اس اور جو کہ اس آئے کو پڑھنے کی وفات کے بعد ان پر ایتما کی افرادی جو کہ کو ون نہیں کر میا ہوگی کی دفات کے بعد ان پر ایتما کی نافر ادی جو اس کے جو اب میں بھن لوگوں نے تو سے کہا جو کہ کہ میں خول کے کہ خود کہ اس کے جو اس کے افرادی طور پر جنازہ پڑھا گیا۔ حضرت علی سے کہ چونکہ ابھی تک لوگ کی خلی وہ میں کر سکے تھے۔ اس کے افرادی طور پر جنازہ پڑھا گیا۔ حضرت علی سے ایک اور وجہ بھی منقول خلیفہ کر ترمیں کر سکے تھے۔ اس کے افرادی طور پر جنازہ پڑھا گیا۔ حضرت علی سے ایک اور وجہ بھی منقول خلیفہ کہ کہ آپ کہ کو کو کر سے کہا:

لايؤمّ احدكم عليه لانّه امامكم حال حياته وحال مماته

ترجمہ: تم میں سے کوئی نماز جنازہ کی امامت نہ کرے کیونکہ آپ آیٹ فیڈ زندہ اور مردہ دونوں حالتوں میں تمہارے امام میں۔

تیسری وجہ یہ بیان کی گئی ہے کہ نبی اکرم اللہ نے اس بات کی وصیت فرمائی تھی۔ کہ یونبی میراجنازہ پڑھوجیسا کہ مشدرک حاکم میں حضرت عائش کی روایت سے یہ بات ثابت ہے(۱)،

عنسل کس نے دیا:

عنسل کس نے دیا:

عنسل کس نے دیا:

عنسان ہیں۔

(۱)مناوی چ۲*س ۲۷*۲۲

آپی اور قیم بن عباس میں حضرت عباس ، حضرت علی ، حضرت فضل بن عباس اور قیم بن عباس کے علاوہ حضرت اسامہ بن زید ، صالح الحسب اور شقر ان (نبی اکرم اللہ کے آزاد کردہ غلام) کانام آتا ہے۔ حضرت بزار گی ایک روایت میں ہے کہ نبی اکرم اللہ نے حضرت علی سے فرمایا کہ لایہ فسسلنی الا انست ف آن له لایسوی احدعورت بی الا طمست عیناہ (۱)، تیر سواکوئی جھے شسل نہ دے کیونکہ (تیر سوا) کوئی بھی میرایر دہ دیکھے گاتواس کی آٹھیں اندھی ہوجا کیں گی۔

چنانچ اصل عنسل دین والے تو علی تھے۔ البتہ فدکورہ دیگر حضرات عنسل دینے میں مد وفر مارہے علی بخری علی کے سوائم مصرات کی آنکھوں پر پٹیاں بندھی ہوئی تھیں۔ حضرت عاکش کی روایت کے مطابق عنسل دینے والوں کے درمیان اس بات میں اختلاف ہوا کہ آپ آلی کے کو برہنہ کر کے عنسل دیا جائے یا کپڑوں میں۔۔؟ کہ اچا تک سب لوگوں پر نیند طاری ہوگی اور چرے کے کونے سے ایک فیبی آواز سائی دی کہ آپ آلی کو کپڑوں ہی میں عنسل دے دیں (۲)۔ چنانچ ایسانی کیا گیا۔

تکفین: عنسل کے بعد آپ اللہ کوتین کپڑوں میں کفن دیا گیا۔ جیسا کہ حضرت عاکشہ حضرت علی ، حضرت ابن عباس محضرت ابن عمر محضرت جاہر اور حضرت عبداللہ بن معفل کی احادیث سے ثابت ہے۔

یہ تین کپڑے از ار، رداء اور قیص تھے۔ جہاں تک حضرت عاکش فیرہ کی روایت میں ہے کہ 'لیسس فیہا قسمیص '' تواس کامعنی یا تو یہ ہے کہ ان میں متعارف قیص نہیں تھا جن میں آستینیں ، گریبان اور بعض دیگر اجزاء ہوتے ہیں۔ اور یا یہ تاویل ہوگی کہ وہ قیص جو شمل دیتے وقت آپ مالیت ہوئے تھے۔ تبدیل کرے دوسری قیص بہنائی گئی۔

#### (1) جمع الوسائل ج ٢٥٣ ٢٢

(٢)مارواه البيهقي في الدلائل عن عائشة انهم لمّاارادوا غسله على الندرى أنجرده من ثيابه كمانجرده والبيهقي في الدلائل عن عائشة انهم لمّاارادوا غسله على النه وعليه ثيابه اى من القميص وغيره فلمّا اختلفوا القي الله عليهم النوم حتى مامنهم رجل إلاّ ذقنه في صدره ثمّ كلّهم متكلم من ناحية البيت لايدرون من هواغسلوا النبي عَلَيْتُ وعليه ثيابه فغسلوه وعليه قميصه يصبون الماء فوق القميص (جمع الوسائل ٢٧٣/١) (مختار)

تدفین: بده کی رات کوسحابہ کرام جنازہ وغیرہ امور سے فارغ ہو گئة حضرت ابوطلحہ رضی اللہ عنہ نے آپ اللہ عنہ کے آپ اللہ عنہ کے بستر ہے کی جگہ قبر کھود ڈالی اور اس میں لحد بنالی۔ پھر اس میں علی ، عباس اور ان کے دونوں بیغ فضل اور قسم اتر ہے اور نبی اکر مہلکتے کو اس عالم کے بہترین مقام میں رکھ دیا قبر سے سب سے آخر میں قشم بین عباس نکھے ۔ لحد پر کچی اینٹیں رکھ دی گئیں پھر خاک ڈال دی گئی قبر کو ماہی پشت بنایا گیا۔ اور حضرت بلال نے قبریریانی چھڑکا۔

خلافت صدیقی پراجماع: واجت مع المهاجرون النج ، اکثر مهاجرین حضرت ابو برصدیق کے کم سے خلافت پر مشورہ کیلئے جمع ہوگئے۔ کیونکہ ہے اہم ترین مرحلہ تھا مہاجرین میں سے حضرت عمر اور دیگرذی رائے لوگوں نے مشورہ دیا کہ خلیفہ کے امتخاب میں انصار کو بھی اعتاد میں لینا چاہئے تا کہ جاہلیت کے دور کی طرح پھر سے مرداری نظام اور طوائف الملوکی کا دور شروع نہ ہو۔

دوسری طرف انصار بھی اس سلیط میں سقیفہ بنوساعدہ میں جمع تھے۔ چنا نچی شخین خودان کے پاس چلے گئتا کہ کہیں وہ ازخود کس کے ہاتھ بیعت کی غلطی نہ کر بیٹھیں۔ چنا نچی انہوں نے ''من المیب و منکم امیب "کی بات کہی تو ابو بکر صد این نے حدیث' الائمة من قریش ''سانی اور انصار خلافت سے دستبر دار ہو گئت حضرت عمر نے اٹھ کر فر مایا۔ کہ ہم سب میں سے کون ہے جس میں بیک وقت تین نضیاتیں جمع ہوگی ہول اور وہ منصوص ہوں۔ ایک تو ''فیانسی اثنین اذھ مما فی الغاد '' یعنی نی کر پر میلائے کے ساتھ اتحاد ومعیت اور بالکل تنہائی کی رفاقت ہے۔ دوسری ''اذیب قول لیصاحبہ النے '' ہے۔ لیمن خود اللہ تبارک وتعالی الرو بکر کو حضور عقیات کا ساتھی اور صحافی فرمار ہے ہیں۔ تیسری ''ان اللّه معنا '' ہے۔ لیمن اللہ تعالیٰ کی اللہ تعالیٰ ہمار سے ساتھ ہے۔

حضرت عمر ف اسموقعہ پر صحابہ سے کہا کہتم ہی بتاؤ کہ وہ دوکون تھے جن کا ثانی اثنین میں ذکر ہے پھر اور بھی گفتگو ہوتی رہی جس کی تفصیلات دیگر روایات سے معلوم ہوتی ہیں مثلاً حضرت عمر ف فرمایا اے انصار مدینہ کیا نبی کریم میں فیلیٹے نے ابو بکر گوا پنے مصلے پر کھڑا کر کے علالت کے دوران نماز نہیں پڑھوائی تھی۔ کیا تم میں سے کوئی بیہ گوارا کر سکے گا۔ کہ نبی کریم تیالیٹے کے کھڑے کئے ہوئے شخص کوامامت سے ہٹادو۔ انسار نے فرمایا ''معاذ اللہ ہم بہ جرائت کب کرسکتے ہیں'' پھر حضرت عمر نے ہاتھ بڑھایا اور حضرت الوبکر سے بیعت کی۔ اس کے بعد سقیفہ بنوساعدہ میں جمع لوگوں نے بردی محبت وعقیدت سے بیعت کی۔ بعض روایات کے مطابق حضرت ابو بکر صدیق نے حضرت عمر کے ہاتھ پر بیعت کا ارادہ ظاہر کیا مگر حضرت عمر نے انکار کردیا۔ و بایعه الناس بیعة حسنة جمیلة ، یہ ابتدائی بیعت تھی جو مجلس انسار میں ہوئی۔ دوسرے روز مسجد نبوی میں عمومی بیعت ہوئی جس میں حضرت عمر نے افتتا ہی خطاب فرمایا۔ پھر حضرت ابو بکر صدیق نے اپنا شہرة آفاق خطید یا۔ اور تمام لوگوں نے ان کی خلافت تسلیم کر کے ان کے ہاتھ پر بیعت کی۔

(۱۳) حدّثنانصربن على ثناعبدالله بن الزبير شيخ باهلى قديم بصرى ثنا ثابت البناني عن أنس بن مالك قال لمّا وجد رسول الله عن ثنا ثابت البناني عن أنس بن مالك قال لمّا وجد رسول الله عن كرب الموت ماوجدفقالت فاطمةٌ واكرباه فقال النبي عَلَيْنَا لَهُ لاكرب على ابيك بعد اليوم انّه قد حضر من ابيك ماليس بتارك منه احداالوفاة يوم القيامة (۱).

#### فاطمة كادردوكرب:

ترجمہ: حضرت انس سے روایت ہے کہ جب نبی اکر م اللہ کو (مرض وفات میں)
سخت تکلیف ہوئی۔ تو حضرت فاطمہ پکاراٹھیں'' ہائے تکلیف کی شخی'' اس پر نبی
اکر م اللہ نے فرمایا کہ تیرے باپ پر آج کے بعد کوئی تکلیف نہیں رہے گی۔ بیشک
آج تیرے باپ پروہ چیز نازل ہوئی ہے۔ جس کو اللہ تعالی کسی سے قیامت کے دن
تک نہیں ٹالتے۔وہ ہے موت۔

(۱)سنن ابن ماجة ص۱۱ کتاب الجنائز باب ذكروفاته ودفنه عُلَيْهُ، السنن الكبرئ للبيهقي ۱۲ دارمي ۱ ۲۰۰، مسنداحمد ۱۳۱ (مختار)

تسلی کا انداز: لاکوب علی ابیک بعد الیوم ، نبی اکرم الله نبی کوسلی دی کریه شدا کدان نبی کوسلی دی کریه شدا کدان نعمتوں کے مقابلے میں بیج ہیں۔ جن کا وعده الله تعالی نے بہت پہلے 'ولسوف یعطیک ربک فترضی ''میں فرمایا ہے۔ اب تو اس دار الحن سے رخصت ہو کرمقام محمود پر فائز ہونا ہے اور رفیق اعلیٰ سے ملنا ہے۔ اس لئے آج کے بعد تیرے والدکی تکلیفوں کا خاتمہ ہونے والا ہے۔ اب تو وہ اٹل چیز جو دائی نعمتوں کیلئے بل کا کام دیتی ہے نازل ہور ہی ہے۔

اُنّه قدحضر من ابیک ما ، صرک معن قرب اور ما کامعی ہے شئی عظیم، لیس بسارک منه، لیس کااسم اللہ ہاور منہ کی شمیر'' ما'' کوران جہالوفاۃ ما کابیان ہے۔ اور یوم القیامة منصوب ہے بنزع المخافض لیعنی الی کوحذف کر کے منصوب کردیا گیا ہے۔ اس جملے کی ترکیب میں دیگر اقوال بھی ہیں۔ لیکن سب سے ظاہر ترکیب یہی ہے۔ جو ذکر کی گئی ہے اس جملے میں بھی تسلی کا سامان موجود ہے۔ یعنی جس چیز سے چھ کارانہیں وہ اٹل چیز نازل ہوئی تو کیا ہواایک دن تواسے آنا تھا۔

(۱۳) حدّثنا ابوالخطاب زیاد بن یحییٰ البصری و نصربن علی قالاحدّثنا عبدربّه بن بارق الحنفی قال سمعت جدی أبا أمی سماک بن ولید یحدّث أنّه سمع ابن عبّاس یحدّث أنّه سمع رسول اللّه عَلیٰ بهما الجنّة فقالت له یقول من کان له فرطان من امّتی أدخله اللّه تعالیٰ بهما الجنّة فقالت له عائشة ف من کان له فرط من امّتک قال ومن کان له فرط یا موقّقة قالت ف من لم یکن له فرط من امّتک قال فانا فرط لامّتی لن قالت ف من لم یکن له فرط من أمّتک قال فانا فرط لامّتی لن یصابوابمثلی(۱).

ترجمہ: حضرت عبداللہ بن عبال کہتے ہیں کہ انہوں نے نبی کریم اللہ سے سنا وہ فرمارے تھے کہ میرے جس امتی کے دو بچ (مرکز) آخرت میں اس کے لئے پیشرو

(۱) جامع ترمذي ۲۰۴۱ كتاب الجنائز باب ماجاء في ثواب من قدم ولد، السنن الكبرئ للبيهقي ۲۷/۲ كتاب الجنائز، مسنداحمد ۳۳۴۱ (مختار)

بن جائیں تو اللہ تعالیٰ اس کے بدلے اس کو جنت میں داخل فرما ئیں گے۔حضرت عا کشہرضی اللہ عنبانے پوچھا کہ جس کا ایک ہی بچہ ذخیرہ آخرت بنا ہو (اس کا کیا ہوگا)
آپ اللہ عنبانے نے فرمایا کہ جس کا یک فرط ہووہ بھی جنت میں جائیگا اے خمر کی توفیق دی
گئ عا کشہ۔انہوں نے پھرعرض کیا کہ جس کا کوئی فرط پیشروہی نہ ہو (کوئی نہیں مراہو)
آپ اللہ نے فرمایا کہ ان کیلئے میں ذخیرہ آخرت بنوں گا۔اس لئے کہ میری فراق کی مصیبت جیسی ہوئی۔

صدمه عظمیٰ مین عمگساروں کیلئے تسلی کاسامان: من کان که فرطان النج ، اس حدیث کا بظاہر وفات النبی اللہ سی مناسبت ضرور ہے اور وہ یہ کہ اس حدیث میں وفات النبی اللہ سی مناسبت ضرور ہے اور وہ یہ کہ اس حدیث میں امت کو یہ تسلی دلانی ہے کہ جب رحلت النبی اللہ کی وجہ سے کوئی دکھی ہوتا ہے تو اس در دکا بدلہ بصورت جنت ملے گا اور یہی کیفیت ہوئی کہ صحابہ نے اس دکھ کو عمر بحر سینے سے لگائے رکھا وہ جس میت کی تعزیت کیلئے جاتے تو اس کی موت پر تعزیت سے لیان کے بعداس حدیث میں عشاق کے غز دہ دلوں کیلئے تسلی کا سامان بھی موجود ہے۔

گویا امام ترفری میریتانا چاہتے ہیں کہ نبی کریم اللہ کا رحلت بردا المیہ عظیم حادثہ اور سانحہ کبری ہے جس طرح خود نبی کریم اللہ فرماتے ہیں۔ 'لن یصابوا بمثلی ''یعنی میری امت کو بہت سے مصائب پیش آئیں گے، بہت می محبوب اشیاء سے بھی ہاتھ دھونا پڑتا ہے مگر میر نے فراق جیساعظیم غم اور میری رحلت جسی مصیبت بھی بھی نازل نہیں ہو سکتی ۔ ہاں میری امت کیلئے بیحادثہ نا قابل پر داشت دکھ کے ساتھ ساتھ رحمت کا ایک ذریعہ بھی ہے۔ وہ یوں کہ جس طرح باپ کو بیٹے کی موت پر صبر کا بدلہ جنت کی صورت میں ماتا ہے یو نبی نبی کریم اللہ جنت کی صورت میں ماتا ہے یو نبی نبی کریم اللہ ہے۔ وہ یوں کہ جس طرح باپ کو بیٹے کی موت پر صبر کا بدلہ جنت کی صورت میں ماتا ہے یو نبی نبی کریم اللہ ہے۔ وہ یوں کہ جس طرح باپ کو بیٹے کی موت پر صبر کا بدلہ جنت کی صورت میں ماتا ہے یو نبی نبی کریم اللہ ہے۔

من كان له فوطان الخ، فرطقا فلى كاس پيشروكوكت بيں جو پہلے جاكر بعدكآنے والوں كيلئے جگه، پانى اور سامان اقامت كا انظام كرتا ہے۔ مطلب يہ ہے كہ جس كے دو بي داغ جدائى دے كرذ خيره آخرت بن جائيں۔

یاایک بچ بھی تو اللہ تعالیٰ اس کے بدلے والدین کو ضرور جنت میں داخل فرما کیئیے۔ قال ومن کان له فوط، لینی کذالک، مطلب بیہ کے ایک فرط والابھی اس طرح جنت میں جائیگا۔

یامؤ ققه اینی مخفی نیری تو فتی دی گئی ہے۔ اسی وجہ سے مناسب سوال کر پیٹی ہواور چونکہ حضرت عائشگا پی اولا دکوئی نی مخفی نیری تو فتی دی گئی ہے۔ اسی وجہ سے مناسب سوال کر پیٹی ہواور چونکہ حضرت عائشگا اپنی اولا دکوئی نی تھی۔ اس لئے بیسوال بھی کردیا ' فعمن لم یکن له فوظ من امتک ؟ ' کہ جس کا کوئی بچند مراہوا س کا کیا ہوگا ؟ نی کریم آلی ہے نے جواب میں فرمایا کہ ' فان فوط لامتی لن بصابوا ہمثلی '' یعنی جس کا کوئی بچنیں مراہوتو میں خوداس کیلئے ذخیرہ آخرت اور فرط بنول گا کیونکہ میری جدائی اوروفات کا صدمہ اور رخی والم توسب سے زیادہ ہوگا۔

یہاں امت سے امت اجابت مراد ہے اور 'لن یص ابو ابمثلی ''جملہ متا تفہ بمنزلۃ التعلیل ہے۔ یعنی ماقبل کیلئے وجہ بیان کرنامقصود ہے کہ صدمہ ہونے میں میری جدائی اور بچوں کی جدائی ایک جیسے ہیں بلکہ حضو و اللہ کے ایک کا صدمہ بردھ کر ہے۔ ایک شاعر نے کیا خوب کہا ہے ۔

والصبر يحمد في المواطن كلها الاعليك فانه مذموم

لین صبرتو ہر جگہ قابل تعریف صفت ہے سوائے بچھ پر کہ بچھ پر صبر مذموم ہے۔

ملاعلی قاریؓ نے بڑی پیاری بات کہی ہے کہ یہ بشارت نبی کریم آلی کے اہل زمانہ مؤمنین اور بعد

كَ أَيُوالُولَ كَيْلِيمُ مِنْ فَاللَّهِم اجعل النبيِّ عَلَيْكِ لَنا فرطاً"

وصلى الله على سيدنا وحبيبنا محمد وآله وصحبه وسلم

#### خلاصهباب

### ر من الاول الجاية ساتھوہ فاجعہ كبرى بھى لايا۔

جس نے اس عالم فانی کی روشنی چین لی۔اور صحابہ کرام بلکہ ساری امت کے دل ود ماغ پرغم کا انمٹ داغ شبت کردیا۔ا خیر صفر میں نبی کریم الله کا کوخت در دسر کا سامنا کرنا پڑا۔ جورفتہ رفتہ بیبوثی اور پھر وفات پر شنج ہوا۔

حكمت المهيد كتحت آپ الله كا مرض وفات شديد تكليف اورنا قابل برداشت كرب والم پر مشتمل تقاد يهال تك حضرت فاطمه پاراتيس و اكسوب اه "اور حضرت عاكش كوموت كى شدا كد سه مشتمل تقاد يهال تك حضرت فاطمه پاراتيس و المرس و المر

وفات کالیتین ہوجانے کے بعدامت کی وحدت کی فکر دامنگیر ہوئی تو ابو بکرصد این گوا مامت کا تھم دیا اور حضرت عا کشرا ورحف ہے کے مشوروں کے باوجود آپ آلی نے نے کسی اور کی امامت برداشت نہیں گی۔ پھر ابو بکرصد این کی امامت میں ان کے پیچے امت کی افتداء کا نظارہ کرنے کیلئے انتہائی تکلیف کے باوصف دوسروں کا سہارالیکر مسجد تشریف لے گئے تا کہ اس منظر سے دل خوش اور آ تکھیں شھنڈی کرسکیں۔ جس روز آپ آپ آلیکے کی وفات ہوئی اسی دن صبح کی نماز میں بھی جمرے کے دروازے سے بیمنظرد یکھا اور عشاق کو اپنا آخری دیدار کروایا پھر اسی روز لینی بیر کے دن ۱ ایا ۲ مرزی اللول کو واصل بحق ہوئے۔

وفات کے بعد صحابہ بچوو فات الانمیاء سے ناوا قف اور ذبنی طور پراس حادثہ ظلی کے لئے تیار نہیں سے آپ میں تاریخ کی وفات سے انکار کر بیٹھے۔ اکثر کواس میں تر دد ہوا۔ بہت سے غم کی وجہ سے بدحواس۔ بلکہ مفقود الحواس ہو گئے عمر جیسے مضبوط اعصاب کے مالک کو بھی حقیقت تک رسائی نہ ہوئی اور نجی آلیک کے موت کا نام لینے والوں کو واجب القتل سمجھنے گئے۔

الی حالت بین محسن امت صدیق اکبڑے ہاتھوں امت کی ڈھارس بندھی۔وہ ہی بلائے گئو تو آئے اور نجی بیٹے کی بازوں پر ہاتھور کھ کر بیٹانی کو بوسردیا''و انبیہ۔ ہ'''و اخسلیہ لاہ'' کہہ کردردغم کا اظہار کیا۔ اور وفات نجی بیٹے کے سلطے میں صحابہ کرام کے اضطراب کوختم کردیا۔ صدیق کا حوصلہ دیدنی تھا۔ صحابہ کرام نے وفات، تدفین، اس کی جگہ، نماز جنازہ وغیرہ امور میں آپ سے سوالات کے اور تشفی بخش جوابات پائے۔ تو تر دوختم ہوا۔ آپ کے تھم سے حضرت علی اور ان کے معاونین نے حضو وہ بھی کے شل اور حضرت محافین کا انظام کیا۔ تدفین کی جگہ میں اختلاف پیدا ہواتو آپ نے حدیث سنا کران کی تشفی فرمائی اور حضرت علی شاخرہ کے جم سے مرفراز ہوا۔ مگر اس سے قبل جنازہ پڑھنا تھا جو مصلحت اور وصیت نبوی کے مطابق افرادی طور پر بڑھی گئی۔

ای دوران نباض امت نے اہم ترین مسئلہ یعنی مسئلہ خلافت پر توجہ مبذول کروائی۔ مہاجرین کا شور کی طلب کیا ان کی نشاند ہی پر انصار کو اپنا ہمنوا بنانے کیلئے حضرت عمر گوساتھ کیکر سقیفہ بنوساعدہ تشریف لے گئے۔ ان کو مطمئن کروایا کہ خلافت بحکم نص قریش میں ہوگی اور حضرت عمر کی تبجویز پر وہیں صدیق کے ہاتھ پر بیعت کا مرحلہ طے ہوا جو الگے مرحلے میں مسجد نبوی اللہ میں تکیل پذیر ہوا۔

اس کے بعد نبی اکرم اللہ کی تدفین کا مرحلہ آیا تو منگل اور بدھ کی درمیانی رات کوجرہ عا کشیش ابوطلح ٹی کھودی ہوئی قبر میں طے ہوا۔ حضرت عباس ، ان کے دوفر زند، حضرت علی اور بعض دیگر صحابہ رات کے دوفر زند، حضرت علی اور بعض دیگر صحابہ رات منیر سپر دفاک ہوا۔ آپ سیالی کی وفات سے مدینے کی ہر چیز برتار کی چھا گئی بلکہ بقول حضرت انس اس کا اثر دلوں میں بھی پایا گیا جو کہ انجان سے لگ رہے تھے۔ چیز برتار کی چھا گئی بلکہ بقول حضرت انس اس کا اثر دلوں میں بھی پایا گیا جو کہ انجان سے لگ رہے تھے۔ صحابہ کرام بلکہ ساری امت کیلئے اس سے بڑا صدمہ ہونہیں سکتا۔ اور اسی وجہ سے ایمان والوں کیلئے اس کے اجرکی تو قع بھی رکھنی چا ہئے۔ کیونکہ آپ اللہ تبارک وقع اللہ بیشر واور سہارا ہو نگے اللہ تبارک وقع اللہ ہیں اس اجر سے محروم نہ فرمائے۔ آمین

امتخاب خلیفہ تکفین و تدفین ، نیز حالت و فات کے بارے میں بعض دیگر تفاصیل بھی اور کتابوں میں موجود ہیں یہاں صرف باب میں ندکورا مور کا تذکرہ بطور خلاصہ کیا گیا ہے۔

## 

میراث مثال واوی ہے اصل میں موراث تھا۔میم کے کسرہ کے سبب واو، یاء سے بدل کرمیراث بنا۔ یہ مصدر کا صیغہ ہے کیکن موروث اور اس مال پر بولا جاتا ہے جو میت اپنے پیچھے چھوڑتا ہے۔اس باب میں آپ آگئے سے مالی میراث کی نفی اور علمی میراث کا اثبات مقصود ہے۔سابقہ باب سے مناسبت اس بات میں ہے کہ وفات کے بعد میت کی میراث کا مسکلہ پیش آتا ہے۔

رسول التُولِيَّ في اللهِ عن مالى وراثت نهيس جِيورُ ى: مصنف ّاس باب ميں جواحاديث لائے ہيں وہ اہل سنت والجماعت كم سلك كے لئے واضح براہين ہيں۔ جمہور صحابه كااس پر اجماع ہے كه آپ الله كى كوئى مالى وارثت نہيں۔ آپ الله كا كھوڑ اہوا مال اور تركر شنة داروں كونبيں ملے گا۔

حضرت شاہ ولی اللّه قرماتے ہیں کہ تقریباً دس صحابہ سے مسکلہ رواییة منقول ہے اوراس میں صحابہ اوراب است میں صحابہ اور اہلسنت والجماعت کا کوئی اختلاف نبیس تھا۔ لیکن بعد میں آل سباشیعوں نے اس بات کوخوب اچھالا۔ اور بدتمیزی کا طوفان کھڑا کر کے خلفاء راشدین خصوصاً شیخین پر بیالزام لگایا کہ انہوں نے ظالم انہ طریقوں سے آپھیا ہے کہ کہ ورثاء کو سے آپھیا ہے کی اولا دکو محروم کردیا۔ حضرت فاطمہ اور آپھیا ہے کے دیگر ورثاء کو میراث ہیں دیا۔

رسول التُولِيَّة كَى ذخيره اندوزي سے نفرت: زعدگی میں نبی کر یم آلیة كامعمول تھا كہ كوئی چيز اپنے پاس بطور ذخيره نبیس رکھتے تھے۔ جو آتا اللہ تعالی كراستے میں خرچ كردیتے تھے۔ زیاده كوشش به ہوتی تقی كہ ميرى ملكيت میں كوئى چيز ندره جائے۔ ليكن بعض چيزيں اليی تقیس جن كو آپ آلية نے بعض مصالح كى وجہ سے مجبوراً محفوظ كرك اپنی تحويل میں چھوڑ دیا تھا۔ ان میں سے وہ صفایا بھی تھیں جو كہ آپ آلیت نے اجتماعی مفادات كی خاطراپنے پاس رکھی تھیں۔ ان میں فدك كی آدھی زمین، وادی القرى كا كا يك تہائى، خيبر كی شمس كا ایک حصد، اور بنونسيركی کچھوز مينیں تھیں جو اسلامی حکومت كی سربراہ كی حیثیت سے آپ آلیت كی گئس كا ایک حصد، اور بنونسيركی کچھوز مينیں تھیں جو اسلامی حکومت كی سربراہ كی حیثیت سے آپ آلیت كی

(شعراء ۹ • ۱)

تحویل میں تھیں کیونکہ جہانبانی میں بہت سے مسائل ایسے اجرتے ہیں جو کسی فوری فنڈ کا نقاضا کرتی ہیں۔
ایسے مواقع پرآپ اللہ کے گئے کی زندگی میں بھی ان زمینوں کے محاصل امت اسلامیہ کے اجتماعی مصالح میں صرف ہوئے تھے۔ اور ان کے بارے میں رسول الشعائے نے وفات کے بعد کے لئے بھی واضح احکام بیان کئے۔

آپِ الله فَقْ فَرَمَا يَا (نحن معشو الانبياء) لانورث ماتر كناصدقة (١)

ہم انبیاء سے میراث نہیں پائی جاتی ہم جوبھی چھوڑتے ہیں وہ عامۃ المسلمین پرصد قہ ہوتا ہے۔

نير فرمايا إنّ الانبياء لم يورثو ادينار أو لادرهماانماورثو العلم (٢)

بیشک انبیاء کی میراث دیناوراور در ہم نہیں ہوتی۔ وہ تو علم میراث میں چھوڑتے ہیں۔

کے ثمرات حاصل ہوں۔ آپ آلی کے زبان سے بلکہ تمام پیٹیبروں کی طرف سے قرآن نے اعلان کیا کہ

ماأسئکم علیہ من اجرِ ان اجری الاّعلی رب العالمین (شعر میں اس پرتم سے کوئی صلنہیں ما گلّا۔میراصلنہیں ہے مگررب العالمین پر ہے۔

نير فرماياام تسئلهم اجراً فهم من مغرم مثقلون (طور ۴ م)

کیاتم ان لوگوں سے کچھ معاوضہ مانگتے ہو کہ وہ تاوان ان لوگوں پرگراں ہو۔

اس کے برعکس دنیا میں بڑے بڑے انقلائی اور نام نہا در جنما ابتداء میں تو بڑی تکلیفیں جھیلتے ہیں۔ قید و بندکی صعوبتیں پر داشت کرتے رہے ہیں۔لیکن جب سربراہی اور حکومت ملتی ہے تو ساری مملکت کواپئی جاگیر مجھے لیتے ہیں۔اسی طرح بڑے پیراور مصلحین جفاکشی کی زعم گی گزار لیتے ہیں تا کہ لوگ ان کی اولاد

(١)صحيح بخارى شريف١٠٨٥/٢ كتاب الاعتصام بالكتاب والسنة باب مايكره من التعمق

والتنازع في العلم(مختار)

(٢) جامع ترمذى ٥٥٣/٢ كتاب العلم باب ماجاء في فضل الفقه على العبادة (مختار)

کوسر پراٹھائے پھرتے رہیں اور جا گیریں ان کے نام کھتے رہیں۔اس لئے بیبھی دنیاداری اور جالا کی کا ایک طویل المیعاد کا ایک طریقہ بن سکتا ہے کہ پچاس ساٹھ سال تک تکلیفیں جھیل کراولا دوخاندان کے لئے طویل المیعاد رعائتیں اور عنایتیں حاصل کر لی جائیں۔اکثر نام نہادتو می پاعلاقائی مصلحین نے ایساہی کیا ہے۔

جبکہ نی کر پہانے نے اپنی زندگی میں بیاعلان کیا کہ میں تم سے کوئی اجرت نہیں مانگوں گا۔اوروہ امکانات جوآل واولاد کے لئے ہوسکتی تعیین ختم کردیئے۔ مثلاً ذکوۃ آمدنی کا برا ذریعہ تھا۔ تمام امت کے مستحقین مختاج فقراء اور مساکین کے لئے اس کا لینا جائز ہے۔ لیکن آپ آلی ہے نے اپنی اولاد وا قارب پراسے حرام قراردیا۔ تاکہ خاندان کو بیعام مادی فائدہ چینچنے کی تہمت بھی ندلگائی جاسکے۔اورکوئی بین ہے کہ شکرانوں کا ایک برا دروازہ اہل بیت کے لئے کھول دیا ہے۔ آج ہمارے ہاں پیر حضرات کروڑ پتی بھی ہوں لیکن لوگ کسی براگ کے ساتھ نسبت ہونے کی بناء پر اسے شکرانے دیتے ہیں۔ آپ آلیت نے یہ شکرانے بھی اپنی اولاد پر بند کردیئے (ا)۔اوراسی وجہ سے آپ آلیت میراث کے مسئلہ میں بھی تصری فرماتے ہیں اپنی اولاد پر بند کردیئے (ا)۔اوراسی وجہ سے آپ آلیت میراث کے مسئلہ میں بھی تصری فرماتے ہیں کہ جھے سے آگر تھوڑ ابہت باتی رہ جائے قرمیری اولاد کونہ دیا جائے بلکہ وہ تمام ملت اسلامیہ کامال اور بہت المال کاحق ہے۔

 حیت سے لگ رہاتھا۔ تنگ اتنا تھا کہ دوآ دمی اس میں بمشکل سوسکتے تھے۔ بارش میں حیت بہنے گئی تھی۔ دروازوں کی بجائے چا دراورٹاٹ انکائے گئے تھے۔ حیت مجوروں کی شاخوں سے بنی ہوئی تھی۔ بیزندگی گزارنے کی حالت تھی اور زندگی کے بعد بھی آپ نے دیکھا کہ میراث اور صدقہ زکوۃ کا راستہ اہل خانہ پر بندکر دیا۔ حالا تکہ میراث تو خودانسان کے ذاتی مال میں جاری ہوتا ہے۔ بیسب پچھاس لئے تا کہ یہ بات خوب واضح ہوجائے کہ آپ تا گئے نے خالص اللہ تعالی کے لئے یہ کوششیں فرمائی تھیں۔ نہائی ذات کیلئے نہ اپنے خاندان کے لئے۔

علاوہ ازین آپ آپ آپ اللہ ساری امت کے روحانی باپ بھی ہیں بھن قراءت میں السنب اولی بالمؤمنین من انفسہ و ازواجہ امّھ تھم کے ساتھ یہ بھی آیا ہے کہ و ھو ابّ لھم اورا گریہ تقری کہ ہوتو بھی و ازواجہ امّھ تھم سے دلالت النص کے طور پر آپ آپائے کی لا قت ثابت ہوتی ہے۔ نیز امت کیلئے ازواج مطہرات کے ساتھ نکاح کی حرمت کی ایک وجہ یہ بھی بتائی گئ ہے کہ آپ آپائے امت کے باپ ہیں ۔ بہر حال آپ آپٹے کی لا قت تمام امت کیلئے ہوتو میراث بھی تمام امت کو طی نہ کہ بعض افراد کو ۔ تیسری وجہ عدم ارث کی یہ بھی ہے کہ انبیاء کی حیات برزی دوسرے اموات کی نسبت زیادہ تو ی ہوتا ہے وہ حیات جسے بھی ہولیکن دنیوی حیات کے ریب تر ہے۔ اور زعروں کی میراث تشیم نہیں کی جاتی۔ ہوتا ہے وہ حیات جسے بھی ہولیکن دنیوی حیات کے ریب تر ہے۔ اور زعروں کی میراث تشیم نہیں کی جاتی۔

چوتی وجہ یہ ہے کہ نبی کے ہاتھ میں جو مال ہوتا ہے وہ خودکواس مال کا مالک شار نہیں کرتا تھا۔ بلکہ خودکواللہ تعالیٰ کا نائب اور خلیفہ شار کرتا تھا۔ اور نیابت کی حیثیت سے ملا ہوا مال ذاتی ملک نہیں ہوتا۔ بلکہ درحقیقت وہ گلوف عنہ کا ہوتا ہے۔ خلیفہ تو زیادہ سے زیادہ اللہ تعالیٰ کی طرف سے اس قومی اور اجتاعی امانت میں متوتی ہوتا ہے۔ اور واضح ہے کہ گلوف عنہ کا مال متوتی کے ورثاء میں تقسیم نہیں ہوتا۔ کیونکہ وہ اس کا ہوتا منہیں۔ نبی کریم سیالت نے بھی عملاً میٹا بیٹا بت کردیا کہ فدک اور خیبر کی جائیداد انہوں نے اجتماعی مفادات اور مصالح کیلئے چھوڑ رکھی ہے اور اس لئے آپ میں گئیسے نے کسی کواس میں حق تملیک نہیں دی بلکہ ملک خداو مدی میں خلیفۃ اللہ کی حیثیت سے نصر ف کرتے رہے۔

اس کے علاوہ عدم ارث میں ایک حکمت ریجی ہے کہ اگر بالفرض آپ اللے کی وراثت جائز ہوتی

تو بہت سے ور ثاء شایدا سے بھی ہوں جن کے دل میں بہتمناً آئے کہ نی کریم اللے اسم ما کیں۔ تاکہ ہمیں ان کامیراث مل جائے۔جس طرح کہخوا نین اورنوایوں کی اولا دان کی موت کے انتظار میں ہوتے ہیں تا کہ مال حاصل ہوکرعیش وعشرت کا موقع مل سکے بلکہ کئی ظالم وارث تو ایسے بھی دیکھنے میں آئے ہیں جو اسين مورث كوشكان لكادية بين تواكرجه آسيالية كورثاء من كوئي بير برأت نه بهي كرسكا ليكن آ ہے اللہ کی موت کی تمنا یا موت کے بعد میراث یا کرآ ہے تھے کی موت برخوش ہونے کا خطرہ تھا۔اور ان دونوں صورتوں میں اس وارث کا كفرلازم تھا۔اب عدم ارث كى صورت ميں سرے سے بيامكان ہى جاتار با(۱)۔

484

ببرحال آپ الله نے بیرمسله قبل از وفات ظاہر کیا تھا۔ تمام جلیل القدر صحابہ کو بیرمعلوم تھالیکن جب نبی کریم آلیاته و فات یائے اس وقت بعض صحابہ کو پیۃ نہ تھا۔ ساتھ ساتھ منافقین وساز شی لوگ ہروقت ا نکے کان بھرتے رہے کہ نعوذ باللہ ابو بکڑوعر طالم میں۔اور نبی کریم ایک کی میراث کوغصب کررہے ہیں۔ اوراسی کو بنیا دبنا کرشیعوں نے اینے علم کلام کی روح کوبعض صحابہ سے بھردیا۔ نیز ابتدائی ایام میں بعض صحابہ كى طرف سے شیخین کے اس عمل برناراضكى كوخوب بردھاج ڑھا كربطوراستدلال بيان كيا۔

حالا نکد بیخالص بکواس ہے۔ کیونکہ اول تو بیسو چنا جا ہے کہ حضرت صدیق اکبڑ جب خلیفہ ہوئے تو محض نبی کریم آلیف کے احکامات کی تغییل کرتے رہے۔ نظام مملکت اور حکومت کی تشکیل میں آپٹاکا کوئی ہاتھ نہ تھا۔ جوور نہ میں ملاو ہی نافذ کیا۔ اموال وریاست کے احکام میں محض تابع تھے۔ اس مملکت کے بانی تو ني كريم آلية خود تھے۔اب اگروہ الزام لگائيں تو نعوذ باللہ ني كريم آلية برلگائيں كہ بيسب كچھاسى كا کیا دھرا ہے۔اور حقیقت بھی بہی ہے کہ دل میں بدلوگ بہی عناداور بہی بغض وخیث لئے پھرتے ہیں۔اس يبودنواز تولي كامقصد ابتداء بى سے نى كريم الله كرين كى مخالفت تقى اور بے ليكن اپنے تقيه اور خوف (۱) ملاعلی قاریؓ نے دو اور حکمتیں بھی بیان کی ہیں۔اول یہ کہ انبیاء سے اقرباء کی وراثت کود بکھ کرلوگ دنیااوراس کوجمع کرنے کی طرف راغب ہو نگے۔ دوم میر کہ لوگ بیروچیں گے کہ انبیاء کافقر اختیاری نہیں تھا۔ورنہ وہ بھی ہماری طرح مال جمع کرکے وارثوں کیلئے چھوڑنے کی فکر میں نہ ہوتے۔ اور دونوں ہا تیں شریعت کے مزاج کے منافی ہیں۔ دیکھیں جمع الوسائل ج ٢ص ٢٣٨\_(اصلاح الدين) کی وجہ سے اس کا ہر ملا اظہار نہیں کرتے۔اور اس بات کی دلیل میہ ہے کہ بھی بھی جوش میں آ کر میے عناداور خبائث ظاہر بھی کردیتے ہیں۔

خمینی کی طحدانه باتیں: جس طرح که آج کے خمینی کود مکی لیں۔ که اس کی تحریر وتقریراس پر شاہد ہے اور ہم تو اس بات پر اس کے شکر گزار ہیں که اس سے مزید تقیہ نہ ہو سکا اور ملت اسلامیہ کو مزید دھو کہ نہیں دے سکا۔ اس نے ایک بڑے جلسہ میں جس میں اس کی مملکت کے سارے صنادید بھی موجود تھے کہا کہ '' جھے سب سے بڑا صدمہ اس بات پر ہے کہ جو اسلامی حکومت اور نظام مطلوب تھا وہ صدر اسلام سے آج تک قائم نہ ہو سکا۔

خود نی کریم آلیسته کو بھی کچھنے موس حالات کے پیش نظر کمل اسلامی نظام قائم کرنے کا موقعہ نہ ل سکا()"

گویاس ظالم کے خیال میں نی کر بیم اللہ اللہ اللہ علی جی اور اسلامی مملکت قائم

مہر کہ دیا ہے کہ دیا ہے کہ ''ان کے زمانے میں بھی بدشتی یہ تھی کہ سازشوں کی بدولت وہ لوگ جو

رکے کہہ دیا ہے کہ ''ان کے زمانے میں بھی بدشتی یہ تھی کہ سازشوں کی بدولت وہ لوگ جو

(نعوذ باللہ) کفار سے بھی بدتر تھے۔حضرت علی کے لئے رکاوٹ بنے اور وہ بھی اسلامی حکومت تھکیل نہ

دے سکن' ۔ بعد کے ائمہ اور بعد کے دور کے بادشاہوں کوتو وہ کب معاف کر سکتے ہیں۔دراصل یہ ساری

پال اس دعوے کیلئے ہے کہ جھے اللہ تعالی نے اس کام کے لئے جو اس کا پیڈیر بھی نہ کرسکا پیدا کیا ہے۔نیز

وہ یہ بھی کہہ چکا ہے کہ قرآن کے معانی کو صحابہ میں سے کوئی بھی نہ بچھ سکا۔گویا اب تک کے ساری تفاسیر بھی

فلط ہیں۔ بقول اس کے قرآن کی تفییر صرف حضرت علی گومعلوم تھی۔ لیکن اس کو بھی وفات تک کوئی ایسا شخص

نمال سکا۔ جے وہ یہ راز بتا سکے لیکن سب سے زیادہ عجیب بات یہ ہے کہ وہ علوم نمینی تک کیسے پہنچ گئے؟

ایرانی انقلاب ہے اور سیاسی منظر پر یہ بات پایئ شوت کو بھی ہے۔ مثلاً حال ہی میں روسی علاقہ میں ایران

انقلاب ہے اور سیاسی منظر پر یہ بات پایئ شوت کو کوئی جی ہے۔ مثلاً حال ہی میں روسی علاقہ میں ایران

(۱) اس کے حزید نفید ال تکلیے مولانا می منظور تھائی کی کیاب انقلاب ایران وغیرہ وہ کھئے۔

(۱) اس کے حزید نفید ال تکلیے مولوں نامی منظور تھائی کی کیاب انتلاب ایران وغیرہ وہ کھئے۔

(۱) اس کے حزید نفید اللہ کی منظور تھائی کی کیاب انتلاب ایران وغیرہ وہ کھئے۔

جانبوالا اسلحہ سے بھرا ہوا ایک جہاز گرگیا۔اس اسلحہ پر اسرائیلی مہر گے ہوئے تھے۔ دراصل عرب ممالک کو کنرور کرنے کے لئے ایسے لوگوں کی پشت پناہی امریکہ سمیت ساری صیبونی و نیا کر رہی ہے۔ تاریخ اسلام کے حوالہ سے شیعیت رواز اوّل سے اسلام کے لئے در دسر ہے۔ اور تاریخ شاہد ہے کہ اسلامی و نیا میں جہاں بھی کوئی غذاری اور سازش ہوئی اس میں اہل رفض کا ہاتھ ضرور ہوتا تھا۔

میراث کے سلسلے میں شیعوں کاموقف:
میراث کے سلسلے میں شیعوں کاموقف یہ ہے کہ خلفاء
راشدین نے فاطمہ پر پر پلم کیا۔ لیکن کیا نبی کریم آلی ہے کہ دارتوں میں فقط وہ تھیں نبیس بلکہ آپ آلی ہے کہ دورت مقصہ ورثاء میں تو صدیق اکبڑی اپنی چیتی بٹی عائشہ صدیقہ بھی تھیں۔ اس طرح حضرت عمر کی ببٹی حضرت حفصہ بھی تو دارث تھیں ۔ علاوہ ازیں قوانین میراث کے مطابق مضرت علی کا تو میراث میں حق بھی نہیں بنما تھا۔

توسوال یہ ہے کہ کیا شخیں اپنی بیٹیوں پر بھی ظلم کررہے تھے۔ اور کیا ایک وسیج سلطنت میں خصب اور ظلم کے لئے صرف نبی کریم شاہیات کی وراثت ہی نظر آئی۔ واضح بات ہے کہ ایسانہیں بلکہ یہ سب پھونود نبی کریم شاہیات کے فرمان کا نتیجہ تھا جس کی حکمتیں ہم پہلے بیان کر چکے ہیں۔ حضرت عا کشتو و بھی ورثاء میں سے تھیں مگر جب دوسری امہات المومنین نے ان کے پاس آ کر پوچھا کہ ہمیں میراث سے حصہ کیوں نہیں دیاجا تا۔ تو آپٹے نے جواب میں بہی کہا کہ کیا میں نبی کریم شاہیات کی بیوی نہیں۔ لیکن کیا تم کو نبیل رکیم شاہیات کی وہ بات یا دنہیں کہ میری میراث تقسیم نہیں ہوگی۔ تو تمام از واج مطتبر ات نے اس کا اعتراف کیا۔ اور دعویٰ سے رُک گئیں (۱)۔

 حضرت عائشٹ نے انہیں یا دولا یا۔اور یا یہ کہ ان از واج مطہر ات کا خیال تھا کہ نبی کریم اللہ کا یہ فیصلہ منقول ا اشیاء کے بارے میں ہے۔اور شاید غیر منقولہ اشیاء میں یہ بات نہ ہو۔ جبکہ فدک اور خیبر وغیرہ زمینیں توغیر منقولہ جا کداد ہیں۔اور جب یوچھا تو حضرت عائشٹ نے اس حدیث کی تعیم کی طرف اشارہ کر دیا۔

شیعوں کا ایک استدلال بہ بھی ہے کہ حضرت علی اور حضرت عماس دونوں بعد میں بھی بار بار حضرت عمر کے پاس مذکورہ زمینوں کے سلسلے میں آ کرمطالبات پیش کرتے ہیں۔جس طرح اس باب اور بخاری شریف کی احادیث ہے معلوم ہوتا ہے۔اس سے پیتہ چلتا ہے کہ بید دونوں عدم ارث کی بات برمطمئن نہیں تھے۔لین اس کا جواب یہ ہے کہ محققین کی تحقیق کے مطابق حضرت علی اور حضرت عباس کا شیخین کے ع یاس دعویٰ بیرنہ تھا کہ وہ جمیں ملکیت کے طور ہر بیرعلاقہ دے دیں۔ بلکہ سب سے پہلے مطالبے کے بعد ہی صدیق اکبڑنے یہ بات واضح کردی تھی کہ بیس کاری زمین ہے اور سرکاری زمین مختلف لوگوں کی تحویل میں عموماً ولا بت کے طور پر دی چاتی ہے۔ بیمتو تی صرف اس کا انتظام چلاتے ہیں۔ نہ بیر کہ ان کی ملکیت ہوجائے ۔ توبید دنوں حضرات بھی انتظام اینے اپنے ہاتھ میں لینے آئے تھے۔اور حضرت عمر نے بھی بخوشی بهزمین (۱)ان کی تحویل میں دی تھی۔ پھر جب تو تی کے سلسلے میں دونوں میںا ختلاف ہو گیا تو وہ دونوں پھر سے ولایت کے سلسلے میں آئے۔شیعہ لوگ پہلے کی طرح اس بار بھی پیمجھ بیٹھے کہ پید ملکیت کانیا دعویٰ کرر ہے ہیں۔ حالانکہ جب دونوں صدیق اکبڑ کے سامنے اور پھر حضرت عمرؓ کے سامنے ایک باراعتراف کر چکے تھے۔ کہ یہ زمین ہماری نہیں ہے تو کیاوہ دیوانے تھے کہ وہی دعویٰ پھر سے کرتے۔ لبذا حضرت عمرہ کے ز مانے میں دراصل ان کا دعویٰ ملکیت کا نہ تھا بلکہ حضرت علیٰ اور حضرت عباس چونکہ مشتر کہ طور بران اراضی کا انظام نہیں چلا سکے۔ تو بیرمطالبہ لے کرآئے کہ ہمارے درمیان بیز مین انظام کے لئے تقسیم کردیں۔ حضرت عمرٌ نے وہ دعویٰ اس لئے مستر دکر دیا کہ اس طرح اگرتقشیم درتقشیم شروع ہوجائے تو لوگ اس غلط فہنی میں مبتلا ہو نگے کہ رہ شاید نبی کریم آلیات کی وراثت تھی۔ جوور ثاء کے درمیان تقسیم ہوچکی ہے۔ حضرت عمر کی حساس نظر نے اس خطرہ کومسوں کیا کہ لوگ تولیت کی بجائے اسے تملیک سمجھیں گے۔ لہذا حضرت عمر ہے (۱) بخاری شریف وغیرہ کتب حدیث کی روایات میں تصریح ہے کہ صرف مدینہ میں بنونضیر کی زمین کی تولیت ان حضرات کو مل تقى جهان تك فدك اورخيير كى زيين تقى و وخودام يرالمؤمنين كے تصرف ميں تقى \_ (اصلاح الدين)

ان کووہی حدیث پیش کرکے واپس کر دیا۔

پھرہم یہ کہتے ہیں کہ چلوبالفرض شیخین اور حضرت عثان نے توظلم کردیا ہوگا تو حضرت علی کو بھی تو خلافت ملی تھی انہوں نے اس غلط فیصلے کو کیوں برقر ارر کھا۔ کیاوہ نتیوں ظالم ہے اور حضرت علی ظالم نہ ہوئے۔ پھر چھے مہینے خود حضرت حسن کو بھی خلافت ملی تھی کیاوہ بھی اپنی ماں کی میراث حاصل نہ کر سکے ۔جبکہ ہم دیکھتے ہیں کہ بیاراضی حضرت عمر بن عبدالعزیز کے دور تک اسی طرح بیت المال کے تصرف میں رہیں (۱)۔

شیعوں کا ایک اور الزام یہ ہے کہ حضرت فاطمہ ابو بر سے ناراض تھیں ۔لیکن اول تو بیمسلم نہیں کہ وہ خفاتھیں اور بالفرض اگروہ خفاتھیں تو کیا ہوا۔ شریعت کا حکم ان کی رضا جوئی کے لئے نہ شیخین تو ڑ سکتے ہیں نہ عثال نہ علی اور نہ کوئی اور ۔ناراضکی کی ثبوت میں بیلوگ کہتے ہیں کہ حضرت فاطمہ نے چھے مہینے تک حضرت ابو بکر صدیق سے ملاقات تک نہیں کی۔

لیکن اوّل توبیہ بات ہے غلط۔ کیونکہ اس باب میں ملاقات کا ذکر ہے۔ دوسری بیر کہ حضرت فاطمہ اُ تو بتول ہیں۔مجسمہ حیاء ہیں۔وہ کیسے ایک غیر مرد سے ملاقات کرتی۔ ابو بکر صدیق ان کا کیا لگتا تھا؟ لوگوں سے کنارہ کشی اور پردے کا زیادہ اہتمام کرنے کے سبب ہی تو حضرت فاطمہ گو بتول کہتے ہیں۔

نیزیدلوگ کہتے ہیں کہ حضرت ابو برصد این نے حضرت فاطمہ کی نماز جنازہ میں بھی شرکت نہیں کی۔ نہ حضرت علی نے ان کوا طلاع دی تھی۔ لیکن یہ بھی دراصل ایک شرارت ہے۔ کیونکہ حضرت فاطمۃ الزہرا الحراء دات کے وقت وفات پائی تھیں۔ جو کمال حیاء کے سبب ان کی خواہش تھی کہ میرے جنازے پر بھی کسی کی نظر نہ پڑے۔ اس زمانے میں جنازے پر بردہ لگانے کا رواح نہ تھا۔ تو اس لئے آپ گواس بات کی فکر ہوتی تھی۔ پھر کسی نے بتایا کہ اس طرح جنازے پر بردے کا بھی ایک طریقہ ہوسکتا ہے۔ یہ س کر آپ فکر ہوتی تھی۔ پھر کسی نے بتایا کہ اس طرح جنازے پر بردے کا بھی ایک طریقہ ہوسکتا ہے۔ یہ س کر آپ خوش سے بنس بڑی۔ کہتے ہیں کہ نبی کر میم اللہ تھا گئے کی وفات کے بعد یہ بہلا موقعہ تھا جب آپ ہنسی تھیں۔ چنا نچے اللہ تعالیٰ نے آپ کی حیا کی لاح رکھتے ہوئے آپ گورات کے وقت موت دے دی۔ اور اس زمانہ درا ای قال (عروة ق) فکانت ہذہ الصدقہ بید علیٰ منعها علیٰ فغلبہ علیہا. ٹم کان بید حسن بن علیٰ ٹم کسی وحسن بن حسن وھی صدقة دسو ل اللہ میں اللہ میں درا اللہ میں درا اللہ میں درا اللہ میں کہتاب المغازی۔ حدیث بنی النضیر) (اصلاح الدین)

میں مرنے والوں کی موت کا ڈھنڈورا پیٹنے اور اعلانات کا رواج نہ تھا۔ تو اگر حضرت ابو بکر صدیق کو تکلفات سے کنارہ کشی کی خاطر اطلاع نہیں دی گئی تو اس میں کیا قباحت ہے۔ خصوصاً جبکہ حضرت علی نے راتوں رات خود ہی تکفین و تدفین کے مراحل طے کردیئے۔ اور یہی امر حضرت فاطمہ تھے مشاء کے مطابق تھا۔

(۱) حدثنا احمد بن منيع ثناحسين بن محمد ثنا اسرائيل عن ابى اسحاق عن عمروبن الحارث اخى جويرية له صحبة قال ماترك رسول الله عليه الاسلاحه وبغلته وارضاجعلها صدقة (۱).

ترجمہ: عمروبن الحارث جو صحابی اورام المؤمنین جوریٹ کے بھائی ہیں۔ سے روایت ہے کہ نبی کریم اللہ نے اپنے بیچے نہیں چھوڑ اگر اسلحہ نچر اور کچھ زمین جے آپ اللہ تعالی کی راہ میں وقف کردیا تھا۔

عمروبن المحادث بن ابی ضواد ، یه صورت جویریه بنت الحارث کے بھائی ہیں۔ جو امہات المؤمنین میں سے ہیں۔ قلیل الحدیث صحابی ہیں۔ خودرسول الشوائی سے اور بھی اپنی بہن حضرت جویریہ سے محدوایت کرتے جویریہ سے محدوایت کرتے ہیں۔ اس طرح حضرت ابن مسعود اور ان کی بیوی ندیب سے بھی روایات کرتے ہیں۔ محدولا سے بے۔ بیس محدوم نہیں ہے۔ البتہ تاریخ وفات معلوم نہیں ہے۔ ان کا تعلق بنوالمصطلق سے ہے۔ الاسسلاحیہ مثل آپ آپ آلیہ نے نہوار، نیزہ، زرہ، خوداور تربہ چھوڑ اتھا۔ وارضا زمین میں آپ آلیہ نے ندک، وادی القری کا تہائی حصہ خیبر کے مس کا حصہ اور بی نضیر کی زمین چھوڑ کی تھی۔ آپ آلیہ نیس کے دور کی نفیر کی نمین جھوڑ کی تھی۔

جعلهاصدقة النع، جعلها كى ضمير عين اختلاف ہے۔ پچھلوگوں كاخيال ہے كہ يخمير صرف ارض يعنى زين كورا جح ہے۔ يعنى آ پھيلين نے نزين كومدة كرديا تفا۔ اور مطلب بيہ ہے كه زين كى بارے ميں آ پھيلن نئے نزيرگی ميں بي بتايا تفا كہ بيصدقہ ہے۔ يعنى وقف مال كی طرح اس كی منفعت عام لوگوں كے لئے ہے۔ جبكہ اسلحہ وغيرہ چيزيں صرف آ پھيلن استعال كرتے تھے۔ ملاعلى قارئ نے اس كو لوگوں كے لئے ہے۔ جبكہ علامہ كرمائى كہتے ہيں كہ ضمير تينوں اشياء يعنى اسلحہ، خجر اورز مين كورا جح ہے۔ ترجیح دی ہے۔ جبكہ علامہ كرمائى كہتے ہيں كہ ضمير تينوں اشياء يعنى اسلحہ، خجر اورز مين كورا جح ہے۔ (۱)صحيح بخارى ۱۸۵/۱ كتاب الوصاياباب الوصاياوقول النبتى عَلَيْتِ مسنن الدارقنى ۱۸۵/۲ مسختان

نی اکرم الیست کادیگرتر کہ:

بعض اہل سیر نے فدکورہ تین چیزوں کے سوااور چیزیں بھی آپ آلیستے کے سرکر کے سواور پیزیں بھی آپ آلیستے کے سرکر کہ کے طور پر ذکر کی ہیں۔ مثلاً آپ آلیستے کے استعال میں ہیں اونٹیوں کاذکر ہوتا ہے۔ جن کا دودھ آپ آلیستے کے پاس لا یا جاتا تھا۔ اس طرح سات بحریوں کاذکر بھی ملتا ہے۔ جوام ایمن پُر آیا کرتی تھیں۔

علامہ مناویؒ نے ان اونٹوں اور بحریوں میں سے ایک ایک کانام ذکر کیا ہے۔ بلکہ وہ کہتے ہیں کہ آپ آلیستے کے پاس سو بکریاں تھیں ()۔ اس طرح بعض برتنوں اور کیڑوں کا بھی ذکر ملتا ہے۔

ملاعلی قاریؒ کہتے ہیں کہ اس حدیث میں جو حصر مذکور ہے کہ ان تین چیز وں کے سوااور کوئی چیز آپھیٹے نے نہیں چھوڑی قدیت نہیں کیا آپ آلیٹے نے نہیں چھوڑی تو مید حصراضا فی میاا دّعائی ہے۔اور میا پھر دیگراشیاء کا اعتبار قلت کی وجہ سے نہیں کیا گیا ہے۔ جہاں تک جانوروں کا تعلق ہے تو وہ میا تو صدقہ کے اونٹ تھے یا پھر منائح تھیں۔ یعنی ایسے جانور جودودھ حاصل کرنے کیلئے لوگوں نے عاریتا آپ آپ آگیٹے کودی تھیں۔

(۲) حدثنا محمد بن المثنى ثنا ابو الوليد ثنا حماد بن سلمة عن محمد بن عمروعن ابى سلمة عن ابى هريرة قال جاء ت فاطمة الى ابى بكر فقال فقالت من يرثك فقال اهلى وولدى فقالت مالى لاارث ابى فقال ابوبكر سمعت رسول الله عَلَيْتُ يقول لانورث ولكنى اعول من كان رسول الله عَلَيْتُ ينفق رسول الله عَلَيْتُ ينفق على من كان رسول الله عَلَيْتُ ينفق على من كان رسول الله عَلَيْتُ ينفق على من

ترجمہ: حضرت ابو ہریرہ سے روایت ہے کہ حضرت فاطمہ ابو بکر صدیق کے پاس تشریف لائیں اور یو چھا کہ تمہاراوارث کون ہوگا۔ انہوں نے فرمایا کہ میرے گھر

الله عَلَيْكُ ومختار

والےاورمیری اولا د۔اس برحضرت فاطمہ "نے بوجھا کہ پھر کیوں میں اپنے والد کی وارث نہیں بنتی ؟ ابو بکرصد بن نے کہا کہ میں نے نبی اکرم اللہ سے سنا وہ فرمار ہے تھے کہ 'جم (انبیاء) سے کوئی شخص (مالی) وارث نہیں یا تا' البتہ میں (وقف مال ہے )ان لوگوں کی کفالت کروں گا۔جن کی کفالت نبی اکر میں فیصفے فرماتے تھے اور جن لوگوں پرآ ہے آگئے ال خرچ کرتے تھے۔ میں بھی ان پر مال خرچ کروں گا۔

491

فی الت من یو ٹک حضرت فاطم پخت ابو بکڑ سے ان کے وارثوں کے بارے میں اس کئے پوچھتی ہیں تا کہان کے اقرار کے بعدان برالزام کرسکیں۔فیقال اہلی وولدی صدیق بھی مداہنت سے كامنېيى ليتے تھے۔ندسى جالا كى سے حضرت فاطمة توٹالنے كى كوشش كى ۔ بلكه صاف صاف كهدديا كەميرى اولا داورگھروالےوارث ہونگے۔اور جب حضرت فاطمہ "نے بہ کہددیا کہ پھر مجھے میرے پاپ کی میراث سے کیوں محروم کیا جاتا ہے تو فرمایا کہ میرااور نبی کریم ایک کے الگ ہے۔مسلہ یہ ہے کہ میری میراث میریاولا دکو ملے گی۔اور نبی کریم آلیت کی میراث خودان کی ہدایت کےمطابق بیت المال کوجائے گی۔ بیتو تھم تھا۔جودہ بیان کر چکے۔لیکن نفس الامر میں ابو بکرصد ہوتے کا مال بھی ان کے درثا نہیں لے سکے کیونکہ آپٹے بیت المال سے جوتھوڑ اسا وظیفہ زمانہ خلافت میں لیتے رہے۔اخیر عمر میں اپنے بیٹوں کووصیت کی کہ جوتنخواہ میں نے اب تک حکومت سے لی ہوہ ساری واپس کردو۔ لبذا مرنے کے بعد اولا دکوکوئی فائدہ نہیں پہنچا۔ بلكه ميراث تو كجاانبوں نے اپنے مال سے باپ كا قرضه چكايا۔ اوروصيت كےمطابق آپ كاسارامال بھى بت المال مين داخل كرديا \_

لكنتى اعول الغ، حضرت ابو بكرصد ين تو نبي كريم الله كالم وست اوردست راست تھے۔ فر مایا کہ میں تنہیں میراث کے طور پر نبی کر پہتائیا گئے کے مال سے شرعی موانع کے سب کچھنہیں دے سکتا۔لیکن تمہاری ساری ضرورتوں کی کفالت مجھ پر ہے۔ بلکہ نبی کریم آلیا ہے اپنے خاندان میں جن لوگوں کے متلقل تھے وہ بیویاں ہوں یا غلام اورخدّ ام ہوں ہم ان سب کا لحاظ کریں گے۔اوران کے اخراجات کو برداشت کریں گے۔جس طرح خود نی کریم آلیات ان کی کفالت کیا کرتے تھے۔

و انفق على من النح ، ماعول كے لئے تفسير بھى ہوسكتا ہے۔ اور بعض لوگوں نے دونوں كے

ورمیان فرق بیان کیا ہے کہ اعول علی من النے مرادالل بیت پرخرچ کرنااور انفق علی من النح مرادان کے سوادیگر متعلقین پرخرچ کرنا ہے۔

الو بكرصد ين عن جواب كاخلاصه بيه بواكه قانون دراشت اگر چه قرآن مين موجود ہے۔ ليكن اس حديث كى دجه سے جو كه مشہور بلكه متواتر ہے انبياء اس قانون سے مشتیٰ ہیں۔ یا مطلب بیہ ہے كہ انبیاء كا ملك بى ان كى دحيت كے مطابق ان كے مال سے زائل ہو چكا ہوتا ہے۔ لہٰ ذاان كے مال ميں دراشت جارى نه ہوگى۔ جبكہ حضرت فاطمہ ملے خیال میں دراشت کے قتی میں نبی اور غیر نبی میں فرق نہیں تھا۔ اس لئے انہوں نے اطمینان کے لئے حضرت ابو بكر صد بن سے مطالبہ كردیا۔

(٣) حدثنا محمدبن المثنى ثنايحيى بن كثير العنبرى ابوغسان ثناشعبة عن عمرو بن مُرّة عن البخترى ان العباس وعليا جآء الى عمر يختصمان يقول كل واحدمنهمالصاحبه انت كذا انت كذا فقال عمر لطلحة والزبير وعبدالرحمٰن بن عوف وسعد نشدتكم بالله اسمعتم رسول الله الله الله الله الله الله وفى الحديث قصة (١).

ترجمہ: ابوالبختری سے روایت ہے کہ حضرت عباس اور حضرت علی حضرت عمر کے پاس (ان کی خلافت کے زمانے میں) جھڑا لے کرآئے ۔ایک دوسر کو کہتا تھا کہتم ایسے ہو۔ حضرت عمر نے (حاضرین حضرات) طلحہ، زبیر، عبدالرحمٰن بن عوف اور سعد (بن ابی وقاص رضی الله عنبم) سے کہا کہ میں تم لوگوں کو خدا کی فتم دیتا ہوں کیا تم لوگوں نے نبی اکرم اللہ کو یہ کہتے ہوئے سناہے کہ نبی کا سارا ترکہ صدقہ (وقف) ہوتا ہے۔ سوائے اس مال کے جو وہ اپنے اہل وعیال کو کھلائے۔ ترکہ صدقہ (وقف) ہوتا ہے۔ سوائے اس مال کے جو وہ اپنے اہل وعیال کو کھلائے۔ تم انبیاء سے کوئی وراثت نہیں یا تا۔ اس حدیث میں (مفضل) قصہ مروی ہے۔

(۱)سنن ابي داؤد ۹/۲ ۵ كتاب الخراج والامارة والفئ باب في صفايارسول الله الطبيطة من الاموال السنن البيهقي ۴/۲ و ۲،مسنداحمد ا ۱/۲،ابوداؤد الطيالسي رقم الحديث ا ۲ (مختار)

عن اہی البختوئ، ابو البختوئ ،سعید بن فیروزتا بھی ہیں۔ان کے نام کے ضبط کے بارے میں علامہ ابن ججر (۱) سے چوک ہوئی ہے۔ کیونکہ انہوں نے اسے حام محملہ کے ساتھ ذکر کیا ہے۔ حالانکہ یہاں باء کے بعد خام جمہ (نقطہ والی) ہے۔ پھر خو دعلامہ ابن ججر نے یہ بھی کہا ہے کہ یہ ختر سے ہے۔ جس کا معنی خوش رفتاری ہے۔ چنا نچے علامہ ملاعلی قاری اور علامہ یجوری کے مطابق ابن ججری غلطی ظاہر ہے۔ لیکن یہ غلطی ابن ججر نے شاید شائل کی شرح میں کی ہو کیونکہ تقریب میں وہ لکھتے ہیں "بفت حالمو تحدة و المشاة بین هما معجمة ساکنة" (۲)

یہ بات بھی یا درہے کہ ابوالبختر ی خوداس واقعے کے چٹم دیدنہیں ہیں۔ بلکہ ابوداؤڈ کی روایات کے مطابق وہ پیروایت حضرت مالک بن اوس بن حدثان (التوفی ۹۲ھے) سے روایت کرتے ہیں۔ ( کذا فی جمع الوسائل ج ۲ مس ۲۸۷) مالک بن اوس کی روایت امام بخاریؓ نے مفصل ذکری ہے۔

یے ختصمان ہم پہلے کہہ چکے ہیں کہ حضرت عمر کے پاس وہ دونوں کوئی نیادعویٰ لے کرنہیں آئے تھے۔ جائیداد کا دعویٰ تو پہلے ہی مستر دہو چکا تھا بلکہ دراصل دونوں حضرات میں انتظامی امور میں اختلاف پیدا ہو چکا تھا۔ چونکہ بن نضیر کی زمین کی ولایت حضرت عمر نے دونوں کودی تھی۔ اب اگر کہیں کوئی خرابی پیش آتی تو ایک کہتا کہ تہماری وجہ سے یوں ہوگیا۔ دوسرا کہتا کہ نہیں بلکہ فلطی تمہاری تھی۔ اس نزاع کوئمٹانے کے لئے دونوں نے تقسیم یعنی ولایت کی تقسیم کا مطالبہ کردیا۔

انت كذاانت كذا، الماعلى قارى اورعلامه يجورى نف كلها به انت كذاب مراد به والول كدرميان تلخ كلامى اور تيز الفاظ مراد بين جووه ايك دوسرے كه بارے بين كتي تقاور جيبا كه بعض شارعين في كلامى اور تيز الفاظ مراد بين ـ تو وه دونوں كى شان كے خلاف معلوم ہوتا ہے ليكن بخارى شارعين في كل شرح بين علامه ابن جر في كلها ہے كہ يجال گاليال مراد بين ـ تو وه دونوں كى شان كے خلاف معلوم ہوتا ہے ليكن بخارى كى شرح بين علامه ابن جر في كلها ہے كہ بعض روايات بين بي لفظ مروى بين "اقص بينى و بين هذا الكاذب الآثم الغادر الخائن" الطالم استبا" اورا يك روايت بين جلاك كي المدنون كي خيارين جر كي تقليد بين بين خطاكى ہے۔ (اصلاح الدين)

<sup>(</sup>۲) تقریب التهذیب ج۲ص ۳۹۰، دیکھیں فتح الباری باب فرض الخمس ، اسی طرح بخاری شریف کتاب المغازی میں محدیث تفصیل کے ساتھ ذکر ہے وہاں الفاظ مدہن فاست علیؓ و عبامؓ دیکھیں بخاری ص۵۵۵، (اصلاح الدین)

تواگر بیالفاظ ثابت ہوں تو بقول ابن جمر بیر حضرت عباس نے بولے ہوں گے۔ کیونکہ وہ علی کے لئے باپ کے مرتبے پر ہیں۔ حضرت علی سے ایسے الفاظ چیا کے بارے میں مستبعد معلوم ہوتے ہیں۔

فقال عمر لطلحة المنح ، لینی حضرت عمر فی خود فیصلهٔ بین کیا بلکه ان کومطمئن رکھنے کے لئے ان کا مطالبہ شوری میں بیش کیا۔ جو کہ تمام اہم معاملات نمثاتی تھی۔ اس دن شوری میں حضرت عثان ، حضرت طلحی ، حضرت طلحی ، حضرت طلحی ، حضرت طلحی ، حضرت عبد بن البواح ، حضرت عبد الرحمٰن بن عوف اور حضرت سعد بن الى وقاص جیسے جلیل القدر صحابہ بیٹھے تھے۔ بیتمام صحاب اور خود عمر همشره میں سے بین۔

و فیے الے دیش قیصہ بدواقعہ تفصیل کے ساتھ بخاری اور حدیث کی دیگر کتابوں میں نقل کیا گیاہے۔اورشرات مدیث نے اس کی تفاصیل بیان کی ہیں جس کا خلاصہ بیہے کہ حضرت عباس اور حضرت علی حضرت عمر کے پاس آئے۔ دونوں بی نضیر کی اس زمین پر جو کہ نبی کریم آلیات کو اللہ تعالیٰ نے بطور فی دی تھی جھڑر ہے تھے۔حضرت عباس نے کہا کہ اے امیر المؤمنین ہارے درمیان آپ فیصلہ کر دیں۔ حضرت عمر نے اپنے پاس کے حاضرین سے کہا کہ میں تم کواس اللہ کی ذات کی قتم دلاتا ہوں جس کے حکم ے زمین وآسان قائم بیں کہ کیاتم کواس بات کاعلم ہے کہ رسول اللہ علیہ نے فرمایا ہے" لانسے دث ماتو کناہ صدقة" (لینی ماری میراث نہیں لی جاتی ہم جو کچھ چھوڑ دیتے ہیں وہ صدقہ ہوتا ہے ) حاضرین نے کہا کہ ماں نی کریم اللہ نے بہ کہا ہے۔اس کے بعد حضرت عرق مضرت عباس اور حضرت علی کی طرف متوجہ ہوکر کہنے گئے کہ میںتم دونوں کواللہ تعالی کی قتم دلاتا ہوں کہ کیا نبی کریم آلی ہے نے بیر بات کہی تھی۔ انہوں نے کہا کہ ماں آپ آیٹ نے بیر کہاتھا۔حضرت عمر نے فرمایا پس میں اس امر کے بارے میں تہمیں بتاتا موں۔ بیشک نی کر میم اللہ کو اللہ تعالی نے اس فی میں ایک یمنی جادر، ایک عمانی تهد بند، دو صحاری کیڑے، ایک صحاری قیص ، ایک سحولی قیص ، ایک یمنی جتبہ ، ایک سیاہ مرتبع کیڑا ، ایک سفید جا در اور پچھ ٹویباں بھی دی تھیں۔خدا کی نتم نبی کریم آلیاتھ نے تمہارے سوا وہ چزیں کسی کونہیں دیں۔ نہ کسی اور کو آ ہے۔ اللہ میرز جے دی بلکہ وہ چیزیں تنہیں دیں اور تمہارے درمیان تقسیم کردیں (جہاں تک زمین کا قضیہ ہے) تو نبی اکرم اللہ اس میں سے اپنے گھر والوں کا سالانہ نفقہ دیا کرتے تھے۔اور جو کچھاللہ جانتا ہے کہ میں اس میں سیا، صالح ، ہدایت یافتہ اور حق کا اتباع کرنے والا ہوں۔

پھرتم دونوں اس سے قبل بھی میرے پاس آئے تھے۔ تم دونوں کی بات اور مدعا ایک تھا۔ اے عباس تم میرے پاس آئے تھے۔ تم دونوں کی بات اور مدعا ایک تھا۔ اے عباس تم میرے پاس آئے۔ تھے اپنے بھینچ کی میراث سے اپنا حصہ ما نگنے اور بیریرے پاس آیا۔ آپ تھینچ کی میراث میں بنی کر یم اللے نے نے فرمایا ہے کہ 'لانسودٹ مسل بنی کر یم اللے نے کہ 'لانسودٹ مسل نے اس شرط پر یہ تر کیناہ صدفقہ'' پھر جب جھے بیرمناسب لگا کہ میں بیز مین تم دونوں کودوں ۔ تو میں نے اس شرط پر یہ کر میں اللہ تعالی کے ساتھ عہد و بیٹا تی کر یم اللہ تعالی کے ساتھ عہد و بیٹا تی کرو ۔ کہ اس میں تم بھی و سے بی تھر کی والایت میں آئی تھی ۔ یہ کہ کر میں میں اس وقت سے کیا جب سے بیریری والایت میں آئی تھی ۔ یہ کہ کر حضرت عمر شنے خاصرین سے کہا کہ میں تم کوخدا کی تم والا تا ہوں ۔ کہ کیا میں نے بیز مین ان دونوں کو اس شرط پر دی تھی ۔ انہوں نے کہا کہ ہاں اس کے بعد حضرت عباس اور حضرت علی کی طرف متوجہ ہوکر کہنے لگا۔ میں تم دونوں کوئی دونوں کوئی میں نے بیز مین تم کواس شرط پر دی تھی ۔ دونوں نے کہا ہاں۔

حضرت عمر نے کہا تو ابتم مجھ سے اس فیصلے کے سواکوئی دوسرا فیصلہ چاہتے ہو۔ پس اس اللہ کی قشم جس کے علم پرز مین وآسان قائم ہیں۔ ہیں اس کے بارے میں کوئی دوسرا فیصلہ قیامت تک نہیں کروں گا۔
اورا گرتم اس کے نصرف سے عاجز آ بچے ہوتو بیز مین مجھے واپس کردو۔ میں تم دونوں کی جگہ لے سکتا ہوں پھر
اس کے بعد میصد قد (یعنی اوقاف) حضرت علی کے ہاتھ میں رہیں۔ جو حضرت عباس پر عالب آئے۔ ان
کے بعد حضرت حسن کے ہاتھ میں۔ ان کے بعد حسین اور ان کے بعد حضرت علی ابن الحسین کے ہاتھ میں
رہیں۔ الحد بیث (ا)۔

(٣) حدثنا محمدبن المثنى ثناصفوان بن عيسىٰ عن اسامة بن زيد عن الزهرى عن عروة عن عائشة ان رسول الله عليه قال الانورث ماتر كنا فهو صدقة (٢).

(۱)بخاری شریف ۱۸۵/۲ کتاب الاعتصام بالکتاب باب مایکره من التّعمق والتنازع فی العلم وبخاری شریف ۱۸۰/۲ کتاب المغازی باب حدیث بنی شریف ۲۰/۲ کتاب المغازی باب حدیث بنی نظیر، حدیث بنی النضیر (مختار) (۲)صحیح بخاری ۵۷۵/۲ کتاب المغازی باب حدیث بنی نظیر، سنن ابی داؤد ۲/۲ کتاب الخواج والامارة والفئ باب فی وصایارسول الله عَالَیْ من الاقوال، صحیح مسلم ۲/۲۲ کتاب الجهاد والسیر باب قول النبی عَالِیْ الانورث ماتر کناصدقة (مختار)

ترجمه: حضرت عائش سروایت ہے کہ نی اکرم ایک نے فرمایا کہ ہم سے کوئی وراثت نہیں پاتا۔ ہم جو مال چھوڑتے ہیں وہ صدقہ ہوتا ہے۔
فہو صدقة ، لین ہماراتر کہ بیت المال میں جائے گا اور عامة المسلمین کیلئے وقف ہوگا۔
(۵) حدث نا محمد بن بشار ثنا عبد الرحمٰن بن مهدی ثنا سفیان عن ابی المون ادعن الاعرج عن ابی هریرةٌ عن النبی النبی الله قال لایقسم ورثتی دینار او لادر هما ماتر کت بعد نفقة نسائی و مؤنة عاملی فہو صدقة.

ترجمہ: حضرت ابوہریرہ نی اکرم اللہ سے روایت کرتے ہیں فرمایا کہ میرے پیماندگان (میرے ترک ہیں فرمایا کہ میرے پیماندگان (میرے ترک میں سے دینار اور درہم تقتیم نہ کریں۔میری بیبیوں اور میرے عامل کاخرچہ نکال کرمیں جو کھے چھوڑتا ہوں وہ صدقہ ہے۔

لایقسم ورثتی، بینی یا نبی کا صیغہ ہے دونوں صورتوں میں مآل ایک ہی ہے۔ لینی میرے ورثقت مال کے ستی نہیں ہیں۔ پھراپنے عزیز وا قارب کو''ورثہ'' بھی مجاز آ کہا ہے۔ لیعنی جو بالقو ۃ وراثت کے اہل ہیں۔ورنہ شرعاً وہ وارث نہیں ہیں۔

دیندا و الادرهما ، چونکه غالباً تر که نقتری شکل میں ہوتا ہے اور پھرتقسیم کے وقت تو سارے مال کی قیمت نقتر سے لگائی جاتی ہے۔ اس لئے ان دونوں کا ذکر کیا ورنہ کی بھی مال کی تقسیم و فہیں کر سکتے۔

بعد دنفقة نسآئی لینی از واج مطهرات کا نفقه میریتر که سے دیاجائے گا۔ کیونکہ نبی زندہ ہوتا ہے تو وہ ہےتو ان کی بیبیوں کا نفقہ پہلے کی طرح جاری ہوگا۔ دوم میہ کہان کے لئے دوسری جگہ نکاح ناجائز ہے۔ تو وہ معتقد ات کی طرح اپنے خاوند کے تق میں محبوس ہیں۔ سوم میہ کہ وہ مؤمنین کی مائیں ہیں تو مؤمنین کے لئے چھوڑے مال میں سے ان کا نفقہ دیا جائے گا۔ کیونکہ ان کا نفقہ مؤمنین پر واجب ہے۔

(۱) صحيح بخارى ۳۸۹/۱ كتاب الوصاياباب نفقة الفم للوقف، صحيح مسلم ۹۰،۸۹/۲ كتاب البهادو السير باب قول النبي السيطة لانورث ماتركنا فهوصدقة، سنن ابى داؤد ۵۸/۲ كتاب النخراج والامارة والفئ باب فى وصايا رسول الله المسلمة من الاموال ، السنن الكبرى للبيهقى ٢٢٢٠ مسندا حمد ٢٢/٢ (مختار)

ومؤنة عاملی، عامل سے مراد بعض شراح کے نزدیک خلیفه اور امیر المؤمنین ہیں۔ بعض کے ہاں اس سے مراد جائیداد کا انتظام چلانے والا، بعض کے خیال میں اس سے مراد صدقات کا عامل ہے۔ اور بعض نے مسلمانوں کے اجتماعی امور میں مصروف ہرکار تدہ مراد لیا ہے۔

(۲) حدثنا الحسن بن على الخلال ثنابشر بن عمرقال سمعت مالك بن انس عن الزهرى عن مالك بن اوس بن الحدثان قال دخلت على عمر فدخل عليه عبدالرحمن بن عوف وطلحة وسعد وجاء على والعباس يختصمان فقال لهم عمر انشدكم بالذى باذنه تقوم السّماء والارض أتعلمون ان رسول اللهم عمرة طويلة قال لانورث ماتركنا صدقة فقالوا اللهم نعم وفى الحديث قصة طويلة (۱).

ترجمہ: ما لک بن اوس بن الحد ثان کہتے ہیں کہ میں حضرت عمر کے پاس آیا تو ان کے پاس میا تو ان کے پاس میا تو ان کے پاس عبدالرحلٰ بن عوف، طلحہ اور سعد رضی اللہ عنہم تشریف لائے۔ ان کے بعد علی اور عباس جھٹرتے ہوئے آئے۔ حضرت عمر نے حاضرین صحابہ کو کہا کہ میں تم کواس ذات کی قتم دلوا تا ہوں جس کے تھم سے آسمان اور زمین قائم ہیں۔ کیاتم کو علم ہے کہ نبی اکر میالی نے نے فرمایا ''جم (انبیاء) سے کوئی وراثت نہیں پاتا۔ ہم جو مال چھوڑتے ہیں وہ صدقہ ہوتا ہے۔ تمام حضرات نے کہا کہ بیشک ہم نے سنا ہے۔ اس حدیث میں طو مل قصہ سے

مالک بن اوس بن الحدثان ،التصری کی کثیت ابوسعیر می رسالح الم ی اور بعض اکابر کے بقول ووصحابی بیں۔ تقریب میں ابن جر نے بھی اسے صحابی کہا ہے۔ بلکہ نبی کریم الله سے ان کی روایت بھی (۱) صحیح بخاری ۲۰۲۲ کتاب فرض الخمس، صحیح مسلم ۲۰۲۹ کتاب الحجاد والسیوباب حکم الفئ، سنن ابی داؤد ۲۰۲۲ کتاب الخواج والامارة والفئ باب صفایار سول الله منافظ من الاقوال، جامع ترم فدی کتاب السیو باب ماجاء فی ترک رسول الله منافظ المنان الکبری للبیهقی ۲۹۷۲ (مختار)

بعض کتب میں موجود ہے۔ لیکن اکثر روایات عشر ہبشر ہاوردیگرا کا برصحابہ سے کرتے ہیں۔ دوسری طرف ابن سعد امام بخاری اور بعض دیگرا کا برن ان کوتا بھی کہا ہے۔ ابن حبان اور ابن مندہ کہتے ہیں کہ ان کوتا بھی کہا ہے۔ ابن حبان اور ابن مندہ کہتے ہیں کہ ان کوصحابی ہجھناوہم ہے۔ اتنی بات ثابت ہے کہ نبی اکر مرابط کے زمانہ میں وہ بالغ آدمی بلکہ شہوار تھے۔ لیکن صحابیت میں تر دوموجود ہے۔ حضرت عمر نے ان کواپئی قوم میں عریف اور معتمد مقرر کیا تھا۔ اموال کی تقسیم اور دیگر امور میں ان سے تعاون لیا کرتے تھے۔ ۲۲ ہے یا ۹۹ ہے میں وفات یائی۔

فقالوا اللّهم نعم ،ان حضرات نے جواب کی ابتداءاللّهم سے مض تا کید کے لئے یا خطا سے بیخ کے لئے احتیاطاً کی ہے۔جبکہ بعض شراح کے مطابق بیکلمہ شہادت کے مرتبہ میں ہے۔ بینی ہم اس کی گواہی دیتے ہیں۔

وفى الحديث قصة طويلة ،يطويل قصة م ذكركر يكي بين البته مصنف في است ذكر كريك بين البندا سي الشكالات اورابل بدعت كاوبام بين البنداات قابل ذكر نبين سمجها -

(2) حدثنام حمد بن بشار ثناعبد الرحمٰن بن مهدى ثناسفيان عن عاصم بن بهدله عن زربن حبيش عن عائشةٌ قالت ما ترك رسول الله على الله على الله على الله على الله على الله على العبدو الامة (١).

ترجمہ: حضرت عائش قرماتی ہے کہ نبی کریم اللہ نے نہ کوئی دینار چھوڑ ااور نہ درہم نہ کوئی کریم چھوڑ اور نہ درہم نہ کوئی بکری چھوڑی اور نہ اون ہے کہ آپ شک ہے کہ آپ نے فلام اور ماندی کا ذکر کہا مانہ۔

تشریخ: اس روایت میں راوی کوغلام اور با ندی کے ذکر میں شک ہے۔ گردوسری روایت صراحت کے ساتھ مذکور ہے کہ نہ غلام چھوڑ ااور نہ با ندی۔ گویا نبیاء کرام مال ودولت کے وارث نبیس بناتے ان کا تر کہ علم ہوتا ہے۔

(۱) مصنف ابن ابنى شيبة ۱ / ۲ \* ۲ ، السنن الكبرى للبيهقى ٢ / ٢ ٢ ٢ ، شرح السنة للبغوى رقم الحديث (۱) مصنف ابن ابنى شيبة النبيء النبيء الفضائل صحيح ابن حبان رقم الحديث ٢ / ٢ (مختار)

# ٢٥. باب ماجاء في رؤية النبيء المناه المنام المنافي المنا

رؤیا اور رؤیہ دونوں مصدر ہیں۔ جیسے یُسری اور عُسرة۔ عموماً رؤیا خواب و یکھنے کیلئے اور رؤیۃ جاگتے ہوئے دیکھنے کیلئے اور رؤیۃ جاگتے ہوئے دیکھنے کیلئے مستعمل ہوتا ہے لیکن ایک دوسر سے کی جگہ ان کا استعمال جائز ہے۔ پھر رویا اگر چہ مصدر ہے کین اس کا اطلاق 'مسایو الا الوجل فی منامه '' یعنی خواب میں دیکھی ہوئی چیز پر بھی ہوتا ہے۔ اس وقت یہ صدریت سے فکل کراسم بن جاتا ہے۔

زندگی کا مکمل نقشہ کھینچنے کے بعد مصنف ؓ اس باب میں وہ احادیث لاتے ہیں جوخواب میں نبی اکرم اللہ کی زیارت سے متعلق ہیں۔

خواب کیاہے؟

خواب کیاہے؟

خواب کی حقیقت کے بارے میں علماء ظاہر وباطن، حکماء نیز جدید دور کے ڈاکٹروں نے مختلف قتم کے خیالات ظاہر کئے ہیں مثلاً بعض حکماء کہتے ہیں کہ واقعات وحوادث کی صور تیں عالم بالا میں موجود ہوتی ہیں جب نیند میں روح کا محاذات ان نقوش میں سے بعض کے ساتھ ہوجا تا ہے۔ تو وہ صور تیں جو کہ پہلے سے خزانہ میں جمع ہوچکی ہیں نفس میں منعکس ہوتی ہیں (۱)،اور بعض اہل طب کا خیال ہے کہ سار بے واب جسم کے اخلاط کے اثر ات سے ظاہر ہوتے ہیں۔ لینی خوابوں میں انسانی بدن میں موجود مادوں کے ہیجان ایک دوسرے پر غلب، مزاج کی گرمی، سردی، خشکی اور رطوبت وغیرہ کا عمل دخل ہوتا ہے گویا ان کا سبب اندرونی عوامل ہوتے ہیں۔ مثل بعض گرم مزاج کے لوگ خود کوآگ میں جاتا ہوا دیکھتے ہیں۔ ان کا سبب اندرونی عوامل ہوتے ہیں۔ مثل بعض گرم مزاج کے لوگ خود کوآگ میں جاتا ہوا دیکھتے ہیں۔ اور شوئٹ سے سراج کے لوگوں کو پانی، ہرف اور دیگر سردا شیاء دکھائی دیتی ہیں۔ اس طرح صفراوی، سوداوی اور بلغی مزاج کے لوگوں کے خوابوں میں اختلاف ہوتا ہے (۲)۔

جَبَرِعلَاء شريعت من اكثريت كى دائيه ہے كہ جس طرح جاگتے ہوئے بھى دل من خيالات واعتقادات الرتے ہيں اور اللہ تعالى دل من اداركات پيداكرتے ہيں اس طرح نيندكى حالت من بھى اللہ (١) قال ابن حجر وهذا اشد فساداً لكونه تحكماً لابرهان عليه (ازكوكب الدرى) (اصلاح الدين) (٢) قال صاحب المواقف اما الرؤياف خيال باطل عندالمتكلمين (جمع الوسائل ج٢) (اصلاح الدين)

تعالی کی تخلیق سے دل میں خواب پیدا ہوتے ہیں البتہ ان خوابوں کی تخلیق بھی کسی فرشتے کی وساطت سے ہوتی ہے بیہ الہا می خواب اور مبشر ات کہلاتے ہیں اور بھی اس کا واسطہ شیطانی وساوس ہوتے ہیں کیونکہ شیطان کو بھی نفس انسانی میں واخل ہونے اور رگوں میں تیرنے کی قوت دی گئی ہے اس صورت میں خواب شیطانی ہوتا ہے است تعزین المشیطان یا حلم کہاجا تا ہے اور بھی انسان کی نفسانی ترجیحات اور اس کے شیطانی ہوتا ہے است حدیث انفس کہاجا تا ہے اور بھی انسان کی نفسانی ترجیحات اور اس کے اساس بن جاتے ہیں اس صورت میں اسے حدیث انفس کہاجا تا ہے اور اضغاث احلام بھی کہا گیا ہے (۱)۔

البته اس میں علماء کا اختلاف ہے کہ میرم کی امرادراک کے قبیلے سے ہے جبیبا کہ علامہ ابن عربی گی رائے ہے یا بیر محض تصوّرات ہیں جو خلاف حقیقت بھی ہوسکتی ہے جبیبا کہ علامہ مازر کی وغیرہ علماء کا درائے ہے یا بیر محض تصوّرات ہیں جو خلاف حقیقت بھی ہوسکتی ہے جبیبا کہ علامہ مازر کی وغیرہ علماء کا خیال ہے۔ بہر حال اکثر اہل ند بہب کے نزد کی خواب اللہ تعالی اور نفس وشیطان کے تصرفات کا نتیجہ ہوتی ہیں اور میں اور دوہ تصورات جو کہ جن تعالی شانہ کی طرف سے قلب میں ڈال دی جاتی ہیں سیج خواب ہوتے ہیں اور جو شیطان کے وسوسہ سے ظاہر ہوں وہ شیطانی خواب ہوتے ہیں گویا خواب بیرونی عوامل سے بھی اثر پذیر ہوتے ہیں۔ کھنٹس کے خواطر اور افکار بھی مختلف اشکال میں متشکل ہو کر بھی بھی نظر آتی ہیں۔

رویة نیس خواب ہے: جو پیجہ بھی ہوائمتی کا خواب غیر بقینی تصورات وخیالات کا ایک سلسلہ ہوتا ہے جس میں الہام ،حدیث نفس اور شیطانی وسوسے کا اختال ہوسکتا ہے البتہ پیغبر کا خواب وتی ہوتا ہے یونہی اگر کسی کو نبی کریم آلی خواب میں دکھائی دیں تو اس میں بھی کسی شک کی گنجائش نہیں ہوتی یہ سپا اور الہا می خواب ہے اور دکھائی دینے والے نبی اکرم آلی ہی ہونگے خود نبی اکرم آلی اس بات کی ہمیں بشارت دیتے ہیں اور اس کا سبب بھی بتا دیا ہے جس طرح اللہ تعالی نے پیغبر کی زندگی میں شیطان سے بیقو تیں سلب کردی ہیں کہ وہ کسی پیغبر کی شکل میں متشکل ہویا نبی کی آواز میں آواز ملا کر وتی میں اختلاط کا سبب سلب کردی ہیں کہ وہ کتاب بعد بھی آ ہے اللہ تعالی میں شیطان متشکل نہیں ہوسکتا۔

(۱)عن أبى هريرة قال الرؤيا ثلث الحنسة بشرئ من الله والرؤيايُحدّث بهاالرجل نفسه والرؤيا من تحزين الشيطان الخ (ترمذى ابواب الرؤيا، باب ماجاء في رؤياالنبي المنظمة في الميزان والدلو.)٢ ا (اصلاح الدين)

(۱) حدّثنا محمّد بن بشّار ثناعبدالرحمٰن بن مهدى ثنا سفيان عن أبى المحمّد بن بشّار ثناعبدالله عن النبى عليه قال من رانى في المنام فقدراني فانّ الشيطان لا يتمثّل بي (١).

ترجمہ: حضرت عبداللہ بن مسعودٌ نبی اکرم اللہ سے روایت کرتے ہیں انہوں نے فرمایا کہ جس شخص نے مجھے خواب میں دیکھااس نے هیقة مجھ ہی کودیکھااس لئے کہ شیطان میری صورت میں نہیں ڈھل سکتا۔

فقدرأنبي اس مديث كي تاويل مين مختلف اقوال ہيں۔

اول مطلب میر کجس نے مجھے خواب میں دیکھا وہ جاگتے میں مجھے دیکھ لےگا۔ (بخاری) اور مسلم شریف کی ایک روایت میں بھی بھی الفاظ آتے ہیں (۲)

دوسرامعنی بیہ کہ جوخواب میں جھے دیکھے گا گویا اس نے جھے جاگتے ہوئے دیکھا ہے گویا اس شخص کا بھی صحابہ کی طرح براعظیم مرتبہ ہے۔

تیسرا اورمشہور معنی میہ ہے کہ اس شخص کا خواب سپاخواب ہے او ہام نہیں ہیں لینی اس نے هیقة مجھے دیکھ لیا اور میں اگندہ خیالی اور شیطانی نضر فات نہیں ہوئگے۔

اصل صورت میں ندو یکھنے کی وجہ:

اب اگر کسی نے نبی کریم اللہ کہ کالیں حالت میں دیکھا ہو جو کہ مناسب شان نبوی اللہ نہیں تو اس میں دراصل خواب دیکھنے والے کو یہ تنبیہ ہوتی ہے کہ اسی نوعیت کی خامیاں تم میں خودمو جود ہیں جس طرح کہ نبی اللہ میں دیکھر ہے ہو۔ مثلاً کسی خص پرانگریزی تدن عالب خامیاں تم میں خودمو جود ہیں جس طرح کہ نبی اللہ میں دیکھر ہے ہو۔ مثلاً کسی خص پرانگریزی تدن عالب (۱) جامع ترمذی ۱/۱ ۵۰ کتاب الرؤیا باب ماجاء فی قول النبتی من رأنی فی المنام فقدرأنی، سنن ابس ماجة ص ۲۸۷ ابسواب کتاب تسعید السوؤیا باب رویة النبتی مالیہ مصنف ابن ابس شیبة ا ۱/۵۵، (مختاد)

(٢) من رأنى فى المنام فسيرانى فى اليقطة. بخارى ١٠٣٥/٢ كتاب التعبير باب من رأى النبى مُلْكِلُهُمْن رأنى فى المنام فقدرانى النبى مُلْكِلُهُمْن رأنى فى المنام فقدرانى ابوداؤد ٣٣٤/٢ كتاب الروياء باب قول النبى مُلْكِلُهُمْن رأنى فى المنام فقدرانى ابوداؤد ٣٣٤/٢ كتاب الادب باب ماجاء فى جاء فى الرؤيا. ٢١ (اصلاح الدين)

لہذااب بیاعتراض بھی نہیں ہوگا کہ ممکن ہے کہ کوئی خواب میں نبی کر بھر اللہ کواپنی اصل صورت میں نہ کہ کھیے تو یہ یک محققت ہے۔ نیز یہ اعتراض بھی مند فع ہے کہ دنیا کے مختلف گوشوں میں بیک وقت کیے آپ پھیاتے حقیقتاً دکھائی دیتے ہیں کیونکہ ہم کہہ بچکے ہیں کہ ذات تو حقیقتاً مرئی جبکہ صفات مختل ہیں ہوسکتا کہ ان کے ادراک میں خطاوا قع ہو یہاں یہ بات بھی واضح ہوگئی کہ جب شیطان ظاہری صورت کے لیا ظ نبی اکر مہتلیات کے ادراک میں خطاوا قع ہو یہاں یہ بات بھی واضح ہوگئی کہ جب شیطان ظاہری صورت کے لیا ظ نبی اکر مہتلیات کے ساتھ تھیہ سے عاجز ہے تو باطنی صفات میں تھیہ کا سوال ہی پیدائیس ہوتا۔

(۱)فرؤياه في صورة حسنة دليل حسن دين الراءى وعكسه عكسه لاز كالمرأة الصقيلة ينطع فيها مايقابلها ٢٠ اجمع ج٢ ص٢٩٢ (اصلاح الدين)

(۲) صحیح بخاری ۱/۱ کتاب العلم باب آثم من کذب علی النبی مان النبی مان کتاب النبی مان کتاب النبی مان کتاب العلم ۲/۱ مختار)

ترجمہ: حضرت ابو ہر ہر ہ سے روایت ہے کہ رسول اللہ اللہ اللہ فیصلے نے فرمایا جس نے جھے خواب میں دیکھا اس نے هیقة مجھ ہی کودیکھا کیونکہ شیطان میری صورت میں ظاہر نہیں ہوسکتا مار فرمایا کہ مجھ جیسانہیں بن سکتا۔

اسی طرح بعداز وفات بھی اگریہ اختیار شیطان کو دیا جائے تو بڑے بڑے بزرگ بھی دھوکے میں پڑے دہیں گے۔ حاصل یہ کہ نبی کریم اللہ کی شکل میں شیطان کا آنا عقلاً ونقلاً محال ہے (۱)۔

اب بیزیارت بعض محققین کے نزدیک عین ذات کی ہوتی ہے گویاراءی (خواب دیکھنے والے)
اور (مرئی) نبی کریم اللے کے درمیان تمام تجابات ہٹ جاتے ہیں اور آپ آلیے دکھائی دیتے ہیں۔اور بعض
کے نزدیک بیا لیک مثالی صورت ہوتی ہے جو کہ ذات سے حکایت ہوتی ہے دونوں شم کی رؤیت کا امکان
ہے اور جس درجہ میں بھی ہوآپ آلیے کی زیارت عظیم سعادت ہے۔اللّھم ارز قناہ

(۱)قال المناوى واذاتنور العالم بنوره ووجوده رحمت الشياين لميلاده وهدمت بنيان الكهنة فكيف يتصوّر ان يتمثل الشيطان بصورته ولوقدران يتمثل بصورته تمثّل في الحارج كذالك (المناوى على هامش جمع الوسائل ١/١ و ٢) (مختار)

(٣) حدَّثنا قتيبه ثناخلف بن خليفة عن ابي مالك الأشجعيّ عن ابيه قال قال رسول الله عليه من رأني في المنام فقدرأني (١) قال ابوعيسي وابومالك هذاهوسعد بن طارق بن أشيم وطارق بن اشيم هـ و من أصحاب النبيّ عَلَيْكُ وقدروي عن النبيّ عَلَيْكُ احاديث وسمعت علّے ، بن حجر يقول قال خلف بن خليفة رأيت عمرو بن حريث صاحب النبيّ عَلَيْكُ و أناغلام صغير (١).

ترجمه: طارق بن اشيم رضي الله عنه كتبته بين كه نبي اكرم الله في خرمايا جس ني خواب میں مجھے دیکھااس نے هیقة مجھے دیکھا۔امام ترندئی کہتے ہیں کہ بیابومالک سعد بن طارق بن اشیم میں اور (ان کے والد) طارق بن اشیر صحابہ میں سے میں۔ انہوں نے نبی اکر میں ہے۔ سے متعدد احادیث روایت کی ہیں۔ میں نے اپنے شیخ علی ابن جُرُكُوبِ كَتِي بُوئِ سنا كه خلف بن خليفة (تابعی) نے فرمایا كه میں نے صحالی رسول عمر وبن حريثٌ كود يكها تها جبكه مين حيوثا تهاب

طارق بن اشیم : حضرت طارق بن اشیم بن مسعودالا شجع گوفه میں رہنے والے صحابہ میں سے ہیں۔امام مسلم کہتے ہیں کدان سے ان کے بیٹے ہی کی روایات ملتی ہیں۔امام تر مذی کہتے ہیں کدوہ نی اکر مالی سے متعد دروایات روایت کر چکے میں بلکہ تر مذی باب ماجاء فی ترک القنوت میں نفریج ہے کہ وہ نبی اکر مہایکے کے پیچے نمازیں پڑھ کیے ہیں۔اس لئے خطیب کا پیول درست نہیں ہے کہان کی صحابیت مشکوک ہے۔ من رآني في المنام فقدر آني ملاعلى قاريٌ في مشكوة المصانيح ك بعض شارحين اورامام بنويٌ کے حوالے سے لکھا ہے کہ شیطان جس طرح نبی اکرم ایک کی صورت میں ظاہر نہیں ہوسکتا اس طرح دیگرانبیاءکرام، ملائکه، سورج، جا ند، بادل اور بارش کی صورت میں بھی ظاہر ہونے سے قاصر ہے۔واللہ اعلم قال ابوعيسي وابومالك الخ، الم ترزي يهال يبيان كرناجات بين كرابوما لكتابي

(۱)مصنف ابن ابي شيبة ۱ /۵۵، مجمع الزو الدك/ ۱۸۱، مسنداحمد۳/۲۷۲ (مختار)

اوران کے والد صحابی ہیں۔طارق بن اشیم جب نبی اکرم اللہ سے متعدد احادیث کے راوی ہیں۔ تو ان کی صحابیت میں شک یا تی نہیں رہا۔

وسمعت علی بن حجو النح، اس کلام سے امام ترفری کا مقصدیہ ہے کہ خلف بن خلیفہ تابعی بیں ان کی ملاقات صحابی عمرو بن حریث سے ثابت ہے۔ لہذا زیر نظر روایت میں ایک تابعی دوسرے تابعی سے روایت کرتے ہیں۔

(٣) حدّثناقتيبه هو ابن سعيد ثنا عبدالواحد بن زيادعن عاصم بن كليب حدّثنى ابى أنّه سمع أباهريرة يقول قال رسول الله عَلَيْهُ من رأنى فى المنام فقدر أنى فانّ الشيطان لا يتمثّلنى قال ابى فحدّثت به ابن عبّاس فقلت قدر أيته فذكرت الحسن بن على فقلت شبّهته به فقال ابن عبّاس إنّه كان يشبهه (١).

ترجمہ: عاصم بن کلیب کہتے ہیں کہ جھے میر بوالد نے بتایا کہ میں نے ابوہریہ اُ کویہ کہتے ہوئے سنا کہ رسول الشوائی نے فرمایا جس نے جھے خواب میں دیکھا اس نے جھے ھیقۂ دیکھا کیونکہ شیطان میری مشابہت نہیں کرسکتا۔ میر بوالد کلیب ؓ نے بیصد بیٹ عبداللہ بن عباس ؓ کوسنائی اور بیبھی بتایا کہ میں نے نبی اکرمہائی کوخواب میں دیکھا تو صورت دیکھ کر جھے (حضوراقدس میں اُلیٹ کے نواسے )حسن بن علی ہی صورت یاد آئی اور کہا میں نے نبی اکرمہائی کوحضرت حسن ؓ کے مشابہ پایا تو حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہ نے فرمایا کہ بے شک آ بیٹ اُلیٹ حضرت حسن ؓ سے ملتے جلتے ہے۔

حضورا قد ریافیہ سے میں اور سین کی مشاہرت: ف ذکر ت المحسن بن علی المستخدم میں المستدرک للحاکم، مسندا حمد ۲۳۲۱ (مختار)

جلی تھی اور جب انہوں نے حضرت ابن عباس سے خواب بیان کیا اور بتایا کہ نبی اکرم اللہ کی نظر آنے والی صورت کو حضرت حسن سے مشابہ پایا تو انہوں نے تصدیق کی کہ آپ اللہ ایسے ہی تھے۔ بعض محققین کے بیان کے مطابق نبی اکرم اللہ کا نصف اعلی لیتن سر ، سینہ اور چیرہ انور حضرت حسن سے زیادہ مشابہ تھا اور نصف اسفل لیتن پاؤں، پڈلیاں، قدم اور انگلیاں حضرت حسین سے زیادہ مشابہت رکھتا تھا(ا)، اس طرح

آ ثاریجی سن کو ملے کچھسین کو لول کھے گیام قع ہمارے رسول علیہ کا

گویاالله تعالی نے نی اکرم الله کی شبیر کو کھی وصر تک امت کیلئے زندہ شکل میں بھی یاتی رکھا تھا۔

(۵) حدّثنا محمّد بن بشّارثنا ابن ابی عدی و محمّد بن جعفر قال ثنا عوف بن أبی جمیلة عن یزید الفارسی و کان یکتب المصاحف قال رأیت النبی علی المنام زمن ابن عبّاس فقلت لابن عبّاس انّی رأیت رسول الله علی النوم فقال ابن عبّاس انّ رایت رسول الله علی النوم فقال ابن عبّاس ان رسول الله علی النوم فقال ابن عبّاس ان رسول الله علی النوم فقال ابن عبّاس ان المی فمن رانی فی النوم فقدر أنی هل تستطیع ان تنعت هذاالرجل الذی رأیته فی النّوم قال نعم انعت لک رجلاً بین الرّجلین جسمه ولحمه اسمر اللی البیاض اکحل العینین حسن الصحک جمیل دوائر الوجه قدملات لحیته مابین هذه الی هذه قدملاء ت نحره قال عوف و لاادری ما کان مع هذا النعت فقال ابن عبّاس لور أیته فی عوف و لاادری ما کان مع هذا النعت فقال ابن عبّاس لور أیته فی الیقظة ما استطعت ان تنعته فوق (۲) هذا قال ابوعیسی ویزید المفارسی هو یزید بن هرمزوهو اقدم من یزید الرقاشی و روی یزید الفارسی عن ابن عبّاس رضی الله عنهما احادیث ویزید الرقاشی لم

يدرك ابن عباس وهو يزيد بن ابان الرقاشي وهويروى عن انس بن مالك وين يد الفارسي وين يد الرقاشي كلاهما من اهل البصرة وعوف بن أبي جميلة هو عوف الأعرابي.

ترجمه: بنيد فاريٌّ جومصحف نويس تصريح بين كه عبدالله بن عباسٌ كي زندگي مين مجھے خواب میں نبی اکر میلانیہ کی زیارت نصیب ہوئی۔ میں نے عبداللہ بن عمال سے کیا کہ میں نے خواب میں نبی اکر میں تھا کہ کی زیارت کی ہوتو ابن عباس نے کہا کہ رسول الله الله الله الله الله فرماتے تھے کہ شیطان میری شبہ نہیں بنا سکتا۔اس کئے جس نے مجھے خواب میں دیکھااس نے حقیقۂ مجھے دیکھا۔ (اور ) کیاتم اس مخص کا حلیہ بیان کر سکتے ہوجس کوتم نے خواب میں دیکھا تھا میں نے کہا کہ ہاں میں تیرے سامنے درمیانی انداز کے شخص کی صفات بیان کروزگا۔ جوجسم اور گوشت میں (نه زیادہ موٹا، پر گوشت نه نحیف ونزار بلکه)معتدل تفار گندم گول رنگ سفیدی مائل تفار سرمگین آنکھول والاتھا۔ عوف بن الی جمیلہ کہتے ہیں کہ میں نہیں جانتا کدان صفات کے ساتھ مزید کیا صفات تھیں (جویزید فارسی بیان کر چکے تھے) تو عبداللہ بن عباس نے (یزید فارسی ے) کہا کہا گرتم نبی اکرم آلیہ کو (زندگی میں) اپنی بیداری کی حالت میں دیکھتے تو بھی حلیہ کے بیان میں ان صفات برمزیداضا فہنیں کرسکتے تھے۔امام ترفدی کہتے ہیں کہ بزید فارس بزید بن ہرمز ہیں جو بزیدالرقاشی سے بڑے ہیں۔ بزید فارس عبداللہ بن عماس سے کی احادیث کے راوی ہں جبکہ پزیدالرقاشی کی ملاقات ابن عماس سے نہیں ہوئی ہے۔ یہ بزید بن ابان الرقاش ہیں جو حضرت انس سے روایات کرتے ہیں۔ یزید فارسی اور بزید الرقاشی دونوں کا تعلق بھرہ سے ہے (جس کی وجہ سے دونوں کے ایک ہونے کا تو ہم کیا جاتا ہے ) اور عوف بن الی جیلہ عوف الاعرانی ہیں (امام تر فدی تضر بن شمیل سے روایت کرتے ہیں) کہ عوف اعرانی کہا کرتے تھے کہ میں

حضرت قما ده سے عمر میں براہوں۔

معتدل متوازن سرایا: انعت لک رجلاً بین الرجلین الخ، یعنی میں نے جود یکھاوہ کھ یوں تھا کہ آ یہ اللہ قد میں میان قد تھے نہ یہ کے تھے نہ موٹے۔

جسمه ولحمه بيم مبتداء بهاور بين الرجلين اس ك خبر مقدم به يعنى ان كاجسم اور كوشت درميانى تقااور بي محم ممكن ب كه جسمه ولحمه نبين الرجلين "كيك باعتبار متعلق فاعل بن جائي يعنى ورميانى تقااور بي محمكن ب كه جسمه ولحمه دونو ن صورتون بيم المرجل كيك صفت بن گارگوياوى شبت اووقع بين الرجلين جسمه ولحمه دونون صورتون بيم الرجل كيك صفت بن گار سعة مسن نقشه به جوبم اس كتاب من براه يك بين كه نبى اكرم الله معتدل الخلق تقد قد من "دب عقه مسن القوم " يعنى مياندقد تق بال بحى درميانى تصندزياده محتل باليالى كله موت السمريعنى گذم گون تقدين سركين آئليس تعين قدرتى سياى گون تقديري سائل تقور مين مرمد دالا بود.

حسن الضحك، ليني دانتول كي سفيري كيسب خوبصورت مسكرا مِثْقي ـ

جمیل دو اثر الوجه، چرے کے تش ونگار بہت حسین اور اعضاء متو ازن تھے۔ چرے کی گولائی کی وجہ سے اس کے ہر جز کوالگ دائر ہنا کردوائر جمع لایا گیا ہے لیمن چرے کا ہر ہر جزء خوبصورت تھا۔

قدملات لحیته المخ، لیخی خوب گھنی داڑھی تھی۔ان کی داڑھی نے اس کان سےاس کان تک چرہ ڈھانپ لیا تھا (لیخی گنجان داڑھی تھی )اور بالائی سین بھی چھیادیا تھا۔

قال و ما کان یدری النے، اس جملہ کا ظاہر و متباور معنی ملاعلی قاری نے یہ بیان کیا ہے کہ بقول برنید فارس کے شاگرد کے جمعے کے یاد نہیں کہ میرے استاد برنید نے فدکورہ صفات کے ساتھ اور کیا کیا تفصیلات بیان کیں لے ورأیت النے ،حضرت ابن عباس نے برنید فارس کی تائید کرتے ہوئے فرمایا کہ اگر حین حیات میں بھی تم نے نبی اکر مہالی کہ کود یکھا ہوتا تو اس سے زیادہ سے حجے بیان کرنے کی استطاعت نہ ہوتی گویا یہ صحابہ اور تابعین کے دور میں ان احادیث کی تائید ہے کہ شیطان کو نبی اکر مہالی کی شکل میں متشکل ہونے کی استطاعت نہیں ہے اور خواب میں نبی اکر مہالی کی حقیق شکل وصورت بی نظر آتی ہے۔

سندی بحث: قال ابوعیسی ویزیدالفارسی هویزید بن هرمز، امام ترفدگاس عبارت ش دوباتیل بیان کررہے بیں اول بریدفاری کا تعارف کران کا نام برید بن برمزہ کیکن ان کے اس دعوے شریحققین اختلاف کرتے بیں کیونکہ برید بن برمزمتوفی والیے دوسر شخص بیں جومدنی بیں اورمتوسط درجہ کے تابعین میں سے بیں جبکہ بریدفاری بھری راوی بیں جن کا شارچھوٹے تابعین میں ہوتا ہے (ا)۔

دوم میر کہ برزید فاری اور برزیدر قاشی الگ الگ راوی ہیں اگر چہدونون بھری ہیں دونوں کا نام بھی ایک ہے اسی وجہ سے بعض لوگوں کو ایک ہی رادی ہونے کا وہم ہوا ہے۔

لیکن امام ترفری کے ہاں بہ قابل تسلیم نہیں اور ان کی بہ بات درست ہے کیونکہ بزید بن ابان الرقاشی (متوفی ۱۰۰ اتقریباً) کا تعلق بھرہ سے ہے۔ زاہد وعابد واعظ (۲) تھے گران کا ساع عبد الله بن عباس الرقاشی (متوفی ۱۰۰ اتقریباً) کا تعلق بھرہ سے ہے۔ زاہد وعابد واعظ (۲) تھے گران کا ساع عبد الله بن عباس الله بن عباس مدیث میں بزید فارس کا ان سے ساع فرکور ہے (قال عبوف الاعرابی انا اکبر من قتادہ ،اس دوایت سے تین با تیں معلوم ہوئیں ایک بیر کے وف بن ابی جیلہ ہی عوف الاعرابی ہیں جیسے کہ پہلے امام ترفدی دعوئی کر بچے ہیں۔

دوسری یہ کموف اعرابی لینی عوف بن ابی جیلہ یزید فاری کے شاگرد ہیں۔ قادۃ سے عمر میں برے ہیں تو ان کی طرح وہ بھی ابن عباس سے ل چکے ہوں گے۔ تو اس سے معلوم ہوتا ہے کہ اس کے استاد یزید فارس کی ملاقات ابن عباس سے ضرور ثابت ہوگی۔ تیسری بات اس بات پر عبیہ ہے کہ یہاں ایک تابعی (عوف) دوسرے تابعی (یزید فارس) سے دوایت کرتے ہیں۔

(٢) حدّثنا عبدالله بن أبى زيادثنا يعقوب بن إبراهيم بن سعد ثنا أبى اخى ابن شهاب الزهرى عن عمه قال قال أبوسلمة قال أبوقتادة قال رسول الله عَلَيْسِهُ من رأنى فى النوم فقدرأى الحقر٣).

(۱)ليراجع التقريب ج٢ ص٣٣٣ (عدد ١٨ ١٨) ج٢ ص٣٣٥ (عدد ٢٨٢٢) ١ اصلاح الدين (١)ليراجع التقريب ج٢ ص٣٣٥ (عدد ٢٨١٨) ١ اصلاح الدين (٢)صحيح بخارى ١٠٣١ اكتاب التعبير باب من رأى النبي النبي المنام، صحيح مسلم (٢) حتاب الرؤيا باب قول النبي النبي النبي النبي المنام ،مسندا حمد ٢٥ محتار)

ترجمہ: حضرت ابوقیادہ رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ نبی اکر میں ہے نفر مایا جس نے مجھے دیکھا کے میں اس نے مجھے دیکھا۔ مجھے دیکھا یعنی خواب میں پس اس نے صحیح اور سچاخواب دیکھا۔ لینی فی النوم، بہ جملہ کسی راوی نے بطور تشریح حدیث میں داخل کیا ہے۔

فقد رأى الحق: فقد رأى الحق، بعض شراح كنزد كما لحق صفة بـ مفعول مطلق كے لئے ۔ يعنی فقد رأى الحق ، گويا بيخواب شيطانی خواب نيس بلداس نے سپاخواب د يكھا ہـ جو مبشرات ميں سے ہـ بعض شراح نے ''الامرالثابت' سے كيا ہے اورا سے مفعول بقر ارديا ہے ليعنی اس نے ایک نفس الامرى اور شيق خواب د يكھا ہـ ۔ اس كا خواب پراگندہ خاطرى اور شيطانی دھوكنہيں ہے۔

بعض حضرات نے زیر نظر حدیث میں 'الحق' سے مراداللہ جل وعلاشانہ لیا ہے۔اس صورت میں حدیث کا ترجمہ یہ ہے کہ جس نے مجھے خواب میں دیکھا ہے۔وہ اللہ تعالیٰ کوخواب میں دیکھے گا۔یا مطلب یہ ہے کہ بیاس شخص کی جنتی ہونے کی نشانی ہے۔اوروہ جنت میں اللہ تعالیٰ کا دیدار کرے گا۔

بہرصورت مدیث سے معلوم ہوتا ہے کہ دیدار رسول ایک بڑی سعادت ہے اور دنیاو آخرت میں عنداللہ مقبولیت کی علامت ہے البتدامام بغوی رحمہ اللہ فرماتے ہیں کہ جو شخص نبی اکرم اللہ کا دیدارخواب میں بکثر ت کریگاوہ دنیا میں ضرورت سے زائد مال رکھنے سے کترائے گا۔ بلکہ عموماً قلیل المال رہیگا()،

(ك) حدّثناعبدالله بن عبدالرحمٰن انامعلىٰ بن اسدثنا عبدالعزيز بن المختارثناثابت عن أنس أنّ رسول الله عليه قال من رانى فى المنام فقدرانى فإنّ الشيطان لا يتخيّل بى قال ورؤيا المؤمن جزء من ستة واربعين جزءً من النبوة (٢).

ترجمه: حضرت انس رضي الله عنه سے روایت ہے کہ نبی اکرم ایک نے فر مایا جس

(۱) مناوی جهس ۲۹۳، (اصلاح الدین)

(۲) صحیح بخساری ۳۲/۲ و اکتساب التعبیس بساب من رأی النبسی طلیله فی المنسام، مسند احمد ۲۲۹/۲، مصنف ابن ابی شیبة ۱ ۲/۱ ۵ (مختار) نے مجھے خواب میں دیکھا۔اس نے حقیقۂ مجھے دیکھا۔ کیونکہ شیطان میرے مشابہیں موسکتا نیز فرمایا کہ مؤمن کا خواب نبوت کے چھیالیس اجزاء میں سے ایک جزء ہے۔
لایت خیل ہی شیطان میری صورت خیالی کسی کے سامنے پیش نہیں کرسکتا۔

رویائے صادقہ اور جزئیت نبوت:

رؤیاالے من الخ ، لینی مومن کے رویائے صادقہ نبوت اللہ موان ہیں النہ ، لینی مومن کے رویائے صادقہ نبوت اور وی کا چھیا لیسوال حصہ ہے۔ گویا وی کی طرح وہ بھی صادق ہیں الن ہیں کذب کا احمال نہیں ۔ لیکن اس حصہ کی ما ہیت اور حقیقت ہجھ ہیں آ سکتی کیونکہ اس کی حقیقت ہب ہجھ ہیں آ سکتی کیونکہ اس کی حقیقت ہب ہجھ ہیں آ سکتی کو معلوم ہے۔ اور وی کی حقیقت تو صرف اللہ جل شانہ اور اس کے رسول ہوئے کو معلوم ہے۔ کیونکہ یہ خالص ایک وہ ہم رخل نہیں ۔ اللہ تعالی کا ارشاد ہولے کے دالم اللہ عمول ان 2 ای لیکن اللہ تعالی جن کوچا ہے انبیاء من خرب کرتا ہے۔ یہ جنبی من رسلہ من یہ شآء (آل عمول ن 2 ا) لیکن اللہ تعالی جن کوچا ہے انبیاء من جنب کرتا ہے۔

نیز فرمایاالله اعلم حیث یجعل رسالته (انعام ۱۲۳) الله تعالی خوب جانتے ہیں کہ کہاں رسالت کور کھے کس کورسالت سے نواز دے۔

ملاعلی قاری فرماتے ہیں کہ جس طرح نبوت کی حقیقت ہمارے لئے الی ہے کہ 'من لم یذق لم یہ یہ دو 'اس طرح اس کے جزء کی حقیقت ہمارے لئے مجبول ہے لیکن بایں ہمہ یہ بات مؤمن کیلئے ایک درجہ میں بڑی بشارت ہے کہ جس طرح وحی اور نبی کریم اللّق کے فرامین سپے ہیں اسی مناسبت کی وجہ سے رویا نے مومن بھی سپے ہو نگے ۔اس لئے بعض حضرات نے یہ کہا ہے کہ یہاں علوم نبوت کا حصہ مراد ہے۔ نہ کہ نبوت کا کیونکہ نبوت کا حصہ مراد ہے۔

قریبی مناسبت ہے۔ نیز علامہ بیجوری نے ایک اور توجیہ بھی کی ہے وہ کہتے ہیں کدراءی کے بھی مرتبے ہوتے ہیں۔وہ جس در ہے کا ہوگا اوراس کا اپنا ظرف جتنا یا کیزہ ہوگا اتنا ہی اس کےخواب کا درجہ بڑھا ہوا ہوگا۔مثلا صفائی باطن زیادہ ہوگی تو اس کے خواب وجی کا جالیسواں حصہ ہو نکے اور اگر دوسرے درجہ میں ہوگی تو پینتالیسواں حصہ اور اگرتیسرے درجہ میں ہوگی تو اس کےخواب بھی نبوت کے چھیالیسواں حصہ شار ہوئے گویا جتنا راوی صداقت، زبدوتقویٰ کے قریب ہوگا۔ یا پھراچھے مقام یا بہتر زمانہ میں ہوگا اس کا خواب بھی اسی قدر نبوت کے قریب تر ہوگا اور بعض کے (۱) خیال میں بیرحدیث دراصل مبشرات نبوی الفیلیہ کی مت سے صرف تعبیر ہے وہ یوں کہ نبی اکرم اللہ کی مت نبوت تبیس سال ہے۔جس کا چھیالیسواں حصہ چھ مہینے بنتے ہیں گویا نبی کریم آلیات کی بعثت سے قبل چھ مہینے تک مبشرات لینی سیج خوابوں کا دور تھا بیوہ ز مانہ تھا جب غار حرامیں آ ہے ہاتھ تبتل اور تخلی الی اللہ کیا کرتے تھے نبوت سے قبل کے ان جیم مہینوں میں آپیالیہ وی کے انداز کے عجیب سیج خواب دیکھا کرتے تھے۔

(١)ذكره النووى ناقلاً عن الجزرى وقدزيف المحققون هذاالقول كما في جمع الوسائل. ٢ / / اصلاح الدين عفي عنه

## خلاصه بإب

کتاب کے سب سے آخری باب میں نبی اکرم اللہ کی دیدار کا شرف پانے کی سعادت کا ذکر ہے۔ صحابہ کرام رضوان اللہ علیہم نے آپ آلیہ کو دیکھا اور حلیہ مبارکہ کی تفصیل ہم تک پہنچائی۔ اب آپ آلیہ کی ملاقات خواب میں ممکن ہے اور اس باب کا سب سے بردامقصد یہی معلوم ہوتا ہے کہ خواب میں آپ آلیہ کی ملاقات خواب میں ممکن ہے اور اس باب کا سب سے بردامقصد یہی معلوم ہوتا ہے کہ خواب میں آپ آلیہ کی دیارت کرنے والوں کا خواب سچا ہوتا ہے اور دکھائی دینے والی صورت نبی اکرم آلیہ ہی کی ہوتی ہے۔ کیونکہ آپ آلیہ کی صورت میں تشکل شیطان کی بساط سے باہر ہے۔

ساتھ ساتھ اس بات کا بھی بیان ہے کہ آپ آلیہ کی صورت حضرت حسن (اور کھے حضرت حسین )
سے ملی تھی نیز کسی حد تک آپ آلیہ کا حلیہ خواب میں دیکھنے والے کی زبانی فدکور ہے آخر میں مؤمن کے الہامی خوابوں کی قدرو قبت کا ذکر ہے کہ وہ نبوت کا چھیالیہ وال حصہ، قابل اعتا واور مقبولیت کی علامت ہے۔ اس میں حضورا قدس آلیہ کے وفات سے غمز دہ اور فراق وجم میں تڑپنے والے عشاق کو تملی اور تسکین کا بھی کسی حد تک سامان ہے کہ خواب میں آپ آلیہ کی زیارت بھی زیارت ہوگی اور اپس ماندگان کوخواب سے بھی بڑی تیارت ہوگی اور اپس ماندگان کوخواب سے بھی بڑی تیارت ہوگی اور اپس ماندگان کوخواب سے بھی بڑی تیار ہو ہوگی اور اپس ماندگان کوخواب سے بھی بڑی تیار ہو ہوگی اور اپس ماندگان کوخواب سے بھی بڑی تیلی ہوجاتی ہے۔

## خاتمه

(۱) حدّثنا محمّد بن على قال سمعت أبى يقول قال عبدالله ابن المبارك اذابتليت بالقضاء فعليك بالاثر (١).

ترجمہ: عبداللہ بن مبارک فرماتے ہیں کہ اگر قضاء کی ذمہ داری گلے پڑجائے تو آثار کا اتاع کرو۔

عبدالله بن مبارك :
عبدالله بن مبارك :
عبدالله بن المبارك ، ابوعبدالرطن عبدالله بن المبارك بن واضح الخطلى مرو (خراسان ) كربن والحسن والمح وجرب ان وجرب ان ومروزى كتب بيل مرااج يا والجه مين ولا دت بموئى ـ اصل مين تركى النسل تق مرواس زمانه مين المل علم سے بحرابر اتفا ـ ابتدائى تعليم و بين حاصل كي ـ اصل كي ـ اصل مي جزيم مرم ، يمن اور عراق كے مخلف شهروں مين جا كرعلم حاصل كيا ـ امام احمد كے بقول ان سے زياده سفر كرنے والاكوئى نہيں ہے ـ بہت سے تا بعين سے ملاقات بوئى ـ امام مالك ، امام ابو حذيفه ، امام اوزاى ، سفيان قورى رحم مالله وغيره بهت سے ديگراكا برسے تلمذكا شرف حاصل بوا ـ ان كے ايك معاصر كا قول ہے كمان كے آئے سواسا تذه سے تو مجھے ملاقات كاموقع ملا ـ الله تعالى نے آپ كو بے پناہ حافظ ، ذمانت اور كران كے سے نوازاتھا ـ

تع تابعین میں آپ کوسر خیل کا درجہ حاصل ہے بالحضوص علم حدیث میں آپ کوامیر المؤمنین سمجھا جاتا تھا۔ حدیث کی کوئی بھی کتاب آپ کی روایات سے خالی نہیں ہوگی۔ امام الوحنیفہ سے ان کوانتہائی عقیدت تھی۔ فرمایا کرتے تے 'کو لا اعاننی الله باہی حنیفة و سفیان لکنت بدعیا '' یعنی اگر اللہ تعالی میری مدد الوحنیفہ اور سفیان سے نہ فرماتے تو میں آج برعتی ہوتا۔ اسی وجہ سے آپ کوفتہاء میں بھی بڑا تو الی میری مدد الوحنیفہ اور سفیان سے نہ فرماتے تو میں آج برعتی ہوتا۔ اسی وجہ سے آپ کوفتہاء میں بھی بڑا درجہ حاصل ہے۔ امام مالک ان کو مفتیحہ خراسان ' یعنی خراسان کے فقیہ کے لقب سے پکارا کرتے تھے۔ مملی طور پر جہاد میں شرکت فرماتے تھے۔ رومیوں کے خلاف آپ نے جس جرات و بہادری کا مظاہرہ کیا اس کے بی جران کن واقعات کتابوں میں موجود ہیں۔ الماج کوتر یہ خوبرس کی عمر میں وفات پائی۔

( ا )تفردالامام الترمذي بهذاالاثر

قضاءاورم احل زندگی میں وحی اور آثار کا اتباع:

حضرت ابن مبارک تعظیم اور جلیل القدرامام ہیں۔امام ترفدگ ان کا اثر کتاب کے آخر میں ذکر کرتے ہیں۔
جواس بات پر شمیہ ہے کہ جب ہم نے احادیث اور نبی کریم اللہ کے اقوال پڑھ لئے تواب اس پر عمل بھی
چواس بات پر شمیہ ہے کہ جعب ہم نے احادیث اور نبی کریم اللہ کے اقوال پڑھ لئے تواب اس پر عمل بھی
چاہئے۔اور اس کے بعد صحافی کا قول اور انمہ سلف کے فیصلے اور آثار ہیں۔ جن کا اتباع چاہئے۔ نیز اس میں
اس بات پر بھی تنبیہ ہے کہ قضاء اور عہدہ کے چیچے نہ پڑو۔ کیونکہ بیا کیک امتحان اور مصیبت ہے۔ اسی وجہ
سے امام ابو حنیفہ اور دیگر اکا برنے اسے قبول نہ کیا۔اور اگر کھے پڑج ائے اور مجبور آانصاف کے مسند پر بیٹھنا
بڑے یا اسی طرح کوئی علمی مسئلہ یا فتو کی پوچھا گیا تو اثر سے استمساک کروا پئی رائے اور عقل کو دوسرے
مرتبہ میں رکھو۔

تعبیر خواب میں اتباع آثار:

واضح مطابقت نہیں گر شراح کہتے ہیں کہ مناسبت یہ ہے کہ اگر کسی نے تعبیر پوچی تو شیطانی خیالات اور
واضح مطابقت نہیں گر شراح کہتے ہیں کہ مناسبت یہ ہے کہ اگر کسی نے تعبیر پوچی تو شیطانی خیالات اور
تخمینوں کے ساتھ رائے مت قام کرو۔ بلکہ خواب کی تعبیر میں بھی قرآن وصدیث اور آثار الصالحین کی تتبع
کر کے جواب دو۔ مثلاً کوئی خواب و یکھا ہے کہ میں سمندر میں تیرر ہاہوں اور تم سے اس کی تعبیر پوچھ تو
قرآن سے بول تمسک کر سکتے ہو کہ وہ کہتا ہے وجعلنا من الماء کل شئی حتی. (انبیاء ۴۳) اور ہم
نے ہر چیز کویانی سے بیدا کیا۔

اس لئے تم بھی خواب کی تعبیر طویل زندگی سے کروتو بعید نہیں ہوگا۔

زبیدہ خاتون نے خواب دیکھا کہ دنیا بھر سے لوگ آکر میرے ساتھ ذنا کر رہے ہیں۔ لوگوں سے تعبیر پوچھی لیکن کوئی ان کومطمئن نہ کرسکا۔ بالآخرا یک ہزرگ سے پوچھا تو انہوں نے کہا کہ بیتو ہہت اچھا خواب ہے۔ تم سے اللہ تعالیٰ ایک فیض جاری کرے گا جس سے تمام عالم مستفیض ہوگا۔ چنا نچہ نہر زبیدہ انہوں نے کھدوائی ہے جس سے تجاز مقدس میں پانی مہیا کیا جانے لگا۔ عرفات، منیٰ اور مکہ والوں کو پانی کی تکلیف ہوتی تھی۔ جو اس نہر کے سبب دور ہوگئی اور اس طرح حرمین کے واسطے سے تمام عالم کے لوگ مستفیض ہونے گئے۔ مشرق ومغرب سے لوگ آکراس کا یانی استعال کرنے گئے۔

لیکن اس سے بھی مناسبت بہتر ہے ہے کہ خاتمہ میں جو دوآ ثار منقول ہیں۔ان کاتعلق سارے کتاب سے ہے۔ نہ کہ صرف آخری باب سے۔ کتاب میں ہم قرآن اور حدیث پڑھ بھے ہیں اب آخر میں دوباتوں کی تنبیہ کی جاتی ہے اول یہ کہ چونکہ قضاء نبوت کا کام اور اسے نبی کی خلافت کے طور پر نبھایا جاتا ہے۔اس لئے یہ تنبیہ مقصود ہے۔ اگر کسی کو ملے تو نبی اور ان کے نائبین کی افتداء کرے۔ اور حضوراقد سے اللہ کا نائب بننے کیلئے آپ میں کا نقشہ اپنا نا پڑتا ہے۔جو کہ کتاب شائل کی صورت میں ہمار سے سامنے ہے۔ چنا نجہ یہاں پر اثر سے مرادا صطلاح فقہاء مراد نہیں بلکہ محدثین کی اصطلاح کے مطابق مرفوع موقوف مرسل احادیث اوراقوال سلف سب اس کے ذمرے میں آتے ہیں۔ دوسری تنبیطم حدیث کے اہتمام شان سے متعلق ہے۔ جو آئندہ اثر میں آر ہی ہے۔

## سند کی اہمیت:

(۲) حد تنا محمد بن على ثنا النضر أخبرنا ابن عوف عن ابن سيرين قال هذا الحديث دين فانظروا عمّن تاخذون دينكم (١).

ترجمہ: مجمد بن سیرین کہتے ہیں کہ بیٹم حدیث دین ہے۔ لہذا بیدد یکھو کہتم اپنا دین کس سے حاصل کررہے ہو۔

ان هذاالحدیث دین، یہ جملہ باب سابق سے مربوط ہوسکتا ہے کیونکہ خواب کی تعیر کے بھی آداب ہیں۔اورسب سے براادب یہ ہے کہ اس کی تعبیر معتمد متنی عالم سے پوچھنی جا ہے اوراس کواس کی تعبیر معتمد متنی عالم سے پوچھنی جا ہے اوراس کواس کی تعبیر میں عقل نہیں اڑانا جا ہے۔
تعبیر نکا لنے کاحق ہے۔ ہرکس وناکس کوخواب کی تعبیر میں عقل نہیں اڑانا جا ہے۔

امام ما لک سے کس نے پوچھا کہ' أبعبر الروياكل احد '' يعنى كيام کسى كوخواب كى تعبير تكالنى چا ہے تو انہوں نے كہا' أبالنبوة تلعب'' كيانبوت كے ساتھ كھيلاجا تا ہے۔

اساتذہ ومشائ کے کے انتخاب میں احتیاط: کین اس کا تعلق سارے کتاب بلکہ علوم الحدیث سے زیادہ بہتر طریقے سے بنتا ہے کیونکہ یہ جملہ مسلم شریف میں بھی ابن سیرین کے حوالے سے مروی ہے۔

(۱)مقدمة صحيح مسلم ۱/۱ اباب بيان الاسناد من الدين، دارمي ۱۲/۱ ا،الحليلة الاولياء لابي نعيم ۲/۸/۲ (مختار)

وہاں پراس کے الفاظ ہیں۔

بلكه الم ديلي في خطرت ابن عرفي عديث روايت كى بـوم الفاظ يه ين كه العلم دين و الصلواة دين فانظرو اعمّن تاخذون هذا العلم. الخ

ان تمام روایات کا خلاصہ بہ ہے کہ دینی عقائد، اعمال، احکام وغیرہ کا علم قابل اعتاد شیوخ واسا تذہ سے حاصل کرناضروری ہے۔ کیونکہ جوعلم غیر متند طریقے سے حاصل ہویا ایسے اسا تذہ سے طے جن کا تعلق علم تقویٰ اور دیانت سے برائے نام ہو۔ تو ظاہر ہے کہ وہ بے برکت ہوتا اور قابل اعتاد نہیں رہتا۔ بلکہ علم کے ساتھ ساتھ بداعتقادی، خیانت اور بدعملی بھی ساتھ ساتھ طے گی۔خواہ وہ دانستہ طور پر ہویا نادانستہ طور بر۔

جیسے آج کل ہم دیکھ رہے ہیں کہ مغربی یو نیورسٹیوں میں ڈاکٹر بننے والے یا مطالعوں کے زور پر مفسر اور محدث بننے والے بالآخر الحاد و بدعت کا شکار ہوجاتے ہیں اور معتز لہ وخوارج بلکہ یہود و نصار کی کی مفسر اور محدث این جیسے بیار اثریت کرجاتی ہیں۔ رفتہ رفتہ خود کو امام، مجتبد بلکہ نبی سیجھنے لگتے ہیں۔ پھر ان سے استفادہ کرنے والے بالعموم صراط متنقیم سے ہٹ کرصحابہ اور سلف صالحین پرانگشت نمائی کا کام دین کا اصل کام سمجھ لیتے ہیں۔ تقلید سلف چھوڑ و سیتے ہیں۔ حدیث کے منکر بن جاتے ہیں۔ قرآن کو زمانے کے اقاضوں کے مطابق نئے بنے سانچوں میں ڈھالنے لگتے ہیں۔

اس طرح تصوف کے طالبین گراہ قتم کے پیروں کے ساتھ لگ کرمشر کانہ رسوم کے وائی بن جاتے ہیں بنا نازاسا تذہ کے شاگر دقابل بھی ہوں گران کے دلوں میں نماز کی کوئی وقعت باتی نہیں رہتی یہی وجہ ہے کہ اللہ تعالی نے انسانیت کی ہدایت کیلئے صرف کتابوں پراکتفا نہیں کیا بلکہ انبیاء کی صورت میں رجال اللہ کا ایک سلسلہ بھی ساتھ ساتھ چلادیا ہے اور کسی مبعوث نبی کے راستے ہی کو ہدایت کا معیار مظہرایا ہے۔

(۱)مسلم شریف مقدمة ۱/۱ (مختار)

الحمد للداس سلسلے میں ہم یہ دعوی بڑے فخر کے ساتھ کر سکتے ہیں کہ ہم تک پہنچنے والے علوم ہم تک سونے کے موتیوں بھری زنجر سلسلہ الذہب کے ذریعہ پہنچے ہیں۔ ہمارے شیوخ کا تقوی کی، زہد، علم ، دینی تصلب کسی پر بھی مخفی نہیں ہے۔ اللہ تعالی ان کو بلند ترین درجات سے نوازے جن کی تعلیم و تربیت نے ہمیں اس مقام پر پہنچادیا ہے۔ مناسب ہے کہ کم از کم ان کا تذکرہ ہوجائے۔

ميراسلسله سند: ميرى سند حضرت شيخ الحديث سيدى ووالدى مولا ناعبدالحق رحمة الله كوساطت سے اور كئى ديگرمشائخ عرب وعجم اجله اكا برحر بين الشريفين كے اجازت سے حضورا قدس بيالية ك پهونچتى ہے جس كي تفصيل اس سندالا جازة ميں ہے۔

## فهرست روات احادیث

شرح شائل میں جن راویوں کے حالات ذکر کئے گئے ہیں۔ان کے اساءگرا می حروف بھی کی ترتیب کے ساتھ باب اور حدیث نمبر کے حوالے کے ساتھ بیش کئے جاتے ہیں۔میری تنبع کے مطابق کسی بھی حدیث کا آخری راوی تذکرے کے بغیر نہیں رہا۔البتہ شرح میں اس کا ذکر صرف ایک بارکیا گیا ہے۔
اصلاح الدین عفی عنہ

|           |        | الف                 |         |
|-----------|--------|---------------------|---------|
| حدیث نمبر | بابنبر | نام راوی            | تمبرشار |
| ٢         | الا    | ابن سيرين           | -       |
| 4         | ry     | ابواسيد             | ۲       |
| ۱۳        | 1      | ابواطفيل المفايل    | ٣       |
| ۴         | ۵۱     | الواهيشم بن التيقان | ٨       |
| ۲         | ra     | ابوامامة بابلي      | ۵       |
| 1         | t/A    | ابوابوب الانصاريٌّ  | ٧       |
| ۳         | ۵۳     | ابوالبختر ئ         | 4       |
| 1         | ۸      | ابويرده             | ٨       |
| ۵         | ۵۳     | ابوبكرالصديق        | 9       |
| Y         | 8      | ابوجيفة وهب بن عامر | 1+      |
| ٨         | ra     | ابوذرالغفاري        | 11      |
| 4         | ۵      | ابورمثة اليمي       | Ir      |

| ۸  | ۲           | ابوسعيدالخدري                                   | I۳       |
|----|-------------|---|----------|
| 11 | ٥٣          | ابوسلمة بن عبدالرحلن                            | II.      |
| ۲  | ۵           | ابطلحة  | 10       |
| IA | ry          | الوعبية   | ΙΥ       |
| ۲  | ۳۲          | ابوعمير   | 14       |
| 4  | <b>1</b> 49 | ابوقادة   | IA       |
| ۲  | ۳۲          | ابوموسىٰ الاشعريٰ                               | 19       |
| 11 | ı           | الوهريرة  | <b>*</b> |
| 4  | ۸           | اسامة بن زيد                                    | rı       |
| ۴  | ۸           | اساء بنت يزيد                                   | 77       |
| ٧  | ı           | اصمعی   | ۲۳       |
| 1  | ı           | انس بن ما لک                                    | ۲۳       |
| ۳• | ry          | ام المنذ رسلني                                  | 10       |
| 1  | ۸           | امسلمة  | 74       |
| 9  | ۳۲          | امليم   | 12       |
| ۳  | ۵           | امہانی  | M        |
|    |             | <del>-</del>                                    |          |
| 1+ | ۵۳          | باقر(الامام)                                    | 19       |
| ۳  | ۷           | بشرين الفضل                                     | ۳۰       |
| ۳  | ı           | براء بن عاذب                                    | 1"1      |
| ٧  | ۲           | براء بن عاذب<br>بریده بن انتصیف<br>بلال بن رباح | ۳۲       |
| 10 | ry          | بلال بن رباح                                    | ۳۳       |

| ۵  | II          | تو أمة                 | ٣٣        |  |
|----|-------------|------------------------|-----------|--|
|    |             | €                      |           |  |
| 1+ | 74          | جابر بن الطارق         | ra        |  |
| ٨  | ſ           | جابر بن سمرة           | ۳۹        |  |
| Ir | ſ           | جابر بن عبدالله        | 12        |  |
| 1  | ۵٠          | جبير بن مطعم           | ۳۸        |  |
| ۴  | ra          | جندب بن بُحادة         | <b>79</b> |  |
| ٣  | ٣           | جندب بن عبدالله البجلي | ۴٠,       |  |
| ٨  | ۲           | جھذمة امرأة بشير       | ایم       |  |
|    |             | ż                      |           |  |
| ۴  | IA          | حُذ يفه بن اليمان      | ۳۲        |  |
| 10 | <b>17</b> 2 | حسان بن ثابت           | ۳۳        |  |
| Y  | ۳۲          | حس بعريٌ               | rr.       |  |
| ۷  | 1           | حسن بن على             | 20        |  |
| rı | 179         | حفصة بنت عمر           | ۳۲        |  |
| 1+ | 77          | جابن بن الطارق         | r2        |  |
| 9  |             |                        |           |  |
| Ir | ſ           | دحيه بن خليفه كبي      | ۳۸        |  |
| ۵  | or          | وغفل بن خظلة           | ۲9        |  |
|    |             | ر                      |           |  |
| Y  | ۳٠          | رئيع بنت معوذ          | ۵٠        |  |
|    |             |                        |           |  |

| ٣   | ٧          | رُميثة   | ۵۱ |
|-----|------------|--|----|
|     |            | ز  |    |
| ۵   | 24         | <i>נו</i> ק,זט <i>ד</i> וח                               | ۵۲ |
| 1   | 10         | ز بير بن العوام  | ۵۳ |
| ۴   | ry         | زېدم الجرى   | ۵۳ |
| 1   | <b>الم</b> | زيدبن ثابت   | ۵۵ |
| 9   | <b>179</b> | زيدبن خالدالجھنی   | ra |
|     |            | <b>W</b>   |    |
| 1   | ۲          | سائب بن يزيد   | ۵۷ |
| Ir  | ar         | سالم بن عبيد   | ۵۸ |
| 4   | 11         | سڌئ  | ۵۹ |
| 1+  | ٣٢         | سعد بن الي وقاص  | 4+ |
| ٣   | ۲          | سعدبن معاذ   | וץ |
| ۲   | Ir         | سعيد بن الحسن  | 44 |
| ۵   | ry         | سفينة مولى رسول التعليقية                                | 44 |
| ч   | r          | سلمان الفارسي  | 46 |
| ٣   | IA         | سلمة بن الاكوع   | ۵۲ |
| 1/2 | ry         | سلملي ام رافع  | 77 |
| 144 | ry         | سلمٰی بنت قیس ام المنذ ر<br>سمرة بن جندب<br>سهل بن سعد ٌ | 42 |
| ٨   | 1          | سمرة بن جندب   | ۸۲ |
| ۴   | ۲۳         | سھل ہن سعد   | 49 |

| <b>ش</b> |       |   |           |
|----------|-------|---|-----------|
| 9        | 172   | ش<br>شرید بن سویدانشفی<br>سا  | ۷+        |
|          |       | صفيّة بنت مُكِيُّ<br>طفيّة بنت مُكِيُّ<br>ط   |           |
| ۲۲       | 74    | صفتية بنت مُكِيُّ   | ۷۱        |
|          |       | b   |           |
| ٣        | ۵۵    | طارق بن اشيم  | ۷٢        |
| ۲        | 10    | طلحة بن عبيدالله  | ۷۳        |
|          |       | <u>و</u>  |           |
| ۳۳       | 74    | عا نَشْهُ بنت انِي بكر  | ۷٣        |
| ۲        | ۳     |   |           |
| ٣        | 1     | عازبؓ   | ۷۵        |
| الد      | 74    | عبدالله بن الحارث   | ۷۲        |
| 1        | خاتمه | عبدالله بن المبارك  | <b>44</b> |
| ٧        | 74    | عبدالله بن ثابت، ابی اسید   | ۷۸        |
| ۲        | ı۳    | عبدالله بن جعفرا  | ∠9        |
| 1        | ۳۷    | عبدالله بن رواحة  | ۸۰        |
| ٨        | ۲     | عبدالله بن سرجس   | ΔI        |
| 1        | ایم   | عبدالله بن سعد  | ۸۲        |
| ٣٢       | 14    | عبدالله بن سلام   | ۸۳        |
| الد      | 1     | عبدالله بن عباسٌ  | ۸۳        |
| ۵        | ۵۳    | عبدالله بن عباس عبدالله بن عباس عبدالله بن عثان بن عامر، ابو بكر صديق عبدالله بن عمر الله | ۸۵        |
| ٣        | ۵     | عبدالله بن عمرٌ   | ۲۸        |

| ۲  | ۳۲        | عبدالله بن عمرو بن العاص        | ٨٧   |  |
|----|-----------|---------------------------------|------|--|
| ۴  | l.        | عبدالله بن قيس، ابوموسىٰ اشعرىٰ | ۸۸   |  |
| 14 | ry        | عبدالله بن مسعودٌ               | ۸۹   |  |
| 4  | ساما      | عبدالله بن مغنل                 | 9+   |  |
| ۳  | ۱٬۰۰      | عبدالرحن بن ابي ليل             | 91   |  |
| 9  | ۵۱        | عبدالرحن بنءوف                  | 91   |  |
| 4  | ۵۱        | عثبة بنغزوان                    | 91"  |  |
| Ir | ı         | عروة بن مسعورة                  | 914  |  |
| ۲  | ۲۳        | عطاء بن مسلم الخفا ف            | 90   |  |
| ۵  | 1         | على بن ابي طالب                 | 94   |  |
| ۳  | 1/1       | عربن البسلمة                    | 9∠   |  |
| ۸  | ry        | عمر بن الخطاب                   | 9/   |  |
| ۴  | ۲         | عمروبن الاخطب                   | 99   |  |
| 1  | ۵۳        | عمروبن الحارث                   | 1++  |  |
| ۲  | <u>۳۷</u> | عمروبن العاص                    | 1+1  |  |
| ч  | 11        | عمروبن حريث                     | 1+1  |  |
| ΙΥ | ۲۲        | عوف بن ما لكٌ                   | 1+1" |  |
|    | <u>.</u>  |                                 |      |  |
| ۲  | ۲۳        | فضل بن عباس                     | 100  |  |
| ق  |           |                                 |      |  |
| ۷  | ۳۳        | قادة بن عامر                    | 1+0  |  |
| ۵  | ٨         | قادة بن عامر<br>قرة بن اياس     | 1+4  |  |

| 11  | ^   | قیله بنت محزمة                | 1•∠  |
|-----|-----|-------------------------------|------|
| ك   |     |                               |      |
| 4   | rr  | كبشة بنت ثابت                 | 1+A  |
| 1   | 10  | كعب بن ما لك                  | 1+9  |
|     |     | J                             |      |
| ۲   | 172 | لبيدبن ربية                   | 11+  |
|     | •   | P                             |      |
| ٧   | ۵۳  | ما لك بن اوس ال               | 111  |
| ۲   | 9   | ما لك بن دينار                | IIT  |
| ٧   | 1   | محمد بن الحنفيه               | 111" |
| 1+  | or  | محمه بن علی بن الحسین (با قر) | IIM  |
| ٣   | Im  | مريده بن جايرٌ                | 110  |
| Y   | ra  | مسروق                         | יוו  |
| ٧   | ۳۰  | معاذبن الحارث                 | 114  |
| ۲   | ar  | معاوية بن البي سفيان          | ш    |
| Y   | ۳۰  | متوذبن حارث                   | 119  |
| ٧   | ım  | معيقيب                        | 114  |
| l Y | ٨   | مغيره بن شعبة                 | IFI  |
| ۲   | ۳۱  | ميمونة بنت الحارث             | Irr  |
| ن   |     |                               |      |
| ۲   | ry  | نعمان بن بشير"                | Irm  |

| <u>و</u> |     |                         |      |  |  |
|----------|-----|-------------------------|------|--|--|
| ч        | ۵   | وهب بن عامر، ابو جحيفة  | 144  |  |  |
| À        |     |                         |      |  |  |
| 4        | 1   | ہند بن ابی ہالہ         | Ira  |  |  |
|          | ق   |                         |      |  |  |
| ٧        | ۸   | يجي بن معين             | Iry  |  |  |
| 1        | 4٠١ | يزيدالرشك               | 11/2 |  |  |
| ۵        | ۵۵  | يزيدالفارى              | IFA  |  |  |
| ۳۲       | ry  | بوسف بن عبدالله بن سلام | 119  |  |  |